प्रस्तावना

"आज अपने विजय को गङ्गा माँ को सौंप दिया। उसी त्रिवेणी पर जहाँ अनगिनती व्यक्तियों के पार्थिव शरीर अग्नि देव के उज्जवल रथ पर बैठ कर स्वर्ग जा चुके हैं वहीं मैंने अपने इकलौते पुत्र विजय को भी अग्नि देव को अर्पण कर दिया। जिन हाथों से उसे दुलराया और प्यार किया था उन्हीं हाथों से उसे लक्कड़ों पर लिटा दिया। जिस कोमल शरीर को कभी फूल से भी नहीं मारा था उसी शरीर को चिता में होम दिया। यह कठोर हृदय फट क्यों न गया इसी का आश्चर्य है। विजय धुएँ के रथ पर सवार हो कर स्वर्ग चला गया। जिसने जीवन दिया था उसी ने वापिस ले लिया। इसी स्थान पर मनुष्य अपने को असहाय पाता है। सम्पूर्ण शक्ति रखते हुए भी मनुष्य यहीं प्रकृति से हार जाता है। उसे यह मालूम हो जाता है कि यह संसार एक सराय है जिसमें नित नये यात्री आते हैं, टिकते हैं, आपस में मेल जोल करते हैं और फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़ते हैं। कदाचित इसीलिये सांसारिक बन्धनों को शास्त्रों में नदी नाव संयोग कहा गया है। यह कहना कि मुझे विजय की मृत्यु का दुख नहीं है सरासर झूंठ होगा परन्तु इतना अवश्य है कि मैंने देश विदेशों में लगातार भ्रमण कर के इतना सुख दुख देखा सुना है कि मृत्यु की विभीषिका मुझे डरा सकने में असमर्थ है। जानते तो सभी हैं, सभी को विश्वास भी है कि जो जन्मा है वह मरेगा भी अवश्य ही, मृत्यु अवश्यम्भावी है, काल से न आज तक कोई बचा है और न बचेगा ही, यह सर्व ग्रासी-काल जब भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध, भीम, अर्जुन; प्रभृति वीरात्माओं को निगल गया तो फिर मेरी और विजय की क्या चलाई। इस कारण मुझे मृत्यु से डरना कायरता मालूम होती है। जो अवश्यम्भावी है, जो सर्व ग्रासी हैं, जिससे आज तक कोई नहीं बचा है उससे डरना व्यर्थ है। जब मृत्यु एक क्षण भी नहीं टाली जा सकती तो फिर भय काहे का। मृत्यु का आवाहन ईश्वर का आवाहन है, जो डरते हैं वह भी ग्रास बनते हैं और जो वीरता पूर्वक मृत्यु से जूझ जाते हैं उनका अन्त भी वही होता है, फिर मृत्यु से डरना क्यों? डर कर भागना कायरता है और संघर्ष

करना वीरता। विजय की मृत्यु का शोक अवश्य है परन्तु मैं कातर नहीं हूँ। दुनियां मेरे लिए अंधेरी नहीं हुई है। विश्व नियन्ता का अटल आदेश मान कर मैंने उसे सिर माथे लिया है परन्तु मेरा हृदय रो रो कर विजय को पुकार रहा है। यदि हो सकता तो कुबेर के खज़ाने* से प्राप्त की हुई सारी दौलत के बदले विजय के जीवन का सौदा कर लेता। परन्तु मृत्यु तो सौदा करती ही नहीं।

लोग कहते हैं कि जिनकी यहां चाह है उनकी वहां भी चाह है। यदि ऐसा न होता तो मेरा विजय क्यों असमय ही मृत्यु के मुख में चला जाता। २२ वर्ष का नवयुवक जिसकी मसें भी अभी नहीं भीगी थीं; इतना स्वस्थ और सुन्दर जिसको देखे से भूख प्यास बन्द हो जाती थी; जिसने तीन बार यूनिवर्सिटी का रेकार्ड तोड़ कर सैकड़ों पदक और इनाम प्राप्त किये थे; जिसके शरीर में रूप, लक्ष्मी और सरस्वती का अद्भुत मेल देख कर आश्चर्य चकित रह जाना पड़ता था वही विजय असमय में ही क्यों अपनी जीवन लीला समाप्त कर देता। सेवा और त्याग का तो वह मानो पुतला था, न जाने कितने निर्धन विद्यार्थी उससे सहायता पाते थे। उसके जेब खर्च के ३००) माहवार पहले ही सप्ताह में निर्धन विद्यार्थियों में बंट बटा कर समाप्त हो जाते थे परन्तु विजय ने कभी मेरे सामने हाथ नहीं फैलाया। मुझे यही अरमान रहा कि वह मुझसे कुछ मांगता। दो कुरते, दो धोती, चार बनियान और एक जोड़ी चप्पल यही उसकी निजी सम्पत्ति थी। बीसियों बार ऐसा हुआ है कि मैंने सन्दूक भर भर कर कपड़े उसके लिये बनवाये हैं और उसने वह सभी निर्धन विद्यार्थियों में बांट दिये हैं। अपनी यूनिवर्सिटी में वह बे ताज बादशाह था, विद्यार्थी उसे देवदूत समझते थे और प्रोफ़ेसर तथा वाइस चांसलर तक उसकी इज्ज़त करते थे। उसे लगन थी जाति सेवा की। आज फलां ज़िले में बाढ़ आ गई है तो विजय का दल बाढ़ पीड़ितों की सेवा कर रहा है, कहीं महामारी फैल गई है तो विजय अपने दोस्तों को लिये सेवा कार्य में जुटा हुआ है। अधिकांश लोगों में जो नेता बनने की हविस होती है, स्वयं काम न कर के दूसरों को आज्ञा

---

* इसका हाल जानने के लिये पढ़िये लेखक की दूसरी पुस्तक 'कुबेर का ख़ज़ाना'। प्रकाशक भारती (भाषा) भवन, दिल्ली।

देने की जो आदत होती है उसका विजय में सर्वथा अभाव था। वह था कर्मयोगी। सेवा स्वयं अपना पुरस्कार है ऐसा वह मानता था। जनता की सेवा करना साक्षात जनार्दन की सेवा करना है, यह उसका दृढ़ विश्वास था।

विजय की मृत्यु से मेरा दाहिना हाथ टूट गया है। इस संसार में मेरा और कोई नहीं है, विजय की मृत्यु से इस भरे पुरे संसार में मै अकेला रह गया हूँ। स्त्री, पुत्र, कन्या, भाई कोई भी तो मेरे नहीं हैं। यदि मेरा वश चलता तो अपना सारा धन दे कर विजय को बचा लेता, परन्तु कुवेर के खजाने से मुझे मिला सारा धन हीरे जवाहर रखे रह गये और विजय चला गया। अब इस धन का क्या होगा? गोरखपुर जिले में बाढ़ आने की सूचना पा कर विजय वहां दौड़ पड़ा था। बाढ़, दुर्भिक्ष, मलेरिया और न जाने कौन कौन सी बीमारियों से जूझ कर उसने बाढ़ पीड़ियों की सहायता की, वहीं तराई के जंगलों में किसी जहरीले कीड़े ने उसे काट खाया, विष सारे शरीर में फैल जाने पर उसे बेहोश अवस्था में प्रयाग लाया गया पर प्रांत भर के अच्छे से अच्छे डाक्टर और चिकित्सक उसकी बीमारी का इलाज न कर सके और आज विजय इस संसार के बन्धनों को तोड़ कर परमपिता की गोद में चला गया। बूढ़े बाप के सामने जवान और वह भी इकलौते पुत्र की मृत्यु पत्थर को पानी कर देने वाली घटना है, परन्तु मैंने अपने शिकारी जीवन में मृत्यु को बहुत पास से देखा है। मैंने मृत्यु को बिजली की तेजी से आते और अपना शिकार भी ले जाते देखा है। मुझे मृत्यु से भय नहीं है, दुखः केवल इस बात का है कि मृत्यु ने मुझे अपने चंगुल में क्यों नहीं फँसाया। जाने का समय तो मेरा था विजय का नहीं जिसके सामने संसार के आकर्षण थे और जिस के जीवन से देश और समाज को बड़ी आशायें थीं। जो अवश्यम्भावी है उसका दुःख क्या, परन्तु अफसोस उन गुंचों पर है जो बिन खिले मुरझा गये। जिन को फूल बनने से पहले ही जालिम माली ने तोड़ कर मसल डाला।

विजय की अरथी को कंधा देने सारी यूनिवर्सिटी उमड़ पड़ी थी, सारी शिक्षा संस्थाओं में छुट्टी हो गई थी और जब शव को चिता पर रखा गया तो उसका अन्तिम् दर्शन करने के लिए भीड़ को रोकना कठिन हो

गया। सभी दुखित थे, अनेकों रो रहे थे, और अपने आंसुओं से मृतक को श्रद्धांजलि दे रहे थे। दिसम्बर की उदास और ठण्डी शाम को जब कि चिता में अग्नि प्रज्वलित की गई तो मेरा वर्षों का संयम टुकड़े टुकड़े हो गया और मै चिल्ला कर रो उठा। शायद इस कारण कि जब तक मृतक शरीर रहता है मन अपने आपको धोखा देता रहता है और क्योंकि अग्नि की उज्ज्वल शिखायें पार्थिव देह का अस्तित्व समाप्त कर देती हैं इस कारण मोह उमड़ पडता है। परन्तु अपने ही हाथों से चिता को प्रज्वलित करने का कार्य करना ही पड़ा और देखते ही देखते विजय की सुकुमार देह अग्नि शिखाओं मे छुप गई। उसी समय आकाश में एक छोटे से मेघ खण्ड ने फैल कर दो चार बूंदे भी गिरा दीं मानो प्रकृति भी मेरे दुख से दुखी हो कर समवेदना प्रकट कर रही हो। कपाल क्रिया के समय तो मैं अपना सन्तुलन बिल्कुल ही खो बैठा और यदि मेरे मित्र कुंवर सुरेश सिंह और कैप्टिन सन्त प्रसाद मुझे न संभाल लेते तो शायद मैं श्मशान से भाग आता। कुंवर साहिब की आंखें रोते रोते लाल हो गई थीं और कैप्टिन की आवाज भी भर्राई हुई थी। दाह संस्कार समाप्त कर के और त्रिवेणी नहा कर मै अपनी सुनसान कोठी को लौट आया।

आज विजय को मरे दूसरा दिन है। समझ में नहीं आता कि क्या करूं। जी चाहता है कि अफ्रीका लौट जाऊं, अफ्रीका के उन्ही जंगलों में, जहां मैंने विशाला, विजय की मां, को पाया था और खो भी दिया था; जहां विजय का जन्म हुआ था और जहां के अर्ध सभ्य जूलू, बकवाफी, वन्टू और मसाई आज भी मुझे मैकुमाज़न, महान शिकारी, के नाम से याद करते हैं; जहां मैंने कुबेर का ख़ज़ाना पाया था; और सैंकड़ों शेर और हाथियों का शिकार किया था। सोचता हूँ अफ्रीका के उन्हीं जंगलों को वापस लौट जाऊँ।

मैंने निश्चय कर लिया है कि अपनी समस्त चल और अचल सम्पत्ति दान कर के अफ्रीका के जंगलों को लौट जाऊंगा। अपनी कोठी और बीस हज़ार रुपये साल की जायदाद मैंने यूनिवर्सिटी को दान कर दी है, दान पत्रों की रजिस्ट्री कल हो गई। कुबेर के ख़ज़ाने से मिले हुए अमूल्य हीरों का अभी तक कोई प्रबन्ध नहीं हो सका है, दो चार होते

तो मित्रों को बाँट देता परन्तु इन अमूल्य जवाहरातों का तो पूरा ढ़ेर मेरे पास है। इन हीरे जवाहराती को मैंने भारत सरकार को दे देने का निश्चय किया है। इनका आयोजन होते ही मैं अफ्रीका चला जाऊँगा।

आज गवर्नर उत्तर प्रदेश प्रयाग पधारे और मुझे गवर्नमेंट हाऊस में बुलाया। मेरी अकिंचन सौग़ात को भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया है यही बताने के लिए गवर्नर महोदय ने मुझे बुलाया था। पुलिस तथा फ़ौज के पहरे में जवाहरातों से भरे ४ वक्से गवर्नमेंट हाऊस चले गये। लोगों ने मेरे कुबेर के ख़ज़ाने का पता लगाने का उड़ता पुड़ता हाल अवश्य सुना था परन्तु विश्वास किसी ने नहीं किया था। गवर्नमेंट हाऊस में जब उनकी प्रदर्शनी हुई तो देखने वाले मुंह फाड़ कर रह गये। इन जवाहरातों के मूल्य से एक बार चौथाई हिन्दुस्तान ख़रीदा जा सकता है, ऐसा विचार था रत्न पारखियों का। गवर्नर महोदय की आंखें भी चकाचौंध हो गईं। कुबेर के ख़ज़ाने के रत्न अमूल्य न होते तो क्या साधारण ठीकरे होते? इतना धन यूँ ही हाथ उठा कर दे देने के कारण लोग मुझे सनकी पागल और न जाने क्या क्या कह रहे हैं परन्तु जब विजय ही नहीं रहा तो ज़र जवाहर का क्या होता? अब तो वह मेरे लिये ठीकरों के समान हैं। मेरे सांसारिक बंधन कट गये हैं और मैं किसी दिन भी अफ्रीका चला जाऊंगा।"

उपरोक्त उद्धरण मेरी डायरी से है जिसे मैंने दो वर्ष से अधिक पहले लिखा था। मैं इस उद्धरण को इसलिये यहां दे रहा हूँ क्योंकि मै समझता हूँ कि जिस घटना का मैं वर्णन करने जा रहा हूँ, यदि ईश्वर की कृपा से मैं उसे पूरा कर सका तो उसकी इस से अधिक उत्तम प्रस्तावना हो ही नहीं सकती थी। यदि मेरा वर्णन पूरा नहीं हुआ तो भी कोई चिन्ता नहीं। उपरोक्त उद्धरण इस स्थान से, जहां मैं धीरे धीरे बिना किसी कष्ट के मृत्यु के समीप होता जा रहा हूँ और एक युवती मेरे जर्जर मुख पर आ बैठने वाली मक्खियों को उड़ा रही है, चार हज़ार मील दूर लिखा गया था। मेरे जीवन दीप का तेल चुकता जा रहा है और मैं अपने विजय और उसकी माँ के पास पहुँचता जा रहा रहूँ। मुझे ऐसा मालूम देने लगा है जैसे मै उन से अब दूर नहीं हूँ।

: च :

मेरी प्रयाग की कोठी काफ़ी शानदार थी, न केवल अफ्रीका के घोर जंगलों में बसे गॉव के उन झोपड़ों से ही, जिन में मेरे जीवन का अधिकतर भाग बीता है, बल्कि भारतवर्ष के स्टैन्डर्ड से भी मेरी कोठी काफ़ी शानदार थी। विजय की मृत्यु के बाद दो तीन दिन तक तो मुझे नहाने खाने की सुधि भी न रही परन्तु धीरे धीरे जीवन नियमित होने लगा— पहले नहाना खाना शुरू हुआ फिर मिलना जुलना और लंगड़ाते हुए बाग़ या बरामदे में टहलना शुरू हुआ। अफ्रीका में मेरी एक टांग शेर ने चबा डाली थी और मुझे सदा के लिए लगड़ा कर दिया था। मैं अधिकतर अपनी कोठी के बाग़ में टहला करता था और अंधेरा हो जाने पर बड़े हॉल में। हॉल में हिरनों, अरने भैंसों और उन दूसरे जानवरों के सींग और सिर टंगे थे जिन को मैंने मारा था। यह सभी अपनी तरह के बहुत ही सुन्दर नमूने हैं क्योंकि मैं उन नमूनों को रखता ही नहीं था जो हर प्रकार सर्वोत्तम नहीं होते थे या जिनके प्राप्त करने में कोई रोमांचकारी घटना जुड़ी नहीं होती थी। इसी हॉल में सामने की दीवार के सहारे मैंने अपनी तमाम रायफिलें और बन्दूकें सजाई हुई हैं।

कुछ रायफिलें मेरे पास चालीस वर्ष से हैं, पुरानी चाल की तोड़ेदार बन्दूकें हैं जिन की तरफ़ आज कोई आंख उठा कर भी नहीं देखता है। एक छोटी सी पड़ी रायफ़ल है जिस को अफ्रीका के आदि वासी "इन्दूम्बी" या "कुमारी" के नाम से पुकारते थे और जो मेरी अनेकों मुहिमों में मेरी साथी रही है। दूसरी बन्दूक हाथी मारने की है जिस से कुन्दे और नाल पर कच्चे चमड़े की पट्टियां लिपटी हुई हैं। इस का नाम उन लोगोंने "धूम धड़ाका" रखा हुआ था। मैंने इस पुरानी बन्दूक से दर्जनों हाथियों का शिकार किया है। इस में मुट्ठी भर बारूद और तीन छटांक बड़े छर्रे भरे जाते हैं और चलाने पर इतनी जोर से धक्का देती है कि यदि चलाने वाला सावधान न हो तो उठा कर फेंक देती है।

किसी किसी दिन तो मैं सवेरे से शाम तक अपनी पुरानी बन्दूकों और मारे हुए जानवरों के सिरों को देखते हुए हॉल मे इधर से उधर घूमता रहता था। कभी कभी तो मेरे मन में यहॉ से कहीं दूर भाग जाने की इच्छा होती थी। मन में आता था कि इस सुस्ती काहिली और ऐश के जीवन को छोड़ कर अफ्रीका के उन्हीं जंगलों को भाग चलूँ

जहाँ मैंने अपने जीवन का अधिकतर भाग विताया था, जहां मुझे मेरी स्वर्गीय पत्नी मिली थी, जहां विजय का जन्म हुआ था, जहां मैंने जीवन के अनेकों उतार चढ़ाव देखे थे इत्यादि। मुझ पर घुमकड़ी का भूत सवार होने लगा था, मुझे भारतवर्ष में एक क्षण भी रहना दूभर हो रहा था। मैंने अफ्रीका के जंगली जानवरों और आदि वासियों के बीच में जा कर अपने जीवन का शेष भाग बिताने का निश्चय कर लिया है। रात भर मुझे अफ्रीका के ही स्वप्न आते हैं कि शुभ्र चाँदनी खिली हुई है और मैं सामने के ढाल से उतरते हुए शेर की ओर बन्दूक का निशाना लगाये सतर्क बैठा हुआ हूँ कि कब बनराज पानी पीने झुके और मेरी रायफिल की गोली उस की जीवन लीला को समाप्त कर दे।

कहते हैं कि मृत्यु काल समीप आ जाने पर अधिकार लिप्सा बढ़ जाती है। और मेरा हृदय तो वास्तव में उसी दिन मर चुका था जिस दिन विजय की मृत्यु हुई थी। पिछले तीन वर्षों में भी मै अपने आप को भारतीय समाज में नहीं खपा सका था और खपा सकना भी कठिन था। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन के ४० लंबे वर्ष प्रकृति की सुरम्य गोद में अफ्रीका के जंगलों और जंगली जानवरों के बीच व्यतीत किये हों उसे तितलियों जैसी नरम नाज़ुक फूलपरी जैसी स्त्रियों और पुरुषत्वहीन ज़नाने पुरुषों के समाज में घुल मिल जाना और उस के बेढंगे नियमों का पालन कर सकना असम्भव था। जंगल के मुक्त वातावरण और स्वच्छ वायु की याद मुझे सदैव ही बेचैन करती रहती है, मुझे उन ज़ूलू हमलों की याद आती रहती है जिन में वीर योद्धा आंधी तूफ़ान की तरह अपने शत्रुओं पर टूट पड़ते थे और इस कारण मेरा मन करता है कि सभ्यता के इस अप्राकृतिक आवरण को चीर कर दूर भाग जाऊँ।

और सभ्यता, सभ्यता चीज़ क्या है? अपने जीवन के पूरे ४० वर्ष मैंने अफ्रीका के अर्धसभ्य आदि वासियों के बीच बिताये हैं, उन के चरित्र का अध्ययन किया है और उनकी प्रकृति, रीति रिवाज और आचार व्यवहार का गंभीर अध्ययन किया है। अब पिछले ३ वर्षों से मैं सभ्य समाज में रह कर अपने बेढंगे और अटपटे तरीक़े से इस समाज के रीति रिवाजों को सीखने की भरपूर चेष्टा कर के जानते हैं

आप मैं किस नतीजे पर पहुँचा हूँ। क्या सभ्य और असभ्य के बीच की खाई बहुत चौड़ी है? नहीं, दोनों में बहुत अन्तर नहीं है। एक ही छलांग में मनुष्य एक के घेरे से निकल कर दूसरे में पहुँच सकता है। सभ्य हों या असभ्य मनुष्य की प्रकृति एक सी ही है, अन्तर केवल इतना है कि सभ्य व्यक्ति में कल्पना करने की शक्ति कुछ अधिक होती है और साथ ही वह अपने मन के भावों को छुपाने में भी समर्थ होता है और धन ही उसका धर्म कर्म तथा ईश्वर होता है। वह मनुष्य का मूल्य, उस की योग्यता या चरित्र से आंकने के स्थान पर उसकी थैली की झंकार से लगाता है। उसके लिए जो धनवान हैं वह सर्व गुण आगार है और जो निर्धन है वह है नरक कीट। इसके विपरीत जितनी भी असभ्य तथा अर्धसभ्य जातियों के संसर्ग में मैं आया हूं उन सब को मैंने धन के लोभ से एक दम मुक्त पाया है। धन जो सभ्य समाज में ईश्वर से भी अधिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रभाव रखता है उसकी वहां कोई क़द्र नहीं है। वह मनुष्य का मूल्य आंकते हैं उसके धन से नहीं बल्कि उसकी वीरता, उसके शौर्य और उसके चरित्र बल से। वह मनुष्य की वास्तविक महत्ता को जानते हैं और उसी स्टैन्डर्ड से उसे जांचते हैं। धन के लोभ के अतिरिक्त जहां तक मानव प्रकृति का सम्बन्ध है सभ्य और असभ्यों के बीच, मुझे कहते दुःख होता है, मैंने कोई विशेष अन्तर नहीं पाया है। सभ्यता का झीना आवरण हटा देने पर दोनों एक ही स्तर पर आ जाते हैं।

अपने आप को सभ्य, सुसंस्कृत, कल्चर्ड कहने वाली महिलायें इस बूढ़े बेवकूफ़ शिकारी द्वारा अर्धसभ्य, जंगली, काली कलूटी पोतों तथा मोटे मोटे मनकों की माला पहिने अफ्रीकन स्त्रियों को उन्हीं के समान बताये जाने पर अवश्य ही घृणा से मुस्करा पड़ेगी। और इसी तरह अपटुडेट सूट पहिने पिता के धन पर अय्याशी करने वाले नौजवान फ़ैशनेबिल रैस्टोरैन्टस में बैठ कर चटखारे ले ले कर भोजन करते समय मेरे इस कथन की अवश्य ही आलोचना करेंगे। लेकिन सम्भ्रांत महिलाओ! कभी आपने यह भी सोचा है कि आपके गले में जो मोतियों की माला झूल रही है वह है क्या? क्या यह आभूषण जिन्हें आप असभ्य कहती हैं उन स्त्रियों के गलों में झूलती पोतों और कच्चे मनकों की माला के समान नहीं हैं? मादक स्वरों में बजने वाले वाद्यों

की ताल पर थिरक थिरक कर नाचना, आपका पाउडर, रूज तथा लिप स्टिक के प्रति प्रेम, आपका धनी पुरुष को आकर्षित करके उसकी अंक-शायिनी बनने की चेष्टा करना, भड़कीले चमकदार वस्त्रों को धारण करना सैद्धांतिक रूप से वैसा ही है जैसा असभ्य जाति की स्त्रियों का सिन्दूर से अपने चेहरों को रंग लेना, या रंगीन पत्थरों की माला पहिनना या पक्षियों के रंग बिरंगे परों से अपने आप को सजाना। और जहां तक पुरुषों का सम्बन्ध हैं यदि आपके कोई एक घूंसा जमा दे तो आप देखेंगे कि आपकी सभ्यता का आवरण कितनी जल्दी उतर जाता है और आपका जन्म जात बर्बर रूप प्रकट हो उठता है।

इस प्रकार हर कार्य में साम्य ढूंढ़ा जा सकता है परन्तु इस सब माथा पच्ची करने का नतीजा? सभ्यता बर्बरता पर चढ़ाया हुआ कच्चे सोने का मुलम्मा-मात्र है। सभ्यता व्यर्थ का मिथ्याभिमान है, तारे की क्षीण चमक है जिस के प्रकाश को बादल का साधारण सा टुकड़ा भी छुपा लेता है और जिस के छुप जाने पर घोर अन्धकार फैल जाता है। सभ्यता और बर्बरता में केवल इतना ही अन्तर है कि बर्बरता मरु भूमि के समान है और सभ्यता उस मरुभूमि में उगने वाला वृक्ष जिस का जन्म भी मरुभूमि में ही होता है और मरुभूमि में ही जिसका अन्त हो जाता है। जिस प्रकार मरुभूमि में सभी वस्तुऐं रेत में दब जाती हैं उसी प्रकार सभ्यतायें भी काल के गाल में समा गई हैं। उनके अवशिष्ठ भी खोजे से नहीं मिलते। रोम, मिस्र, यूनान, जावा, सुमात्रा इत्यादि देशों की पुरानी सभ्यता कहां है आज? मेरे इस कथन से कहीं आप यह न समझ लें कि मैं वर्तमान युग की उन सभी संस्थाओं की निन्दा कर रहा हूँ जिनके द्वारा आज का मानव ईश्वर की रची हुई मानवी सृष्टि के दुखों को दूर करने की चेष्टा कर रहा है। ऐसी संस्थायें जैसे अस्पताल आदि तो निस्संदेह बहुत लाभ दायक हैं परन्तु साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि उन अस्पतालों से लाभ उठाने वाले कमजोर तथा बीमार व्यक्तियों को जन्म भी तो हम ही देते हैं। अर्धसभ्य देशों में कमजोर तथा बीमार होना पाप है, इस कारण वहां कमजोर और बीमार व्यक्ति होते ही नहीं हैं। और इसी कारण उन्हें ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है। साथ

ही प्रश्न भी उठता है कि ऐसी कितनी संस्थायें केवल मानव कल्याण के लिए परोपकार भाव से खोली गई हैं और कितनी केवल नाम तथा मान प्रतिष्ठा के लिए ही।

अरे मैं कहां से कहां बहक गया। पाठक मुझे क्षमा करेंगे क्योंकि जिन नौजवानों और नवयुवतियों के लिए मैं ने यह प्रस्तावना लिखी है संभव है उन में से बहुत से इसे पढ़े ही नहीं। मेरे विचार से यह अति आवश्यक है कि हम अपनी सीमा-क्षेत्र को भली प्रकार समझ लें और अपने अल्प ज्ञान के गर्व मे बह न जायें। मनुष्य की बुद्धि और चतुराई की कोई सीमा नहीं है, रबड़ की भांति यह लचीली होती है, आवश्यकता पड़ने पर उस से असाधारण दीखने वाले कार्य भी कराये जा सकते हैं; परन्तु इस के विपरीत मनुष्य की प्रकृति लोहे के छल्ले के समान हैं। आप उसके चारों ओर घूम सकते हैं, उस पर सभ्यता रूपी पालिश चढ़ा सकते हैं, उसे थोड़ा बहुत झुका दबा सकते हैं, जिस के परिणाम स्वरूप वह नुकीली और बेडौल हो सकती है, लेकिन भरपूर प्रत्नय करने पर भी जब तक यह संसार चक्र इसी तरह चल रहा है और मनुष्य मनुष्य है आप उस छल्ले की परिधि नहीं बढ़ा सकते। ध्रुव तारे की भांति मानव प्रकृति भी अचल और अडिग है।

मनुष्य का स्वभाव प्रकृति द्वारा रची एक विचित्र सैरबीन हैं। अच्छे और बुरे, धर्म और अधर्म, पाप और पुण्य, सत्य और झूंठ के प्रति हमारा मोह, आशा, भय, प्रसन्नता, लालसा उस सैरबीन में लगे रंगीन कांच के टुकड़े हैं, और वह विश्व नियन्ता अपने हाथों से इस विशाल सैरबीन को निरन्तर घुमाता रहता है और इसीलिये इस संसार में मानव प्रकृति के नित नये विचित्र खेल देखने में आते हैं। प्रत्येक देश, प्रत्येक युग तथा प्रत्येक समय में ऐसा ही होता आया है, बदल जाते हैं केवल स्थान, काल और पात्र, खेल वही रहते हैं केवल कलाकार बदल जाते हैं। मानव प्रकृति सदैव एक सी रही है, उसमें सभ्य असभ्य देशी विदेशी, गोरे काले, किसी का कोई भेद नहीं है। अनन्त काल से यह क्रम इसी प्रकार चलता आया है।

केवल तर्क के लिए ही यदि हम अपने व्यवहार को बीस भागों में बांट लें जिस में उन्नीस भाग बर्बरता के सूचक हों और एक भाग

सभ्यता का प्रतीक हो तो इस आधार पर मानव प्रकृति का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि मानवी प्रकृति का यह बीसवां भाग इतना सूक्ष्म और क्षुद्र होने पर भी बाक़ी उन्नीसों भागों पर इसी प्रकार छाया रहता है जिस प्रकार पालिश लकड़ी को ढ़के रहती है, और इस पालिश के चढ़ जाने से मानव अपनी वास्तविक प्रकृति से भिन्न दिखाई देता है। परन्तु संकट पड़ने पर या क्षणिक आवेश के समय हमको अपनी प्रकृति के इस बर्बर अंश पर निर्भर होना पड़ता है, सभ्यता का झीना आवरण हमारी रक्षा करने में असमर्थ होता है। जिस प्रकार खटाई लगते ही कच्चा रंग उतर जाता है उसी प्रकार सभ्यता की पालिश भी तनिक सी आंच में ही उतर जाती है और जन्मजात बर्बर रूप प्रकट हो जाता है। सभ्यता के इस झीने आवरण से हम अपनी तसल्ली के लिए अपने बहते आंसुओं को गिरने से रोक भले ही सकते हैं परन्तु उसके द्वारा दुःख के कारण का उन्मूलन करना संभव नहीं होता है। सभ्यता और लड़ाई झगड़े में जन्मजात बैर है परन्तु अवसर आने पर हम अपने घर द्वार तथा मान प्रतिष्ठा के लिए खूंख्वार दरिन्दों से भी अधिक भयंकरता से लड़ने पर उतारू होजाते है और अपनी विजय पर खुशी के शादियाने बजाते हैं।

इसी प्रकार जब मन दुखी होता है या बेइज्ज़ती से हमारा सिर धूल में लोटने लगता है उस समय सभ्यता हमारे किसी काम नहीं आती है। हम उल्लू की भांति आकाश की ओर ताक कर रह जाते हैं, सिर खुजाते हैं और फिर सहायता के लिए आकाश की ओर देखने लगते हैं कि शायद ईश्वर कोई चमत्कार दिखा कर हमको संकट से उबार लें। मैं भी अपने संकट और दुख के समय अपनी कोठी के हाल में इधर से उधर चक्कर काटता था और उस अवसर की प्रतीक्षा करता था जब मैं इस कृत्रिम वातावरण को छोड़ कर फिर प्रकृति की सुरम्य गोद में लौट जाँऊं। उस प्रकृति की गोद में नहीं जिसे आप देखते हैं, जो आप को बागों और खेतों में दिखाई देती है। बस वह प्रकृति जो सनातन काल से आज तक ज्यों की त्यों चली आ रही है और जिसमें सांसारिक दुखों और मानव की छाया ने अभी तक दूषित नहीं किया है। मैं उसी अछूते वन्य प्रदेश को लौट जाऊंगा जहां के निवासियों को विश्व इतिहास

का ज्ञान नहीं है ,उन वर्बर जातियों के बीच जिन को मैं प्यार करता हूँ। यद्यपि उन में से अधिकतर खूंख्वार दरिन्दों से भी ज्यादा खूंख्वार हैं। केवल वहीं पहुंच कर मेरे टूटे हुए मन को शान्ति मिलेगी। वहीं विजय की मृत्यु से लगा ताजा घाव भरेगा।

इस प्रकार की आत्मश्लाघी बातों का कोई अन्त नहीं है, बात से बात निकल सकती है और निकलती रहेगी। यदि कभी आपकी दृष्टि मेरे इन विचारों पर, जिन को मैंने यहां व्यक्त किया है, पड़ जाये तो मेरा निवेदन है कि आप उनको भूलें नहीं , क्योंकि जिस घटना का वर्णन मैं करने जा रहा हूँ उसका इन विचारों से बहुत कुछ सम्बन्ध है। इसके अतिरिक्त ऐसी विचार-धारा न आपको इस से पहले सुनने को मिली होगी और संभव है आगे भी न मिले।

१

अध्याय

विजय की मृत्यु के दो सप्ताह बाद की बात है कि मैं शाम को अपनी आदत के अनुसार हाल में चक्कर काट रहा था और अपना प्रोग्राम निश्चित कर रहा था कि किसी ने बन्द दरवाजे को खटखटाया। मैंने स्वयं जाकर दरवाजे को खोला। बाहर मेरे मित्र कुंवर सुरेश सिंह और कैप्टिन संतप्रसाद खड़े थे। क्योंकि सरदी अधिक थी इसलिये हम तीनों रूम हीटर के सामने बिछी हुई कुर्सियों पर बैठ गये।

इस स्थान पर अपने दोनों दोस्तों का परिचय दे देना अनुचित न होगा। कुंवर सुरेश सिंह राजा साहिब बानपुर के छोटे भाई हैं। उम्र होगी कोई ३८-४० वर्ष, लंबा चौड़ा स्वस्थ शरीर, गोरा रंग, ऊपर मुड़ी हुई मूछें, कांतिमान चेहरा और बहुत ही प्रभावशील व्यक्तित्व था। वह विधुर थे, स्त्री की मृत्यु हुए कोई १० वर्ष हो गये थे परन्तु दूसरा विवाह नहीं किया था। संतान भी कोई न थी। चरित्र गंगाजल के समान पवित्र था। कई बार योरुप और अमेरिका घूम आये थे। विषयों के दास नहीं थे, साक्षात देव तुल्य थे। कैप्टिन संत प्रसाद रायल नेवी के अवसर प्राप्त अफ़सर थे। युद्ध में असाधारण वीरता दिखाने के कारण डी० ऐस० ओ० का पदक भी मिल चुका था। जर्मन सबमैरीन "ऐम-डन" को डुबोते समय कैप्टिन घायल हो गये थे इस कारण ससम्मान अवकाश दे दिया गया था। आयु थी कोई ४० वर्ष, सारी दुनियाँ घूमे हुए थे। विवाह किया नहीं था, कुटुम्बी थे या नहीं हम को कुछ पता नहीं। बड़े मस्त जीव थे। उनका सिद्धान्त था कि जब शुद्ध और ताज़ा दूध बाज़ार में मिल सकता है तो घर गाय पालने की क्यों ज़हमत उठाई जाये। सुसाइटी में उनकी अनेकों कहानियाँ मशहूर थीं।

इन दोस्तों से मेरा परिचय अकस्मात ही 'कुवेर के खजाने' की तलाश के समय हो गया था। घटनावश या कहिये भाग्यवश हम तीनों का मिलन हुआ था, तीनों ने असंभावनीय तथा दुर्घप कठिनाइयों को झेल कर कुकुआना लैण्ड की यात्रा की थी। और 'कुवेर के खजाने' का पता लगाया था। यह घटना आज से कोई १५-१६ वर्ष पहले की है परन्तु हमारी मैत्री अब भी कायम है और हम तीनों एक ही सूत्र में बंध गये हैं।

मुझे अपने सम्बन्ध में केवल इतना बता देना है कि मेरा नाम है लाल वसंतसिंह। मेरे मित्र मुझे लाल साहिब कह कर पुकारते हैं। सन् ६० के अकाल में पेट की ज्वाला को शांत करने के लिये लड़कपन में ही प्रतिज्ञाबद्ध कुली के रूप में मारीशस गया था और वहां से अफ्रीका। पूरे चालीस वर्ष मैंने अफ्रीका के घने जंगलों में व्यतीत किये। अनगिनती मुहिमें सर की, सैकड़ों शेरों का शिकार किया और अंत में 'कुवेर के खजाने' का पता लगा कर असंख्य धन दौलत प्राप्त की। ऐसी ही एक साहसिक यात्रा के समय घटनावश विशाला, विजय की मां, से परिचय हुआ और वहीं विजय का जन्म हुआ। फिर जन्मभूमि की याद ने हुरपेटा, अफ्रीका छोड़ना मुझे पसन्द नहीं था परन्तु इसी बीच विशाला मुझे अकेला छोड़ कर स्वर्ग चली गई। विजय का भविष्य सुधारने के लिए मैं भारतवर्ष लौट आया और प्रयाग में कोठी बनवा कर रहना शुरू किया। कुंवर साहिब और कैप्टिन पहले से प्रयाग में रह रहे थे, इसी कारण मैंने प्रयाग पसंद किया था। बहुत तलाश करने पर भी ४० वर्ष पहले कुटुम्बियों का कोई खोज नहीं मिला। प्रयाग का रहना भाया तो नहीं था परन्तु विजय के भविष्य को ध्यान में रखते हुए मजबूरन हाथ पांव तोड़ कर अकर्मण्य सा प्रयाग में रहना ही पड़ा। बाद की घटना आपको प्रस्तावना से मालूम हो ही गई होगी। इस समय मैं इस विशाल संसार में अकेला हूँ, भाई बहिन, स्त्री पुत्र, पिता माता, कुटुम्बी स्वजन कोई नहीं हैं मेरे, केवल कुछ संस्थायें हैं जो मेरे दिये धन से चल रही हैं। उन्हीं से केवल मेरा नाता है अन्यथा मैं एकदम एकाकी हूँ। उपरोक्त परिचय से आपको इस घटना की पृष्ठभूमि मालूम हो गई होगी।

दोनों के आराम से बैठ जाने पर मैंने बात चलाते हुए कहा, "आप लोगों ने जो यहाँ आने की तकलीफ की उसका धन्यवाद। ऐसी सरदी में बाहर निकलना वाक़ई बड़े जीवट का काम है।"

दोनों में से किसी ने उत्तर नहीं दिया बल्कि कुंवर साहिब ने बड़े इत्मीनान से अपनी जेब से तम्बाकू का डिब्बा निकाला और अपने पाइप में तम्बाकू भर कर उसे दियासलाई जलाकर सुलगाया। दियासलाई के प्रकाश से कुंवर साहिब का सारा मुख उज्ज्वल हो उठा और सहसा मेरा ध्यान उनकी सुन्दरता तथा मुख की गठन की ओर गया। कितना सुन्दर और दृढ़ था वह मुख। शांत तथा दृढ़ मुख, किताबी चेहरा, सांचे में ढला अङ्ग, बड़ी बड़ी भूरी आंखें, सुनहरी बाल, छोटी सी फ्रैंचकट डाढ़ी, पुरुषोचित सुन्दरता की अनुपम छवि थी। जैसी सुन्दर मुख की गठन थी वैसा ही सांचें में ढला उनका शरीर भी था। इतने चौड़े कन्धे और छाती की इतनी पुष्ट मांस पेशियाँ मेरे देखने में बहुत कम आई हैं। कुंवर साहिब की गठन ऐसी है कि ६ फीट ३ इंच उनका क़द होने पर भी वह बहुत लंबे नहीं मालूम पड़ते हैं। कुंवर साहिब की ओर देखते हुए मुझे सहसा विचार आया कि मेरा छोटा दुबला पतला शरीर और सूखा मुरझाया सा चेहरा उनके पुष्ट तथा स्वस्थ शरीर के मुक़ाबिले में कितना भद्दा और अजीब लग रहा था। आप एक दरमियाने क़द के दुबले पतले, सूखे पीले चेहरे वाले ५३-५४ वर्ष के ऐसे मनुष्य की कल्पना कीजिये जिसके लंबे लंबे दुबले पतले हाथ हों, बड़ी बड़ी भूरी आंखें हों, शिर पर छोटे छोटे खिचड़ी बाल, छूछे बुरुश की तरह खड़े हों और जिसका वज़न केवल १ मन १४ सेर हो। इस तरह आप मुझ लाल वसंतसिंह की कल्पना कर सकते हैं, जिसे साधारणतया लोग शिकारी लाल साहिब कह कर पुकारते हैं या जिसे अफ़्रीका के आदिवासी मैकुमाज़न कहा करते थे और जिसके सम्बन्ध में अफ़्रीका के घोर बनों में निवास करने वाले आदिवासियों के वीच यह जनश्रुति फैली हुई है कि वह रात्रि को भी दिन ही की भांति देख सकता है।

मेरे दूसरे मित्र कैप्टिन संतप्रसाद हम दोनों से भिन्न हैं, साधारण क़द, खुलता सांवला रंग, भारी बदन, तेज़ चमकीली काली आंखें और एक आंख पर लगा हुआ चश्मा। मुझे यह कहते दुख होता है कि कुछ

दिनों से कैप्टिन का शरीर बहुत ही लज्जास्पद तेजी से स्थूल होता जा रहा है। कुंवर साहिब का कहना है कि बेकारी और अधिक मात्रा में स्वादिष्ट भोजन करने से ऐसा हो रहा है और जब कैप्टिन से यह बात कही जाती है तो वह बुरा मान जाते हैं। उनको यह वहम है कि हम उनके स्थूल शरीर को नजर लगाते हैं, परन्तु तोंद की बढ़ती गोलाई से वह भी इन्कार नहीं कर पाते हैं।

हम कुछ देर तक बिल्कुल चुपचाप बैठे पाइप पीते रहे, फिर बढ़ते हुए अंधेरे के कारण मैंने बिजली का स्विच दबा कर कमरे में प्रकाश कर दिया। फिर मैंने अलमारी से व्हिस्की की बोतल, सोडा और तीन गिलास निकाल कर मेज़ पर रख दिये। मुझे ऐसे छोटे छोटे कामों के लिए नौकरों को बुलाना या पुकारना बुरा लगता है, इसलिये यह सभी काम मैंने स्वयं कर लिये। मुझे यह भी पसन्द नहीं कि नौकर मेरे सिर पर खड़े रहें और इस तरह मेरी ख़िदमत करें जैसे मैं साल का बच्चा होऊं। इस बीच कुंवर साहिब या कैप्टिन ने एक शब्द भी नहीं कहा था। भावों की प्रबलता हो जाने पर वाणी मूक हो जाती है। मैं उनके मन में उठने वाले तूफान का अन्दाज लगा सकता था और इस कारण उनकी उपस्थिति मात्र ही मेरा दुख बंटाने के लिए काफ़ी थी। विजय की मृत्यु के बाद यह दोनों पाँचवीं बार मेरे पास आये थे। दुख के समय मित्रों की उपस्थिति मात्र ही दुखी हृदय को शक्ति प्रदान करती है शब्दों का आडम्बर जाल नहीं, वह तो उल्टा घावों को कुरेद देता है, बिल्कुल उसी प्रकार जैसे जंगली जानवर तूफान आने पर झुंडों में एकत्रित हो जाते हैं परन्तु शोर गुल करना बिल्कुल बन्द कर देते हैं।

आखिर मैंने ही मौन तोड़ा, "कुंवर साहिब हमें कुकुआना लैण्ड से लौटे कितने दिन हो गये हैं?"

"तीन वर्ष," कैप्टिन ने फौरन जवाब दिया," मगर यह पूछ क्यों रहे हैं?"

"मैंने इसलिये पूछा, क्योंकि मेरा विचार है कि मुझे सभ्य समाज के बीच रहते काफ़ी समय हो गया है। मैं अफ्रीका के जंगलों को लौट जाने की सोच रहा हूँ।" मेरी बात सुन कर कुंवर साहिब अपनी आराम कुर्सी में और भी धंस गये और इत्मीनान से पैर फैलाते हुए

अपनी विचित्र हंसी से कमरे को गुंजा दिया। "कितनी विचित्र बात ! क्यों है न कैप्टिन ?"

कैप्टिन ने अपने चश्मे में से मुझे घूरते हुए कहा, "हां वाक़ई, बड़ी विचित्र बात है।"

मैं उल्लू बन गया। बारी बारी से दोनों का मुंह ताकते हुए मैंने कहा, "क्यों क्या बात है? क्या कहीं से कुछ पा गये हैं जो हमें नहीं बताते?"

"आप अब भी नहीं समझे लाल साहिब," कुंवर साहिब ने पूछा, "यहाँ आते समय हम रास्ते में बात करते आ रहे थे।"

"इसमें नई बात क्या है," मैंने कहा क्योंकि कैप्टिन के बातून और मग़ज़चट्ट होने की बात सभी जानते हैं। "मगर यह तो बताया ही नहीं कि बातें क्या कर रहे थे?"

"आपको क्या ख्याल है?" कुंवर साहब ने पूछा। मैंने अपना सिर हिला दिया। कैप्टिन के पास बातें करने के लिए इतने विषय हैं कि यह अनुमान लगाना कि किस विषय पर उनकी बातें हो रही थीं असम्भव है।

"हम दोनों ने सलाह की है कि अगर आप राज़ी हों तो हम अपने बिस्तरे गोल करके एक बार फिर अफ़्रीका की यात्रा को निकल पड़ें।"

कुंवर साहब की बात सुनते ही मैं उछल पड़ा, "सच, क्या आप सच कह रहे हैं।"

"हां, लाल साहब, मेरा यही ख्याल है और कैप्टिन भी हम से सहमत हैं। क्यों कैप्टिन ठीक है न ?"

"हां, बिल्कुल ठीक," कैप्टिन ने जवाब दिया।

"लाल साहब," कुंवर साहब ने बड़ी संजीदगी से कहना शुरू किया, "मैं इस नकली जीवन से ऊब उठा हूं। ग़रीब देशवासियों पर राजा या कुंवर बन कर शान गांठना मेरे बस की बात नहीं है। हमारे देशवासी भी राजा रजवाड़ों से ऊब चुके हैं। पिछले दस महीने तो मैंने ऐसी बेचैनी से बिताये हैं जैसे खतरे का आभास पाकर जंगली हाथी परेशान और बेचैन हो जाता है। मैं बराबर कुकुआना लैण्ड, गगूल और कुबेर के ख़ज़ाने के स्वप्न देखता रहता हूं। शायद आपको विश्वास नहीं होगा मुझे एक तरह की बहशत सी होती जा रही है। मै चिड़ियों और कबूतरों का शिकार करते करते थक गया हूं, मैं एक बार

फिर खूंख्वार जानवरों के शिकार का मजा लेना चाहता हूँ। यह तो आप जानते ही हैं लाल साहब जो एक बार मीठा दूध पी लेता है उसे छाछ कब सुहाती है। वह एक वर्ष जो मैंने आप के साथ कुकुआना लैण्ड में बिताया था वही मुझे अपने जीवन का सबसे सुन्दर भाग लगता है। जीवन के वैसे एक वर्ष के बदले मैं अपनी सारी आयु दे सकता हूँ। यह धन वैभव, जमीन जायदाद, भाई बान्धव, देश सभ्यता, मित्र कुटुम्बी सभी को छोड़ कर चले जाना मूर्खता तो अवश्य होगी लेकिन मैं मजबूर हो गया हूँ, लाल साहब। कोई शक्ति मुझे अफ्रीका के जंगलों की ओर खींच रही है, मैं अपने को रोकने में असमर्थ पा रहा हूँ। मैंने जाने का निश्चय कर लिया है।" एक क्षण तक रुक कर कुंवर साहब फिर कहने लगे, "और मेरे जाने में रुकावट ही क्या है ? स्त्री पुत्र, माता पिता कोई भी तो नहीं है मेरे। भैया भाभी अवश्य हैं परन्तु उनसे मेरे विचारों का मेल नहीं खाता। उनका ईश्वरीय अधिकार (Divine right) पर दृढ़ विश्वास है और मैं समानता का उपासक हूँ, वह वर्ग युक्त समाज के स्वप्न देखते हैं और मैं वर्गहीन के; वह क्रान्ति और परिवर्तन के नाम से घबराते हैं और मेरा उस मानसिक गुलामी में जी घुटता है। अकर्मण्य बने रह कर रियाया के खून पसीने की कमाई को जबरदस्ती छीन कर उस कमाई पर ऐश करना मेरे सिद्धान्तों के खिलाफ है। बानपुर का राज्य उनको मुबारिक हो। मैं तो जो किसी के काम न आ सके वह एक मुश्ते गुबार हूँ।"

"ओह, मुझे पूरा विश्वास था कि एक न एक दिन आप जरूर ही इस रास्ते को पकड़ेंगे। अच्छा कप्टिन आप क्यों जंगलों की खाक छानने को उतारू हैं ?"

"यह तो आप जानते ही हैं कि मैं बिना मतलब कोई काम नहीं करता हूँ। मेरी तरफ इस तरह घूर कर न देखिये जनाब। इसका मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं किसी स्त्री बिस्त्री के चक्कर में नहीं फंसा हूँ। सच मानिये इस बार कोई ऐसी बात नहीं है।"

"तो फिर क्या बात है ?"

"जानना ही चाहते हैं ? मुझे कहते शर्म आरी है, बात जरा बेहूदी सी है, मगर दोस्तों से क्या परदा। असल बात यह है कि कुछ दिनों से मेरी तोंद गर्भवती स्त्री की तरह बढ़ती जा रही है।"

"चुप भी करो कप्टिन," कुंवर साहब ने डांट कर कैप्टिन को आगे बोलने से रोक दिया। "अच्छा लाल साहब, आप के ख़्याल से कहां चलना ठीक रहेगा?"

उत्तर देने से पहले मैंने पाइप में तम्बाकू भरा और उसे सुलगा कर दो तीन गहरे कश खींचे। "क्या आप दोनों ने केनिया पहाड़ के बारे में कभी सुना है?"

"मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि वह है कहां," कैप्टिन ने फ़ौरन ही जवाब दिया।

"क्या आप लोगों ने लामू द्वीप का नाम सुना है?" मैंने फिर पूछा।

"क्या वही लामू द्वीप है जो जंजीबार से ३०० मील उत्तर की ओर है?" कुंवर साहब ने पूछा।

"हां वही, तो सुनिये मेरा प्रोग्राम है कि हम यहाँ से लामू द्वीप जायें और वहां से २५० मील तक बनखण्डों और पर्वतों को पार करते हुए केनिया पहाड़ पहुंचें। केनिया पहाड़ से और २०० मील अन्दर की ओर चल कर लेकाकिसीरा पहाड़ तक चलें। मैंने सुना है कि सभ्य जाति का कोई भी व्यक्ति आज तक वहाँ नहीं पहुंच सका है। वहाँ पहुंच कर आगे का प्रोग्राम बड़ी आसानी से बनाया जा सकेगा। क्या राय है आप लोगों की इस सम्बन्ध में?"

"काम तो बहुत टेढ़ा है," कुंवर साहब ने ज़रा सोच कर जवाब दिया।

"आप ठीक कहते हैं, काम वाक़ई बहुत टेढ़ा है। मगर यह भी सत्य है कि हम तीनों जीवन के बिल्कुल नये पहलुओं की खोज में हैं हम इस वातावरण से दूर भाग जाना चाहते हैं और मुझे यकीन है कि इस सफ़र में हमारी इच्छा पूरी होगी। मैं वर्षों से उस ओर जाना चाह रहा हूँ और अगर ईश्वर ने चाहा तो मरने से पहले एक बार वहां अवश्य ही जाऊँगा। विजय की मृत्यु ने सभ्य संसार से मेरा आख़िरी नाता तोड़ दिया है, और मैं अफ्रीका के बन्य प्रदेशों को जाने के लिये तैयार बैठा हूँ। उस ओर जाने की एक वजह और भी है। बीसियों वर्षों से मैं अफ्रीका की अर्ध सभ्य जातियों के मुँह से यह जनश्रुति सुनता आ रहा हूँ कि उत्तर की ओर के इस अनजाने देश में

किसी स्थान पर कोई श्वेतांग जाति निवास करती है। मेरा विचार है कि खोज कर देखूं कि इस जनश्रुति में कुछ सत्यता है या नहीं। अगर आप लोग भी चल रहे हैं तो ज़हे क़िस्मत, वरना बन्दा अकेला ही चला जायेगा।"

"मै आप के साथ हूँ, मगर मुझे वहाँ किसी श्वेतांग जाति के होने वाली बात में तनिक भी विश्वास नहीं है," कुंवर साहब ने उठ कर मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"मैं भी राज़ी हूं केनिया पहाड़ के आसपास के जंगलों में किसी अज्ञात श्वेतांग जाति की तलाश जिस की मौजूदगी में मुझे तनिक भी विश्वास नही है, वाक़ई वड़ी दिलचस्पी की चीज़ होगी। मेरे लिए तो सभी जगह एक सी हैं।" कैप्टिन ने हंस कर कहा।

"तो कब चलने का इरादा है?" कुंवर साहब ने पूछा।

"आज १६ दिसम्बर है, २६ जनवरी को हम यहाँ से चल देंगे। ३१ जनवरी को बम्बई से बृटिश इंडिया स्टीमशिप कंपनी का 'जलकेतु' मोम्बासा जा रहा है उसी से चलेंगे। और कैप्टिन यह न समझिये कि जिस के सम्बन्ध में आप ने कुछ सुना नहीं है उस चीज़ का अस्तित्व संसार में हो ही नहीं सकता। याद कीजिये कि आप को 'कुबेर के खज़ाने' के होने की बात पर भी तो यकीन नहीं आया था।

❀ ❀ ❀

उपरोक्त बातचीत को कोई १४ सप्ताह बीत गये थे और अब घटना चक्र बिल्कुल ही नये वातावरण में पहुंच गया था।

बहुत खोज और पूँछताँछ के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे थे कि केनिया पहाड़ जाने के लिए मोम्बासा के स्थान पर ताना नदी के मुहाने पर बसे लामू नगर से, जो जंजीबार से ३०० मील है, अधिक आसानी रहेगी। अदन में एक जर्मन व्यापारी से बातचीत करते समय हमें इस बात का पता लगा था और इस कारण हम मोम्बासा जाने का ख्याल छोड़ कर ताना नदी के मुहाने पर बसे लामू में ही उतर पड़े। लामू में ठहरने का कोई अच्छा स्थान न होने से हम सीधे बृटिश काउंसिल के सरकारी भवन को चले गये। वहाँ हमारा दिल खोल कर स्वागत हुआ।

लामू बड़ा विचित्र शहर है। उसकी जो बात मुझे कभी न भूलेगी वह है वहाँ की ग़िलाज़त, गंदगी और नाक सड़ा देने वाली बदबू। वहाँ

तो वहां इतनी थी कि खाना पीना तक हराम था। काउन्सलेट भवन के नीचे ही जहाज़ ठहरने की जैटी है, साधारण मिट्टी का एक ऊंचा चबूतरा ही जैटी का काम देता है। ज्वार आने पर वहाँ पानी गहरा हो जाता है और भाटा के समय पानी उतर जाने पर सारी बस्ती का कूड़ा, मैल, पाख़ाना सभी वहॅ इकट्ठा हो जाता है। इसी कीचड़ में बस्ती की औरतें गढ़े खोद कर नारियल दबा जाती हैं और पानी में ऊपरी खाल के सड़ जाने पर उन्हें निकाल लेती हैं और सड़ी खाल को कूट कर रेशों से चटाइयाँ वग़ैरा बनाती हैं।

और यह काम पीढ़ियों से होता आया है, इस कारण इस स्थान की बदबू और वीभत्सता बयान नहीं की जा सकती, उसका अनुमान ही लगाया जा सकता है। मैंने अफ्रीका के घने जंगलों में बुरी से बुरी बदबूयें सूंघी हैं लेकिन लामू की सड़ाँद और बदबू सब पर बाज़ी ले गई है। शायद इसी कारण यहाँ बुखार बहुत फैलता है।

"अच्छा तो, आप लोगों का इरादा किधर जाने का है?" खाना खाने के बाद पाइप जलाते हुए हमारे अतिथि काउंसिल ने पूछा।

"हमारा इरादा केनिया पहाड़ जाने का है और वहाँ से लेकाकिसीरा पहाड़ को," कुंवर साहब ने जवाब दिया। "लाल साहब ने कहीं से यह चण्डू ख़ाने की गप सुन पायी है कि इन पहाड़ों से परे अज्ञात जंगलों के बीच कोई श्वेतांग जाति निवास करती है।"

"मैंने भी इस संबंध में कुछ उड़ती पुड़ती ख़बरें सुनी हैं," काउंसिल ने हमारी बात में दिलचस्पी लेते हुए कहा।

"आपने क्या सुना है इस संबंध में," मैंने पूछा।

"बहुत ज्यादा नहीं, मैं सिर्फ इतना बता सकता हूँ कि कोई दो वर्ष पहले मुझे फ़ादर मैकैन्ज़ी की एक चिट्ठी मिली थी, फादर मैकैन्ज़ी एक स्कौच पादरी हैं जिनकी कोठी 'हाईलैण्ड' ताना नदी के किनारे उस स्थान पर है जहाँ से आगे नावें भी नहीं जा सकतीं। मगर इस सम्बन्ध में उस चिट्ठी में भी कुछ ज्यादा नहीं लिखा हुआ था।"

"वह चिट्ठी आपके पास है?" मैंने पूछा।

"नहीं, मैंने उसे फाड़ दिया था। उस चिट्ठी में केवल यही लिखा था कि उनकी कोठी पर कोई आदमी आया था जिसका कहना था कि लेकाकिसीरा पहाड़ से दो महीने की यात्रा दूरी पर जहाँ आज तक

किसी सभ्य मनुष्य के पैर नहीं पड़े हैं, उसे एक झील लागा नामी मिली थी और वहाँ से एक महीने उत्तर की ओर चलने पर दलदलों, काँटेदार झाड़ियों, जंगलों और चटियल पहाड़ों को पार करके वह ऐसे देश में जा पहुंचा था जहाँ कोई श्वेतांग जाति पत्थरों की बनी विशाल इमारतों में रहती है। वहाँ कुछ दिनों तो उसे बहुत ही ख़ातिरदारी से रखा गया मगर बाद को वहाँ के पुरोहितों ने यह बात फैला दी कि वह मनुष्य नहीं वल्कि पिशाच था और इसलिये उस शहर वालों ने उसे वहाँ से खदेड़ दिया। आठ महीने की लगातार यात्रा करके वह मृतप्राय अवस्था में फ़ादर मैकैन्ज़ी की कोठी पर पहुँचा था। बस मुझे इतना ही मालूम है। और सच तो यह है कि मेरी राय में यह सब कहानी झूठी और मनगढ़ंत है। अगर आप इस संबंध में और अधिक जानना चाहते हैं तो यह अच्छा होगा कि आप लोग ताना नदी में चढ़ाव की तरफ जाकर फ़ादर मैकैन्ज़ी की कोठी तक जायें और उन्हीं से सारा हाल पूछ लें।"

मैंने कुंवर साहब की ओर देखा, उनके मुख पर अब भी अविश्वास झलक रहा था। "मेरा ख़्याल है कि हमें फ़ादर मैकैन्ज़ी के पास चलना चाहिये," मैंने कहा।

"ठीक," काउंसिल ने कहा, "ऐसा करना ही ठीक होगा। लेकिन मै आप लोगों को पहले से ही यह बता देना अपना फ़र्ज समझता हूँ कि वहाँ का सफर बहुत दुश्वार है और आपको वहाँ पहुँचने में बहुत ही तकलीफ़ होगी। मेरे सुनने में यह भी आया है कि लुटेरे मसाई गिरोह बना कर इस तरफ़ आये हुए हैं और यह तो आप जानते ही होंगे कि वह बहुत ख़तरनाक होते हैं। आपके लिए यह वेहतर होगा कि आप यहाँ से कुछ चुने हुए आदमियों को घरेलू नौकरों और शिकारियों की तरह अपने साथ ले जाये और बोझ ढोने वाले मजूरों को रास्ते में रखे। इससे आप लोगों को परेशानी तो जरूर होगी मगर एक तो इस तरह खर्च कम पड़ेगा और एक लम्बा कारवाँ लेकर चलने की दिक़्क़त बचेगी और दूसरे मजूरों के बीच रास्ते से भाग जाने का डर भी नहीं रहेगा।"

सौभाग्य से इसी समय लामू में वक़वाफी अस्करियों (सिपाहियों) का एक जत्था आया हुआ था। मसाई और बांटावेटा जातियों के मेल

से बनी वक़वाफी जाति बहुत वीर और साहसी होती है, जूलू जाति के प्रायः सभी उत्तम गुण उनमें पाये जाते हैं और नवीन बातों को सीखने की उन में अद्भुत शक्ति होती है। बकवाफी शिकारी भी अच्छे होते हैं। बकवाफी अस्करियों का यह जत्था मोम्बासा से एक अंगरेज़ यात्री जटसन के साथ अफ्रीका के सबसे ऊंचे ज्ञात पर्वत किलीमंजारो की परिक्रमा करके लौटा था। दुर्भाग्य से वहाँ से लौटते समय मोम्बासा से एक दिन की यात्रा दूरी पर बुखार से जटसन की मृत्यु हो गई। अफ़सोस 'टूटी कहाँ कमन्द जब कि दो चार हाथ लबे बाम रह गया।' उसके साथ के शिकारी उसे रास्ते में ही दफ़न करके पालदार नावों में बैठ लामू आ गये थे। हमारे मित्र काउंसल ने इन शिकारियों को नौकर रखने की सलाह दी। यह सलाह हम सब को पसद आई और इसलिये दूसरे दिन एक दुभापिये को साथ लेकर हम उन से मामला तय करने के लिए गये।

उनका डेरा तलाश करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। वह बस्ती के बाहर एक छोटी सी कच्ची झोंपड़ी में टिके हुए थे। तीन व्यक्ति झोंपड़ी के बाहर बैठे थे. स्वस्थ शरीर और पुष्ट मांस पेशियाँ, सूरत शक्ल से कुछ सभ्य से दिखाई देते थे। बहुत घुमा, फिरा कर हमने मतलब की बात कही मगर उन्होंने साफ मना कर दिया। एक ने कहा वह इतनी लम्बी यात्रा से थक गये थे; दूसरे ने कहा अंगरेज मालिक की मृत्यु से वह बहुत दुखी हो रहे थे और अपने देश को लौट कर आराम करना चाहते थे, इत्यादि।

बात न बनती देख कर मैंने उनसे अन्य तीन साथियों के बारे में पूछा। एक ने बताया कि वह झोंपड़े में सो रहे थे। मेरे कहने पर एक ने जाकर उन तीनों को जगा दिया। उनके औंघते जम्हुआते झोंपड़ी से निकलने पर मैंने देखा कि दो तो स्पष्टतया उसी जाति के थे जिनसे मैं बातचीत कर रहा था, परन्तु तीसरे व्यक्ति को देखते ही मैं खुशी से उछल पड़ा। वह लम्बा चौड़ा दोहरे बदन का व्यक्ति था, क़द ६ फुट ३ इंच से कम नहीं था और छाती और बाहों को उभरी मांस पेशियाँ उसकी असीम शक्ति को बता रहीं थी। उसे देखते ही मैंने जान लिया कि वह बकवाफ़ी नहीं था, वह शुद्ध जुलू नस्ल से था। भरी नींद से अस-मय जगाये जाने के कारण उसकी आँखें मुंदी हुई थीं और जम्हुआई

रोकने के लिए उसने अपना हाथ मुँह के सामने कर रखा था। इसलिये मैं उसके चेहरे को तो न देख सका हाँ इतना अवश्य देखा कि वह केशलाधारी* या कड़ाधारी था और उसके माथे के बीचों बीच एक बड़ा सा तिकोना छेद था। दूसरे ही क्षण मुँह पर से हाथ हटते ही उसकी जुलू शक्ल मेरे सामने थी, हंसमुख चेहरा, छोटी सी उलझी हुई डाढ़ी जो कि भरी हो चली थी और गिद्ध जैसी तेज़ और चमकीली आँखें। मै उसे देखते ही पहिचान गया, यद्यपि पिछले १२ वर्षो से मैंने उसे नहीं देखा था। वह मेरा पुराना शिकारी था जिसके साथ मैंने वर्षों जंगलों में विताये थे। मैंने धीरे से जुलू भाषा में उससे पूछा, "क्या हाल है अमस्तोपागस, अच्छा तो है?"

वह लम्बा व्यक्ति, जिसके जन्म और अद्भुत कारनामों की विचित्र कहानियाँ जुलूलैण्ड में प्रसिद्ध में और जो अपनी जाति में "कठफोड़वा" और "यमराज" के नाम से प्रसिद्ध है, मेरी बात सुनते ही चौंक पड़ा और विस्मय के कारण उसके हाथ के हाथ का फ़रसा ज़मीन पर गिर पड़ा। पलक झपते ही उसने भी मुझे पहिचान लिया और खुशी से पागल होकर जुलू रीति से मेरा अभिवादन करने लगा।

"कूस (मालिक), कूस पगाते (पुराने मालिक), कूस ये अमकूल (शक्तिशाली मालिक), कूस, बावा, मैकुमाज़न, मालिक, हाथियों को मारने वाला कूस, शेरों को चबा जाने वाला मालिक, शेर का दिल वाला, जिसकी गोली कभी ख़ता नहीं करती. जिसका वार कभी ख़ाली नहीं जाता, जो कभी साथियों का हाथ नहीं छोड़ता (सच्चा मित्र), मेरे मालिक तू जिन्दा है? सुन तो, नेटाल से कोई ख़बर लाया कि "मैकुमाज़न मर गया", "मैकुमाज़न अब नहीं है," वह लगातार एक सांस बके जा रहा था, "इस

---

* जुलू जाति में जो व्यक्ति युद्ध क्षेत्र मे नाम पैदा करते हैं या जो आयु या धन के बल पर मुखिया बन जाते हैं या जिस के अधिक स्त्रियाँ होती हैं वह व्यक्ति सिर पर केशला पहिन सकता है। यह केशला या छल्ला बालो पर काला गोंद लगा कर बनाया जाता है और लगातार पालिश करते रहने से उसका रंग चमकदार काला हो जाता है। जब तक कोई व्यक्ति केशला पहनने योग्य नहीं हो जाता उसे छोकरा ही समझा जाता है चाहे उसकी आयु कितनी भी अधिक क्यो न हो गई हो।

बात को कोई एक साल हो गया और आज मैं देखता हूँ अपने मालिक को। मैं सुपना तो नही देख रहा हूँ-मालिक, नहीं, मैं जाग रहा हूँ, मेरे सामने मालिक ही खड़ा है। मैं होश में हूँ। मालिक तू जिन्दा है, मगर मालिक के बाल भूरे हो चले हैं। मालिक, क्या अब भी तेरी आँखें पहले जैसी तेज़ है? मालिक, तुझे याद होगा कि उस गुस्सैल अरने भैंसे को किस तरह तू ने एक गोली में ही ठण्डा कर दिया था। तुझे याद होगा मालिक······।"

अभी तक तो मैंने जान बूझकर उसे बकने दिया था क्योंकि मैं देख रहा था कि जूलू की बातों का अन्य पॉच वकवाफियों पर जो उसकी बोली समझते थे गहरा प्रभाव पड़ रहा था। परन्तु अब मैंने उसकी बक-वास बन्द कर दी। मुझे जूलू ढंग पर अपनी प्रशंसा सुनने से नफ़रत है।

"चुप रह", मैंने डाँट कर कहा, "क्या इतने दिनों से जो तूने मुझे नहीं देखा सो तेरी बोलती बंद थी जो अब खिड़की फाटक न पाकर फूट निकली है। तू इन आदमियों में क्या कर रहा है अमस्लोपागस? तू जिसे मैंने जूलू देश में सरदार की गद्दी पर बैठा देखा था, जिसके नाम से सारा जूलू देश काँपता था, जिस से लड़ना मौत को न्यौता देना था, तू इन आदमियों में क्या कर रहा है? क्या वजह है कि तू अपने जूलू देश से दूर यहाँ मजूरी कर रहा है और वह भी अजनबियों के साथ?"

मेरी बात सुन कर अमस्लोपागस का मुख लज्जा और दुख से काला पड़ गया और वह मेरी नज़र से छुपने के लिये अपने फरसें पर झुक गया। उसका फरसा साधारण गंडासे से कुछ बड़ा था और उसमें सफेद गैंडे के सींग का बना बहुत सुंदर दस्ता लगा हुआ था।

"मेरे मालिक, मुझे तुझसे कुछ कहना है लेकिन इन कमीनों के सामने मैं नहीं कह सकता। वह बात सिर्फ तेरे ही कानों के लिए है। मेरे मालिक मै सिर्फ इतना कह सकता हूँ," यह कहते कहते उसकी मुखमुद्रा कठोर हो गई, "एक औरत ने मुझे धोखा देकर मौत के मुँह में फंसा दिया मेरे मालिक। मेरे नाम पर कालिख लगा दी मालिक। खुद मेरी जोरू ने ही मेरे मालिक मुझे धोखा दिया—लेकिन मै मौत के मुँह से निकल आया मालिक। जो मुझे मारने आये थे, उनको मारता

काटता मैं जान बचाकर भाग आया। मैंने अपने फरसे इन्कूसीकास से सिर्फ तीन ही वार किये, जैसा मेरा मालिक जानता है, एक सीधी तरफ एक बायीं तरफ और तीसरा सामने और तीन आदमी मौत की नींद सो गये मालिक। और तब मैं वहाँ से भाग निकला और मेरा मालिक जानता है कि बूढ़ा हो जाने पर भी मैं ससाबी * से भी तेज़ दौड़ सकता हूँ और सारे जूलू देश में कोई ऐसा आदमी अभी तक भी मां के पेट से पैदा नहीं हुआ है जो दौड़ कर मुझे पकड़ ले। मै भागता ही चला गया मालिक। मेरे पीछे मेरी जान के ग्राहक दौड़े मगर मैं भागता ही चला गया।

"मै अपने कराल (पत्थर की झोंपड़ी) से भागा, रास्ते में मुझे धोखा देने वाली चाण्डालिनी झरने से पानी भरती मिली। मैं मौत के देव की तरह उसके पास से उड़ता हुआ निकला और भागते हुए मैंने अपनी इन्कूसीकास से एक वार किया और मेरे मालिक उस हरामज़ादी का सिर कटकर उसी की पानी भरी बाल्टी में गिर पड़ा। उसे मारकर मैं उत्तर की ओर भाग लिया। दिन रात मैं भागता ही चला गया, तीन महीने तक बिना रुके, बिना आराम किये, अपनी शर्म की बात भूलने के लिए भागता ही चला गया। इसी बीच मुझे जंगल में शिकारी साहिब मिला जो मर चुका है और उसके नौकरों के साथ मैं यहाॅ चला आया।

"मै अपने साथ कुछ नहीं ला सका मालिक। मै, सरदारों का सरदार, जिसकी नसों में चाका का ख़ून दौड़ रहा है, मै बहादुरों से भी बहादुर, जूलू कौम का सरदार, अपनी कौम का मुखिया, मैं असस्लोपागस आज आवारा फिर रहा हूॅ। मेरे घर है न द्वार। अपने इस फरसे को छोड़कर, जिसके बल पर मैं राज करता था, मैं और कोई चीज़ वहां से नहां ला सका मालिक। वहाॅ से नहीं ला सका जहाॅ मैं सरदार था, जहां मै फरसाधारी जूलू क़ौम पर हकूमत करता था। उन लोगों ने मेर ढोर डंगर आपस मे बॉट लिये है मेरे मालिक, मेरी लुगाइयों को उन्होंने ले लिया है, मेरी औलाद को मेरा चेहरा भी भूल गया है, लेकिन अपने इस फरसे से," यह कह कर उसने अपने भयंकर फरसे

---

*ससाबी—अफ्रीका का सबसे तेज दौड़ने वाला हरिण

को अपने सिर के ऊपर घुमाना शुरू किया और उसकी चमक और सरसराहट से डर कर हम सब पीछे हट गये, "अपने इस फरसे से मैं अपना रास्ता साफ कर लूंगा। सुन ले मालिक, मैंने कह दिया है।"

मैंने सिर हिला कर रज़ामन्दी दिखाई। "अमस्लोपागस मैं तुझे बहुत दिनों से जानता हूँ। तू हमेशा से ही महत्वाकाँक्षी रहा है, तेरी नसों में चाका महान का खून दौड़ रहा है, लेकिन मुझे डर है कि आख़ीर में तू अपनी सीमा से बढ़ गया। बहुत बरसों पहले जबकि तू पैंडा के लड़के सीटावायो के ख़िलाफ़ साज़िश कर रहा था तो क्या मैंने तुझे सावधान नहीं किया था? तूने मेरी मेरी बात मान ली और तू बच गया। लेकिन जब मैं तेरा हाथ रोकने के लिए तेरे पास नहीं था तो तूने अपने ही हाथों से अपनी क़ब्र खोद ली। ऐसा नहीं है क्या? लेकिन जो बीत गई सो बीत गई अमस्लोपागस। सूखे पेड़ को कौन हरा कर सकता है, कल के सूर्य को कौन देख सकता है, बोला लफ्ज़ कौन वापिस लौटा सकता है, कौन मुरदे को जिला सकता है? जिसको काल निगल लेता है वह फिर ज़िन्दा नहीं होता है, अमस्लोपागस। बीती को भूल जाने में ही भलाई है, अमस्लोपागस।

"और देख, अमस्लोपागस, मैं जानता हूँ कि तू बहादुर है और बहादुर सरदारों का ख़ून तेरी नसों में दौड़ रहा है, और तू जान जाने पर भी दोस्त का हाथ नहीं छोड़ेगा। जूलू देश में भी जहाँ का बच्चा बच्चा बहादुर और वीर है लोग तुझे "यमराज" के नाम से पुकारते हैं और रात को अलाव के चारों तरफ़ बैठ कर तेरी बहादुरी और कारनामों की कहानियाँ कहते हैं। अब मेरी बात सुन। तू मेरे इन ऊंचे क़द वाले दोस्त को देखता है," मैंने कुंवर साहिब की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह भी तुझ जैसे ही बहादुर और हिम्मत वाले हैं, तुझ जैसे ही ताक़तवर हैं, यह तुझे कंधे पर उठा कर फेंक सकते हैं। इनका नाम है इन्कूबू (शत्रु का काल), और तू उनको भी देखता है, वह जिनकी गोल तोंद है, जिनकी चमकीली आँख हैं और जो हमेशा हंसता रहता है। उनका नाम है बौगवान (सं० भगवान)। वह बहुत भला और सच्चा आदमी है और इन्सान की उस क़ौम से है जो पानी पर तैरते हुए करालों (मकानों) में रहते हैं।

"सुन, हम तीन घने जंगलों में जाना चाहते हैं। डोंगो ईगरी (श्वेत पर्वत—केनिया पहाड़) से भी परे अनजाने देश को जाने का हमारा इरादा है। वहाँ हमें क्या मिलेगा यह हमें विल्कुल नहीं मालूम। वहाँ हम शिकार खेलने, नई जगहों का पता लगाने और जोखिम की तलाश में जाते हैं। तू हमारे साथ चलेगा ? तुझे हम अपने शिकारियों और मजूरों का जमादार बना देंगे और हमें नहीं मालूम की वहाँ तुझ पर क्या बीतेगी। इससे पहले भी एक बार हम तीनों जोखिम की तलाश में निकले थे और तेरी ही तरह एक आदमी, अम्बोया को अपने साथ ले गये थे और तुझे मालूम है कि उसका क्या हुआ ? हमने उसे एक बड़े देश का राजा बना दिया था। उस मुल्क की दो दो सौ बहादुर, जवांमर्द सिपाहियों वाली २० पलटनें उसके हुक्म पर मरने मारने को तैयार रहती थीं। तुझे हमारे साथ चलने में क्या मिलेगा यह तो मै बता नहीं सकता, यह भी हो सकता है कि वहाँ मौत ही तेरी और हम तीनों की प्रतीक्षा कर रही हो। क्या तू भाग्य पर विश्वास करके हमारे साथ चलेगा, अमस्लोपागस या तू मौत से डरता है ?"

बूढ़ा सरदार मुस्कराया। "मैकुमाजन, मालिक, जो तूने कहा वह ठीक नहीं है। मैंने अपनी जिंदगी में बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ी हैं लेकिन केवल मेरी हविस ही मेरी बरबादी का कारण नहीं है। लेकिन मुझे कहते शर्म आती है मालिक कि एक लुगाई मेरी बरबादी का सबब हुई। मगर मालिक अब पुरानी बातों को कुरेदने से क्या फ़ायदा। तो मैकुमाजन, मालिक जिस तरह बहुत दिन पहले तूने जूलू देश में शिकार खेले थे और लड़ाइयाँ लड़ी थीं उसी तरह तू फिर नई चीजों की तलाश में अनजाने जंगलों और पहाड़ों को जा रहा है। मैं चलूँगा मालिक, मैं तेरे साथ चलूंगा। मरूं या जियूं, जीता रहूँ या मर जाऊँ क्या परवाह है मुझे, मुझे जिसका वार कभी खता नहीं करता और वार करते ही खून फव्वारा छूट जाता है। मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ मालिक, मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ, मगर खून की होली खेलने से मेरा अभी जी नहीं भरा है।

"मै अमस्लोपागस, लड़ाकू, बहादुरों से बहादुर, ज़रा मेरे घावों को देख मालिक," और यह कह कर उसने अपने सिर, हाथ, पाँव, पेट,

छाती पर लगे अनगिनती घावों, चोटों और खराशों के निशानों को दिखाया। "मेरे सिर के इस छेद को देखना है मालिक, इसमें होकर मेरा भेजा बाहर निकल पड़ा था मालिक, मगर मैंने अपने फ़रसे के एक ही वार से उसे काट कर फेंक दिया। वह मर गया और मैं जिंदा रहा। मैकुमाजन, मालिक क्या तुझे पता है कि मैंने अपने सामने की लड़ाइयों में कितनों को मौत की नींद सुलाया है ? देख उनकी कहानी यह लिखी हुई है," और यह कह कर उसने अपने फरसे में लगे सफ़ेद गैंड़े के सींग से बने दस्ते में खुदे दांतों को दिखाया। "इनको गिन ले मालिक, यह एक सौ तीन दांते हैं। इसमें मैंने उनको नहीं गिना है जिनको मैंने सिर से छाती तक चीर नहीं दिया था ❀ या जो मेरे हाथ से मारे जाने से पहले किसी और के हाथों जख्मी हो चुके थे।"

"अपनी जबान बन्द कर," मैंने जूलू को डांटा क्योंकि मैं देख रहा था कि उस पर खून सवार होने लगा था। "चुप कर, तेरी जाति वाले तुझे "हत्यारे" के नाम से ठीक ही पुकारते हैं। हमारे पास तेरी खूनी कहानी सुनने का समय नहीं है। कान खोल कर सुन ले, अगर तू हमारे साथ चलेगा तो हम सिवाय अपने बचाव के किसी और हालत में लड़ाई नहीं करेंगे। और सुन हमको नौकरों और मजूरों की ज़रूरत है। यह आदमी, यह कह कर मैंने उन वक़बाफी अस्करियों की ओर इशारा किया जो हम दोनों को बातें करते देख कर दूर जा खड़े हुए थे, "यह आदमी हमारे साथ चलने से मना करते हैं।"

"कौन चलने से मना करते हैं ?" चिल्ला कर अमस्लोपागस ने कहा, "चलने से मना करते हैं। वह है कौन सूअर का बच्चा जो मेरे मालिक के साथ चलने से मना करता है ? तू मना करता है," यह कह कर उसने उस वक़वाफ़ी को जा दबोचा जिससे मैंने सब से पहले बात की थी। उसका हाथ पकड़ कर अमस्लोपागस उसे घसीटता हुआ मेरे पास तक ले आया, "तू कुत्ते, तू मना करता है ? तूने कहा था कि मैं

❀ जूलू देश मे यह रिवाज है कि वह मृतक शत्रु का पेट चीर देते हैं। उनका विश्वास है कि यदि ऐसा न किया जाय तो जिस तरह उनके शत्रु का शव फूल जाता है उसी तरह उस शत्रु को मारने वाले का शव भी फूल जायेगा।

मालिक, मैकुमाज़न के साथ नहीं जाऊँगा। एक बार फिर तो कह और मैं तेरा सिर भुट्टा जैसे उड़ा दूँ।" यह कह कर उसने अपना फरसा संभाल लिया। "एक बार फिर तो कह कर देख, कुत्ता कहीं का।"

बक़वाफ़ी अस्करियों ने घबरा कर कहा, "चलने से मना करता ही कौन है, हम साहिब के साथ चलेंगे।"

"साहिब," गुस्से से लाल पीले होते हुए अमस्लोपागस ने चिल्ला कर कहा, "साहिब किसे कहता है तू नालायक़ कुत्ते।"

"हम मैकुमाज़न के साथ चलेंगे। "हम बड़े सरदार के साथ चलेंगे।"

"अब ठीक हुए न जाकर," यह कह कर अमस्लोपागस ने उस वक़वाफ़ी को इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि वह दूर जा गिरा।

जब हम वापिस लौट रहे थे तो कैप्टिन प्रसाद ने बहुत सोच विचार के बाद कहा, "ऐसा मालूम होता है कि इस अमस्लोपागस का अपने साथियों पर बहुत रौब दाब है।"

अध्याय २

काला हाथ

तीन दिन बाद हम लामू से रवाना हुए और दसवें दिन ताना नदी पर बसे एक दूसरे कस्बे छरी पहुँच गये। रास्ते में हमको जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ा उनको यहाँ लिखने की जरूरत नहीं है। रास्ते में हमको जंगलों के बीच छुपे हुए पत्थरों के ढोकों से बने एक विशाल परन्तु निर्जन नगर के खण्डहर मिले। यह नगर कौन सा था, कौन जाति यहाँ रहती थी, यहाँ के निवासी कहाँ चले गये, क्यों चले गये इत्यादि, इस संबंध में हमें कुछ भी मालूम न हो सका। और न हमने वहाँ रुक कर अधिक खोज या खुदाई ही की। यहाँ हमको एक छोटे से टीले पर जो जंगली कंटीली झाड़ियों और पत्थर के ढोकों से पटा पड़ा था, पत्थर की बनी इतनी सुन्दर किवाड़ों की जोड़ी मिली जिसकी तारीफ़ नहीं की जा सकती। चौखट और किवाडों पर इतनी सुन्दर पच्चीकारी थी और फूल पत्ते मूर्तियाँ इतनी सुन्दरता से तराशी गई थीं कि देख कर आश्चर्य होता था। किवाड़ों की उस जोड़ी को उठा ले चलने का मन तो बहुत हुआ परन्तु उसे ले चलने का बन्दोबस्त न होने के कारण मन मार कर उसे वहीं छोड़ना पड़ा। मेरा ख्याल यह है कि वह किवाड़ अवश्य ही किसी महल में लगे होंगे और संभव है कि वह टीला ही उस महल का ध्वंसाशेष हो। कितना विशाल नगर काल के गर्भ में समा गया, देख कर आश्चर्य होता था। परन्तु सत्य तो यह है कि संसार की प्रत्येक वस्तु नाशवान है। काल बली से न कोई बचा है और न बच ही सकता है। मोहनजोदड़ो, कसिया, तक्षशिला, बाबुल, चैल्डिया, निमिवा सभी तो काल के गाल में समा गये। जो जन्मा है वह अवश्य मरेगा, प्रकृति का यह नियम बदलता नहीं है। स्त्री और पुरुष, साम्राज्य और नगर, राज्य महल और उनमें रहने वाले, ऊंचे

पर्वत और घाटियाँ, नदियाँ और अथाह समुद्र, दिन और रात यहाँ तक कि समस्त ब्रह्माण्ड अपने समय पर काल के गर्भ में समा जाता है। इन खण्डहरों को देख कर हमें अन्दाज हुआ कि प्रकृति के सामने मनुष्य की क्या हस्ती है। हम सब नियति के हाथों में खिलौने मात्र हैं, किसी भी क्षण हमारा नाश हो सकता है।

छर्रा तक पहुँचने के लिए जिन मजूरों को हम ने रखा था उन्होंने छर्रा पहुँच कर ठहराये हुए पैसों से कहीं ज्यादा पैसे लेने के लिए झगड़ा करना शुरू कर दिया और उनके मेट से हमारा काफी झगड़ा हो गया। उसने हमारे पीछे मसाई लुटेरों को लगा देने की धमकी दी और इस पर कुंवर साहिब ने हन्टरों से उसकी खूब पूजा की। रात को वह अपने साथियों के साथ भाग गया और हमारा जो भी सामान उनके पास था उसे भी चुरा ले गया। सौभाग्य से हमारी रायफिलें, गोली बारूद और निजी वस्तुएं चोरी जाने से बच गईं क्योंकि वह अस्करियों के पास थीं। अब न हमारे पास सामान था और न इसलिये मजूरों की जरूरत ही थी। थोड़ा सा सामान था जिसे पाँचों वफादार अस्करी आसानी से उठा कर ले जा सकते थे। अब प्रश्न था कि आगे चला किस तरह जाये ?

कैप्टिन प्रसाद ने इस कठिनाई का हल बड़ी आसानी से ढूंढ निकाला। नदी की तरफ़ इशारा करते हुए कैप्टिन ने कहा, "देखो यहां नदी है और कल मैंने कुछ आदमियों को नाव में बैठ कर मछलियां पकड़ते देखा था। मैंने सुना है कि फादर मैकैन्जी का मिशन स्टेशन भी ताना नदी के किनारे पर ही है। तब क्यों न नॉव से वहाँ तक चला जाये।"

कैप्टिन की राय फ़ौरन मान ली गई और आसपास के गाँवों में ढूंढ कर काम लायक़ नावें ख़रीदने का काम मुझे सौंपा गया। तीन दिन की परेशानी के बाद मैं दो बड़ी डोंगियाँ खरीदने में सफल हुआ। यह डोंगियाँ पेड़ के तनों को खोखला करके बनाई गई थीं और प्रत्येक में ६ आदमी सामान समेत बैठ सकते थे। इन डोंगियों की ख़रीदारी में हमको प्रायः अपने सभी फ़ालतू कपड़े तथा कुछ अन्य छोटी मोटी वस्तुऐं बदले में देनी पड़ीं।

डोंगियां मिलने के अगले दिन ही हम छरों से चल पड़े। पहली नाव में कैप्टिन प्रसाद, कुंवर साहिब और तीन वफ़ावाफ़ी अस्करी बैठे और दूसरी में मैं, असस्लोपागस और बाक़ी दो अस्करी सवार हुए। क्योंकि हम को हर डोंगी में चार जोड़ी डांड चलाने पड़ते थे, जिसके मानी यह थे कि सिवाय कैप्टिन के जो रायल नेवी के कैप्टिन होने के कारण, दोनों डोंगियों का कप्तान बना दिये गये थे, हम सब को सवेरे से शाम तक डांड चलाने पड़ते थे। हाथ रह-रह जाते थे और हम थक कर चूर हो जाते थे। बड़ा कड़ा काम था डांड चलाना। और ऊपर से कैप्टिन प्रसाद की डांट और भी जले पर नमक छिड़कती थी। सूखी धरती पर कैप्टिन एक साधारण मनुष्य है, हंसता है और मज़ाक भी करता है, परन्तु डोंगी या जहाज पर पहुँचते ही वह पक्का कैप्टिन बन जाता है। डोंगी में पहुँच कर कैप्टिन प्रसाद साक्षात शैतान बन गया था। और शायद इसका कारण यह था कि हम डोंगी या नाव चलाने के काम को तनिक भी नहीं जानते और वह जहाज़ों और नावों के बारे में सब कुछ जानता है। जहाज़ों से संबंध रखने वाली हर बात उसे मालूम है, जंगी जहाज पर तारपीडो मारने से लगा कर अफ्रीकन आदिवासियों की साधारण सी डोंगी को चप्पू से चलाने तक की सारी बातें वह जानता है। सौ बातों की एक बात तो यह है कि वह इस फ़न का उस्ताद है और हम बिल्कुल बुद्धू। यद्यपि उसका शासन और नियंत्रण बहुत कठोर था परन्तु तो भी इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह डोंगियों को बहुत सराहनीय रीति से संभाल रहा था।

पहले ही दिन कुछ फालतू कपड़ों और एक जोड़ी बांस की सहायता से कैप्टिन प्रसाद ने दोनों डोंगियों में पाल टांग दिये। पाल तन जाने से हमारा काम कुछ हल्का हो गया। क्योंकि नदी की धार बहुत तेज़ थी इसलिये बहुत हाथ पैर मारने पर भी हम प्रति दिन २० मील से अधिक नहीं जा पाते थे। हमारा तरीक़ा यह था कि हम प्रौ फटने से पहले ही रवाना हो जाते थे और कोई साढ़े दस बजे तक, जब कि सूर्य तपने लगता था और परिश्रम करना कठिन हो जाता था, बिना रुके चले जाते थे। तब हम अपनी डोंगियाँ किनारे पर बांध कर रूखा सूखा भोजन करते थे और फिर तीन बजे तक या तो सोते थे या लेट कर

थकान उतारते थे, फिर तीन बजे चलते थे और सूर्य डूबने से आधा घंटा पहले रात्रि विश्राम के लिये ठहर जाते थे।

शाम को डोंगियों से उतरकर कैप्टिन प्रसाद फ़ौरन ही अस्करियों की सहायता से कंटीली झाड़ियों, सूखे कांटों और पेड़ की गिरी हुई शाखों से एक छोटा सा बाड़ा बना लेते थे और आग जला देते थे। मैं, कुँवर साहिब और असस्लोपागस कोई शिकार मारने चले जाते थे। शिकार की खोज में हमें दूर जाना नहीं पड़ता था क्योंकि ताना नदी के जंगलों में हर तरह के जंगली जानवरों की कोई कमी नहीं है। एक दिन कुँवर साहिब ने मादा ज़ुराफ़ का शिकार किया। इसका माँस बड़ा स्वादिष्ट था। दूसरे अवसर पर मैंने अपनी दुनाली के दो फ़ायरों से हिरनों के एक जोड़े का शिकार किया; तीसरे अवसर पर असस्लो-पागस ने मेरी मार्टिनी रायफ़िल से एक बहुत बड़े बारहसिंगे का शिकार किया। कभी-कभी हम मुँह का ज़ायक़ा बदलने के लिए तोड़ेदार बन्दूक से जंगली मुर्ग़ियों और बटेरों का, जिनकी यहाँ कोई कमी नहीं थी, शिकार किया करते थे, या कभी-कभी ताना नदी से पीले रंग वाली मछलियाँ पकड़ लिया करते थे। ताना नदी में मछलियों की भरमार है और शायद इसी कारण इस नदी में मगर और घड़ियाल भी बहुत रहते हैं।

रवाना होने के चौथे दिन एक अशुभ घटना हुई। रोज़ की भाँति जब हम रात्रि विश्राम के लिए किनारे पर उतर रहे थे तो हमने उस स्थान से कोई ४० गज़ दूर एक टीले पर एक आदमी खड़ा देखा। यह आदमी हमारी प्रत्येक गतिविधि को बड़े ध्यान से देख रहा था। नज़र पड़ते ही हमने उसे पहचान लिया कि वह कोई मसाई हल्मोरन (सरदार) था। उसे देखते ही हमारे साथ के वक़्वाफ़ी डर के मारे ज़ोर ज़ोर से "मसाई" "मसाई" कह कर चिल्लाने लगे और मारे डर के थर थर काँपने लगे।

अपनी जंगली वेशभूषा में वह जवान मसाई हल्मोरन कितना सुन्दर लग रहा था। यद्यपि मेरी सारी आयु अफ़्रीका के जंगलों और वहाँ की जंगली आदिवासी जातियों के बीच बीती है तो भी मैं दावे से कह सकता हूँ कि मैंने इतना भयंकर और डरावना मनुष्य अभी तक नहीं देखा था।

पहली बात तो यह है वह बहुत लम्बे क़द का था। शायद अमस्लोपागोस से भी निकलता हुआ होगा। छरहरा शरीर, चौड़े कन्धे, और हाथों और छाती की उभरी हुई माँस पेशियाँ उसकी शक्ति को बता रही थीं। उसके मुख से नृशंसता और क्रूरता टपकी पड़ती थी। अपने दाहिने हाथ में वह कोई ५॥ फुट लम्बा बरछा पकड़े हुए था जिसका १॥ फीट लम्बा और कोई ३ इंच चौड़ा फल डूबते हुए सूर्य की किरणों में चमक रहा था। बायें कंधे पर अरने भैंसे की खाल से बनी एक चौड़ी सुन्दर अण्डाकार ढाल लटकी हुई थी और जिसके ऊपर तरह तरह के निशान और आकृतियाँ लाल रँग से चित्रित की हुई थीं। कन्धों पर श्येन पक्षी के पंखों से बना एक बहुत बड़ा बिना आस्तीन का लबादा पड़ा हुआ था, सिर पर कोई १७ फ़ीट लम्बे और डेढ़ फ़ीट चौड़े कपड़े का पग्गड़ बंधा हुआ था और उसके ऊपर लाल रंग का तुर्रा निकला हुआ था। घुटने तक लटकती हुई बकरी की खाल की बनी पोशाक कमर पर एक पेटी से कसी हुई थी। पेटी में दाहिनी ओर लकड़ी की म्यान में बन्द नाशपाती की शक्ल की एक छोटी सी तलवार लटक रही थी और बायीं ओर १॥ हाथ लम्बी एक मोटी लाठी लटक रही थी।

इस वेशभूषा में सबसे विलक्षण वस्तु थी उसके सिर पर लगी शुतुरमुर्ग पक्षी के पंखों की बनी क़लगी जो कि चमड़े की पट्टी से उसकी ढोड़ी पर कसी हुई थी और कानों के सामने से होती हुई माथे तक पहुँचती थी। इस तरह उसकी खूंखार शक्ल परों की झालर से झाँकती सी मालूम पड़ती थी। उसने टख़नों के चारों ओर लम्बे काले बालों की झालरें बंधी हुई थी और पिंडलियों के ऊपरी हिस्से में उसने नालदार महमेज़ पहिनी हुई थीं जिनसे कोलोबस जाति के बन्दर की काली लम्बे बालों वाली सुन्दर दुम के बाल झब्बों की तरह लटके हुए थे।

यह शानदार सजधज थी उस मसाई इल्मोरन की जो दूर टीले पर खड़ा हमारी डोंगियों को देख रहा था। इस स्थान पर मैं यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि उस मसाई की वेशभूषा का पूरा हाल उससे होने वाली इस पहली भेंट के समय मालूम न हो सका था

क्योंकि उस समय तो आश्चर्य और कुतूहल से मैं उसे देखता भर रह गया था। इस घटना के बहुत बाद मुझे उसकी पोशाक और वेशभूषा का बारीकी से अध्ययन करने का अवसर मिला और ऊपर लिखा हाल उस अध्ययन का नतीजा है।

अभी हम सोच ही रहे थे कि क्या करें कि मसाई इल्मोरन बड़ी शान से तन कर खड़ा हो गया और उसने अपने भारी बरछे को हमें दिखा कर हवा में हिलाया और फिर धीरे धीरे टीले की दूसरी ओर उतर कर आँखों से ओझल हो गया।

"हल्लो," दूसरी डोंगी से कुंवर साहिब ने पुकार कर कहा, "उस बदजात ने तो अपनी धमकी पूरी कर दिखाई और हमारे पीछे मसाई लुटेरे लगा ही दिये। आपकी क्या राय है? क्या किनारे पर उतरना ठीक रहेगा?"

मेरे ख्याल से किनारे पर उतरना खतरे से खाली नहीं था, लेकिन साथ ही डोंगियों में खाना पकाने का भी कोई प्रबन्ध नहीं था और न कच्चा माँस ही हम लोग खा सकते थे। हम इसी हैस बैस में थे कि किया क्या जाये? अन्त में मामला इस तरह सुलझा कि अमरलोपागस ने किनारे पर जाकर और चारों ओर घूम फिर कर टोह लेने की इच्छा प्रकट की। अनुमति मिलते ही वह साँप की तरह झाड़ियों में रेंग गया और हम डोंगियों में बैठे हुए उसकी बाट तकते रहे। आध घण्टे ही में वह लौट आया और बताया कि चारों ओर दूर दूर तक किसी मसाई का खोज तक नहीं था, मगर उसने उस स्थान का पता लगा लिया था जहाँ उन्होंने पड़ाव डाला हुआ था। उसने आकर बताया कि चिन्हों से ऐसा मालूम होता था जैसे वह एक घण्टा पहले ही उस स्थान से चले गये थे और जिस मसाई को हमने देखा था उसे शायद हमारी गति-विधि पर नज़र रखने के लिए पीछे छोड़ गये थे।

अब हम डोंगियों से उतरे और एक अस्क़री को पहरे पर लगा कर शाम का भोजन पकाने की तैयारी करने लगे। खाना पीना खत्म करके हमने सारी परिस्थिति पर विचार करना शुरू किया। यह संभव था कि वह मसाई इल्मोरन हम लोगों को किसी प्रकार की हानि पहुँचाने का विचार नहीं रखता था, या शायद वह उस दल से था जो गुलाम

पकड़ने वाले अरबों को नेस्त-नाबूद करने इधर से उधर फिर रहा था। लामू में हमारे मित्र काउंसिल ने भी हमें बताया था मसाई जाति के योद्धा दल बाँध कर गुलाम पकड़ने वाले अरबों को नेस्त-नाबूद करते फिर रहे थे। लेकिन फिर भी जब हमें अपने जमादार की धमकी याद आती थी कि वह मसाइयों को हमारे पीछे लगा देगा और जब हमें यह ख्याल आता था कि उस मसाई इल्मोरन ने किस तरह हमें डराने के लए अपना बरछा हवा में उछाला था तो हमें अरबों के खिलाफ़ जिहाद वाली बात कुछ ठीक नहीं जंचती थी। बहुत सोच-विचार के बाद हम इसी नतीज़े पर पहुँचे कि मसाई इल्मोरनों की टोली, हमारे पीछे लगी हुई थी और हम पर छापा मारने की ताक़ में थी।

अब प्रश्न था कि ऐसी दशा में किया क्या जाये? केवल दो ही रास्ते थे, एक यह कि अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़े जाये और दूसरा यह था कि वापिस लौट चले। वापिस लौट चलने के विचार को तो हमने एक दम नामंजूर किया, क्योंकि सभी का यह विचार था कि जितना संकट आगे बढ़ने में था उतना ही खतरा वापिस लौटने में भी था, और साथ ही हम लोगों ने निश्चय कर लिया था कि जान रहे या जाये हम अपने गंतव्य स्थान की ओर बढ़ते ही चले जायेंगे। ऐसी हालत में हमने किनारे पर रात्रि व्यतीत करना ठीक नहीं समझा। इसलिये हम अपनी अपनी डोंगियों में सवार हो गये और उनको खे-कर बीच धार में ले गये। नदी इस स्थान पर काफी चौड़ी थी। बीच धार में पहुँच कर हमने नारियल की रस्सी में बड़े बड़े पत्थर बाँध कर लंगर डाल दिये।

नाव में तो मुसीबत ही आ गई। मच्छरों ने तो काट काट कर उधेड़ डाला और कुछ तो मच्छरों की कृपा से और कुछ चिंता के मारे रात भर मेरी पलक तक न झपकी, सारी रात आँखों में ही कटी। असंख्यों मच्छरों द्वारा काटे जाने पर भी मेरे साथी घोड़े बेच कर सो रहे थे। मैं सारी रात जागता रहा और पाइप से लगातार धुँआ उगलते हुए इन मसाई भेड़ियों से जान छुड़ाने की तरकीबें सोचता रहा। मस्त चाँदनी रात थी और मच्छरों का जोरदार हमला बराबर जारी था और साथ ही यह भी निश्चित था कि ऐसी हालत में खुले

आकाश के नीचे सोना मलेरिया बुखार को न्यौता देना था। डोंगी में घण्टों एक ही करवट से सिकुड़े सिकुड़ाये पड़े रहने से मेरा सारा शरीर दुख रहा था और मेरे पैरों के पास सोते हुए बकवाफ़ी अस्करी के शरीर से निकलने वाली पसीने की बदबू नाक फाड़े दे रही थी परन्तु तो भी वह निर्मल चाँदनी, पत्थरों से सिर टकरा कर रुकती, उछलती बहती हुई नदी का शोर और विशालकाय वृत्तों के बीच से होकर आने वाली हवा की सांय सांय मेरे मन को मस्त किये दे रही दी। स्वच्छ चाँदनी में नदी का जल उछलता फुंकारता, पत्थरों से टकराता शोर मचाता समुद्र की ओर उत्तरोत्तर दौड़ा जा रहा था उसी प्रकार जैसे व्यस्त मनुष्य का जीवन सुख दुख की तरंगों में झूलता उतरता उत्तरोत्तर मृत्यु की ओर अग्रसर होता जाता है। किनारे पर वृत्तों का घना साया होने के कारण अंधेरा था और रह रह कर वन्य पशुओं की चीत्कार से रात्रि की निस्तब्धता भंग हो जाती थी।

हमारी बायीं ओर नदी के दूसरे किनारे पर एक छोटी सी रेतीली कौल थी। इस स्थान पर कोई झाड़ी या वृत्त न होने के कारण नदी में पानी पीने आने जाने वाले हिरणों तथा बारहसिंगों को मैं भली प्रकार देख सकता था। एक बार शेर की गंभीर दहाड़ भी दूर जंगल में सुनाई दी जिसे सुन कर नदी के किनारे के पशु पत्ती कोलाहल कर उठे परन्तु धीरे-धीरे सब शांत हो गया। थोड़ी ही देर बाद मुझे बनराज के दर्शन हुए जो पानी पीने किनारे तक आया। पानी पीकर बनराज लौट गया और हमारी तरफ़ ध्यान भी नहीं दिया। उसके जाते ही हमारी डोंगी से कोई पचास गज की दूरी पर झाड़ियों के टूटने, दबने, मुड़ने की आवाज़ आई और कोई भारी जन्तु छपाक से पानी में उतर गया। एक त्तण बाद ही हमारी डोंगी से कोई ३० गज़ की दूरी पर एक विशालकाय आकार फुंकारता हुआ पानी से बाहर निकला। यह एक दरियाई घोड़े का सिर था। डोंगी देखते ही वह पानी में डुबकी मार गया और त्तण भर बाद ही हमारी डोंगी से कोई पाँच गज़ के फ़ासले पर उसने अपना सिर पानी से बाहर निकाला। अब मामला ज़रा टेढ़ा था, डर था कि कहीं दरियाई घोड़ा अपने विशाल शरीर को

लिये डोंगियों के पास न आ जाये और अपनी उत्सुकता शाँत करने के लिए कहीं धक्का न दे दे। धक्के का अर्थ था हम सभी की जल-समाधि। पास आकर दरियाई घोड़े ने अपना मुँह पूरा खोल दिया, शायद जम्हुआई लेने के लिये, और मुझे उसके नुकीले बड़े बड़े दांतों की क़तारें साफ़ दिखाई देने लगीं। मुझे ख्याल आया कि यह दरियाई घोड़ा एक ही धक्के में हमारी छोटी डोंगियों को चूर चूर कर सकता है। इस डर से पहले तो मैंने उसे अपनी आठ बोर रायफ़िल से एक गोली चलाने का विचार किया लेकिन फिर यह सोच कर बन्दूक़ नीचे रख दी कि व्यर्थ गोली चलाने से क्या लाभ, यदि दरियाई घोड़े ने आक्रमण किया तो गोली मारूँगा वरना नहीं। शायद दरियाई घोड़े को हमारी डोंगी से कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी इस कारण वह पानी में डुबकी मार गया और फिर दिखाई नहीं दिया।

उसी समय दाहिने हाथ वाले किनारे की ओर मेरी नज़र जा पड़ी। मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई काली सी आकृति अंधेरे में पेड़ के तनों के पीछे पीछे चुपचाप आगे की ओर रेंगती हुई आ रही थी। मेरी नज़र बहुत तेज़ है और मुझे पूर्ण विश्वास था कि मैंने किसी आकृति को अवश्य ही देखा था, परन्तु वह आकृति कोई पक्षी था या पशु था या मनुष्य था यह मै निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता। इसी समय चन्द्रमा को एक छोटी बदली ने छुपा लिया और वह आकृति अलोप हो गई। इसी समय रात्रि की निस्तब्धता को भंग करता हुआ शृंगी उल्लू ज़ोर ज़ोर से हू हू कर उठा। परन्तु शीघ्र ही रह रह कर सुनाई देने वाली उल्लू की हू हू, पत्तों की सरसराहट तथा नदी के कलकल शब्द के अतिरिक्त सारी प्रकृति फिर नीरव हो गई।

परन्तु न जाने क्यों मुझे रह रह कर ऐसा महसूस होने लगा जैसे कोई ख़तरा हम सब पर आने वाला था। डर का कोई विशेष कारण मालूम नहीं पड़ता था, वैसे तो अफ़्रीका के घने जंगलों में पग पग पर ख़तरा मौजूद रहता है, परन्तु तो भी मैं डर गया। यद्यपि मैं इस बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता हूँ कि मनुष्य को ख़तरे की गन्ध पहले ही से आ जाती है और उसका अचेतन मस्तिष्क उसको ख़तरे की अग्रिम सूचना दे देता है परन्तु, तो भी न जाने क्यों मुझे यह पक्का

विश्वास होता जा रहा था कि कोई भयानक संकट हम लोगों पर आने ही वाला था। जितना ही मैं इस ख्याल को भुलाना चाहता था उतना ही वह और भी दृढ़ता से मुझ पर छाये जा रहा था, यहाँ तक कि मेरे माथे से ठंडा पसीना चूने लगा। रह रह कर जी में आता था कि साथियों को जगा दूं परन्तु कोई शक्ति मुझे ऐसा करने से रोकती थी। साथ ही ख्याल भी आता था कि मेरे साथी मेरे डर जाने का मज़ाक बना कर मुझे हमेशा ही लज्जित करते रहेंगे। परन्तु अपने आप ही मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई थी और नाड़ी रुक रुक कर चलने लगी। जिस प्रकार कोई डरावना स्वप्न देखने पर अचेतन अवस्था में ही काल्पनिक डर और भय से सारी नाड़ियाँ तथा हड्डियाँ जड़ हो जाती हैं वैसी ही जड़ता मेरे सारे शरीर में फैलती जा रही थी। न जाने किस काल्पनिक डर से मेरी समस्त ज्ञानेन्द्रियाँ अपना कार्य छोड़ती जा रही थीं। परन्तु मैंने अपनी प्रबल इच्छा शक्ति से डर की बढ़ती हुई जड़ता पर क़ाबू किया और मैं फिर क्षण भर में ही पूर्ण रूप से चैतन्य हो गया। डोंगी में अधलेटे हुए मैं पैरों के पास गुड़मुड़ी बांध कर सोये अमस्लोपागस और दोनों अस्करियों को टकटकी बाँध कर देखने लगा।

दूर किसी दरियाई घोड़े के पानी में डुबकी लगाने का छपाका हुआ और शृंगी उल्लू फिर तेज आवाज़ में हू हू करने लगा। उस समय हवा कुछ तेज चल रही थी और पत्तों की सरसराहट से एक विचित्र भय सूचक रोने की ध्वनि आ रही थी। मेरा दिल डूबने सा लगा। चन्द्रमा के बदली में छुप जाने से चारों ओर अन्धकार फैला हुआ था, आकाश में भी अन्धकार था और नदी का जल भी काला हो रहा था। मुझे ऐसा मालूम होने लगा जैसे मेरी मौत मेरे सिरहाने आकर खड़ी हो गई हो। मै अपने आप को बिल्कुल निरीह और अकेला अनुभव कर रहा था।

यकायक़ मेरा रक्त मेरी धमनियों में जमता सा मालूम पड़ने लगा और न जाने क्यों मेरा दिल डूबने लगा। क्या यह मेरा भ्रम था या वास्तव में हमारी डोंगी चल रही थी? मैंने सिर घुमा कर दूसरी डोंगी की ओर नजर डाली। दूसरी डोंगी हमारी डोंगी की बग़ल में ही होनी

चाहिये थी। मुझे डोंगी तो दिखाई न पड़ी बल्कि उसके स्थान पर मैंने एक काले हाथ को अपनी छोटी सी डोंगी के किनारे को पकड़ कर ऊपर उठते देखा। क्या यह मेरी आंखों का भ्रम था ? क्षण भर बाद ही एक अस्पष्ट परन्तु भयानक मुख पानी के बाहर निकलता दिखाई दिया। इसके बाद ही डोंगी एक ओर को झुक गई, छुरे की तेज लपलपाहट दिखाई दी और मेरे पास सोते हुए उसी वकवाफी ने, जिसकी दुर्गन्ध से मेरी नाक फटी जा रही थी, एक हृदय विदारक चीख मारी और किसी गरम गरम तरल पदार्थ से मेरा सारा मुख भीग गया।

पलक मारते ही मेरी सारी जड़ता जाती रही, मैं जान गया कि मैं कोई बुरा स्वप्न नहीं देख रहा था बल्कि पानी में तैरते हुए मसाइयों ने हम पर आक्रमण कर दिया था। जो भी शस्त्र मेरे हाथ पड़ा, इत्तफ़ाक़ से अमस्लोपागस का फरसा मेरे हाथ पड़ा, उसी से जिधर मुझे छुरे की चमक दिखाई दी थी मैंने पूरे ज़ोर से वार किया। मेरा वार किसी के हाथ पर पड़ा और नीचे की ओर लकड़ी की डोंगी होने के कारण वह हाथ खट से कलाई पर से कट कर अलग हो गया। चोट खाने वाले ने न तो कोई शोर ही मचाया और न कोई आवाज़ ही की। वह भूत की तरह चुपचाप आया था और भूत की तरह चुपचाप चला भी गया और पीछे छोड़ गया अपनी कटी हुई खून से लतपत कलाई जिसकी बेजान उंगलियों ने अब भी हमारे आदमी के सीने में घुसे हुए छुरे को मजबूती से पकड़ रक्खा था।

क्षण भर में ही चारों ओर गड़बड़ी फैल गई और हल्ला गुल्ला होने लगा और मैंने अंधेरे में कई काली काली आकृतियों को नदी के दाहिने किनारे की ओर तेज़ी से तैर कर जाते हुए देखा। साथ ही हमारी डोंगी भी तेज़ी से दाहिने किनारे को बहकर जाने लगी क्योंकि किसी ने हमारी डोंगी में बंधे लंगर की रस्सी को चाकू से काट दिया था। जैसे ही मैंने यह देखा मुझे फौरन ही यह ख्याल आया, कि मसाई लोगों की यही योजना थी कि नाव के लंगरों को काट दिया जाय ताकि वह स्वयं ही बहती हुई दाहिने किनारे की ओर आ जायें, इस स्थान पर नदी की धार दाहिने किनारे की ओर थी, अतः डोंगियाँ अवश्य ही दाहिने किनारे की ओर लग जातीं और वहाँ अवश्य ही मसाइयों की

कोई टोली हमारे सीनों में अपने बेलचे नुमा बरछे घुसेड़ने को तैयार बैठी हुई थीं। मैंने फ़ौरन ही एक चप्पू उठा लिया और अमस्लोपागस से दूसरा उठाने को कहा क्योंकि अन्य वक़वाफ़ी अस्करी आश्चर्य तथा डर के कारण जड़ हो गये थे और उनके हवास जवाब दे चुके थे। हम दोनों पूरी ताक़त से चप्पू मार कर डोंगी को खे कर बीच धार में ले गये। यदि इस काम में कुछ भी क्षणों की देर हो जाती तो हमारी डोंगी उथले पानी में फंस जाती और हम सब निश्चय रूप से मारे जाते।

बीच धार में पहुँचते ही हम दोनों ने अपनी डोंगी को पूरी ताक़त से चढ़ाव की ओर खेना शुरू किया जहाँ दूसरी डोंगी लंगर डाले खड़ी थी। अंधेरे में नाव खेना बहुत ही जोखिम का काम था। अंधेरे के कारण दूसरी डोंगी दिखाई तक नहीं पड़ रही थीं। केवल कैप्टिन प्रसाद के आकाश भेदी खर्राटों से ही हम दूसरी डोंगी का अन्दाज कर सकते थे। अन्त में हम दूसरी डोंगी तक पहुँच ही गये। हमें यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि दूसरी डोंगी में कोई मिनका तक नहीं था, सभी भरपूर नींद सो रहे थे। इसमें सन्देह नहीं कि हमारी डोंगी का लंगर काट देने वाले जिस मसाई का हाथ मैंने काट डाला था वह दूसरी डोंगी के लंगर को भी काट देना चाहता था, परन्तु अवसर मिलते ही खून करने की अपनी उत्कृष्ट लालसा को दबा न सकने के कारण वह अपने लक्ष्य से चूक गया और नतीजा यह हुआ कि उसने अपना दाहिना हाथ खोया और हमने अपना एक आदमी। परन्तु इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि उसकी रक्त की पिपासा ने हम सबको मौत के मुँह से निकाल लिया था।

यदि मैंने डोंगी के बग़ल में उस छाया प्रेत को न देखा पाया होता, इस छाया प्रेत को मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा, तो हमारी डोंगी निश्चित रूप से दाहिने किनारे की ओर बहती हुई चली जाती और अगर मुझे ठीक मौके पर पता न लगता तो यह इतिहास कभी लिखा ही नहीं जाता।

अध्याय ३

मिशन स्टेशन

दूसरी डोंगी के पास पहुँच कर हमने अपनी डोंगी को उससे बाँध दिया और शेष रात्रि अपने बाल बाल बच जाने पर ईश्वर की प्रार्थना करने तथा उसे धन्यवाद देने में बिताई, क्योंकि इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि ईश्वर की कृपा से ही हमारी जान बची थी। जाको राखे साईयाँ मार सके नहीं कोय। जब ईश्वर बचाने वाला हो तो कौन बाल बाँका कर सकता है। मनुष्य की क्या हस्ती है जो उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी कर सके। अतः हमने जान बच जाने पर ईश्वर को बार बार धन्यवाद दिया और सूर्य के निकलने की प्रतीक्षा करने लगे। बहुत देर बाद ऊँचे वृक्षों की चोटियाँ धीरे धीरे रक्तवर्ण होने लगीं और अन्धकार की कालिमा को परे ढकेलता हुआ प्रकाश चारों ओर फैलने लगा। जैसे जैसे प्रकाश फैलता जाता था हमें अपने जीवन की आशा बंधती जाती थी। भली भाँति प्रकाश फैल जाने पर जो कुछ मैंने अपनी डोंगी में देखा उससे मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गये। डोंगी में एक ओर हमारा अस्करी खून में लथपथ पड़ा था, एक छुरा दस्ते तक उसके सीने में घुसा हुआ था और उस छुरे को जकड़ कर पकड़े हुए थी वह कटी हुई कलाई जिसे मैंने फरसे से काट डाला था। इस वीभत्स दृश्य को देख कर सभी स्तम्भित रह गये। अंत में लंगर वाले पत्थर को पानी से बाहर खींच कर मैंने वह पत्थर अभागे अस्करी के शरीर से बाँध दिया और उसे उठा कर पानी में डाल दिया। भारी पत्थर के साथ बंधे होने से शव तुरन्त ही पानी में डूब गया और कुछ बुलबुलों के अतिरिक्त सभी कुछ हमारी नज़रों से ओझल हो गया। घातक के कटे हाथ को भी मैंने पानी में फेंक दिया और वह भी बुलबुलों की एक क़तार पीछे छोड़ कर पानी में डूब गया। उसके हाथीदाँत

के दस्ते वाले छुरे को मैंने अपने पास शिकारी चाकू की तरह रख लिया, आगे चल कर यही छुरा मेरे बहुत काम आया।

दूसरी डोंगी से एक वफ़ावाफी मृतक का स्थान लेने मेरी डोंगी में आ गया और हमने उदास मन से आगे की ओर कूंच किया। सभी दुखित और परेशान से थे, आगे क्या होगा, मिशन स्टेशन सही सलामत पहुँच सकेंगे या नहीं, सभी यह सोच रहे थे। हमारी उदासी और दुख को बढ़ाने के लिए सूर्योदय के एक घण्टे बाद बहुत जोर से वर्षा होने लगी और हम बिल्कुल भीग गये। साथ ही डोंगियों में भी पानी भरने लगा और हमें उसे उलीच उलीच कर बाहर फेंकना पड़ा। तेज़ वर्षा के कारण हम डोंगियों में पाल भी नहीं तान सकते थे, इसलिये अपना सारा जोर लगा कर हमें डोंगियाँ केवल चप्पूओं के सहारे ही आगे ले जानी पड़ीं।

ग्यारह बजे के क़रीब हमने बायें किनारे के पास एक छोटी सी खुली जगह देख कर डोंगियों को रोक दिया और वर्षा का वेग ज़रा कम होते ही हमने आग जलाई और नदी से कुछ मछलियाँ पकड़ कर उनको खुली आग पर भून लिया। इधर उधर घूम कर शिकार कर लाने की हमारी हिम्मत न पड़ी। कुछ भुनी मछलियाँ साथ रख कर हम दो बजे फिर चल पड़े और थोड़ी देर बाद ही इतनी जोर की वर्षा होने लगी कि खुदा की पनाह। मालूम पड़ता था कि बादलों में छेद हो गये थे। नदी में जल बढ़ जाने से उसकी धारा और भी प्रखर हो गई और बीच-बीच में निकली नुकीली चट्टानों के डूब जाने से डोंगियों को खेना असम्भव सा हो गया और इसलिये हम लोगों ने यह जान लिया कि रात्रि पड़ने से पहले हमको फ़ादर मैकैन्ज़ी के मिशन स्टेशन पर पहुँच कर उनके उदार आदर सत्कार का सौभाग्य प्राप्त न हो सकेगा। सारी शक्ति लगा कर चप्पू मारने पर भी हम प्रति घण्टा एक मील से अधिक नहीं जा पा रहे थे और शाम के पाँच बजे तक हम सब थक कर चूर हो गये। अन्दाज़ से अभी फादर मैकैन्ज़ी के मिशन स्टेशन से दस मील से भी अधिक दूर थे।

इस बात का निश्चय हो जाने पर कि हम मिशन स्टेशन नहीं पहुँच सकेंगे हम रात्रि विश्राम की तैयारियों में लग गये। पिछली रात्रि के

अनुभव के बाद किनारे पर रात काटना खतरे से खाली नहीं था और साथ ही इस स्थान पर ताना नदी के दोनों ओर घास-पात इतना घना था कि यदि पाँच हज़ार मसाई भी उसमें छुप जाते तो भी मालूम नहीं पड़ते। पहले तो मुझे ऐसा लगा कि कहीं आज की रात भी डोंगी में ही में न सोना पड़े लेकिन सौभाग्य से नदी के एक घूम को पार करते ही हमें नदी के बीचों बीच कोई १५ गज़ वर्ग का एक पथरीला सा द्वीप दिखाई पड़ा। हमने इस द्वीप की ओर अपनी डोंगियाँ मोड़ दी और किनारे के पत्थरों से डोंगियों को बाँधकर उसी पथरीली चट्टान पर अड्डा जमाया। मौसम सारी रात बहुत खराब रहा, रह-रहकर मूसलाधार वर्षा होती रही और ठंड के मारे हमारी हड्डियाँ तक अकड़ गईं। वर्षा के कारण हम आग भी न जला सके। परन्तु इस दुख में भी एक विचित्र सुख था और वह यह कि हमारे अस्करियों ने हमें बताया कि सारे संसार की दौलत मिलने पर भी मसाई ऐसे मौसम में आक्रमण करने का साहस नहीं करेंगे क्योंकि उनको पानी से एक जन्मजात चिढ़ सी है। कैप्टिन प्रसाद का ख्याल था कि क्योंकि मसाई नहाना पसंद नहीं करते इसलिये वह पानी से घबराते हैं।

हमने ठंडी सीठी अलोनी मछलियाँ पानी के सहारे गले से उतारीं, असस्लोपागस ने कुछ नहीं खाया क्योंकि जूलू होने के कारण उसे मछलियों से कुछ घिन सी थी। ठंडी सीठी मछलियाँ ठूंस-ठूंस कर हम तीनों ने एक-एक पैग बरांडी का पिया। सौभाग्य से हमारी कुछ बरांडी की बोतलें चोरी जाने से बच गई थीं। और तब शुरू हुई वह भयानक कालरात्रि जैसी मैंने सिवाय एक अवसर से आज तक कभी नहीं बिताई थी। यह रात वह थी जब कुबेर के खज़ाने की तलाश में कुकुआनालैंड में यात्रा करते समय हम यही तीनों भारतवासी बर्फ़ से ढके शीबा कुच (Sheba's Breast) पहाड़ पर सर्दी से अकड़कर मृतप्राय हो गये थे। वह रात्रि हमको अनन्त मालूम पड़ रही थी, मालूम होता था जैसे अब सवेरा होगा ही नहीं। एक दो बार तो मुझे ऐसा मालूम पड़ने लगा कि कहीं हमारे दो अस्करी पानी में भीगने के कारण सर्दी से अकड़ कर मर न जायें। अफ्रीका के निवासी सर्दी सहन नहीं कर सकते। सर्दी से उनके हाथ-पाँव सुन्न हो जाते हैं और वह अकड़ कर मर जाते हैं।

मैंने देखा कि लोहे जैसे शरीर वाले अमस्लोपागस को भी सरदी बुरी तरह सता रही थी लेकिन वह वकवाफ़ी अस्करियों की तरह-चीख़ पुकार न मचा कर बिल्कुल चुप मारे पड़ा था। वकशाफी अस्करी कराह रहे थे रो रहे थे और अपनी किस्मत को गालियां दे रहे थे।

कोढ़ में खाज, रात को कोई एक बजे श्रृंगी उल्लू ने हु हू करना शुरू कर दिया और उसकी हु हू सुनते ही आक्रमण के भय से हम चैतन्य हो गये। इसमें सन्देह नहीं कि यदि मसाई उस समय आक्रमण कर देते तो हमारी दशा इतनी खराब हो रही थी कि हम शायद अपना वचाव भी ठीक तरह न कर सकते। परन्तु सौभाग्य से मसाइयों ने आक्रमण नहीं किया, संभव था कि उनकी हालत हमसे भी अधिक खराब हो रही थी। कुछ भी हो आक्रमण नहीं हुआ।

अन्त में राम राम करके पूर्व दिशा में लाली छाने लगी और सुनहरी प्रकाश किरणें अन्धकार के परदे को भेदकर नदी के जल को रंगीन बनाने लगी। भुवन भास्कर की प्रखर किरणों ने शीघ्र ही कुहरे को आत्मसात कर लिया। वर्षा इस समय बन्द हो गई थी और आकाश एकदम स्वच्छ था। सूर्य की गरमी से हमारे अकड़े हुए शरीरों में जान सी आने लगी और शरीर का दर्द दूर हो जाने पर चित्त कुछ शान्त हुआ। कदाचित यही कारण है कि संसार के प्राय सभी देशों में आदिम काल से सूर्य की उपासना होती आई है। इसीलिये शायद हमारे शास्त्रों में सविता सूर्य को प्राणदायक और जगत्पिता ईश्वर का प्रत्यक्ष रूप वताया गया है।

आधे घण्टे में ही हम चलने को तैयार हो गये और अनुकूल वायु का लाभ उठाकर अपने लक्ष्य की ओर चल पड़े। सूर्य के प्रकाश मे हम लोगों का खोया साहस फिर लौट आया था और हम रात्रि के डर पर हँस रहे थे।

इस प्रकार हँसते वोलते हम ११ बजे तक चले गये। जब हम रोज़ की भाँति डोंगी को किनारे लगाने और शिकार करके भोजन पकाने और फिर आराम करने की सोच ही रहे थे कि नदी का एक मोड़ पार करते ही हमको सामने ही अंग्रेजी ढंग पर बनी एक विशाल कोठी दिखाई पड़ी। यह कोठी, जिसका नदी की ओर खुला बरामदा था,

एक ऊँची पहाड़ी पर बनी हुई थी। कोठी के चारों ओर ऊँचा परकोटा खिंचा हुआ था और परकोटे के बाहर ऊँची खाई थी। सारी कोठी को अपनी छत्रछाया में लिए हुए मानसरोवर जाति का एक विशाल वृक्ष कोठी के बीचोंबीच खड़ा हुआ था। इस वृक्ष को दो दिन से हम दूरबीन से देख रहे थे परन्तु हमको यह मालूम नहीं था कि यह मिशन स्टेशन के ठिकाने को बताता था। सबसे पहले मुझे भी यह कोठी दिखाई दी थी, और मैं उसे देखते ही खुशी से चिल्ला पड़ा, फिर तो सभी खुशी से फूल उठे और कई अस्करी तो खुशी से नाचने लगे। अब तो ठहरने का प्रश्न ही नहीं था। हम भरपूर परिश्रम करके डोंगियाँ उस ओर खेने लगे। परन्तु दुर्भाग्य से जितनी पास वह कोठी दिखाई देती थी नदी की धारा के चक्करदार होने से वास्तव में वह इतनी पास थी नहीं जितनी हमने समझ रखी थी। आखिरकार कोई एक बजे हम किनारे के उस ढलवाँ स्थान पर पहुँच ही गये जिसके दूसरे छोर पर वह कोठी आकाश से बातें कर रही थी। डोंगियों को किनारे लगाकर हम उतर पड़े और अभी हम अपनी डोंगियों को जल से बाहर निकाल ही रहे थे कि हमने देखा कि साधारण योरपीय पोशाक पहिरे तीन व्यक्ति वृक्षों के झुरमुट से निकल कर तेज़ी से हमारी ओर आ रहे हैं।

इस त्रिमूर्ति को अपनी दूरबीन से देखकर कैप्टिन प्रसाद ने चिल्ला कर कहा "एक वृद्ध, एक महिला और एक बालिका सभ्य लोगों की भाँति सुन्दर बाग़ में होकर यहाँ हम से मिलने आ रहे हैं। इल्म क़सम अब तक की देखी हुई चीजों में यह सबसे विचित्र न हो तो मुझे गोली मार देना।"

कैप्टिन प्रसाद ने ठीक ही कहा था परन्तु यह सब बड़ा विचित्र और असंगत सा लग रहा था—मालूम होता था कि हम कोई सुन्दर स्वप्न देख रहे थे—जिस समय सबसे आगे आने हाले वृद्ध ने हमारा शुद्ध अंग्रेजी में स्वागत किया तो मुझे जितनी प्रसन्नता हुई उसे मैं बयान नहीं कर सकता।

"कहिये मिज़ाज तो अच्छे हैं आप लोगों के," फ़ादर मैकैन्ज़ी ने दोनों हाथ हमारी ओर बढ़ाते हुए कहा। फ़ादर मैकैन्ज़ी के बाल खिचड़ी

हो गये थे, शरीर दुबला-पतला था, करुणामय मुख था और सुर्ख सफ़ेद रंग था। "मैं उम्मीद करता हूँ कि आपको कोई तकलीफ़ नहीं हुई होगी। मेरे आदमियों ने एक घण्टा पहिले मुझे बताया था कि उन्होंने डोंगियों को जिनमें कुछ साहिब लोग सवार थे नदी में ऊपर की ओर आते देखा था। यह खबर मिलते ही हम सीधे ही आप लोगों के स्वागत के लिए चल पड़े।"

"किसी सभ्य जाति के आदमियों से मिलकर हमें कितनी खुशी हुई है यह बताने के लिए मेरे पास लफ्ज़ नहीं हैं," साथ की महिला ने कहा। महिला बहुत सुन्दर थी और सभ्य तथा सुसंस्कृत मालूम होती थी। बालिका की आयु कोई दस वर्ष की थी।

हमने उनकी अभ्यर्थना के लिए अपने टोप उतार लिये और अपना परिचय देना शुरू किया।

"अरे, मैं तो भूल हो गया था, आप सब लोग थके और भूखे होंगे, फ़ादर मैकैन्ज़ी ने कहा, आइये, चलिये घर चलें, पहले खाना और आराम और बाकी बातें फिर बाद को। मुझे आप लोगों से मिलकर कितनी खुशी हुई है यह मैं बयान नहीं कर सकता। आखिरी सभ्य आदमी जो यहाँ आया था अलफान्सो था, अलफान्सो को आप वहाँ पहुँच कर देखेंगे, मगर उसको भी तो यहाँ आये एक साल से अधिक हो गया।"

हम बातें करते २ ढाल पर ऊपर की ओर बढ़ते जा रहे थे। ढाल के निचले भाग को कंटीली नागफली की बाड़ से जिसमें कहीं-कहीं अनगढ़ पत्थरों के ढोंके भी लगे थे छोटे-छोटे खेतों में घेर दिया गया था। कुछ क्यारियों में महुआ पका खड़ा था, कुछ में कद्दू और पेठे की जंगी फलों से लदी हुई बेलें फैली हुई थीं और कुछ में आलू बोया हुआ था। इन बाग़ नुमा खेतों में छोटी-छोटी सुन्दर कुकुरमुत्तों की शक्ल जैसी पक्की झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं। इन झोंपड़ियों में फ़ादर मैकैन्ज़ी के मिशन के अफ्रीकन आदिवासी रहते थे। हम लोगों को आते देखकर उनकी स्त्रियाँ और बच्चे झोंपड़ियों से निकल-निकलकर छोटी-छोटी टोलियों में इकट्ठे होते जा रहे थे। इस बाग़ नुमा खेत में होकर वह सड़क जाती थी जिस पर हम लोग चल रहे थे। सड़क के दोनों ओर

संतरों के झाड़ थे और फादर मैकैन्जी ने हमें बताया कि यद्यपि उनको लगाये केवल दस वर्ष ही हुए थे मगर केनिया पहाड़ के ढालों पर जल-वायु इतनी मनोरम और स्फूर्तिदायक है कि दस ही वर्ष में संतरे के झाड़ पूरी ऊंचाई तक बढ़ गये थे और बहुत सुंदर लाल सुनहरे फलों से लदे हुए थे।

कोई चौथाई मील की कड़ी चढ़ाई के बाद, क्योंकि ढाल बहुत ही सपाट था, हम कंटीली नागफनी के झाड़ों से बनी एक दूसरी सुन्दर बाड़ के पास पहुँचे। इस बाड़ को और भी दृढ़ करने के लिए पत्थर के ढोंके भी लगे हुए थे। नागफनी के झाड़ भी फलों से लदे हुए थे। यह बाड़ कोई चार एकड़ भूमि को घेरे हुए थी। इस घेरे में फ़ादर मैकैन्जी का बाग़, मिशन की इमारत, गिर्जाघर, ढोर बांधने के बरामदे और नौकरों के मकान इत्यादि बने हुए थे। वास्तव में पहाड़ी की सारी चोटी पर ही यह इमारतें फैली हुई थीं।

और बाग़, कितना सुन्दर था वह बाग़। स्वर्गीय रविबाबू ने एक स्थान पर कहा है कि एक सुन्दर बाग़ स्वयं ही एक कविता होती है। आज मुझे विश्वास हुआ कि वास्तव में रविबाबू ने ठीक ही कहा था। मुझे बाग़ों और फूलों से इश्क सा है और फ़ादर मैकैन्जी का बाग़ देख कर तो मैं आनन्दविभोर होकर सुधि-बुधि तक भूल गया। पहले तो सभी प्रकार के फलदार वृक्षों की कई क़तारें थीं, सभी फलदार वृक्ष क़लमी थे। इतनी ऊंचाई पर जलवायु इतनी मनोरम है कि प्रायः सभी भारतीय तथा योरुपीय तरकारियाँ तथा फल-फूल बहुत तेजी से बढ़ते फूलते हैं। बाग़ में सेव की कई क़िस्में फल दे रही थीं। मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ क्योंकि गर्म जलवायु में सेब का वृक्ष जंगली हो जाता है और बहुत-सी उद्दण्डता से फल देना बन्द कर देता है। बाग़ में स्ट्रॉबैरी और टमाटर की अनगिनत झाड़ियाँ थीं, टमाटर देखकर मेरे मुंह में पानी भर आया। इतने बड़े और लाल चिकने टमाटर प्रयाग में देखने को तक को नहीं मिलते थे। ख़रबूज़े और परवल की बेलें फलों से लदी हुई थीं और इनके अलावा प्रायः सभी तरह की तरकारियाँ और फल बाग़ में पैदा हो रहे थे।

मुझे अपने प्रयाग वाले बाग़ पर नाज़ था परन्तु इस बाग़ को देख कर तो मेरी आँखें खुल गईं। इतना सुंदर बाग़ भी हो सकता है इसकी तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। मैं आँखें फाड़-फाड़कर उसकी सुंदरता निहारता रहा। अंत में मुझसे रहा न गया और मैंने कहा, "फ़ादर आपका बाग़ बहुत ही सुंदर है। इससे पहले इतना सुन्दर बाग़ मैंने देखा ही नहीं था।"

"हाँ, फ़ादर ने जवाब दिया," बाग़ वाकई सुन्दर है, इसके लगाने में मैंने जो भी मेहनत की थी वह सफल हो गई, मगर इसके लिए मुझे यहाँ की उत्तम जलवायु की तारीफ़ करनी चाहिए। इस जगह की जलवायु इतनी सुंदर है कि आज आप आड़ू की गुठली ज़मीन में बो दें तो चौथे वर्ष फल दे निकलेगी। गुलाब की क़लमें तो साल भर में ही फूल देने लगती हैं। बहुत प्यारी जलवायु है यहाँ की।"

चलते-चलते हम खाई के पास पहुँच गये थे। खाई कोई दस फ़ुट चौड़ी थी और मुंहामुंह पानी से भरी हुई थी। खाई के दूसरी ओर अनगढ़ पत्थरों के ढोंकों की बनी एक आठ-फ़ुट ऊँची दीवार थी जिसमें बन्दूक चलाने के लिए छिद्र बने हुए थे और मुंडेर पर पत्थर और शीशे के बहुत से नुकीले टुकड़े चूने-सुर्खी से जमे हुए थे।

खाई और परकोटे की ओर इशारा करते हुए फ़ादर मैकैन्ज़ी ने कहा, "यह है मेरी ईजाद बन्दा। हमारा गिर्जाघर और रहने का घर इस परकोटे के अन्दर है। खाई को खोदने और दीवार के बनाने में बीस मज़दूरों को पूरे दो वर्ष लगे थे और जब तक यह दोनों बन नहीं गईं तब तक मैं अपने आपको सुरक्षित नहीं समझता रहा। अब मैं अफ़्रीका के सारे आदिवासियों के दाँत खट्टे कर सकता हूँ क्योंकि इस खाई को भरने वाला सोता परकोटे के भीतर पहाड़ की चोटी पर है और जाड़ों-गर्मी बारहों महीने लगातार बहता रहता है और मैं हमेशा ही चार महीने तक चल सकने योग्य रसद और खाने-पीने का सामान गोदाम में रखता हूँ।"

लकड़ी के तख्ते पर होकर हमने खाई को पार किया और दीवार में बने एक बहुत छोटे दरवाजे से उस स्थान के अन्दर दाख़िल हुए जिसे श्रीमती मैकैन्ज़ी अपना साम्राज्य बताती थीं—यानी फूलों का

बग़ीचा। इस बाग़ की सुंदरता बयान करना मेरी शक्ति से बाहर है। सारे प्रयाग में ही नहीं बरन् जहाँ तक मुझे स्मरण है कलकत्ते के गवर्नमेंट हाउस तक में मैंने इतना सुन्दर बाग़ नहीं देखा था। फूलों के प्रायः सभी पौधे इंगलैंड से मंगाई हुई क़लमों या बीजों से उगाये गए थे। बाग़ के बीच एक स्थान उन गाँठदार जड़ों के लिए अलग कर दिया गया था जिनको मिस फ्लौसी, फ़ादर मैकैन्जी की पुत्री, ने आस-पास के जंगलों से जमा किया था। इनमें से कुछ के फूल तो अत्यधिक सुंदर थे।

बाग के बीचोंबीच बरामदे के बिल्कुल सामने स्वच्छ पानी का एक बहुत सुन्दर फव्वारा बड़ी मस्ती से जल वर्षा कर रहा था। फव्वारे से गिरने वाला जल श्वेत पत्थर के बने एक चौड़े कुण्ड में गिरता था। जहाँ से छलका हुआ जल नाली के द्वारा बाहर वाली खाई में जा गिरता था। खाई एक ऐसे विशाल जलाशय का काम भी देती थी जहाँ से नीचे वाले खेतों और बाग को सींचने के लिए हमेशा पानी मिलता रहता था। रहने का मकान एक लम्बी-चौड़ी इक मंजिला इमारत थी। छत पत्थर की पटियों से छाई हुई थी और सामने की ओर एक बहुत सुन्दर लम्बा-चौड़ा बरामदा था। मकान एक वर्ग की तीन भुजाओं पर बना हुआ था और चौथी ओर रसोई घर था जो मकान के मुख्य भाग से जरा हटकर बना हुआ था। गर्म देशों में रसोई घर का अलग होना बहुत ही आवश्यक है।

इस प्रकार जो चौकोर खुली जगह बची उसके बीचोंबीच हमने इस स्थान की सबसे अनूठी तथा अपूर्व वस्तु देखी। यह अनूठी वस्तु थी सनोवर जाति का एक विशाल वृक्ष, सनोबर जाति की अनेक किस्में अफ्रीका के पठार पर प्राकृतिक रूप से पाई जाती हैं। यह शानदार वृक्ष जैसा कि फादर मैकैन्जी ने हमें बताया पचास मील के घेरे में सीमा चिन्ह का काम देता था। अपनी यात्रा में हम ही चालीस मील से उसे देखते आ रहे थे। यह वृक्ष कम से कम तीन सौ फुट ऊँचा था और पृथ्वी से एक गज की ऊँचाई पर उसके तने का घेरा १६ फुट से कम नहीं था। कोई ७० फुट की ऊँचाई तक तने पर से कोई शाखे नहीं फूटी थीं और वह एक अति सुन्दर भूरे रंग के पुच्छाकार मीनार की तरह सीधा खड़ा हुआ था। उतनी ऊँचाई पर

गहरे हरे रंग की बहुत सुन्दर और शानदार पत्तीदार शाखें तने से समकोण बनाती हुई चारों ओर को फैली हुई थीं। नीचे से देखने पर यह शाखें फर्न की विशालकाय पत्तियाँ मालूम होती थीं। यह विशालकाय शाखें समूची कोठी और फूलबाग के ऊपर छाई हुई थी। इनसे छाया तो होती ही थी परन्तु इतनी ऊँचाई पर होने के कारण वायु या प्रकाश के रास्ते में रुकावट भी नहीं बनती थीं।

"कितना सुंदर वृक्ष है," कुंवर साहिब ने विस्मय से कहा।

"आपका कहना ठीक है, यह वास्तव म बहुत ही अद्भुत वृक्ष है। जहाँ तक मुझे मालूम है इस जैसा और कोई दूसरा वृक्ष इस सारे इलाके भर में नहीं है, "फादर मैकैन्जी ने जवाब दिया, "मैं तो इसे अपना निरीक्षण मीनार कहता हूँ। देखिये मैंने इसकी सबसे निचली शाखा से रस्सी की बनी सीढ़ी लटका रखी है। अगर मैं यह देखना चाहता हूँ कि १५ मील के घेरे में क्या हो रहा है तो मैं अपनी दूरबीन लेकर ऊपर चढ़ जाता हूँ। अरे मैं भी कितना भुलक्कड़ हूँ। आप लोग भूखे होंगे इसकी तो मुझे याद ही न रही थी। खाना तो शायद बन भी गया होगा। आइये तशरीफ ले चलिये। यह उजाड़ बनखण्ड है, मगर ज़रूरत की प्रायः सभी चीजें हमको जंगल में मिल जाती हैं। और हाँ, यह तो मैं आपको बताना भूल ही गया कि मेरा बावर्ची असली फ्राँसीसी है," और यह कहकर वह हमको बरामदे में लिवा ले गये।

फादर मैकैन्जी के पीछे जाते-जाते मैं यह सोचने लगा कि असली फ्राँसीसी बावर्ची कहने से उनका क्या मतलब था। क्षण भर बाद ही एक ठिंगने क़द का चुस्त आदमी नीले रंग का सफाई से लोहा किया हुआ और पेटैन्ट लैदर के चमकीले बूट पहने घर के भीतरी भाग के बरामदे से मिलाने वाले दरवाजे को खोलकर बाहर निकला। उसकी सूती सूट, व्यस्त चाल ढाल और लम्बी मूछें, जिनके किनारे ऊपर की ओर मोड़ कर नुकीले किये हुये थे और दूर से बैल के सींग जैसे मालूम होते थे, एकखास अदा रखती थीं।

"महाशयो, खाना मेज पर चुन दिया गया है। महाशयो हम आप लोगों का आदाब बजा लाते हैं।" तब तो एकाएकी असस्लोपागस को देखकर, जो अपने फरसे को कंधे पर रखे धीरे-धीरे हमारे पीछे

आ रहा था, वह आश्चर्य और भय से उछल पड़ा। "हैं, यह कौन बशर है? यह आदमी है या पाजामा? कैसा खूंखार फरसा है इसके पास। और महाशयो इसके माथे के बीचोंबीच वाले गढ़े को भी देखा आपने?"

"ऐ", फादर मैकैन्जी ने डाँटकर कहा," तुम किसकी बात कर रहे हो अल्फान्सो?"

"किसकी बात कर रहे हैं हम यह पूछा हुजूर ने?" ठिंगने फ्राँसीसी ने अपनी नजर अमस्लोपागस पर इस तरह जमाई हुई थी जैसे उसकी शक्ल और वेशभूषा ने उसे मोहित कर लिया हो। "हम इन हजरत की बातें कर रहे हैं हुजूर", और यह कहकर उसने बड़ी असभ्यता से अमस्लोपागस की ओर इशारा करके कहा, "इन हजरत की।"

फ्राँसीसी ने यह सब बातें कुछ इस ढंग से कही थीं कि उनको सुनकर हम सभी हँसने लगे और अमस्लोपागस यह देखकर कि वह मजाक का निशाना बनाया जा रहा था बहुत ही फाड़ खाऊ तरीके से आँखें लाल-पीली करने लगा क्योंकि उसे इस बात से सख्त नफरत थी कि कोई भी उसका मजाक बनाये।

"खुदा की कसम" अल्फान्सो ने हँसते हुए कहा, "जनाब तो नाराज होगये, जनाब तो नाक-भौं चढ़ाने लगे। मगर हमें जनाब का यह ढंग पसंद नहीं है, हम तो नौ-दो ग्यारह हुए फौरन से पेश्तर," और यह कहकर वह बहुत तेजी से कमरे में घुस गया।

हम सब खिलखिलाकर हँस पड़े, फादर ने भी हँसी में हमारा दिल खोल कर साथ दिया। यह अल्फान्सो भी एक अजीब आदमी है, 'फादर ने कहा," फिर कभी मैं आपको इसकी कहानी सुनाऊँगा। इस वक्त तो आइये उसके बनाये खाने की परीक्षा की जाये।"

ऐसा सुस्वाद भोजन मैंने बहुत दिनों से नहीं खाया था, इसलिये हम सबने शर्म को ताक पर रखकर खूब ठूंस-ठूंसकर खाया। खाना खाने के बाद कुंवर साहिब ने फादर से पूछा, "क्या मैं यह पूछने की धृष्टता कर सकता हूँ कि ऐसे घने जंगलों में आपको फ्राँसीसी बावर्ची मिल कैसे गया?"

ओह, फादर ने उत्तर दिया, "कोई एक वर्ष हुए वह अपने आप ही यहाँ आ गया था और नौकरी करने की इच्छा प्रकट करने पर मैंने इसे रख लिया। फ्राँस में शायद वह किसी मामले में फँस गया था इसलिये वहाँ से भागकर जंजीवार आया। जंजीवार के पुलिस थाने में उसे फ्रेंच सरकार का हुक्मनामा टंगा दिखाई दिया जिसमें उसे जिन्दा या मुर्दा पकड़कर फ्रांस भेज देने की बात लिखी थी। उसे पढ़कर वह जान बचाने के लिये पहाड़ों में भाग गया और भूखा-प्यासा अधमरी हालत में हमारे उस कारवां के साथ हो लिया जो जंजीवार से यहाँ के लिए वर्ष भर की जरूरत की चीजें ला रहा था, और कारवाँ उसे यहाँ ले आये। इसकी कहानी अगर आप उसी से सुनें तो बड़ा मजा आयेगा।

भोजन समाप्त करके हम लोगों ने अपने पाइप सुलगा लिए और कुंवर साहिब ने हमारी यात्रा का हाल फादर मैकैन्जी को सनाना शुरू किया। सारा हाल सुनकर फादर गहरे सोच-विचार में पड़ गये।

"मुझे इस बात का पूरा यकीन है।" फादर ने कहा, "कि बदमाश मसाइयों ने आप लोगों का पीछा करना छोड़ा नहीं है और ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद है कि आप यहाँ तक सही सलामत आ गये। मेरे ख्याल से वह यहाँ आप लोगों पर हमला करने की हिम्मत नहीं करेंगे। इत्तफाक की बात है कि मेरे सारे आदमी माल-असबाब और हाथी-दाँत लेकर लामू गये हुये हैं। कारवां में कोई २०० आदमी हैं और इस वक्त अगर मसाई हम पर हमला कर दें तो इस स्थान का बचाव करने के लिए यहाँ २० से अधिक आदमी नहीं हैं। तो भी मैं अभी इस सम्बंध में जरूरी आज्ञायें दिये देता हूँ।" और यह कहकर उन्होंने एक आदिवासी को जो फूलों की क्यारियों को साफ कर रहा था बुलाकर उससे स्वाहिली बोली में कुछ कहा। आदिवासी ने सारी बात सुनकर सलाम किया और और तेजी से वहाँ से चला गया।

"मुझे विश्वास है, और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, कि हमारे यहाँ आने से आप पर कोई संकट नहीं अयेगा," फ़ादर के लौट आने पर मैंने बड़ी उद्विग्नता से कहा, "उन हरामज़ादे खूँख्वार मसाइयों को आपके पीछे लगा देने से तो यही ठीक मालूम होता है कि हम ही कहीं अलग जाकर उन से निपट लें।"

"ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता, मैं आपको ऐसा नहीं करने दूँगा। मसाई हमला करें या न करें आप जा नहीं सकते, बस अगर उन्होंने यहां हमला किया तो उनकी जान की खैर नहीं। सारे अफ्रीका भरके मसाई भी अगर आजायें तो भी मैं आप लोगों को बाहर नहीं जाने दूँगा।"

"मैं तो भूल ही गया था," मैंने बात पलटते हुए कहा, "लामू के बृटिश काउन्सिल ने हमें बताया था कि आपने उनको कोई चिट्ठी लिखी थी जिसमें आपने लिखा था कि आपके यहाँ कोई आदमी आया था जिसने अफ्रीका के अज्ञात भाग में रहने वाली किसी श्वेतांग जाति के संबंध में कुछ बातें बताई थीं। क्या आपको उसकी कहानी पर विश्वास हो गया था? मैं इसलिए पूछता हूँ कि अफ्रीका के जंगलों की खाक छानते समय मुझे भी दो-तीन बार उत्तर की ओर से आने वाले आदिवासियों के मुख से किसी श्वेत जाति के होने की खबरें मिली हैं।

फादर मैकैन्ज़ी मेरी बात का कोई जवाब देने के बजाय चुप-चाप उठ कर कमरे से बाहर चले गये और दो ही मिनट में एक विचित्र आकृति की तलवार लेकर लौट आये। तलवार काफी लम्बी थी, और उसके भारी फलड़े पर तीक्ष्ण धार वाले भाग को छोड़कर बहुत सुन्दर जालीदार नक्काशी की हुई थी। यह जालीदार नक्काशी उसी प्रकार की थी जैसी मुलायम लकड़ी में फैट आरी (faet saw) से जाली काटी जाती है। पलड़े की फौलाद को इस सफ़ाई से काटा गया था कि उस कटाव से तलवार की मज़बूती पर कोई असर नहीं पड़ता था। एक तो स्वयं यही बात बड़ी विचित्र थी मगर इससे भी अधिक विचित्र बात यह थी कि ठोस फौलाद में कहीं इस जलीदार नक्कासी में सुवर्ण पत्र से अति सुदर मीनाकारी की हुई थी और फिर न जाने किस तरीके से उस सुवर्ण खचित मीनाकारी को तलवार के फौलाद पर ताव देकर दिया गया था।*

---

* अब तो मैंने इस तरह की और भी सैकडो तलवारे देख ली है मगर इस रहस्य का पता नही लग सका है कि सुवर्ण-पत्रो की ऐसी जालीदार मीनाकारी की किस तरह जाती थी। ज्यूवैलरी के कारीगरो ने इस रहस्य को न बताने की शपथ ले रखी है। (लाल बसंत सिह)

"कहिये कभी आपने ऐसी तलवार देखी है?" फादर ने हम से पूछा। हम तीनों ने बारी-बारी से उस तलवार की जॉच की और सिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

"यह तलवार मैंने आपको इसलिए दिखाई क्योंकि यह तलवार उस आदमी के पास थी जो यह कहता था कि उसने उस अज्ञात श्वेत जाति को देखा था, और यह तलवार उसने मुझे अपनी कहानी की सत्यता प्रमाणित करने के लिये दिखाई थी कि कहीं मैं उसकी कहानी को एकदम झूठ न समझ लूँ। मुझे इस सम्बंध में बहुत तो मालूम नहीं है मगर जितना मुझे मालूम है मैं आपको खुशी से बताने को तैय्यार हूँ।

"एक दिन दोपहर पीछे मैं बरामदे में बैठा हुआ था कि एक दुखी भूखा नया-सा आदमी लंगड़ता गिरता-पड़ता और मेरे सामने जमीन पर बैठ गया। मैंने उससे पूछा कि वह कहॉ से आ रहा था और चाहता क्या था। मेरे पूछने पर उसने एक लम्बी राम कहानी सुनानी शुरू कर दी कि वह यहाँ से उत्तर की ओर रहने वाली किसी काली जाति का था, किस तरह उसकी जाति को एक दूसरी जाति ने हमला कर के बरबाद कर दिया, और किस तरह वह अपने कुछ साथियों के साथ उत्तर की ओर भाग निकला और चलते-चलते एक झील के जिसका नाम लोगा था किनारे जा पहुंचा था। फिर वहाँ से किस तरह वह पहाड़ों ही पहाड़ों एक दूसरी अथाह झील के किनारे पहुंचा, जहॉ उसकी स्त्री और भाई किसी संक्रामक रोग से मर गये। उस झील के किनारे पर रहने वालों ने उसे वहॉ से जंगल की ओर खदेड़ दिया और वह दस दिन तक पहाड़ों में इधर से उधर टक्कर मारता फिरा। दस दिन चलने के बाद वह किसी कांटेदार जंगल में जा निकला जहॉ किसी अज्ञात श्वेत जाति के मनुष्यों ने जो वहॉ शिकार खेल रहे थे उसे पकड़ लिया और बॉध कर एक ऐसे शहर को ले गये जहॉ के सारे निवासी श्वेत जाति के थे और पत्थरों के बने घरों में रहते थे। यहाँ एक सप्ताह तक उसे एक अंधेरी कोठरी में बन्द रखा गया। अन्त में एक रात को श्वेत दाढ़ी वाला एक व्यक्ति जिसे उसने राज वैद्य समझा उसकी कोठरी में आया और उससे कुछ पूँछ-तॉछ की। इसके बाद उसे कोठरी से निकाल कर कंटीली झाड़ियों के जंगल

में होकर घने जंगलों में ले जाया गया और वहाँ कुछ खाना और यह तलवार देकर छोड़ दिया गया। यही थी उसकी कहानी।

"ओह," कुँवर साहिब ने जो बड़ी तन्मयता से सारी बातें सुन रहे थे गहरी साँस लेकर कहा "तब फिर उसका क्या हुआ।"

"उसकी कहानी से तो यह मालूम होता था कि रास्ते में उसे अनेकों संकटों और तक़लीफ़ों का सामना करना पड़ा था और हफ़्तों घास और पत्ते खा कर ही पेट भरना पड़ा था। पानी मिल जाता था तो पी लेता था वरना नहीं। इतने कष्ट झेलकर भी वह जीवित बच गया था और धीरे-धीरे दक्षिण की ओर चलकर वह यहाँ आ पहुँचा था।

वह किस रास्ते से आया था उसे वह नहीं बता सका। भूखा थका जानकर मैंने उसकी कहानी सुनने की बात दूसरे दिन पर उठा रखी और उसे आराम करने भेज दिया। अपने जमादार को बुलाकर उसे भोजन-वस्त्र देने और देख-रेख करने को कह दिया। जमादार उसे अपने साथ लिवा ले गया लेकिन उस अभागे के शरीर पर ख़ारिश की वजह से नासूर पड़ गये थे और इसलिये जमादार की बीवी ने खारिश का रोग फैल जाने के डर से उसे अपनी झोंपड़ी में जगह नहीं दी और एक कम्बल देकर झोंपड़ी के बाहर टिका दिया। इत्तफ़ाक से उन दिनों एक बाघ बहुत लागू हो रहा था और न जाने किस तरह उसने इस अभागे की गंध पा ली और रात्रि को हमला करके इतनी सफ़ाई से उसका सिर कुतर कर ले गया कि किसी को आहट तक न मिली। इस तरह वह आदमी और उसकी श्वेत जाति की कहानी ख़त्म हो गई। उसकी कहानी में कितनी सच्चाई थी यह तो मै बता नहीं सकता। आपका क्या ख्याल है······?"

मैंने सिर हिलाकर जवाब दिया, "कुछ ठीक नहीं कह सकता, इस महाद्वीप के गर्भ में ऐसी विचित्र चीजें छुपी पड़ी हैं कि में निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता कि यह कहानी एक सिरे से गप्प थी और इसमें तनिक भी सत्य नहीं था। कुछ भी हो, हमारा विचार है कि हम इस कहानी की सत्यता की जाँच करें। हम लीकाकी सोरा पहाड़ तक जाने का इरादा करते हैं और अगर वहाँ सहीसलामत पहुंच गये

तो वहाँ से लागा झील जायेंगे और अगर उस झील के आसपास कहीं कोई श्वेत जाति निवास करती है तो उसे खोज निकालने की चेष्टा करेंगे।"

"मैं आप लोगों के जीवन की तारीफ़ करता हूँ," फ़ादर ने कहा और बातचीत का सिलसिला खत्म हो गया।

अध्याय ४

अलफान्सो और उसकी प्रेमिका

खाना खाने के बाद हमने मिशन स्टेशन के शागिर्द पेशा की कोठरियों और आस-पास की खुली जगह की अच्छी तरह जाँच की और मुझे यह कहते हर्ष होता है कि सारे अफ्रीका भर में इससे सुंदर स्थान मैंने नहीं देखा था। घूम-फिर कर जब हम वापिस लौटे तो हमने देखा कि असस्लोपागस फ़ुर्सत का समय काटने के लिए बरामदे में सारी रायफ़िलों और बन्दूकों को खोलकर साफ़ कर रहा था। हम केवल उससे इतना ही काम कराते थे क्योंकि ज़ूलू सरदार होने के नाते वह अपने हाथ से कोई काम करना अपनी शान के ख़िलाफ़ समझता था। ज़मीन पर उकड़ूँ बैठा और पास ही दीवार के सहारे अपने फ़रसे को रखे हुए असस्लोपागस एक विचित्र तमाशा-सा लग रहा था। वह बड़ी तन्मयता से अपने काम में लगा हुआ था। उसके लम्बे और कुलीनता द्योतक हाथ बड़ी कोमलता और होशियारी से रायफ़िलों और तोड़ेदार बन्दूक़ों के नाज़ुक कल-पुर्ज़ों को साफ़ कर रहे थे।

उसने हर बन्दूक का अलग नाम रख रखा था। कुंवर साहिब की चार बोर वाली दुनाली का नाम 'घन गरज' था, मेरी ५०० ऐक्सप्रेस जिसके चलाते समय चटाखे की-सी आवाज़ आती थी 'चटाख़ा' थी, विन्चैस्टर रिपीटरो का नाम था 'तिरिया' क्योंकि वह स्त्रियों की भांति इतनी तेज़ी से बोलती थी कि किसी शब्द को दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता था, पाँचों मार्टिनी बन्दूकों का नाम था 'जनता' और इसी तरह और बन्दूक़ों के भी अलग-अलग नाम थे। बड़े आश्चर्य की बात थी कि बन्दूकों को साफ करते समय वह उनसे ऐसे बातें करता जाता था जैसे वह जीवित वस्तुएं हों और उसकी बातों को समझती हों।

अमस्लोपागस अपने फरसे से भी इसी तरह बातें किया करता था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह उसे अपना जिगरी दोस्त समझता था। कभी-कभी तो वह उसे घण्टों तक अपने विगत जीवन की सुख-दुख, प्रेम और ईर्ष्या, रक्तपात और युद्ध की मधुर तथा भयानक घटनायें सुनाया करता था। कोई-कोई घटना तो वास्तव में बहुत ही भयानक रही होगी। उसने अपने फरसे का नाम 'इन्कूसीकास' रखा हुआ था-जूलू भाषा में इस शब्द का अर्थ होता है 'महारानी'। बहुत दिनों तक तो मैं यह समझ ही न सका तो उसने अपने फरसे का नाम 'महारानी' क्यों रखा था। अंत में अपनी उत्सुकता को दबा न सकने के कारण मैं उससे पूछ ही बैठा। इसका उत्तर उसने यह दिया कि उसका फरसा निश्चय ही 'महिला' थी, क्योंकि स्त्रियों की भांति उसे भी प्रत्येक वस्तु को जानने के लिए दूर तक पैठने की आदत थी, और 'महारानी' वह इस कारण थी क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति उसकी सलामी करने को उसके सामने पछाड़ खाकर गिर पड़ता था और उसकी शक्ति और सुंदरता को देखकर एक बारगी ही मूक हो जाता था। किसी दुविधा के समय वह अपने इन्कूसीकास से सलाह भी लिया करता था। इसका कारण उसने यह बताया कि इन्कूसीकास के दूरदर्शी और अनुभवी होने में कोई संदेह था ही नहीं क्योंकि वह न जाने कितने व्यक्तियों के सिरों में दूर तक घुस कर उनका भीतरी हाल जान चुकी थी।

मैंने उस भयानक शस्त्र को हाथ में उठा कर गौर से उसकी परीक्षा की। जैसा मैं बता चुका हूँ उसकी शक्ल गंडासे जैसी थी। उसका हैंडिल सफ़ेद गैंड़े के सींग को काट कर बनाया गया था। हैंडिल तीन फ़ीट तीन इँच लम्बा और डेढ़ इंच मोटा था और उसके अन्तिम छोर पर एक छोटी नारंगी के आकार की घुन्डी थी ताकि चलाते समय फरसा हाथ से फिसल कर निकल न जाए। हैंडिल इतना भारी होने पर भी बेंत की तरह लचीला था और टूटना तो उसका असम्भव था। लेकिन तो भी और अधिक मजबूती के लिए थोड़े-थोड़े अन्तर से उस पर तांबे के बारीक तारों के बन्द कसे हुए थे। जिस स्थान पर मूठ फल में घुसी थी वहाँ से हैंडिल में नीचे की ओर छोटे-छोटे दाँते कटे हुए थे प्रत्येक दांता लड़ाई में इस अस्त्र से मारे जाने वाले एक व्यक्ति को बताता था।

फरसे का फल बहुत कठोर और सुन्दर फ़ौलाद का बना हुआ था और बहुत सुंदर नक्क़ाशी की हुई थी। असस्लोपागस को मालूम नहीं था कि वास्तव में यह फरसा था किसका। क्योंकि उसने तो उस फरसे को उस सरदार से छीना था जिसे बहुत दिन हुए उसने आमने-सामने की लड़ाई में काट कर फेंक दिया था। फरसा बहुत भारी नहीं था, उसका वजन कोई दो सेर से कम ही था। धार वाला भाग साधरण युद्ध कुठारोंकी तरह उन्नतोदर न होकर कुछ नतोदर था। धार उस्तरे की भांति तीक्ष्ण थी और चौड़े से चौड़े भाग में उसकी चौड़ाई पौने छः इंच थी। फल के दूसरी ओर चार इंच लम्बी मेख लगी हुई थी। यह मेख दो इंच की गहराई तक खोखली थी और उसकी शक्ल थैली जैसी थी। इस थैली नुमा मेख में मुंह की ओर से घुसेड़ी जाने वाली वस्तु के ऊपर की ओर से बाहर निकल जाने के लिए खोखले भाग के अंत में एक चौड़ा छिद्र बना हुआ था। बाद में हमें मालूम हुआ कि लड़ते समय असस्लोपागस इस मेख से अपने शत्रु को मौत के घाट उतारा करता था। इस मेख से वह अपने शत्रु की खोंपड़ी में एक साफ परन्तु गहरा छिद्र बना दिया करता था। चौड़े धार वाले भाग को तो वह चारों ओर वार करते समय या भीड़ में घिर जाने पर ही काम में लाता था। मेरे विचार से वह इस मेख़ को ज्यादा सुंदर और स्वच्छ हथियार समझता था और शत्रु को इस मेख़ से डोंगा मार कर मार डालने की आदत के कारण ही उसको अपनी जाति में 'कठ-फोड़वा' नाम मिला था। निसंदेह असस्लोपागस के हाथ में यह फरसा बहुत ही खतरनाक शस्त्र था।

ऐसा था असस्लोपागस का फरसा इन्कूसीकास। इससे अधिक अनूठा और घातक द्वन्द युद्ध शस्त्र मैंने इससे पहिले नहीं देखा था। इस फरसे को वह अपनी जान से भी अधिक प्रिय रखता था। खाना खाते समय के अलावा यह फरसा कभी भी उसके हाथ से नहीं छूटता था और उस समय भी वह उसे अपने घुटने के नीचे दबा लिया करता था।

मैं असस्लोपागस के फरसे को देख रहा था कि मिस फ्लौसी वहाँ आई अपने फूलों का संग्रह, अफ्रीकी कमल और अन्य पुष्पों को दिखाने जबरदस्ती घसीट कर ले गई। उसके संग्रह मेंअनेकों अति सुंदर पुष्प

ऐसे थे जो मेरे लिए बिल्कुल नये थे और कदाचित वनस्पति विज्ञान के लिए भी। मैंने फ्लौसी से पूछा, "क्या कभी तुमने "गोया कमल" के पुष्प को देखा है?" उस पुष्प की कोमलता और सुंदरता के संबंध में मैंने मध्य अफ्रीका में भ्रमण करने वाले यात्रियों से बहुत कुछ सुन रखा था।

यह कमल यहां के आदिवासियों के कथनानुसार दस वर्ष में केवल एक बार फूल देता है और अति शुष्क जलवायु इसके लिए उपयुक्त होती है। पुष्प के मुकाबिले में उसकी गोठ नुमा जड़ बहुत छोटी होती है और उसका वज़न २ सेर होता है। यह पुष्प, जिसे बाद को मैंने ऐसी परिस्थिति में देखा जो मेरे मस्तिष्क पर अभी तक अंकित है, इतना सुन्दर और चटकीला होता है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, साथ ही उसकी गंध इतनी मधुर होती है कि उसके सामने अन्य पुष्प गन्धहीन मालूम पड़ते हैं। एक बार में केवल एक ही पुष्प गांठ से निकलने वाले एक मोटे गूदे दार चपटे डंठल पर निकलता है। मैंने जिस पुष्प को देखा था उसका दल १४ इंच व्यास का था और आकृति कुछ-कुछ नरसिंह या तुरही जैसी थी।

सब से नीचे हरे रंग का खंगकोष होता है जो पुष्प खिलने से पहले कमल कोरक की शक्ल का होता है। पुष्प खिल जाने पर यह खंगकोष चार भागों में विभाजित हो जाता है और तने की ओर बड़ी सुंदरता से बल खाकर मुड़ जाता है। खंगकोष के बाद पुष्प का असली भाग आता है। पुष्प बहुत चमकीले श्वेत रंग की एक ही ओर घेरदार पंखड़ी का होता है और उसके मध्य में बहुत ही चटकदार गहरे लाल रंग का एक मखमली प्याला सा होता है और इस सुन्दर प्याले के बीच से गहरे रंग का पुंकेसर निकलता है। मैंने अपने जीवन भर में इससे अधिक सुंदर और सुगन्धित पुष्प नहीं देखा और क्योंकि सभ्य संसार इस पुष्प से अनभिज्ञ है इसीलिए मैंने इस पुष्प का ब्यौरे-वार वर्णन करने का साहस भी किया है। सबसे प्रथम बार इस पुष्प को देखकर मैंने सोचा कि आंखें रखने वाले व्यक्ति को एक साधारण पुष्प में भी उस विश्व नियन्ता की असीम शक्ति, विभूति और प्रताप के दर्शन हो सकते हैं।

मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मिस फ्लौसी ने इस फूल के संबंध में न केवल सुन ही रखा था बल्कि उसने इस पुष्प को अपने बाग़ में लगाया भी था परन्तु जलवायु अनुकूल न होने से पौधा पनप न सका था। क्योंकि यह मौसम इस पुष्प के खिलने का था इसलिए मिस फ्लौसी ने यदि संभव हो सका तो उस पुष्प का एक नमूना मुझे मँगा देने का वायदा किया।

इसके बाद मिस फ्लौसी से और बातें होने लगीं जैसे इन अर्ध-सभ्य आदिवासियों में उसका मन लग जाता था या नहीं, उसकी दिन-चर्या क्या थी, वह किसके साथ खेलती थी, कौन उसके मित्र थे उसे अकेले-अकेले सूनापन तो नहीं लगता था इत्यादि।

"अकेलापन, नहीं कभी नहीं, मुझे तो ज़रा भी अकेलापन नहीं मालूम होता, मेरे यहाँ साथी हैं। मैं तो उलटे यह सोच-सोचकर रह जाती हूँ कि यदि मैं इंग्लैंड में होती तो मेरी क्या दशा होती, वहाँ तो सभी मुझ जैसे गोरे रंग के होते, फिर मुझ में और उन में फ़र्क़ ही क्या रह जाता। लेकिन यहाँ, "उसने बड़ी शान से अपने सिर को हिलाकर कहा, "यहाँ मैं मैं हूँ। बीसियों कोस तक के आदिवासी मुझे 'वन्य कम लिनी' को जानते हैं-वह मुझे इसी नाम से पुकारते हैं- और जो भी मैं कहूँ उसे जान पर खेल कर भी पूरा करने को तैयार रहते हैं। लेकिन लाल साहिब मैंने किताबों में पढ़ा है कि इंगलैंड में छोटी-छोटी लड़कियाँ मेरी तरह नहीं रहती हैं। वहाँ पर तो सभी कोई लड़कियों को आफ़त की पुड़िया समझते हैं और बेचारी लड़कियों को वह सभी कुछ करना पड़ता और उनकी मास्टरनियाँ उनसे करने को कहती हैं। न करने पर सुना है लाल साहिब वह पीटी भी जाती हैं। ओफ़, ऐसे जीवन से तो मै मर जाना पसन्द करूँगी। मै तो आजाद रहना चाहती हूँ, आजाद, तितली की भांति आजाद, हवा की भाँति मुक्त।"

"क्या तुम लिखना-पढ़ना भी सीखना नहीं चाहतीं ?" मैंने पूछा।

"कौन कहता है, पढ़ती तो हूँ मै। पापा मुझे लैटिन और फ्रैन्च और हिसाब पढ़ाते हैं और मामी मुझे काढ़ना-बुनना और गाना सिखाती हैं।"

"तुम्हें इन जंगलियों से डर नहीं लगता है ?"

"डर, डर कैसा ? ये बेचारे तो उल्टे मुझसे ही डरते हैं, जनाब कुछ पता भी है आपको। वह मुझे 'नागी' (देवी) समझते हैं 'नागी'। मेरे सुनहरी बाल और गोरा रंग उनके लिए ताज्जुब की चीज़ है। और देखिये, "और यह कह कर उसने अपनी चोली में हाथ डाल कर एक सिल्वर प्लेटेड वैवले रिवाल्वर निकाल कर मुझे दिखाया, "यह भरा हुआ रिवाल्वर मै हर समय अपने पास रखती हूँ, और यदि किसी ने मुझे पकड़ने या चोट पहुँचाने की कोशिश की तो मैं उसेफौरन ही गोली से उड़ा दूँगी। एक बार मैं अपने टट्टू पर सैर करने जा रही थी कि एक बघेरे ने टट्टू पर हमला किया, मैंने इसी रिवाल्वर से उसे जान से मार दिया। बघेरे को सामने देख कर पहले तो डर के मारे मेरी घिग्घी बंध गई लेकिन फिर मैंने हिम्मत करके उसके कान के पास गोली मारी और वह एक गोली में ही ठंडा हो गया। उसकी खाल मैंने अपने पलंग पर बिछा रखी है। और देखिये लाल साहिब, "यह कह कर उसने मेरा हाथ पकड़ कर किसी दूर चीज़ की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैंने कहा था न मेरे भी साथी हैं, देखिये एक साथी तो वह है।"

मैंने उस ओर देखा। मेरी आँखों के सामने केनिया पर्वत अपनी अपूर्व शान से सिर उठाये खड़ा था। घने कुहरे में ढके रहने के कारण अभी तक मैं केनिया पर्वत को ठीक तरह से नहीं देख पाया था। इस समय केनिया पर्वत की कान्तिमान जाज्वलमय सुन्दरता घने कुहरे के आवरण से नव वधू की भाँति अपने अवगुंठन से मुख चमका कर मुझे मुग्ध कर रही थी। पर्वत का निचला भाग अभी भी कुहरे से ढका हुआ था और उस कुहरे को भेद कर उसका ऊपरी भाग बीस सहस्र फुट ऊंची एक सीधी पुच्छाकार मीनार की भाँति नीले आकाश को भेदता हुआ सीधा सिर ऊँचा किये खड़ा हुआ था। ऊपर नीला आकाश और नीचे घने कुहरे की कालिमा, ऐसा मालूम होता था मानो केनिया पर्वत अन्तरिक्ष में अधर लटका हुआ हो। जिस प्रकार जलहरी में शिवलिंग स्थापित होता है उसी भाँति बादलों और घने कुहरे के बीच में केनिया पर्वत एक शुभ्र ज्योतिर्मय लिंग की भाँति अन्तरिक्ष में अडिग खड़ा हुआ था। इस ज्योतिर्मय रजत केनिया पर्वत की सुंदरता और

शोभा का वर्णन करना मेरे लिये असम्भव है। क्योंकि जैसा गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है 'गिरा अनयन, नयन बिनु बाणी'। न आँखें बोल सकती हैं और न जीभ देख ही सकती है। केनिया पर्वत की शुभ्र सुंदरता नेत्रों से देखने की वस्तु है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

केनिया पर्वत की शोभा को निहारते निहारते मेरा हृदय उस विश्व-नियन्ता की ओर चला गया जिसने इस समस्त संसार की रचना की है। यह सारी सृष्टि ही उसके अस्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण है। एक महान कलाकार के बिना इस अनुपम, सुन्दर तथा शोभामयी प्रकृति की रचना कैसे हो सकती थी? सुरम्य घाटियाँ, ऊँचे पर्वत, सिर ऊंचा किये गगन चुम्बी वृक्ष, कल कल स्वर से बहती नदी, अथाह गम्भीर समुद्र सभी तो उस महान कलाकार की अनुपम रचनायें हैं। कदाचित इसी कारण हमारे पूर्वज प्रकृति के अनन्य उपासक थे और शायद इसी कारण हमारे शास्त्रकारों ने भगवान शिव के रूप की कल्पना प्रकृति-पुरुष के रूप में की है। अभी मैं उस अनुपम सुन्दरता को तन्मय हो कर देख ही रहा था कि अस्ताचल गामी सूर्य की अरुण रश्मियों से केनिया पर्वत पर पड़ी सनातन हिम लाल रंग से रंग उठी और ऐसा मालूम पड़ने लगा मानो कोई ज्योतिर्मय सुवर्ण लिंग अंतरिक्ष में स्थापित हो गया हो। बाद को फ़ादर मैकैन्ज़ी ने मुझे बताया कि अफ्रीका के आदि वासी केनिया पर्वत को "ईश अनामिका" के नाम से पुकारते हैं। इतने सुन्दर दृश्य को देख कर भी यदि कोई व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास न करे या उस परम पिता के प्रति उदासीन रहे तो उससे बढ़ कर मूढ़ इस संसार में कोई न होगा।

सुन्दर वस्तु अनन्त काल तक दर्शकों को मोहित रख सकती है, इसीलिए तो वृज के सांवरे पर गोपियाँ रीझ गई थीं। अब मैंने समझा कि मिस फ्लौसी ने क्यों केनिया पर्वत को अपना साथी बताया था। अस्लोपागस को अन्तरिक्ष में अधर लटके इस सुवर्ण ज्योतिर्मय लिंग को दिखाया तो उस अर्ध सभ्य जुलू ने कहा, "यह ऐसा दृश्य है जिसे आदमी अगर हज़ारों वर्षों तक देखता रहे तो भी उसकी आँखें उसे देखने को बेचैन रहेंगी।" और फिर बड़ी ही लापरवाही से एक महान्

दार्शनिक की तरह सिर हिला कर कहा, "मैं चाहता हूँ कि मरने के बाद भूत (आत्मा) इस पहाड़ की वर्फीली चोटी पर दुनिया के आखीर तक रहे और मौका पड़ने पर "मारो" "मारो" "खून" "खून" कहता हुआ तूफान की तरह विजली और बादलों की भयंकर गरज और चमक के साथ वर्फीले ढाल से नीचे की तरफ झपटता रहे।"

"मगर किसका खून करने के लिए?" मैंने पूछा। मेरे सवाल ने उसे चक्कर में डाल दिया क्योंकि उसने इस बात को सोचा ही नहीं था, फिर थोड़ी देर बाद सोचसाच कर जवाब दिया, "और दूसरे भूतों का।"

"तो तू मरने के बाद भी खून बहाते रहना चाहता है?" मैंने पूछा।

"मैं खून नहीं बहाता हूँ," अमस्लोपागस ने गुस्से से जवाब दिया, "मैं तो आमने-सामने की खुली लड़ाई में मारता हूँ। आदमी मारने के लिए ही पैदा हुआ है। जिस्म में जान रहते जो मर्द दूसरे का संहार नहीं कर देता है वह हीजड़ा है, वह मर्द नहीं है। जो संहार नहीं करता वह गुलाम है, और गुलाम क्या आदमी हुआ करता है? गुलाम होते हैं ढोर, जानवर, डंगर। मैं कहता हूँ कि खुली लड़ाई में मारता हूँ। और जैसा तुम गोरे लोग कहते हो जब मैं मरकर भूत (छाया पुरुष) हो जाऊँगा तो भी मैं खुली लड़ाई में चुनौती देकर सहार करते रहने की उम्मीद करता हूँ। अगर कभी मैं वन्टुओं की तरह धोखा देकर जहरीले तीरों से शत्रु को मारूँ तो मेरा भूत हमेशा हिम नरक में ठिठुरता रहे," और यह कहकर वह मुझे हंसता हुआ छोड़कर वहाँ से अकड़ता हुआ चला गया।

इसी समय सवेरे जिन जासूसों को फ़ादर मैकैन्जी ने मसाइयों की टोह में भेजा था वह लौट आये। उन्होंने रिपोर्ट दी कि १५ मील के घेरे की सारी जमीन चप्पा-चप्पा खोज ली गई थी और किसी भी इलमोरन का चिन्ह तक नहीं पाया गया। उनका ख्याल था कि हमारा पीछा करने वाले मसाई चोट खा कर लौट गये थे। इस रिपोर्ट को सुनकर फ़ादर ने चैन का सांस लिया और साथ ही हम लोगों के सिर पर से भी बोझ उतर गया। सभी का यह ख्याल था कि मसाई यह

देखकर वापिस लौट गये। कि हम सुरक्षित स्थान में पहुँच गये हैं और यहाँ उनकी दाल नहीं गल सकती। हम लोगों ने कितना गलत सोचा था यह आपको आने वाली घटना से मालूम हो जायगा।

जासूसों के जाने के बाद श्रीमती मैकैन्जी और फ्लौसी सोने के लिये चली गईं और कुंवर साहिब ने जो फ्रैन्च भाषा भली प्रकार बोल और समझ सकते हैं अल्फान्सो को अपनी लच्छेदार भाषा में जोर की हाँकनी शुरू की। उसकी लफ्फाजी और लच्छेदार बातों को दुहराने की कोशिश मैं नहीं करूंगा, केवल राम कहानी का सारांश ही सुनाऊँगा।

"हमारे दादा, "उसने कहना शुरू किया," सम्राट नैपोलियन की अंग रक्षक सेना में एक बड़े अफसर थे। मास्को की प्रसिद्ध वापसी में वह भी थे और दस दिन तक चमड़े के जूतों को चवा चबाकर उनसे उन्होंने अपना पेट भरा था। बाद को वह बहुत शराब पीने लगे थे हुजूर और आखीर में शराब के नशे में सीढ़ियों से गिरकर ही वह मरे भी। मुझे याद है यद्यपि मैं बहुत छोटा था कि उसकी लाश के साथ-साथ फौजी बाजे बजते हुए गये थे। हमारे बाप हुजूर......।"

"अगर जनाब अपने पुरखों की दास्तान छोड़कर मेहरबानी करके सिर्फ अपनी ही दास्तान सुनायें तो बहुत अच्छा होगा"। मैंने उसे टोकते हुये कहा।

"जो हुक्म हुजूर का, बन्दा तो गुलाम है सरकार का, "बड़ी नम्रता से मुस्कराते हुए उसने कहा, बोलते समय उसका छोटा क़द दुबला-पतला शरीर और बड़ी-बड़ी मूछें बल पर बल खा रही थीं। हम तो सिर्फ हुजूर को यह बताना चाहते थे कि फौजी का बेटा लाजिमी तौर से फौजी नहीं होता है। हमारा दादा हुजूर बहुत लंबा चौड़ा था, ६ फुट २ इंच कद, चौड़ी छाती, हाथी सा बदन और परले दरजे का गुस्सैल। नाक पर मक्खी तो उन्होंने कभी बैठने ही नहीं दी। जी हाँ। मूछें उनकी बड़ी शानदार थीं। जैसा कि देखते हैं हमारे हिस्से में तो सिर्फ मूछें ही मूछें आई हैं।

"हुजूर हम बावर्ची हैं और मारसैल्स में पैदा हुए थे। उसी प्यारे शहर में हमने अपना रंगीन बचपन बिताया। मुद्दतों तक हुजूर हम कान्टीनैन्टल में प्लेटें और प्याले साफ करते रहे। आह कैसे मजेदार दिन

थे वह। (आह भरकर) यह तो हुजूर को मालूम ही होगा कि हम फ्रांसीसी हैं और इश्क और मुहब्बत हमारे खून में मिली हुई है। वह फ्राँसीसी ही क्या जो आशिक़ मिज़ाज न हो हुजूर। यह बताना तो बेकार ही होगा कि इंजानिब यानी हम भी सुन्दरता पर जान देते हैं। बाग में हम फूल सैकड़ों सूंघते हैं मगर तोड़ते सिर्फ एक ही हैं हुजूर। हमने भी एक गुल चुना था हुजूर मगर अफसोस उसके नीचे लगा कांटा हमारी उंगली में चुभ गया। वह एक अमीर घर में टहलुई थी, नाम था अनीता। उसकी शक्ल हुजूर हाय-हाय चन्दे आफताब चन्दे महताब थी, परी थी हुजूर परी और गले में तो हुजूर जैसे उसने कोयल पाल रखी थी। हुजूर हमने उसे अपनाने के लिए जी जान की बाजी लगा दी मगर जैसे पेटैन्ट लैदर के बूट पर से पानी फिसल जाता है उसी तरह वह भी हुजूर हाथ से निकल गई।" यह कहकर अल्फान्सो रोने और जोर-जोर से हिचकियाँ लेने लगा।

"अच्छा अच्छा, बहुत हुआ," कुंवर साहिब ने उसकी पीठ ठोंकते हुए कहा। अल्फान्सो का रोना फौरन ही बन्द हो गया और अपनी पीठ सहलाते हुये कहने लगा, "हुजूर बुरा न मानें तो कहूँ कि हुजूर तो हमें तसल्ली देना चाहते थे मगर हुजूर के हाथ क्या फौलाद के शिकंजे हैं शिकजे। तो हम कह रहे थे कि हम दोनों एक दूसरे से मुहब्बत करने लगे। और फिर क्या हुआ उसे सोचकर तो हमको अब भी जूड़ी चढ़ आती है हुजूर। अगर इत्तफाक़ से हमारे आँसू बहने लगें तो माफ कर दीजियेगा। हमारे ऊपर आसमान फट पड़ा हुजूर। हमें आम लाम बन्दी के सिलसिले में फौज में भरती कर लिया गया। अनीता की मुहब्बत हमारे जी का जंजाल बन गई।

"टालने से क्या बुरी घड़ी टली है हुजूर, आखिर वह मनहूस दिन आ ही गया और हमें जाना पड़ा। हमने फौज से भाग जाने की कोशिश भी की मगर हरामजादे सिपाहियों ने हुजर हमें पकड़ लिया और फिर लात जूतों से जो हमारी मरम्मत की है वह अभी तक नहीं भूली है। हमारा एक दोस्त था, काना और बदसूरत, उसकी कपड़े की दुकान थी। उसकी किस्मत अच्छी थी कि वह लाम बन्दी से बच गया। चलते वक्त हमने उससे कहा था "दोस्त ऊपर खुदा

है और नीचे तुम, अनीता को तुम्हारे भरोसे छोड़े जा रहे हैं, उस की देख-रेख करना। हमारे फ़ौज में नाम कमा कर लौटने तक वह तुम्हारी हिफ़ाज़त में रहेगी।" उसने जवाब दिया, "भरोसा रखो दोस्त, जैसे तुम्हारी अनीता वैसे मेरी, मैं जान देकर भी उसकी हिफाज़त करूँगा।"

"और हम फौज में चले गये हुजूर, लड़े, चोटें खाईं, भूखे प्यासे पेट के बल रेंग कर खाइयों में पानी पी पी कर ज़िंदगी के दिन पूरे किये लेकिन हम अनीता को न भूल सके हुजूर।

"एक दिन खबर मिली कि हमारी रैजीमेंट को टौनकिंग (फ्रैंच इण्डोचीन) जाने का हुक्म मिला है। हमारी तो जान निकल गई हुजूर। टौनकिंग के बारे में टोह ली, पूंछ तांछ की और, और जो हाल मालूम हुआ उससे तो और भी खून पानी हो गया। लोगों ने बताया कि टौनाकिंग में बौने चीनी रहते हैं जो चुपचाप पेट में छुरा घोंप देते हैं, आदमी का गोश्त खाते हैं, उसका खून पी लेते हैं और न जाने क्या क्या। जितने मुंह उतनी बातें। हमारी जान तो नाखूनों में समा गई हुजूर। हमने बड़ी फुर्ती से अपना प्रोग्राम सोच लिया। टौनकिंग जाने को हम विलकुल तैय्यार नहीं थे, और एक दिन हम छावनी से निकल भागे।

"एक बूढ़े अपाहिज के भेष में हम मार्सेल्स पहुंचे और सीधे अपने दोस्त के मकान का रुख किया। वहाँ अनीता मौजूद थी। उस वक्त स्ट्राबैरी का मौसम था, हमारे दोस्त ने एक स्ट्राबैरी अपने मुँह में रख ली और दूसरी अनीता ने। और तब उन्होंने उसके डंठलों को अपने मुँह में खींचना शुरू किया और फिर जो हुआ हुजूर उसे देखने से पहले हम मर क्यों न गये, उन्होंने एक दूसरे को चूम लिया। उनका खेल हुआ और यहाँ बिजली गिर पड़ी। मारे गुस्से के हमारा खून खौलने लगा हुजूर। हमारे दादा का फौजी खून हमारी नसों में दौड़ने लगा। हम कमरे में घुस गये और अपनी बैसाखी को दोनों हाथों से घुमा कर अपने नमकहराम दोस्त के सिर पर दे मारा। वह तो एक ही बार में लम्बा हो गया हजूर। हमने उसका खून कर दिया। अनीता चीख उठी, उसकी चीख सुन कर पड़ोसी दौड़ पड़े और पुलिस का सिपाही भी दौड़ा हुआ आया। हम तो हुजूर खिड़की से कूद कर

पिछवाड़े से निकल भागे। वहां से सीधे बन्दरगाह पर पहुंचे और एक जहाज़ में घुस कर बोरों के पीछे छिप कर बैठ गये। लदान खत्म होते ही जहाज चल पड़ा। अगले दिन खल्लासियों ने हमको बोरों के पीछे छुपे हुए देख लिया और पकड़ कर जहाज़ के कैप्टिन के पास ले गये। वहाँ खूब जूते पड़े हुज़ूर हम पर। मगर कैप्टिन बड़ा पाजी निकला हुज़ूर, मार का मार लिया और स्कन्दरिया पहुंचकर उसने फ्रेंच पुलिस को चिट्ठी भी लिख दी। हम ने सिकन्दरिया में जहाज़ से भाग जाने की कोशिश भी की मगर पकड़े गये और खूब पिटे भी। हम खाना बहुत बढ़िया पकाते थे हुज़ूर इसलिये कैप्टिन ने हमें पकड़ मंगाया। ज़ंज़ीबार तक उसने हमें कहीं भी उतरने नहीं दिया। जब हमने काम के दाम मांगे तो उस ने कान पकड़ कर हमारे खूब चपतें लगाईं और कमरे से निकाल दिया। ज़ंज़ीबार में पुलिस को तार मिल चुका था, जहाज रुकते ही पुलिस ने आकर हमको गिरफ्तार कर लिया। हमने तार ईजाद करने वाले को हज़ारों गालियाँ सुनाईं मगर जैसे बिल्ली चूहे को पकड़ ले जाती है पुलिस हमको भी पकड़ कर ले गई। मगर हुज़ूर हम एक ही झापटे बाज़, पुलिस को उल्लू बना कर हम हवालात से निकल भागे और जिधर मुँह उठा भागते ही चले गये। भूखे-प्यासे कपड़े फटे, खस्ता हाल, मगर हम जंगलों में भागते ही चले गये। रास्ते में फादर का कारवाँ मिला और हम उसके साथ यहाँ आगये। हमारी कहानी बड़ी दर्दनाक है हुज़ूर। अब फ्रांस वापिस लौटना हमारी क़िस्मत में नहीं है। जान है तो जहान है हुज़ूर। इन जंगलों की खाक छानना मंजूर मगर फांसी चढ़ना मंजर नहीं। जिन्दगी है तो बीसियों अनीता मिल जायेंगी हुज़ूर।"

अल्फान्सो की कहानी इतनी दिलचस्प थी और उसका कन्धों को मटकाना और मूछों का हिलाना इतना मजेदार था कि हम बहुत कठिनाई से अपनी हँसी को रोक पा रहे थे। हँस पड़ने से मोशियो अल्फान्सो के नाराज़ हो जाने का डर था। इसलिये हमने मुँह फेर कर अपनी उमड़ती हुई हँसी को रोका।

"आप भी रो रहे हैं हुज़ूर," अल्फान्सो ने पूछा, "हाँ हुज़ूर हमारी कहानी है भी इतनी दर्दनाक कि सुनने वाला रोने लगता है।"

"हमें बहुत अफ़सोस है मोशियो," कुंवर साहिब ने कहा," अच्छा अब सोना चाहिये। कल रात को उस पथरीले टापू पर नींद आई ही नहीं थी, और हम अपने कमरों मे सोने चले गये। बढ़िया पलंग, साफ़ धुली चादरें, स्वच्छ तकिये हम को अपने खतरनाक सफ़र के बाद न्यामत मालूम हो रहे थे।

अध्याय ५

अमस्खोपागस की प्रतिज्ञा

दूसरे दिन सवेरे नाश्ते की मेज़ पर जब मिस फ्लौसी नहीं दिखाई पड़ी तो मैं ने उसके बारे में पूछा।

"सो कर उठने पर," उस की माँ ने कहा, "मुझे कमरे के दरवाज़े के बाहर एक चिट्ठी रखी मिली जिस में लिखा था—यह रही वह चिट्ठी, लीजिये आप ही उसे पढ़ लीजिये," और यह कह कर श्रीमती मैकैन्ज़ी ने चिट्ठी मुझे दे दी। चिट्ठी में लिखा था :—

डियर ममी,

अभी सूर्य निकला है और मैं लाल साहिब के वास्ते गोया लिली का फूल लेने पहाड़ों की तरफ जा रही हूं। इसलिये नाश्ते के लिए मेरी राह न देखियेगा। मैं अपने सफ़ेद टट्टू पर जा रही हूँ और आया और दो आदमी मेरे साथ हैं। ममी तुम घबराना नहीं, मैं ने अपने साथ बहुत कुछ खाने को भी ले लिया है क्योंकि शायद लौटने में देर हो जाये। फूल मैं जरूर ले कर लौटूँगी चाहे मुझे बीस मील तक ही क्यों न जाना पड़े।

फ्लौसी

मैं ने कुछ बेचैनी से कहा, "मैं आशा करता हूँ कि फ्लौसी को रास्ते में कोई तकलीफ नहीं होगी। मैं ने उस से सिर्फ फूल का ज़िक्र ही किया था, लाने की तो बात भी नहीं थी। उस बेचारी ने बेकार ही तकलीफ की।"

"आप फ़िक्र न कीजिये लाल साहिब, फ्लौसी अपनी हिफाज़त आप कर सकती है। वह तो अक्सर ही इस तरह चली जाती है और दूर-दूर तक घूम कर फिर लौट आती है। वह 'वन्य-कमलिनी' जो ठहरी।"

लेकिन अब फ़ादर मैकैन्ज़ी ने, जो उसी वक़्त उस कमरे में आये थे, इस चिट्ठी को पढ़ा तो उन का मुख कुछ चिंतित सा हो गया परन्तु उन्होंने कुछ कहा नहीं।

नाश्ते के बाद मैं ने फ़ादर को अलग ले जाकर यह सलाह दी कि फ्लौसी की तलाश में कुछ आदमी भेज देना क्या ठीक न होगा। मैं ने यह सलाह इसलिये दी थी क्योंकि मुझे डर था कि कहीं हमारी टोह में लगे मसाई कुत्तों से फ्लौसी को कोई हानि न पहुँचे।

"अब तो ऐसा करना बहुत मुश्किल है, "फ़ादर ने जवाब दिया, "वह तो अब १५ मील से भी अधिक दूर निकल गई होगी, और यह भी तो नहीं मालूम कि वह गई किधर को है। चारों तरफ़ पहाड़ ही पहाड़ फैले हुए हैं," और यह कह कर फादर ने उन पहाड़ी सिलसिलों को दिखाया जो ताना नदी के समानान्तर क्षितिज तक फैले हुए थे और जिन का घने जगलों से ढ़का ढ़ाल नदी के किनारे तक आ गया था। इस पर मुझे ख़्याल आया कि सनोबर के वृक्ष पर चढ़ कर चारों ओर देखने से कुछ न कुछ पता लग सकता था कि फ्लौसी किस रास्ते से गई थी। फ़ादर ने मेरी राय मान ली और साथ ही अपने कुछ आदमियों को फ्लौसी की खोज लगाने के लिए भेज दिया।

उस विशाल वृक्ष पर रस्सी की सीढ़ी से ऊपर चढ़ना मेरे जैसे ज़मीन पर रहने वाले व्यक्ति के लिए नटविद्या से कम नहीं था लेकिन कैप्टिन प्रसाद बंदरों की तरह चढ़ते चले गये। तने के जिस स्थान से फ़र्न की पत्तियों नुमा शाखायें निकलीं थीं उतनी ऊँचाई तक चढ़ने के बाद हम बिना किसी कठिनाई के तख़्तों के बने एक प्लेटफ़ार्म पर पहुँच गये जिसे मोटी मोटी कीलों से शाखों पर ठोका हुआ था। यह प्लेटफार्म इतना बड़ा था कि कोई एक दर्जन आदमी इस पर खड़े हो सकते थे। इतनी ऊँचाई से देखने पर आस पास का दृश्य बहुत ही मनमोहक और बहारदार दिखाई देता था। चारों ओर छोटी बड़ी झाड़ झाड़ियाँ ऊँची नीची लहरों की भाँति मीलों तक फैली हुई थीं। जितनी दूर तक दूरबीन से देखा जा सकता था उतनी दूर तक यही सीनरी दिखाई देती थीं। कहीं कहीं धानी रंग के खेत और नीले पानी से भरी झीलें भी दिखाई दे रही थीं। उत्तर पश्चिम की ओर उत्तुंग

केनिया पर्वत अपना सिर उठाये बड़ी शान से खड़ा हुआ था और उस के अंचल में धामिन की तरह मुड़ती बल खाती नदी निरन्तर समुद्र की ओर दौड़ी जा रही थी।

बहुत आँखें फाड़ फाड़ कर देखने पर भी फ्लौसी और उस के रक्षक साथियों का हम को कोई खोज दिखाई नहीं पड़ा और अन्त में हम निराश हो कर नीचे उतर आये। नीचे पहुंच कर मैं ने देखा कि अमस्लोपागस बाहर वाले बरामदे में उकडूं बैठा सिल्ली की पथरी से, जिसे वह हमेशा अपने साथ रखता था, अपने फरसे की धार को तेज़ कर रहा था।

"यह क्या करता है रे अमस्लोपागस ?" मैं नेउत्सुकता से पूछा।

"मुझे खून की महक आती है मालिक, खून महक।" बहुत पूछने पर भी मैं उस से कुछ और अधिक न जान सका।

दोपहर का खाना खाने के बाद हम फिर वृक्ष पर चढ़े और चारों ओर की भूमि को दूरबीन से भली प्रकार देखा, परन्तु फ्लौसी और उस के साथियों का कोई खोज नहीं मिला। नीचे उतरने पर हम ने देखा कि अमस्लोपागस अब तक अपने इन्कूसीकास पर लगातार धार रखे जा रहा था यद्यपि उस की धार उस्तरे से भी तेज़ हो गई थी। उस के सामने खड़ा हुआ अल्फान्सो उसे भय और विस्मय से टकटकी लगा कर देख रहा था। बरामदे के फर्श पर जूलू ढंग से उकड़ूँ बैठा और गंभीर चेहरा बनाये अपने घातक खूनी फरसे को लगातार घिसता पैनाता हुआ अमस्लोपागस वास्तव में बहुत ही भयानक लग रहा था।

"ओह शैतान, खूनी आदमी," अल्फ़ान्सो ने डर और आश्चर्य से हाथ नचाते हुए कहा, "उस के सिर में बना सूराख आप देखते हैं हुजूर। उस सूराख के ऊपर की खाल कैसी ऊपर नीचे हो रही है जैसी कि बच्चों की खोपड़ियों में अक्सर हुआ करती हैं। मगर बच्चा, इतना बड़ा बैल और बच्चा, हम भी कितने बेवकूफ हैं हुजूर," और यह कह कर वह ठहाका मार कर हँस पड़ा।

क्षण भर के लिए अमस्लोपागस ने अपने काम से सिर उठाया और मैं ने देखा कि उस की कोयला जैसी काली आँखों में मौत नाच रही थी।

"यह 'टैनी वैल' क्या बकता है।• (असस्लोपागस ने अल्फ़ान्सो की जनानी शक्ल और लम्बी मुड़ी हुई मूछों के कारण उस का नाम 'टैनी वैल' रख दिया था)। उस से कह दे मालिक कि अपनी चोंच बन्द रखे नहीं तो किसी दिन उस के 'सींग' काट दूँगा। चौकस रहना बन्दर चौकस रहना, कहे देता हूं।

दुर्भाग्य से कुछ देर साथ रहने के कारण अल्फान्सो का डर कुछ छूटता सा जा रहा था और इसलिये वह बराबर हँसता ही रहा। मैं उस से हँसी दिल्लगी को बन्द करने को कहने ही वाला था कि एकाएक विशालकाय जूलू बरामदे से छलांग लगा कर उस जगह जा पहुंचा जहाँ से अल्फ़ान्सो खड़ा खड़ा मज़ाक कर रहा था और हँसी के मारे दुहरा हुआ जा रहा था। वहाँ पहुंचते ही उस ने उस अभागे फ्रांसीसी के सिर पर बड़ी तेजी से अपना फरसा घुमाना शुरू कर दिया।

"सीधे खड़ा रहियो," मैं ने चिला कर अल्फ़ान्सो से कहा, अगर जिन्दा रहना चाहते हो तो तनिक सी भी हरकत न करना, वह तुझे मारेगा नहीं।" लेकिन मुझे संदेह है कि अल्फ़ान्सो ने मेरी बात सुनी भी या नहीं, लेकिन सौभाग्य से वह डर के मारे अपने होश हवास खो बैठा था और एक दम जड़ हो गया था।

और इसके बाद हमने तलवार बाज़ी या फरसे बाज़ी का वह अजीबो ग़रीब प्रदर्शन देखा जैसा अपने जीवन भर में कभी नहीं देखा था। पहले तो फरसा अल्फ़ान्सो के सिर के ऊपर इतनी अमानुषीय तेज़ी से फुंकारता हुआ फ़र्राटे मारने लगा कि वह तेज चमकीले फ़ौलाद का चक्र सा मालूम पड़ता था। धीरे-धीरे यह तेज़ घूमता हुआ चक्र उस अभागे की खोपड़ी के पास और पास होता जा रहा था यहाँ तक कि उस की तेज़ धार से अल्फ़ान्सो के सिर के बाल तक कटने लगे। इस के बाद अचानक ही फरसे की चाल बदल गई और वह उस के शरीर तथा अँगों पर ऊपर से नीचे नाचता दिखाई देने लगा। तेज़ी से घूमने पर भी फरसा कभी भी अल्फ़ान्सो के शरीर से आधे इंच अधिक दूर नहीं था परन्तु इतना पास होने पर भी कोई चोट नहीं लगा रहा था।

जिस विचित्र ढंग से अल्फ़ान्सो वहाँ अड़दब में फँसा हुआ था वह दृष्य वास्तव में बड़ा ही सुन्दर था, शायद उस ने भी यह समझ लिया था कि तनिक हिले नहीं और टुकड़े-टुकड़े हुए नहीं। वह सहमा-सहमाया संज्ञा हीन सा खड़ा था और उस के सिर पर डटा हुआ था काला देव अमस्लोपागस और फरसा था कि उस के चारों तरफ घूमे ही जा रहा था और फर्राटे भर रहा था। दो तीन मिनट तक तो यही दशा रही फिर अचानक मैं ने देखा कि चमकता हुआ फरसा बिजली की तेज़ी से अल्फान्सो की मुँह की तरफ़ आया और चेहरे से जरा दूर हट कर रुक गया। फरसे के रुकते ही किसी काली सी चीज़ का एक गुच्छा नीचे जमीन पर गिर पड़ा, यह गुच्छा अल्फ़ान्सो की ऊपर की ओर मुड़ी हुई मूँछ की कटी हुई नोक थी।

अमस्लोपागस अपने इन्कूसीकास का सहारा ले कर खड़ा हो गया और बहुत ही पैशाचिक रूप से हंसने लगा। अल्फ़ान्सो की टाँगों ने जवाब दे दिया था और वह डर के मारे जमीन पर ढ़ेर हो गया। हम सब इस विचित्र तलवार बाज़ी और शस्त्र अधिकार के इस अलौकिक प्रदर्शन को देख कर ठगे से रह गये। "इन्कूसीकास बहुत तेज़ है ना" अमस्लोपागस ने चिल्ला-कर कहा। "जिस वार से मैं ने 'टैनी बैल' के सींग काटे हैं उसी से किसी दूसरे को सिर से कन्धे तक चीर देता। मुझे छोड़ बहुत कम लोग ऐसा कर सकते हैं। तुझे बिना कन्धे तक चीरे कोई भी इस सींग को नहीं काट सकता था। ऐ 'टैनी बैल' देख, तू क्या सोचता है कि मै मज़ाक उड़ाये जाने के क़ाबिल हूँ। एक बार तो तेरे और तेरी मौत के बीच सिर्फ बाल बराबर ही अन्तर रह गया था। अब मत हंसना; कहीं कंगाली में वह बाल बराबर फ़क़ का भी टोटा न पड़ जाये। सुन लिया तूने, मैं ने कह दिया है।"

"इस खेल से तेरा मतलब क्या था रे," मै ने बहुत झल्ला कर अमस्लोपागस से पूछा, "मालूम होता है तू पागल हो गया है। कोई बीस बार तो ऐसा मालूम पड़ा कि तूने उसे अब मारा अब मारा।"

पर मालिक मैं ने उसे मारा तो नहीं। तीन बार मेरे मन में आया कि इन्कूसीकास को घनघना कर उस के सिर पर दे मारूं और उसे कन्धे तक चीर दूं। लेकिन मालिक मैं ने ऐसा किया नहीं। नहीं किया मालिक, वह तो सिर्फ मज़ाक था। मगर मालिक उस 'टैनी बैल' से

कह दे कि मुझ जसों से मज़ाक करना ठीक नहीं। अब मैं एक अच्छी सी ढाल बनाने जा रहा हूँ मालिक। मुझे खून महक आती है मुझे मालिक। खून, खून। क्या मालिक ने लड़ाई शुरू होने से पहले आसमान में अचानक ही बहुत से गिद्ध इकट्ठे होते नहीं देखे हैं? उन को मौत गन्ध आ जाती है, और मेरी नाक तो उन से भी तेज़ है मालिक। मुझे खून महक आ रही है। उस कोने में बैल का बहुत सा कच्चा चमड़ा पड़ा है मैं जाकर जल्दी से एक ढाल बनाये लेता हूँ।"

"आप का यह आदमी बहुत खतरनाक है," फ़ादर ने कहा। उन्होंने सारी घटना शुरू से आखिर तक अपनी आँखों से देखी थी। "इस ने तो अल्फ़ान्सो को डरा कर उस के होश हवास ही ग़ायब कर दिये हैं। देखिये तो," यह कह कर उन्होंने अल्फ़ान्सो की तरफ़ इशारा किया जो काँपता, लड़खड़ाता, गिरता पड़ता दीवाल का सहारा लिये अन्दर जा रहा था। "मेरा ख्याल है कि अब वह कभी भूल से भी 'जनाब' की तरफ़ देख कर हंसने की हिम्मत नहीं करेगा।"

"आप ठीक कहते हैं," मैं ने जवाब दिया। "उससे मज़ाक करना साँप के मुंह में उंगली देना है। गुस्सा आ जाने पर तो वह साक्षात यमराज बन जाता है, यमराज। लेकिन साथ ही जंगली होने पर भी उस का मन बालकों जैसा निर्मल है। मुझे याद है कि वर्षों पहले मैं ने उसे एक सप्ताह भर तक एक बीमार बालक की जी जान से सेवा करते देखा था। उस का चरित्र बहुत विचित्र है, मगर इतना ज़रूर है कि वह है फौलाद जैसा सच्चा। संकट के समय आप उस पर भरपूर भरोसा कर सकते हैं।"

"वह कहता है कि उसे खून महक आती है," फादर ने कहा, "मगर मुझे तो उस का कहना ठीक नहीं मालूम होता है। मुझे फ्लौसी की ओर से डर होता जा रहा है। वह शायद दूर निकल गई नहीं तो अब तक लौट गई होती। अब तो साढ़े तीन बज गये।"

"फ्लौसी अपने साथ खाने पीने का सामान ले गई है और इस लिये मुझे आशा है कि वह दिन छुपने तक ज़रूर लौट आयेगी," कहने को तो मैं इतना कह गया लेकिन सच बात तो यह थी कि मैं स्वयं भी

फ्लौसी के न लौटने से बहुत घबरा रहा था और हर तरह से अपनी परेशानी को छुपाने की चेष्टा कर रहा था।

थोड़ी देर बाद वह लोग आये जिन को फ़ादर मैकैन्ज़ी ने फ्लौसी की तलाश में भेजा था। उन्होंने रिपोर्ट दी कि उन्हें फ्लौसी के टट्टू के खुर चिन्ह कोई दो मील तक तो मिलते गये लेकिन फिर बड़ी पथरीली भूमि जा आने से आगे खोज न लग सका। उन्होंने चारों ओर के भू भाग को बहुत दूर तक खूब अच्छी तरह ढूँढ लिया था मगर फ्लौसी का पता न चलना था और न चला ही।

इस के बाद दोपहर बहुत उदास कटी और शाम होने के क़रीब तक जब फ्लौसी का कोई पता न लगा तो हमारी चिन्ता बहुत बढ़ गई। उसकी माँ भय और शोक से मृतप्राय हो रही थी और इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। परन्तु फ़ादर ने अद्भुत धैर्य से अपने होश हवास को हाथों से नहीं जाने दिया था। मिस फ्लौसी की खोज के लिए जो कुछ किया जा सकता था कर लिया गया था, चारों ओर जासूस दौड़ा दिये गये थे, इशारा देने के लिए बन्दूक की गोलियाँ चलाई गई थीं और पेड़ पर तो एक आदमी बैठा दूरबीन से बराबर चारों ओर देख रहा था, परन्तु इतनी कोशिश का परिणाम कुछ भी नहीं निकल रहा था।

धीरे धीरे अन्धकार फैलने लगा और अभी तक 'नागी' फ्लौसी का कोई खोज नहीं था। आठ बजे हम ने खाना खाया, खाया तो क्या जाता, हाँ पेट में ठूस भले ही लिया। फ़ादर और मिसेज़ मैकैन्ज़ी खाने के समय कमरे में नहीं आये। हम तीनों भी बिल्कुल चुप थे क्योंकि बच्ची के न लौटने की फिक्र के साथ साथ हम लोगों को यह दुख कुरेद कुरेद कर खाये जा रहा था कि हमारे ही कारण यह संकट हमारे अतिथि पर पड़ा था। खाना ख़त्म होने से पहले ही मैं किसी जरूरी काम का बहाना कर के कमरे से बाहर चला गया। मैं बाहर एकान्त में बैठ कर सारे मामले पर सोच-विचार करना चाहता था। मैं बाहर बरामदे में निकल आया और अपना पाइप सुलगा कर उस बैंच पर बैठ गया जो बाहर बाग़ की ओर खुलने वाले दरवाज़े के बिल्कुल सामने और उस से ३ गज़ हट कर बिछी हुई थी। अभी

मुझे यहाँ आ कर बैठे हुए कोई ६-७ मिनट ही हुए होंगे कि मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे किसी ने बहुत धीमे से दरवाज़ा खोला हो। मैं ने उस ओर देखा और आहट ली, लेकिन न तो मुझे कुछ दिखाई दिया और न आहट ही मिली, इस से मैं ने सोचा कि शायद मुझे ही धोखा हुआ हो। रात अँधेरी थी और चन्द्रमा अभी उदय नहीं हुए थे।

एक मिनट और गुज़रा और तब अचानक कोई गोल सी चीज़ पर भारी धमाके के साथ बरामदे के फर्श पर गिरी और मेरे पास से होकर लुढ़कती उछलती निकली चली गई। मिनट भर तो मैं वैसे ही बैठा रहा उठा नहीं, और यह सोचता रहा कि यह वस्तु क्या हो सकती थी। अन्त में मैं ने अनुमान किया कि वह वस्तु अवश्य ही कोई जन्तु था। लेकिन फ़ौरन ही मुझे न जाने क्या ख़्याल आया और मैं बड़ी फ़ुरती से उठ खड़ा हुआ। वह वस्तु मुझ से कोई फ़ुट दूर बिल्कुल चुपचाप बिना हिले डुले पड़ी हुई थी। मैं ने उस की ओर हाथ बढ़ाया मगर तो भी वह हिली डुली नहीं, यह स्पष्ट था कि वह वस्तु कोई जन्तु नहीं थी। मेरे हाथों ने उसे छुआ। वह वस्तु पिलपिली, गर्म और भारी थी। बड़ी तेज़ी से मैं ने उसे उठा लिया और तारों के क्षीण प्रकाश में उसे पहचानने की कोशिश की।

वह किसी मनुष्य का ताज़ा कटा हुआ सिर था।

मैं पुराना खय्यड़ हूं और साधारणतया मेरी सिट्टी गुम नहीं होती है लेकिन विश्वास कीजिये कि इस डरावने दृष्य ने मुझे भी घबरा दिया। परन्तु वह सिर वहाँ आया कैसे? वह था किस का? मैं ने सिर को ज़मीन पर रख दिया और भाग कर दरवाज़े तक गया। मगर वहाँ न तो मुझे कोई दिखाई दिया और न कुछ आहट ही मिली मैं बाहर अँधेरे में जाने को ही था कि फ़ौरन ही मुझे ख़्याल आया कि बाहर निकलते ही छुरा घोंपे जाने का डर था, इसलिये मैं जल्दी से अन्दर हो गया और दरवाज़ा बन्द कर के सांकल चढ़ा दी। तब मैं वापिस बरामदे में आया और जितना संभव हो सका उतनी स्वाभाविक आवाज़ में कुँवर साहिब को बाहर बुलाया। लेकिन शायद मेरी आवाज़ ने मेरी परेशानी को जाहिर कर किया था, क्योंकि न

केवल कुँवर साहिब ही बल्कि कैप्टिन प्रसाद और फ़ादर भी कमरे से दौड़ आये।

"क्या बात है?" फ़ादर ने घबरा कर पूछा।

और तब मुझे सारी बात उन को बतानी पड़ी। सारी बात सुन कर फ़ादर का रंग फक़ हो गया। हम लोग कमरे के दरवाजे के सामने खड़े हुए थे और कमरे में तेज़ रोशनी हो रही थी। इसलिये मैं उन के चेहरे का भाव ठीक तरह से देख सकता था। फ़ादर ने कटे सिर को बालों से पकड़ कर उठा लिया और और रोशनी में उसे देखा।

"यह तो उस आदमी का सिर है जो फ्लौसी के साथ गया था," फ़ादर ने बड़ी कठिनाई से सांस लेते हुए कहा। "ईश्वर का लाख लाख शुक्र है कि यह सिर फ्लौसी का नहीं है।"

हम सब चुपचाप हक्के बक्के से खड़े एक दूसरे को देख रहे थे। प्रश्न था अब किया क्या जाये?

उसी समय किसी ने उस दरवाजे को ज़ोर से खटखटाया जिसे मैं ने सांकल चढ़ा कर बन्द कर दिया था, साथ ही एक घबराई सी आवाज़ सुनाई दी, "दरवाज़ा खोलो मालिक, दरवाज़ा खोलो।"

दरवाज़ा खोला गया और एक भयभीत सा आदमी तेजी से अन्दर घुस आया। यह उन जासूसों में से था जिन को फ्लौसी की खोज लगाने भेजा गया था।

"मालिक," उस ने चीख़ कर कहा, "मालिक मसाइयों ने हम पर हमला कर दिया है। अभी अभी उन की एक बहुत बड़ी टोली पहाड़ी के नीचे से हो कर गई है और वह उस छोटे नाले के पास बने पत्थर के कराल (झोंपड़ी) की तरफ़ गये हैं। अपना दिल थाम ले मालिक उन के बीच मैं ने उस सफेद टट्टू को देखा और उस टट्टू पर 'वन्य कमलिनी' (मिस फ्लौसी) बैठी हुई थी। एक इलमोरन ने टट्टू की लगाम पकड़ रखी थी और टट्टू के साथ साथ रोती हुई आया चल रही थी। उन के साथ के आदमी मुझे दिखाई नहीं दिये।"

"क्या बच्ची जिन्दा थी?" फ़ादर ने भर्राई आवाज से पूछा।

"बच्ची फूल की तरह मुरझाई हुई थी मगर वह ज़िन्दा थी मेरे मालिक। वह बिलकुल मेरे पास से हो कर निकले और जहाँ मैं छुपा

हुआ था मालिक वहाँ से मैं ने देखा कि बच्ची ने अपना मुह आसमान की ओर उठाया हुआ था।"

"ईश्वर उस का भला करे और हम सब को भी धैर्य दे," फ़ादर ने कराहते हुए कहा।

"तादाद क्या है मसाइयों की ?" मैं ने उस से पूछा।

"दो सौ से अधिक हैं—कोई दो सौ और पचास होंगे।"

एक बार फिर हम सब एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। प्रश्न था कि किया क्या जाये ? अभी हम इस हैस-बैस में थे कि दीवाल की दूसरी ओर से जोर जोर की आवाजें आने लगीं।

"ऐ गोरी चमड़ी वालो दरवाज़ा खोलो, दरवाजा खोलो। एक हरकारा आया है, तुम से बातें करने एक हरकारा आया है।" यह आवाज़ थी जो लगातार बाहर से आ रही थी।

असम्लोपागस दीवार तक दौड़ गया और अपने दोनों हाथों से कार्निस को पकड़ कर उस ने अपना सिर दीवाल से ऊपर उठाया और चारों तरफ ग़ौर से देखा।

"मुझे सिर्फ एक ही आदमी दीख पड़ता है मालिक" उस ने कहा, "वह हथियार बन्द है और उस के हाथ में एक टोकरी है।"

"दरवाज़ा खोल दे," मैं ने कहा, "और देख अपना फरसा ले कर दरवाज़े से लग कर खड़ा हो जा।सिर्फ एक आदमी को अन्दर आने दे, मगर दूसरा अन्दर घुसे तो उसे मार दे।"

दरवाज़े की सांकल खोली गई और असम्लोपागस दीवार के साये में अपना फरसा वार करने के लिए सिर के ऊपर उठा कर खड़ा हो गया। उसी समय चन्द्रमा उदय हुए। एक क्षण तक कुछ नहीं हुआ, फिर एक मसाई इल्मोरन छाया की तरह भीतर आया। यह इल्मोरन पूरे युद्ध वेश में था, इस युद्ध वेश का पूरा वर्णन मैं पहले किसी स्थान पर कर आया हूं, और उस के हाथ में एक टोकरी थी। भीतर आते समय चन्द्रमा की किरणें उस के लम्बे बरछे पर पड़ कर उसे चमका रही थीं। उस का शरीर बहुत पुष्ट तथा सुन्दर था और उस की आयु अन्दाज़ से कोई ३५ वर्ष की थी। जितने भी मसाइयों

को देखने का अवसर मुझे मिला है मैं ने किसी को भी ६ फुट से कम लंबा नहीं पाया है। हमारे सामने आ कर वह रुक गया और टोकरी को नीचे फ़र्श पर रख कर अपने बरछे को सीधा खड़ा रखने के लिये उस ने फल की ओर से उसे ज़मीन में गाड़ दिया।

"आओ बाते करें," उसने कहा, "जो पहला हरकारा हमने तुम्हारे पास भेजा था वह तुम से बोल नहीं सका।" और यह कह कर उसने फ़र्श पर पड़े हुए कटे सिर की तरफ़ इशारा किया—कटा सिर धुँधली चाँदनी में बड़ा भयानक लग रहा था। "लेकिन मेरे पास कहने को बाते हैं अगर तुम्हारे पास सुनने को कान हों, और मैं सौगात भी लाया हूं," यह कहकर उसने टोकरी की ओर इशारा किया और ऐसी ढिठाई और गुस्ताखी से हँस पड़ा जिसका बयान नहीं किया जा सकता। यह देखते हुए कि वह चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ था उसकी यह ढिठाई और हिम्मत प्रशँसनीय थी।

"आगे कहो," बेचैनी से फ़ादर ने कहा।

"मैं गौसा अम्बोनी के मसाइयों की एक टुकड़ी का लिगोनानी (सरदार) हूँ। मैं और मेरे साथियों ने इन तीन सफेद चमड़ी वालों का पीछा किया था, यह कह कर उस ने मेरी, कुँवर साहिब और कैप्टिन प्रसाद की ओर इशारा किया," लेकिन यह हम से भी ज्यादा चालाक निकले और जान बचा कर यहां आ गये। हमारी लड़ाई इन से है और इनको हम जान से मार डालेंगे।"

"सच कहते हो मेरे दोस्त," मैंने अपने मन में कहा।

"इन का पीछा करते करते आज सवेरे दो काले आदमी, एक काली औरत, एक सफेद टट्टू और एक गोरी चमड़ी की लड़की हमारे चक्कर में फँस गये। एक काले आदमी को हमने मार डाला उस का सिर यह पड़ा है। दूसरा भाग गया। काली औरत सफेद टट्टू और गोरी लड़की को पकड़ कर हम अपने साथ ले गये। तुम को यक़ीन दिलाने के लिए मैं उस डलिया को ले आया हूं जो उस गोरी छोकरी के पास थी। क्या यह डलिया तेरी बेटी की नहीं है?"

फ़ादर मैकैन्ज़ी ने सिर हिला कर हाँ की और इल्मोरन कहता गया।

"ठीक, तुझ से और तेरी छोकरी से हमारी कोई लड़ाई नहीं है और न हम तुम को तकलीफ़ देना चाहते हैं, सिवाय उन ढोरों के जिन को हम ने पहले ही घेर लिया है—सब ढोर २०० और २० हैं। हर इल्मोरन के बाप* को एक-एक ढोर मिल जायेगा।"

यह सुन कर फ़ादर ने एक दुःख की लम्बी सांस ली। उन को अप ने पशुओं से असीम प्रेम था, इन की देख भाल करना और उन को खिलाने पिलाने का ठीक बन्दोबस्त रखना उन के लिए सब से बड़ा काम था।

"तो ढोरों को छोड़ कर तुझे और कोई हानि नहीं पहुंचाई जायेगी और वजह भी शायद तू जानता होगा," यह कह कर उस ने चारों तरफ़ दीवालों पर गहरी चुभती नज़र डाली। "क्योंकि इस जगह को लड़ कर जीत लेना मुश्किल होगा। लेकिन इन तीनों का मामला बिलकुल दूसरा है। हम ने इन का रात दिन पीछा किया है और इन को हम हरगिज़ ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे, जान से मार देंगे। अगर हम इन तीनों को बिना जान से मारे अपने करालों को लौट गये तो हमारी जनानियाँ हमारा मज़ाक उड़ायेंगी। इसलिये चाहे जान तक की ही बाज़ी क्यों न लगानी पड़े हम इन को ज़रूर ज़रूर जान से मार डालेंगे।

"अब मैं तुझे अपनी शर्त सुनाता हूँ। हम उस छोकरी को कोई चोट नहीं पहुंचायेंगे। बहुत बहादुर है वह छोकरी, वह तो नागी है नागी। इन तीनों में से एक को हमें दे दे—जान का बदला जान—और हम उसे छोड़ देंगे और काली औरत को बलुवे में दे देंगे। बहुत ठीक शर्त है न, गोरे आदमी। हम सिर्फ़ एक आदमी को मांगते हैं तीनों को नहीं, बाक़ी को मारने के लिये हम आगे घात में रहेंगे। मैं तो आदमी को भी नहीं छांटता, वैसे तो यह जवान ठीक रहेगा," कुंवर साहिब की तरफ इशारा कर के, "यह आदमी मजबूत मालूम होता है और जान भी इस की बहुत धीरे धीरे निकलेगी।"

---

* मसाई नवयुवक या इल्मोरन कोई सम्पति नही रख सकते है, इसलिये जो भी लूट का माल उन को लड़ाइयो मे मिल जाता है वह उन के पिताओ की एक छत्र सम्पत्ति होती है।

"और अगर मैं कहूं कि मैं किसी आदमी को बदले में नहीं दूँगा," फ़ादर ने पूछा।

"ऐसा मत कह गोरे आदमी," मसाई ने कहा, "ऐसा न करने पर तेरी छोकरी-सवेरे तड़के ही मार डाली जायेगी और उस के साथ की औरत कहती है कि तेरे कोई बच्चा नहीं है। अगर वह जरा बड़ी होती तो मैं उसे अपनी टहलवी बना लेता, लेकिन क्योंकि वह बहुत छोटी है इसलिये मैं अपने ही हाथ से उसे मारूँगा, देख इसी बरछे से। अगर तू चाहे तो तू उसे मरता देख भी सकेगा, मैं तुझे राहदारी दे दूँगा," और यह कह कर वह वह अपने क्रूर मज़ाक पर ठहाका मार कर हँस पड़ा।

इस बीच मैं तेज़ी से सारी बातें सोच रहा था जैसा कि आकस्मिक परिस्थितियों में करना पड़ता है, और अन्त में मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं अपने आप का फ्लौसी से बदला कर लूँगा। इस निश्चय का मैं ने इस डर से जिक्र नहीं किया कि लोग कहीं मेरी बात का ग़लत अर्थ न लगा लें। कहीं आप लोग भी यह समझ लेने की ग़लती न करें कि मेरी बात शहीदों जैसी थी या ऐसी ही कोई और खुराफ़ात थी। यह तो मोटी सी बात थी। मैं बूढ़ा हो चुका था और कुछ ही दिनों का मेहमान था, फ्लौसी जीवन के प्रवेश द्वार पर खड़ी थी, उस का जीवन बहुमूल्य था और उस से उस के पिता को बड़ी आशायें थीं। उस की मृत्यु से उस के दुःख में उस के माता पिता की मृत्यु हो जाना भी सम्भव था और इधर मेरे मरने पर तो कोई आंसू बहाने वाला भी नहीं था, और सत्य तो यह है कि कुछ धर्मार्थ संस्थायें तो शायद मेरे मरने की खबर पा कर घी के दिये जलातीं। और ऐसा करना ठीक भी था क्योंकि एक तरह से मेरे ही कारण वह प्यारी बच्ची उन खूँखार भेड़ियों के हाथों में जा पड़ी थी। और सौ बातों की एक बात तो यह थी कि बहुत अमानुषीय भयानक तरीक़ों से मौत के घाट उतारे जाने के लिये उस फूल सी कोमल बच्ची के मुक़ाबिले मैं ज्यादा उपयुक्त था। लेकिन उन भेड़ियों द्वारा दी जाने वाली असह्य यातनायें और पीड़ा सह कर तिल तिल कर के मरने की जरा भी इच्छा नहीं थी। असह्य कष्ट और यातनायें सहना मुझ जैसे कायर के लिए संभव

नहीं था, क्योंकि स्वभावतयः मैं दिल का बहुत कच्चा हूँ। मेरी योजना थी कि जैसे ही बच्ची का हिफ़ाजत से बदला हो जायेगा मैं अपने सिर में गोली मार लूँगा। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि आत्म-हत्या पाप है और आत्मघाती को मुक्ति नहीं मिलती। उलटे उस की आत्मा अनन्त काल तक विक्षिप्त सी घूमती रहती है। परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास था कि घटना चक्र की इस विचित्र परिस्थिति को देखते हुए परम पिता जगदीश्वर अवश्य ही मेरे इस घृणित कार्य को क्षमा कर देंगे। यह सारी बातें कुछ ही सैकिन्डों में मेरे दिमाग़ में घुस गईं।

"अच्छा फ़ादर, "मैं ने कहा, "आप इस आदमी से कह सकते हैं कि मैं फ्लौसी से अपना बदला कर लूँगा, लेकिन एक शर्त पर कि मुझे मार डालने से पहले फ्लौसी सही सलामत यहाँ पहुंचा दी जाये।

"ओफ़," कुँवर साहिब और कैप्टिन प्रसाद ने एक साथ कहा, "हम आप को ऐसा नहीं करने देंगे लाल साहिब।"

"नहीं, हरगिज़ नहीं," फादर मैकैन्ज़ी ने ज़ोर से कहा, "मैं किसी की भी हत्या अपने सिर नहीं लूँगा। अगर उस जगतपिता परमेश्वर को यही मंजूर है कि मेरी बच्ची ऐसी भयानक मौत मरे तो उस की इच्छा अवश्य ही पूरी होगी। आप लाल साहिब वाक़ई सच्चे बहादुर हैं। (मैं वास्तव में बिलकुल सहासी नहीं हूँ)। आप सज्जन हैं, लेकिन मैं आप को जाने नहीं दूँगा।"

"अगर भगवान ने और कोई सूरत न निकाली तो मैं ज़रूर जाऊँगा," मैं ने निश्चयात्मक रूप से कहा।

मसाई लिगोनानी को संबोधित कर के फ़ादर ने कहा, "यह जिंदगी और मौत का सवाल है। हमें इस पर अच्छी तरह सोच विचार करना होगा। सवेरे तड़के ही तुम को हमारा जवाब मिल जायेगा।"

"बहुत अच्छा गोरे आदमी," मसाई भेड़िये ने बड़ी लापरवाही से जवाब दिया, "लेकिन यह याद रख अगर तेरे जवाब में देर हुई तो तेरी अधखिली कली कभी फूल नहीं बनेगी। सुन लिया, मैं उसे अपने इसी बरछे से काट डालूँगा," और यह कह कर उस ने अपना

बरछा हवा में हिलाया, "हमें डर था कि कहीं तू हम को धोखा दे कर रात के वक्त हम पर हमला न कर दे, मगर छोकरी के साथ वाली औरत से हमें पता लग गया है कि तेरे आदमी किनारे की तरफ गये हुए हैं, और सिर्फ २० आदमी यहाँ हैं।" फिर जोर से हंस कर के कहा, "ऐ गोरी चमड़ी वाले, अपने बोमा (किलेनुमा मकान) की हफाजत के लिये इतने थोड़े से आदमी रखना अक्लमंदी नहीं है, अच्छा सलाम, और दूसरे गोरी चमड़ी वालो तुम को भी सलाम, तुम्हारी आँखें भी मैं हमेशा के लिए बन्द कर दूँगा। तो तू सवेरे जवाब भेज देगा, अगर न भेजा तो याद रख जो मैं ने कहा है वही होगा।"

तब उस ने अमस्लोपागस की तरफ, जो बराबर उस के पीछे खड़ा हुआ उसे चापे हुए था, घूम कर कहा, "ऐ जँगली, खोल जल्दी दरवाजा मेरे लिए।"

अधेड़ सरदार का धैर्य सीमा लांघ गया। पिछले दस मिनटों से उस मसाई लिगोनानी को देख देख कर उस के मुँह में पानी भरा आ रहा था और उसे अपने आप को रोकना मुश्किल होता जा रहा था। इल्मोरन के कन्धे पर हाथ रख कर असल्लोपागस ने उसे इतनी जोर से घुमाया कि दोनों के चेहरे आमने सामने हो गये। तब मसाई के परों से सजे भयंकर मुँह में अपना मुँह घुसेड़ते हुए उस ने धीमी गुर्राहट से कहा, "मुझे देखता है तू?"

"ऐ, क्या बकता है, देख तो रहा हूँ तुझे।"

"और तू इसे भी देखता है," यह कह उस ने अपना इन्कूसीकास उसे दिखाया।

"ऐ, देख लिया यह खिलौना। क्या करेगा इस का?"

"मसाई कुत्ते, शेखीखोर लबाड़िये, छोकरियों को उठा ले जाने वाले चोर, इस 'खिलौने' से मै तेरी बोटी बोटी काट कर फेंक दूँगा। जान की खैर मना कि तू हरकारा है नहीं तो अभी तक तेरी बोटियाँ चील-कव्वे खाते होते।"

मसाई ने अपने बरछे को हवा में हिलाया और ठठ्ठा मार कर हँस पड़ा, फिर हँसी रोक कर कहा, "जी में आता है कि तेरी मेरी

आमने सामने की लड़ाई हो जाये और तब तुझे पता लगेगा," और यह कह कर वह मुड़ा और जोर से हँसता हुआ वहाँ से चला गया।

"आमने सामने खड़े हो कर मेरा तेरा मुक़ाबला होगा, डर मत," असस्लोपागस उसी धुन में कहता चला गया, "तू असस्लोपागस के के सामने खड़ा होगा, असस्लोपागस के जिस की नसों में चाका महान का खून है, जो आमाजूल क़ौम से है, जो निकम्बोसी फौज का सरदार है, पहले जैसे औरों ने भी किया है, तू भी इन्कूसीकास के सामने गिर पड़ेगा। पहले बहुत से गिर चुके हैं। हँस ले; आज तू जी भर कर हँस ले, कल तेरी हड्डियाँ चबा-चबा कर गीदड़ हँसेंगे।"

लिगोनानी के चले जाने के बाद हम से किसी को उस टोकरी को खोल कर देखने का ध्यान आया जिसे वह मसाई यह बताने के लिये लाया था कि फ्लौसी वास्तव में उनकी क़ैद में थी। टोकरी का ढक्कन उठाने पर देखा गया कि उस में गोया लिली का पूरा पौधा, जड़, तना फूल, गाँठ समेत, बड़ी होशियारी से सजाया हुआ था। साथ ही फ्लौसी के अनाड़ी हाथों से लिखी एक छोटी-सी चिट्ठी भी थी। चिट्ठी एक साधारण चिकनाई लगे कागज़ के टुकड़े पर लिखी हुई थी, शायद इस कागज़ के टुकड़े में उस ने खाने की कोई चीज़ लपेट रखी थी। चिट्ठी में लिखा था :—

प्यारे पापा और ममी,

लिली का पौधा ले कर लौटते समय मसाइयों ने हमें पकड़ लिया। मैं ने भाग निकलने की कोशिश की मगर भाग न सकी। उन्होंने टाम को मार डाला है और दूसरा आदमी भाग गया। मगर अभी तक आया और मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है, लेकिन मैं ने उन्हें कहते सुना है कि वह लाल साहिब की पार्टी के किसी आदमी से मेरा बदला करेंगे। मैं ऐसा करना हरगिज़ हरगिज़ पसन्द नहीं करूँगी। पापा मेरे बदले कोई दूसरा आदमी जान न दे। और पापा रात के वक्त उन पर हमला करने की कोशिश करो, उन्होंने हमारे तीन बैल मार डाले हैं, उनको खा-पी कर जश्न मनायेंगे। मेरे पास पापा मेरा रिवाल्वर मौजूद है, अगर कोई मदद न पहुंची तो मैं अपने आप

को गोली मार लूंगी। वह मुझे कभी नहीं मार सकेंगे। अगर मैं मर जाऊँ पापा तो तुम और ममी मुझे याद रखना। मुझे बहुत डर लग रहा है मगर मुझे ईश्वर में उस जगतपिता में पूरा विश्वास है। पापा आप ही ने तो मुझ से कहा था कि निर्बल के बल राम। और अधिक लिखने में मुझे डर लगता है, क्योंकि वह मुझे देखने लगे हैं। पापा विदा, ममी विदा।

फ्लौसी

इस पत्र के दूसरी ओर लिखा था, "लाल साहिब को प्यार, एक लिगोनानी टोकरी ले कर आप के पास आ रहा है, इस तरह आप को गाया लिली का पौधा मिल जायेगा।"

जब मै ने इन शब्दों को पढ़ा जिन को एक छोटी परन्तु महान वीर लड़की ने उस समय लिखा था जब कि मौत उस के सिर पर नाच रही थी और जिस परिस्थिति में वीर से वीर मनुष्य भी कातर हो कर होश-हवास खो बैठते हैं तो मुझे बरबस ही रोना आ गया और मैं ने एक बार फिर अपने मन में दृढ़ निश्चय किया कि जब तक मेरी जान के बदले उस की जान बच सकती है वह नहीं मरेगी, कभी नहीं मरेगी।

तब इस के बाद हम बहुत जल्दी जल्दी अपनी परिस्थिति पर सोच-विचार करने लगे। मैं ने फिर कहा कि मै जाऊँगा और फ़ौरन ही फ़ादर ने मेरी बात काट दी। कुँवर साहिब और कैप्टिन प्रसाद ने सच्चे दोस्त की भाँति उसी समय यह प्रतिज्ञा की कि अगर मै मसाइयों के पास जाऊँगा तो वह भी मेरे साथ चलेंगे और कन्धे से कन्धा भिड़ा कर अधिक से अधिक मसाइयों को मारते हुए मृत्यु का आवाहन करेंगे।

"पौ फटने से पहले ही कोई न कोई सूरत निकालनी जरूरी है।"

"मेरी राय तो यह है कि हम जितने भी आदमी मिल सकें उन को लेकर उन पर हमला कर दें। और फिर हरि इच्छा बलीयसी। जो भगवान को मंजूर होगा हो जायेगा," कुँवर साहिब ने जोर देकर कहा।

"अहा हा," अमन्लोपागस ने गुर्रा कर कहा, "यह बात कही है मर्दों की सी, वाह इन्कूबू। लड़ने से डरना क्या? सिर्फ २५० मसाई

कुत्ते ।हम लोग कितने हैं ? इस मालिक (फादर) के पास बीस आदमी हैं, मैकुमाज़न तेरे साथ पाँच हैं और पाँच हैं गोरे लोग—तीस-तीस आदमी हुए, काफी हैं मालिक काफी हैं मैकुमाज़न सुन, तू तो पुराना शिकारी है, तेरी तो उम्र बीत गई है लड़ाइयों में। बच्ची ने क्या लिखा है ? यह कुत्ते भर पेट माँस खा कर मौज करेंगे, मैकुमाज़न मालिक ! क्यों न यह खाना उन का आख़िरी खाना बना दें। जिस मसाई कुत्ते को मैंने सूरज निकलने से पहले काट कर फेंक देने का वायदा किया है उस ने क्या कहा था, मालिक याद है तुझे ? उस ने कहा ऐसे हमले का डर नहीं था क्योंकि हमारे पास आदमी कम हैं। मालिक तू ने यह कराल देखा है जहाँ वह टिके हुये है ? मैं ने उसे आज सवेरे देखा था। मालिक वह इस तरह है", और यह कह कर उस ने ज़मीन पर उस की शक्ल खींचनी शुरू की, "यह है चढ़ाई वाला चौड़ा रास्ता जो काँटेदार झाड़ियों से बन्द सा हो रहा है। इन्कूबू मेरे मालिक क्या तू और मैं फरसा ले कर वहाँ से सौ मसाई कुत्तों को निकल भागने से नहीं रोक सकते हैं ?

"देख मालिक लड़ाई इस तरह होगी, जैसे ही पौ फटे और चमक दिखाई दे, उस से पहले नहीं क्योंकि उस वक्त अन्धेरा होगा और बाद को भी नहीं क्योंकि वह जाग जायेंगे, तो बौगवन दस आदमियों को ले कर चुपचाप कराल के ऊपरी तरफ चला जाये, वहाँ जहाँ कराल का छोटा दरवाज़ा है। वहाँ वह चुपचाप बड़ी होशियारी से पहरेदार को मार दे ताकि वह कोई शोर गुल न कर सके, और फिर वहाँ तैयार रहे। तब मैं और इन्कूबू हम दोनों और वह चौड़ी छाती वाला अस्करी, वह बहुत बहादुर है, रेंग कर उस दरवाज़े पर जायें जो काँटेदार झाड़ियों से अट रहा है और वहाँ के पहरेदार को मार डालें और तब फरसे ले कर रास्ते के दोनों तरफ थोड़ी थोड़ी दूर पर खड़े हो जायें और जो भी निकल कर भागे उसे चीर दें। उसी रास्ते में भभ्भड़ होगा। अब बचे १६। इन १६ को दो टोलियों में बाँट दे, एक टोली के साथ तू जा मैकुमाज़न और दूसरी के साथ जायँ यह मालिक (फादर मेकैन्जी) और सब बन्दूकों से लैस हों। एक टोली कराल के सीधी तरफ को जाये और दूसरी बायीं तरफ को, और

जब तू मैकुमाजन बैल की तरह डकरा कर इशारा करे तो, सब के सब एक साथ ही सोते हुए मसाइयों पर गोलियों की बौछार शुरू कर दें। मगर इस बात का ध्यान रखे कि कहीं बच्ची के गोली न लग जाये। तब दूसरे किनारे से तू बौगवन दसों आदमियों के साथ गोहार लगा और दीवाल फलांग कर वहाँ के मसाइयों को काट डाल। और फिर होगा यह कि बन्दूकों की आवाज़ सुनकर डरे हुए, औंघते निंदासे मसाई गिरते पड़ते एक दूसरे को ढकेलते कुचलते बौगवन के बरछों से बचने के लिए पागल हो कर जंगली तो वह इसी काँटेदार झाड़ियों से बन्द रास्ते से हो कर जंगली शिकार की तरह अड़ते पिलते बाहर निकलेंगे। वह दोनों तरफ से चलने वाली गोलियाँ उन को भून देंगी, और जो गोलियों से बचकर निकल भागेंगे उनको मैं, इन्कूब और अस्करी खत्म कर देंगे। यह है मेरा डौल मैकुमाजन, अगर तुझे इस से और अच्छी तरकीब सूझी हो तो कह डाल।"

जब अमस्लोपागस अपना सारा नक्शा सुना चुका तो मैं ने उस की स्कीम को बाकी औरों को समझा दिया। सभी ने इस बूढ़े जूलू सरदार की जो निस्संदेह एक उत्तम जनरल था, इस चोखी और उस्तादाना तरकीब की बहुत बहुत तारीफ की। काफ़ी सोच-विचार के बाद हम ने उस की बताई तरकीब ज्यों की त्यों मान ली क्योंकि वर्तमान दशा को देखते हुए इस से उत्तम कोई तरकीब हो ही नहीं सकती थी। स्कीम के हमारे सोचे अनुसार पूरे होने की हालत में ही बचने की कुछ आशा हो सकती थी अन्यथा नहीं। बिलकुल तीतर के मुँह लक्ष्मी थी। शत्रुओं की संख्या और कठिनाइयों को देखते हुए सफलता की आशा बहुत कम थी।

"ओह, ओ बूढ़े नाहर," मैं ने अमस्लोपागस से कहा, "तू ठीक जानता है कि कहाँ घात लगानी पड़ती है और कहाँ चोट करनी पड़ती है, कब चढ़ बैठना होता है और कब मंडराना होता है।"

"ऐ मैकुमाजन," उस ने जवाब दिया, "चालीस साल मेरे लड़ाइयों में गये हैं, और मैंने बहुत कुछ देखा है मालिक। लड़ाई खूब जोरदार होगी मालिक। मुझे खून महक आती है, मैं तुझ से कहता था न मालिक, मुझे खून महक आती है।"

अध्याय ६

रात्रि व्यतीत होती है

जैसा अनुमान किया जा सकता था मसाइयों के आक्रमण की बात सुन कर मिशन स्टेशन के सारे आदमी पत्थर की चहारदीवारी में आ घुसे थे। चारों ओर बेतहाशा औरत, मर्द और बच्चे दिखाई पड़ रहे थे और यह सब छोटे छोटे झुण्डों में एक दूसरे से लिपटे-चुपटे डरी दबी आवाज़ में सहमे सहमे से मसाई लुटेरों की बर्बरता और अत्याचार की बातें कर रहे थे और साथ ही रक्त के प्यासे निर्दयी हत्यारे मसाइयों के दीवाल तोड़कर घुस आने की हालत में जो असानुषीय कष्ट और भयानक यातनायें उन को मिलने वाली थीं उन की याद कर कर के ज़िन्दा ही मरे जा रहे थे।

अमस्लोपागस ने मसाइयों पर हल्ला बोल देने की जो तरकीब सुझाई थी उस पर चलने का निश्चय कर लेने के फ़ौरन बाद ही फ़ादर ने १२ से १५ वर्ष तक की आयु के चार चौकस होशियार छोकरों को बुलाया और उन को अलग-अलग स्थानों में जा कर छुप रहने और छुपे छुपे मसाई कैम्प की गति विधि पर नज़र रखने के लिए भेज दिया और साथ ही उनको यह आज्ञा भी दी गई कि वह थोड़ी थोड़ी देर के बाद आ कर उन की गति विधि की रिपोर्ट दे जाये और अचानक हमले की संभावना को ध्यान में रखते हुए बाकी छोकरों और कुछ जवान छोकरियों को दीवाल के सहारे सहारे थोड़ी थोड़ी दूर पर लगा दिया गया।

इस के पश्चात फ़ादर मैकैन्ज़ी ने उन २० आदमियों को, जो उस समय मिशन स्टेशन में मौजूद थे, मकान के चौक में इकट्ठा किया और विशालकाय सनोबर के चौड़े तने के सहारे टिक कर उन्होंने

उनको और हमारे चारों अस्कारियों को बड़ा शान्ति से सारी ऊँच नीच समझा दी। निस्संदेह वह दृश्य बहुत ही प्रभावशाली और गंभीर था। जिस किसी ने भी उसे देखा उसे वह दृश्य कभी नहीं भूलेगा। विशालकाय तने से टिका हुआ था फ़ादर मैकैन्ज़ी का दुबला पतला शरीर, उन का एक हाथ तने पर रखा हुआ था और दूसरा सुनने वालों को प्रभावित करने के लिए फला हुआ था, सिर पर टोप नहीं था और उन के भोले भाले सरल परन्तु करुणामय और दयालु मुख पर उन की मानसिक यंत्रणा और वेदना स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उन के पास कुरसी पर बैठी थीं उन की दुखिया करुणा योग्य स्त्री जिस ने उमड़ती हुई रुलाई को रोकने के लिए अपने मुख को हथेलियों से ढक रखा था। उन के बाद खड़ा था अल्फ़ान्सो जिस के चेहरे पर वहशत बरस रही थी, इनके पीछे हम तीनों खड़े थे और हमारे पीछे दृढ़ चट्टान सा खड़ा था अमस्लोपागस अपनी साधारण अदा से, अपने फरसे का सहारा लिए। सामने की ओर खड़े या बैठे थे सशस्त्र आदमी। कुछ के हाथों में रायफ़िलें थीं, दूसरों के पास बरछे और ढालें थीं और सभी उत्सुकता और सावधानी से फ़ादर के मुख से निकलने वाले प्रत्येक शब्द को सुन रहे थे। विशालकाय वृक्ष की सूच्याकार पत्तियों से छन कर आने वाला चन्द्रमा का क्षीण प्रकाश सारे वातावरण पर एक विचित्र प्रकार का जादू सा फैला रहा था और अनगिनती पत्तियों से टकरा कर जाने वाली वायु की उदास और दुखपूर्ण सरसराहट इस शोक-जनक अवसर को और भी अधिक भयानक तथा दुखपूर्ण बना रही थी।

सारी परिस्थिति उन के सामने खोल कर बयान कर देने और अपनी दुस्साहसपूर्ण योजना की सारी ऊँच नीच उन को समझा कर फादर ने कहा, "भाइयो, बहुत वर्षों से मैं तुम्हारे बीच में हूँ और भरसक मैं ने तुम लोगों की सेवा की है, तुम्हारी रक्षा की है, तुम को लिखाया पढ़ाया है, तुम को और तुम्हारे कुटुम्बियों को हर आफत से बचाया है और तुम यहाँ रह कर दूधों नहाये और पूतों फले हो। मेरी बच्ची, जिसे तुम 'वन्य कमलिनी' कहते हो, तुम्हारी ही गोदी में पल कर सुकुमार शिशु से बालिका और बालिका से बड़ी हुई है। वह तुम्हारे बच्चों की सहेली

रही है, तुम्हारे बीमार पड़ने पर उस ने तुम्हारी सेवा कर के तुम्हें चंगा किया है और मुझे विश्वास है तुम भी उसे प्यार करते हो।"

"हाँ, हम उसे प्यार करते मैं, और उसे बचाने के लिए अपनी जान की बाज़ी तक लगा देंगे।"

"मैं तुम लोगों का बहुत ऐहसान मन्द हूँ। तुम्हारा ऐहसान कभी न भूलूंगा। मुझे विश्वास है कि आज जब कि मेरे ऊपर आसमान फट पड़ा है, आज जब कि उस कोमल बच्ची की जीवन लता को यह जंगली निर्दयी वहशी, जो यह नहीं जानते कि वह क्या कर रहे हैं, काट कर फेंक देना चाहते हैं तो क्या तुम उस को बचाने में मेरी मदद करोगे और मुझे और उस की माँ को दुख के समुद्र से उबारोगे। साथ ही अपनी औरतों और बच्चों का भी ख़्याल करो। अगर फ्लौसी मार डाली गई तो उसको मार कर मसाई यहाँ हम लोगों पर हमला करेंगे और अगर वह इस मज़बूत दीवाल को तोड़ कर भीतर न भी घुस सके तो भी तुम्हारे घर, खेत, बाग़ सभी बरबाद हो जायेंगे और तुम्हारे सामान और ढोर जानवरों को वह उठा ले जायेंगे। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं लड़ाई से घृणा करता हूँ। मैं ने आज तक कभी भी किसी इन्सान का खून नहीं बहाया है लेकिन आज मैं कहता हूँ कि मारो, मारो, ईश्वर की राह पर चलने वालों को बचाने के लिए ज़ालिमों और हत्यारों को मारो। उस परम पिता परमेश्वर की आज्ञा है कि हम जान दे कर अपनी जान व माल की रक्षा लुटेरों के हाथों से करें। क़सम खाओ, ईश्वर की शपथ खाओ कि जब तक तुम में से एक भी आदमी ज़िन्दा रहेगा तुम मेरे और मेरे इन तीन बहादुर दोस्तों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर अपनी पूरी ताकत से उस नन्हीं बच्ची को भयानक और दर्दनाक मौत से बचाने में मेरी मदद करोगे।"

"और ज़्यादा न कहो मालिक, अब सुनने की ताव नहीं है", मिशन स्टेशन के सब से वयोवृद्ध मुखिया ने गंभीर आवाज़ में कहा, "हम क़सम खाते हैं मालिक, हम तैयार हैं। मालिक अगर हम क़सम तोड़ें तो हम और हमारे बच्चों को कुत्ते की मौत मार दिया जाये और हमारी लाशें गिद्धों और गीदड़ों के नोच नोच कर खाने के लिए फेंक दी जायें। काम बड़े ख़तरे का है मालिक यह हम जानते हैं, इतने कम

अदमी इतनी भीड़ का कैसे मुकाबिला करेंगे, लेकिन मालिक हम क़सम खाते हैं कि मर जायेंगे पर पांव पीछे न हटायेंगे, या तो काम पूरा करेंगे नहीं तो लड़ते लड़ते मर जायेंगे। हम क़सम खाते हैं मालिक।"

"हाँ, हम सब कसम खाते हैं, मालिक", एक साथ ही सब बोल उठे।

"और हम लोग भी इस बात की क़सम खाते हैं", मैंने कहा।

"हे ईश्वर, तेरा धन्यवाद", फ़ादर ने आकाश की ओर ताकते हुए कहा, "आप लोग वाक़ई जवांमर्द हैं, मुसीबत के वक्त आप का सहारा लेने पर आप सड़े बांस की तरह टूट नहीं सकते। और दोस्तो—मेरे काले और गोरे दोस्तो, आओ हम सब परम पिता परमेश्वर से घुटने टेक कर प्रार्थना करें कि वह विश्व नियन्ता, वह क़ादिर मुतलक, जो मार भी सकता है और जीवन दान भी दे सकता है, जिस के एक इशारे पर दुनिया और आसमान उलट पलट हो सकते हैं वह परम पिता हमारे बाजुओं में इतनी शक्ति दे ताकि हम सवेरे होने वाली खौफनाक लड़ाई में दुश्मनों के छक्के छुड़ा सकें।" यह कह कर फ़ादर ने घुट ने टेक दिये, उनके साथ हम सब भी आधीनता में झुक गये, नहीं झुका सिर्फ अमस्लोपागस जो उसी तरह अपनी इन्कूर्साकास का सहारा लिए बड़ी शान्ति और गंभीरता से बुत बना खड़ा रहा। वह क्रूर भयंकर जूलू न किसी देवी देवता को मानता था और न किसी की पूजा ही करता था, उस के लिए उस का फरसा ही जाग्रत देवता था।

"ओ परम पिता परमेश्वर", फादर मैकैन्ज़ी ने अपनी गम्भीर आवाज़ से जो भावों की प्रबलता से थर्रा रही थी सन्नाटे को चीरते और सारे वातावरण को गुंजाते हुए कहा, "हे दीनों के रक्षक, हे संकट हरण, हे दीन बन्धु, हमारी प्रार्थना पर कान दे। हे परम पिता। हम तेरे आगे विनती कर के दामन पसारते हैं, हमारी विनती सुन। तू ने कृपा कर के जो एक कोमल कली मुझे दी थी, मेरी निर्दोष बच्ची, जिसे तेरी कृपा से ही मैं पाल पोस रहा था वह आज मौत के मुंह में जा फंसी है, वहशी जानवरों के हाथों पड़ कर उसकी रंगीन जिन्दगी मौत की डरावनी मनहूसियत में बदलने वाली है। हे परम पिता, ऐ खुदादवन्द अमल, उसे अपने दामन में छुपा, उस की ओर अपनी कृपा दृष्टि फेर

उसे तकलीफ को सहन करने की शक्ति प्रदान कर। हे परम पिता! उसकी रक्षा कर। हे ईश्वर तू ही हमारे हाथों को युद्ध करने और उंग- लियों को तलवार पकड़ने की शक्ति देता है, तेरी शक्ति से ही मनुष्य शक्तिशाली बनता है, तेरी मर्ज़ी के बग़ैर पत्ता तक नहीं हिल सकता। हे ईश्वर! तू हमें इस मौके पर शत्रु का नाश करने की शक्ति दे। जब हम मौत की घाटी में जायें तो तू हमें इतनी शक्ति और साहस दे दे जिस से हम शत्रुओं का सफाया कर सकें।

हे परम पिता! अपनी अलौकिक शक्ति से उन की मति फेर दे, उन की ताक़त को पानी कर दे और उन के घमण्ड से उठे हुए सिर को नीचा कर दे। हम को अपने दामन में छुपा ले और अपनी शक्ति प्रदान कर। हे ईश्वर! इस गाढ़े समय में हमें भूल न जाना, हमारी भुजाओं में बल दे ताकि जंगली वहशी उस स्फटिक प्रतिमा को पत्थर पर पटक कर चूर चूर न कर सकें। हे ईश्वर तू हमारी विनती सुनता है। हे ईश्वर हमारी विनती सुन, हमारी—उन की जो इस समय तेरी विनती कर रहे हैं और जो हो सकता है सूर्य निकलने से पहले तेरे दरबार में पहुँच जायें। हे ईश्वर हमारी प्रार्थना सुन। हे ईश्वर हमारे शत्रुओं को क्षमा कर दे, अपने अमृतजल से उन के गन्दे वहशी जंगली दिलों को धो कर साफ़ कर दे और जब उन की आत्मायें तेरे हुज़ूर में पहुंचें तो उन को मा कफ़र देना। हे ईश्वर लड़ाई में हमारी सहायता कर, हे ईश्वर हमारी प्रार्थना को सहस्र कान हो कर सुन ले।"

यह प्रार्थना कर के फ़ादर चुप हो गये और हम सब खड़े हो गये। फिर फ़ौरन ही हम ने बड़ी तेज़ी से अपनी तैयारियां करनी शुरू कर दी जैसा कि असस्लोपागस ने कहा था यह वक़्त काम करने का था बातें करने का नहीं। टोलियों में जाने वालों का बड़ी सावधानी से चुनाव किया गया और हर एक को अलग अलग अच्छी तरह से उस का काम समझाया गया। बहुत सोच विचार के बाद तै हुआ कि कैप्टिन प्रसाद के साथ जाने वाले दस आदमियों को जिन के जिम्मे कैम्प में हड़बड़ी फैलाने का काम था बन्दूक़ें न दी जायें। कैप्टिन प्रसाद के पास उन का सर्विस रिवाल्वर था और एक छुरी थी। यह वही लंबी मसाई छुरी थी जिसे मैं ने अपने आदमी के शरीर से निकाला था जो मसाइयों

द्वारा डोंगी में मार डाला गया था। यह इसलिये किया गया क्योंकि हमें डर था कि तीन ओर से गोली चलने पर यह संभव हो सकता था कि हमारे आदमियों में से ही कोई गोली का शिकार न हो जाये और साथ ही हमारा यह भी ख्याल था कि जो काम उन को सौंपा गया था वह बरछों और छुरों से ज्यादा अच्छा हो सकता था—इस सम्बन्ध में हम को असस्लोपागस की बात माननी पड़ी क्योंकि वह हमेशा छुरे या बरछे का पक्ष लिया करता था। हमारे पास चार बिन्चैस्टर रिपीटर रायफिलें और आधी दर्जन हैनरी मार्टिनी थीं। मैं ने अपनी रिपीटर रायफ़िल ले ली। ऐसे काम के लिए जहाँ जल्दी-जल्दी फ़ायर करना होता है यह रायफिल अति उत्तम सिद्ध होती है। फ़ादर ने दूसरी रिपीटर रायफिल ले ली और बाक़ी दो उनके ऐसे आदमियों को दे दी गईं जो बन्दूक़ चलाना भली प्रकार जानते थे और जिन का निशाना अचूक था। मार्टिनी और बन्दूकें उन अन्य आदमियों को बहुत काफ़ी गोली बारूद के साथ बांट दी गईं जिनको दो टोलियों में बंटकर कराल के दोनों ओर से सोते हुए मसाइयों पर गोली चलाने का काम सौंपा गया था। सौभाग्य से यह सभी आदमी थोड़ा बहुत बन्दूक़ चलाना जानते थे।

असस्लोपागस के पास उस का अपना फरसा था और उसी की राय के अनुसार उसे कुंवर साहिब को और सब से शक्तिशाली अस्करी को कराल के झाड़ झंखाड़ से प्रायः बन्द चौड़े रास्ते की रक्षा करने का काम सौंपा गया था। इसी रास्ते से नींद से उठे, औंघते, गिरते पड़ते, घबराये, परेशान मसाइयों के निकल कर भागने की आशा थी। निस्संदेह इस काम के लिए बन्दूकें बिल्कुल बेकार थीं। इसलिये कुंवर साहिब और अस्करी ने असस्लोपागस की तरह के हथियार लिये। सौभाग्य से फ़ादर मैकैन्ज़ी के गोदाम में बेहतरीन इंगलिश स्टील के बने हुए कुछ हथौड़े नुमा कुल्हाड़े मौजूद थे। इन में से कुंवर साहिब ने एक बहुत चौड़े फलड़े वाला कोई १॥ सेर वजन का एक कुल्हाड़ा चुना और अस्करी ने उस से ज़रा छोटा और हल्का चुना।

असस्लोपागस के दोनों कुल्हाड़ों के फलड़ों पर तेज़ धार रख देने के बाद उस ने उन कुल्हाड़ों को ३॥ फीट लम्बे बैंटों में जमा दिया।

यह बैंट (दस्ते) खूब मोटे बेत के बने हुए थे और हल्के होने के साथ साथ बहुत मज़बूत और लचकदार भी थे । दो उपयुक्त बैंटों को छाँट कर बड़ी होशियारी से उन के सिरों को काट कर उन में खाँचे बना दिये गये ताकि चलाते वक़्त वह हाथ से निकल न जायें । इस के बाद उन में कुल्हाड़ों के फलड़ों को बड़ी मज़बूती से फंसा दिया गया और फिर उन दोनों हथियारों को आधे घन्टे के लिए पानी भरी बाल्टी में डुबो दिया गया ताकि बेत फूल कर फलड़ों को जकड़ ले। बेत के पानी में फूल जाने का यह नतीजा हुआ कि बैंट इतनी मज़बूती से फलड़ों में जकड़ गये कि बिना बेंत को जलाये उन्हें कुल्हाड़ों से अलग करना असम्भव था । जब यह सब ज़रूरी काम अमस्लोपागस ने ख़त्म कर लिये तो मैं ने अपने कमरे में जा कर टीन की चादर की अस्तरकारी वाली एक छोटी सी पेटी को खोला जिसे भारतवर्ष से चलने के बाद आज तक खोला ही नहीं गया था और जिस में ज़रा सोचिये तो सही क्या था बेहतरीन स्टील की बनी कम न ज्यादा बल्कि पूरी चार झिल्लमें [कवच] बन्द थीं ।

पिछली बार अफ्रीका के एक दूसरे भाग में यात्रा करते समय ऐसा अवसर आया था कि देशी लोहे की बनी झिल्लमों से ही हम तीनों अपनी जीवन रक्षा कर सके थे और इस घटना को याद रखते हुए मैं ने प्रयाग में ही ऐसी ख़तरनाक जान जोखिम वाली यात्रा पर निकलने से पहिले ही अपने अपने नाप की लोहे की झिल्लमें बनवा लेने की सलाह दी थी । ऐसी झिल्लमें बनवाने में बहुत झंझट उठाना पड़ा था क्योंकि झिल्लम बनाने की कला प्रायः नष्ट हो गई है । परन्तु उदयपुर में अब भी कुछ कारीगर ऐसे हैं जो उचित मज़दूरी दिये जाने पर जैसी भी झिल्लम आप चाहें बना कर दे सकते हैं । और मेरे प्रयत्न का यह नतीजा निकला कि उन कारीगरों ने इतनी सुन्दर झिल्लमें बना कर दीं कि जिन को देखे से तबीयत ख़ुश हो जाती थी । उन के बनाने में परले दरजे की बारीकी और कारीगरी ख़र्च की गई थी और सारी झिल्लम असली फ़ौलाद की अनगिनती छोटी छोटी परन्तु अत्यन्त मज़बूत छल्लियों के बुने हुए जाल से बनाई गई थीं ।

यह कमीजें (झिल्लमें) पूरी आस्तीनों और ऊंची गरदन वाली जरसी जैसी थीं। इन में अस्तर के स्थान पर बहुत उत्तम क़िस्म का सावर चमड़ा लगा हुआ था और तेज़ चमकीली होने के स्थान पर इन झिल्लमों के फ़ौलाद को बन्दूक़ की नाल की तरह भूरा कर दिया गया था। मेरी क़मीज़ का वज़न पूरा ३॥ सेर था और यह मेरे शरीर पर ऐसी फ़िट आती थी कि मैं उसे हफ्तों अपने कपड़ों के नीचे बनयाइन के स्थान पर पहिन सकता था और यह इतनी मुलायम थी कि रगड़ से खाल के छिल जाने की भी कोई संभावना नहीं थी। कुंवर साहिब के पास ऐसी दो कमीजें थीं, एक तो थी साधारण जरसी जैसी जिस में जांघों के ऊपरी भाग की रक्षा करने के लिए दो परदे सामने की ओर लटके हुए थे। दूसरी उन के दिये खास नमूने पर बनाई गई थी और उस की शक्ल काम्बीनेशन सूट जैसी थी। इस दूसरी कमीज़ का वज़न ६ सेर था। इस झिल्लम की बैठक सावर चमड़े की थी और इस झिल्लम से शरीर के घुटनों तक के भाग की रक्षा हो सकती थी। परन्तु इस के पहिनने में कुछ झंझट बाज़ी थी, एक तो इसे पीठ पर पीछे की ओर कसना होता था और दूसरे इस का वज़न भी कुछ अधिक था। इन चार क़मीज़ों के साथ के खाकी कपड़े के बने हुए कान ढ़कने वाले चार कन्टोप भी थे। हर कन्टोप में अन्दर की ओर असली फ़ौलाद की बहुत बारीक छल्लियों से बनी लड़ियों का अस्तर लगा हुआ था। छल्लियों की लड़ियों से यह कन्टोप इतने मज़बूत हो गये थे कि वह कड़ी से कड़ी चोट से भी सिर को बचा सकते थे।

आज कल गोली बन्दूक के ज़माने में कवच-झिल्लम की बातें करना ज़रा अजीब सा तो अवश्य लगेगा क्योंकि गोली के सामने यह बिल्कुल ही बेकार हैं। लेकिन अर्धसभ्य जंगली जातियों के मुकाबिले में जिन के पास कुल्हाड़े फरसे और बरछे जैसे काटने और छेदने वाले शस्त्र होते हैं यह कवच और झिल्लम बहुत काम देते हैं, और अच्छे कवच तो ऐसे शास्त्रों के लिए प्रायः अभेद्य होते हैं।

इस समय हमने इन क़मीज़ों को लाने की अपनी दूरदर्शिता को खूब सराहा और साथ ही अपने भाग्य को भी सराहा कि सौभाग्य से वह हमारे सामान के उन बदमाशों द्वारा चुराये जाने पर चोरी जाने

से बच गई थीं। क्योंकि कुंवर साहिब के पास दो क़मीज़ें थीं, उन्होंने बहुत सोच विचार कर कॉम्बीनेशन सूट स्वयं पहिनने का निश्चय किया। कुंवर साहिब जैसे शक्तिशाली व्यक्ति के लिए डेढ दो सेर का अधिक वज़न कोई ख़ास महत्व नहीं रखता और ढ़ाल हाथ में न होने के कारण जांघों की रक्षा करना उन के लिए कठिन होता। मैं ने प्रस्ताव किया कि दूसरी कमीज़ अमस्लोपागस को दे दी जाये क्योंकि उसे उनके साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर ख़तरे का मुकाबिला करना था। कुंवर साहिब फ़ौरन राज़ी हो गये और और .ज़ूलू को आवाज़ दे कर अन्दर बुलाया। अमस्लोपागस कुंवर साहिब के कुल्हाड़े को लिये, जिसे उस ने अपने मन माफ़िक ठीक कर दिया था, अन्दर आया। जब हम ने उसे लोहे की क़मीज़ दिखाई और बताया कि हम उसे यह पहि-नाना चाहते हैं तो पहिले तो उस ने यह कह कर साफ़ मना कर दिया कि चालीस वर्ष से वह केवल अपनी खाल के कवच के सहारे ही लड़ता आ रहा था और अब लोहे की खाल पहिन कर लड़ना उसे बिल्कुल नापसन्द था। उस की यह युक्ति सुन कर मैं ने एक भारी बरछे को उठाया और कमीज़ को ज़मीन पर फैला कर उस पर अपनी पूरी ताक़त से बरछे का वार किया। बरछा उस कमाये हुए फ़ौलाद की बनी क़मीज़ पर बिना किसी प्रकार का चिन्ह बनाये उचट कर दूर जा पड़ा।

प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्। इस घटना ने उसे आधा राज़ी सा कर दिया और जब मैं ने उसे समझाया कि ऐसे समय जब कि हमें एक एक आदमी की ज़रूरत थी उस की जान बचाने के लिए उपयुक्त साधनों का इस्तेमाल करने में किसी दक़ियानूसी पक्षपात का आड़े लाना बुद्धि-मानी की बात नहीं थी। और जब मैं ने उसे यह समझाया कि कवच पहिन लेने पर उसे ढाल की आवश्यकता न रहेगी और उस के दोनों हाथ फरसा चलाने को मुक्त रहेंगे तो वह फ़ौरन ही राज़ी हो गया और झटपट अपने शरीर पर "लौह खाल" चढ़ाने लगा। यद्यपि यह यह कमीज़ कुंवर साहिब के नाप की बनाई गई थी परन्तु वह .ज़ूलू के ऐसी फ़िट आई जैसे उसी के लिए बनाई गई हो। कुंवर साहिब और वह दोनों एक ही क़द के थे और यद्यपि देखने वालों को कुंवर साहिब

कुछ अधिक लंबे मालूम होते थे पर मेरे विचार से उन दोनों का अन्तर वास्तविक न हो कर काल्पनिक था। असल बात यह थी कुंवर साहिब का शरीर लंबा होने के साथ साथ चौड़ा भी था और इस कारण वह अधिक लंबे लगते थे। उन की भुजायें अमस्लोपागस से लंबी थीं। अमस्लोपागस की भुजायें पतली थीं लेकिन मजबूत थीं फ़ौलादी तार से बनी रस्सी की तरह। कुछ भी हो जब वह दोनों अपने फरसे ले कर और भूरे रंग की झिल्लमें पहन कर पास पास खड़े हुए तो वह बीस पच्चीस शत्रुओं के मुकाबिले में भारी मालूम पड़ते थे। झिल्लमें उन के पुष्ट शरीरों से ऐसे चिपक गई थीं कि उन की छातियों और भुजाओं की प्रत्येक मांस पेशी और मछली अलग दिखाई देती थी।

इस समय रात्रि का कोई एक बजा था और हमारे जासूसों ने रिपोर्ट दी कि बैलों का रक्त पी कर और मांस खा कर मसाई लोग अलावों के चारों तरफ सोने की तैयारियां कर रहे थे, लेकिन कराल के दोनों दरवाज़ों पर चौकीदार लगा दिये गये थे। फ्लौसी के लिये उन्होंने यह बताया कि उसे उन्होंने कराल के पश्चिम की ओर दीवाल से ज़रा हट कर बिठा रखा था। उसी के पास उस की आया और सफेद टट्टू भी था जिसे एक खूंटे से बाँध दिया गया था। फ्लौसी के पैर उन्होंने बताया कि रस्सी से बंधे हुए थे और मसाई इल्मोरन उस के चारों तरफ घेरा डाले सो रहे थे।

क्योंकि अब और कुछ करने को नहीं था इसलिये हम ने कुछ खाया पिया और घन्टे दो घन्टे आराम करने के लिए लेट रहे। जिस निश्चिन्तता धैर्य और शान्ति से बूढ़ा अमस्लोपागस नंगी ज़मीन पर बेधड़क लेट गया और बिना इस बात की चिन्ता किये कि सवेरे तक क्या होगा फौरन ही सो गया, उस धैर्य की प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता। मुझे औरों का हाल तो मालूम नहीं परन्तु कम से कम मैं ऐसे धैर्य और निश्चिन्तता से सो नहीं सकता था। ऐसा आत्म नियंत्रण या तो केवल योगी ही कर सकते हैं या एकदम जड़ मस्तिष्क वाले जिन में समझने की अनुभूति होती ही नहीं है। अमस्लोपागस इन दोनों में से कौन था यह तो मैं वर्षों तक उस के साथ रहने पर भी आज तक निश्चित नहीं कर सका हूँ। कभी तो वह शापभ्रष्ट योगी सा लगता था और कभी

कभी उस की निर्लिप्तता और परिस्थिति से उदासीनता कुछ और ही कहानी कहती थी। कुछ भी हो, अमस्लोपागस क्या था यह रहस्य तो मुझे आज तक मालूम ही न हो सका है। मुझे यह कहते शर्म आती है कि ऐसा अवसर आने पर मैं साधारणतया भयभीत हो जाता हूँ। उत्ते-जना और आवेश के समाप्त हो जाने पर मैं इस असंभव से दीखने वाले कार्य के सम्बन्ध में, जिसे करने का हम ने निश्चिय किया था, सोचने लगा। और सत्य तो यह है कि मुझे यह कार्य बिल्कुल भी पसन्द नहीं आ रहा था। हम सब मिला कर कोई ३० आदमी थे, जिस में से कुछ तो निस्संदेह लड़ाई से बिल्कुल ही अनभिज्ञ थे और इन मुट्ठी भर आद-मियों के साथ हम उस जाति के २५० लड़ाकू वीरों का मुकाबिला करने की सोच रहे थे जो सारे अफ्रीका भर में सब से खूंखार, सब से बहा-दुर और सब से भयंकर माने जाते है, और कोढ़ में खाज, कराल पत्थर की बनी सुदृढ़ दीवार उन की रक्षा कर रही थी। वास्तव में यह काम बहुत ही जोखिम का था, यदि पागलपन कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं होगी और हमारा यह सोचना कि हम बिना चौकीदारों का ध्यान आक-र्षित कराये अपने निश्चित स्थानों पर पहुँच सकेंगे इस से भी अधिक असम्भव और पागलपन की बात थी। निस्संदेह यदि हम एक बार ऐसा कर सकते तो—परन्तु कोई भी साधारण सी दुर्घटना जैसे किसी बन्दूक का अचानक ही चल जाना, किसी का फिसल कर या ठोकर खा कर गिर पड़ना, या किसी पत्थर के टुकड़े के लुढ़कने की आवाज़ इत्यादि से ही हमारा जीवन संकट में पड़ सकता था, हम बरबाद हो सकते थे, क्योंकि पलक झपैकते ही सारे कैम्प का जाग उठना निश्चित था। केवल अचा-नक आक्रमण की हालत ही में हम कुछ आशा कर सकते थे।

मैं जिस पलंग पर लेटा लेटा इन दुखदाई बातों पर सोच विचार कर रहा था वह बरामदे की ओर खुलने वाली खिड़की के सहारे बिछा हुआ था। यकायक इस खिड़की में हो कर रोने कराहने की बड़ी विचित्र सी आवाजें आने लगीं। कुछ देर तक तो मैं उन आवाज़ों का कुछ भी सिर पैर न मालूम कर सका, फिर आखिर मुझे उठना ही पड़ा। मैं खिड़की के बाहर सिर निकाल कर चारों ओर यह देखने लगा कि यह आवाज़ किधर से आ रही थी।

मै ने देखा कि कोई अस्पष्ट सी छायामूर्ति बरामदे के परले सिरे पर बैठी अपनी छाती को पीट पीट कर रो रही थी—मैं ने एक नज़र से ही पहचान लिया की यह छायामूर्ति अल्फ़ान्सो की थी। वह रो रो कर फ्रेंच भाषा में क्या कह रहा था या वहाँ अन्धेरे में क्या कर रहा था यह तो मै ठीक तरह समझ न सका इसलिये मै ने उसे आवाज़ दे कर पास बुलाया और वहाँ अन्धेरे में अकेले बैठ कर रोने पीटने का कारण पूछा।

"हुजूर वाला", उस ने जवाब दिया "हम ईश्वर से उन लोगों की आत्मा के लिए दुआ माँग रहे थे जो आज रात को हमारे हाथों से मारे जाने वाले हैं।"

"बिल्कुल ठीक", मैं ने डांट कर जवाब दिया "ऐसा जरूर करना चाहिये मगर जनाब हमारे हाल पर मेहरबानी फ़रमा कर अपनी प्रार्थना ज़रा धीमे धीमे कीजिये।"

अल्फान्सो यह डाँट सुन कर वहाँ से चुपचाप नौ दो ग्यारह हो गया और फिर उस के रोने और कराहने की आवाज़ आनी भी बन्द हो गई। ऐसे ही वक्त गुजरता गया। थोड़ी देर बाद फ़ादर ने खिड़की के बाहर से बहुत धीमे से मुझे आवाज़ दी। अब हम को अपनी सारी कार्यवाही बिल्कुल चुपचाप बिना किसी प्रकार की आवाज़ किये करनी थी। "तीन बज गये हैं", उन्होंने फुसफुसा कर कहा, "साढ़े तीन बजे हम को चल देना चाहिये।"

मै ने उन को कमरे में बुला लिया। उन के अन्दर आ जाने पर मुझे यह कहने पर मजबूर होना पड़ता है कि यदि समय इतना गंभीर न होता और हमारे ऊपर दुख और शोक के बादल न फट पड़े होते तो शायद उन की रण सज्जा और विचित्र वेशभूषा को देख कर मैं हँसी के मारे पागल हो जाता। उन्होंने बड़ी विचित्र पोशाक पहिन रखी थी। उन्होंने पादरियों का ढीला ढाला, लंबा काला चुग़ा पहिन रखा था और सिर पर बहुत चौड़ी बाड़ वाला काले रंग का फैल्ट हैट था। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि ये दोनों चीजें उन्होंने इसलिये पहिनी थीं क्योंकि उन का रंग काला था और अन्धेरे में छुप सकता था। हाथ में हमारी एक विन्चैस्टर रिपीटर रायफिल थी और ऐलास्टिक की बनी कमर पेटी में हिरन के सीग के दस्ते का एक चौड़ा शिक़ारी चाकू लटका हुआ था

और दूसरी ओर लटका हुआ था एक लंबी नाल वाला कोल्ट रिवाल्वर।

"ओह लाल साहिब", मुझे अपनी पेटी की ओर ताकते हुए देख कर उन्होंने कहा, "आप मेरे चाकू को देख रहे हैं। मैं ने सोचा कि अगर हाथोंहाथ की लड़ाई होने का मौक़ा आया तो यह लंबा चाकू बहुत काम देगा। इस का फल असली फ़ौलाद का है और बीसियों भेड़ियों और सुअरों का शिकार मैं इस से कर चुका हूँ।"

इस समय तक सब जग उठे थे और चुपचाप बिना तनिक सा शोर मचाये चलने के लिये तैयार हो रहे थे। मैं ने अपनी फ़िल्लस के ऊपर अपनी बुश शर्ट पहिन ली थी ताकि उस की नीचे वाली जेबों में कारतूस भरे जा सकें। कमर पेटी से मैं ने भी अपना रिवाल्वर लटका लिया। कैप्टिन प्रसाद ने भी यही पोशाक पहिन रखी थी लेकिन कुंवर साहिब ने फ़िल्लस के अतिरिक्त और कोई वस्त्र नहीं पहिन रखा था, सिर पर लोहे की अस्तरकारी की टोपी थी, पांव में मुलायम चमड़े के नरी के जूते थे और घुटने से नीचे टाँगें बिल्कुल नंगी थीं। अपने फ़िल्लस की पेटी से उन्होंने अपना रिवाल्वर रस्सी से बाँध कर लटका रखा था।

इस बीच अमस्लोपागस सब आदमियों को बीन बटोर कर सनोवर के पेड़ के तले इकट्ठा कर रहा था और हर आने वाले के हथियारों की जाँच करता जा रहा था। चलते न चलते हम ने अपने प्रोग्राम में थोड़ी सी तब्दीली कर दी। हम को मालूम हुआ कि गोली चलाने वाली टोलियों के साथ जाने वाले दो आदमी ऐसे थे जो बन्दूक़ चलाना बहुत कम जानते थे मगर बरछैत (बरछा चलाने वाले) बहुत अच्छे थे। मैं ने उन से रायफिलें ले कर उन को लंबे बरछे और ढालें दे दीं और दोनों को चौड़े रास्ते को रोकने वाली टोली में, जिस में कुंवर साहिब, अमस्लोपागस और एक अस्क़री था शामिल कर दिया, क्योंकि हम सभी समझते थे कि तीन आदमी, चाहे वह कितने ही बहादुर क्यों न हों और कितनी ही वीरता से क्यों न रास्ते को रोकें, इस काम के लिए बहुत कम थे।

अध्याय ७

संहार, भयानय नर संहार

इस के बाद कुछ देर तक बिल्कुल खामोशी रही और हम अँधकार में सरदी से कॉपते सिकुड़ते चलने के मुहूर्त की प्रतीक्षा करने लगे। यह अवकाश शायद सब से कठिन और थका देने वाला था, यह १५ मिनट काटने मुश्किल हो गये, मालूम होता था कि जैसे घड़ी की सुइयों ने चलना बन्द कर दिया हो। कोई बीस बार ही घड़ी देखी होगी। मालूम होता था जैसे यह समय बीतेगा ही नहीं। हमारे साथियों के गम्भीर चेहरे, जिन को यह स्पष्ट रूप से मालूम था कि घन्टे में ही संसार बदलने वाला है, न जाने किस किस को सूर्योदय देखने तक का सौभाग्य प्राप्त न हो, उन की धीमी आवाज में कन-फुसकियाँ, कुँवर साहिब का बार बार अपने कुल्हाड़े की धार की जॉच करना और कैप्टिन प्रसाद का बड़ी बेचैनी और उतावलेपन से बार-बार अपने चश्मे को उतार कर साफ करना, यह साफ बता रहा था कि उन सभी का धैर्य अन्तिम सहन बिन्दु तक पहुँच चुका था। केवल अमस्लोपागस ही, जो अपने स्वभावानुसार अपने इन्कूसीकास का सहारा लगाये इत्मीनान से खड़ा हुआ था और कभी-कभी अपनी नाक में नास ठूँस लेता था, बाहर से बिलकुल शान्त और अटल चट्टान सा मालूम होता था। कैसी भी रोमॉचकारी घटना उस के फौलादी तारों जैसी स्नायुओं पर प्रभाव नहीं डाल सकती थी।

चन्द्रमा अस्त हो गया। बहुत देर से वह क्षितिज के पास और पास होता जा रहा था और अब अन्त में वह सारी प्रकृति को अन्धकार में डुबो कर अस्ताचल को चला ही गया। उसी समय पूर्व की ओर क्षितिज के ऊपर उषा की बहुत धीमी चमक फैल कर सूर्य के उदय होने की सूचना देने लगी।

फ़ादर घड़ी हाथ में लिये बिलकुल चुपचाप खड़े थे। उन की दुखिनी स्त्री जिस की आँखें रोते रोते लाल हो गई थीं उन का हाथ पकड़े खड़ी थी और प्राणपण से अपनी बेग से फूट पड़ने वाली रुलाई को रोक रही थी।

"चार बजने में बीस मिनट हैं," उन्होंने कहा, "आधे घण्टे में हमला कर सकने योग्य रोशनी फैल जायेगी, इसलिये बेहतर होगा कि कैप्टिन प्रसाद अपनी टोली के साथ चल पड़ें क्योंकि उन को अधिक रास्ता चलना है इसलिये दो तीन मिनट पहिले ही उन को रवाना हो जाना चाहिये।"

कैप्टिन प्रसाद ने आख़िरी बार अपने चश्मे को साफ़ किया और बहुत उमँग और प्रसन्नता से हमारी ओर देख कर अपना सिर हिलाया, मुझे विश्वास है कि ऐसा प्रफुल्लित भाव दर्शाने में उन्हें बहुत ही आत्म-नियन्त्रण से काम लेना पड़ा होगा। तब अपने भावानुसार कैप्टिन ने अपनी लोहे की अस्तरकारी वाली टोपी उतार कर श्रीमती मैकैन्ज़ी को प्रणाम किया और अपनी टोली को ले कर कराल के ऊपरी सिरे को घेरने के लिये चल दिये। उन की टोली उन टेढ़ी मेढ़ी साँप की तरह बल खाई हुई पगडंडियों से जाने को थी जिन का पता सिर्फ़ वहाँ के आदिवासियों ही को था।

उसी समय हमारे एक जासूस लड़के ने आ कर रिपोर्ट दी कि मसाई कैम्प में सिवाय दो पहरेदारों के बाक़ी सब लोग गहरी नींद में सो रहे थे और पहरेदार अपने स्थानों पर घूम घूम कर पहरा दे रहे थे। अब हम सब भी चल पड़े। सब से आगे था हमारा बाट दिखाऊ, उस के पीछे क्रम से थे कुँवर साहिब, अमस्लोपागस, वक़्वाफ़ी, अस्करी और उस के पीछे लँबे बरछे और ढालें लिये हुए फ़ादर मैकैन्ज़ी के मिशन के दो बरछैत थे। इन के बिलकुल पीछे था मैं, मेरे पीछे था अल्फ़ान्सो और बन्दूकों से लैस पाँच आदिवासी, सब से पीछे बाकी छः आदिवासियों के साथ थे फ़ादर मैकैन्ज़ी।

जानवरों के जिस कराल में मसाई टिके हुए थे वह उसी पहाड़ी की तलहटी में बना हुआ था जिस पर फ़ादर मैकैन्ज़ी का विशाल गढ़ जैसा मिशन स्टेशन बना हुआ था, मोटे हिसाब से क़द कराल

मिशन की इमारत से कोई ८०० गज़ दूर था। इस दूरी के पहले ५०० गज़ तो हम ने काफ़ी तेज़ चाल से मगर बिलकुल चुपचाप बिना किसी प्रकार की आवाज़ किये पार किये, इस के बाद हम ऐसी ख़ामोशी से पांव दबा कर चलने लगे जैसे शेर शिकार की घात में चलता है। भूतों और छाया मूर्तियों की भांति झाड़ियों में छुपते लुकते पत्थरों की आड़ लेते हम चुपचाप आगे बढ़ रहे थे। थोड़ी दूर जा कर मेरी दृष्टि अचानक ही पीछे की ओर जा पड़ी। मै ने देखा कि अल्फान्सो लड़खड़ाता डगमगाता मेरे पीछे आ रहा था, उस का मुँह एकदम रक्तहीन सफेद हो गया था और उसके पॉव शराबियों की तरह कॉप रहे थे, और उस की रायफिल जिस का घोड़ा चढ़ा हुआ था एकदम मेरी खोपड़ी का सीधा निशाना बनाये हुए थी। क्षण भर रुक कर मै ने उस की रायफ़िल में सेफ्टी कैच लगा दिया और हम फिर चल पड़े। कराल ले १५० गज़ की दूरी तक पहुँचने तक सब ठीक ठाक रहा, उस के बाद बड़े जोर से उसके दाँत बजने लगे।

"अगर तेरी यह खटखट बन्द न हुई तो मैं तुझे जान से मार डालूँगा," मै ने बहुत आहिस्ता से गुर्रा कर कहा, क्योंकि एक बेवकूफ डरपोक बावर्ची के दांतो की खटखटाहट से हम सब की जान ख़तरे में पड़ जाना मुझे बिलकुल पसन्द नहीं था। मुझे भय होने लगा कि कहीं वह भॉडा न फोड़ दे, उस के मुँह को बन्द कर देने वाले को मै सब कुछ दे सकता था।

"मगर हुजूर वाला, हम इस बारे में बिलकुल मजबूर हैं, हम कर ही क्या सकते हैं," उस ने जवाब दिया, "हुजूर सर्दी भी तो बहुत ज्यादा है आज।"

अब तो बड़ी मुसीबत थी, न छोड़े बनता था न निगलते, लेकिन सौभाग्य से मुझे एक तरकीब सूझ गई। मुझे अपनी बुश शर्ट की जेब में एक गन्दा रुमाल मिल गया। उस से कुछ देर पहले मै ने अपनी रायफ़िल साफ की थी। "इसे अपने मुँह में रखले," उसे रुमाल देते हुए मैं ने कहा, "और अगर तेरे मुँह सेआवाज़ निकली तो मै तुझे इसी जगह जान से मार डालूँगा।" और मुझे आशा थी कि इस गन्दे रुमाल को मुँह में ठूस लेने से उस के दॉतों की खटखटाहट बन्द हो जायेगी।

मेरी शक्ल और आवाज़ से शायद अल्फान्सो भी समझ गया कि मैं अपनी धमकी को पूरा कर भी सकता था, इसलिये उस ने फ़ौरन ही मेरी आज्ञा को मान कर रुमाल मुँह में ठूँस लिया। इस के बाद हम फिर चुपचाप चलने लगे।

आख़िरकार हम से कराल ५० गज़ दूर रह गया। अब हमारे और कराल के बीच खुला हुआ घास का ढलवां मैदान था जिस में आड़ के लिए लाजवन्ती की सिर्फ एक झाड़ी और ऊँट कटारे के कुछ झाड़ खड़े थे। हम अभी तक घनी झाड़ियों के अन्धेरे में छुपे हुए थे। धीरे धीरे प्रकाश फैलता जा रहा था, तारिकायें मन्द पड़ गई थीं और पूर्व की ओर उगते सूर्य का बहुत धीमा प्रकाश फैलता जा रहा था। इस क्षीण प्रकाश में कराल की रूपरेखा स्पष्ट दिखाई दे रही थी और मसाइयों के अलावों की बुझती चिंगारियाँ भी वहाँ से दीख रही थीं। हम यहीं ठहर गये और बड़े चौकन्ने पन से चारों ओर देखा क्योंकि हमें मालूम था कि कराल के दरवाजे पर संतरी पहरा दे रहा था। क्षण भर बाद ही वह हमें दिखाई पड़ा, वह सुन्दर लम्बा चौड़ा तगड़ा जवान था और कंटीली झाड़ियों से प्रायः बन्द से दरवाज़े के दोनों ओर पाँच पाँच क़दम घूम कर बड़े इत्मीनान से पहरा दे रहा था। हम ने उसे अचानक ही जा लेने की आशा की थी लेकिन हमारी सोची बात पूरी नहीं हुई। वह तो विशेष रूप से सचेष्ट और चौकन्ना मालूम पड़ता था। यदि हम उसको ख़त्म न कर सके और वह भी बिल्कुल चुपचाप बिना शोर गुल मचाये तो हम सब का मारा जाना निश्चित था। झाड़ियों में छुपे छपाये हम उसे देख रहे थे। अचानक ही अमस्लोपागस, जो मुझ से कुछ कदम आगे था, मुड़ा और मुझे कुछ इशारा सा किया और दूसरे ही क्षण मैं ने उसे साँप की तरह पेट के बल लेटते देखा, और जैसे ही पहरेदार का मुँह दूसरी ओर घूमा वह इस अवसर का लाभ उठा कर चुपचाप साँप की तरह घास में आगे की ओर रेंग गया।

अज्ञात पहरेदार ने कोई गीत गुनगुनाना शुरू कर दिया था और अमस्लोपागस रेंगता चला जा रहा था। बिल्कुल चुपके से आँख बचा कर वह लाजवन्ती की झाड़ी तक पहुँच गया और यहाँ कुछ क्षण रुका।

पहरेदार अब भी इधर से उधर घूम कर पहरा दे रहा था। एकाएकी वह घूमा और दीवाल के ऊपर उचक कर कैम्प के अन्दर का हाल देखने लगा। आनन फानन में इन्सानी साँप जो कि उस की घात में लगा हुआ था दस गज़ और आगे घास में सरक गया और जब तक इल्मोरन पहरेदार घूमे वह ऊँट कटारे के एक झाड़ की आड़ में पहुँच गया। घूमते ही पहरेदार की आँख ऊँट कटारे के उस झाड़ पर पड़ी और उसे कुछ ऐसा सन्देह हुआ जैसे वहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ अवश्य थी। उस ने झाड़ की ओर क़दम बढ़ाया फिर रुका, जम्हुआई ली, नीचे झुका और एक कंकर उठा कर उस झाड़ में फेंका। कंकर असम्लोपागस के सिर पर जा कर लगा, सौभाग्य से वह झिल्लम पर नहीं लगा। अगर कंकर झिल्लम पर लगता तो उस की झंकार अवश्य ही हमारा भेद खोल देती। सौभाग्य से झिल्लम की फ़ौलाद भी चमकदार होने के स्थान पर भगमैले रंग की थी नहीं तो उस की चमक ही हमारा भाँडा फोड़ देती। इस बात से अपनी तसल्ली कर के कि झाड़ के पीछे सब कुछ ठीक ठाक था पहरेदार ने और अधिक छान बीन न कर के बड़े इत्मीनान से अपने बरछे का सहारा ले कर उस झाड़ की तरफ आँखे लगा दीं।

कोई तीन मिनट तक वह इसी तरह अपने विचारों के भंवर जाल में डूबता इतराता खड़ा रहा और इधर हम लोगों का धैर्य था कि छूटा जा रहा था। क्षण क्षण पहाड़ की तरह गुज़र रहा था, प्रत्येक क्षण हमें यह मालूम पड़ रहा था कि या तो अब पकड़े जायेंगे या कोई विचित्र दुर्घटना हो जायेगी। अल्फान्सों के मुँह में ठुंसे हुए गन्दे चिकने चीथड़े पर उस की बत्तीसी खड़ताल बजा रही थी। मैं ने सिर घुमा कर बड़ी भयानक निगाहों से उसे देखा। लेकिन असल बात तो यह है कि मेरा दिल भी उतनी ही तेज़ी से धड़ धड़ कर रहा था जितनी तेज़ी से अल्फान्सो की बत्तीसी खड़ताल बजा रही थी। मेरे शरीर से पसीना चूने लगा और पसीने के कारण मेरे चमड़े का अस्तर लगी झिल्लम बहुत अरुचिकर ढंग से मेरे शरीर से चिपक गई। मेरे होश हवास भी धीरे धीरे गुम होते जा रहे थे।

आख़िरकार हमारी अग्नि परीक्षा समाप्त हुई। पहरेदार ने पूर्व दिशा की ओर देखा और यह सोच कर कि उस की डयूटी का समय समाप्त होने जा रहा था इत्मीनान की सांस ली—और वास्तव में उस की डयूटी सदैव के लिए ही समाप्त होने जा रही थी। फिर अपने हाथों को गरमाने के लिए उस ने उन्हें मला और ठंड से अकड़ते हुए शरीर में गरमी लाने के लिए तेजी से इधर उधर घूमने लगा।

जैसे ही उसकी पीठ हमारी तरफ़ हुई लंबा काला साँप घास में आगे की ओर सरका और दूसरे झाड़ की आड़ में पहुँच गया जो कि पहरेदार के वापिसी रौंद के रास्ते से कोई दो तीन क़दम हट कर था।

पहरेदार वापस लौटा और झाड़ के पास हो कर टहलता हुआ निकला चला गया, उसे इस बात का गुमान तक न था कि उसी झाड़ के पीछे उस की मौत बैठी हुई थी और तेज नज़रों से उस की प्रत्येक गति विधि को देख रही थी। अगर वह तनिक भी नीचे की ओर झुक कर देख लेता तो असल्सोपागस उसे ज़रूर ही दिखाई पड़ जाता—लेकिन उसने झुक कर देखा ही नहीं।

वह निकला चला गया और तब उस की ताक में बैठा उस का शत्रु झाड़ी की आड़ छोड़ कर सीधा खड़ा हो गया और अपने हाथों को आगे की ओर फैला कर पाँव दबाये उस के पीछे पीछे घात में चल दिया।

एक क्षण और गुज़रा, जैसे ही इल्मोरन अपने रौंद से घूमने ही को था कि ज़ूलू ने शेर की तरह छलांग लगाई और क्षीण प्रकाश में हम केवल इतना ही देख सके कि उस ने अपने लंबे पतले हाथों से लोहे के शिकन्जे की तरह मसाई की गरदन जकड़ ली थी। इस के बाद शुरू हुआ दो शरीरों का मरोड़ना, लिपटना और उलझना और दूसरे ही क्षण मैं ने देखा कि मसाई का सिर पीछे की ओर झुका और साथ ही तड़ाके की आवाज़ सुनाई दी जैसे कोई सूखी टहनी चटाख़े से टूट गई हो। मसाई ज़मीन पर गिर पड़ा और उस के हाथ पाँव ऐंठने लगे। देखते देखते उस का शरीर ठंडा पड़ गया।

असल्सोपागस ने अपनी सारी फ़ौलादी ताक़त लगा कर मसाई इल्मोरन की गरदन तोड़ दी थी।

एक मिनट तक अमस्लोपागस मसाई के शरीर को दबाये बैठा रहा। उसने अपने लोहे के शिकन्जे जैसे हाथों से उस की गर्दन को तब तक दबाये रखा जब तक कि उस को इस बात का यकीन न हो गया कि वह मृत हो चुका था। तब वह मृत शरीर को छोड़ कर उठ खड़ा हुआ और हम को आगे बढ़ने का इशारा किया। हम सब चारों हाथ पैरों पर बन्दर की भाँति चल कर आगे बढ़ने लगे। कराल के पास पहुँच कर हम ने देखा कि मसाइयों ने हमले से सुरक्षित रहने के लिए चौड़े रास्ते को, जो कोई दस फीट चौड़ा था, चार पाँच बड़े बड़े बबूल के झगड़ों को फँसा कर और भी आँट दिया था। मै ने सोचा कि यह बात हमारे लिए बहुत लाभदायक थी। क्योंकि रास्ते में जितनी अधिक रुकावटें होंगी उतनी ही कम तेजी से अन्दर भरे मसाई निकल सकेंगे। यहाँ पहुँच कर हम पार्टियों में बंट गये। फादर मैकैन्जी अपनी पार्टी के साथ कराल की दीवाल के सहारे सहारे बायें हाथ की ओर चले गये, कुंवर साहिब और अमस्लोपागस काँटेदार बाड़ के दोनों ओर खड़े हो गये और दो बरछैत और एक अस्करी बाड़ के सामने पार्टी के साथ पाँव दबाये हुए कराल के जमीन पर बैठ गये। मै दाहिनी ओर की दीवाल के सहारे सहारे चल दिया।

कोई ४० कदम चल कर मैं ठहर गया और अपनी पार्टी के आदमियोंको दीवाल के सहारे चार चार कदम की दूरी पर खड़ा कर दिया, अल्फान्सो को मै ने अपने पास ही रखा। तब मै ने पहली ही बार दीवाल के ऊपर से भीतर की ओर झांका। अब तक काफ़ी प्रकाश फैल गया था, सब से पहले मुझे सफेद खच्चर दिखाई दिया। वह मेरे बिल्कुल सामने बँधा हुआ था और उसके पास ही मुझे फ्लौसी का सूखा पीला मुख दिखाई दिया। फ्लौसी, जैसा कि हमारे जासूस बच्चों ने हमें खबर दी थी, दीवाल से कोई १० क़दम दूर बैठी हुई थी। उस के चारों ओर बीसियों जवान पड़े सो रहे थे। कराल के अन्दर स्थान स्थान पर बुझते हुए अलाव सुलग रहे थे, और हर अलाव के चारों तरफ गले तक भोजन ठूँसे क़ोई २५-२५ मसाई पड़े सो रहे थे। जब तब कोई मसाई जवान नींद से जाग कर जम्हुआई लेता हुआ उगते सूर्य की लाली से लाल होती पूर्व दिशा की ओर देख लेता था। परन्तु अभी कोई जागा नहीं था। मै ने पाँच मिनट तक और ठहरने

का निश्चय किया ताकि और अधिक रोशनी फैल जाये जिस से गोली चलाने में आसानी हो और साथ ही मैं कैप्टिन प्रसाद की पार्टी को, जिस की कोई भी आहट नहीं मिल रही थी, भली प्रकार अपनी पोजीशन संभाल लेने का अवसर देना चाहता था।

बढ़ते हुए सूर्य के प्रकाश से चारों ओर के वृक्ष, पत्थर, नदी का जल, घास इत्यादि प्रकाशमान होते जा रहे थे। अनन्त हिम राशि से ढके विशालकाय केनिया पर्वत की रूपरेखा पृथ्वी के क्षीण अन्धकार को भेद कर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। सहसा सूर्य की प्रथम किरणों ने उस की उत्तुङ्ग चोटी से टकरा कर उस पर पड़ी अनन्त हिम राशि को एकदम रक्त वर्ण कर दिया। ऊपर नीला आकाश प्रकृति के अनन्त वृक्ष की तरह बालक रूपी केनिया पर्वत को अपने अंक में लिए हुआ था। प्रातःकाल हुआ जान कर कोई चिड़िया अपने सुरीले स्वरों से उस विश्व-नियन्ता के गुण गाने लगी, प्रातः-समीर बहने लगी और झाड़ियों की टहनियों को हिला हिला कर ओस बिन्दुओं की पृथ्वी तल पर वर्षा करने लगी। चारों ओर सुख चैन और शान्ति फैली हुई थी, यदि शान्ति नहीं थी तो हम लोगों के मन में नहीं थी।

मैं अभी नियत सिगनल देने का साहस कर ही रहा था और मैं ने फ्लौसी के दाहिनी ओर पड़े हुए एक विशालकाय मसाई को गोली का निशाना बना कर यह सिगनल देने का निश्चय कर लिया था कि यकायक अल्फ़ान्सो की बत्तीसी दौड़ते हुए घोड़ों की टाप की आवाज़ की तरह बजने लगी और नीरव शान्ति में यह आवाज़ ज़ोर से गूँजने लगी। परेशानी और बदहवासी के कारण उस के मुँह में ठुंसा चिथड़ा कहीं निकल कर गिर पड़ा था। क्षण मात्र में ही हम से कोई दो गज़ के फ़ासले पर सोया हुआ एक मसाई चौंक कर जग गया और सीधा बैठ कर इस विचित्र आवाज़ का कारण जानने के लिए चारों तरफ देखने लगा। गुस्से से लाल पीला हो कर मैं ने बन्दूक का कुन्दा अल्फ़ान्सो के पेट में मारा। इस चोट से उस के दाँतों की खटखटाहट तो बन्द हो गई लेकिन चोट के दर्द से दोहरा होते वक्त उस की रायफ़िल धड़ाम से चल गई। गोली मेरी कनपटी के पास से सन्नाती हुई निकल गई और मैं बाल बाल बच गया।

अब तो सिगनल देने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। कराल के दोनों ओर से धड़ाधड़ बन्दूकें चलने लगीं और मैं भी ताक ताक कर मसाइयों को निशाना बनाने लगा। फ्लौसी के आसपास वाले मसाइयों को मैं ने चुन चुन कर भून दिया। तभी कराल के ऊपरी सिरे से भयंकर शोर गुल की आवाजें आने लगीं। उस तेज़ शोर में कैप्टिन प्रसाद की आवाज़ अलग पहचानी जाती थी, और दूसरे ही क्षण ऐसा दृश्य दिखाई दिया जैसा न मैं ने आज तक कभी देखा था और न देखने की आशा ही है। कराल के अन्दर वाले हृष्ट पुष्ट मुस्टंडे मसाइयों का झुण्ड चौंक कर जाग उठा और भय और क्रोध से चीखते चिल्लाते अनेकों मसाई भागते न भागते हमारी अचूक निशाने बाज़ी का शिकार हो गये। एक क्षण तक तो वह दुविधा में रहे परन्तु कराल के ऊपरी सिरे से आने वाले शोर गुल और गाली गुफ्तार की आवाज़ों को सुन कर और साथ ही गोलियों की बौछार से हड़बड़ा कर वह सब एक साथ ही कंटीली झाड़ियों से बन्द रास्ते की ओर दौड़ पड़े। हमारे आदमी उस भागती एक दूसरे को ढकेलती कुचलती भीड़ पर जितनी तेज़ी से हम अपनी बन्दूकें भर सकते थे उतनी तेज़ी से ताक ताक कर गोलियों की बौछार करने लगे। मैं अपनी दस फायर वाली रिपीटर रायफिल भीड़ पर खाली कर चुका था और अभी मैं उस में और कारतूस भर ही रहा था कि मुझे फ्लौसी का ख्याल आया।

सिर उठा कर देखने से मुझे दिखाई दिया कि सफेद खच्चर एक ओर उल्टा पड़ा पॉव फटकार रहा था। शायद हमारे किसी साथी की गोली उसे लग गई थी या किसी मसाई के बर्छे से चोट खा गया था। उस के आस पास कोई मसाई जीवित नहीं था, और फ्लौसी की नर्स एक बर्छे से उस के पॉव में बँधी रस्सियों को काट रही थी। दूसरे ही क्षण नर्स भाग कर कराल के दीवाल के पास पहुँची, और पत्थरों को पकड़ कर ऊपर की ओर चढ़ने लगी और फ्लौसी भी उस की देखा देखी उस के पीछे पीछे दीवाल पर चढ़ने लगी। लेकिन इतनी देर बंधे रहने और सारी रात एक आसन से बैठने के बाद उस के हाथ, पॉव तेज़ी से काम नहीं कर रहे थे। जैसे ही फ्लौसी दीवाल पर चढ़ने

लगी दो मसाइयों ने जो कराल के ऊपरी सिरे की तरफ से भागते हुए आ रहे थे उस को भागते देख लिया और उस को जान से मार डालने के लिए उस की ओर दौड़े। पहला मसाई उसी क्षण फ्लौसी के पास पहुँचा जब कि वह दीवाल पर चढ़ने का अंधाधुन्ध परन्तु असफल प्रयत्न कर के उल्टी कराल में गिर पड़ी थी। भारी बरछा कौंधा और गिरने ही को था कि मेरी रायफिल की गोली मसाई के सीने में घुस गई और वह कटे पेड़ की तरह परे जा पड़ा। लेकिन उस के पीछे था दूसरा मसाई और अफसोस अब मेरी रायफ़िल खाली थी, उस के मैगज़ीन में एक भी क़ारतूस नही था। फ्लौसी लड़खड़ा कर खड़ी हो गई थी और साक्षात काल स्वरूप दूसरा मसाई उसके सामने था। मसाई अपना बरछा ले कर उस की ओर झपटा। फ्लौसी की निर्मम हत्या अपनी आँखो से देखना मेरे वश की बात नहीं थी परन्तु मैं निरुपाय था। इतनी दूर से खाली हाथों मैं कोई सहायता भी तो नहीं पहुँचा सकता था। फ्लौसी की आसन्न मृत्यु की आशंका तथा भय से मैं ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। परन्तु ऐसी दुर्घटना से आँखे बन्द कर लेना भी तो मेरे वश की बात नही थी। दूसरे ही क्षण आँख खोल कर बड़े आश्चर्य से मैं ने देखा कि मसाई का बरछा एक ओर पड़ा हुआ था और वह दोनों हाथों से अपने पेट को दबाये शराबियों की भाँति लड़खड़ा रहा था। दूसरे ही क्षण मैं ने धुयें की एक लकीर सी देखी और वह मसाई धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। उस के शरीर के खून के फ़व्वारे छूट रहे थे। परन्तु अपने पेट को दोनों हाथों से दबाये वह फिर उठा भागा और गिर पड़ा और उस की आँतें जमीन पर फैल गईं।

उस समय मुझे उस सिल्वर प्लेटेड दुनाले रिवाल्वर का ध्यान आया जिसे फ्लौसी हमेशा अपने साथ रखती थी। उस ने मसाई पर उस रिवाल्वर की दोनों नालें खाली कर दी थीं और उसे यमलोक पहुँचा कर अपनी जान बचा ली थी। दूसरे क्षण उस ने दीवाल पर चढ़ने का फिर प्रयत्न किया और आया ने ऊपर से उस का हाथ पकड़ कर खींच लिया। मैं जानता था कि दीवाल की दूसरी ओर वह अधिक सुरक्षित थी।

यह सब हाल बताने में इतना समय लगा है लेकिन जहाँ तक मेरा ख्याल है कि इन सब बातों के होने में केवल १५ सैकिन्ड ही लगे थे। पलक झपते ही मैं ने अपनी रिपीटर रायफिल की मैगज़ीन को फिर कारतूसों से भर लिया और फिर गोली चलानी शुरू कर दी। अब मैं दरवाज़े के सामने इकट्ठे दरवाज़ा तोड़ कर गिरते पड़ते कुचलते दबाते निकल भागने वाले मसाइयों के झुंड पर गोली नहीं चला रहा था बल्कि उन इक्का दुक्का भगोड़े मसाइयों को निशाना बना रहा था जो इधर उधर से दीवाल पर चढ़ कर भाग रहे थे। मैं ने एक कोने से उन को निशाना बनाना शुरू किया और अन्त में उस कोने की ओर अपनी रायफिल की नाल मोड़ दी जहाँ बहुत से मसाई जत्था बना कर दीवाल पर चढ़ जाने की कोशिश कर रहे थे।

इतनी देर में कोई २०० मसाई, क्योंकि अब तक हम लोग ५० को ठिकाने भी लगा चुके थे, कांटों से रुके अटे चौड़े रास्ते में आ कर फंस गये। कैप्टिन प्रसाद के बरछैतों ने ऊपर वाले रास्ते को रोक 'कर उधर से उन का निकल भागना रोक दिया था। मसाइयों को शायद यह नहीं मालूम था कि कैप्टिन प्रसाद की जिस टोली की संख्या वह बहुत अधिक समझे हुए थे उस में सिर्फ १० बरछैत ही थे। न जाने क्यों उन को दीवाल फाँद कर भाग जाने की बात सूझी ही नहीं। यदि वह चाहते तो बड़ी सरलता से दीवाल पर चढ़ कर भाग सकते थे। बल्कि हुआ यह कि वह सब काँटों और कंटीली झाड़ियों से प्रायः अंटे हुए रास्ते की ओर पिल पड़े मगर काँटों के इस उलझे जाल को तोड़ कर निकल जाना कोई आसान काम नहीं था। जैसे ही पहला मसाई बाहर की ओर छलाँग लगा कर कूदा तो मैं ने देखा कि बाड़ के दूसरी ओर ज़मीन पर उस के पाँव टिकने से पहले ही कुंवर साहब का तेज कुल्हाड़ा हवा में ऊपर उठा और पूरी ताक़त से उस के परों से सजे सिर के ऊपर बिजली की तेज़ी से गिरा और वह मसाई काँटेदार झाड़ियों में ही गिर पड़ा। इसके बाद शोर मचाते एक दूसरे को कुचलते, धक्का देते गिरते पड़ते मसाई बाड़े को तोड़ कर निकल पड़े और जैसे जैसे वह निकलते जाते थे कुंवर साहिब का कुल्हाड़ा और इन्कूसीकास ऊपर हवा में चमकते थे और एक-एक करके मसाई चोट खा कर नीचे गिरते

जाते थे। प्रत्येक शव अपने दूसरे साथी के बाहर निकलने में रुकावट बनता जाता था। जो मसाई कुंवर साहिब और अमस्लोपागस से बच निकलते थे उन को दोनों अस्करी और मिशन स्टेशन के दोनों बरछैत सुलट लेते थे, और जो इन से भी बच निकलते थे उन को मैं या फ़ादर अपनी गोली से उड़ा देते थे।

धीरे धीरे लड़ाई और भी भयंकर और तेज होती गई। अब एक एक मसाई बन्द रास्ते से अपने साथियों के शवों के पास आ कूदता था और दोनों फरसाधारियों (कुंवर साहिब और अमस्लोपागस) से अपने लंबे बरछे से डट कर लड़ाई करता था, लेकिन सौभाग्य से झिल्लम पहने होने के कारण नतीजा हमेशा एक ही होता था। पलक मारते ही कुल्हाड़ा बिजली की चमक की तरह हवा में उठता था, एक खच्च की आवाज आती थी और एक मसाई मर कर ढेर में गिर पड़ता था। यह हालत होती थी उस समय जब कि लड़ाई होती थी कुंवर साहब से, अगर लड़ाई अमस्लोपागस से होती थी तो नतीजा तो वही होता था लेकिन ढंग दूसरा होता था। जूलू दोनों हाथों से फरसे को घुमा कर उस के चौड़े धारदार भाग को बहुत कम इस्तेमाल करता था बल्कि इस के विपरीत जिस तरह कठफोड़वा * अपनी कड़ी चोंच से ठोंग मार मार कर लकड़ी में छेद करता है उसी तरह वह भी अपने शत्रु के सिर पर अपने फरसे में लगी खूंटी से लगातार वार करता था। प्रत्येक वार से शत्रु के माथे या शिर पर खच्च से एक स्वच्छ गोल छिद्र बन जाता था और एक दो बार में ही शत्रु मर कर गिर पड़ता था। अमस्लोपागस केवल आवश्यकता पड़ने पर ही या किसी शत्रु की ढाल पर आक्रमण करने के समय के अलावा अपने फरसे के चौड़े धारदार भाग को बहुत कम काम में ला रहा था। बाद को उस ने

---

* जहां तक मुझे स्मरण है मैं यह पहले ही बता चुका हूँ कि जूलू देश मे अमस्लोपागस को 'कठफोड़वा' के नाम से पुकारा जाता था। पहले पहल तो मै यह समझ नही सका था कि उस का यह नाम क्यो पड़ गया था लेकिन जब मैं ने उसे इन्कूसीकास से काम लेते देखा तो मुझे मालूम हो गया कि उस का यह नाम क्यों पड़ गया था। ला. व. सि.

मुझे बताया कि वह उस चौड़े धारदार भाग को काम में लाना अपनी शान के खिलाफ समझता था।

कैप्टिन प्रसाद और उन के साथी और भी पास आ गये थे और हमारी टोली के आदमियों को इस डर से गोली चलाना बन्द कर देना पड़ा कि कहीं अपने साथियों के ही गोली न लग जाये—और दुर्भाग्य से हुआ भी ऐसा ही, हमारा एक साथी हमारी ही गोली का निशाना बन गया। भय से पागल हुए मसाई अपनी जान पर खेल कर बड़ी बदहवासी से पागलों की तरह उस कांटेदार बाड़ और तारों के ढेर को तोड़ते कुचलते भाग छूटे और कुंवर साहिब, आसस्लोपागस और तीनों अस्करियों को तिनकों की तरह अपने रेले में बहा कर बाहर खुले मैदान में निकल गये।

अब हमारे आदमी तेजी से मारे जाने लगे। हमारा कुल्हाड़ाधारी अस्करी मारा गया, एक लंबा बरछा उस के शरीर में घुस कर पीठ की ओर एक फुट बाहर निकल गया था। शीघ्र ही हमारे दोनों बरछैत खूंखार भेड़िये की तरह लड़ते लड़ते मारे गये। हमारी ओर के और भी कई आदमियों की यही गति हुई। एक क्षण तो मुझे चिन्ता होने लगी कि कहीं जीती बाजी हार न जायें। हम लोगों का भाग्य कच्चे धागे से बंधा हुआ था। मैं ने चिल्ला कर अपने अस्करियों को रायफिलें फेंक कर और बरछे लेकर पिल पड़ने की आज्ञा दी। उन्होंने फौरन ही मेरी आज्ञा मान ली क्योंकि अब उन पर भी खून अच्छी तर सवार हो चुका था, फादर के आदमियों ने भी उन की देखादेखी अपने बरछे संभाल लिये।

इस तरकीब से हमारा पल्ला कुछ देर के लिए फिर भारी हो गया लेकिन अब भी लड़ाई का नतीजा बिल्कुल ही अनिश्चित सा था, अब भी तीतर के मुंह लक्ष्मी थी।

हमारे आदमी खूब जी खोल कर बड़ी वीरता से लड़े, जान का मोह छोड़ कर वह मसाई इल्मोरनों पर पिल पड़े, उन को मारा काटा चीरा, घायल किया और उनके हाथों मारे भी गए। लड़ाई के शोर गुल में सब से तेज आवाज कैप्टिन प्रसाद की सुनाई दे रही थी जो ललकार ललकार कर अपने साथियों का जोश बढ़ा रहे थे और जिस

स्थान पर सब से अधिक घमासान हो रहा होता था वहीं पिल पड़ते थे, और उधर कुंवर साहिब और अमस्लोपागस के फरसे मशीन की तरह लगातार उठ और गिर रहे थे और प्रत्येक वार पर कोई न कोई मसाई मर कर या सख्त ज़ख्मी हो कर गिर पड़ता था। मगर मैं ने देखा कि कड़े परिश्रम के कारण कुंवर साहिब की ताकत जवाब देती जा रही थी। उनको कई ज़ख्म भी लग चुके थे और उन से खून बह रहा था। उनका दम फूल गया था और सांस तक रुक रुक कर आ रही थीं। उन की कनपटी और माथे की नसें नीली नीली डोरियों की तरह उभर आई थीं। फ़ौलाद जैसा अमस्लोपागस भी सुस्त होता जा रहा था। मै ने देखा कि वह अपने 'कठफोड़वा' ढंग को छोड़ कर इन्कूसीकास के चौड़े धारदार फल को काम में लाने लग गया था और वैज्ञानिक रीति से शिर या माथे पर गोल गोल छेद बनाने के बजाय अवसर मिलते ही शत्रुओं को काट काट कर फेंक रहा था। मै स्वयं भीड़ भड़क्के में नहीं घुसा था, लेकिन जिस प्रकार फ़ुटबाल के खेल में फुल बैक खेलने वाला खिलाड़ी भीड़ में न घुस कर भी अपने साथियों को मदद पहुचाता और विपक्षियों को रोकता रहता है उसी प्रकार मैं भी भीड़ से बाहर मंडला रहा था और मौक़ा मिलते ही किसी न किसी मसाई को अपनी गोली का निशाना बना देता था। भीड़ में घुस कर लड़ने के स्थान पर मेरा इस तरह मार धाड़ करना अधिक लाभदायक सिद्ध हो रहा था। उस दिन मै ने ६० कारतूस छोड़े थे और जहाँ तक मुझे याद है कि मेरी कोई भी गोली खता नहीं हुई।

परन्तु हमारे भरसक प्रयत्न करने पर भी धीरे धीरे हमारा पल्ला फिर हल्का पड़ने लगा। अब हम कोई १५-१६ आदमी ठीक बचे हुए थे और मसाई कोई ५० से अधिक ही थे। यदि उन के होश हवास ठीक होते और वह सब मिल कर एक साथ हम पर हल्ला बोल देते तो कुछ ही क्षणों में हमारा सफाया कर सकते थे। लेकिन बस यही तो उन्होंने किया नहीं। वह अभी तक पूरे तौर से अपने होश हवास में नहीं आये थे और बहुत से तो सोते से एकाएकी उठ कर बिना हथियार लिये ही भाग छूटे थे।

लेकिन इतनी दिक़्कतें होने पर भी कुछ मसाई बड़ी हिम्मत बहादुरी और जी दारी से जीवन का मोह छोड़ कर लड़ रहे थे और उन की यह जी दारी ही हमारा ठाट उलट देने के लिए काफी थी। कोढ़ में खाज, उसी समय फ़ादर की रायफिल भी खाली हो गई और एक हृष्ट पुष्ट बड़े डील डौल के मसाई ने अपनी चौड़ी तलवार ले कर उन पर आक्रमण कर दिया। फ़ादर ने अपनी रायफिल एक ओर फेंक दी और अपनी कमर पेटी से लटके बड़े शिकारी चाकू को खोल कर हाथ में ले लिया (उन का रिवाल्वर मार काट में कहीं गिर पड़ा था) और वह दोनों जीवन की आस छोड़ कर एक दूसरे से लिपट गये। पलक झपकते ही वह एक दूसरे से भिड़ गये और एक दूसरे की बाहों में जकड़े फ़ादर और वह मसाई दूर तक लुढ़कते चले गए। इस के बाद ही कुछ देर तक मैं भी अपनी जान बचाने के चक्कर में ऐसा फंसा रहा कि उन की ओर ध्यान न दे सका और इस कारण कुछ देर तक मुझे यह भी मालूम न हो सका कि फादर पर कैसी बीती और उन के द्वंद्व युद्ध का क्या परिणाम हुआ।

लड़ाई की स्थिति अब भी डांवाडोल थी और जिस प्रकार भंवर में फंसा मनुष्य उस के बाहर नहीं निकल सकता उसी तरह हमारे आदमी भी मसाइयों के बवण्डर में फंस कर गाजर मूली की तरह काटे जा रहे थे और हमारा पल्ला तेजी से हल्का पड़ता जा रहा था। उसी समय सौभाग्य से एक आश्चर्यजनक घटना हुई। अकस्मात ही या जान बूझ कर अमस्लोपागस भीड़ को चीर कर बाहर निकल आया और कुछ दूर हट कर एक अकेले इल्मोरन से जूझ गया। वह उस इल्मोरन से लड़ ही रहा था कि एक दूसरे मसाई ने दौड़ कर उस की पीठ पर पूरी ताक़त से अपने बरछे से वार किया। कड़ी फ़ौलाद की झिल्लम पर लगने के कारण बरछा उस के शरीर में न घुस सका और टकरा कर दूर जा गिरा। क्षण भर तो बरछा मारने वाला हक्का बक्का भौंचक्का सा मुंह बाये ताकता रहा, लोहे के झिल्लम जैसी वस्तुओं को इस जाति के मनुष्यों ने कभी नहीं देखा था। इस कारण वह उस को जानते भी नहीं थे, और तब वह अपनी पूरी ताक़त से चिल्ला उठा, "भूत", "प्रेत", "जादूगर", "जादूगर"। भूत प्रेत का ख्याल आते ही उस की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और डर के मारे अपनी ढाल को ज़मीन पर

फेंक कर वह तो सिर पर पांव रख कर भाग निकला। एक गोली से मैं ने उस की जीवन लीला समाप्त कर दी। इधर असस्लोपागस ने अपने इन्क्रूसीकास से उस मसाई का भंडारा खोल दिया था, और तब अन्य मसाइयों में भय तथा आतंक फैल गया।

"जादूगर", "जादूगर" कह कर सभी चिल्लाने लगे और भेड़ बकरियों की तरह सिर पर पांव रख कर अन्धाधुंध इधर से उधर भागने लगे। वह पूरी तौर से मतिभ्रष्ट हो गये थे और उन का साहस जवाब दे चुका था। उन में से बहुत से तो अपनी ढाले बरछे तक फेंक कर भाग खड़े हुए।

इस भयानक ड्रामे का अन्तिम दृश्य और भी अधिक भयंकर सिद्ध हुआ। इस नर-संहार में जी खोल कर खून बहाया गया था, ऐसा घमासान हुआ था कि लाशों के ढेर चुन गए थे, महा नरमेध यज्ञ हुआ था जिस में हम ने न कोई दया दिखाई थी और न शत्रुओं से किसी प्रकार की आशा ही रखी थी। इस नरमेध यज्ञ की पूर्णाहुति भी बड़े विचित्र ढंग से हुई। मैं यह आशा कर ही रहा था कि मसाइयों के भाग जाने से अब युद्ध समाप्त हो गया था कि एकाएकी मुरदों के ढेर में छुपा एक स्वस्थ इल्मोरन झपट कर निकला और मृतक तथा घायलों को कुचलता रौंदता तीर की तरह सीधा मेरी तरफ लपका। मगर मैं ने देखा कि वह अकेला नहीं था क्योंकि उसे देखते ही असस्लोपागस अपने बाजुओं को चिड़ियों के डैनों की तरह फ़ैलाये उसके पीछे दौड़ा जरा पास आने पर मैं ने उस मसाई को पहिचान लिया, यह वही रात वाला हरकारा था। यह देख कर कि उस का पीछा करने वाला उस के पास आता जा रहा था और क़रीब था कि उसे पकड़ ले वह रुका और बरछे को संभाल कर उल्टा असस्लोपागस पर टूट पड़ा। असस्लोपागस भी पैंतरा बदल कर कन्नी काट गया।

"आहा तू है," उस ने इल्मोरन को चिढ़ाते हुए कहा, "तुझ ही से तो मैं ने रात को बातें की थीं। लिगोनानी, हरकारा, छोकरियों को चुराने वाला चोर, छोटी छोकरियों को मार कर बहादुरी की डींग मारने वाला डींगिया, तूने ही तो कहा था कि तू आमने सामने की लड़ाई में असस्लोपागस से लड़ेगा, असस्लोपागस से जिस का गोत्र मैक्यूलिसिनी

है, जो अमाजूलू क़ौम से है। देख तेरी प्रार्थना मान ली गई है। तुझे याद है कि मैं ने तेरी बोटी बोटी काट कर फेंक देने की क़सम खाई थी, याद है तुझे गुस्ताख़ कुत्ते। देख मैं तेरी बोटी बोटी काट कर फेंकता हूँ।"

गुस्से के मारे दाँत पीसते हुए मसाई ने अपने होंठ चबा डाले और अपने लम्बे बरछे को उठा कर जूलू पर हमला कर दिया। पास आने पर अमस्लोपागस पैंतरा काट कर एक तरफ़ हो गया और अपने दोनों हाथों से इन्कूसीकास को सिर से ऊपर उठा कर उस के धार वाले फल से मसाई के कन्धे पर पीछे की तरफ़ से इतना ज़बरदस्त वार किया कि फरसे ने गरदन की हड्डी और पसलियों को काटते हुए उसे कमर तक चीर दिया और वह दो टुकड़े हो कर धूल में लोटने लगा।

"हूँ," अपने शत्रु के शव को ध्यान से देखते हुए अमस्लोपागस ने कहा, "वायदा पूरा कर दिया है मैं ने अपना। कैसा सच्चा वार था।"

अध्याय ८

अल्फ़ान्सो की सफ़ाई

और इस तरह यह लड़ाई समाप्त हुई। इस डरावनी और भयानक रणभूमि से चलते समय एकाएकी मुझे ध्यान आया कि मैं ने अल्फ़ान्सो को काफ़ी देर से यानी कोई बीस मिनट से नहीं देखा था। इस लड़ाई का हाल बयान करने में अवश्य ही देर लगी है लेकिन वास्तव में इतनी देर लगी नहीं थी जब से मुझे अपनी जान बचाने के लिए उस के पेट में बन्दूक़ का कुन्दा मारना पड़ा था। मुझे भय हुआ कि कहीं वह ग़रीब लड़ाई में काम में न आ गया हो इसलिये मैं ने लाशों के ढेरों को उलट पलट कर उस के शव को तलाश करना शुरू किया लेकिन उस का शव मुझे न मिलना था और न मिला ही। इस बात से सहसा मुझे ध्यान आया कि शायद वह जीवित ही बच गया हो और इसलिए मैं उसे नाम ले कर पुकारते हुए कराल के उस ओर गया जहाँ मैं ने उसे अन्तिम बार देखा था। कराल की दीवाल से कोई १५ क़दम की दूरी पर बरगद जाति का एक बहुत विशाल वृक्ष था। यह वृक्ष इतना पुराना था कि उस का सारा तना खोखला हो गया था और तने के भाग में सिवाय छाल के और कुछ बाक़ी नहीं बचा था।

"अल्फान्सो," "अल्फ़ान्सो," दीवाल के सहारे सहारे आगे बढ़ते हुए मैं पुकारता गया, "अल्फ़ान्सो"।

"ऐ हुजूर वाला," एक आवाज़ न जाने कहाँ से आई, "हम यह रहे हुजूर।"

मैं ने सिर घुमा कर चारों ओर देखा मगर मुझे कोई भी दिखाई नहीं पड़ा।

"तू है कहाँ?" मैं ने चिल्ला कर पूछा।

"हम यहां हैं हुजूर, इस खोखले में हुजूर।"

मै पेड़ के पास गया। वहां जा कर मैं ने देखा कि बरगद के खोखले तने में जमीन से कोई पांच फुट की ऊंचाई पर बने एक छेद में से एक सूखा पीला चेहरा और दो लम्बी मूंछें बाहर को झांक रही थीं, एक मूंछ आधी थी और दूसरी ऊपर को मुड़ी होने के स्थान पर पिटे कुत्ते की दुम की तरह नीचे लटकी हुई थी। उस समय मुझे पूर्ण रूप से विश्वास हो गया, यद्यपि सन्देह तो मुझे पहिले से ही था, कि अल्फान्सो परले दरजे का डरपोक और बुज़दिल था। मैं उस के पास गया, "ओ गधे, निकल खोखले के बाहर," मैं ने डांट कर कहा।

"हुजूर क्या लड़ाई ख़त्म हो गई?" उसने बड़ी बेचैनी से पूछा, "ईश्वर का लाख लाख शुक्र है कि आख़िर ख़त्म तो हुई यह लड़ाई ओ मेरे ईश्वर, तू बड़ा दयालु है, और हम ने भी तो गिड़गिड़ा गिड़-गिड़ा कर न जाने कितनी दुआये मॉगी थीं।"

बाहर तो निकल पाजी कहीं का, लड़ाई खत्म हो गई है," क्योंकि उस की इस हरकत पर मुझे बहुत ही झूंझल आ रही थी इसलिये मैं ने गुस्से से लाल-पीले होते हुए कहा।

"तो हुजूर वाला, हमारी दुआये पूरी हुईं, हम अभी बाहर आये हुजूर," और यह कह कर वह बाहर निकल आया।

मै और अल्फ़ान्सो अपने बचे हुए साथियों के पास जो चौड़े रास्ते के सामने एक स्थान पर जमा हो गये थे जा रहे थे कि एक मसाई जो अभी तक एक झाड़ी में छुपा हुआ अपनी जान बचाये हुए था ऐकाऐकी कूद कर बाहर निकला और अपने बरछे को हवा में तान कर हमारी तरफ दौड़ा। उसे देखते ही अल्फ़ान्सो की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और वह डर से चीखता चिल्लाता सिर पर पांव रख कर भाग निकला और उस के पीछे पीछे दौड़ा वह मसाई। शायद वह मरने से पहिले अपने साथ एक आध को और ले जाना चाहता था। पलक झपकते ही उस मसाई ने ग़रीब अल्फान्सो को जा लिया और अगर मैं उस के सिर को निशाना बना कर उसे गोली से न उड़ा देता तो वह अल्फान्सो की तिक्का बोटी कर देता। जहां तक आल्फ़ान्सो की ज़िन्दगी की बात थी सब कुछ ठीक हो चुका था लेकिन उसे इस का

होश ही कहाँ था । वह तो झुकता, मुड़ता-टेड़ा-तिरछा होता अपना पीछा करने वाले मसाई के तेज़ बरछे से बचने के लिए जान छोड़ कर भागा जा रहा था। ऐकाऐकी उस ने ठोकर खाई और वह चारों खाने चित जा पड़ा और उस के ऊपर लद् से जाकर गिरा मसाई का मृत्यु यंत्रणा से छटपटाता हुआ निर्जीव शरीर। मसाई के गिरते ही इतने जोर शोर से रोने और चीखने पुकारने की आवाज़ें आने लगीं कि मुझे विश्वास हो गया कि शायद वह दुष्ट मसाई मरते मरते अपना बरछा अल्फ़ान्सो के शरीर में घुसेड़ ही गया। मैं दौड़ कर वहां गया और मसाई के शव को उठा कर परे फेंक दिया, नीचे था खून से तर बतर और मछली की तरह तड़पता हुआ अल्फ़ान्सो । उसके तड़पने से मुझे ऐसा लगा कि शायद वह अब न बचेगा और इसलिये उस की बग़ल में बैठ कर मैं ने उसके जख्मों का पता लगाना शुरू किया। मगर अल्फ़ान्सो था कि हाथ लगाये से तड़पता था इसलिये उसके ज़ख्मों का पता लगाने में बहुत देर लगी। उस का गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाना पुकारना अब भी जारी था।

"हाय, हमारी पीठ छलनी हो गई," उस ने चिल्लाकर कहा, "हाय हाय मैं मर गया, मैं अब नहीं बचूंगा।"

मैं ने उस का सारा शरीर टटोला लेकिन मुझे कोई घाव दिखाई नहीं दिया। तब मुझे सहसा यह ध्यान आया कि अल्फ़ान्सो को चोट वोट कुछ नहीं लगी थी वह तो सिर्फ़ डर के मारे मरा जा रहा था।

"उठ कर खड़ा हो बदमाश", मैं ने डाँट कर कहा, "खड़ा हो पाजी तुझे शर्म नहीं आती है। तेरे तो खरोंच भी नहीं लगी है और तू ने आस्मान सिर पर उठा रखा है।"

यह सुनते ही वह तो उठ बैठा, उस के शरीर पर खरोंच तक नहीं आई थी। "मगर हुजूर हम तो समझे थे कि हम बचेंगे नहीं", उस ने शर्म से गरदन झुका कर कहा, "मगर हुजूर हमें तो यह भी मालूम नहीं पड़ा कि कब हम ने उस पाजी को काट कर फेंका।" यह कह कर उस ने उस मसाई के शव को एक ठोकर लगाई और मूछों पर ताव देते हुए बड़े घमण्ड से अकड़ कर कहा, "ओ पाजी, ओ काले कुत्ते, आख़िर मार दिया न हम ने। हम से लड़ कर तू जीत सकता था भला।

फेंक दिया न काट कर एक ही वार में। अबे हम सिपाही ज़ादे हैं सिपाहीज़ादे।"

उमड़ते हुए क्रोध और घृणा को दबा कर मैं ने अल्फ़ान्सो को वहीं छोड़ कर दिया, मगर मेरे हटते ही वह तो साये की तरह मेरे पीछे लग लिया और मेरे पीछे पीछे चौड़े रास्ते के पास इकट्ठे अपने साथियों के पास जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही जिस पहली चीज़ पर मेरी नज़र पड़ी वह थे फ़ादर मैकैन्ज़ी। फादर पत्थर के एक ढोंके पर बैठे थे और उन की जाँघ पर एक रूमाल बँधा हुआ था और उस में हो कर खून टपक रहा था। एक बरछा उन की जाँघ के आर पार हो गया था। उन के हाथ में उन का शिकारी चाकू था जिस का फल मुड़ कर दोहरा हो गया था और इस से मैं ने अनुमान लगाया कि वह उस हल्मोरन को मौत के घाट उतारने में सफल हो गये थे।

"ओह लाल साहब", उन्होंने काँपती लहकती आवाज़ में मुझे पुकार कर कहा, "तो हम लोग जीत ही गये, लेकिन यह सब दृश्य बहुत भयानक है, बहुत भयानक है", और फिर अपने मुड़े हुए चाकू को देख कर कहा, "उस कमबख्त की पसलियाँ थीं या लोहे की छड़ें मेरे असली स्टील के चाकू तक का फल मुड़ गया," और यह कह कर ठट्टा मार कर हँस पड़े। मुझे उन की यह दशा देख कर दुख हुआ, इस खून ख़राबी और मारकाट ने उन के मानसिक संतुलन को उलट पुलट कर दिया था, उन के ज्ञान तंतु ढीले पड़ गये थे और ऐसा हो जाना कोई आश्चर्य की बात भी नहीं थी। किसी शान्ति प्रिय तथा कोमल हृदय मनुष्य को ऐसे भयानक कार्य में सहायक बना लेने पर ऐसी दशा तो होनी ही थी। परन्तु भावी प्रबल है, कभी कभी हमारे न चाहने पर भी भाग्य हम को ऐसी विकट परिस्थितियों में डाल ही देता है।

कराल के फाटक के सामने का दृश्य बहुत ही भयानक और डरावना था। मारकाट अब तक बन्द हो चुकी थी और घायलों को उन की यंत्रणा से मुक्त कर दिया गया था, क्योंकि इस मारकाट में शत्रु के लिए कोई दया भाव नहीं दिखाया गया था। रास्ते को रोकने के लिए फंसाई गईं कंटीली झाड़ियाँ पैरों से कुचल दब कर समतल हो गई थीं और लाशों के ढ़ेर लग रहे थे और दूर दूर तक इक्का दुक्का लाशें

इधर उधर पड़ी थीं। सारा दृश्य ऐसा मालूम पड़ता था जैसे जाड़ों में धूप खाने के लिए लोग पार्कों में घास पर पड़े रहते हैं।

चौड़े रास्ते के सामने एक स्थान पर, जहाँ से मुरदों को हटा कर जगह साफ़ कर दी गई थी और इधर उधर बिखरे फैले बरछे और ढालों को उठा लिया गया था, हमारी पार्टी के वह आदमी इकट्ठे थे जो इस भयानक मारकाट में जीवित बच गये थे। हमारे चार जख्मी दीवाल के साये में लिटा दिये गये थे। मारकाट शुरू होने से पहले हमारी पार्टी में ३० आदमी थे, अब उन तीस में से केवल १५ जीवित थे और इन १५ में से फ़ादर समेत पाँच जख्मी थे, दो की हालत बहुत नाजुक थी। चौड़े रास्ते को छेकने वालों में से केवल कुंवर साहब और असस्लोपागस जीवित बचे थे। कैप्टिन प्रसाद की टोली के पाँच आदमी मारे गये थे, मेरी पार्टी के दो और फादर की पार्टी के ६ आदमियों में से केवल एक जीवित बचा था। जीवित रहने वालों में से सिवाय मेरे, क्योंकि मैं ने घमासान में भाग नहीं लिया था, बाक़ी और सब सिर से ले कर पाँव तक खून से लथपथ थे। कुंवर साहिब थक कर चकनाचूर हो रहे थे। उन की सारी झिल्लम लाल रंग से रंगी हुई जान पड़ती थी। असस्लोपागस के सिवाय सब की हालत ख़राब हो रही थी। वह बड़ी शान्ति और इत्मीनान से लाशों के एक ढेर पर अपनी खास अदा से अपने फरसे का सहारा लिये खड़ा हुआ था और तनिक भी परेशान या थका हुआ दिखाई नहीं दे रहा था। पर उस के माथे के तिकोने छेद के ऊपर वाली खाल तेज़ी से धड़क रही थी।

"ओह, मैकुमाजन मालिक", मुझे उस ओर लंगड़ाते हुए आते देख कर उस ने चिल्ला कर कहा, "याद है मालिक, मैं ने कहा था न कि लड़ाई मजेदार होगी, हुई है न मजेदार लड़ाई ? मैं ने भी इस से पहले इतनी मजेदार लड़ाई नहीं देखी थी और मालिक इस से पहले मुझे कभी इतनी जान भी नहीं खपानी पड़ी थी। मालिक तेरी यह झिल्लम तो टगाती (जादू भरी) है टगाती, इसे तो कोई भी नहीं गांस सकता। मालिक अगर आज यह मेरे तन पर न होती तो मैं भी वहाँ होता" और यह कह कर उस ने उंगली के इशारे से अपने पैरों के पास पड़े लाशों के उस बड़े ढेर को दिखाया जिस पर वह खड़ा हुआ था।

"अमस्लोपागस, जा यह झिल्लस मैं ने तुझी को दी, इसे अपने पास रख, तू वाकई बहादुर है", कुंवर साहब ने कहा।

"कूस", जूलू ने जवाब दिया, उस की तारीफ और झिल्लस की भेंट से तो वह फूला नहीं समा रहा था, "इन्कूबू, मालिक, तू ने भी तो कोई कसर उठा नहीं रखी। मैं तुझे फरसा चलाने के कुछ गुर सिखा दूँगा, अभी तो तुझे बहुत जोर लगाना पड़ता है।"

इतनी देर बाद फ़ादर को फ्लौसी का ध्यान आया और वह उसे तलाश करने को उठने ही को थे कि हमारे एक आदमी ने बताया कि उस ने फ्लौसी को नर्स के साथ मिशन स्टेशन की ओर दौड़ कर जाते देखा था। यह सुन कर हम सब को बहुत तसल्ली हुई। इस के बाद हम ने चलने की तैयारी कर दी। जिन घायलों को हम अपने साथ उठा कर ले जा सकते थे उन को लाद कर हम लोग धीरे धीरे मिशन स्टेशन की ओर चल पड़े। सब सिर से ले कर पैर तक खून से लिप पुत रहे थे। मगर जबरदस्त दुश्वारियों के बावजूद दुश्मनों पर विजय प्राप्त करने की खुशी से हमारे दिल उमंगों पर थे। हम ने फ्लौसी की जान बचा ली थी और उस इलाके के मसाइयों को ऐसी करारी मार लगाई थी जिसे वे दस साल तक न भूलेंगे। लेकिन हमें यह विजय प्राप्त हुई थी किस कीमत पर?

धीरे धीरे रुकते बैठते हम पहाड़ के ढाल पर चढ़ने लगे, उसी ढाल पर जहाँ हो कर कोई एक घंटे से ज़रा पहले हम बिल्कुल ही बदली हुई परिस्थिति में भय और आशंका में डूबते उतराते नीचे उतरे थे। परकोटे में बने दरवाज़े के बाहर मिसेज़ मैकैन्ज़ी हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। हमारे ऊपर नज़र पड़ते ही वह खून से लथपथ हमारी शक्लों को देख कर जोर से चिल्ला पड़ीं और आँखों पर हाथ रख कर फूट फूट कर रोने लगीं। अपने पति को कामचलाऊ स्ट्रेचर पर पड़ा देख कर उन के दुख का वारापार न रहा. लेकिन हम ने फादर की चोटों के सम्बन्ध मे जल्दी उन की तसल्ली कर के बढ़ती चिन्ता को शान्त कर दिया। तब मैं ने बहुत संक्षेप से मिसेज़ मैकैन्ज़ी को लड़ाई का हाल सुना दिया—बहुत कुछ तो वह फ्लौसी से जो सही सलामत से वहाँ पहुँच गई थी सुन चुकी थीं। सारा हाल सुन कर वह मेरे पास आईं

और मुझ से हाथ मिला कर कहा, "ईश्वर आप का भला करे लाल साहिब, आप ने मेरी बच्ची की जान बचाई है लाल साहिब, मैं इस एहसान को मरते दम तक न भूलूंगी। आप ने हमें दूसरा जीवन दिया है। ईश्वर आप का भला करे।"

इस के बाद हम सब अन्दर चले गये और कपड़े उतार कर घावों की मरहम पट्टी की। सौभाग्य से मेरे कोई चोट नहीं लगी थी और अनमोल झिल्लम पहने होने के कारण कुंवर साहिब और कैप्टिन प्रसाद को कोई कड़ी चोटे नहीं लगी थीं। केवल कुछ यूँ ही सी खराशें आई थीं। उन पर साधारण स्टिकिंग प्लास्टर लगा कर ड्रैसिंग कर दिया गया। फ़ादर का घाव काफ़ी गहरा था, बरछा जाँघ के और पार हो गया था मगर सौभाग्य से वह मांस में था कोई नस या बड़ी नाड़ी नहीं कटी थी। घावों का ड्रैसिंग कर के हम खूब मल मल कर नहाये। ऐसे रक्तपात के बाद नहाने में जो आनन्द मिला वह बताया नहीं जा सकता। नहा कर हम ने अपने साधारण वस्त्र पहिन लिये और डाईनिंग रूम पर धावा बोल दिया, वहां गरमागरम नाश्ता हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। हम सब नाश्ते पर टूट पड़े। बीसवीं सदी की सभ्यता के अनुसार मक्खन लगे टोस्ट चबाते वक्त हम यह बिल्कुल ही भूल गये कि थोड़ी देर पहले हम बाबा आदम के ज़माने के ढंग पर बाक़ायदा मार काट कर रहे थे और खूंखार भेड़ियों की तरह इन्सानों का खून बहा रहे थे। कैप्टिन प्रसाद का कहना था कि सारी घटना ऐसी मालूम हो रही थी जैसे हम ने किसी मार धाड़ में हिस्सा लेने के स्थान पर कोई बहुत भयानक डरावना स्वप्न देखा था। अभी नाश्ता कर ही रहे थे कि दरवाज़ा खोल कर फ्लौसी कमरे में आई। एक ही रात में उस का चेहरा सूख कर मुरझा गया था और गत रात्रि की घटना को याद कर के उस के होंठ अभी तक कांप रहे थे उसे केवल ज़बरदस्त मानसिक धक्का लगा था वैसे उसके चोट वग़ैरा कोई नहीं लगी थी। उस ने हम सब को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और हमारा धन्यवाद दिया। मैं ने उस के उस साहस की प्रशंसा की जिस से उस ने बरछा मारने वाले मसाई को अपनी पिस्तौल से उड़ा कर अपनी जीवन रक्षा की थी।

मेरी बात सुनते ही वह फूट फूट कर रो उठी। "ओह लाल साहिब, वह बात न कहिये। दम तोड़ते वक्त उस ने जिन फटी फटी बुझती आँखों से मुझे देखा था वह आँखें मुझे कभी नहीं भूलेंगी, लाल साहिब, कभी नहीं भूलेंगी। आँखें बन्द करते ही वह मेरे सामने आ जाती हैं।"

मैं ने उसे अपने कमरे में जा कर कुछ देर सो रहने की सलाह दी फ्लौसी मेरी सलाह मान कर सोने चली गई और शाम तक गहरी नींद में सोती रही। जब वह शाम को सो कर उठी तो काफ़ी स्वस्थ दिखाई देती थी और उत्तेजना शान्त हो जाने के कारण उस का पहला वाला भोलापन भी धीरे धीरे लौटता आ रहा था। मुझे रह रह कर यह ख्याल आ रहा था कि स्त्री प्रकृति भी कितनी विचित्र है. जो मसाई उस के बरछा घुसेड़ने आ रहा था उसे गोली से उड़ाते फ्लौसी को तनिक भी संकोच नहीं हुआ था परन्तु अब उस की मृत्यु यंत्रणा का दृश्य उसे भूलता नहीं है। कठोरता और कोमलता की कितनी विचित्र धूप छाँव स्त्री के चरित्र में पाई जाती है। स्त्री प्रकृति की इसी विचित्रता ने तो उसे एक दुर्भेद पहेली सा बना रखा है, जिस का रहस्य सहस्रों वर्ष बीत जाने पर भी पुरुष नहीं खोल सका है। समय आने पर स्त्री क्या नहीं कर सकती इस का तो अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है 'कहा न नारी कर सके और कहा न सिन्धु समाय'। स्त्री चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम् दैवो न जाना—स्त्री के चरित्र की दुर्भेदता को तो दैव भी नहीं जान सका है, मनुष्य की तो गिनती ही क्या है।

बेचारी फ्लौसी—मुझे भय था कि मसाई कैम्प के अन्दर कुछ घण्टों में जो उस पर बीती थी उसे वह कम से कम एक वर्ष तक, न भुला सकेगी। मुझे बाद को फ्लौसी ने बताया कि उस समय उसे सब से अधिक डर लग रहा था निरन्तर प्रतीक्षा से, अनन्त प्रतीक्षा से, इस अनिश्चितता से कि अब क्या होगा, उसकी जान बचेगी या नहीं, उस को छुड़ाने का कोई बन्दोबस्त हो रहा था नहीं, पापा और मम्मी की क्या हालत थी, सारी रात प्रतीक्षा और अनिश्चितता के कारण उस की जान सूली पर टंगी रही थी। उस ने यह

भी बताया कि इस तरह के हमले की तो उस ने स्वप्न में भी आशा नहीं थी क्योंकि उसे मालूम था कि मसाइयों की संख्या को देखे उस के पापा के पास कितने कम आदमी थे। और फिर वह मसाइयों का उसे लगातार घूर घूर कर देखना—कुछ ने तो शायद अपने जीवन भर में गोरी जाति वाले को देखा नहीं था—और अपने गन्दे, कड़े और रूखे पंजे जैसे हाथों से उस के बाल, बाजू और शरीर को छूना उसे और भी परेशान किये दे रहा था। उन के छूने से उसे उबकाई आती थी मगर इस सब का इलाज क्या था। फ्लोसी ने मुझे बताया कि पौ फटने तक किसी प्रकार की कोई सहायता न पहुँचने की दशा में उस ने अपने सिर में गोली मार कर जान दे देने का दृढ़ निश्चय कर लिया था, क्योंकि उस की नर्स ने एक लिगोनानी को यह कहते सुन लिया था कि पौ फटने तक उस के बदले किसी साहिब लोग के न आने पर वह बहुत तड़पा तड़पा कर तथा कष्ट दे कर उन की जान लेने को थे। इस प्रकार जान देने का निश्चय कर लेना अवश्य ही बहादुरी और दृढ़ता की बात थी और मुझे विश्वास है कि यदि ऐसा अवसर आ ही जाता तो वह निस्संदेह अपने हाथ से स्वयं गोली मार कर जान दे भी देती। इस बालिका के असीम धैर्य, वीरता, असाधारण विवेक बुद्धि और मानसिक दृढ़ता की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। धन वैभव और ऐश आराम के बीच खेली पली नर्म व नाज़ुक ललनायें ऐसा अवसर आने पर शायद अपनी सुधि बुधि खो बैठतीं और या तो रो रो कर जान दे देतीं या डर और आशंका से बेहोश हो जातीं। ऐसी आत्म निर्भरता, ऐसी सहज बुद्धि, ऐसी मानसिक दृढ़ता केवल प्रकृति के मुक्त वातावरण में ही पाई जाती है, ड्राइंग रूम के नर्म गुलगुले ग़लीचों तथा कॉकटेल पार्टियों में कदापि नहीं।

नाश्ता ख़त्म कर के हम अपने कमरों में जा कर सो रहे, दोपहर के खाने के समय हम को जगाया गया और खाना खा कर हम मिशन स्टेशन के स्त्रियों, पुरुषों, बालकों और छोकरियों को साथ ले कर सवेरे के खून ख़राबे वाले स्थान को गये। हम अपने आदमियों को क़ब्र खोद कर तोप देना चाहते थे और मसाइयों को ताना नदी में, जो कराल से सिर्फ़ ५० गज दूर बहती थी, बहा देना। वहाँ पहुँच कर हम ने देखा

कि हज़ारों गिद्ध लाशों पर जुटे हुए थे और मांस नोच नोच कर खा रहे थे।

मैं ने अनेकों बार इन लम्बे चौड़े घिनौने पक्षियों को देखा है और शीघ्रातिशीघ्र उन के खून खच्चर के स्थानों पर पहुँच जाने की अद्भुत क्षमता पर आश्चर्य से दाँतों तले उंगली दबा ली हैं। एक हिरन आप की गोली की चोट खा कर गिरता है और क्षण भर में ही दूर आकाश में एक काला धव्वा सा दिखाई देता है जिस के और नीचे आने पर गिद्ध की रूपरेखा साफ़ दिखाई देने लगती है, फिर दिखाई देता है दूसरा, तीसरा, चौथा इसी तरह कुछ मिनटों में ही सारा आकाश गिद्धों से भर जाता है। गिद्धों की इस अद्भुत चेतना शक्ति के सम्बन्ध में मैं ने अनेकों बातें सुनी हैं, परन्तु बहुत समय तक उन के स्वभाव और रंग ढंग का का निरीक्षण कर के मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि गिद्ध, जिन की दृष्टि तेज से तेज़ दूरबीन से भी तेज़ होती है, सारे आकाश को आपस में बाँट लेते हैं और बहुत दूर पृथ्वी से कोई दो या तीन मील ऊपर आकाश में उड़ते उड़ते उन में से प्रत्येक इस पृथ्वी के एक बहुत बड़े भाग पर कड़ी नजर रखता है। ज्यों ही उन में से किसी को कोई भोज्य वस्तु दिखाई देती है तो वह फ़ौरन ही तीर की तरह तेजी से अपने शिकार की ओर उतरने लगता है। उसे उतरता देख कर उस से मीलों दूर नीले आकाश में पंख फैलाये हवा पर तैरता हुआ उस का साथी यह समझ कर कि कहीं न कहीं भोजन की कोई वस्तु मौजूद है उसेका अनुसरण करता है। उस के नीचे उतरते ही उसके और साथी उस का अनुसरण करते हुए तेज़ी से नीचे उतरने लगते हैं। इस प्रकार बीस मील के घेरे के गिद्ध कुछ ही क्षणों में शिकार पर इकट्ठा हो जाते हैं।

हम ने अपने आदमियों को बड़ी शान्ति तथा सम्मान के साथ क़ब्र में सुला दिया। कैप्टिन प्रसाद ने कठोपनिषद से मृतक संस्कार से सम्बन्ध रखने वाले श्लोक तेज आवाज से पढ़े और फिर हम ने क़ब्र को तोप दिया। उस समय मेरा मन बहुत दुखी हो रहा था, चारों ओर उदासी बरस रही थी, वैसी ही उदासी जैसी कुछ महीने पहले विजय के दाह संस्कार के समय फैल रही थी। लेकिन कैप्टिन प्रसाद ने यह कह कर

मेरी उदासी दूर करने की चेष्टा की कि परिस्थिति इस से भी भयानक हो सकती थी, यह भी सम्भव था कि हम को हमीं में से किसी का मृतक संस्कार करना पड़ जाता। मै कैप्टिन के इशारे को समझ गया और उस सम्भावना के स्मरण मात्र से मेरा सारा शरीर कॉप उठा।

अपने साथियों का मृतक संस्कार कर के हम ने बैल ठेले में, जिसे हम अपने साथ मिशन-स्टेशन से ले गये थे, मृत मसाइयों के शव लादने शुरू किये। सब से पहिले हम ने इधर उधर फैले हुए बरछे, ढालें, छुरे इत्यादि इकट्ठे किये। फिर ठेले में शवों को भरा और उसे हाँक कर ताना नदी तक ले गये और उस में उसे पलट दिया। ठेले में एक बार में कोई ५० शव आते थे और हम को नदी के पॉच चक्कर लगाने पड़े। इस से यह स्पष्ट हो गया कि बहुत कम मसाई जान बचा कर भाग निकलने में सफल हो पाये थे। उस दिन ताना नदी के अनगिनती मगरों ने भर पेट भोजन किया होगा। सब से आखिर में हम ने कराल के ऊपरी छोर पर पहरा देने वाले मसाई का शव उठाया। मैं ने कैप्टिन प्रसाद से पूछा कि उन्होंने किस तरह उसे मौत के घाट उतारा था। कैप्टिन ने बताया कि वह भी अमस्लोपागस की तरह रेंग कर उस के पास पहुँचे थे और अपनी तलवार उस की छाती में घुसेड़ दी थी। मरते मरते उस मसाई ने हाय हूय तो काफ़ी मचाई थी परन्तु सौभाग्य से किसी ने सुना नहीं। साथ ही कैप्टिन प्रसाद ने यह भी कहा कि इस तरह पहरेदार की छाती में तलवार घुसेड़ देना बहुत ही कठकलेजी काम था और जान बूझ कर मनुष्य की हत्या करने के समान ही घृणित था।

अन्तिम शव के ताना नदी में बह जाने पर हमारे मसाई कैम्प पर हमला करने वाली घटना का पटाक्षेप हो गया। बरछों, ढालों, छुरों वग़ैरा को हम ठेले में लाद कर मिशन स्टेशन ले गये जहाँ उन से एक कोठरी पूरी भर गई। एक घटना का वर्णन किये बिना मै नहीं रह सकता। मसाइयों के शवों का जल प्रवाह कर के जब हम वापिस लौट रहे थे तो हम उस खोखले तने वाले पेड़ के पास होकर निकले जिस में आज सवेरे अल्फ़ान्सो अपनी जान बचा कर छुप गया था। इत्तफाक से

अल्फान्सो भी हमारे साथ था और काफ़ी दौड़ धूप कर के हमारे अरुचिकर कार्य में हाथ बँटा रहा था। उस की सवेरे वाली मुर्दनी ग़ायब हो चुकी थी और वह बड़े जोश से दौड़ दौड़ कर शवों को ठेले पर लादने का काम कर रहा था। प्रत्येक शव को उठाते समय वह उस के सम्बन्ध में कोई न कोई चुभता व्यंग कस देता था। मृतक मसाइयों को ताना में फेंकने वाला अल्फान्सो जीवित मसाई के बरछे से डर कर जान छोड़ कर भागने वाले मसाई से भिन्न था। इस समय तो वह बहुत रंगीला और हंसोड़ हो रहा था। शवों को छपाक से पानी में गिरते, चक्कर खाकर बहते और लहरों पर ऊछलते टकराते टेढ़े तिरछे हो कर बहते देख कर वह तालियाँ बजा बजा कर हँसता था और गाना तो उस के मुख से फूटा पड़ रहा था। उस की इस मस्ती और उछल कूद को देख कर मुझे ख्याल आया कि ऐसे लुच्चे आदमी को कोई न कोई सजा मिलनी आवश्यक थी और इसलिये मैं ने उस के सवेरे वाले व्यवहार के लिए उस का कोर्ट मार्शल करने का निश्चय किया। मैंने अपना विचार कुंवर साहिब से कहा और उन्होंने भी उसे मान लिया। यह निश्चय करके मै सब को उस खोखले पेड़ के पास ले गया जहां अल्फान्सो छुप रहा था और वहाँ ठहर कर हम उसका मुकद्दमा करने लगे। कुंवर साहिब ने जज ऐडवोकेट की तरह शुद्ध फ्रेंच भाषा में उसकी बेमिसाल बुज़दिली और महान दुष्टता की बात उसे समझा दी और विशेष कर इस बात पर ज़ोर दिया कि चिथड़े को मुँह से गिर जाने दे कर उस ने ऐसा जघन्य कार्य किया था जिस के कारण उस के दाँतों की कटकटाहट से सारे मसाई दल के जाग उठने की सम्भावना हो सकती थी और ऐसा होने पर हमारी योजना पूरी ही न होती बल्कि हम सब मौत के मुँह में चले जाते। सारी बात उसे समझा कर उस से इन अभियोगों का जवाब देने को कहा गया।

हमारा ख्याल था कि इस अभियोग को सुन कर अल्फान्सो हक्का बक्का रह जायेगा, फिर रोयेगा, गिड़गिड़ायेगा, माफी मांगेगा, अपने किये पर पश्चाताप करेगा और न जाने क्या क्या ढोंग रचेगा, मगर उस के व्यवहार को देख कर तो बहुत निराशा हुई। सारे अभियोगों को सुन कर वह मुस्कराया, झुक कर हम सब को सलाम किया और जूते

के पंजे से ज़मीन को खुरचते हुए जवाब दिया कि पहली दृष्टि में उस का व्यवहार बड़ा विचित्र मालूम हो सकता था लेकिन वास्तव में वह ऐसा था नहीं क्योंकि उस के दाँत डर से नहीं कटकटा रहे थे, वह सिपाही बाबा का पोता था और खुद भी फ़ौज में रह चुका था, इस लिये उस के दाँत भय से हरगिज़ नहीं कटकटा रहे थे। साथ ही उस ने हमें उल्लू बनाने के लिए यह भी जड़ दिया कि उसे इस बात का बड़ा आश्चर्य था कि हम लोग उस के बारे में ऐसा ख्याल भी कर रहे थे। उसे तो प्रात:काल की सर्द तेज़ हवा से कंपकंपी आ रही थी और उस कंपकंपी से दांत बज रहे थे। चीथड़े के सम्बन्ध में उस ने जड़ा, "हुज़ूर वाला, वह इतना चिकना, गन्दा और बदबूदार था कि खुद हुज़ूर वाला भी उसे मुँह में नहीं रख सकते थे। पैट्रोल, ग्रीज़, चीकट, तेल, कालिख और न जाने क्या क्या लग लग कर वह ऐसा घिनौना हो गया था कि अगर हुज़ूर वाला के मुँह में भी वह ठूंस दिया जाता तो हुज़ूर वाला भी उसे फ़ौरन थूक देते। मगर बन्दे ने तो बड़े जीवट से उसे मुँह में ठूंसे रखा और ठूंसे भी रखता अगर मेरा पेट इस घिनौनी चीज़ के ख़िलाफ़ जिहाद न बोल देता और पेट के उलट जाने से वह अचानक ही बाहर न निकल पड़ता।"

"दूर हो नजरों से पाजी कहीं का, "यह कह कर कुँवर साहिब ने क़हक़हा लगाते हुए उस के जोर से एक लात जमाई, और अल्फ़ान्सो दूर धूल में जा कर गिरा। मगर मुँह विसूरते हुए झाड़ पोंछ कर टय्यां सा फिर खड़ा हो गया और हम सब को झुक कर सलाम किया। बेहया की बला दूर।

शाम को फ़ादर से भेंट हुई। उन के घाव में काफी दर्द हो रहा था और कैप्टिन प्रसाद जो डाक्टर न होनें पर भी फ़र्स्ट ऐड भली प्रकार जानते हैं उस का इलाज और मरहम पट्टी कर रहे थे। फ़ादर ने हमें बताया कि इस घटना नें उन की आँखें खोल दी थीं और उन्होंने आराम हो जाने पर इस मिशन स्टेशन को, जिसे बनाने में उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया था, किसी नौजवान पादरी को सौंप कर इंगलैण्ड वापिस लौट जाने का, निश्चय कर लिया था। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपनें आर्क विशप को चिट्ठी लिख दी थी। उन को आशा

थी कि शीघ्र ही कोई नौजवान आ कर उन के अधूरे काम को संभाल लेगा और उन के अपने जीवन के संध्या काल में शान्त जीवन बिताने का अवसर मिलेगा।

"लाल साहिब," उन्होंने कहा, "मैं ने यह निश्चय आज सवेरे ही किया था, उस समय जब कि हम लोग उन असभ्य, अज्ञान मसाइयों को मार भगाने के लिए जा रहे थे। मैं ने प्रतिज्ञा की थी कि यदि मैं इस नरमेध यज्ञ में जीवित बचा और, फ्लौसी की जीवन रक्षा हो गई तो मैं जल्दी से जल्दी इंगलैण्ड वापिस लौट जाऊँगा। इन असभ्य जंगलियों से मेरा मन भर गया है। उस समय मुझे यह भी पक्का विश्वास नहीं था कि हम नरमेध यज्ञ से इस सभी ज़िन्दा वापस लौट आयेंगे, लेकिन उस परम पिता परमेश्वर का और आप चारों का धन्यवाद है कि ऐसा हो सका है, मुमकिन था कि इस से भी अधिक संकट हम पर आता। यदि फिर कभी ऐसा हुआ तो मेरी स्त्री इस धक्के को न सह सकेगी, उस का हार्ट फ़ेल हो जायेगा। इस के अलावा लाल साहिब, मैं आप से यह छुपाना भी नहीं चाहता कि मेरी आर्थिक दशा काफ़ी अच्छी है, मुझे रुपये पैसे की कोई कमी नहीं है। मेरे पास तीस सहस्र पौण्ड (४॥ लाख रुपया) हैं। इस धन की एक एक पाई मैं ने ईमानदारी से व्यौपार करके और अपने वेतन में से बचा बचा कर इकट्ठी की है। क्योंकि यहाँ पर हमारा ख़र्चा प्रायः नहीं के बराबर है, इसलिये मैं अपने वेतन में से काफ़ी बचा सका हूँ। मेरा यह सब धन ज़ंज़ीबार बैंक में जमा है। दूसरी ओर जिस स्थान को मैं ने अपने ख़ून पसीने से रेगिस्तान से गुलश्न बना दिया है जिसके बनाने मे मैं ने अपनी सारी जवानी धूल मे मिला दी उस स्थान को छोड़ कर जाने मे दुःख बहुत होगा और साथ ही यहाँ के रहने वालों को छोड़ना भी बहुत कठिन होगा। उन में से बहुत से बीस वर्ष से भी अधिक से मेरे पास हैं। परन्तु लाल साहिब, मै ने निश्चय कर लिया है कि मैं इस सब माया जाल को तोड़ कर चला ही जाऊँगा।"

"आपके इस फ़ैसले पर मैं आप को बधाई देता हूँ", मैं ने जवाब दिया, "और इस के दो कारण हैं। पहला यह कि आप का अपनी स्त्री और पुत्री और ख़ास कर पुत्री के प्रति कुछ कर्तव्य अवश्य है। इंगलैण्ड

जा कर उसे अपनी हमजोली लड़कियों के संसर्ग में आना और सभ्य समाज के तौर तरीके सीखना तथा शिक्षा प्राप्त करना जरूरी है नहीं तो बड़ी होने के बाद वह सभ्य समाज के कायदे कानूनों से अनजान एक देहाती छोकरी मात्र रह जायगी और अपनी जाति वालों की नज़रों से गिर जाने के कारण उस का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। दूसरा कारण यह है कि मुझे इस बात का पूरा विश्वास है, उतना ही कि जितना कि मुझे इस बात का है कि मैं इस समय जीवित हूँ, कि कभी न कभी मसाई आज के इस हत्याकाँड का बदला अवश्य ही लेंगे इस गड़बड़ी और गोलमाल में कुछ मसाई अवश्य ही बच निकल भागे होंगे और जब वह इस हत्याकाँड का हाल अपनी जाति वालों को जा कर सुनायेंगे तो नतीजा यह होगा कि किसी न किसी दिन इस मिशन स्टे-शन को धूल में मिला देने के लिए मसाइयों के जत्थे उमड़ पड़ेंगे। इस में वर्ष, दो वर्ष, तीन वर्ष की देर हो सकती है परन्तु कभी न कभी वह हमला करेंगे जरूर। इसलिये केवल इसी कारण ही आप का यहाँ से चले जाना ठीक है। अगर मसाइयों को यह बात मालूम हो गई कि आप मिशन स्टेशन को छोड़ कर इंगलैण्ड लौट गये हैं तो संभव है कि वह हमला न भी करें और अपनी इस हार को भुला दें।*

"आप ठीक फ़रमाते हैं", फ़ादर ने कहा, "एक महीने के अन्दर ही अन्दर मैं इस जगह को छोड़ कर इंगलैण्ड लौट जाऊँगा। लेकिन मेरा मन यहीं बना रहेगा, मेरा दिल टूट जायेगा लाल साहिब।"

---

* इस घटना के कुछ ही दिनों बाद ऐसा विचित्र संयोग हुआ कि मसा-इयों ने इसी ताना नदी के किनारे इसी स्थान विशेष पर जहाँ इतनी मारकाट हुई थी एक मिश्नरी और उस की स्त्री, फादर हौगसन और मिसेज हौगसन, को उन के नौकरों और साथियों समेत पकड़ कर बड़ी निर्दयता से, हत्या कर डाली। सम्पादक। (यह घटना सत्य है—ला, बा, सिं.)

अध्याय ९

अज्ञात देश की ओर

इस घटना को एक सप्ताह बीत गया था और एक रात हम मिशन स्टेशन के डाईनिंग रूम में बैठे बड़े उदास मन से खाना खा रहे थे। उदास होने का कारण यह था कि अगले ही दिन प्रातःकाल हम अपने परम मित्र मैकैन्जी परिवार से बिदा हो कर अज्ञात देश की ओर जाने वाले थे। मसाइयों का दूर दूर तक कोई खोज नहीं था। कराल के आस पास घास पात में छुपे दबे ज़ंग खाये हुए किसी बरछे या छुरे के, जिन को हम देख नहीं पाये थे, या एक आध ख़ाली कारतूस के अलावा उस भयानक मारकाट और नर संहार का कोई भी चिन्ह उस कराल के आस पास नहीं रह गया था। फ़ादर मैकैन्जी का घाव बहुत तेज़ी से भर रहा था और वह लाठी के सहारे चलने फिरने लगे थे। अन्य घायलों में से एक ज़हरबाद हो जाने से मर गया था और बाक़ी तेजी से अच्छे होते जा रहे थे। फ़ादर के आदमी जंज़ीबार से लौट आये थे और इस कारण मिशन स्टेशन में आदमियों की कोई कमी नहीं थी।

यद्यपि फ़ादर मैकैन्जी और उन का परिवार हम को और अधिक रुकने के लिए बहुत ज़ोर दे रहा था परन्तु हम ने निश्चय किया कि अब समय आ गया था कि हम अपनी यात्रा पर निकल पड़ते और केनिया पर्वत की परिक्रमा करते हुए उस रहस्य पूर्ण अज्ञात श्वेतांग जाति की खोज में अनजान अज्ञात देश की ओर चल पड़ते—उस श्वेतांग जाति की खोज में जिस का पता लगाने का हम ने बीड़ा उठाया था। यात्रा के इस भाग को हमें खच्चरों पर पार करना था, इसलिये अपना सामान और बोरिया बंधना ढोने के लिए और यदि मौका पड़ जाय तो खुद सवारी करने के लिए हम ने एक दर्जन खच्चरों का बन्दोबस्त

किया। अब हमारे पास सिर्फ दो बफ़ावाफ़ी अस्करी रह गये थे और अज्ञात देश की खोज में यात्रा करने का साहस करने वाले नये आदमियों का मिलना असम्भव था।

फ़ादर ने हर जगह की ऊँच नीच समझा कर हम को अपने निश्चय से हटाने की भरसक चेष्टा की परन्तु हम पिघले नहीं। अन्त में फ़ादर ने बड़े आश्चर्य से कहा, "बड़ी विचित्र बात है कि तीन मनुष्य जिनको इस संसार में जीवन को धन्य बनाने वाली सभी सिद्धियां, उत्तम स्वास्थ्य, अटूट धन और असीम प्रभुत्व प्राप्त था, वह स्वयं अपनी मर्जी से अपनी स्वेच्छा से इस संसार के धन वैभव को लात मार कर ऐसे अज्ञात अनजान देशों की धूल फाँकने निकल पड़े थे जहाँ से जीवित वापिस लौटने की सम्भावना बहुत ही कम थी।" परन्तु घुमक्कड़ी तो हम भारतवासियों के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई है। शास्त्रों की स्पष्ट आज्ञा है कि जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में चारों धाम नहीं किये, या त्रिवेणी स्नान नहीं किया, या कुम्भ नहीं नहाया उस का इस संसार में जन्म लेना केवल माता की जवानी को भक्षण करना है। भारतवर्ष के चार कोनों में स्थित चारों धाम की यात्रा करने, प्रयाग की त्रिवेणी तथा नासिक और हरिद्वार में कुम्भ स्नान करने, गया जी में पिण्ड दान करने, दूरस्थ विलोचिस्तान में स्थित हिंगलाज मंदिर और काश्मीर की उपत्यकाओं में बने श्री अमरनाथ के दर्शन करने तथा कामाख्या कामरूप के सिद्ध मठ के दर्शन करने की स्पष्ट आज्ञा शास्त्रों में दी गई है और शास्त्रों के लेखानुसार किसी भी भारतवासी की संसार यात्रा उस समय तक पूरी नहीं समझी जाती जब तक वह इन सिद्ध पीठों की यात्रा न कर ले। हमीं भारतवासियों ने ही श्री लंका, मैडागास्कर, यव द्वीप (जावा), सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा), वाली, लौम्बक, कम्बोडिया, चम्पा, मैक्सिको प्रभृति देशों में जा कर अपनी बस्तियाँ और राज्य स्थापित किये थे और हिन्दू धर्म की दुन्दुभी बजाई थी। मैक्सिको और पेरू में आज भी हमारे पूर्वजों की स्थापित की हुई गणेश और शिव की मूर्तियाँ मिलती हैं। बौद्ध परिव्राजकों ने तो संसार का कोई देश घूमने से नहीं छोड़ा था जहाँ भी हमारे पूर्वज गये अपनी सभ्यता, भाषा, वेशभूषा, संस्कृति,

तथा धर्म को साथ लेते गये और समस्त विश्व भर में उनका प्रचार किया। संभव है उस समय उन की यह साहसिक यात्रायें पागलपने का कार्य समझी गई हों परन्तु दृढ़ आत्मविश्वास से ईश्वर पर एकमात्र भरोसा कर के उन्होंने जिस कार्य का बीड़ा उठाया था उसे पूरा कर के दिखाया और आज संसार के कोने कोने में भारतीय परिव्राजकों के चरण चिन्ह मिलते हैं। संभव है आज हम को उन के नाम भी न मालूम हों लेकिन इतिहास के सुनहरे पन्ने उन की अपूर्व गाथाओं से भरे पड़े हैं। मुझे गर्व है कि हमने ऐसे देश और ऐसी जाति में जन्म लिया है जिस के अतीत का इतिहास संसार में सब से उज्ज्वल है और जिसे प्रत्येक युग में देश देशान्तरों के विद्वानों ने आदि गुरु कह कर माना है और मस्तक नवाया है। हम तीनों ने भी अपनी शक्ति भर उस उज्ज्वल परम्परा को बनाये रखने की चेष्टा की है।

उसी दिन शाम को हम सोने से पहिले बरामदे में बैठे पाइप पी रहे थे कि अल्फान्सो हमारे पास आया और झुक कर सलाम कर के कुछ कहने की इजाजत चाही। हमें उस के इस व्यवहार से कुछ आश्चर्य हुआ और इसलिये हमने उसे अपनी बात कह डालने को कहा। बहुत घुमा फिरा कर और शब्दों का ताना बाना बुन कर उस ने हमारे साथ अज्ञात देशों को चलने की इच्छा प्रकट की। उस की बात सुन कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं जानता था कि वह हद दर्जे का डरपोक और बुजदिल था। उस की इस विचित्र प्रार्थना का कारण भी जल्दी ही मालूम पड़ गया। फादर मैकैन्जी जल्दी ही जंजीबार जाने वाले थे और वहाँ से इंगलैण्ड। अल्फान्सो को किसी ने यह कह कर डरा दिया था कि अगर वह फादर के साथ जंजीबार जायगा तो उसे वहाँ पहुँचते ही गिरफ्तार कर लिया जायगा और फ्रांस भेज दिया जायेगा जहाँ उसे कत्ल के जुर्म में फांसी हो जायेगी। यही डर उसे दिन रात खाये जा रहा था और इसी डर के मारे उस की जान सूली पर टंगी हुई थी।

और मेरे ख्याल से संभावना यह थी कि क़नून के प्रति किये गये उस के जुर्म को लोग अब तक भूल भी गये होंगे और फ्रांस के अलावा वह अन्य देशों में बड़ी सरलता से घूम फिर सकता था। लेकिन बहुत चेष्टा करने पर भी मैं अल्फान्सो को यह समझा न सका। आँख के आगे नाक सूझे क्या खाक। बुजदिल और दब्बू प्रकृति के मनुष्य संकटों

का मुक़ाबिला करने के स्थान पर उन से दूर भागना पसन्द करते हैं। अल्फ़ान्सो की भी यही हालत थी। वह बुज़दिल फ्रांसीसी हमारे साथ रह कर बड़े से बड़े संकटों का सामना करने, कठिनाइयां झेलने और जान को हथेली पर रखे घूमने को तय्यार था परन्तु पुलिस की खोज पड़ताल के नाम से उस की नानी मरी जाती थी। कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं कि आँखों के सामने का प्रत्यक्ष संकट तो उन को दिखाई नहीं देता है परन्तु भविष्य के काल्पनिक संकट का ख़्याल कर कर के वह अपनी जान हलकान करते रहते हैं। कायर व्यक्तियों में वास्तविकता का सामना करने का साहस न होने के कारण वह अज्ञात काल्पनिक भय से अपनी जान हलकान करते रहते हैं, खुद भी परेशान होते हैं और दूसरों को भी परेशान कर मारते हैं।

अल्फ़ान्सो की फ़रियाद सुन कर हम ने आपस में सलाह मश्विरा किया और फ़ादर मैकैन्ज़ी से पूछ कर और उन के राज़ी हो जाने पर उस की प्रार्थना मान लेने का वचन दिया। इस के कई कारण थे। पहला यह कि हमारे पास आदमियों की कमी थी और अल्फ़ान्सो इतना चुस्त और फ़ुर्तीला था कि चुटकी बजाते ही वह हर काम मज़े से कर सकता था और खाना खाना तो वह ऐसा पकाता था कि उंगलियाँ चाटते रह जाइये। मुझे तो यह विश्वास है कि अगर उसे फिड्डी जूतियों के तल्ले दे दिये जाते तो वह उन को भी ऐसा स्वादिष्ट पका देता कि खाने वाले होठ चाटते रह जाते। दूसरे वह बहुत हँसमुख था और उस का स्वभाव था बन्दर जैसा चंचल, निचला तो वह बैठ ही नहीं सकता था, बोटी बोट फड़कती थी उस बेईमान की। और साथ ही जिस लच्छेदार अन्दाज़ से वह अपने बाबा के कारनामों की ज़ीट मारता था उस से हमारा काफ़ी मनोरंजन भी होता था। सब से बड़ी बात उस के चरित्र में यह थी कि उस के मुँह में राम बग़ल में ईंट वाली बात नहीं थी। इसमें सन्देह नहीं कि उस की परले दरजे की बुज़दिली और कायरता उस की सब से बड़ी कमी थी लेकिन अब क्योंकि हमें उस के चरित्र की इस कमज़ोरी का पता लग गया था इसलिये उस से सावधान रहा जा सकता था।

इसलिये हम ने अपनी इस अज्ञात देश की यात्रा में मिल सकने वाली सभी तरह की तकलीफों, दिक्कतों और खतरों की बात पूरी तौर से उसे समझा कर उसे इस शर्त पर अपने साथ ले चलना मंजूर किया कि उसे हमारी सारी आज्ञायें चुपचाप माननी पड़ेंगी। साथ ही हम ने यह वायदा भी किया कि यदि कभी वह सभ्य संसार को लौट सका तो उसे १० पौंड प्रति मास के हिसाब से वेतन भी दे दिया जायेगा। इन दोनों शर्तों को अल्फ़ान्सो ने बड़ी प्रसन्नता से मान लिया।

अन्त में दूसरे दिन का प्रातःकाल हुआ और सात बजे तक खच्चरों पर सामान लदवा दिया गया, और शीघ्र ही गई आ जुदाई की घड़ी। विदाई सदैव ही दुःखपूर्ण होती है और फ्लौसी विदा से लेना तो बहुत कठकलेजी काम था। इस बीच वह और ही मैं पक्के दोस्त बन गये थे वह घण्टों मेरे पास बैठी मेरी जीवन कहानी सुना और करतीथी लेकिन खूंखार मसाइयों के हाथ पड़ जाने वाली दुर्घटना के कारण अभी तक उस का चित्त पूरी तरह शान्त नहीं हो पाया था, अब भी कभी कभी बिना कारण ही वह चौंक कर डर जाती थी और उस का सारा शरीर ठण्डे पसीने से भीग उठता था।

'हाय लाल साहिब आप जा रहे हैं," यह कर वह फूट फूट कर रोने लगी और अपनी बाहों को मेरे गले में डाल कर मुझ से लिपट गई। "लाल साहिब, मैं आप को नहीं जाने दूंगी। आप चले जायेंगे तो फिर मेरा मन कैसे लगेगा, मैं आप को नहीं जाने दूंगी। न जाइये लाल साहिब, आप न जाने कब लौटेंगे।"

"फ्लौसी यह तो मुझे भी नहीं मालूम कि मैं कब लौटूँगा और लौटूंगा भी या नहीं यह भी तो नहीं बता सकता। मैं अपनी जीवन यात्रा के अन्तिम छोर तक पहुँच गया हूँ और तुम खड़ी हो जीवन के प्रवेश द्वार पर। मेरा तुम्हारा साथ हो भी कैसे सकता है। मुझे अब इस संसार में बहुत कम दिन रहना है, अब तो केवल गुज़रे समय की याद हीं मेरा एक मात्र सहारा है, परन्तु तुम्हारे सामने सारा संसार खुला हुआ है। तुम हो नदी की मुक्त धारा जो उछलती कूदती निरन्तर

आगे की ओर बढ़ती जाती है । भविष्य ने तुम्हारे लिए अपने गर्भ में क्या क्या वरदान संचित कर रखे हैं यह समय आने पर ही मालूम हो सकेगा । समय आने पर फ्लौसी तुम बालिका से कुमारी और कुमारी से युवती बनोगी, बाल्यकाल का यह वनचर जीवन तुमको भूल जायेगा और उसकी बहुत धुंधली स्मृति मात्र ही रह जायेगी । मेरा ख्याल है कि शायद फिर हमारी भेंट नहीं होगी मगर मुझे आशा है कि तुम अपने पुराने मित्रों को बिसराओगी नहीं और जो मैं तुम से इस समय कहने जा रहा हूँ उसे सदैव याद रखोगी । फ्लौसी, सदैव भलाई और सच्चाई के रास्ते पर चलने की चेष्टा करना और जान पर आ बनने पर भी सत्य पथ को न छोड़ना । यह संसार बहुत लुभावना है, इसमें पग पग पर प्रलोभन मिलते हैं उनको देख कर फिसल न जाना । फ्लौसी पाप सुवर्ण घट के समान है जिसमें विष भरा होता है । लोकलाज की परवाह न करके या यह न सोच कर कि संसार क्या कहेगा सदैव ही सत्य पथ पर चलने की चेष्टा करना । सत्यं शिवं सुन्दरम्, जो सत्य है वही सुन्दर है, यह याद रखना फ्लौसी । परोपकार और जनता जनार्दन की सेवा ही मनुष्य जीवन का ध्येय है । परोपकार करने में यदि कोई कष्ट भी उठाना पडे तो उससे घबराना नहीं । परोपकारी सदा सुखी । जनता जनार्दन इस दुख पूर्ण संसार में भगवान का प्रत्यक्ष रूप है, जनता जनार्दन की सेवा करना ईश्वर की उपासना करना है । इसलिये परोपकार करने का कोई भी अवसर चाहे वह कितना ही क्षुद्र क्यों न हो हाथ से मत जाने देना । यह संसार दुख और शोक का घर है और यदि तुम अपने प्रयत्नों से एक भी दुखी हृदय को संतुष्ट करके उसके उदास मुख पर मुस्कराहट ला सकी तो समझो कि तुम्हारा जीवन सार्थक हो गया । यदि तुम ऐसा कर सकीं फ्लौसी तो तुम न केवल जन प्रिय हो जाओगी बल्कि ईश्वर भी तुमसे प्रसन्न होगा । यदि तुम दुखी, निराश जीवनों में कुछ भी प्रकाश ला सकी तो तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा और वैसे तो सहस्रों स्त्रियां इस संसार में अपनी माताओं के यौवन-वृक्ष पर कुल्हाड़ी बन कर जन्मती हैं और अपनी जीवन यात्रा पूरी करके मर जाती हैं । मैंने तुम से बहुत बड़ी बड़ी बातें कह दीं परन्तु संसार का यही नियम चला आ रहा है कि एक दीपक

से दूसरा और दूसरे से तीसरा जलता है। जो ज्ञान का प्रकाश हमारे पूर्वजों ने इस संसार के सुख दुख का अनुभव करके प्राप्त किया था वह इन दीपकों की भांति एक से दूसरे को और दूसरे से तीसरे को मिलता आया है। तुम जीवन के प्रवेश द्वार पर खड़ी हो फ्लौसी, इस द्वार को पार करके तुम्हें क्या मिलेगा और कैसे उसे प्राप्त किया जा सकता है यह बताना हमारा कर्तव्य है। मैंने तुम्हें जो रास्ता बताया है उस पर चलने से तुम न केवल इस संसार में ही यश और सुख शान्ति प्राप्त करोगी बल्कि अपनी संतति के लिए भी ऐसे अमिट पद चिन्ह छोड़ जाओगी जिस पर चल कर आने वाली संतानें अपने जीवन को सफल बना सकेंगी।

"ओह, मै न जाने क्या क्या बक गया। फ्लौसी, मैं बूढ़ा हो चला हूँ और बुढ़ापे में ज़बान कुछ अधिक चल निकलती है। मेरी बहुत सी बातों का अर्थ तुम को आगे चल कर मालूम होगा, मगर केवल इसी कारण से कि वह बातें इस समय तुम्हारी समझ में नहीं आ सकी हैं उनको भूल न जाना। मैंने जो बातें तुम से कही हैं वह अवश्य ही बहुत नीरस हैं। अब मैं ऐसी बात तुम से कहता हूँ जिसमें तुम्हारा बाल्य जीवन भी रस ले सकेगा। तुम इस कागज़ के टुकड़े को देखती हो। सभ्य समाज में इसे चैक कहते हैं। जब हम यहाँ से चले जायें तब यह चैक और यह चिट्ठी अपने पापा को दे देना याद रहेगा न हमारे जाने के बाद उससे पहिले नहीं।"

"एक दिन तुम्हारा विवाह होगा फ्लौसी, तुम किसी भाग्यशाली की वधू बनोगी और अपने पापा और ममी को छोड़ कर अपना घर बसाने जाओगी। जीवन का नया क्षेत्र तुम्हारे सामने खुलेगा। विवाहित जीवन ही तो वास्तविक जीवन है। दो विभिन्न प्रकार की प्रकृतियां एक दूसरे से मिल कर एक दूसरे के अभाव की पूर्ति करती हुई दोनों को सम्पूर्ण मानव बनाती हैं। यही है जीवन की सार्थकता। तुम्हारे धर्म में क्या है यह मुझे ठीक तरह मालूम नहीं, परन्तु हमारे शास्त्रों में बिना स्त्री के स्नान-ध्यान, तीर्थ-व्रत, जप-पाठ, यज्ञ परोपकार सभी अधूरा माना गया है। हमारे शास्त्रों में विवाह को केवल शारीरिक संयोग ही नहीं माना गया है बल्कि उसे आत्मा का बन्धन कहा गया है और यह बन्धन

जन्म जन्मान्तर के लिए होता है ऐसा भी कहा गया है। जिस बन्धन से जीवन में पूर्णता आती है, जिस बन्धन से लोक-परलोक बनते हैं, जिस बन्धन से यह पृथ्वी ही स्वर्ग बन जाती है, उस बन्धन के उपलक्ष में मै तुम को कुछ भेट देना चाहता हूँ। इस चैक के धन से तुम्हारे पापा तुम्हारे लिए कोई अलंकार खरीद देंगे जिसे तुम लाल साहिब की स्मृति में अपने जीवन भर धारण करना और उसके बाद अपनी पुत्री को दे जाना।"

मेरी बात सुन कर फ्लौसी फूट फूट कर रोने लगी और उसने निशानी के तौर पर अपने सुनहरी बालों की एक लट मुझे दी, यह लट अब तक मेरे पास है। मेरा चैक १००० पौण्ड का था विजय की मृत्यु हो जाने से अब इस संसार में मेरा कोई नही था। जिसके लिए मैं धन छोड़ जाता। इस कारण मै इतनी रक़म आसानी से दे सकता था। चिट्ठी में मैने फ़ादर को इस धन को गवनमेन्ट सिक्यूरिटीज़ में लगा देने और फ्लौसी के विवाह के अवसर पर उस धन तथा उससे अर्जित ब्याज से उसके लिए स्वच्छ पानीदार हीरों की माला ख़रीद देने की प्रार्थना की थी। मैंने हीरों की माला दो कारणों से पसन्द की थी। पहिला यह कि श्वेत रंग स्वच्छता, तप और सत्य का प्रतीक माना गया है। अत: हीरों की शुभ्रता फ्लौसी को हर समय उसके कर्त्तव्य-पथ को बताती रहेगी। दूसरा कारण यह था कि रत्न जवाहिर न घिसते हैं और न टूटते हैं और उनका मूल्य भी बहुत कम गिरता चढ़ता है, और इस कारणयदि कभी फ्लौसी को अपने जीवन में धनाभाव का सामना करना पड़े तो वह उनके द्वारा धन प्राप्त कर सके। कुवेर के ख़ज़ाने से मिले अमूल्य हीरों को भारत सरकार को दे देने के कारण अब निकट भविष्य में हीरों का मूल्य गिरने की संभावना भी जाती रही है। इस कारण मैने अलंकार के लिये हीरों का हार पसन्द किया था।

हमको जाना ही था और इसलिये बहुत हाथ मिलाने, टोप हिलाने और आदिवासियों द्वारा बार बार पॉव छुए जाने के बाद हम चल ही पड़े। अल्फान्सो तो अपने साथियों और मालिक मालिकिन से विदा होते समय धाड़ मार कर रोने लगा। मुझे भी

बहुत दुख हो रहा था क्योंकि विदाई सदैव ही दुखदाई होती है। इस दुखपूर्ण वातावरण में सबसे विचित्र बात यह थी कि फ्लौसी से विदा होते समय अमस्लोपागस जैसा लौह कठोर व्यक्ति भी, जिसे हम सभी मनुष्यों की कोमल भावनाओं से एकदम शून्य समझते थे, आँखों में आँसू भर लाया। उसके भावना शून्य पत्थर जैसे हृदय में भी इस सुकुमार भोली बालिका के लिए प्रेम का अंकुर फूट आया था यह तो आज तक हमें मालूम ही नहीं हो पाया था। अपने लम्बे जीवन में मैंने अमस्लोपागस को पहली बार आँसू पोंछते देखा। वह फ्लौसी की तुलना उस नक्षत्र से किया करता था जो अन्धेरी रात में भूले भटकों को सीधे रास्ते पर ले जाता है। अमस्लोपागस ने अपने जीवन में सैकड़ों मनुष्यों को मारा था, लेकिन फ्लौसी को मार डालने की धमकी देने वाले लिगोनानी को मार कर वह फूला नहीं समाता था।

इस प्रकार इस सुन्दर मिशन स्टेशन और योरुपीय सभ्यता के अन्तिम स्मृति स्थान को छोड़ कर हम अज्ञात देश की ओर रवाना हो गये। अब भी कभी कभी मुझे मैकैन्ज़ी परिवार की याद आती है और मैं सोचने लगता हूँ कि वह ज़ंजीबार ठीक तरह से पहुँच सके होंगे या नहीं, और यदि वह सही सलामत इंगलैण्ड पहुँच गये होंगे तो सम्भव है कि यह पंक्तियाँ उनकी नज़रों से भी न गुज़रें। कभी कभी मुझे फ्लौसी की याद आती है और मैं सोचता हूँ कि इंगलैण्ड के एकदम नये वातावरण में जहाँ न काले आदिवासी हैं, न गुलाम हैं, न मुक्त हवा है, न स्वच्छन्द जीवन है और न उसका चिर सखा केनिया पर्वत है वह किस प्रकार घुल मिल सकी होगी। परन्तु विज्ञ व्यक्तियों का कहना है कि बिसरी को बिसार दे और आगे की सुधि ले। गुज़री बात को याद करने से दुख होता है इसलिये फ्लौसी को भूल जाना ही ठीक है।

मिशन स्टेशन से रवाना होकर हम केनिया पहाड़ की तलहटी के सहारे सहारे आगे बढ़ते गये। रास्ते में कोई विशेष कष्ट नहीं हुआ। केनिया पर्वत को मसाई जाति "डोंगो ईंगरी" या

"कौड़ियाला पर्वत" कहते हैं। शायद इस कारण कि उसकी विशाल उत्तुंग चोटी के पास बहुत से स्थानों पर नंगी पथरीली चट्टानें बर्फ की शुभ्र चादर पर लगे बदनुमा धब्बों की तरह दिखाई देती हैं। बिल्कुल खड़ा ढाल होने के कारण वहाँ पर पड़ी बर्फ नीचे की ओर फिसल जाती है टिकती नहीं है। केनिया पर्वत को पीछे छोड़ कर हम सुनसान उजाड़ खण्ड में भरी विशाल बैरिंगो झील के पास पहुँचे। यहाँ हमारे शेष दो अफ़रियों में से एक का पैर दुर्भाग्य से अफ्रीका के सब से विषैले फुङ्कार मार साँप पर पड़ गया और वह साँप के काटे से मर गया। भरसक प्रयत्न करने पर भी हम उसे न बचा सके। यहाँ से आगे १५० मील की यात्रा करके हम एक दूसरे बर्फ से ढके शानदार विशाल पर्वत लेकाकिसीरा पहुँच गये। जहाँ तक मुझे ज्ञात हो सका है इस पहाड़ तक सभ्य जाति का कोई भी व्यक्ति आज तक नहीं पहुँच सका है। परन्तु दुर्भाग्य से इस पर्वत की विशालता और सुन्दरता का वर्णन करने का मेरे पास इस समय अवकाश नहीं है। मेरे जीवन दीप का तेल तेजी से कम होता जा रहा है, कहीं ऐसा न हो कि इस यात्रा का वर्णन अधूरा ही रह जाये इस भय से मैं अनावश्यक विस्तार तथा वर्णन छोड़ कर केवल मुख्य घटनाओं का ही हाल लिखूंगा।

यहाँ हमने दो सप्ताह तक ठहर कर आराम किया और फिर आगे की ओर चल पड़े। अब मिला हमको बहुत सघन और बहुत लम्बा चौड़ा जन-शून्य बन-खण्ड, जिसे वहाँ के निवासी इल्गूमी कहते हैं। इस जंगल में जितने जंगली हाथी हैं उतने आज तक मुझे अफ्रीका के किसी भाग में नहीं मिले थे और न मैंने सुने ही थे। सारा जंगल इन भीमकाय पर्वताकार पशुओं से भरा हुआ था और मनुष्य द्वारा न सताये जाने के कारण इनकी संख्या केवल उन्हीं प्राकृतिक नियमों के अनुसार कम होती रहती थी जो किसी स्थान विशेष पर केवल उतने ही जीवधारियों को जीवित रखते हैं जितनों का वहाँ भरण-पोषण हो सकता है। इन प्राकृतिक नियमों के अनुसार किसी स्थान विशेष पर जीवधारियों की संख्या एक नियत संख्या से अधिक नहीं होने पाती। यह कहना असंगत न होगा कि हमने बहुत कम हाथियों का

शिकार किया। इसके कई कारण थे। पहला यह था कि हम किसी भी तरह अपनी गोली बारूद बरबाद नहीं कर सकते थे क्योंकि हमारे पास इनका स्टाक प्रायः नहीं के बराबर ही रह गया था। जिस खच्चर पर हमारा अधिकतर गोली गारूद लदा हुआ था वह दुर्भाग्य से एक गहरी नदी को पार करते समय तेज धारा में बह गया था और इस कारण हमारा स्टाक बहुत ही कम रह गया था। दूसरा कारण यह था कि हमारे पास हाथी दाँत को ढो कर ले जाने का कोई साधन नहीं था और हम केवल खून बहाने के लिए ही जानवरों का शिकार करना नहीं चाहते थे। इन कारण हमने इन पर्वताकार जंगली जानवरों को छेड़ा तक नहीं, केवल आत्म- रक्षा के लिए ही एक दो को गोली का निशाना बनाया।

इस बन खण्ड के हाथी क्योंकि शिकारियों और उनके आग उगलने वाले हथियारों से अपरिचित हैं इसलिये बीस गज तक की दूरी तक उनके पास पहुंच जाने पर भी वह भागते नहीं थे बल्कि चुपचाप खड़े रहते थे और अपने सूप जैसे कानों को खड़ा करके उन्हें झबरे कुत्तों की तरह हिलाते रहते थे और इस नये और विचित्र तरह के दुपाये जानवर मनुष्य को, जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा था, आंखें फाड़ फाड़ कर देखते रहते थे। कभी कभी जब दूर से देखने से उनकी उत्सुकता शान्त नहीं होती थी तब वह घूरना बन्द करके चिंघाड़ते हुए हमला कर देते थे, परन्तु ऐसा बहुत कम होता था। जब कभी ऐसा होता भी था तो हम अपनी रायफिलों को काम में लाते थे।

इस विकट इल्तूरी बन में सिर्फ जंगली हाथी ही नहीं थे बल्कि हर तरह का बड़ा शिकार यहां बहुतायत से था शेर तक इस जंगल में पाये जाते थे जंगल क्या था पूरी मुसीबत थी। जब से शेर ने मेरी टांग चबा कर मुझे जीवन भर के लिए लंगड़ा कर दिया है मैं शेर की सूरत तक से घबराता हूँ। दूसरा भयंकर जन्तु जो इस जंगल में बहुत अधिक पाया जाता था और जिसके भय से हमारी जान नखों में समाई हुई थी वह था टिसीटिसी मक्खी, जिसका काटना पशुओं के लिए घातक होता है। अभी तक हम यही सुनते आये थे कि खच्चरों और मनुष्यों पर टिसीटिसी मक्खी के काट लेने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता

और वह उसके विष के घातक प्रभाव से सुरक्षित रहते हैं। लेकिन हमारे खच्चर तो उनके काटने से मर गये। हमारे खच्चर पुष्टिकारक भोजनों के अभाव में मरे थे या उस भाग की मक्खियां अन्य स्थानों की मक्खियों के मुकाबिले अधिक विषाक्त थि यह मै निश्चय रूप से नहीं बता सकता। सौभाग्य से उनकी मृत्यु मक्खियों द्वारा काटे जाने के दो मास बाद हुई। ऐकाऐकी दो दिन की वर्षा के बाद वह सब के सब एक साथ ही मर गये, और कइयों की खाल उतारने पर हमने उनके मांस पर चौड़ी चौड़ी पीली धारियां देखीं। यह पीली धारियां टिसीटिसी मक्खी के विष की खास पहिचान हैं और जहरीली मक्खियों के डंक मारने के स्थानों को बतातीं हैं।

इस विशाल इल्गूसी वन को पार करके हमने उत्तर की ओर का रुख किया क्योंकि मिशन स्टेशन पर आकर उसी रात्रि को रहस्यपूर्ण ढंग से मर जाने वाले अभागे यात्री से फादर मैकैन्जी को ऐसी ही खबर मिली थी। उत्तर की ओर चलने पर हमको एक और झील मिली जिसे उसके किनारे पर रहने वाले आदिवासी 'लागा झील' के नाम से पुकारते थे। यह झील कोई ५० मील लम्बी और २० मील चौड़ी है और इस झील का जिक्र भी उस आदमी ने फ़ादर से किया था। यहां से हम ऊबड़ खाबड़ मैदानों को पार करते सीधे उत्तर की ओर एक महीने तक लगातार चलते चले गये। यह ऊबड़-खाबड़ मैदान प्रायः बिल्कुल ही चटियल था सिर्फ कहीं कहीं पर छोटी छोटी कंटीली झाड़ियां दिखाई पड़ जाती थी।

अब हम चढ़ाव की ओर जा रहे थे और प्रति दस मील में कोई १०० फुट ऊंचाई बढ़ती जाती थी। वास्तव में यह सारा मैदान पर्वत का विस्तृत ढाल था जो बर्फ से लदी हुई पर्वत श्रेणी के शिखिर पर समाप्त होता मालूम पड़ता था। हम भी उसी पर्वत शिखिर की ओर जा रहे थे क्योंकि इसी पर्वत में किसी स्थान पर वह दूसरी झील थी जिसे उस यात्री ने 'अथाह झील' बताया था। चलते चलते हम शिखिर तक पहुंच ही गये और इस बात का निश्चिय रूप से पता लग जाने पर कि शिखिर के आस पास वास्तव में एक झील थी हम १३००० फुट की ऊंचाई तक चढ़ते चले गये। जब हम शिखिर के पास हवा

में दूर तक बाहर निकले एक करारे के किनारे पर पहुंचे तो हमने कोई १५०० फुट नीचे की ओर ४०० वर्ग मील में फैली एक विशाल जल राशि देखी जो निश्चय रूप से किसी बुझे हुए ज्वालामुखी के मुहाने या विशाल आकार वाले कई मुहानों में जल राशि के भर जाने से बनी मालूम होती थी। इस झील के किनारे गांव और बस्तियां देख कर हम बड़ा कठिनाई से उठते बैठते और कभी कभी लेट कर चलते इस ज्वालामुखी के मुहाने जैसे पहाड़ के सपाट ढाल पर उगे चीड़ के वृक्ष के जंगल में होकर नीचे उतरने लगे। यहां के आदिवासियों ने हमारा जी खोल कर स्वागत किया। यहां के आदिवासी निष्कपट, सरल सीधे स्वभाव और शान्त प्रकृति के थे और इससे पहिले उन्होंने न किसी श्वेतांग मनुष्य को देखा ही था और न उनके सम्बन्ध में कुछ सुना ही था। इन आदिवासियों ने हमारा जी खोल कर आदर सत्कार किया और हमारी आवश्यकता से कहीं अधिक दूध, फल फूल, मांस मछली तथा अन्य खाद्य पदार्थ जुटा दिये। हमारे वायु शून्य बैरोमीटर के अनुसार यह झील समुद्र की सतह से ११४५० फुट की ऊंचाई पर थी और इस कारण यहां की जलवायु काफी ठण्ठी थी। पहले तीन चार दिन तो घने कुहरे और धुन्ध के चारों ओर छाये रहने के कारण आस पास की सीनरी को ठीक तरह से देख ही न सके। यही धुन्ध निचले ढाल पर वर्षा बन कर बरस रहा था और इसी वर्षा के प्रभाव से हमारे बाकी बचे खच्चरों में भी टिर्सीटिसी मक्खी का विष फैल गया और वह सब एक साथ ही मर गये।

इस दैवी आपदा से तो हमारे सिर आफ़त का पहाड़ घहरा पड़ा क्योंकि अब हमारे सामने सामान को ढो कर ले जाने की समस्या थी और यद्यपि सामान कुछ अधिक नहीं था परन्तु तो भी प्रश्न था कि उसे ढो कर कैसे ले जाया जाये। गोली बारूद भी हमारे पास प्रायः समाप्ति पर था, सिर्फ १५० कारतूस रायफिल के और ५० छर्रे के हमारे पास बच रहे थे। इतने थोड़े कारतूसों से कैसे काम चलेगा यही हम अक्सर सोचा करते थे, कभी कभी तो ऐसा मालूम पड़ने लगता था मानो हम अपनी जीवन यात्रा की अन्तिम मंज़िल तक पहुंच गये हों। इस समय यदि हम अपनी उस काल्पनिक

श्वेतांग जाति की खोज को बन्द करके वापिस लौटने का प्रयत्न भी करते तो भी अपनी इस समय की फटीचर हालत से ७०० मील चल कर समुद्र तट तक पहुंच सकने की संभावना का विचार करना ही बहुत बड़ी मूर्खता होती। इसलिये हर तरह की ऊँच-नीच सोच विचार कर हमने कुछ दिनों तक जहां हम थे वहीं टिके रहनें का निश्चय किया। क्योंकि यहां के आदि वासी बहुत उदार और सरल स्वभाव के थे और खाद्य पदार्थों की कोई कमी नहीं थी इसलिये उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने और साथ ही आस-पास के भू भाग की खोज जारी रखने का हमने निश्चय किया।

इसलिये जिस गांव में हम टिके हुये थे उसके मुखिया से एक लंबी डोंगी रायफिल के चार ख़ाली कारतूसों के बदले में ले ली। ख़ाली कारतूसों को पाकर वह फूला न समाया और बड़ी खुशी से हमें उनके बदले में डोंगी दे दी। डोंगी काफ़ी बड़ी थी और हम सब अपने कुल समान समेत उसमें बैठ सकते थे। हमारा इरादा झील का चक्कर लगाने और किनारे के भू भाग की देख-भाल करके टिकने योग्य कोई उत्तम जगह खोज निकालने का था। क्योंकि वापस इसी गांव में लौटने का निश्चय नहीं था इसलिये हमने अपना सारा सामान डोंगी में लाद लिया और दो जल मुर्गाबियों के मांस को आग पर भून कर साथ रख लिया। यह तय्यारी करके हम चल दिये, हमारे गांव के कुछ आदिवासी अपनी हलकी डोंगियों में बैठ कर अगले गांव वालों को हमारे आने की ख़बर करने पहिले ही चल दिये थे।

हमारी डोंगी बड़े इत्मीनान से आहिस्ता आहिस्ता स्वच्छ शान्त झील के वक्ष पर तैरती जा रही थी। झील के पानी के गहरे नीले रंग को देख कर कैप्टिन प्रसाद ने मुझे बताया कि उनको झील के किनारे रहने वाले आदिवासियों से, जो बहुत अच्छे मछुवे हैं क्योंकि मछली उनका मुख्य भोजन है, मालूम हुआ था कि उनका साधारणतया यह विश्वास था कि यह झील अथाह गहरी थी और उसकी तह में एक विशाल छेद था जिसके द्वारा झील का पानी निकल कर पृथ्वी के गर्भ में धधकते किसी विशाल अग्नि कुंड की आग को शान्त करने जाता रहता था।

मैंने यह कह कर कैप्टिन का समाधान किया कि शायद उन्होंने किसी पीढ़ी दर पीढ़ी सुनी जाने वाली रिवायत को सुन पाया होगा जो उस समय से इन आदि वासियों में चल निकली होगी जबकि आस-पास का कोई छोटा-मोटा ज्वालामुखी चैतन्य रहा होगा। झील के किनारे किनारे हमें कई छोटे छोटे बुझे हुए ज्वालामुखियों के मुहाने दिखाई देते थे जो अवश्य ही मुख्य ज्वालामुखी के, जिसमें अब झील भरी हुई थी, शान्त हो जाने के बहुत बाद तक अपना विध्वंसक कार्य करते रहे होंगे। जब वह पूरे तौर से शान्त हो गये होंगे तो वहां के निवासियों ने यह समझा होगा कि झील के पानी ने नीचे ही नीचे जाकर इन पर्वतों के भीतर धधकने वाले विशाल अग्नि कुण्डों को शांत कर दिया है। बर्फीले पहाड़ से पिघली बर्फ और नदी नालों से लाये जल के लगातार झील मे गिरते रहने और इस झील से पानी निकलने का कोई खुला रास्ता न होने पर भी उसका कलेवर न बढ़ते देख कर उनका यह विचार और भी पक्का हो गया होगा।

झील के दूसरे किनारे के पास पहुंचने पर हमने देखा कि वहां झील के पानी और पहाड़ के बीच कोई समतल ढाल नहीं था बल्कि चट्टानें झील के जल से समकोण बनाती हुईं एक दम सीधी खड़ी हुई थीं। इसलिये हम खड़ी चट्टान के समानान्तर किनारे से कोई १०० फ़ीट दूर हट कर अपनी डोंगी को खेते हुए झील के उस मोड़ की ओर जा रहे थे जहां हम को एक बड़े गांव के होने का पता लगा था।

थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर हमारी डोंगी तैरती हुई घास पात, सिवार, पेड़ की टूटी शाखों और कूड़े करकट के लम्बे दूर तक फैले जमाव में होकर जाने लगी। कैप्टिन प्रसाद के ख्याल से यह सब कूड़ा-करकट किसी धारा या बहाव में बह कर वहां आ गया था और क्योंकि वहां कोई धारा दिखाई देती नहीं थी इसलिये इस बात ने कैप्टिन को चक्कर में डाल दिया। हम इस विचित्र घटना क सम्बन्ध में अटकल लगा ही रहे थे कि कुंवर साहिब ने उंगली के इशारे से सफ़ेद मुर्गा-बियों के एक झुंड को दिखाया जो हम से कुछ आगे बहती सिवार पर बैठी चुग रही थीं। मैं इस झील पर इससे पहिले भी मुर्गाबियों को उड़ते देख चुका था और क्योंकि सारे अफ्रीक़ा भर में और कहीं मुर्गा-बियां नहीं पाई जातीं इसलिये मैं एक दो को नमूने के तौर पर लेना

चाहता था। मैंने झील किनारे रहने वाले आदि वासियों से उनके सम्बन्ध में पूछा भी था और जो कुछ उनसे मालूम हो सका था उससे यह मतलब निकलता था कि यह मुर्गाबियां पहाड़ को पार करके आती थीं और हर साल एक खास मोसम में प्रातः काल के समय ही देखी जाती थीं। उनके कहने के अनुसार उस समय उनको पकड़ लेना बहुत आसान होता था क्योंकि उस समय वह थक कर चूर हो रही होती थीं।

मैन उनसे पूछा था कि वह आती कहां से थीं? इस प्रश्न का वह कोई उत्तर न दे सके थे बल्कि उनका कहना था कि इस विशाल पर्वत की चोटी के पास वाला पहाड़ बहुत हो पथरीला, चटियल और बंजर था और इस पहाड़ से परे और भी ऊँचे पहाड़ थे जो बारहों महीने बर्फ़ से सफेद रहते थे और जंगली जानवरों से भरे पड़े थे और वहां कोई भी मनुष्य नहीं रहता था। इन पर्वतों से परे सैकड़ों मील तक फैला बहुत घना कांटेदार जंगल था, इतना घना और लता पताओं से इतना भरा कि उसमें से हाथी तक का निकलना असम्भव था मनुष्य की तो चलाई ही क्या। जब मैंने उन से पूछा कि इन पहाड़ों और, घने जंगलों के परे रहने वाली हम जैसी श्वेत जाति के सम्बन्ध में भी उन्होंने कभी कुछ सुना था तो वह मेरा प्रश्न सुनकर हंसने लगे थे। परन्तु एक बहुत ही बूढ़ी स्त्री ने मुझे बताया था कि जब वह बहुत छोटी थी तो उसके बाबा ने उसे बताया था कि उसने अपनी जवानी के दिनों में उस चटियल पथरीले रेगिस्तान और ऊँचे बर्फीले पहाड़ों से परे फैले हुए उस घने कंटीले जंगल को पार करने के बाद किसी ऐसी श्वेत जाति को देखा था जो पत्थरों के बने करालों में रहती थी।

उस बूढ़ी की उम्र को देखते हुए कहानी कोई २५० वर्ष पुरानी मालूम होती थी इसलिये इस पर सहसा विश्वास कर लेना कठिन था। परन्तु ऐसी किसी जाति के सम्बन्ध में कुछ न कुछ बातें यहाँ के निवासियों को भी मालूम थीं और इन कहानियों की सत्यता पर गंभीर रूप से सोच कर विचार करने के बाद मुझे पूरी तौर से विश्वास हो गया कि इन सब कहानियों में कुछ न कुछ सचाई अवश्य थी और इस लिये मैंने इस रहस्य का पता लगाने का दृढ़ निश्चय किया। मुझे इस बात का स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि ऐसे अजीब तरीके से मेर

इच्छा पूरी होने को थी।

हमने छुपे छुपे मुर्गाबियों का पीछा करना शुरू किया जो चुगते चुगते किनारे के पास वाली खड़ी चट्टान के पास आती जा रही थीं। हम बहती हुई एक घास के बड़े ढेर की ओट लेकर उनसे कोई ४० गज़ की दूरी तक अपनी डोंगी को खे कर ले गये। कुंवर साहिब के पास दुनाली नं० १ के छर्रों से भरी भराई मौजूद थी और जैसे ही दो मुर्गाबियाँ एक सीध में आई उन्होंने उनकी गरदन का निशाना ले कर बन्दूक़ दाग़ दी और दोनों मर कर गिर पड़ीं। बाक़ी मुर्गाबियां जिन की संख्या ३०-४० से कम नहीं थी तेजी से अपने परों को फड़-फड़ाती पुर्र से उड़ीं और उनके उड़ते ही उन्होंने दूसरी नाल दाग़ दी। एक छर्रा एक मुर्गाबी के पंख पर लगा और बाजू टूट जाने से वह पानी में गिर पड़ी, दूसरी मुर्गाबी की दुम से कुछ पंख उड़ गये और उसकी एक टांग भी उड़ गई लेकिन तो भी वह उड़ती हुई निकल गई। मुर्गाबियों का झुन्ड चक्कर मारता ऊपर को उठता चला गया यहां तक कि वह स्वच्छ नीले आकाश में नन्हे नन्हे धब्बे जैसी दिखाई देने लगीं। बहुत ऊँचे उठकर वह त्रिभुज के रूप में पंक्ति बद्ध हो गईं और उत्तर पूर्व की ओर उड़ती चली गईं।

इस बीच हमने दोनों मरी मुर्गाबियों को उठा लिया था, दोनों बहुत सुन्दर थीं, प्रत्येक का वज़न १५ सेर से कम नहीं था। साथ ही हम उस एक पंख टूटी मुर्गाबी का पीछा करने लगे जो बहती हुई घास पात के एक ढेर से लटक कर हमारी डोंगी से कुछ आगे स्वच्छ पानी में पहुँच गई थी। क्योंकि घास-पात और कूड़ा करकट के ढेर में होकर डोंगी को ले जाने में कठिनाई मालूम हो रही थी इसलिये मैंने अपने अकेले बचे अस्करी से घास पात के ढेर के नीचे डुबकी लगाकर उसे पकड़ लेने के लिए कहा। मुझे इस अस्करी के बहुत अच्छे तैराक होने की बात मालूम थी और मुझे यह भी मालूम था कि इस झील में मगर घड़ियाल और पनियर सांप जैसे जानवर भी नहीं थे। इसलिये उस पर संकट आने की बात ही नहीं थी। इस शिकार में उस अस्करी को भी मज़ा आ रहा था इसलिये वह मेरे कहते ही पानी में उतर गया और तैरता हुआ उस ज़ख्मी मुर्गाबी का लुकते छुपते पीछा करने लगा।

तैरते तैरते वह करारे की चट्टान के पास होने लगा जहां झील का पानी ठाठे मार रहा था।

परन्तु जल्दी ही उसने ज़ख्मी मुर्ग़ाबी का पीछा करना बन्द कर दिया और चिल्ला चिल्ला कर शोर मचाने लगा कि वह बहा जा रहा था और उसके पांव नहीं टिक रहे थे। और हमने भी आश्चर्य से देखा कि यद्यपि वह पूरी ताक़त से हाथ पैर मार कर हमारी डोंगी की तरफ़ आने की कोशिश कर रहा था परन्तु तो भी कोई अज्ञात शक्ति धीरे धीरे परन्तु निश्चय ही उसे करारे की चट्टान की तरफ़ खींच रही थी। हमने ज़ोर ज़ोर से चप्पू मारने शुरू किये और हमारी डोंगी घास और कचरे के बहते ढेर को चीरती हुई तीर की तेज़ी से उधर जाने लगी जहां हमारा अस्करी हाथ पैर मार रहा था। लेकिन जितनी तेज़ी से हमारी डोंगी उसके पास पहुँचती जा रही थी उससे भी अधिक तेज़ी से वह अस्करी करारे की चट्टान की तरफ़ खिचा जा रहा था। यकायक मुझे करारे की चट्टान मे अपने बिल्कुल सामने झील के पानी की सतह से कोई १॥ फुट की ऊंचाई पर एक मेहराब सी दिखाई दी जो दूर से पानी मे बनी किसी गुफ़ा का मुँह या रेलवे की पुलिया मालूम होती थी। उस मेहराब की सतह से कई फुट की ऊंचाई पर चट्टान में बने हुए पानी के निशान से यह स्पष्ट था कि यह मेहराब साधारणतया पानी में डूबी रहती होगी, मगर उस वर्ष मौसम सूखा रहा था और अधिक सरदी के कारण और वर्षों की तरह काफ़ी मात्रा में बर्फ़ ने पिघल कर झील के कलेवर को नहीं बढ़ाया था, इसी लिये झील के पानी की सतह नीची थी और मेहराब दिखाई दे रही थी।

इसी मेहराब की तरफ़ हमारा अभागा साथी भयानक तेज़ी से खिचा जा रहा था। वह उस मेहराब से कोई २० गज़ से भी कम दूर था और हमारी डोंगी उससे कोई ४० गज़ की दूरी पर थी। चप्पुओं की सहायता से हमारी डोंगी तीर की तरह उस अभागे अस्करी की तरफ़ बढ़ी जा रही थी। वह बड़े हौसले और बहादुरी से पानी को काट कर निकल जाने की कोशिश कर रहा था और मुझे उसके बचा लिये जाने की उम्मेद होने लगी थी, परन्तु यकायक ही उसके मुख पर ऐसी

निराशा झलकने लगी जैसे उसे अपने जीवन की कोई आशा ही न रह गई हो और वहीं हमारी आंखों के सामने ही वह पानी के तेज़ भंवर में फंस गया और किसी अज्ञात शक्ति ने उसे मेहराब के अन्दर खींच कर हमारी आँखों से ओझल कर दिया। उसी क्षण मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे किसी बहुत ही ताक़तवर हाथ ने हमारी डोंगी को पकड़ लिया हो और अमानुषीय तेजी से उसे किनारे की ओर खींचे लिये जा रहा हो।

अब हम को अपने ऊपर आने वाले संकट का पता लगा और इसलिये हम पूरी ताकत लगा कर अपनी डोंगी को पानी की विकराल भंवर से दूर हटा ले जाने की कोशिश करने लगे। परन्तु सब व्यर्थ हुआ, दूसरे ही क्षण हमारी डोंगी तीर की तरह मेहराव की ओर सीधी उड़ी जा रही थी और मुझे लगने लगा कि पलक मारते ही सब कुछ समाप्त हो जायेगा। सौभाग्य से मुझे इतना होश बना हुआ था कि तेज़ी से डोंगी में पट लेटते हुए मैं साथियों को पुकार कर कह सका, "फौरन पट लेट जाओ, फौरन फ़ौरन", और सौभाग्य से उनको भी इतना होश था कि मेरी आवाज़ सुनते ही वह फ़ौरन ही डोंगी में मुँह के बल लेट गये।

दूसरे ही क्षण ज़ोर से रगड़ने घिसने की आवाज़ आई और नाव इतनी दब गई कि उसके किनारों पर होकर पानी अन्दर भरने लगा और मुझे ऐसा लगा कि अब मरे—अब सब कुछ समाप्त हुआ। परन्तु ऐसा नहीं हुआ, जैसे ऐकाऐकी ही रगड़ने-घिसने की आवाज़ आई थी वैसे ही ऐकाऐकी वह बन्द हो गई और एक बार फिर हमको ऐसा मालूम पड़ने लगा जैसे किसी चुम्बक से खिंच कर हमारी डोंगी तीर की तरह किसी अज्ञात स्थान की ओर जा रही हो। मैंने जरा करवट लेकर अपने सिर को तनिक घुमाया सिर उठाने का साहस मैं न कर सका, और चारों ओर देखा। अब भी जो क्षीण प्रकाश डोंगी तक पहुँच रहा था उससे मुझे पता लगा कि एक भीमकाय चट्टानी मेहराब हमारे सिरों के ठीक ऊपर फैली हुई थी, इससे और अधिक पता न लग सका। एक दो मिनट बाद बढ़ते अन्धकार के कारण इतना दीखना भी बन्द हो गया। प्रकाश क्रम

होता जा रहा था, छायायें लंबी होती जा रही थीं और अन्त में सभी कुछ अन्धकार के समुद्र में डूब सा गया। चारों ओर गहरा अन्धकार फैल गया ऐसा कि पसारा हाथ तक न सूझता था।

कोई एक घण्टा तक हम इसी तरह पड़े रहे, किसी चट्टानी से टकरा कर सिर के टुकड़े टुकड़े हो जाने के डर से हमें सिर उठाने का साहस नहीं होता था। इस बीच में हममें से कोई बोला तक नहीं था, और बोलता भी कैसे क्योंकि तेज़ी से बहते पानी की आवाज़ के मारे कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा था। साथ ही किसी को बोलने की इच्छा भी नहीं थी, सभी डरे सहमे से थे, आसन्न मृत्यु के भय और परिस्थिति की भयंकरता से हम इतने डर गये थे कि सिवाय अपने किसी को दूसरे की ओर ध्यान देने का होश ही न था। खोह की दीवारों या किसी चट्टान से टकराने या डोंगी के उलट जाने पर पानी में डूब जाने या हवा की कमी से सांस घुट कर मर जाने की सम्भावना से सभी मृतप्राय हो रहे थे।

डोंगी की तली में लेटे लेटे और तेज़ पानी का शोर, जो न जाने किधर और कहां को तेज़ी से बहा जा रहा था, सुनते सुनते इन्हीं किसी तरीकों से होने वाली भयंकर मृत्यु का ख्याल मुझे रह रह कर सताने लगा। बहते पानी की आवाज़ के अलावा एक और आवाज़ मुझे सुनाई दे रही थी, यह आवाज़ थी अलफ़ान्सो के रह-रह कर रोने पीटने की जो डोंगी के बीचोंबीच से आ रही थी, परन्तु यह आवाज़ भी बहुत धीमी और अस्पष्ट थी। सत्य तो यह है कि परिस्थिति की भयंकरता ने मुझे प्रायः संज्ञा शून्य सा कर दिया था और मुझे विश्वास होता जा रहा था जैसे मैं कोई भयंकर डरावना स्वप्न देख रहा था।

अध्याय १०

आग का फौवारा

तेज़ बहते पानी की धार में हमारी डोंगी बही चली जा रही थी और अन्त में मैंने अनुभव किया कि पानी की आवाज़ अब पहले से आधी तेज़ भी नहीं रह गई थी और इससे मैंने यह नतीजा निकाला कि शायद यह इस कारण था कि आवाज़ को गूँजने को अधिक जगह मिल रही थी। अलफान्सो का रोना पीटना और चीख़-पुकार अब मुझे साफ सुनाई दे रही थी। वह ईश्वर से विचित्र अनहोनी सी अरदास प्रार्थना कर रहा था और बीच बीच में अपनी प्रेमिका अनीता के नाम की दुहाई ईश्वर को देता जाता था और इसमें ־न्देह नहीं कि यह दुहाई प्रार्थना उसके सच्चे दिल से निकल रही मैंने एक चप्पू उठा कर उसकी पसलियों पर दे मारा और वह ־ कर कि अन्त-काल आ गया और भी ज़ोर से डकराने

धीरे बड़ी सावधानी से मैं उठ कर घुटनों के बल ־े टटोलने के लिए अपना हाथ ऊपर को ־त को न छू सका। फिर मैंने एक चप्पू ־ठा सकता था उठाया लेकिन नतीजा ־प्पू को डोंगी के दाहिने और बायें चप्पू सिवाय पानी के और ־ ख्याल आया कि डोंगी ־टैन और थोड़ा सा टटोल कर लालटैन को ־काल कर बड़ी सावधान

से लालटैन को जला दिया और उसके जलते ही बत्ती घुमा कर सारी डोंगी में तेज़ रोशनी कर दी।

इत्तफाक़ से रोशनी सबसे पहले अलफ़ान्सो के भयभीत और डर से पीले पड़े चेहरे पर पड़ी और उसने यह समझ कर कि वह वास्तव में मर गया था और किसी अपार्थिव अद्भुत घटना को देख रहा था एक ज़ोर की चीख मारी और दो तीन ज़ोरदार चप्पू खाने के बाद बड़ी मुश्किल से उसके होश हवास ठिकाने आये। बाकी तीन में से कैप्टिन प्रसाद डोंगी में चित पड़े हुए थे, उनका चश्मा अब भी उनकी आँखों पर चढ़ा हुआ था और वह बहुत बेतुकेपन से चारों ओर फैले अन्धकार को देख रहे थे। कुंवर साहिब डोंगी में तिरछे करवट के बल पड़े हुए थे और डोंगी से अपना दाहिना हाथ लटका कर पानी की रफ्तार जांचने की कोशिश कर रहे थे।

लेकिन अमरलोपागस पर रोशनी पड़ते ही मैं ऐसी विकट परिस्थिति में भी अपनी हँसी न रोक सका। मै बता चुका हूँ कि चलने से पहले हमने अपनी डोंगी में आग पर भुनी हुई दो मुर्ग़ाबियां रख लीं थीं। इत्तफाक से ऐसा हुआ कि चट्टानी मेहराब से टकरा कर पानी में गिर जाने से बचने के लिए जब हम तेज़ी से डोंगी में लेटे तो अमरलोपागस का सिर भुनी हुई मुर्ग़ाबी के बहुत पास आ गया और आकस्मिक दुर्घटना के पहिले धक्के को झेल लेनें के बाद जैसे ही उसके होश ठिकाने आये तो उसे ध्यान आया कि वह बहुत भूखा था। इसलिये उसने बड़ी शान्ति से अपनी इन्कूसींकास से भुने मांस का टुकड़ा काट लिया और इस समय वह उसी टुकड़े को बड़े मनोयोग से धीरे धीरे खा रहा था। बाद को उसने इसका कारण यह बताया कि उसे यह विश्वास हो गया था कि वह 'अनंत यात्रा' पर जाने वाला था और इसलिए इस 'अनंत यात्रा' पर भूखे पेट रवाना होने के स्थान पर उसने भरे पेट जाना पसन्द किया था।

जैसे ही मेरे साथियों ने देखा कि मैंने लालटैन जला ली है तो उन्होंने सबसे पहिले अल्फान्सो को ज़बरदस्ती ढकेल कर डोंगी के एक कोने में डाल दिया और साथ ही उसे धमकी भी दे दी कि अगर उसने फिर रोना पीटना फैला कर अपनी चीख़ पुकार से गहरे

अंधेरे को और भी भयानक बनाने की तनिक भी चेष्टा की तो हम उसे जीवन और मृत्यु के बीच भूलने न देकर सीधे अपने वफ़ादार अस्करी का साथ देने के लिए पानी में फेंक देंगे ताकि वह बहुत जल्दी दूसरे लोक में पहुँच कर वहां अपनी अनीता की प्रतीक्षा कर सके। इस धमकी का आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा और उसका रोना पीटना फौरन बन्द हो गया।

इसके बाद हमने अपनी परिस्थिति पर सोच विचार करना शुरू किया। सबसे पहले हमने कैप्टिन की सलाह के अनुसार दो चप्पुओं को एक दूसरे से बांध कर लम्बे मस्तूल की तरह डोंगी के अगले हिस्से में बांध दिया ताकि यदि कभी इस पाताल गुफा या पाताल धारा की छत एकाएकी नीचे होने लगे तो हमको फौरन ही सूचना मिल जाये। हम यह अच्छी तरह समझ गये थे कि हम झील का फ़ालतू पानी निकालने वाली किसी पाताल धारा में या अलफान्सो के कथनानुसार किसी बड़ी बन्द 'मोरी' या 'नाली' में बहे चले जा रहे थे। ऐसी पाताल धारायें अन्य देशों में भी पाई जाती हैं लेकिन शायद किसी को भी आज तक इन धाराओं में यात्रा करने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त न हुआ होगा। पाताल धारा इतनी काफ़ी चौड़ी थी कि हमारी लालटैन की रोशनी किनारे तक नहीं पहुँच रही थी। कभी कभी जब धारा की प्रखरता हमारी डोंगी को सीधे मार्ग से हटा कर किनारों की ओर ढकेल देती थी तभी हमें इस सुरंग के किनारे वाली चट्टानी दीवारें दिखाई पड़ती थीं और जो जैसा मेरा अनुमान है हमारे सिरों से २५ फ़ुट की ऊँचाई पर मेहराब बनाती थीं। धारा काफी प्रखर थी और सौभाग्य से जैसा साधारणतया नदियों में पाया जाता है बीच में सब से तेज़ थी। परन्तु तो भी सावधानी के लिए हमने यह प्रबन्ध किया कि हम में से कोई एक बारी बारी से लालटैन और बांस लेकर डोंगी के अगले में बैठ कर पहरा दे और डोंगी को किनारे की ओर पानी के बाहर निकली चट्टानों के साथ टकराने से बचाता रहे। क्योंकि अमस्लोपागस खाना खा चुका था इसलिये सबसे पहले उसी की बारी आई।

हम अपनी रक्षा के लिए इससे अधिक और कुछ नहीं कर सकते थे परन्तु कैप्टिन प्रसाद ने सलाह दी कि डोंगी को चप्पू मार कर उसे

सुरंग के किनारों से दूर बीच धारा में रखने के लिए हम में से एक को बारी-बारी से डोंगी के पिछले भाग में भी बैठना ज़रूरी था।

यह प्रबन्ध करने के बाद हमने मुर्गाबी का ठण्डा मांस नमक मिर्च लगा कर खाया। खाना खाने के बाद हमारा गया साहस फिर लौट आया और मैंने सलाह दी कि हमारी हालत बहुत गंभीर थी परन्तु तो भी निराश होने की कोई बात नहीं थी, केवल एक हालत में ही, जैसा कि आदि वासियों ने कहा था, यानी पाताल धारा के एकाएकी किसी स्थान पर पृथ्वी के गर्भ में समा जाने पर ही कुछ भय की बात हो सकती थी। यदि ऐसा नहीं था तो इस पाताल-धारा का पहाड़ के दूसरी ओर खुले स्थान में जा निकलना निश्चित था, और इस हालत में हम सिर्फ वहां उस स्थान तक पहुँचने तक जीवित रहने की कोशिश ही कर सकते थे—परन्तु वह स्थान था कहां? इसके मुक़ाबिले जैसा कैप्टिन प्रसाद ने हमें बताया हम पर सैकड़ों तरह की अनोखी मुसीबतें और संकट भी आ सकते थे, जैसे इस पाताल धारा का मुड़ते बल खाते पृथ्वी के गर्भ में किसी स्थान पर समाप्त हो जाना भी संभव था और ऐसा हो जाने पर तो निस्संदेह हमारी दशा बहुत ही दयनीय हो जाती।

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत," कुंवर साहिब ने कहा, जो होना है होगा, फिर चिन्ता किस बात की। ईश्वर पर अटल विश्वास रखो और संकट का सामना करने को कमर कसे तैयार रहो।" कुंवर साहिब स्वभाव से ही आशावादी हैं और प्रत्येक बात के उज्ज्वल पक्ष को देखते हैं, और इसीलिये बड़े से बड़े संकट के समय उन पर एकान्त विश्वास किया जा सकता है। "हम इतने संकटों को लांघते आ रहे हैं और मुझे दृढ़ विश्वास है कि इस संकट से भी हम अवश्य ही साफ बच जायेंगे।"

कुंवर साहिब की इस बात से हम सबको ढाढस बँधा और हम अपने अपने स्वभावानुसार परिस्थिति का मुक़ाबिला करने को तैयार हो गये—सिवाय अलफान्सो के जो कि डर के मारे अपने होश हवास खोये डोंगी में औंधा पड़ा हुआ था। कैप्टिन प्रसाद ने पतवार संभाल ली और अमस्लोपागस डोंगी के अगले भाग में

बैठ कर पहरा देने लगा। इसलिये अब मेरे और कुंवर साहिब के लिए डोंगी में लेट कर अपनी हालत पर सोच विचार करने के अलावा कोई काम नहीं था। हम इसमें सन्देह नहीं कि बहुत ही अनहोनी और विचित्र परिस्थिति में फँस गये थे—पृथ्वी के गर्भ के न जाने कितने भीतर किसी पाताल धारा में अज्ञात दिशा की ओर लगातार बहते चले जाने से और भयानक परिस्थिति और क्या हो सकती थी। साथ ही अन्धकार इतना गहरा था, कि पसारा हाथ तक नहीं सूझता था, हमारी लालटैन से निकलने वाला क्षीण प्रकाश रोशनी देने के स्थान पर चारों ओर फैले अन्धकार की कालिमा को और भी अधिक काला बना रहा था। डोंगी में आगे की ओर अदृश्य भाग्य की तरह अपने हाथ में लम्बी लग्गी लिए चैतन्य तथा चौकन्ना बैठा था अमस्लोपागस और पीछे की ओर पतवार थामे बैठे थे कैप्टिन प्रसाद जो अन्धेरे में आंखें फाड़ फाड़ कर केवल लालटैन के क्षीण प्रकाश के सहारे ही डोंगी को सीधे धार में लिये जा रहे थे और कभी कभी धार बदल जाने पर चप्पू मार कर डोंगी को फिर सीधे रास्ते पर ले आते थे।

मै मन ही मन सोच रहा था, "लाल साहिब अब के बुरे फंसे। बच्चू चले थे वहाँ से जोखिम की खोज में, क्यों अब आ बनी न जान पर, जी भर जायेगा इस वक्त तुम्हारा। चाहिये था कि बुढ़ापे में आराम करते, पर जनाब हैं कि सजी सजाई कोठी, धन दौलत, मित्र सुसाइटी सभी कुछ छोड़ कर निकल पड़े जंगलों की खाक छानने,- अहमक और कैसे होते हैं? क्या उनके सींग होते हैं? अब तो जुआ है जुआ, इस पाताल धारा से निकल गये तो ठीक है नहीं तो परलोक का सीधा टिकट कट जायेगा। तुम जैसों की मृत्यु भी ऐसे ही स्थानों पर होनी चाहिये जहाँ आदमी हो न आदम जात। पाताल धारा की अन्धेरी सुरंग से बढ़ कर तुम्हें मरने के लिए और कौन सा अच्छा स्थान मिलेगा।"

शुरू-शुरू में तो मेरा भी साहस और धीरज जाता रहा था। भाग्य की अनिश्चितता स्थिर तथा शान्त स्वभाव वाले व्यक्तियों को भी परेशान कर डालती है, हम जीवित रहेंगे या मर जायेंगे, मृत्यु एक दिन

दो दिन, तीन दिन तक नहीं होगी या पांच मिनट में ही हम सब मृत्यु के मुख में जाने वाले थे, हमारी जीवन की घड़ियां बाक़ी थीं या भाग्य का लेखा जोखा समाप्त हो गया था, यही अनिश्चितता मुझे खाये जा रही थी। परन्तु मानव प्रकृति जल्दी ही बदलती परिस्थितियों के अनुकूल हो जाती है और मनुष्य बहुत शीघ्र ही उनका आदी हो जाता है; और इसी कारण हम भी जल्दी ही अपनी इस वर्तमान दशा के आदी हो गये। और सत्य तो यह है कि हमारी चिन्ता और परेशानी बिल्कुल बेकार और फिजूल सी थी क्योंकि हम को यह पता ही नहीं था कि अगले क्षण क्या होने को था। पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जाना। जब विधाता भी अगले क्षण की बात नहीं जानता तो मनुष्य भला कैसे जान सकता है। जीवन स्वयं एक अनिश्चित वस्तु है, श्वासों का आना जाना किसी भी क्षण रुक सकता है। किसी ने कहा भी है, 'ना जानूं या श्वास की आवन होय न होय।' और यह अनिश्चितता तो मनुष्य जीवन के साथ लगी हुई है चाहे वह जगलों में रहे या ऊँचे प्रासादों और अट्टालिकाओं में धन वैभव की चकाचौंध में रहे या हमारी तरह पृथ्वी के गर्भ में अनिश्चित दिशा की ओर बह रहा हो। जब समय आ जाता है, जब जीवन रज्जु कट जाती है, जब जीवन दीप का तेल चुक जाता है तब कोई एक क्षण को भी जीवन को नहीं बढ़ा सकता। यही एक बात उस विश्वनियन्ता ने अपने हाथों में रखी है और यहीं मनुष्य अपने को असहाय पाता है। तो जब जीवन की घड़ियां एक क्षण भी नहीं बढ़ाई जा सकतीं और जब यह भी पता नहीं कि अन्तिम क्षण कौन सा होगा तो ऐसी हालत में चिन्ता और परेशानी करना सरासर मूर्खता है। जब एक बार अटल फैसला हो चुका है और फ़ैसले के ख़िलाफ कोई अपील हो ही नहीं सकती तो फिर उसके लिए परेशान होने से फ़ायदा ? जो होना है हो कर रहेगा। और जब होना है उसी क्षण होगा आगे पीछे नहीं; फिर बेकार जान खपाने से क्या लाभ।

जब हमारी डोंगी पाताल धारा में घुसी थी तब दोपहर का समय हो गया था और कोई दो बजे कैप्टिन प्रसाद और अमस्लोपागस को पहरे पर मुक़र्रर करते समय हमने यह तय किया था कि प्रत्येक जोट ५ घन्टे तक पहरा दे। इसलिए ७ बजे मैं और कुंवर साहिब पहरे पर

आ गये। कुंवर साहिब डोंगी के अगले भाग में बैठ और मैं पिछले में और कैप्टिन प्रसाद और अमस्लोपागस डोंगी की तली में पड़ कर सो गये। तीन घन्टे तक तो सब कुछ ठीक ठाक रहा, इस बीच में केवल एक बार कुंवर साहिब को लग्गी मार कर डोंगी को बीच धार में लाना पड़ा और मुझे भी डोंगी को सीधा चलाने में कोई परिश्रम नहीं करना पड़ा। क्योंकि धारा बहुत तेज थी इसलिये हमारी डोंगी स्वयं ही सीधी बहती चली जा रही थी। परन्तु धारा की तेज़ी के कारण कभी-कभी डोंगी सीधी जाने के बजाय घूम कर चौड़ी ओर से बहने लगती थी और सिर्फ यही एक बात थी जिससे हमें चौकस रहना आवश्यक था। इस विचित्र पाताल धारा की सभी बातें विचित्र थीं परन्तु सब से विचित्र बात जो मुझे रह रह कर आश्चर्य में डाल रही थी और जिसका मैं अभी तक कोई स्पष्ट कारण नहीं समझ सका था वह यह बात थी कि इस पाताल धारा की हवा किस तरह शुद्ध बनी हुई थी। इसमें सन्देह नहीं कि यहां की हवा बन्द, घुटी हुई और सील भरी थी परन्तु तो भी इतनी खराब नहीं थी कि सांस लेने के क़ाबिल ही न हो। मेरे विचार से इस असाधारण घटना की वजह यह हो सकती थी कि पाताल धारा के पानी में इतनी प्राणदायक वायु घुली हुई थी कि उस सुरंग की हवा गन्दी और सांस लेने के अयोग्य नहीं हो सकी थी, और जैसे जैसे धारा का पानी तेज़ी से आगे की ओर बहता जाता था पानी में घुली यह प्राणदायक वायु जल से निकल कर सुरंग के विषैले और बन्द वायुमण्डल को सांस लेने योग्य बनाती जाती थी। इस विचित्र घटना का केवल यही एक कारण मेरी समझ में आता है, पर हो सकता है कि मेरा विचार ग़लत हो।

पतवार संभाले हुए मुझे कोई ३ घन्टे बीते होंगे कि मुझे सुरंग के तापक्रम में निश्चित रूप से कुछ फ़र्क़ मालूम पड़ने लगा—गरमी निश्चित रूप से बढ़ती जा रही थी। पहिले तो मैंने इस ओर कुछ ध्यान ही नहीं दिया लेकिन आधा घन्टा बीतते न बीतते मुझे जान पड़ने लगा कि गरमी लगातार बढ़ती ही जा रही थी। मैंने कुंवर साहिब को आवाज़ देकर पूछा कि उनको भी गरमी मालूम पड़ रही थी या यह सिर्फ़ मेरे ही मन का भ्रम था।

"लाल साहिब" कुंवर साहिब ने जवाब दिया, "मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है जैसे मैं किसी गर्म हम्माम में बैठा हूँ।" उसी समय हमारे सोये हुए साथी भी हांपते हुए उठ बैठे और अपने कपड़े उतार कर फेंकने लगे। अमस्लोपानस इस बात में हम से अच्छा था क्योंकि सिवाय एक साधारण कच्छे के वह कोई भी वस्त्र पहिने हुए नहीं था।

गरमी बढ़ती गई, और बढ़ती गई, यहाँ तक कि हमको सांस लेना तक दूभर हो गया और हमारे शरीर से पसीने की धारें बह निकलीं। आधा घन्टा और बीता और यद्यपि हम सब मादरज़ात नंगे हो गये थे तो भी गरमी सहन नहीं हो रही थी। मालूम पड़ता था कि जैसे हमारे नीचे कहीं कोई विशाल भट्टी धधक रही हो। मैंने पानी का हाल जानने के लिए अपना हाथ धारा में डुबोया पर फ़ौरन ही चीख़ मार कर निकाल लिया—पाताल धारा का पानी प्रायः खौल रहा था—मैंने अपने जेबी थर्मामीटर से तापक्रम नापा—थर्मामीटर में पारा १२३° तक चढ़ गया था। पानी के धरातल से भाप के गहरे बादल उठ रहे थे। अल्फान्सो चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था और चिल्ला चिल्ला कर कह रहा था कि हम जीवित ही रौरव नरक में पहुँच गये थे, और उसके इस कहने में झूँठ था भी नहीं। कुंवर साहिब का ख्याल था कि शायद हमारी डोंगी किसी भूगर्भ स्थित ज्वालामुखीय अग्नि कुण्ड के पास होकर गुज़र रही थी। मेरा भी अनुमान कुछ कुछ यही था और जैसा कि आने वाली घटनाओं से मालूम हुआ कुंवर साहिब का यह ख्याल बिल्कुल ठीक था।

आधे घन्टे के बाद ही गरमी से जो हमारी दशा हो गई और जो यंत्रणा हमें भुगतनी पड़ी उसका हाल लिखना मेरे बस की बात नहीं है। अब हमारे शरीर से पसीना भी नहीं निकल रहा था क्योंकि शरीर की सारी नमी पसीने के रूप में पहले ही निकल चुकी थी। हम बद हवास से डोंगी में पड़े हुए थे और डोंगी की गति-विधि पर नज़र रखना या उसे ठीक तौर पर चलाना हमारे लिए असम्भव था। चारों ओर इतनी गरमी थी कि हम वास्तव में सीख़ कबाब बने हुए थे और जिस तरह जल से बाहर आ कर

मछली साँस घुटने से मर जाती है उसी तरह धीरे धीरे हमारा भी सांस घुटा जा रहा था। गरमी की वजह से हमारे शरीर की खाल फट गई थी और सिर में खून का दबाव ऐसे बढ़ता जा रहा था जैसे पम्प से सिर में खून ठूँसा जा रहा हो।

यह हालत काफ़ी देर तक रही और नदी की धारा के यकायक एक ओर थोड़ा सा मुड़ते ही मैंने डोंगी के अगले भाग में बैठे कुंवर साहिब को भर्राई हुई, फटी, घबराई सी आवाज़ में जोर से चिल्लाते सुना और सिर उठा कर देखने पर मुझे एक बहुत ही विचित्र परन्तु महा भयानक दृश्य दिखाई दिया। हमसे कोई आधा मील आगे और धारा के बीचोंबीच से कुछ बायें को हट कर अन्दाज़ से धारा यहाँ कोई ६० फ़ीट चौड़ी थी—प्रायः एक दम सफ़ेद प्रज्वलित अग्नि शिखा का एक बहुत बड़ा मीनार पानी की सतह से एक विशाल फ़ौवारे के रूप में निकल रहा था। यह अग्नि स्तम्भ कोई ५० फ़ीट ऊँचा उठ कर सुरंग की छत से टकरा रहा था और वहां टकरा कर कोई ४० फीट के व्यास में फैल जाता था और फिर यह अग्नि स्फुलिङ्ग पूरे खिले गुलाब पुष्प की तरह फैल कर किनारों पर मुड़ी पंखड़ियों के समान शक्ल बनाते हुए झरनों की तरह छत से नीचे की ओर गिर रहे थे।

निस्संदेह प्रज्वलित गैस का यह विशाल अग्नि स्फुलिंग पाताल धारा के वक्ष से निकला हुआ एक विशाल जाजल्यमान प्रज्वलित गुलाब का फूल जैसा मालूम होता था। नीचे की ओर था मीनार रूपी सीधा डंठल जो कि २-३ फीट मोटा था और इस डंठल के ऊपर था वह भयानक डरावना अग्नि पुष्प। जहाँ तक उस जीवित अग्नि स्फुलिंग की भयंकरता और उसकी कुपित क्रोधित भयानक घातक सुन्दरता का ताल्लुक है उसका हाल कौन बयान कर सकता है? कम से कम मैं तो कर नहीं सकता। यद्यपि अभी हम इस अग्नि स्फुलिंग से कोई ५०० गज़ दूर थे और घने जल वाष्प के छाये रहने पर भी इस अग्नि शिखा से सारी सुरंग में दिन जैसा प्रकाश फैला हुआ था और हम प्रकाश में देख सकते थे कि यहाँ सुरंग की छत कोई ४० फ़ीट ऊँची थी और पानी के लगातार बहते रहने की वजह से बिल्कुल चिकनी और समतल हो

गई थी। आस पास की चट्टानें एक दम काले रंग की थीं और उनमें कहीं-कहीं मुझे किसी धातु की दूर तक फैली बड़ी चौड़ी-चौड़ी चमकीली धारियाँ दिखाई दे रहीं थीं। यह धातु क्या थी यह मुझे नहीं मालूम।

और हमारी डोंगी इस प्रज्वलित अग्नि स्तम्भ की ओर तीर की तेज़ी से उड़ी जा रही थी।

"डोंगी को धारा के दाहिनी ओर हटाइये, लाल साहिब, दाहिनी ओर", कुंवर साहिब ने चिल्ला कर मुझ से कहा और दूसरे ही क्षण मैंने उनको मूर्छित हो- कर डोंगी में गिरते देखा। अल्फान्सो तो पहले ही गौन हो चुका था और उसके बाद अचेत हुए कैप्टिन प्रसाद। वह दोनों मुरदों की तरह डोंगी में पड़े थे, जीवित थे या मर गये थे यह मुझे मालूम नहीं था, केवल मैं और अमरज़ापागस होश में थे। अब हमारी डोंगी अग्नि स्तम्भ से केवल ५० गज़ दूर रह गई थी और मैंने देखा कि लोहे जैसे शरीर वाला जूलू भी मूर्छित होकर आगे की ओर लुढ़क गया। वह भी गया, अब मैं डोंगी में अकेला था।

मुझे साँस लेना दूभर हो गया था, तेज़ गरमी ने मेरे शरीर की सारी नमी को जला कर बिल्कुल सुखा दिया था। अग्नि स्तम्भ के चारों ओर गजों तक पथरीली छत एकदम लाल हो रही थी। हमारी डोंगी जलने लगी। मैंने देखा कि जिन मुर्गाबियों का हमने शिकार किया था उनके पर जलने लगे और गोश्त की जलांद आने लगी; लेकिन मैंने दृढ़ निश्चय किया कि मूर्छित नहीं हूँगा, नहीं हूँगा। मैं जानता था कि मेरे मूर्छित हो जाने पर हमारी डोंगी उस अग्नि स्तम्भ से तीन चार गज़ दूर हो कर निकलेगी और हम सब कुत्ते की मौत मर जायेंगे। मैंने पूरी शक्ति से चप्पू मार कर डोंगी को अग्नि स्तम्भ से जितना दूर ले जा सका ले गया और प्राणपण से अपने को मूर्छित होने से रोके रखा।

मेरा सिर फटा जा रहा था, आँख के गोले निकले पड़ रहे थे और सिर में खून का दबाव इतना बढ़ गया था कि मालूम होता था जैसे हथौड़े चल रहे थे। अंधे हो जाने के डर से मैंने अपनी आँखें कस कर बन्द कर ली थीं तो भी तेज़ प्रकाश था कि पलकों को भेद कर घुसा आ रहा था। अब हम अग्नि स्तम्भ के बिल्कुल सामने पहुंच गये थे, रौरव नरक जैसी तेज़ आवाज़ इस अग्नि स्तम्भ से आ रह थी, आवाज़ से

कानों के परदे फटे जा रहे थे, स्तम्भ के आस पास का पानी तेजी से उबल रहा था। पाँच सैकिण्ड और।

हम अग्नि स्तम्भ से निकल गये थे, लपटों का शोर मुझे अपनी पीछे पीछे सुनाई दे रहा था।

और तब मैं भी मूर्छित हो कर गिर पड़ा। इसके बाद मुझे जो बात याद आती है वह यह है कि मैं अपने मुख पर ठंडी हवा लगती महसूस कर रहा था। बड़ी कठिनाई से मैं अपनी आँखें खोल सका। मैंने ऊपर की ओर नजर डाली दूर बहुत दूर कुछ प्रकाश सा दिखाई दे रहा था परन्तु हमारी डोंगी के चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ था। और तब मुझे एकाएकी सभी कुछ याद आ गया और मैं नजर घुमा कर चारों ओर देखने लगा। हमारी डोंगी अब भी पाताल धारा में बहे चली जा रही थी और उसके पैंदे में पड़े हुए थे मेरे साथी नंगे मादरजात। "क्या वह सब मर गये थे?" यह सवाल मुझे रह रह कर सताने लगा "क्या इस भयानक पाताल धारा में मैं अकेला ही रह गया था? परन्तु मुझे कुछ ठीक-ठीक मालूम नहीं हो सका।

इसके बाद मुझे सख्त प्यास लगी महसूस हुई। मैंने डोंगी के किनारे के ऊपर से झुक कर पानी में हाथ डुबाया, लेकिन चीख़ मार कर फौरन ही बाहर निकाल लिया और इसका भी एक कारण था— मेरे हाथ के ऊपरी भाग की प्रायः सारी खाल जल गई थी। पानी ठंडा था, मैं न जाने कितना पानी पी गया, फिर मैंने अंजुली भर भर कर पानी अपने सारे शरीर पर डालना शुरू किया। मेरी देह पानी को इस तरह चूसने लगी जैसे कड़ी गर्मी की ऋतु के बाद ईंटों की बनी दीवार वर्षा के जल को चूसती ही चली जाती है। परन्तु जहाँ कहीं भी मेरा शरीर जल गया था वहाँ पानी लगने से असह्य पीड़ा होती थी। अब मुझे अपने साथियों का ध्यान आया और कड़ी मुश्किल से घिसट कर मैं उनके पास पहुँचा। मैंने अंजुली भर भर कर ठंडा पानी उन पर डालना शुरू किया और उनको हाथ पाँव चलाते और होश में आते देख कर मेरी प्रसन्नता की हद न रही। सब से पहले अमस्लोपागस चैतन्य हुआ और बाद को अन्य लोग। चैतन्य होते ही वह पानी पर पिल पड़े और न जाने कितना पानी पी गये। तेज़ गरमी से गुज़रने के

बाद अब हमें ठण्ड लगने लगी थी और इसलिये हमने जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी उतार कर फेंके कपड़े पहिन लिये।

हम कपड़े पहन रहे थे कि कैप्टिन प्रसाद ने डोंगी के बायीं ओर वाले भाग की ओर इशारा किया। सारे का सारा भाग गरमी से फ़फद गया था और किसी किसी स्थान पर तो जल कर काला हो गया था। कैप्टिन प्रसाद ने डोंगी की तारीफ़ करते हुए कहा कि यदि हमारी डोंगी सभ्य देशों में बनाई जाने वाली नावों की तरह तख़्तों को जोड़ कर बनाई गई होती तो जुड़े तख़्ते अवश्य ही आग की गरमी से ऐंठ कर मुड़ गये होते और डोंगी में इतना पानी भर गया होता कि वह सब को लिये डूब गई होती। परन्तु सौभाग्य से हमारी डोंगी किसी मुलायम लचकदार लकड़ी वाले वृक्ष के विशाल तने को खोखला करके बनाई गई थी और उसके किनारे तीन इंच और पेंदा कोई चार इंच मोटा था। वह भयानक अग्नि स्तम्भ क्या था इस का हमें कभी पता न लग सका, लेकिन मेरा अनुमान है कि उस पाताल धारा को तह में कोई छिद्र या दरार बनी हुई है जिस में हो कर पृथ्वी के अन्तरतम ज्वाला-मुखीय गर्भ में भरी हुई ज्वलन शील गैस बहुत अधिक मात्रा में बाहर की ओर पूरे ज़ोर से निकलती है। किस प्रकार यह ज्वलनशील गैस चिंगारी लगने से जलने लगी यह बताना असम्भव है—संभव है ऐसा हुआ हो कि इस ज्वलनशील गैस में सहसा कोई विस्फोट हो जाने से उसमें अपने आप ही आग लग गई हो और तब से वह बराबर जल रही हो।

कपड़े पहिन लेने के बाद जब हमारा चित्त कुछ स्वस्थ हुआ तो हम यह पता लगाने की कोशिश करने लगे कि हम थे कहाँ। जैसा मैं पहले ही बता चुका हूँ हमारे सिरों के ऊपर कुछ क्षीण सा प्रकाश हो रहा था और भली भाँति जाँच करने पर हम इस नतीजे पर पहुँचे कि वह प्रकाश मुक्त आकाश से आ रहा था। अब हम पाताल धारा में पृथ्वी के गर्भ के अन्दर नहीं बह रहे थे, अब हम अपनी यात्रा पृथ्वी के तल के नीचे नहीं कर रहे थे, बल्कि अब हमारी डोंगी ऐसे भयानक पहाड़ों के बीच बनी तंग घाटी से जा रही थी जो २०,००० हज़ार फुट से कम ऊँचे नहीं थे। किनारों पर अभेद्य दीवार की तरह खड़े यह पहाड़ इतने

ऊँचे थे कि सिर के ऊपर मुक्त आकाश होने पर भी नदी तल पर घना धुमेलापन छाया हुआ था—यह धुमेलापन था अन्धकार नहीं—वैसा ही धुमेलापन जैसा दिन के समय कमरे के सारे किवाड़ और खिड़कियाँ बन्द कर लेने से हो जाता है। धारा के दोनों ओर गगनचुम्बी पर्वत सीधे खड़े हुए थे—इतने कठोर और भयंकर कि उनकी सीधी खड़ी ऊँचाई की अन्तिम सीमा की अटकल लगाने में सिर चक्कर खाने लगा। जहाँ ऊपर की ओर चोटी के पास पहाड़ समाप्त होते थे वहाँ से खुले आकाश का बहुत ही संकीर्ण और पतला नीला भाग दिखाई दे रहा था। पहाड़ी ढालों पर न कोई वनस्पति थी और न हरियाली ही, सारा पहाड़ एक दम सूखा और नंगा खड़ा हुआ था। कहीं कहीं कोई प्रेत रूपी वृक्ष या लता पता निस्पन्द, गतिहीन बिल्कुल मृतक के समान किसी पत्थर के ढोंके से लटकी दिखाई दे जाती थी। जिस प्रकार भारी वस्तुएँ जल के तल में बैठ जाती हैं उसी प्रकार ऐसा मालूम होता था मानो प्रकाश की तलछट और गाढ़ अन्धकार के रूप मे इस भयानक स्थान की तली मे समा गई हो। सूर्य की प्रकाश किरणें इतने नीचे तक शायद ही आ पाती होंगी, वह तो इन उत्तुंग पर्वतों के ऊपरी भागों तक ही रह जाती होंगी। इसीलिये इस गहरी घाटी में घोर अन्धकार छाया हुआ था।

पानी के लगातार बहते रहने से नदी तट पर छोटे छोटे गोल मटोल पत्थरों का एक पतला सा किनारा बन गया था। ऐसा मालूम पड़ता था जैसे किसी ने अनगिनती प्रस्तरीभूत नारियल वहाँ ला कर डाल दिये थे। यह स्पष्ट था कि जिस समय पाताल धारा में पानी भर कर चलता होगा तो नदी के जल और सहस्त्रों फीट ऊँची खड़ी चट्टान के बीच फैली किनारे की यह पतली धज्जी या तो बिल्कुल ही पानी में डूब जाती होगी या बहुत कम रह जाती होगी। परन्तु इस समय ७-८ गज चौड़ी जगह मौजूद थी। रास्ते के भयानक अनुभवों से थक कर चूर हुए शरीरों को आराम देने और तंग डोंगी मे हाथ पांव न फैला सकने के कारण अकड़े हुए अंगों को फैला कर थकान उतारने के लिए हमने यहीं इस पथरीले किनारे पर उतरने का निश्चय किया। यह स्थान निस्सन्देह बहुत ही भयानक था परन्तु हम ने सोचा कि घन्टे

दो घन्टे के लिए किनारे पर उतर जाने से थकान से चूर चूर होते शरीरों को इधर उधर चल फिर कर कुछ आराम मिल जायेगा और साथ ही डोंगी में रखे सामान को भी दुबारा संभाल कर जमाने और सरि-याने का भी मौक़ा मिलेगा। इसलिये हम ने एक स्थान पर, जो हमें सब से उपयुक्त जान पड़ा, बड़ी कठिनाई से अपनी डोंगी को किनारे पर लगाया और उन गोल गोल पत्थरों वाले किनारे पर गिरते पड़ते उतर गये।

कैप्टिन प्रसाद सब से पहले किनारे पर उतरे। उतरते ही उन्होंने चिल्ला कर कहा, "ओह, ईश्वर की क़सम है, कैसी बेहूदा जगह है। यहाँ कोई रहे तो पागल हो जाये।" और यह कह कर ठट्ठा मार कर हँस पड़े।

पलक मारते ही कोई अज्ञात शक्ति उन की बात को ले उड़ी और उनकी आवाज़ सैकड़ों गुना तेजी से चारों ओर गूंजने लगी। "पागल हो जाये, हा हा हा", "हो जाये हा हा हा," "हा हा हा," एक चोटी से दूसरी पर टकराती हुई यह आवाज चारों ओर गूँजने लगी। रह रह कर यही आवाज़ आ रही थी, "हो जाये, हा हा हा" ऐसा मालूम होता था जैसे कोई अज्ञात शक्तियां अपने अदृश्य होठों से एक दूसरे को पुकार पुकार कर यही बात कह रही हों। चारों ओर से क़हक़हों की आवाजें आ रहीं थीं मानो सारी घाटी में भूत पिशाच बस रहे हों। सारा वातावरण प्रतिध्वनियों से गूँज रहा था। और फिर जिस तरह यह प्रतिध्वनियाँ सहसा शुरू हुई थीं उसी तरह सहसा बन्द भी हो गईं और चारों ओर नीरव शान्ति फैल गई।

"हे भगवान," अल्फान्सो चिल्लाया, डर के मारे उसके प्राण नखों में समा रहे थे और वह केले के पत्ते की तरह थर थर काँप रहा था।

चारों ओर से सहसा, "हे भगवान," "हे भगवान," की आवाज़ आने लगी और क्षण भर में ही सारी घाटी इस शब्द से गूँजने लगी। एक चोटी से दूसरी और दूसरी तीसरी से टकरा कर यह शब्द सारे वातावरण में गूँजने लगा।

"ऐसा मालूम होता है कि यहाँ भूत प्रेत रहते हैं," अमस्लोपागस ने बड़ी शान्ति से बहुत धीमे से कहा, "और रहें भी क्यों न मालिक, यह जगह है भी तो उन्हीं के रहने क़ाबिल।"

मैं ने उसे हल्ले गुल्ले का कारण समझाने की भरसक चेष्टा की और बताया कि यह सब शोर गुल हमारी आवाज़ों के घाटी में गूंजने से हो रहा था, परन्तु बूढ़े ज़ूलू ने मेरी बात का विश्वास नहीं किया।

"गूँज को तो मैं भी पहिचानता हूँ मालिक," उसने कहा "ज़ूलू देश में मेरे कराल के सामने वाले पीपल के पेड़ पर भी कोई एक रहता था और मेरे गाँव का स्याना उससे बातें किया करता था। लेकिन मालिक यहाँ की गूँज के सामने मेरे कराल के सामने वाली तो कुछ भी नहीं थी। नहीं मालिक यह गूँज नहीं है, नहीं मैकुमाज़न यह तो भूत प्रेत हैं, भूत प्रेत। मेरा स्याना सब कुछ जानता था मालिक, वह तो भूतों से बातें तक किया करता था, मुझे नहीं आती बातें करनी।" फिर एक चुटकी नास अपने नथुनों में घुसेड़ कर उसने कहा, "मालिक मुझे मालूम नहीं, भूत आदमी की आवाज़ बिल्कुल वैसी ही नक़ल उतार लेते हैं, पर मालिक मैंने सुना है कि वह अपने आप बातें नहीं कर सकते, और मालिक क्या तू ने कभी भूत देखा है, मैं ने तो कभी नहीं देखा पर मेरा स्याना कहता था कि उनका मुँह बहुत डरावना होता है इसलिये वह अपना मुँह किसी को दिखाते नहीं हैं, नहीं तो लोग डर के मारे मर न जायें।" और यह कह कर अमस्लोपागस चुप हो गया जैसे अब उसे भूत से कोई काम नही था और उन की बातें करना वह अपनी शान के खिलाफ समझता था।

इस साधारण प्राकृतिक व्यापार के कारण हम बहुत धीरे धीरे फुस फुसा कर बातें करने पर मजबूर हो गये—क्योंकि एक एक शब्द को सैकड़ों और सहस्रों बार गूँजते हुए सुनना हमारी सहन शक्ति के बाहर था, हमारी फुसफुसाहट भी तेज भिनभिनाहट की तरह चारों ओर गूँज रही थी और दूर से आती हुई आवाजें ऐसी मालूम होती थीं जैसे कोई बहुत दूर बहुत ही करुण स्वरों में विलाप कर रहा हो। अपनी बात की प्रतिध्वनि सुनना सभी को अच्छा लगता है परन्तु यहाँ गूँजने वाली प्रतिध्वनि इतनी भयानक थी कि हमारे रोंगटे तक खड़े हो गये।

हम किनारे के पत्थरों पर बैठ गये और अपनी अपनी रुचि के अनुसार कोई नहाने लगा, कोई हाथ पैर का मैल रगड़ रगड़ कर छुटाने लगा। और कोई शरीर के फटे, जले जख़्मी भागों को स्वच्छ जल से धोने लगा। वैसे तो हमारी लालटैन में थोड़ा सा तेल मौजूद था परन्तु हम अपने शरीर के जले भागों पर लगा कर उसे ख़त्म नहीं करना चाहते थे, इसलिये हम ने आग पर भुनी जल मुर्ग़ाबी, के पर जिसे हमने पाताल धारा में घुसने से पहिले ही अपने पास रख लिया था, नोच कर उसकी चर्बी को तेल की जगह काम में लिया। इस चरबी से हमारा काम भली प्रकार चल गया। इस के बाद हमने डोंगी में सामान को फिर से लगाया और अन्त में चलने से पहिले कुछ भोजन कर लेने की ठहराई। हम सभी बहुत भूखे थे और न जाने कितनी देर से हम ने कुछ भी नहीं खाया था। हम कितनी देर डोंगी में बेहोश पड़े रहे थे इसका पता नहीं, लेकिन इस समय हमारी घड़ी में दोपहर के बारह बजे थे और हम को टूट कर भूख लगी हुई थी।

इसलिये हम सब घेरा बना कर बैठ गये और मुर्ग़ाबी के ठंडे, सीठे, अलोने मांस को सराह सराह कर खाने लगे। कहते हैं कि भूख में किवाड़ भी पापड़ हो जाते हैं, यहाँ तो ठोस भुना हुआ माँस था, अलोना था तो क्या, था तो खाने योग्य। सिवाय मेरे सभी ने खूब डटकर खाया, क्योंकि कल रात के असहनीय कष्ट और पीड़ा के कारण मेरे शरीर का जोड़ जोड़ दुख रहा था और सिर तो मारे दर्द के फटा जा रहा था। मेरे साथी चुपचाप खा रहे थे, खा क्या रहे थे पेट की भट्ठी में झोंक रहे थे। अन्धकार इतना गहरा था कि न भोजन दीखता था और न हाथ को हाथ सूझता था केवल अभ्यास के कारण ग्रास मुख में जा रहे थे। मगर तो भी हम थे कि दबादब खाये चले जा रहे थे। हालांकि रात की प्रचण्ड गरमी के कारण मांस झुलस कर जल गया था और खाते वक़्त जलांद भी आती थी मगर इस वक़्त वह ही क़ोरमा और बिरयानी मालूम पड़ रहा था और हम थे कि खाये जा रहे थे। यकायक मुझे ऐसी आवाज़ आई जैसे कोई पत्थरों पर धीरे धीरे रेंग कर आगे बढ़ रहा हो, मैंने फ़ौरन ही घूम कर पीछे की ओर देखा। मेरे बिल्कुल पीछे ही एक पत्थर पर काले रंग का एक विशाल केकड़ा बैठा

हुआ था, बड़े से बड़ा केकड़ा जो मैं ने देखा था उस से यह केकड़ा कोई ५-६ गुना बड़ा था।

इस डरावने घिनौने जानवर की बाहर की ओर निकली हुई आँखें चारों ओर घूर घूर कर देख रही थीं, बड़े लम्बे लचकदार फ़ीलर बाल थे और विशालकाय संडासी जैसे पंजे थे। इस घिनौने जीव ने केवल मुझ पर ही कृपा नहीं की हुई थी, अँधेरे में जहाँ तक मुझे दिखाई दिया मैं ने देखा कि पत्थर की प्रत्येक दरार और सूराख में से अनगिनत केकड़े अपनी घिनौनी आँखें चमका रहे थे। बीसियों तो रेंग कर बाहर भी निकल आये थे और सीधे हमारी ओर चले आ रहे थे, शायद हमारे भोजन की सुगन्धि उन तक पहुंच गई थी और वह बिन बुलाये मेहमानों की तरह वह उस सुगन्धि से खिंचे चले आ रहे थे। कोई सूराख या दरार ऐसी नहीं थी जिसमें से यह भयानक घिनौने जीव न निकल कर आ रहे हों। कुछ तो हमारे बिलकुल ही पास आ गये थे। मैं इस अनहोनी विचित्र सी घटना को आँखें फाड़ फाड़ कर ठगा सा देख रहा था और मेरे देखते देखते एक जन्तु ने अपने तेज़ क़ैंची जैसे पंजे को फैला कर मज़े से बैठे हुए कैप्टिन प्रसाद की पीठ में ज़ोर से खींच लिया और कैप्टिन ज़ोर से चीख़ मार कर उछल पड़े और उन की चीख दूनी, चौगुनी, बीस गुनी, सहस्र गुनी तेज़ी से सारी घाटी में गूँजने लगी और इतना शोर मच गया कि हम बंगू बन गये।

उसी समय एक दूसरे विशालकाय जन्तु ने अल्फ़ान्सो की टांग में अपने क़ैंची जैसे पैने पंजे गढ़ा दिये और हाथ से मारने और बार बार हटाने पर भी उसे हटाया न जा सका। इसका नतीजा क्या हुआ होगा आप स्वयं उसका अनुमान कर सकते हैं। चारों ओर हाय विल्ला सी मच गई। जब केकड़े ने अल्फ़ान्सो की टांग किसी तरह छोड़ी ही नहीं तो अमरत्तोपागस ने उस विशालकाय घिनौने जन्तु के कड़े ढांचे को अपने फरसे से कुचल डाला। कुचले जाने पर वह केकड़ा बड़ी दिल दहलाने वाली आवाज़ से रिरियाने और शोर मचाने लगा और उस की आवाज़ हज़ारों गुना तेज़ होकर सारी घाटी में एक कोने से दूसरे कोने तक गूँजने लगी। साथ ही वह अपने मुँह से ढेर सारा बहुत बदबूदार झागदार फेन उगलने लगा और उसके झाग उगलना शुरू

करते ही प्रत्येक सूराख और दरार से सैकड़ों की तादाद में विशालकाय केकड़े निकल पड़े। जो पहले निकल आये थे वह अपने साथी को चुटीला हुआ देखकर उस पर टूट पड़े और जिस तरह दिवाला निकालने वाले व्यक्ति की एक एक चीज़ लेनदार उठा ले जाते हैं उसी तरह इन केकड़ों ने भी अपने चुटील साथी की तिक्का बोटी कर डाली। अपने चिमटियों जैसे पंजों से उन्होंने उसकी बोटी बोटी काट डाली और उन चिथड़े की हुई बोटियों को अपने पंजों से पकड़ पकड़ कर जल्दी जल्दी अपने मुँह में ठूँस लिया।

पत्थर के टुकड़े, चप्पू, फरसा, कुल्हाड़ी, जो भी चीज़ हमारे हाथ पड़ी उसे उठा कर हमने इन घिनौने दैत्यों के खिलाफ़ जिहाद बोल दिया—इन केकड़ों की संख्या प्रति क्षण बड़ी तेजी से बढ़ती ही जा रही थी और उनकी बदबू से दिमाग़ फटने लगा था। अब तो हम धड़ाधड़ उनको मारने और उनके कड़े पंजरों को कुचलने लगे, पर जितनी तेजी से हम उनको कुचल रहे थे उतनी ही तेजी से और दूसरे केकड़े मुँह से बदबूदार झाग निकालते और ज़ोर शोर से चीखते रिरियाते अपने मर और ज़ख्मी साथियों को चीर फाड़ कर तिक्का बोटी कर के निगलते जाते थे। यह फाड़ खाऊ जन्तु इतने पर ही बस नहीं कर रहे थे। मौका मिलते ही वह अपने तेज़ पंजों से हम में से किसी न किसी के चुटकी भर लेते थे—उनकी चुटकी ओफ़ कैसी ग़जब की थी, मालूम पड़ता था जैसे किसी ने दहकता हुआ कोयला रख दिया हो—और मांस नोच ले जाते थे। एक विशालकाय केकड़ा उस मरी हुई मुर्गाबी को, जिसे हम सब खा रहे थे, छाप बैठा और उसे घसीट कर ले चला। पलक झपकते ही बीसियों और केकड़े अपने शिकार पर टूट पड़े और फिर शुरू हुआ मारने काटने, मरोड़ने रिरियाने चीखने, चिल्लाने का घृणोत्पादक भया- नक दृश्य। किस बुरी तरह से यह खूँखार जन्तु एक दूसरे को मार काट रहे थे और मुँह से झाग उगलते अपने ही साथियों की तिक्का बोटी कर के उनका मांस नोच नोच कर निगल रहे थे। ओफ़ कैसा भयानक दृश्य था और सारी घाटी थी कि उनकी चिल्लाहट से गूँज रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे पृथ्वी पर साक्षात नरक ही उतर आया हो।

इस सारे व्यापार को देख कर मेरा सिर घूमने लगा और रह रह कर मतली आने लगी। कुंवर साहिब का जी भी मालिश कर रहा था,

उन्होंने जो कुछ खाया था वह उल्टी होकर निकल गया था—यह भयानक और निर्मम दृश्य मुझे विश्वास है हमें मृत्यु समय तक नहीं भूलेगा। घोर अन्धकार में होने वाली यह चीख पुकार और मारकाट और साथ ही पत्थर जैसे कलेजे को पानी कर देने वाली भयानक गूंज और प्रतिध्वनि मुझे कभी नहीं भूलेगी। आपको यह पढ़ कर आश्चर्य होगा कि इन पैशाचिक और घृणित जन्तुओं का व्यवहार मुझे बहुत कुछ मानव प्रकृति से मिलता जुलता लग रहा था। ऐसा मालूम होता था मानो मनुष्य हृदय की समस्त दुर्वासना, प्रतिहिंसा, पाप, कुवासनायें तथा दुष्कर्मों ने इन कठोर पिंजर वाले केकड़ों का रूप धारण कर लिया था और घोर अधोगति में पड़ी यह मानवी प्रकृति माया मोह के घोर अन्धकार में फँस कर विशुद्ध तामसी रूप में प्रकट हो गई थी। यह केकड़े इतने सयाने, साहसी और दिल गुर्दे वाले थे कि ऐसा मालूम होता था जैसे वह इस सब व्यापार को समझ रहे थे। इसी पृथ्वी पर और इसी जीवन में पुराणों में वर्णित रौरव नरक का दृश्य हमारी आँखों के सामने था।

"लाल साहिब, मैं कहता हूँ, यहाँ से जल्दी से जल्दी भाग चलिये, नहीं तो हम सब पागल हो जायेंगे," कैप्टिन प्रसाद ने मुरदों जैसी स्थिर आँखों से मुझे देखते हुए हकला कर कहा। कैप्टिन की आवाज़ सुन कर मैंने चौंक कर उनकी तरफ़ देखा। मुझे ऐसा मालूम पड़ा जैसे उनकी चेतना शक्ति जवाब देने को हो। और हम सब भी चौंक पड़े और कैप्टिन का संकेत समझ कर हम लश्टम पश्टम भाग कर डोंगी में सवार हो गये और डोंगी को धारा में छोड़ दिया। किनारे के पत्थरों से टिकी होने के कारण बीसियों केकड़े डोंगी पर भी चढ़ने की व्यर्थ कोशिश कर रहे थे और फिसल फिसल कर पानी में गिर जाते थे। जल्दी जल्दी चप्पू मार कर हम बीच धारा में पहुँच गये और अपने पीछे किनारे पर छोड़ गये अपने भोजन का अधिकतर भाग और चीखते, चिल्लाते, काटते, नोचते, झाग उगलते, घृणित बदबूदार जन्तुओं के दल-दल।

धारा में काफी दूर तक बहने के बाद कुंवर साहिब ने यकायक कुछ चौंक कर पूछा, "अब क्या करना होगा लालसाहिब?"

"करना क्या होगा, इसी तरह बहते चले जायेंगे, और हो ही क्या सकता है," और हमारी डोंगी प्रखर धारा में उछलती थपेड़े खाती लगातार आगे की ओर बढ़ी जा रही थी। सारी दुपहरी, शाम और अंधेरा फैल जाने तक हम बहते चले गये। घाटी में इतना अन्धकार छाया हुआ था कि पता लगाना बहुत कठिन था कि कब दिन समाप्त होकर रात शुरू हुई। धारा के दोनों किनारों पर आकाश चुम्बी पर्वत मालाओं के फैले होने की वजह से सूर्य के प्रकाश का पानी के तल तक आना असम्भव सा था और इस कारण घाटी में चौबीसों घन्टे स्थाई रूप से अन्धकार छाया रहता था। इसलिये कब दिन समाप्त होकर रात शुरू हुई उसका पता लगाना नामुमकिन था। दिन और रात में प्राय: कोई अन्तर नहीं था, केवल तारा गणों के दूर आकाश में दिखाई देने लगने से रात हो जाने का अनुमान किया जा सकता था। समय का कोई ज्ञान न होने के कारण हम चुपचाप बहते चले जा रहे थे कि कैप्टिन प्रसाद ने दूर आकाश में चमकते एक क्षीण तारे को दिखाया और तब हमें पता लगा कि दिन समाप्त होकर रात शुरू हो गई थी। क्योंकि और कोई काम नहीं था इसलिये हम चुपचाप डोंगी में पड़े उस तारे को टकटकी लगा कर देखते रहे। एकाएकी वह तारा हमारी दृष्टि से ओझल हो गया, अन्धकार और गहरा हो गया और पानी की छपछपाहट की धीमी गूँज सुनाई देने लगी।

"फिर पाताल धारा में," मैंने बहुत दुखित स्वर से कहा, और लालटैन उठाकर चारों ओर देखने लगा। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि हमारी डोंगी फिर पाताल धारा में जा रही थी। लालटैन के क्षीण प्रकाश में हमें इस भूगर्भ मार्ग के छत की रूप रेखा साफ़ दिखाई दे रही थी। गहरी घाटी खत्म हो कर फिर सुरंग मार्ग शुरू हो गया था। और फिर शुरू हुई डरावनी काल रात्रि। इस डरावनी काल रात्रि का हाल लिखना बेकार होगा। सारी रात कोई खास बात नहीं हुई, सिर्फ एक बार हमारी डोंगी बीच धारा में निकली एक चट्टान से टकराई और पलटते पलटते बची। कड़ी कठिनाई से हम डोंगी को डूबने से बचा सके।

और इस तरह घण्टे पर घण्टा बीतने लगा। रात के कोई तीन बजे होंगे, केप्टिन प्रसाद, कुंवर साहिब और अल्फान्सो थकान से चूर हो कर सो रहे थे, असस्तोपागस डोंगी के अगले भाग में बैठा लग्गी मार रहा था और मैं पतवार सम्भाले हुए था कि मैंने अनुभव किया कि हमारी डोंगी के बहने की रफ्तार बहुत बढ़ गई थी और वह तीर की तेजी से जा रही थी। यकायक मैंने असस्तोपागस को खुशी से चिल्लाते सुना और दूसरे ही क्षण वृक्षों की शाखों और झाड़ियों के मुड़ने टूटने की आवाजें आने लगीं और मुझे मालूम हुआ कि हमारी डोंगी झाड़ियों और लता वृक्षों को चीरती हुई जा रही थी। एक क्षण बाद ही मुझे अपने मुख पर ठण्डी हवा के झकोरे लगते मालूम पड़ने लगे और मैं समझ गया कि हमारी डोंगी पाताल धारा से निकल आई थी और अब खुले जल पर तैर रही थी। परन्तु अन्धकार इतना गहरा था कि गज़ भर की दूरी की चीज़ भी दिखाई नहीं पड़ती थी, चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ था, हाथ को हाथ तक नहीं सूझता था, परन्तु इस अन्धकार में और पाताल धारा के अन्धकार में बहुत फर्क था। यह अन्धकार ऐसा था जैसा सूर्य निकलने से पहले होता है। घोर अन्धकार छाया रहने पर भी मेरा दिल बल्लियां उछलने लगा। अन्त में हम उस भयानक पाताल धारा से निकल ही आये थे और अब हमारा भाग्य हमें चाहे जहां ले जाता परन्तु तो भी हम अपनी ज़िन्दा क़ब्र से निकल कर मुक्त आकाश के नीचे खुले में आ गये थे। अब कोई काम नहीं था इसलिये मैं स्वच्छ मुक्त हवा में लम्बी लम्बी सांस ले कर बड़ी उत्सुकता से सूर्य के निकलने की प्रतीक्षा करने लगा।

अध्याय ११

कुटिल नगर

एक घन्टा मैंने और इन्तजार किया, अमरलोपागस भी सो गया था, बहुत लंबी प्रतीक्षा के बाद पूर्व दिशा में लाली होने लगी और बहुत धीमा प्रकाश चारों ओर फैलने लगा। उगते हुए सूर्य के प्रकाश मे झील पर छाया हुआ कुहरा धीरे धीरे गायब होने लगा। धुंधली सी लाली गहरी लाली में बदल गई और देखते ही देखते ऐसा लगने लगा जैसे सारी पूर्व दिशा में आग लग रही हो। पूर्वीय क्षितिज पर प्रकाश किरणे फूट फूट कर उज्ज्वल आलोक फैलाने लगी और घने कुहरे को फाड़ कर भगवान सूर्य का रथ आकाश में चढ़ने लगा। पहले पर्वतों की चोटियाँ रंगीन होने लगीं फिर धीरे धीरे चारो दिशाओं में रोशनी फैल गई और कुछ ही क्षणो बाद घने कुहरे के परदे को चीर कर भुवन भास्कर का उज्ज्वल रथ दिखाई देने लगा। दिन निकल आया था।

अभी गहरे नीले आकाश को छोड़ कर और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। ताजी धुनकी हुई रुई के गालों की तरह घना सपेद कुहरा पानी की सतह पर छाया हुआ था। धीरे धीरे सूर्य की किरणों ने इस कुहरे को आत्मसात करना शुरू किया और कुहरे के हटने पर मैंने देखा कि हमारी डोंगी एक विशाल जल राशि पर तैर रही थी, इतनी विशाल जिसका कोई ओर छोर दिखाई नहीं देता था। पीछे की ओर कोई ८—१० मील दूर तक जहाँ दिखाई देता था वह सीधे खड़े पहाड़ दिखाई पड़ रहे थे जो इस झील की उस ओर की सीमा बनाते थे और जहाँ तक मेरा ख्याल है इन्हीं पहाड़ों में किसी स्थान पर वह प्रवेश द्वार था जिसके द्वारा पाताल धारा का जल इस विशाल जल राशि में आकर मिलता था। बाद में खोज करने पर मुझे मालूम हुआ कि वास्तव में ऐसा ही था। इस रहस्य पूर्ण पाताल धारा से आने वाली जल धारा

की तेजी का अन्दाजा इसी बात से हो सकता था कि इतनी दूर पर भी उसका प्रभाव दिखाई पड़ रहा था और हमारी डोंगी उसी प्रवाह में बही चली जा रही थी। इस रहस्य पूर्ण धारा के प्रभाव की एक और निशानी अमस्लोपागस ने- जो अभी नींद से जागा था, मुझे दिखाई। इस निशानी को देख कर जो निस्संदेह बहुत ही भयानक और बीभत्स थी, हम दोनों ही सिहर उठे।

पानी पर कोई सफ़ेद सी चीज़ तैरती देख कर अमस्लोपागस ने मेरा ध्यान उसकी ओर आकर्षित कराया और दो चार चप्पू जोर जोर से मार कर हम उस तैरती हुई सफ़ेद वस्तु के पास पहुँच गये। पास पहुँचने पर हमने देखा कि तैरती हुई वह सफेद वस्तु किसी मनुष्य का शव था जो पट नीचे की ओर मुँह किये पानी में तैर रहा था। एक तो स्वयं यह बात ही बहुत डरावनी थी लेकिन जब अमस्लोपागस ने चप्पू से उस शव को पलटा तो उसका मुख देख कर मेरे डर और आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। शव का सारा मुँह पिचक गया था जैसे किसी ने ज़ोर से अन्दर की ओर दबा दिया हो—पर शव की पिचकी मुखाकृति में मुझे शक्ल दिखाई दी किस की—आप बता सकते हैं किस की? यह शव हमारे उस अभागे अस्करी का था जो आज से दो दिन पहले हमारे देखते देखते पाताल धारा के तेज़ बहाव में खिंच गया था। इस विचित्र व्यापार को देख कर मैं डर गया। मेरा ख़्याल था कि हम उस अभागे अस्करी को सदैव के लिये खो चुके थे लेकिन वह तो धारा के साथ साथ बह कर हमारे साथ ही चला आ रहा था और हमारे साथ ही यात्रा की अन्तिम मन्जिल तक पहुँच गया था। उस की शक्ल बहुत भयानक हो गई थी, ऐसा मालूम होता था कि वह शव आग के धधकते मीनार से छू गया था। एक हाथ जल कर कोयला हो गया था और बाल तो सारे जल गये थे। मुँह आँख कान नाक सब कुछ अन्दर को धँस गया था लेकिन अब भी उसके मुख पर भय और निराशा साफ दिखाई पड़ती थी, ऐसा मालूम पड़ता था जैसे पाताल धारा में खिंचते समय उसे अपनी मृत्यु सामने खड़ी दिखाई दी हो और उसने अंतिम श्वास तक उस से जूझने की चेष्टा की हो और फिर भी पार न बसाते देख कर असीम निराशा से अपने आप को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया

हो। भय मिश्रित निराशा उसके मुख पर स्पष्ट लिखी हुई थी।

इस दृष्य को देख कर मेरी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और भूखे थके और परेशान होने के कारण मुझे चक्कर आ गया और मेरा जी मतलाने लगा। मेरे देखते ही देखते बिना किसी प्रकार की पूर्व सूचना दिये वह शव एकाएकी पानी में डूबने लगा जैसे वह अपना पूर्व निश्चित कार्य पूरा करके जैसे चुपचाप आया था वैसे ही चुपचाप चला भी गया। शव के डूबने का कारण निस्संदेह यह था कि चित पलट देने से उसके पेट में भरी गैस निकल गई थी और इसलिये भारी हो जाने से वह डूब गया। झील के पारदर्शक जल मे शव धीरे धीरे नीचे की ओर बैठता गया, कोई ५० गज तक तो वह मुझे दिखाई देता रहा और फिर जल के भीतर से उठ कर ऊपर की ओर आने वाले छोटे छोटे बुलबुलों की क़तारों के अतिरिक्त उसका कोई चिन्ह नही रहा। मैंने खुल कर साँस ली। धीरे धीरे इन बुलबुलों का उठना भी बन्द हो गया और हमारा आदमी हमारी आखों से ओझल हो गया। अमस्लोपागस मेरे पास खड़ा चुपचाप उस शव को डूबते देख रहा था, वह कुछ सोच रहा था यह स्पष्ट था।

"इसने हमारा पीछा क्यों किया", उस ने जैसे अपने आप से ही सवाल किया, "मैकुमाज़न, तेरे और मेरे लिए यह बहुत बुरा शगुन है मालिक", और यह कह कर वह ठट्ठा मार कर हंस पड़ा। उसका हंसना मुझे अखर गया क्योंकि मैं समझ गया था कि उसका इशारा किस ओर था। मृत्यु का विचार सभी को बुरा लगता है, मृत्यु को सिरहाने खड़ा देख कर-कमज़ोर से कमज़ोर और कायर से कायर मनुष्य भी एक बार उठ कर भाग जाने की चेष्टा करता है, फिर मैं तो बिल्कुल स्वस्थ था। इसलिये मैंने बहुत क्रोधित नजरों से उसे घूर कर देखा। मेरा विचार है कि मनुष्यों को ऐसे विचार अपने तक ही रखने चाहिये और सभ्यता और सुरुचिता के नाते दूसरों के सामने उनको प्रकट नहीं करना चाहिये। मुझे उन व्यक्तियों से घृणा है जो भविष्य के सच्चे झूठे काल्पनिक डर दिखा दिखा कर दूसरों को व्यर्थ में ही डराते रहते हैं। मुझे ऐसे आदमियों से सख्त नफरत है।

और भरपेट भोजन करने के बाद अपने अपने पाइप सुलगा कर आने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा करने लगे।

एक घण्टे तक हम इसी तरह चलते चले गये कि एकाएकी कैप्टिन प्रसाद ने जो चारों ओर के क्षितिज को लगातार अपनी दूरबीन से देख रहे थे बड़ी खुशी से चिल्ला कर हमें सूचना दी कि उनको जमीन का किनारा दिखाई दे रहा था। साथ ही झील के पानी के बदले हुए रंग को देख कर हमने अनुमान किया कि हम किसी नदी के मुख के पास पहुंच रहे थे। दो चार मिनट बाद ही हम को बहुत दूर क्षितिज पर एक विशाल सुनहरी गुम्बद, ताज महल के श्वेत गुम्बद से भी बड़ा, चारों ओर छाये घने कुहरे की श्वेत चादर को भेद कर ऊपर आकाश में उठा दिखाई दिया। अभी हम सोच ही रहे थे कि वह वास्तव में कोई चीज़ थी या केवल हमारी आँखों का ही भ्रम था कि कैप्टन प्रसाद ने, जो अपनी दूरबीन की सहायता से लगातार उस ओर देख रहे थे, इससे भी अधिक आश्चर्य जनक खोज करके हमें यह विचित्र खबर सुनाई कि एक पाल दार डोंगी सीधी हमारी ओर आ रही थी।

इस आश्चर्य जनक खबर को सुन कर, जो थोड़ी ही देर बाद अपने आप ही सच हो गई क्योंकि डोंगी के पास आ जाने से हम सब उसे बिना दूरबीन की सहायता से ही देख सकते थे, हम सब में हलचल सी मच गई। उस अज्ञात देश के अज्ञात देश वासियों को पाल दार डोंगी चलाते देख कर सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता था कि उन में कुछ हद तक सभ्यता और संस्कृति मौजूद थी। दो चार मिनट बाद ही यह स्पष्ट हो गया कि हमारी ओर तेजी से आने वाली डोंगी के आरोही या आरोहियों ने हमें देख लिया था। दो चार क्षण तो डोंगी वाले किंकर्तव्यविमूढ ठगे से रह गये फिर डोंगी को घुमा कर बहुत तेज़ी से हमारी ओर आने लगे। दस मिनट में ही वह डोंगी हम से कोई १०० गज दूर तक आ गई और तब हमने देखा कि वह एक छोटी सी सुन्दर नाव थी—तने को खोखला कर के बनाई हुई डोंगी नहीं थी—और सभ्य देशों के ढंग पर तख्तों को जोड़ कर बनाई हुई थी और अपने आकार की अपेक्षा बहुत बड़ा पाल ताने हुए थी। लेकिन फ़ौरन ही हमारा

ध्यान नाव से हट कर उसमें सवार व्यक्तियों की ओर गया, उसमें एक पुरुष और एक स्त्री बैठे थे और दोनों हम जैसे ही श्वेतांग थे।

हम एक दूसरे का आश्चर्य से मुह ताकने लगे, मुझे तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं आ रहा था। मैं सोचता था कि कहीं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा था, परन्तु नहीं, मैं स्वप्न नहीं देख रहा था, मैं अच्छी तरह जाग रहा था। यद्यपि उन दोनों का रंग बिल्कुल मर्मर श्वेत नहीं था परन्तु वह निश्चय रूप से किसी श्वेतांग जाति से थे काली जाति से नहीं थे। उनका खुलता गेहुंआ रंग वैसा ही का जैसा मध्य पंजाब के निवासियों का साधारणतया होता है। यह बात इतनी स्पष्ट थी कि इस मे सन्देह की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। तो क्या हमने उस अज्ञात श्वेतांग जाति के सम्बन्ध में जो-जो कहानियां सुनी थीं वह ठीक थीं और ऐसे आश्चर्यजनक और रहस्यमय घटना चक्र में पड़ कर हमने अन्त में इस अज्ञात श्वेतांग जाति का पता लगा ही लिया था? अपनी इस सफलता पर मेरा जी चाहता था कि उछलूँ कूदूँ और मूसलों ढ़ोल बजाऊं, लेकिन यह बात जरा बेढंगी सी होती, इसलिये हमने अपनी इस साहसिक यात्रा में अचानक ही सफलता प्राप्त कर लेने पर बड़े जोश से एक दूसरे से शेकहैण्ड किया और उपयुक्त शब्दों में बधाइयों की बौछार कर दी। अपने सारे जीवन भर मैं इस महाद्वीप के आन्तरिक भाग में इन ऊबड़ खाबड़ पहाड़ों के बीच रहने वाली किसी अज्ञात रहस्यमयी श्वेतांग जाति की कहानियां सुनता आया था और उन कहानियों की सत्यता की खोज करने को लालायित रहा था और अब मैंने अपने जीवन के लक्ष्य को पा लिया था, जिस वस्तु की मुझे खोज थी वह मैंने पा ली थी। मैंने उस अज्ञात श्वेत जाति को अपनी आँखों से और इसी जन्म मे देख लिया था।

नाव में बैठा मनुष्य काफी तगड़ा और स्वस्थ था, उस के शरीर की गठन यदि आदर्श नहीं तो भी सुन्दर अवश्य थी, उसके लम्बे सीधे काले बाल, किताबी चेहरा, सुडौल मुड़ी हुई नाक, ऊँचा मस्तक और सुन्दर आकृति उसके उच्च वंशीय होने को बताती थीं। वह भूरे रंग का ढीला ढाला बिना आस्तीनों का कुरते नुमा झंगोला पहने हुए था और घुटनों से नीचे उसी रंग और शायद उसी वस्त्र का तहमद सा

बाँधे हुए था। उसके पांव नंगे थे, जूता या चप्पल उसके पॉव में नहीं थे। दाहिनी बॉह और बांये पैर में वह किसी चमकीली धातु के कड़े पहने हुए था, मेरे ख्याल से वह सुवर्ण के बने हुए थे। उसके साथ वाली स्त्री के मुख की गठन बहुत सुन्दर और मनोमोहक थी, ऑखों में सलज्ज उत्सुकता थी, बड़ी बड़ी कानों को छूने वाली आँखें, गिलाफी पलकें—उसकी ऑखे वस्तव में बहुत सुन्दर थीं—सुग्गे की सी नासिका, छोटी सी ठोड़ी और छोटा सा मुँह, लम्बे कमर तक लटकते सुनहरी पिंगल वर्ण घुँघराले केश, वह स्त्री वास्तव में सुन्दरी थी। उसके वस्त्र भी उसी कपड़े के थे जिसके उसके साथी ने पहन रखे थे। उस स्त्री ने कोई ५ गज़ लम्बी और १॥ गज़ चौड़ी साड़ी शुद्ध भारतीय स्टाइल में बड़ी सुघड़ता से पहिन रखी थी। साड़ी उसने उल्टे पल्ले की बांध रखी थी, और बड़े मनोमोहक अन्दाज से उसे अपने शरीर के चारों ओर लपेट कर उसका पल्ला बॉयें कन्धे पर डाल रखा था। साड़ी का पल्लू रेशमी मालूम होता था और बहुत सुन्दर था, और जैसे हमको बाद में मालूम हुआ इस पल्लू का रंग पहनने वाली के सामजिक स्तर को भी बताता था। सीधीं बॉह कन्धे तक खुली हुई थी, साड़ी के नीचे उसने नीची काट के गले की बिना आस्तीनों वाली जाकेट पहिन रखी थी जिस में होकर उसके पुष्ट उन्नत उरोज और वक्षस्थल का थोड़ा सा भाग दिखाई दे रहा था। उसकी पोशाक वास्तव में बहुत मनोहर थी और बड़ी सुघड़ाई से पहनी गई थी और इसलिये उसकी सुन्दरता को चार चॉद लग गये थे। जिस सुघड़ाई और चतुराई से सभ्रांत भारतीय परिवारों की कुल ललनायें वस्त्राभूषण पहनती और शृंगार करती हैं उसी तरह का शृंगार उस स्त्री ने भी कर रखा था। अपने वस्त्राभूषण तथा शृंगार से वह बिल्कुल किसी सभ्रांत भारतीय परिवार की महिला मालूम होती थी। उसकी वेशभूषा और साड़ी बॉधने का तरीका एक दम विशुद्ध भारतीय था और सहसा उस में और भारतीय कुल ललना में कोई विशेष फर्क नहीं मालूम पड़ता था। उसे देख कर मुझे फैशनेबिल वस्त्र पहिने त्रिवेणी पर या नैनीताल की झील में बोटिंग या जल विहार करती हुई भारतीय महिलाओं की याद आने लगी। किसी स्त्री के लिए और और विशेष कर जब वह सुन्दरी और युवती हो साड़ी से उत्तम और मनोमोहक और कोई दूसरी पोशाक हो ही नहीं सकती। कैप्टिन प्रसाद

भी जो स्त्री सौंदर्य के अच्छे पारखी माने जाते हैं उस स्त्री की सुन्दरता और मनोमोहक वेशभूषा को देख कर ठगे से रह गये, और मुझे तो ऐसा लगने लगा जैसे मैं अज्ञात जाति की अज्ञान कुल शीला रमणी को नहीं देख रहा था बल्कि विशुद्ध भारतीय सम्भ्रांत परिवार की किसी सर्व गुण शीला महिला को देख रहा था।

इस बीच यह स्पष्ट था कि जितना हम उन दोनों को देख कर आश्चर्य चकित हो गये थे उस से भी कहीं अधिक वह हमें देख कर हो रहे थे। नाव में बैठा पुरुष भय और आश्चर्य के समुद्र में डूब उतरा रहा था। थोड़ी देर तक तो वह हमारी डोंगी के इधर उधर दूर ही दूर मंडराता रहा परन्तु अपनी नाव को हमारी डोंगी के पास लाया नहीं। अन्त में साहस बांध कर वह अपनी नाव को हमारी डोंगी के इतने पास ले आया कि हम उस की आवाज सुन सकते थे और वहाँ से उसने एक विचित्र भाषा में हम से कुछ कहा। यद्यपि हम उसकी कही बात का एक शब्द भी नहीं समझ सके तो भी उसकी भाषा सुनने में मधुर कोमल और कर्ण प्रिय लगी। उसके बदले में हमने अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, फ्रेंच, संस्कृत, जूलू, डच, सिसूतू, कुकुआना और कई अन्य अफ्रीकन भाषाओं में जिन्हे मै जानता था उसको उत्तर दिया, लेकिन हमारा अज्ञात मित्र शायद इन में से किसी भी भाषा को नहीं समझता था और हमारी भाषा न समझ सकने के कारण वह हड़बड़ा सा गया। इस बीच उसके साथ वाली स्त्री हम लोगों का सूक्ष्म निरीक्षण कर रही थी और उसकी उत्सुकता के पलटे में कैप्टिन प्रसाद अपने चश्मे में से उसे लगातार घूरे जा रहे थे, उस स्त्री की मुख मुद्रा से ऐसा मालूम होता था जैसे बुरा लगने के स्थान पर उसे इस घूरा घूरी में मजा आ रहा था।

और इस घूरा घारी का परिणाम यह हुआ कि अन्त में उस पुरुष ने, जो शायद हमारी बातचीत का कुछ भी सिर पैर न समझ पाया था, एकाएक अपनी नाव को घुमाया और तेजी से उसने किनारे की ओर दौड़ लगा दी। उसकी छोटी सी सुन्दर नाव पानी पर इस तरह तैरती जा रही थी जैसे राजहंस अपने पंखों को फैला कर जल को छूता हुआ उड़ता चला जाता है। हमारे सामने से होकर गुजरते समय नाव

में बैठा पुरुष तो नाव के पाल को संभालने में लग गया और इस अवसर का लाभ उठा कर कैप्टिन प्रसाद ने उस स्त्री को दिखा कर बड़ी फुर्ती से अपने हाथ को चूम लिया। कैप्टिन की इस बेहूदा हरकत को देख कर मुझे डर के मारे पसीना आ गया। उन की यह हरकत न सिर्फ नैतिक सिद्धान्तों के ही विरुद्ध थी बल्कि साथ ही मुझे डर लगा कि कहीं वह स्त्री बुरा न मान गई हो। परन्तु मुझे यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि उस स्त्री ने इस हरकत का तनिक भी बुरा नहीं माना था, क्योंकि उसने उस पुरुष की ओर घूम कर देखा और अपने साथी को, जो शायद उसका पति था या भाई था या कोई और सम्बन्धी था, काम में लगा देख कर उसने भी अपने साथी की आंख बचा कर अपने हाथ को चूम लिया।

"वाह वा," मैं ने ज़ोर से कहा, "अन्त में हम ने ऐसी भाषा खोज ही निकाली जिसे यहाँ के निवासी अच्छी तरह समझते हैं।"

"अगर ऐसी बात है लाल साहिब, तो कैप्टिन प्रसाद हमारे दुभाषिये का काम खूब कर सकते हैं", कुंवर साहब ने हँस कर कहा।

कैप्टिन प्रसाद इस बात को भली प्रकार जानते हैं कि उनकी ऐसी हरकतें और ओछापन मुझे एक आँख नहीं भाता है और इसलिये मेरी नाराज़गी दूर करने के लिए उन्होंने बात पलट कर और आवश्यक बातें छेड़ दीं। "मुझे विश्वास है", मैंने कहा, "कि जल्दी ही यह आदमी अपने ढेर सारे साथियों को साथ लिये फिर आ धमकेगा, इस लिये यह अच्छा होगा कि हम इस बात पर खूब अच्छी तरह सोच विचार कर लें कि हमें किस तरह उनका स्वागत-करना है।"

"लेकिन मेरे सामने तो सवाल यह है कि वह हमारी अगुवानी किस तरह करेंगे", कुंवर साहिब ने कहा।

कैप्टिन ने कुछ नहीं कहा बल्कि सामान के ढेर के नीचे दबे टीन के एक छोटे से चौकोर बक्स को, जो सारी यात्रा भर हमारे साथ रहा था, ढूंढ ढाँढ कर बाहर निकाला। टीन के इस बक्स को बराबर साथ रखने और ढो कर ले चलने पर हम दोनों ने कैप्टिन को बीसियों बार टोका भी था और इस टोका टाकी की वजह यह थी कि बेडौल और भद्दे होने के कारण इस बक्स को ढो कर ले जाना हम दोनों को बहुत बुरा

लगता था। साथ ही हमारे बार बार पूछने पर भी कैप्टिन ने कभी हमें यह नहीं बताया था कि उस बक्स में था क्या। हमारी नाराज़गी के बावजूद भी वह उस बक्स को हमेशा अपने साथ रखने की ज़िद करते रहे थे और सिर्फ यह कह कर, कि कभी किसी अवसर पर उसमें रखी चीजे हमारे बहुत काम आयेंगी, हमें चुप कर दिया करते थे।

"कैप्टिन, तुम्हारी मंशा क्या है तुम करना क्या चाहते हो ?" कुंवर साहिब ने कैप्टिन की इस हरकत से कुछ ऊबते हुए पूछा।

"क्यों बात क्या है, कपड़े पहनना चाहते हैं, क्या आप यह चाहते हैं कि मैं इस अज्ञात जाति के आदमियों के सामने इस फटे पुराने चीथड़ों को पहिने रहूँ। क्या मंशा है आपकी ?" और यह कह कर उन्होंने अपने पहिने हुए कपड़ों की ओर इशारा किया जो पुराने होने पर भी कैप्टिन की अन्य वस्तुओं की तरह बिल्कुल साफ़ और स्वच्छ थे और हर फटे स्थान को बड़ी सफ़ाई से सी दिया गया था।

हमने और कुछ नहीं कहा बल्कि साँस रोक कर बड़ी उत्सुकता से चुपचाप कैप्टिन की कार्यवाही देखते रहे। पहिले तो कैप्टिन ने अल्फान्सो से, जो ऐसे कामों में उस्ताद था, अपनी डाढ़ी मूछों और सिर के बालों को फैशनेबिल ढंग से कटवा कर सुडौल कराया। मेरा ख़्याल है कि अगर थोड़ा सा गर्म पानी और साबुन होता तो जरूर ही डाढ़ी को ग़ायब करा कर हजामत बनवा लेते। मगर जिस डिब्बे में हमारा शेविंग का सामान था वह पाताल धारा में यात्रा करते समय अल्फान्सो की असावधानी से पानी में गिर पड़ा था और इसलिये हम सभी की डाढ़ी मूछें बढ़ी हुई थीं। इस कारण उस्तरा न होने से वह शेव न करा सके। बाल छटवाने के बाद उन्होंने डोंगी के पाल को उतार कर हम सब को झील के स्वच्छ जल में स्नान करने की सलाह दी। हम फौरन ही राजी हो गये और झील के स्वच्छ जल में हमने खूब मल-मल कर स्नान किया। हमारा ठंडे पानी में तैर कर स्नान करना अल्फान्सों को बहुत अजीब सा लगा और वह हाथ मटका मटका कर अपनी लच्छेदार भाषा में बार बार कहने लगा कि हिन्दुस्तानी बहुत विचित्र होते हैं। जूलू जाति के जन्मजात के स्वभावानुसार अपने शरीर को धो माँज कर बिल्कुल साफ रखने वाले अमस्लोपागस को भी झील के पानी

में मछलियों की तरह इधर-उधर तैरने फिरने में कोई मज़ा नहीं आता था, इसलिये उसने नहाया तो नहीं बल्कि डोंगी में चुपचाप बैठा हमारी उछल कूद देखता रहा।

ठण्डे पानी में नहा कर हमारे शरीर में फुर्ती आ गई और हम अपने को कुछ बदला हूआ सा महसूस करने लगे। खूब मल मल कर नहाने के बाद हमने धूप में बैठ कर अपने शरीर को सुखाया। फिर कैप्टिन प्रसाद ने अपने उस रहस्यमय बक्स को खोल कर उसमें से अण्डा जैसी सफेद बिल्कुल साफ धुली हुई क़मीज़ बाहर निकाली और फिर भूरे पैकिंग कागज़ मे लिपटे कुछ कपड़े निकाले। भूरे पैकिंग काग़ज़ के अन्दर था सफ़ेद मौमी काग़ज़ और उसके अन्दर निकली सफेद पन्नी। जब कैप्टिन इन काग़ज़ों को खोल रहे थे तो हम साँस रोक कर बड़ी उत्सुकता से यह सोच रहे थे कि अन्दर न जाने क्या निकलेगा। बहुत होशियारी से कैप्टिन काग़ज़ का एक एक पर्त खोलते गये और बड़ी सफ़ाई से उनकी तह करके एक ओर रखते गये, पन्नी के हटने पर हमने देखा कि उस बन्डल में सुनहरी झब्बों, फ़ीते, सुनहरी डोरी और चमकीले बटनों समेत रॉयल नेवी के कैप्टिन की पूरी यूनीफ़ार्म बहुत सफाई के साथ तह की हुई रखी थी। यूनीफ़ार्म के साथ वाली चीजें, जैसे ड्रेस के साथ वाली तलवार, झब्बेदार टोप, चमकीले पेटैन्ट लैदर के बूट यह सभी चीजे उस बन्डल में मौजूद थीं। मै और कुंवर साहिब दोनों आश्चर्य से मुँह फाड़ कर रह गये।

"क्या, क्या तुम इस यूनीफार्म को पहिनोगे?" मैंने ज़रा आश्चर्य से पूछा।

"क्यों नहीं", उन्होंने बड़ी संजीदगी से जवाब दिया, "लाल साहिब यह तो आप भी शायद जानते हैं कि प्रथम दर्शन का असर स्थाई होता है और मेरे ख्याल से वहाँ स्त्रियाँ भी होंगी, इसलिये कम से कम अगर और टीमटाम न हो तो भी कपड़े तो ढंग के पहिन ही लेने चाहियें।"

अब तो हम लाजवाब हो गये और हमें रह रह कर याद आने लगा कि हमारे बार बार मना करने पर भी किस तरह ज़िद करके हमारी नाराज़गी की ज़रा भी परवाह न करके कैप्टिन ने इस बक्स को हमेशा अपने साथ ही रखा था और उसमें बन्द चीज़ों को हवा

भी हमें नहीं लगने दी थी। मैंने कैप्टिन को इस बारे में सिर्फ एक सलाह दी कि वह यूनीफ़ार्म के नीचे फ़िल्लम पहिन ले। पहिले तो यह कह कर, कि नीचे फ़िल्लम पहिन लेने से यूनीफार्म की क्रीज़ बिगड़ जायेगी, मेरी सलाह मानने से इन्कार कर दिया फिर कुछ सोच समझ कर राजी हो गये। कैप्टिन को इस प्रकार चोला बदलते देख कर अमस्लोपागस के आश्चर्य की कोई हद न रही और अल्फ़ान्सो तो खुशी के मारे नाचने लगा। जिस समय कैप्टिन प्रसाद अपनी पूरी यूनीफ़ार्म पहिन कर और छाती पर स्टार और बिल्ले लगा कर रायल नेवी के कैप्टिन की पूरी शान शौकत से खड़े हुए तो बूढ़ा अमस्ज़ोपागस अपने मनोभावों को न छुपा सका। उसकी आँखें आश्चर्य और कुतूहल से फटी जा रही थी और अपनी उत्सुकता को और अधिक न दबा सकने के कारण वह चिल्ला कर बोल उठा, "ओ बोगवन, ओ बौगवन, मैं तो अभी तक तुझे ठिंगना बदसूरत सा आदमी समझता था—ब्याने वाली गाय जैसा मोटा और थलथल, पर आज तो तू अपने रंगीन परों को फैलाये नीलकंठ जैसा सुन्दर लग रहा है। बौगवन आज तो तुझे देख कर मेरी आँखें जुड़ा गईं, तू इतना सुन्दर है यह तो मैने कभी सोचा भी नहीं था।"

अगर कैप्टिन को कोई मोटा कह देता था तो उन को बुरा लग जाता था और अब तो सच यह है कि उनको मोटा कहना सरासर ग़लती थी, क्योंकि इतने दिनों के कड़े परिश्रम से उनकी तोंद की मोटाई पूरे तीन इंच कम हो गई थी। इस समय अमस्लोपागस के मुँह से अपनी तारीफ़ सुन कर कैप्टिन फूले नहीं समा रहे थे, और अल्फ़ान्सो वह तो इस ठाट दार और सुन्दर चमकीली यूनीफ़ार्म को देख कर बुलबुल हो रहा था।

"ओह हुजूर, हमारी जान क़सम, आप तो पूरे सिपाही मालूम होते हैं हुजूर। किनारे पर हम को देखने आने वाली लुगाईयाँ भी हुजूर को पक्का सिपाही समझेंगी। हुजूर तो कर्नेल मालूम होते हैं कर्नेल। हुजूर को देख कर हमें अपने दादा जान के शानदार कारनामे...... ।"

और मैंने अल्फ़ान्सो को टोक कर चुप कर दिया।

यह देख कर और अनुभव करके कि कपड़े बदल लेने से कैप्टिन की शक्ल कितनी बदल गई थी और वह कितने शानदार लग रहे थे हम दोनों ने भी अपने अपने कपड़े बदल डाले। मेरे और कुंवर साहिब के पास शिकारी जाकेट और जोधपुरी ब्रीचेज़ का एक एक पूरा सूट था। नीचे फ़िज़म पहिन कर हम दोनों ने इन सूटों को पहन लिया। किसी ने सच कहा है कि जब चेहरा हो हो ख़राब तामुज़फ़िर है बेक़सूर, मेरी शक्ल ही इतनी रूखी सूखी और नुची खुची थी कि दुनियाँ भर की कोई पोशाक मुझे सुन्दर नहीं बना सकती थी, लेकिन ट्वीड की नई शिकारी जाकेट, ब्रीचेज और फ़ुल बूट पहन कर कुंवर साहिब की पुरुषोचित सुन्दरता में चार चाँद लग गये। नये कपड़े पहन कर वह तो शाप भ्रष्ट गंधर्व लगने लगे। अल्फ़ान्सो ने भी अपनी बेतरतीब मूँछों को काट संवार कर उन्हें ऊपर की ओर मोड़ लिया। यहाँ तक कि बूढ़े अमस्लोपागस ने भी, जो इस तरह की साज शृंगार की ओछी टुच्ची बातों से कोसों दूर रहता था, लालटैन से थोड़ा सा तेल निकाला और थोड़ी सी चर्बी उसमें घोल कर उससे अपने केशला को रगड़ कर इतना चमकाया कि वह कैप्टिन प्रसाद के पेटैन्ट लैदर के जूतों की तरह चमकने लगा। इसके बाद उसने कुंवर साहब की दी हुई फ़िज़म पहन ली और अपनी कमर में लपेटे हुए तहमद नुमा छोटे कपड़े के टुकड़े 'मोचा' को साफ़ करके पहन लिया। फिर उसने अपने इन्कूसीकास को रगड़ रगड़ कर शीशे जैसा चमकाया और बड़ी अदा से अपनी पूरी शान शौकत के साथ डोंगी के अगले भाग में जा कर बैठ गया।

नहाने से फ़ुरसत पाते ही हम ने डोंगी में फिर पाल तान दिया था और इसलिये हमारी डोंगी धीरे धीरे किनारे की ओर या बड़ी नदी के मुहाने की ओर जा रही थी। नाव के चले जाने के कोई डेढ़ घंटा बाद हम ने नदी के मुहाने पर बने बन्दरगाह से बीसियों नावों को निकलते देखा—नावें छोटी बड़ी सभी तरह की थीं और कोई कोई तो बहुत ही बड़ी थीं। एक नाव तो इतनी बड़ी थी कि उसे २४ डांडों से चलाया जा रहा था, बाक़ी अधिकतर पालदार थीं। दूरबीन से देखने पर हमें पता लगा कि डॉडों से चलने वाली नाव निश्चय रूप से सरकारी नाव थी, उसके सभी मल्लाह एक ख़ास तरह की यूनीफ़ार्म पहने

हुए थे और उसके डैक के अगले भाग में सौम्य आकृति का एक वृद्ध मनुष्य बड़े रौबदाब से खड़ा हुआ था। वृद्ध की श्वेत सन जैसी नाभि तक लटकती डाढ़ी थी और उसने अपनी कमर में तलवार बाँधी हुई थी। अपने रौबदाब और शान से वह उस सरकारी नाव का कमाण्डर मालूम होता था। अन्य नावों में भरे मनुष्य स्पष्ट रूप से ऐसे थे जो केवल उत्सुकता वश ही तमाशा देखने निकल आये थे और चप्पू मार कर या पाल तान कर जल्दी से जल्दी हमारे पास पहुँचना चाहते थे।

"कहिये कुंवर साहिब, 'क्या ख्याल है ?" मैंने पूछा, "शर्त बद कर बताइये कि वह लोग हमारा स्वागत करेंगे या सीधा यमलोक पहुँचा देंगे।"

परन्तु इस सवाल का जवाब आसान नहीं था और उस सौम्य आकृति वाले वृद्ध की फौजी चाल ढाल और उसकी कमर में बँधी तलवार को देख कर हमें तनिक फिक्र सी होने लगी।

उसी समय कैप्टिन प्रसाद ने दूरबीन की सहायता से डोंगी से कोई २०० गज़ दूर दरियाई घोड़ों का एक झुण्ड खोज निकाला और सलाह दी कि यदि सम्भव हो तो दो चार दरियाई घोड़ों को गोली का निशाना बना कर इस अज्ञात जाति के मनुष्यों पर अपनी शक्ति का रौब जमा देना कुछ बुरी बात न होगी। दुर्भाग्य से मुझे और कुंवर साहिब दोनों को यह बात जच गई और इसलिये हम आठ बोर रायफिलों को, जिसके कुछ कारतूस हमारे पास बच रहे थे, उठा कर तैयार हो गये। चार दरियाई घोड़े हमारे बिल्कुल पास थे, एक नर था एक मादा थी और दो बड़े बच्चे थे। बिना किसी दिक़्कत के हमारी डोंगी इन जानवरों के पास पहुँच गई। इन जानवरों ने हमारी ओर ध्यान भी नहीं दिया बल्कि उल्टे पानी में डुबकी लगा कर कुछ गज़ दूर जा निकले। उनका ऐसा पालतू पन हमको बहुत विचित्र लगा पर अपनी धुन में हमने उस ओर ध्यान नहीं दिया। जब हमारे पास आने वाली नावें हमसे कोई ५०० गज़ दूर रह गईं तो कुंवर साहिब ने अपनी रायफिल उठा कर एक दरियाई घोड़े के बच्चे को निशाना बना कर धड़ाम से रायफिल दाग़ दी। गोली बीच माथे में लगी और खोपड़ी के चिथड़े उड़ा कर पार हो गई। दरियाई घोड़ा गोली लगते ही मर गया और उस

का शव झील के स्वच्छ जल में ताज़े रक्त की लकीर बनाता हुआ तुरन्त ही डूब गया। उसी क्षण मैंने मादा पर बन्दूक दागी और कैप्टिन प्रसाद ने नर को निशाना बनाया। मेरी गोली उसके लगी तो पर ज़ख्म घातक नहीं लगा और वह मादा पानी को ज़ोर से हिलाती हुई छपाके से ग़ोता मार गई। क्षण भर बाद ही वह फुंकारती डकराती फिर पानी के बाहर निकली और उसके रक्त से आस पास का सारा जल लाल सुर्ख़ हो गया। मैंने दूसरी गोली से उसकी जीवन लीला समाप्त कर दी। उधर अचूक निशाने बाज़ होने पर भी न जाने कैसे कैप्टिन की गोली नर घोड़े के सिर पर न लगी बल्कि उसके गाल को छीलती हुई निकली चली गई।

दूसरी गोली चलाने के बाद मैंने जब सिर उठा कर आने वालों की ओर देखा तो मुझे फ़ौरन ही मालूम हो गया कि जिस अज्ञात जाति वालों में हम फँस गये थे वह निश्चय रूप से आग्नेय अस्त्रों के बारे में बिल्कुल अनजान थे, क्योंकि हमारी रायफ़िलों की कड़ाकेदार आवाज़ और उनके घातक नतीज़े को देख कर उनकी सिट्टी पिट्टी सी गुम हो गई थी। नावों में बैठी कुछ टोलियाँ डर के मारे चीख़ने चिल्लाने लगीं और कुछ ने अपनी नावों को घुमा कर पूरी तेज़ी से किनारे की ओर दौड़ लगा दी। यहाँ तक कि तलवार बाँधे हुए वह सौम्य वृद्ध भी कुछ परेशान और भयभीत सा लगने लगा और आगे बढ़ने के स्थान पर उसने अपनी नाव जहाँ थी वहीं रुकवा दी। हम अभी यह सब ठीक तरह से देख भी न पाये थे कि चोट के दर्द से पागल हुए नर दरियाई घोड़े ने हमारी डोंगी से कोई ४० गज़ दूर पानी से सिर निकाला। घृणा और क्रोध से उसकी आँखें जल रही थीं। हम तीनों ने एक साथ उस पर गोलियाँ चलाईं और कई जगह गहरे ज़ख्म खा कर वह फिर पानी में डुबकी मार गया।

धीरे धीरे आगुन्तकों की उत्सुकता उनके भय पर क़ाबू पाती जा रही थी और कुछ अपनी नावों को बढ़ा कर हमारी डोंगी के बहुत पास तक ले आये थे। पास आने वालों में वह स्त्री और पुरुष भी थे जिन्होंने कोई दो घण्टे पूर्व सब से पहिले हमको देखा था। यह तो अपनी नाव को बिल्कुल ही हमारी डोंगी के पास ले आये। उसी समय वह भयङ्कर

नर दरियाई घोड़ा तेज़ी से फुङ्कारता और डकराता हुआ उनकी नाव से कोई २० गज की दूरी पर पानी से बाहर निकला और गुस्से से मुँह फाड़ कर नाव को निगलने के लिए दौड़ा। उसे आता देख कर वह स्त्री रूच से चीख़ उठी और उसका साथी चप्पू मार कर नाव को दूर ले जाने की कोशिश करने लगा। परन्तु न जाने घबराहट से उसके हाथ पाँव फूल गये थे या क्या बात थी कि नाव वहाँ से दूर न जा सकी। पलक मारते ही मुझे उन पर आने वाले भीषण संकट का अनुमान हो गया। उसके खुले हुए विशाल जबड़े और उसमें लंबे लंबे दाँत मुझे साफ दिखाई दे रहे थे और मैंने देखा कि उस दुष्ट जानवर ने उस छोटी सी नाव को अपने विशाल जबड़ों में दबा कर चुरमुरा डाला और नाव अपने आरोहियों के समेत डूब गई।

क्षण भर में ही नाव डूब गई और उसके सवार पानी में हाथ पैर मारने लगे। दूसरे ही क्षण, इससे पहिले कि हम उनको बचाने की कोई तरकीब करते, वह दुष्ट क्रोधित जानवर फिर पानी से बाहर निकला और मुँह फाड़ कर सीधा उस स्त्री की ओर झपटा। वह स्त्री उस समय किसी दूसरी नाव पर पहुंचने के लिए जी जान से हाथ पैर मार रही थी। जैसे ही उस दुष्ट जानवर ने उस स्त्री को चबा डालने के लिए अपना विशाल जबड़ा खोला वैसे ही मैंने उस स्त्री के सिर के ऊपर होकर उस दुष्ट जानवर के खुले मुँह में गोली मारी। गोली लगते ही वह उलट गया और फुङ्कारते चिंघाड़ते हुए वह गोलाई में चक्कर खाने लगा और सांस के साथ उसके नथुनों से रक्त की धार बह बह कर चारों ओर के जल को गहरे लाल रंग में रंगती जा रही थी। पेश्तर इसके कि वह दुष्ट जानवर संभले और फिर आक्रमण करे मैंने उसके खुले मुँह में एक गोली और मारी और उस दूसरी गोली ने उसका खात्मा कर दिया। दूसरी गोली लगते ही उसका चिंघाड़ना फुङ्कारना बिल्कुल बन्द हो गया और वह बिना हाथ पाँव हिलाये फ़ौरन ही पानी में डूब गया। उसके मरते ही हमने उस स्त्री को बचाने की फ़िक्र की। इस बीच उसका साथी पुरुष तैर कर एक दूसरी नाव पर चढ़ गया था। इस समय तक वह स्त्री काफ़ी पानी पी चुकी थी और धीरे धीरे उसके होश हवास ग़ायब होते जा रहे थे। बड़ी मुश्किल से हमने उसे

की मिजाज पुर्सी की। उस वृद्ध ने अपने दाहिने हाथ की दो उँगलियों को अपने होठों पर रख कर अभिवादन का उत्तर दिया, दो क्षण तक वह उँगलियों को होठों पर ही रखे रहा। इस से हम ने यह समझा कि उस देश में नमस्कार करने का शायद यही तरीक़ा था। कैप्टिन को बोलते सुन कर उस वृद्ध ने भी उसी कोमल और मृदु भाषा में हम से कुछ कहा। इसी भाषा में हम से सब से पहले मिलने वाले व्यक्ति ने बात की थी। हमने अपने सिरों को हिला कर और कन्धों को उचका झटका कर इशारे से बताया कि हम उस भाषा को समझ नहीं रहे थे। क्योंकि अल्फान्सो कन्धे झटकाने में बहुत निपुण था इसलिये उस का प्रदर्शन इतना सुन्दर और बढ़िया हुआ कि किसी को बुरा लगने की संभावना ही नहीं हो सकती थी। बातचीत यहाँ आकर बिल्कुल ठप्प हो गई। क्योंकि मुझे भूख बहुत जोर से लग रही थी इसलिये मैंने इस बात की ओर आगन्तुकों का ध्यान दिलाने के लिए पहले अपने मुँह को खोला फिर दाहिने हाथ को वहाँ तक ले गया और फिर पेट को मल कर मैंने अपना आशय इशारों से जाहिर कर दिया। इस इशारे को वह वृद्ध फौरन समझ गया और उसने अपने सिर को जोर से हिला कर बताया कि वह मेरे इशारे को समझ गया था। फिर उसने नदी किनारे पर बसे हुए बन्दरगाह की ओर इशारा किया और उसकी आज्ञा पा कर उस नाव के एक मांझी ने हमारी डोंगी में एक रस्सी फेंकी और उस रस्सी से डोंगी को बांध देने का इशारा किया। हमने अपनी डोंगी रस्सी से बांध दी और वह सरकारी नाव हमारी डोंगी को अपने पीछे बांध कर बहुत तेज़ी से खींचती हुई बन्दरगाह की ओर ले चली। बाक़ी नावें हमारी डोंगी के चारों ओर जलूस सा बना कर आगे पीछे चलने लगीं।

कोई बीस मिनट में हम बन्दरगाह के प्रवेश द्वार पर पहुंच गये, इस समय तक सैकड़ों आदमी हमें देखने के लिए निकल पड़े थे और सारा बन्दरगाह छोटी बड़ी बीसियों नावों से भरा हुआ था। हमें देखने आने वाले सभी लोग प्रायः एक ही तरह के थे, केवल उनमें से किसी किसी का रंग अधिक खुलता हुआ था। कुछ स्त्रियों का रंग बहुत ही गोरा चिट्टा था और अधिकतर का रंग पंजाब प्रान्त की संभ्रान्त महिलाओं

जैसा खुलता गेहुँवा था। आगे बढ़ने पर नदी एकाएकी एक ओर को घूम गई और घूम पर पहुँचते ही उसके किनारे पर बसे हुए नगर की अनुपम शोभा को देख कर हमारे मुख से बरबस ही वाह वाह निकल पड़ी। हम आश्चर्य और विस्मय के मारे ठगे से रह गये। हमने स्वप्न में भी इस नगर के इतने सुन्दर होने की कल्पना तक नहीं की थी। जिन्होंने समुद्र की ओर से बम्बई की महानगरी के बैलर्ड पियर, मैरीन ड्राइव और बैक बे वाले भागों को देखा है वही इस नगर की—बाद को हमें ज्ञात हुआ कि इस नगर का नाम मिलोसिस (भ्रू कुटिल) था—आश्चर्यजनक सुन्दरता तथा मनोहरता का अनुमान लगा सकता है।

नदी तट से कोई ५०० गज़ हट कर कोई २०० फ़ीट ऊँची शुद्ध अग्नेय बिल्लौरी चट्टान का बना एक शृंग एक दम सीधा खड़ा हुआ था। इस में सन्देह नहीं कि किसी समय यह शृंग नदी का किनारा बनाता होगा और अब नदी के हट जाने से किनारे से दूर हो गया था और बाद को बांध से सुरक्षित कर के अब यहां पर बन्दरगाह की गोदियाँ और यातायात की सड़कें इत्यादि बनाई हुई थीं।

इस सीधे खड़े शृंग की चोटी पर ऐसे ही आग्नेय बिल्लौरी पत्थरों से बनी एक आलीशान भव्य इमारत खड़ी हुई थी। यह आलीशान महल एक वर्ग की तीन भुजाओं पर बना हुआ था और चौथी ओर खुला स्थान था। इस खुली चौथी ओर एक धुस या परकोटा सा बंधा हुआ था जिसकी जड़ में एक छोटा सा द्वार बना हुआ था। बाद को हमें पता लगा कि यह गगन चुम्बी आलीशान भवन इस देश की सम्राज्ञी या यूँ कहिये कि सम्राज्ञियों का राज्य महल था। इस महल के पीछे की ओर पर्वत के हलके चढ़ाव पर सारा नगर बसा हुआ था और यह नगर दूध जैसे श्वेत संगमरमर से बनी एक गगन चुम्बी आलीशान इमारत के पास जा कर समाप्त होता था। इसी आलीशान इमारत पर वह विशाल कलश दार सुनहरी गुम्बज था जिस को हम पहले ही देख चुके थे।

इस आलीशान इमारत के अलावा बाक़ी सारा नगर लाल आग्नेय पत्थरों (संग ख़ारा) का बना हुआ था और टेढ़ी तिरछी बसावट होने के बजाय प्रत्येक मकान एक ख़ास नमूने पर बड़े क़रीने से क्रमानुसार

बराबर दूरी पर बनाया हुआ था और उन के बीच में फर्स्ट क्लास सड़कें बनी हुई थीं। इतनी दूर से जितना भी हम देख सके उस से पता लगा कि सारे मकान एक मंजिले थे और एक दूसरे से बिल्कुल अलग अलग बने हुए थे और हर एक के चारों ओर बगीचे लगे हुए थे। आग्नेय पत्थरों (संग खारा) को लाखों वृक्षों की गहरी हरियाली से मिल कर अजीब मजा दे रही थी। राज्य महल के पिछवाड़े से एक बहुत ही चौड़ी सड़क निकल कर पहाड़ के चढ़ाव पर जा रही थी और कोई एक मील चल कर पहाड़ की चोटी पर बनी सुनहरी कलश वाली श्वेत संगमरमर की झलमलाती आलीशान इमारत के चारों ओर छोड़े गये खुले स्थान में जा कर समाप्त होती दिखाई देती थी।

लेकिन हमारी आँखों के ठीक सामने ही थी मिलोसिस नगर की सब से महान कीर्ति यश और शोभा—और वह वस्तु थी पर्वत शिखर पर बने राज्य महल को जाने वाला विशाल सोपान, जिसकी विलक्षणता और शान को देख कर हम दांतों तले उंगली दबा कर रह गये। यदि पाठक कल्पना कर सकते हों तो ६५ फीट चौड़े एक विशाल सोपान की कल्पना करें। यह सोपान दो भागों में था। प्रत्येक भाग में ३ फीट चौड़ी और ८ इंच ऊंची १२५ पौड़ियां थी और सोपान के दोनों भाग ६० फीट चौड़े एक चौरस चबूतरे से जुड़े हुए थे। यह सोपान एक सुन्दर प्रपात की भांति शृंग के करारे पर बने राज्य महल के परकोटे से लगा कर शृंग के नीचे बहने वाली नदी के किनारे तक फैला हुआ था। यह विलक्षण सोपान आग्नेय पत्थरों से बनी एक ही विशाल मेहराब पर टिका हुआ था और उस विशाल मेहराब के शिखर पर बना हुआ था सोपान के दोनों भागों के बीच वाला चबूतरा। और इस हवा में लटके चबूतरे से शुरू हुई थी दूसरी सहायक उड़न मेहराब। यह मेहराब हवा में लटकी मालूम होती थी और इस तरह की मेहराब हमने आज तक किसी देश में नहीं देखी थी। कुंवर साहिब ने भी जिन्होंने सारा संसार खूंद मारा है ऐसी मेहराब संसार के किसी देश या किसी नगर में नहीं देखी थी। यह मेहराब इंजीनियरिंग कला का उत्कृष्ट नमूना थी और उसकी सुन्दरता और विलक्षणता हमारी कल्पना से भी परे की वस्तु थी।

निम्न तर बिन्दु से उच्च तर बिन्दु तक इस मेहराब की लम्बाकार ऊंचाई ३०० फ़ीट थी और वक्रता का नाप ५५० फ़ीट से कम नहीं था। सोपान के उपरले भाग को टेक देने वाला अर्ध वृत खण्ड ५० फीट ऊंचा था, उसका एक सिरा निचली पितृ मेहराब में समाया हुआ था और दूसरा करारे की ठोस संगीन आग्नेय चट्टानों में दबा हुआ था।

सारा सोपान और उसकी टेक ऐसी विलक्षण और आश्चर्य जनक वस्तु थी जिसकी उत्कृष्ट सुन्दरता और विशाल आकार के कारण संसार का कोई कुशल से कुशल इंजीनियर भी उस पर गर्व कर सकता था। बाद को हमें पता लगा कि इस सोपान को बनाने का कार्य, जो किसी बहुत पुरातन काल में शुरू हुआ, था चार बार असफल हो गया था और इस कारण तीन शताब्दियों तक यह काम अधूरा ही पड़ा रहा। तीन शताब्दियों के बाद इसी जाति में रैडीमस नाम के एक तेजस्वी पुरुष ने जन्म लिया। यह नवयुवक एक बहुत ही कुशल इंजीनियर था। उसने इस कार्य को पूरा कर दिखाने का बीड़ा उठाया और अपने प्रयत्न की सफलता पर जान की बाज़ी तक लगा दी। असफल होने पर उसे उसी करारे से नीचे ढ़केल दिया जाने को था जिस पर मेहराब खड़ी करने का उसने बीड़ा उठाया था। और सफलता मिलने पर उस समय के सम्राट ने उस देश की राजकुमारी का विवाह उसके साथ कर देने का वचन दिया था। इस कार्य को पूरा करने के लिए उसे ५ वर्ष की अवधि दी गई थी और अनगिनती मजदूर तथा असीम माल मसाला और रसद जुटा कर उसके अधिकार में दे दी गई थीं। तीन दफा, उसकी उठाई मेहराब टूट कर नीचे गिर पड़ी, और अपने प्रयत्नों को बार बार असफल होते देख कर उसे इतनी निराशा हुई कि अन्त में मेहराब के तीसरी बार गिर जाने पर उसने दूसरे दिन प्रातः काल ही भगवान सूर्य के दर्शन करके करारे से नीचे कूद कर आत्म हत्या कर लेने का ध्रुव निश्चय किया।

उसी रात्रि को उसे स्वप्न में एक अति सुन्दर स्त्री के दर्शन हुए और उस स्त्री ने उसका मस्तक छू कर उसे आशीर्वाद दिया। उस देवांगना द्वारा मस्तक स्पर्श होते ही रैडीमस को अपनी योजना का सर्वांग पूर्ण चित्र आँखों के सामने दिखाई देने लगा। उस समय उसकी अन्तर्दृष्टि

इतनी पैनी हो गई थी कि ठोस पत्थर की गच के भीतर होकर उसे उस उड़न मेहराब की बनावट स्पष्ट दिखाई देने लगी और साथ ही उसे अपने आप यह भी मालूम हो गया कि उक्त उड़न मेहराब को बनाते समय जो जो कठिनाइयाँ उसकी असीम बुद्धि बल और कल्पना शक्ति को अब तक धोखा देती आई थीं उनको किस तरह सर किया जा सकता था। इस विचित्र स्वप्न को देख कर वह चौंक कर जाग उठा और दुगने उत्साह से परन्तु एक बिल्कुल नये नकशे के अनुसार उस मेहराब को बनाने के काम में फिर जुट गया, और अन्त में अनथक परिश्रम करने के बाद उसने अपने कार्य को सफलता पूर्वक पूरा कर ही लिया। और पांच वर्ष की दी हुई अवधि के अन्तिम दिन उसने अपनी भावी पत्नी उस देश की राजकुमारी का हाथ पकड़े इसी विशाल सोपान की सीढ़ियां चढ़ कर पर्वत शिखर पर बने राज्य भवन में प्रवेश किया।

तत्कालीन सम्राट के पुत्रहीन होने के कारण और राज कुमारी का पति होने के नाते वह समय आने पर वह उस देश का सम्राट बना और उसने ज्यू वैण्डी के उस राज्य वंश की नींव डाली जो आज भी 'सोपान वंश' के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार सम्राट रैडीमस ने अपनी अपूर्व बुद्धि बल तथा असीम कल्पना शक्ति से यह सिद्ध कर दिया कि इस संसार में केवल बुद्धि बल और योग्यता से ही मनुष्य प्रभुत्व तथा ऐश्वर्य के उच्च तर सोपान पर पहुंच सकता है। अपनी इस असाधारण विजय को चिर स्मरणीय बनाये रखने के लिए उसने अपनी एक स्वप्न देखती हुई मूर्ति गढ़वाई थी जिसमें वह सुन्दर स्त्री उसके मस्तक को स्पर्श करती दिखाई गई थी। यह मूर्ति बाद को राज्य भवन के दरबार गृह में रखवा दी गई थी और उसे आज भी वहीं उसी तरह से रखा देखा जा सकता है।

ऐसा था मिलोसिस नगर का विशाल सोपान। इसमें सन्देह नहीं कि इस नगर के बसाने वालों ने इसका नाम ठीक ही रखा था क्योंकि ठोस आग्नेय चट्टानों से बनी विशाल और महान वस्तुएँ अपने अस्पष्ट तथा शान्त वैभव से मनुष्य जीवन की क्षण भंगुरता और उसकी असमर्थता पर भ्रू कुंचित करती मालूम होती हैं। सूर्य के उज्ज्वल प्रकाश में भी ऐसा ही मालूम होता था, लेकिन जिस समय तूफानी बादल

मिलोसिस नगर के तेजस्वी मस्तक पर पाद प्रहार करने आते थे और आग्नेय चट्टानों और बादलों में लुका छुपी होती थी तो आकाश की छाती को चीर कर अपना मस्तक ऊंचा किये मिलोसिस का राज्य भवन मनुष्यों का नहीं वरन प्रकृति पुरुष का वास स्थान मालूम पड़ने लगता था—और उसके पिछवाड़े बसा नगर, जिसे अनेकों पीढ़ियों ने शताब्दियों तक परिश्रम करके ठोस चट्टान को काट कर बसाया था, मनुष्यों का नहीं बल्कि देवताओं और दैवी पुरुषों का वास स्थान मालूम पड़ने लगता था।

अध्याय १२

युगल सम्राज्ञियां

बड़ी नाव नदी के मुहाने को एक ओर छोड़ कर उस जल धारा में मुड़ गई जो उस विशाल सोपान के आंचल को छू कर बह रही थी और उन सीढ़ियों के पास आकर रुक गई जो नाव से उतरने वाले चबूतरे को जाती थीं। यहाँ पहुँच वह सौम्य आकृति वृद्ध नाव से उतर पड़ा और हम को भी उतरने का इशारा किया। क्योंकि भूख के मारे हमारी आतें कुल्लोअल्लाह पढ़ रही थीं इसलिये डोंगी से उतरने के अलावा और कोई चारा ही नहीं था। इसलिये हम अपनी रायफिलें लिये बिना किसी हिचक के डोंगी से उतर पड़े। हमारे डोंगी से उतर आने पर उस सौम्य वृद्ध ने फिर अपने होठों पर उंगली रख कर हमें नमस्कार किया और सिर को झुका कर हमारा स्वागत किया। इसके बाद उसने उस बढ़ती हुई भीड़ को, जो हमें देखने के लिए सिमटी चली आ रही थी, पीछे हट जाने की आज्ञा दी। हमारे डोंगी से उतर जाने के बाद वह स्त्री जिसे हमने डूबने से बचाया था डोंगी से उतरी। उसका साथी कुछ दूर खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वहाँ से चले जाने से पहले उसने मेरे दाहिने हाथ को अपने हाथों में लेकर चूम लिया, शायद इस तरह से उसने क्रोधित दरयाई घोड़े से जान बचाये जाने की कृतज्ञता प्रकट की थी। इस समय तक वह डर पर काबू पा चुकी थी और उसे हमारी ओर से भी कोई भय नहीं रह गया था और शायद इसलिये जल्दी से अपने साथी के पास लौट जाने की उसे तनिक भी इच्छा नहीं थी। शायद वह मेरे हाथ को चूम कर कैप्टिन प्रसाद के हाथ को और चूमना चाहती थी परन्तु उसके इस काम में उसके साथी ने, जो इतनी देर में काफी व्यग्र हो उठा था, बाधा डाली और उसे प्रायः जबरदस्ती वहाँ से हटा कर ले गया।

जैसे ही हम किनारे पर उतरे बड़ी नाव के बहुत से आदमियों ने हमारे सारे सामान और बधने बोरिये को डोंगी से उठा लिया और उसे लाद कर उस विशाल सोपान की सीढियां चढ़ना शुरू किया। हमें कुछ परेशानी सी हुई मगर हमारे पथ प्रदर्शक ने हमें इशारे से बताया कि हमारी तमाम चीजें बिल्कुल सुरक्षित थीं और हमें चिन्ता करने की तनिक भी जरूरत नहीं थी। यह काम पूरा करके हमारा पथ प्रदर्शक दाहिने हाथ की ओर घूमा और विशाल सोपान के पास बने एक छोटे से मकान में हमें ले गया। बाद का हमें पता लगा कि यह एक होटल था। एक बड़े कमरे में पहुँच कर हमने देखा कि उसके बीचों बीच रखी लकड़ी की मेज़ पर खाने की वस्तुएँ चुनी हुई थी, शायद यह खाद्य पदार्थ हमारे लिए ही थे। कमरे में पहुँच कर हमारे पथ प्रदर्शक ने हमें मेज़ के सहारे से रखी बैन्च पर बठने का इशारा किया। अब तो दुबारा कहने की जरूरत ही नहीं थी और हम फोरन ही भूखे भेड़ियों की तरह मेज़ पर चुनी खाने की वस्तुओं पर टूट पड़े। यह खाद्य पदार्थ लकड़ी की प्लेटों मे चुने हुए थे। खाने में था बकरी का भुना गोश्त, जो किसी खास तरह के मीठे स्वादिष्ट पत्तों में लिपटा हुआ था और जिससे गोश्त और भी स्वादिष्ट लग रहा था, सलाद जैसी हरी सब्जियां और भूरे रंग की डबल रोटी जैसी फूली फूली मोटी चपातियां, और थी चमड़े की कुप्पियों में भरी लाल शराब जिसे सींग के बने प्यालों में भर कर हमारे सामने मेज पर रख दिया गया। यह शराब बहुत कम तेज, हल्की और जायकेदार थी और उसके पीने में पोर्ट वाइन जैसा मजा आया।

खाना पेट में पहुँचते ही हमारी जान में जान आई और हम अपने आपको बिल्कुल ही नया आदमी महसूस करने लगे। जो परेशानियां और तकलीफे हमको उठानी पड़ी थीं उसके बाद हमें सिर्फ दो ही चीजों की जरूरत थी भोजन और आराम की और भरपेट खाना खाकर तो हममें जैसे नई जान आ गई। हमारे खाना खाते समय दो सुन्दर नवयुवतियां हमको भोजन परोस रही थीं और बहुत सुन्दरता और सफाई से इस काम को कर रही थीं। यह दोनों वैसी ही सुन्दर और आकर्षक थीं जैसी वह नवयुवती थी जिसे हमने सबसे पहले देखा था और यह दोनों भी वैसे ही वस्त्राभूषण पहने हुए थीं—बिना आस्तीनों का नीची

कॉट का गला खुला ब्लाउज़ और उल्टे पल्ले की साड़ी जिस में से उन के पुष्ट उन्नत उरोज आम्र पत्तियों में छुपे आमों की भांति झलक रहे थे—सीधी बांह कन्धे तक खुली हुई थी ! बाद को मुझे मालूम हुआ कि यही यहाँ की राष्ट्रीय ड्रेस थी और उसके पहिनने की सख्त पाबन्दी थी। परन्तु पर्वो तथा अन्य उत्सवों के अवसरों पर अन्य पोशाक भी पहनी जा सकती थीं। पहिनने वाले की सामाजिक स्थिति के अनुसार इस ड्रेस में कुछ अन्तर कर दिया जाता था। जैसे यदि साड़ी शुभ्र श्वेत होती थी तो इससे यह समझा जाता था कि पहिनने वाली स्त्री अविवाहित थी, यदि साड़ी के किनारे पर सीधी बैंगनी रंग की गोट टकी होती थी तो इससे समझा जाता था कि पहिनने वाली स्त्री विवाहित थी और अपने पति की विवाहिता तथा प्रथम पत्नी थी, यदि बैंगनी गोट लहरिये दार होती थी तो इसका यह अर्थ होता था कि पहिनने वाली दूसरी पत्नी अथवा उप पत्नी थी, यदि गोट काली होती थी तो इसका अर्थ था कि वह विधवा थी।

इस तरह साड़ियों का रंग पहिनने वाली स्त्री के सामाजिक स्तर के अनुसार शुभ्र सफ़ेद से गहरे भूरे रंग तक होता है। यही नियम पुरुष द्वारा पहिनने जाने वाले झंगोलों के लिये है—सामाजिक स्तर के अनुसार इन झंगोलों के रंगों तथा कपड़े में अन्तर होता है। परन्तु तहमद सब के एक से ही होते हैं, फ़र्क सिर्फ़ उन के कपड़े में होता है। एक चीज़ और भी है—देश भर के प्रत्येक स्त्री पुरुष अपने दाहिने हाथ में कुहनी से ऊपर और बांये पैर में घुटने से नीचे ठोस सोने के कड़े पहिनते हैं—यह इस देश का राष्ट्रीय चिन्ह है। उच्च वंश तथा अधिकारी वर्ग के व्यक्ति अपने गले में सोने का बना तौक भी पहिनते हैं, और क्योंकि हमारा पथ प्रदर्शक भी ऐसा ही तौक़ पहिने हुए था इससे मैंने अनुमान लगाया कि वह किसी ऊँचे पद पर था।

जैसे ही हम लोगों ने खाना ख़त्म किया हमारे आदरणीय पथ प्रदर्शक ने हमें अपने पीछे आने का इशारा किया। जितनी देर हमने खाना खाने में लगाई थी उतनी देर हमारा पथ प्रदर्शक बराबर खड़े खड़े बड़ी जिज्ञासा और कुतूहल से हम लोगों को देख रहा था और विना किसी प्रकार की चिन्ता तथा अनावश्यक भय प्रकट करते हुए

बल्कि अपने उच्च पद की मर्यादा तथा मान प्रतिष्ठा के अनुरूप आश्चर्य मिश्रित भय से हमारी रायफिलों को देख रहा था। खाना खत्म करने के बाद उसने कैप्टिन प्रसाद की ओर देख कर-कैप्टिन की शान शौकत और चमकीली भड़कीली पोशाक से उसने उन्हीं को हमारी टोली का नायक समझ लिया था-हमें अपने पीछे पीछे आने का इशारा किया। हम उस के पीछे चल दिये। कमरे के दरवाजे को पार कर के हम फिर उस विशाल सोपान के नीचे जा पहुँचे। सोपान के नीचे पहुँच कर सोपान की चौड़ी मुडेरी के अन्तिम छोरों पर जमाई हुई शुद्ध काले पत्थर के एक ही विशाल ढोंके से गढ़ कर बनाई सिंह की विशाल सुन्दर मूर्तियों को देख कर हम उनकी प्रशंसा करने के लिए कुछ क्षण ठहरे। सिंहों की यह विशाल मूर्तियां इतने कौशल तथा सुन्दरता से गढ़ी गई हैं कि उनकी प्रशंसा करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। ऐसा कहा जाता है कि इन मूर्तियों को रैडीमस ने गढ़ा था-उसी महान सम्राट रैडीमस ने जिस ने इस विलक्षण सोपान को बनाया था। सम्राट रैडीमस द्वारा गढ़ी और दूसरी मूर्तियों को, जिनको हमने बाद मे देखा, देख कर यह निश्चय रूप से कहा जा सकता था कि वह अपने समय का सबसे विलक्षण और कुशल शिल्पकार था, ऐसा शिल्पकार जो अपने फ़न का बेजोड़ उस्ताद था और जिसके मुकाबले का कलाकार यह देश और यह जाति ही नहीं बल्कि संसार का कोई भी देश और कोई भी जाति आज तक पैदा नहीं कर सकी है।

इस अमर कलाकार की इन महान कृतियों को देख कर अपने मन में उस के लिए प्रशंसा और आदर का भाव रखते हुए हम उस विलक्षण सोपान पर चढ़ने लगे जो इंजीनियरिंग और निर्माण कला का अद्वितीय तथा अनोखा नमूना था और मुझे विश्वास है कि यदि किसी भयानक भूचाल के धक्के ने वास्तु कला की इस महान कृति को धराशायी न कर दिया तो सहस्त्रों वर्षों तक आने वाली सन्तानें इस अमर कीर्ति पर गौरव करती रहेंगी और उसकी प्रशंसा के गीत गाते नहीं थकेंगी। इन अदभुत् वस्तुओं से हम इतने प्रभावित हुए कि असल्लोपागस भी, जो किसी वस्तु को देख कर वैसे ही आश्चर्य प्रकट कर देना सैद्धान्तिक

रूप से अपनी शान और इज्जत के खिलाफ समझता था, इन आश्चर्य जनक वस्तुओं को देख कर अपनी सुधि बुधि खो बैठा और ठगा सा खोया सा उस विशाल मेहराब को देखता ही रह गया और अन्त में उसने सिर्फ यही पूछा कि यह विलक्षण मेहराब और सोपान मनुष्यों की बनाए हुए थे या भूतों ने इसे बनाया था—भूत का शब्द वह हमेशा उस अज्ञात आदि शक्ति के लिए, जिसे हम ईश्वर, भगवान, गॉड, नामों से पुकारते हैं, इस्तेमाल करता था। मगर अल्फान्सो ने इन चीजों की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। उसकी ओछी, छिछली खोखली प्रकृति ठोस चट्टान से काट कर बनाई इस महान कृति की शान शौकत तथा उत्कृष्टता का अनुमान भी नहीं कर सकती थी और इसलिये उन महान कृतियों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उस ने सिर्फ यही कहा कि यदि इस जीने की मुंडेरों पर सुनहरी मुलम्मा कर दिया गया होता तो और भी अच्छा होता।

हम १२५ पैड़ियां चढ़ कर मेहराब के शिखर पर बने चबूतरे पर पहुंचे जहां से पैड़ियों का दूसरा क्रम शुरू होता था। यहां पहुंच कर हम दूर तक फैले अति सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को देखने के लिए कुछ देर ठहरे। चारों ओर का प्राकृतिक दृश्य इतना सुन्दर और नयनाभिराम था कि घन्टों अपलक नेत्रों से देखने पर भी मनुष्य ऊब नहीं सकता था। हमारे मार्ग प्रदर्शक के चेताने पर हम बहुत अनिच्छा पूर्वक उस दृश्य से मुंह मोड़ कर फिर पैड़ियों पर चढ़ने लगे और १२५ पैड़ियों पर चढ़ कर पर्वत के शिखर पर पहुंच गये। यहां पहुंच कर हमें एक छोटा सा बरामदा मिला जिस में तीन दरवाजे बने हुए थे, दरवाजे सभी छोटे थे। अगल बगल के दरवाजे, उन तंग गलियारों के थे जो ठोस चट्टानों को काट कर बनाये गये थे और राज्य महल की चहार दिवारी के साथ साथ चल कर उसके पिछवाड़े की ओर से निकलने वाले मुख्य राज पथ से मिल गये थे। नगर से बन्दरगाह की गोदी की ओर से आने वाले नागरिक इन दोनों गलियारों को काम में लाते थे। इन की रक्षा के लिए कांसे के बने बहुत मजबूत फाटक लगे हुए थे। बाद को हमें पता लगा कि इन तंग गलियारों में ऐसा प्रबन्ध भी था कि कुछ पेच ढिबरियां खोल देने से ही इन

गलियारों का फ़र्श अपना स्थान छोड़ कर हट जाता था और शत्रुओं का उस में हो कर बन्दरगाह से राज्यभवन के पीछे की ओर बसे नगर में पहुंच सकना असम्भव हो जाता था।

तीसरे द्वार में काले संगमरमर (संग मूसा) की बनी दस गोलाकार पैड़ियां थीं, यह पैड़ियां राज्यभवन की दीवार में बने द्वार तक पहुंचती थीं। राज्यभवन की दीवार स्वयं ही वास्तुकला का बहुत अद्‌भुत नमूना थी। आग्नेय चट्टानों (संग ख़ारा) के बड़े बड़े विशाल ढोंकों से बनी यह दीवार ४० फुट ऊंची थी और इसके बनाने में अद्‌भुत कला चातुर्य दिखाई गई थी। यह दीवार सीधी लम्बरूप होने के बजाय कुछ भीतर की ओर दबी हुई और नतोदर थी और इस कारण इस पर सीढ़ियां लगा कर चढ़ जाना असम्भव था। हमारा पथ प्रदर्शक हमें राज्य भवन की दीवार में बने द्वार की ओर ले गया। इस द्वार पर लकड़ी का बना एक बहुत ही बड़ा विशालकाय फाटक चढ़ा हुआ था और उस की रक्षा के लिए बाहर की ओर एक दूसरा कांसे का बना जंगी फाटक चढ़ा हुआ था। इस समय यह दरवाज़ा बन्द था, लेकिन हमारे पहुंचने पर उसे पूरा खोल दिया गया और हमें आगे बढ़ता देख कर एक सन्तरी ने ललकार दी। इस सन्तरी के हाथ में संगीन जैसा लंबा और तिकोने फलवाला भारी बरछा था और कमर में लटक रहा था दुधारा खांडा। दरियाई घोड़े की कड़ी खाल से बड़ी चतुरता से बनाई ढालें उस की छाती और पीठ की रक्षा कर रही थीं और उसी खाल की उसी चतुराई से बनाई एक छोटी सी गोल ढाल उसके हाथ में थी। उसकी कमर से लटकते खांडे ने फौरन ही हमारी दृष्टि को आकर्षित कर लिया। यह खांडा बिल्कुल उसी तरह का था जैसा हम ने फ़ादर मैकैन्ज़ी के पास देखा था और जिसे उन्होंने उस अभागे यात्री से पाया था जो उन के मिशन स्टेशन पर आ कर उसी रात्रि को मर गया था। खांडे के पानीदार स्टील से बने फल में कटी हुई कटावदार नक्क़ाशी और उन कटावों में की गई सुनहरी तारों की मीनाकारी को देख कर पहिचान लेने में आँखें कभी धोखा नहीं खा सकती थीं। तो उस अभागे यात्री ने सब कुछ सच ही सच कहा था।

हमारे पथ प्रदर्शक ने तुरन्त ही कोई सांकेतिक शब्द कहा और उस सन्तरी ने अपने लंबे बरछे के लोहे की मूठ लगे दस्ते को जोर से फर्श पर झनझनाहट के साथ बजाते हुए सीधे तन कर उसे सलामी दी और रास्ता छोड़ कर एक ओर हट गया। हम उस दानवाकार दीवार में बने दरवाजे को लांघ कर राज्यभवन के आंगन में जा पहुंचे। यह आंगन कोई ५० गज वर्ग का है और उसमें बहुत सुन्दर और रेखा-गणित की विचित्र आकृतियां और आकारों की क्यारियां कटी हुई हैं, और इन क्यारियों में बहुत सुन्दर फूलों के पौधे, झाड़, झाड़ियां और लता बेलें लगी हुई हैं। इनमें से बहुत से फूल और झाड़ ऐसे थे जो मेरे लिए बिल्कुल नये थे। इस बाग के बीचों बीच हो कर एक चौड़ा रास्ता गया है, जिस पर बजरी की बजाय झील किनारे से जमा की हुई सीपियां कूट कर बिछाई हुई हैं। इस चौड़े रास्ते पर चल कर हम एक दूसरे फाटक पर पहुँचे जिसके ऊपर एक चौड़ा बाहर को निकला हुआ मेहराब नुमा छज्जा बना हुआ था और छज्जे से जमीन तक झूलते हुए भारी परदे लटके हुए थे, क्योंकि राज्य भवन में कहीं भी किवाड़ नहीं हैं इसलिये हर दरवाजे में किवाड़ों के स्थान पर जमीन तक झूलते हुए भारी परदे लटके हुए हैं। इस दरवाजे को पार कर के हम एक छोटे से गलियारे में पहुचे और उसे पार करके हम राज्य-भवन के विशाल केन्द्रीय दरबार हॉल में पहुँच गये। जिस विशाल हॉल में हम जा पहुंचे थे उसके ऐश्वर्य और वैभव को देख कर हमारी आंखें फटी सी रह गईं।

यह हॉल, जैसा हमको बाद को पता लगा, १५० फुट लम्बा और ८० फुट चौड़ा है और इसकी गुम्बददार छत लकड़ी की बनी हुई है और लकड़ी पर बहुत सुन्दर नक्काशी की हुई है। पूरी लम्बाई के बल हॉल के दोनों ओर और दीवार से २० फुट हट कर काले संगमरमर के बहुत नाजुक स्तम्भ छत तक ऊँचे लगे हुए हैं, यह स्तम्भ बहुत सुन्दर और बलदार है और इनके ऊपर बहुत सुन्दर नक्काशी की हुई है। इस विशाल हॉल के दूसरे सिरे पर वह मूर्ति स्थापित है जिसका वर्णन मैं पहले कर आया हूँ और जिसे सम्राट रेडीमस ने उस महान सोपान बनाने के स्मारक रूप गढ़ा था—जब हमें उस मूर्ति को देखने

और उसका अध्ययन करने का अवसर मिला तो उसकी अपूर्व सुन्दरता और अनुपम कला चातुर्य को देख कर दांतों तले उंगली दबा लेनी पड़ी।

यह मूर्ति समूह, जिसमें मनुष्य की मूर्तियां श्वेत संगमरमर की हैं और बाकी अन्य भाग काले संगमरमर का है, मनुष्याकार से कोई छोटा बड़ा है और इसमें एक देव स्वरूप सुन्दर नवयुवक को एक कोच पर गहरी नींद में सोते दिखाया गया है। सोने वाले नवयुवक का एक हाथ बड़ी लापरवाही से कोच के एक ओर लटका हुआ है और दूसरा हाथ सिर के नीचे तकिये की तरह रखा है और उसके घुंघराले केशों ने उसके मस्तक को प्रायः ढ़क रखा है। उस सोते हुए नवयुवक के सिरहाने की ओर उसके ऊपर जरा झुकी और उसके मस्तक पर अपना हाथ रखे और परदे के आवरण में छुपी हुई एक स्त्री की मूर्ति इतनी सुन्दर और कमनीय है कि उसे देख कर सहसा आँखों पर विश्वास नहीं होता है। उस स्त्री के अलौकिक सुन्दर मुख पर झलकने वाली अनुपम दैवी शान्ति, कमनीयता और तेज को इतनी सुन्दरता से दिखाया गया है कि उसका वर्णन करना मेरी सामर्थ से बाहर है। वह वहां खड़ी साक्षात जगत्माता सी दिखाई देती है, जगत्माता आदि शक्ति जैसी। उसके मुख मण्डल पर दया, कोमलता, शान्ति और तेजस्विता इतनी सुन्दरता से दिखाई गई है कि सहसा यह विश्वास ही नहीं होता कि वह निर्जीव पत्थर से गढ़ी हुई मूर्ति मात्र है। वह तो साक्षात देव कन्या या जगत्माता का प्रत्यक्ष रूप मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है कि प्रकृति पुरुष की आदि शक्ति लोक कल्याण और लोक हित के लिए मानव रूप धारणकरके मूर्तिमान हो गई हो। इस देव मूर्ति की आँखे उस सोये हुए नवयुवक पर जमी हुई हैं और आँखों से दया, प्रेम, करुणा तथा वात्सल्य का झरना सा झरता मालूम होता है। इस अति सुन्दर मूर्ति खण्ड में सबसे विलक्षण बात यह है कि कलाकार बड़ी चतुराई और कौशल से उस सोते हुए नवयुवक के थके, श्रम क्लान्त और निराशायुक्त मुख पर आशा की उस किरण को फैलते दिखाने में असाधारण रूप से सफल हुआ है जिसने उसके अन्तर मन को प्रकाश युक्त करके आशा और दृढ़ विश्वास की लहर

उसकी स्नायुओं और तन्तुओं में विद्युत तरंग की भाँति दौड़ा दी थी। उसके मुख पर दृष्टि डालते ही यह स्पष्ट दिखाई देता था कि जिस प्रकार सूर्य अन्धकार की कालिमा को परे ढ़केल कर और घने कुहरे को चीर कर अपने प्रकाश को चारों ओर फैलाता जाता है इसी प्रकार इस नवयुवक के अचेतन मन को उस देवी की दैवी और अलौकिक शक्ति जाग्रत कर रही है और उसके मन की अज्ञानता रूपी कालिसा को भेद कर ज्ञान तथा नव प्रेरणा का शुभ प्रकाश उसके अन्तर मन को प्रकाश युक्त करता जा रहा है। यह मूर्ति समूह शिल्प कला का अद्वितीय तथा लाजवाब नमूना है और मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि [केवल दैवी शक्ति और महान आत्मायें ही ऐसी मूर्ति समूह की कल्पना कर सकती है।

काले संगमरमर के प्रत्येक स्तम्भ के बाद कोई न कोई मूर्ति स्थापित की हुई है। कुछ मूर्तियाँ उस देश के देवी देवताओं की हैं, कुछ काल्पनिक विभूतियों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों की हैं, कुछ भूतपूर्व सम्राटों और उनकी सम्राज्ञियों की हैं ओर कुछ उस देश के महान विद्वानों तथा व्यक्तियों की हैं। सभी मूर्तियां बहुत सुन्दर हैं परन्तु उस मूर्ति समूह को, जिसका अभी मैंने वर्णन किया, हरगिज़ नहीं पाती हैं। कुछ मूर्तियां तो उसी महान शिल्पकार सम्राट रैंडमिस की गढ़ी हुई हैं परन्तु वह भी उस मूर्ति समूह की सुन्दरता के मुकाबिले में कुछ नहीं हैं।

इस हाल के ठीक बीच में छोटी कुरसी के आकार का काले संग-मरमर का बना एक ठोस-शिलाखण्ड रखा हुआ है। इस शिलाखण्ड की शक्ल भी बिल्कुल कुरसी जैसी है। बाद को हमें पता लगा कि यह शिलाखण्ड इस विलक्षण ज्यूवैण्डी जाति वालों का पवित्र शिलाखण्ड था और राज्याभिषेक के बाद यहां के सम्राट इस शिलाखण्ड पर हाथ रख कर सूर्य भगवान को साक्षी कर के राज्य तथा राज्य के स्त्री पुरुषों की रक्षा करने और उस देश के रीति रिवाज, सभ्यता, संस्कृति परम्परा तथा नियम कानूनों को मानने और उन के अनुकूल आचरण करने की प्रतिज्ञा किया करते थे। इस में तनिक भी संदेह नहीं कि यह शिलाखण्ड बहुत प्राचीन है, जैसे कि अधिकतर शिलाखण्ड होते हैं,

और उसके ऊपर गहरी सीधी लाइनें या धारियाँ बनी हुई हैं। कुंवर साहिब ने जो भूगर्भ शास्त्र और भूगोल के सम्बन्ध में बहुत जानकारी रखते हैं हमें बताया कि यह शिलाखण्ड पृथ्वी के इतिहास के उन प्राचीन तर काल से संबंध रखता था जब कि हमारी पृथ्वी विशाल हिमागारों के चंगुल में फंसी हुई थी और और यह धारियाँ या लइाने उन हिमागारों के विध्वंसक कार्य को बताती थीं। इस शिलखण्ड के संबंध में एक विचित्र जनश्रुति लोगों में फैली हुई है। इस देश के निवासियों का यह विश्वास है कि यह शिलाखण्ड सूर्य के उज्ज्वल ज्योतिर्मय पिण्ड से टूट कर यहाँ आ गिरा था और इसी कारण यह जन श्रुति भी इस देश में फैली हुई है कि जिस समय यह शिलाखण्ड टूट कर टुकड़े टुकड़े हो जायगा उस समय एक नवीन राज्य वंश इस देश पर राज्य करेगा। क्योंकि यह शिलाखण्ड बहुत ठोस और सुदृढ़ दिखाई देता है इसलिये इस देश पर राज्य करने वाले राज्य वंश को अनन्त काल तक राज्य करने की संभावना पर विश्वास है।

हॉल के दूसरे किनारे पर एक मंच है जिस पर नरम गुदगुदे कालीन बिछे रहते हैं। इस क़ालीन पर दो सिंहासन पास पास रखे हुए हैं। इन सिहासनों की शक्ल आज कल की साधारण कुर्सियों जैसी है परन्तु बने हुए हैं यह ठोस सुवर्ण के। बैठने के स्थान पर बहुत नरम और गुदगुदी गद्दियाँ लगी हुई हैं, परन्तु पीठ की ओर कोई गद्दी इत्यादि नहीं है। सिहासनों की पीठ पर पूर्ण उदित सूर्य की मूर्तियाँ बनी हुई हैं और जिन से निकली अग्नि ज्वालाये और उर्मियां चारों ओर को फैली हुई हैं। पावदानों के स्थान पर बैठे सिंह की ठोस सुवर्ण मूर्तियाँ रखी हैं, इनकी आँखों में पुखराज जड़े हुए हैं और दाँत हीरे के हैं। इन दो के अलावा और कोई रत्न जवाहिर इन में नहीं जड़ा है।

प्रकाश के लिये गुम्बददार छत में अनेकों छोटी छोटी खिड़कियाँ बनी हुई हैं, यह खिड़कियाँ हाल के फ़र्श से बहुत ऊँचाई पर बनी हैं और इन की बनावट पुराने क़िलों और दुर्गो में बने सूराख के नमूने पर हैं। इन खिड़कियों में शीशे वग़ैरा कुछ नहीं हैं शायद इस कारण कि इस देश के निवासी शीशे जैसी बस्तु को जानते ही नहीं हैं।

यह संक्षिप्त वर्णन है उस आलीशान हॉल का जहाँ हमें अपने पथ प्रदर्शक के पीछे पीछे जा पहुंचे थे। इस हाल का जो भी वर्णन मैं ने ऊपर लिखा है वह उस स्थान को बाद में घूम फिर कर देखने और प्रत्येक वस्तु का सूक्ष्म निरीक्षण करने के बाद लिखा है। उस समय तो हमें उॅस हल की सुन्दरता को देखने और प्रत्येक वस्तु का सूक्ष्म निरीक्षण करने का समय ही नहीं मिला क्योंकि हाल में घुसते ही हम ने देखा कि वहुत सी स्त्रीं पुरुष उन दोनों सिंहासनों के सामने इकट्ठे थे। दोनों सिहासन उस समय खाली थे। उपस्थित व्यक्तियों में जो मुख्य तथा प्रतिष्ठित मालूम होते थे वह सिहासनों के दांये और बांयें की ओर करीने से लगी हुई लकड़ी कीं नक्क़ाशी दार कुरसियों पर वैठे हुए थे, सिंहासनों के सामने की ओर कोई कुरसी वग़ैरा नही थी और जगह विल्कुल खाली छोड़ दी गई थी। यह प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्ति वहुत श्वेत रंग के भंगोले पहने हुए थे, जिनमें विभिन्न रंगों की गोटे लगी हुई थीं और विभिन्न प्रकार की क़सीदे कारी की हुई थी। यह सभी व्यक्ति सुनहरी कटावदार नक्क़ाशी की हुई तलवारों और खांडों से सुसज्जित थे। उनकी सौम्य आकृति, शान शौकत तथा तड़क भड़क से वह सभी प्रभुत्व सम्पन्न, सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति मालूम होते थे। उन में से प्रत्येक के पीछे उनके साथी और अनुचर छोटी छोटी टुकड़ियों और समूहों में खड़े हुए थे।

सिंहासन से जरा दूर हट कर बायीं ओर को छः व्यक्ति एक समूह मे वैठे थे। अपनी चाल ढाल और आकृति से यह छओं व्यक्ति और लोगों से बिल्कुल अलग मालूम होते थे। और लोगों की तरह साधारण तहमद न पहिन कर इन्होंने शुभ्र श्वेत रंग के बहुत ढ़ीले ढाले चौड़ी वाहों के कुरते पहने हुए थे। नीचे उन्होंने जाँघिया या कच्छे जैसी कोई चीज़ पहन रखी थी। इन कुरतों में सामने की ओर छाती पर सोने के धागों से बहुत वड़ी वड़ी चमकीली सूर्य की वैसी ही मूर्तियाँ कढ़ी हुई थीं जैसी कि हमने सिंहासनों के पृष्ठ भाग में बनी देखी थीं। इनके ढ़ीले ढ़ाले कुरते शुद्ध सुवर्ण की बनी साधारण चौड़ी पट्टियों से कमर पर कसे हुए थे। इन पट्टियों से शुद्ध सुवर्ण की वनी चौड़ी वृत्ताकार प्लेटें लटकी हुई थीं। इन प्लेटों की वनावट मछलियों के छिलकों

जैसी थी और पहिनने वालों के चलने या हरकत करने पर यह प्लेटें आपस में टकरा कर बजती थीं और चारों ओर प्रकाश किरणों को बखेरती थीं। वह सभी व्यक्ति प्रौढ़ अवस्था के थे और उनकी मुख मुद्रा बहुत कठोर, संयत और डरावनी थी। उनकी लम्बी श्वेत दाढ़ियों से उन के मुख की कठोरता और भी बढ़ गई थी।

उन में से एक के व्यक्तित्व ने हम को सब से अधिक प्रभावित किया। अपनी गंभीर और संयत मुख मुद्रा, आकृति और असाधारण व्यक्तित्व के कारण वह उन सब से अलग और भिन्न मालूम होता था और उसकी उपेक्षा करना या उसके व्यक्तित्व से मुँह मोड़ लेना असम्भव था। वह व्यक्ति बहुत लम्बे क़द का था और उसकी आयु कोई ८० वर्ष से भी अधिक मालूम पड़ती थी। उसकी उज्ज्वल श्वेत डाढ़ी नाभि को छू रही थी। उसकी मुख मुद्रा बहुत गम्भीर और कठोर थी। ऊँची मुड़ी नाक, चौड़ा ऊँचा मस्तक, सुडौल मुख, बड़ी बड़ी तेज जलते कोयलों जैसी आँखें उस को और उपस्थित आदमियों से बिल्कुल अलग किये हुए थीं। उस की बड़ी बड़ी भूरी आँखों से जैसे आग सी भरती थी, उससे आँखे मिलाना या उसकी दृष्टि को सह सकना प्रायः असम्भव था। असीम प्रभुत्व, अहंकार, दृढ़ आत्मविश्वास और असाधारण अधिकार भावना उन में साफ झलकती थी। दया, माया, प्रेम तथा वात्सल्य को उन आँखों में कोई स्थान नहीं था। उसके शिर पर सुनहरी जरतारी के भारी काम की गोल टोपी थीं, उसके अन्य साथी नंगे सिर थे। इस से हम ने अनुमान लगाया कि वह व्यक्ति उस देश तथा समाज में कोई विशिष्ठ स्थान रखता था और असीम प्रभुत्व शाली था। और निस्संदेह ही हमारा अनुमान गलत भी नहीं था। बाद को हमें पता लगा कि उसका नाम ऐगौन (सं० अग्नि) था और वह उस देश का धर्म गुरु और सूर्य मन्दिर का मुख्य पुजारी था।

हमारे राज्य सिंहासनों के पास पहुँचने पर सारा दरबार, धर्मगुरु ऐगौन और उसके साथियों समेत, हमारी अगुवानी के लिये खड़ा हो गया और उन सब ने बड़ी नम्रता से अपने सिर झुका कर और दाहिने हाथ की दो उगलियों को अपने होठों पर रख कर हमारा स्वागत करते हुए हमें नमस्कार किया। इसके बाद काले संगमरमर के स्तंभों के पीछे

से कुछ प्रहरी चुपचाप कुर्सियाँ लिए हुए निकले और उन कुर्सियों को सिंहासनों के सामने की ओर एक लाइन में रख दिया गया। हम तीनों इन कुर्सियों पर बैठ गये और अल्फान्सो और अमस्लोपागस हमारे पीछे खड़े हो गये।

अभी हम मुश्किल से बैठ ही पाये थे कि सहसा दाहिनी ओर कहीं दूर राज्यभवन के भीतर जोर से तुरही और नरसिंहा बजने की तेज आवाज़ सुनाई दी और दूसरे ही क्षण बांयी ओर से भी ऐसी ही आवाज सुनाई दी। दो क्षण बाद ही शुद्ध हाथी दाँत का बना राजदण्ड लिए एक प्रहरी दाहिने हाथ की ओर सिंहासन के सामने आया और तेज़ आवाज़ से कुछ घोषणा सी की। उस घोषणा का अन्तिम शब्द था "निलिप्था" और इस शब्द को उसने तीन बार दोहराया। इसके बाद एक दूसरा प्रहरी ऐसी ही पोशाक पहने दूसरे सिंहासन के सामने आया और उसी तरह की कोई घोषणा की। उसकी घोषणा का अन्तिम शब्द था "सोरियास" और इसे भी उसने तीन बार दुहराया। इसके बाद दोनों बगली दरवाज़ों से बहुत से सशस्त्र मनुष्यों की पदचाप आने लगी और कोई बीस चुने हुए अंगरक्षक सैनिक चुस्त और शानदार भड़कीले वस्त्र पहने मार्च करते हुए बाहर निकले और सिंहासनों के दोनों ओर लाइन में खड़े हो गये और उन्होंने अटैन्शन खड़े होकर अपने लोहे की मूठ लगे लंबे बरछों को एक साथ जोर की झनझनाहट के साथ काले संगमरमर के फ़र्श पर बजाया। इसके बाद ही दोनों ओर से फिर तुरही नाद हुआ और छः छः स्त्री सैनिकों से घिरी ज्यूवैण्डी देश की दोनों साम्राज्ञियों ने बड़ी शान शौकत से दरबार गृह में प्रवेश किया। उनके आते ही सारा दरबार खड़ा हो गया।

मैंने अपने जीवन काल में बहुत सी सुन्दर स्त्रियाँ देखी हैं, काश्मीर की अनन्य सुन्दरियों से लगा कर हिमालय के वक्ष पर बसे किरात देश (रामपुर बुशहर राज्य-हिमाचल प्रदेश) की अद्वतीय अनुपम सुन्दरियों को देखने का अवसर मुझे मिला है। परन्तु जैसी सुन्दरता आज इस समय दिखाई दी उसकी तो मैं स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता था। किसी सुन्दर कमनीय मुख को देखते ही अब न तो मै सुन्दरता के मोह पाश में फंस कर अपनी सुधि बुधि भूल बैठता हूँ और न

आश्चर्य से मुँह फाड़ कर ताकता ही रह जाता हूँ। इतनी अवस्था हो जाने के कारण स्त्री सौन्दर्य का आकर्षण मेरे लिए प्रायः समाप्त हो चुका है, उसे देख कर अब मैं मोहित चित्र लिखित सा नहीं रह जाता हूँ और न मेरे स्नायु ही बेक़ाबू हो कर अपना कार्य बन्द ही कर देते हैं। इस समय न मुझे वह ऊपमायें ही सूझ रही हैं जिनके द्वारा कवि गण स्त्री की सुन्दरता और कमनीय मुख मण्डल की तुलना चन्द्रमा, हरिण और न जाने किस किस से करते हैं, और न मेरे पास शब्द ही हैं जिन के द्वारा उन दोनों अनन्य सुन्दरियों ज्यू बैण्डी देश की युगल साम्राज्ञितों के अतुलनीय सौन्दर्य तथा कमनीय मुखाकृति की प्रशंसा कर सकूं या शब्दों द्वारा उनकी भुवन मोहिनी अकल्पनीय सुन्दरता का कुछ वर्णन कर सकूं। दोनों पूर्ण यौवन के चढ़ाव पर थीं। उनकी आयु शायद २४–२५ वर्ष की थी। दोनों का कद लम्बा और शरीर की गठन बहुत सुडौल और सुन्दर थी। परन्तु उन दोनों की सदृश्यता बस यही तक थी। पहली, निलिप्था का रंग कच्चे दूध जैसा श्वेत था और उस देश के रिवाज के अनुसार उसकी दाहिनी बांह और दाहिने ओर के वक्षस्थल का कुछ भाग खुला हुआ था और उसकी सुनहरी ज़रदोज़ी के काम की हुई उज्ज्वल श्वेत साड़ी के मुक़ाबिले में भी शरीर का वह खुला हुआ भाग दूध जैसा अलग चमक रहा था। उसके सुन्दर मुख की रूप रेखा और शरीर की अतुलनीय गठन के सम्बन्ध में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि उसे एक बार देख कर भूल जाना असम्भव था। चाँद का टुकड़ा, चन्दे आफ़ताब चन्दे महताब जैसी कवियों द्वारा दी गई उपमायें सभी तो मुझे इस समय झूठी जान पड़ रहीं थीं। उसके शिर के बाल घुँघराले और पिंगल गहरे सुनहरी रंग के थे, ऐसा मालूम होता था जैसे प्रकृति ने उसके सिर पर सुनहरी राज्यमुकुट पहना दिया हो। उसके घुंघराले केशों ने उसके हाथी दाँत जैसे शुभ्र मस्तक को थोड़ा सा ढ़क रखा था और उस अध छुपे मस्तक के नीचे थीं गहरे भूरे रंग की बड़ी कजरारी गहन गम्भीर आँखें जिन से विनम्र प्रभुत्व, असीम करुणा, अतुलित दया और क्षमा मानो झर रही थी। किसी कवि ने कहा है, "अमी हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार," परन्तु मेरे विचार से यदि इस कवि ने निलिप्था की गहन गम्भीर आँखों

में झाँका होता तो शायद उसे अपनी इस उपमा को बदल देना पड़ता। हलाहल और मद मनुष्यों को बेहोश कर सकते हैं उस की सुधि बुधि भुला सकते हैं परन्तु मरतों हुओं में प्राण जीवन का संचार नहीं कर सकते। प्राण जीवन का संचार कर सकती है दया, क्षमा और वात्सल्य और निलिप्था की आँखों में न कटाक्ष था और न था मद, राज्य मद या कोई मद और हलाहल का तो कहना ही क्या वह तो शायद इनके पास ही नहीं फटका था। इन आँखों में थीं समुद्र की सी गम्भीरता, सूर्य की सी प्रचण्डता, चन्द्रमा की सी शीतलता, और प्रकृति का सा वात्सल्य और असीम दया। उसकी चितवन बहुत निर्मल थी, उस में जला डालने की शक्ति नहीं थी परन्तु वह जिला अवश्य सकती थी। मैं कवि नहीं हूँ इस कारण सम्राज्ञी निलिप्था के अन्य अंगों की लुनाई और सुघराई के सम्बन्ध से जमीन आसमान एक कर देने की क्षमता मुझ में नहीं है परन्तु अवश्य कहूँगा कि इस से अधिक सुन्दर और सुघड़ स्त्री रूप आज तक मैं ने नहीं देखा था। निलिप्था का छोटा सा मुख कामदेव के धनुष के समान गोलाई दार था। शायद गोस्वामी तुलसीदास ने ऐसे ही मुख के लिये लिखा है, "कोटि मनोज लजावन हारे।" रतिपति कामदेव की सुन्दरता और कमनीयता को लजाने वाली थी निलिप्था की सुन्दरता। उस के मुख मण्डल पर उत्तेजना या कामोद्दीपन के चिन्ह तक नहीं पाये जाते थे, उस की सुन्दरता अग्नि शिखा की भांति जला देने वाली नहीं थी बल्कि चन्द्रमा की भांति चारों ओर सुधा वर्षा कर के प्राण जीवन दान करने वाली थी। करुणा मिश्रित दया और क्षमा की अद्भुत धूप छांव उसके मुख पर दिखाई पड़ती थी और जिस प्रकार बादलों के पीछे से सूर्य का शुभ्र प्रकाश दिखाई देता है उसी उसी प्रकार उसके मुख मण्डल पर हास्य की क्षीण रेखा दिखाई देती थी और ऐसा मालूम होता था जैसे सुनहरी फ़ानूस में दीपक जल रहा हो। उस की मुस्कराहट बरबस ही फूट पड़ने का प्रयत्न कर रही थी और ऐसा मालूम होता था कि यह क्षीण मुस्कराहट सारे मुखमण्डल पर फैल कर पूजा दीप की भाँति उसे प्रकाशित कर देगी।

उसने कोई आभूषण नहीं पहन रखे थे। लेकिन गले, दाहिनी बांह और बांये पैर में उसने भी सोने के बने गुलूबन्द और कड़े पहन रखे

थे, परन्तु यह कड़े और गुलूबन्द सीधी सादी बनावट के न हो कर बलदार सांप की तरह के थे। उसकी दूध जैसी उज्ज्वल श्वेत पोशाक बहुत मुलायम और बहुत बारीक रेशम की थी और उस पर बहुत सुन्दर जरदोजी का काम किया हुआ था और वक्ष के ऊपर चमकीले सुनहरे तारों से कढ़ी हुई थी भगवान सूर्य की एक विशाल मूर्ति।

उसकी जुड़वाँ बहिन, दूसरी सम्राज्ञी, सोरियास अपनी बहिन से बिल्कुल भिन्न थी। उसका रंग खुलता गेंहुआ था। उसके बाल भी निलिप्थ की भाँति घुँघराले थे परन्तु उनका रंग था कोयले जैसा काला और घनी काली छाया की भांति वह कमर तक लटके हुए थे। उसकी आँखें बड़ी बड़ी, गहरी काली और बहुत चमकीली थीं। उन आँखों में मन और हलाहल दोनों थे, अमृत था या नहीं यह मुझे मालूम नहीं पड़ा। उनमें जला देने की शक्ति अवश्य थी परन्तु घनश्याम मेघों की तरह अमृत वर्षा करने की नहीं। उसकी आँख प्रज्वलित दीप शिखा सी थी जिस पर पतंगा जल मरता है। परन्तु मन्दिर में प्रभु की करुणामयी मूर्ति के सामने जलने वाले दीपक की सी शांति उसमें नहीं थी। उन आँखों की चितवन तीर की गांस की तरह देखने वाले के हृदय को चीर कर पार हो सकने की क्षमता रखती थी परन्तु उसमें घायल हृदय को शान्ति देने वाली चन्दन जैसी शीतलता नहीं थी। जिस ओर वह चितवन घूम जाती थी सैकड़ों बिजलियाँ सी गिर पड़ती थीं परन्तु घायलों को अमृत वर्षा कर के जिला लेने की शक्ति उसमें नहीं थी। उसका मुख छोटा और सुघड़ था और करुणा के स्थान पर उससे कठोरता और क्रूरता टपकती थी। उसका मुख मण्डल शांत और संयत था परन्तु जैसे राख के नीचे अँगार दहकते रहते हैं उसी प्रकार उसकी शान्ति तथा संयम के नीचे असीम कामोत्तेजना और वासना दबे हुए अँगारों की भांति दिखाई पड़ती थी। उस का संयम उस अप्राकृतिक रूप से बंधी जल राशि की भांति था जो छिद्र मिलते ही बाँध तोड़ कर प्रलंयकारी वेग से फूट पड़ती है और अपने प्रवाह में सभी कुछ बहा ले जाती है। सोरियास को देख कर मुझे उस गहरे नील गम्भीर समुद्र की याद आई जो शान्त रहते हुए भी कभी अपनी मर्यादा, शक्ति और प्रभुत्व को नहीं छोड़ता और जिस की प्रत्येक लहर

अपने उर में भयंकर तूफान को छुपाये रहती है और अवसर मिलते ही तूफान की प्रलयंकारी तेजी से हर छोटी वड़ी वस्तु को आत्मसात कर लेती है। सोरियास की गम्भीरता प्रकृति के उस शान्त वातावरण के समान थी जो तूफान आने से पहले होती है। शायद ऐसी ही स्त्री मूर्ति की कल्पना कर के किसी कवि ने लिखा है, "कहा न नारी कर सकें, कहा न सिन्धु समाय। सोरियास को देख कर मुझे इस उक्ति की सत्यता में बिन्दु भर भी अविश्वास . नहीं रहा। मुझे निश्चय हो गया कि अवसर आने पर अपनी मन चाही वस्तु पाने के लिए सोरियास आकाश पाताल एक कर देने की क्षमता रखती थी। अपनी बहिन की भांति सोरियास के शरीर की गठन भी अति सुन्दर थी, अँग अँग सांचे में ढ़ला हुआ था, ऐसा मालूम होता था जैसे विधाता ने स्वयं अपने हाथ से फुर्सत में बैठ कर गढ़ा हो। उसके उभरे अँग अधिक उन्नत, स्थूल और पुष्ट थे और उसका शरीर निलिप्था की भांति छरहरा न हो कर कुछ स्थूलता लिये हुए था। उस की पोशाक भी बिल्कुल निलिप्था जैसी थी।

जिस समय यह युगल सम्राज्ञियाँ सारे दरवार पर आतंक और रौब डालती हुई राजसी ठाठ से अपने सिंहासनों की ओर बढ़ीं उस समय मुझे उनके असीम प्रभुत्व और राजत्व को मानना पड़ा। उनकी प्रत्येक अदा से और उनकी प्रत्येक वात में राजसी शान टपकती थी। उनकी सुन्दरता और लावण्य, उन की सज धज, उनका राजसी वैभव और गौरव, उनकी शान शौकत और आडम्बर सभी राजसी था। परन्तु जैसा किसी कवि ने कहा है, "निराभरण सुन्दरता शुद्ध स्टील पर रखी धार के समान तीक्ष्ण और पैनी होती है।" इन दोनों को भी इस वैभव और शान शौकत की कोई आवश्यकता नहीं थी। प्रत्येक दशा और प्रत्येक हालत मे वह अपने गौरव और मर्यादा को न छुपा सकतीं। उनके राजत्व की घोषणा करने के लिए वाह्य उपकरण की आवश्यकता नहीं थी। हीरा मुख ते ना कहे लाख हमारो मोल, मिट्टी दवा पड़ा सुवर्ण सुवर्ण ही रहता है। जिस प्रकार उँगलियों से आंखों को वन्द कर लेने पर भी सूर्य का तीक्ष्ण प्रकाश को नेत्रों में घुसने से नहीं रोका जा सकता है उसी तरह उनके वाह्य आडम्बर पूर्ण आवरण तथा टीमटाम

को हटा लेने के बाद भी वह मनुष्यों के हृदयों पर राज्य करने की क्षमता रखती थीं। इस राजसी वैभव से उन की शोभा बढ़ रही थी या वह अपनी सुन्दरता से उस राजसी वैभव की शोभा बढ़ा रही थीं यह बताना कठिन है। उनकी आँखों के एक इशारे पर, उनके एक शब्द पर कोई भी नवयुवक अपने जीवन को सहर्ष हँसते हँसते निछावर कर सकता था, ऐसा मुझे विश्वास है। वह कौन पुरुष है जो स्त्री की एक चितवन पर, उसका एक कृपा कटाक्ष पाने के लालच में अपने जीवन और सर्वस्व को हँसते हँसते उत्सर्ग न कर दे और यदि स्त्री सुन्दर हो तब तो पुरुष हृदय में प्रलय झंझावात चलने लगते हैं और कुछ कर गुजरने यहाँ तक कि स्वयं अपने हाथ से अपना ही सिर काट कर उसके क़दमों पर चढ़ा देना भी सरल मालूम होता है। अतः मुझे ऐसा जान पड़ा कि अवसर आने पर इन दीप शिखाओं पर हँसते हँसते जल मरने वाले पतंगों की कभी भी कमी नहीं रहेगी।

परन्तु स्त्री पहले स्त्री है सम्राज्ञी पीछे, और स्त्री प्रकृति की सबसे बड़ी विचित्रता है उसकी असीम उत्सुकता। वह सारे संसार का रहस्य जान लेना चाहती है। इसीलिये स्त्री के चरित्र में अतिशयोक्ति पाई जाती है। अवसर आ पड़ने पर नारी क्या नहीं कर सकती इसका अनुमान तो मानव शास्त्र के जानकार भी नहीं लगा सके हैं। उसके चरित्र की इसी दुर्भेदता के कारण वह पुरुष के लिए एक पहेली बनी हुई है, और यही कारण है कि अनन्त काल से संसार के अनगिनतों कवियों के स्त्री चरित्र की जटिलता पर काव्य रचना करते आने पर भी आज भी यह विषय उतना ही जटिल और गूढ़ है जैसा सहस्रों वर्ष पहले था। यह है स्त्री चरित्र की विशेषता। शायद इसी कारण हमारे शास्त्रकारों ने प्रकृति पुरुष के साथ ही आदि शक्ति की कल्पना भी की थीं नहीं तो प्रकृति पुरुष अपूर्ण ही रह जाता। इस कारण स्त्री होने के नाते सम्राज्ञी होने पर भी वह नारी सुलभ उत्सुकता से वंचित नहीं थीं। मैंने देखा कि अपने अपने राज्य सिंहासनों की ओर जाते हुए अपनी उत्सुकता को न छुपा सकने के कारण इन दोनों ने तेज़ी से सिर घुमा कर हमारी ओर देखा। मैंने देखा कि उनकी दृष्टि मेरे ऊपर से निकली चली गई, और होना भी यही चाहिये था क्योंकि मझ जैसे

बूढ़े, तुच्छ, सत्व हीन, सूखे रूखे व्यक्ति में उनको दिलचस्पी हो भी क्या सकती थी। मेरे ऊपर से गुज़र कर उनकी खुल्लमखुल्ला आश्चर्य या कुतूहल प्रकट करती हुई दृष्टि बूढ़े असस्लोपागस के लौह कठोर शरीर पर पड़ी और उसने अपने इन्कूसीकास को ऊपर उठा कर उन दोनों को प्रणाम किया। इसके बाद कैप्टिन प्रसाद की भड़कीली चमकीली पोशाक पर उनकी दृष्टि टिकी और जिस प्रकार पुष्प पर बैठने से पहिले भंवरा चक्कर खाता है उसी तरह क्षण भर में ही कैप्टिन को ऊपर से नीचे तक देख कर वह निगाहें वहां से उछल कर तेज़ी से कुंवर साहिब पर पहुँची। इस समय एक खिड़की में होकर आने वाला सूर्य का प्रकाश कुंवर साहिब के घुंघराले सुनहरी केशों और सुनहरी तिकोनी फ्रेंचकट डाढ़ी पर पड़ रहा था और इस प्रकाश में उनके विशाल बलिष्ठ शरीर की रूप रेखा इस विशाल धुमैले हॉल के धुमैले वातावरण में स्पष्ट दिखाई दे रही थी। कुंवर साहिब ने, जो अभी तक दरबारी रिवाज के अनुसार सिर झुकाये खड़े थे, सहसा अपना सिर ऊपर को उठाया और उनकी आंखें अनायास ही सम्राज्ञी निलिप्था की आँखों से टकरा गईं। लोहे से लोहा बज गया। ईश्वरीय सृष्टि के सर्वोत्तम पुरुष और सर्वोत्कृष्ट स्त्री ने पहली ही बार एक दूसरे को आंख भर कर देखा। आंखें टकराईं और लौट पड़ीं, फिर उठीं और फिर टकराईं और मैंने देखा कि न जाने क्यों सम्राज्ञी निलिप्था के दूध जैसे श्वेत शरीर में तेज़ी से खून दौड़ने लगा बिल्कुल उसी तरह जैसे प्रातःकाल उषा की रक्तिम किरणें आकाश में घुसती चली जाती हैं और समस्त प्राची दिशा को रक्तिम बना देती हैं। मैंने देखा कि उसका उन्नत वक्ष और खुली बांह रक्त के दौड़ने से लाल हो उठी, फिर उसकी हंस जैसी गर्दन सुर्ख हो गई, फिर उसके कोमल रुई के गाले जैसे गाल गुलाब की पखड़ियों की तरह लज्जा से लाल सुर्ख हो गये, और तब जिस तरह यह रक्त ऊपर को चढ़ा था उसी तरह तेज़ी से उतर भी गया और उसका चेहरा पीला पड़ गया और मैंने देखा कि उसके लता सरीखे शरीर में कम्पन होने लगा था।

मैंने आहिस्ता से नज़र घुमा कर कुंवर साहिब की ओर देखा, उनका चेहरा भी लाल सुर्ख हो रहा था, उनके नथुने फूले हुए थे और आंखों से ज्वाला सी निकल रही थी।

"हे भगवान्," मैंने मन ही मन कहा, "इसका अन्त क्या होगा ? क्या वहीं होगा जो चुम्बक और लोहे के पास आ जाने से हुआ करता है ?" और मैं इस विचार की असम्भावना मात्र पर ही पर मन ही मन हंस पड़ा। स्त्री की सुन्दरता विद्युलता के समान है। घातक और क्षण भर में जला कर भस्म कर देने वाली। जिसको वह छू भर जाती है उसके ज्ञान और बुद्धि को जला कर भस्म कर देती है और शायद इसी कारण प्रेम को अन्धा कहा गया है क्योंकि आँखें रहते कौन भलामानुस अपने सिर आफत बुलाना चाहेगा। मैं अभी यह सोच ही रहा था कि इतनी देर में दोनों सम्राज्ञियां अपने अपने सिंहासनों तक पहुंच कर बैठ चुकी थीं। कहने में तो इतनी देर लगी है परन्तु इस बात के होने में ६ सैकिन्ड से अधिक समय न लगा। सम्राज्ञियों के सिंहासनों पर बैठते ही एक बार फिर अदृश्य तुरहियां जोर से बज उठीं और सारे दरबारी चुपचाप अपने अपने स्थानों पर बैठ गये। सम्राज्ञी सोरियास ने हम सबको भी बैठ जाने का इशारा किया।

इसके बाद सिंहासन के दाहिनी ओर खड़े व्यक्तियों को हटा कर हमारा पथ प्रदर्शक भीड़ से बाहर आया, हमारा वही पथ प्रदर्शक जो हमें किनारे तक लाया था। उसने उस स्त्री का हाथ पकड़ रखा था जिसे हमने यहाँ आने पर सबसे पहले देखा था और बाद को दरियाई घोड़े के घातक आक्रमण से बचाया था। जमीन तक झुक कर कोर्निश करने के बाद हमारे पथ प्रदर्शक ने सम्राज्ञियों को सम्बोधित करके कुछ कहना शुरू किया, शायद वह उनको बता रहा था कि उसने हमको कैसे और कहाँ पाया था। उसकी विचित्र कहानी सुनते समय उन युगुल सम्राज्ञियों के मुख पर जो भय मिश्रित आश्चर्य और कुतूहल फैलता जा रहा था उससे उनका मुख और भी भला लग रहा था। यह स्पष्ट था कि हमारे न जाने कहां से उस झील में पहुंचने और फिर डोंगी में बहते बहते वहां तक आ जाने की बात उनकी समझ में आ नहीं रही थी और वह हमारी उपस्थिति का सम्बन्ध किसी अलौकिक घटना से जोड़ रही थीं।

हमारा पथ पथ प्रदर्शक बिना रुके कहता ही चला गया और साथ वाली स्त्री से बार बार जोर देकर पूछने से मैंने यह समझा कि वह हमारे दरियाई घोड़ों को मार डालने वाली बात का जिक्र कर रहा था

और मुझे फौरन ही यह ख्याल आया कि हमने उन दरियाई घोड़ों को मार कर कोई बहुत बड़ा पाप कर डाला था क्योंकि श्वेत वस्त्र धारी पुजारियों का समुदाय बल्कि दरबार के अन्य व्यक्ति भी बार बार हमारे पथ प्रदर्शक को टोक टोक कर बड़ी क्रोधित मुद्रा और तेज आवाज में अनेकों प्रश्न पूछ रहे थे और दोनों सम्राज्ञियां बड़े विस्मय और आश्चर्य से सारी कहानी को सुन रही थीं। हाल सुनाते सुनाते हमारे पथ प्रदर्शक ने हमारी रायफिलों की ओर इशारा किया और बताया कि इन्हीं के जरिये यह भयानक कार्य किया गया था।

यह सब बातें आप को बहुत विचित्र सी लग रही होंगी मगर मैं आप को बता दूँ कि न्युत्रैण्डी के निवासी सूर्य के उपासक हैं और न जाने कैसे और क्यों उनके यहाँ दरियाई घोड़ा पवित्र जानवर माना जाता है। इसका यह मतलब नहीं है कि वह इन जानवरों का कभी वध ही नहीं करते, बल्कि किसी विशिष्ठ उत्सव या अवसर पर सहस्त्रों की बलि चढ़ाई जाती है और बलिदान के यह पशु उस उत्सव के लिए उस झील में पाले जाते हैं। बलिदान के बाद उनकी खालें सैनिकों के लिए ढालें बनाने के काम में आती हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि इस बलिदान के कारण उनकी पवित्रता किसी प्रकार नष्ट हो जाती है। उनको भगवान सूर्य का वाहन समझा जाता है और वर्ष भर उनको खूब खिलाया पिलाया जाता है और किसी विशिष्ठ अवसर या उत्सव पर उनकी बलि चढ़ा दी जाती है। दुर्भाग्य से जिन पालतू दरियाई घोड़ों के परिवार को हमने अपनी गोली से उड़ा दिया था उनको निकट भविष्य में होने वाले किसी उत्सव के लिए विशेष रूप से पाला जा रहा था और उनको चुगाने और खिलाने पिलाने का काम सूर्य मन्दिर के पुजारी के जिम्मे खास तौर से था। उनको बेहिचक और निडर रूप से इधर उधर फिरते देख कर उन पर गोली चलाते समय भी मुझे यह ध्यान आया था कि कहीं वह पालतू न हों। जैसा बाद को हमें मालूम पड़ा बात थी भी यही। सारी बातों का सारांश यह निकला कि अपनी शक्ति और प्रभुत्व के प्रदर्शन के जोश में हमने यहां के निवासियों की धार्मिक भावनाओं को गहरी ठेस पहुंचाई थी और अक्षम्य पाप किया था।

हमारे पथ प्रदर्शक के बोलना खत्म करते ही श्वेत ढीले ढाले वस्त्र और गोल टोपी पहने, लम्बी श्वेत डाढ़ी वाला वृद्ध, जिसके संबंध में मैं ऊपर बता आया हूँ कि वह उस देश का मुख्य पुजारी और धर्म गुरु था और जिसका नाम ऐगौन था, अपने स्थान से उठा और बहुत जोश में आ कर कुछ भाषण सा देने लगा। उसने अपनी तेज़ भूरी आँखें हमारे ऊपर जमा रखी थीं और मुझे उसका इस तरह घूरना कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। यदि मुझे उस समय यह मालूम हो जाता कि वह अपने धर्म और ईश्वर की दुहाई देकर हम सब को, जिन्होंने उस देश के धर्म और देवता का अपमान कर के घोर पाप किया था, जीवित ही धधकती आग में झोंक कर बलि चढ़ा देने की मांग कर रहा था, तो शायद मै उसी क्षण से उससे घृणा करने लगता।

जब ऐगौन अपनी बात खत्म कर चुका तो सम्राज्ञी सोरियास ने बहुत ही मधुर सुरीली आवाज़ में उससे कुछ कहा और ऐगोन को सिर हिलाते देख कर मैंने अनुमान लगाया कि वह सम्राज्ञी की बात मानने से इन्कार कर रहा था। सम्राज्ञी सोरियास के बाद सम्राज्ञी निलिप्था ने ऐगौन से कुछ कहा। निलिप्था की आवाज संयत, शान्त और स्वर बहुत मधुर था, ऐसा मालूम होता था जैसे बहुत ही मधुर स्वर से चांदी की घन्टी बज रही हो। उस समय हम को यह अनुमान तक नहीं हुआ कि वह उस देश के धर्म गुरू से हमारी जीवन रक्षा के लिए याचना कर रही थी। ऐगौन को राज़ी होते न देख कर सम्राज्ञी ने दूसरी ओर खड़े अधेड़ अवस्था वाले एक प्रौढ़ सैनिक से लगने वाले बलिष्ठ व्यक्ति को संबोधित कर के कुछ कहा। सम्राज्ञी की भाव भंगी और कहने के ढ़ंग से यह स्पष्ट मालूम होता था जैसे वह उससे ऐगौन को समझाने में सहायता करने की प्रार्थना कर रही हो। यह प्रौढ़ व्यक्ति बहुत लंबा था और उसका रंग उज्ज्वल न हो कर गेहुआ था। उसकी लंबी घनी काली डाढ़ी और कमर में लटकती तलवार उसकी वज्र कठोरता और निर्ममता को बताती थी। बाद को हमें ज्ञात हुआ कि उसका नाम नैस्टा था और वह उस देश का सब से शक्ति शाली सामन्त था। नैस्टा से बातें करते समय सम्राज्ञी की आंखे अनायास ही कुंवर साहिब से लड़ गईं और मैंने देखा कि सम्राज्ञी मुख सहसा लज्जा से

लाल हो उठा। साथ ही मैंने यह भी देखा कि सम्राज्ञी की यह लज्जा और सुर्खी नैस्टा की तेज नजरों से न छुप सकी थी और इस विचित्र व्यापार को देख कर उसकी भवें सिकुड़ गईं, नथुने फूल गये और आंखों से जैसे ज्वाला सी निकलने लगी। होंठ चबाते हुए उसका हाथ तलवार की मूंठ पर गया। बाद को हमें मालूम हुआ कि स्वयं नैस्टा सम्राज्ञी निलिप्था से विवाह करने का इच्छुक था और सब से शक्तिशाली सामन्त होने के नाते उसे अपने प्रस्ताव के मान लिये जाने में रत्ती भर भी संदेह नहीं था, और इसी कारण सम्राज्ञी को इस प्रकार अजनबियों के सामने प्रणय लज्जा से मुस्कराते देख कर उसके तन बदन में आग सी लग गई।

क्योंकि मामला इस तरह था इसलिये सम्राज्ञी निलिप्था ने बिल्कुल गलत व्यक्ति से प्रार्थना की थी क्योंकि उसने गहन गंभीर आवाज में एक एक शब्द पर जोर देते हुए प्रधान पुजारी ऐगौन की सभी बातों का पूर्ण रूप से समर्थन किया। जिस समय नैस्टा बोल रहा था सम्राज्ञी सोरियास अपनी कुहनी अपने घुटने पर टेके और हथेली पर ठोड़ी जमाये दबी छुपी मुस्कराहट से उसकी ओर देख रही थी जैसे उसने नैस्टा की नीयत को भांप लिया हो और उसको अपने बराबर का जोड़ समझ कर मोरचा लेने का निश्चय कर लिया हो। उधर निलिप्था का चेहरा गुस्से से लाल होता जा रहा था। उसकी आंखों से आग निकल रही थी जैसे किसी सती को किसी गुण्डे ने छेड़ दिया हो या गंगा स्नान करके आने वाली वैष्णवी कुत्ते से छू गई हो। परन्तु इस गुस्से की हालत में वह और भी सुन्दर लग रही थी। अन्त में वह ऐगौन की ओर घूमी और उसके प्रस्ताव पर अपनी मर्यादा के अनुसार सम्मति दी, शायद उसकी सम्मति ऐगौन को भी पसन्द आई क्योंकि उसने सिर झुका कर उसे मान लिया। अपनी सम्मति देते समय शब्दों पर जोर देने के लिये सम्राज्ञी अपने हाथ को हिलाती जाती थी और उधर सम्राज्ञी सोरियास अपनी हथेली पर ठोड़ी को रखे चुपचाप मुस्कराये जा रही थी जैसे उसे इस सब घटना में नाटक का सा मजा आ रहा हो। इसके बाद सम्राज्ञी निलिप्था ने कोई नियत इशारा किया और तुरहियां फिर जोर से बज उठीं। शायद यह दरबार खत्म होने की सूचना थी क्योंकि सारा दरबार खड़ा हो गया और झुक कर कोर्निश बजा लाने के बाद सब धीरे धीरे हॉल से बाहर

निकलने लगे। हमें और हमारे सहचरियों को सम्राज्ञी ने इशारे से बाहर जाने से रोक दिया।

धीरे धीरे सारा हॉल खाली हो गया और एकान्त हो जाने पर सम्राज्ञी ने मन्द मन्द मुस्कराते हुए कुछ इशारों से कुछ विस्मय सूचक शब्दों से हमें यह बताया कि वह इस बात को जानने की बहुत इच्छुक थी कि हम आये कहां से थे। प्रश्न था कि उनको समझाया कैसे जाये। न वह हमारी भाषा समझती थीं और न हम उनकी भाषा ही बोल सकते थे, परन्तु सहसा मुझे एक उपाय सूझ गया। मेरी जेब में मेरी पेन्सिल लगी पाकेट बुक मौजूद थी। मैंने पेन्सिल से पाकेट बुक के एक पन्ने पर झील का रेखा चित्र बनाया और अपनी सारी चतुराई खर्च करके के मैंने उस रेखा चित्र में उस पाताल धारा को दिखाया और पहाड़ों के पार दूसरे छोर पर उसका संबंध दूसरी झील से दिखाया। रेखा चित्र बना कर मैंने उसे सिंहासन के पास जा कर सम्राज्ञी के सामने पेश कर दिया। वह उस रेखा चित्र को फौरन ही समझ गईं और अपने प्रश्न का उत्तर इतनी सरलता से पा जाने पर खुशी से तालियां बजाने लगी और तब सिंहासन से उतर कर उस रेखा चित्र को लिये सम्राज्ञी सोरियास के पास जा कर उसे भी वह रेखा चित्र दिखाया और शायद वह भी उसे समझ गई।

इसके बाद उसने मेरे हाथ से मेरी पेन्सिल ले ली और बड़ी उत्सुकता से उसे उलट पलट कर देखने के बाद वह मेरी पाकेट बुक के एक पन्ने पर तरह तरह की आकृतियां और रेखा चित्र बनाने लगी। पहिले रेखा चित्र में उसने स्वयं को दोनों हाथ बढ़ा कर हमारा स्वागत करते और कुंवर साहिब की सी आकृति वाले व्यक्ति को इन हाथों को पकड़े दिखाया। दूसरा रेखा चित्र बहुत सुन्दर था और उस पानी में डूब कर मरता एक दरियाई घोड़ा दिखाया गया था और किनारे पर आकाश की ओर हाथ उठाये खड़ा था। उस व्यक्ति की शक्ल से मैंने उसे फौरन ही पहिचान लिया, वह व्यक्ति धर्म गुरु ऐगौन था। तीसरा रेखा चित्र बहुत डरावना था, यह रेखा चित्र था एक बहुत प्रचण्डता से धधकते हुए विशाल अग्नि कुण्ड का और वही व्यक्ति ऐगौन एक दो नोक वाली लंबी लकड़ी से हमें उस अग्नि कुण्ड में धकेलता दिखाया गया था।

इस रेखा चित्र को देख कर मेरे तो डर के मारे होश गुम हो गये। लेकिन सम्राज्ञी ने मेरी ओर देख कर मन्द मन्द मुस्कराने से जरा जान मे जान आई और सम्राज्ञी चौथा रेखा चित्र बनाने लगी। इस चित्र में था एक पुरुष, जिस की आकृति कुंवर साहिब से हूबहू मिलती थी, और दो स्त्रियां, जो साफ सम्राज्ञी निलिप्था और सम्राज्ञी सोरियास मालूम पड़ती थीं। यह दोनों स्त्रियां उस पुरुष के दोनों हाथों को पकड़े हुए थीं और अपनी नंगी तलवारों से उस की रक्षा कर रही थी। इन सभी चित्रों को देख कर सम्राज्ञी सोरियास ने भी, जो अपलक नेत्रों से बराबर कुंवर साहिब को देखे जा रही थी, सिर हिला कर अपनी सम्मति जताई।

अन्त में सम्राज्ञी निलिप्था ने एक अन्तिम रेखा चित्र उगते हुए सूर्य का खींचा जिसका स्पष्ट रूप यह अर्थ था कि इस समय हमें अपने निवास स्थान को जाना था और दूसरे दिन प्रातः काल उन युगल सम्राज्ञियों से मिलना था। सम्राज्ञी की इस स्पष्ट आज्ञा से कुंवर साहिब के मुंह पर ऐसी निराशा फैल गई कि वह सम्राज्ञी की आंखों से न छुप सकी और शायद उनको सांत्वना देने के लिए ही उन्होंने चुम्बन के लिए अपना हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया और कुंवर साहिब ने भी बड़े उत्साह और चाव से उसे अपने दोनों हाथो मे ले कर चूम लिया। उसी समय सम्राज्ञी सोरियास ने अपना हाथ कैप्टिन प्रसाद की ओर बढ़ाया। इस तमाम बातचीत के दौरान में कैप्टिन ने अपनी आंखें उस की ओर से हटाई नहीं थीं बल्कि अपलक नेत्रों से अपने चश्मे में से सम्राज्ञी सोरियास की ओर बराबर देखे जा रहे थे। उनके इस कार्य के पुरस्कार स्वरूप सम्राज्ञी सोरियास ने अपना हाथ चुम्बन के लिए उनकी ओर बढ़ाया यद्यपि सम्राज्ञी की आंखें कुंवर साहिब के सुन्दर मुखड़े पर चुपक कर रह गई थीं। मुझे यह कहते हर्ष होता है कि मुझे इस तरह के चूमा चाटी के व्यापार में शामिल नहीं किया गया था, दोनों में से किसी ने भी मुझे अपना हाथ चुम्बन करने के लिए नहीं दिया।

इसके बाद सम्राज्ञी निलिप्था ने घूम कर हमारे प्रहरियों के नायक को कुछ आज्ञायें दीं। सम्राज्ञी के बोलने के ढंग और नायक के बार बार झुक कर प्रणाम करने से यह स्पष्ट था कि वह उसे बहुत ही

आवश्यक और कठोर आज्ञायें दे रही थी। नायक को आवश्यक आज्ञायें देने के बाद वह बहुत मनोमोहनी अदा से हमारी ओर देख कर मुस्कराईं और फिर हॉल के बाहर चली गईं। उनके पीछे पीछे सम्राज्ञी सोरियास और उनके अङ्ग रक्षक भी चले गये।

सम्राज्ञियों के चले जाने के बाद जिस नायक को निलिप्या ने आज्ञायें और आदेश दिये थे वह आगे बढ़ा और इशारों के द्वारा हमारा सम्मान और अभिवादन करते हुए हम को हाल से बाहर ले गया और अनेकों गलियारों से घुमाता हुआ ऐसे स्थान पर ले गया जहां विशाल, सुसज्जित, ठाठ बाट की वस्तुओं से भरे कई कमरे एक पंक्ति में बने हुए थे। यह सब कमरे एक विशाल केन्द्रीय हाल से खुलते थे। इस हॉल के ठीक बीच में पीतल का बना एक विशाल दीपक छत से लटका हुआ चारों ओर प्रकाश फैला रहा था। क्योंकि इस समय संध्या हो चुकी थी और अन्धकार फैलता जा रहा था इसलिये दीपक जला दिया गया था। हॉल के फर्श पर नरम गलीचे बिछे हुए थे और स्थान स्थान पर गुदगुदे कोच और कुर्सियां रखी हुई थीं। हॉल के बीचों बीच रखी मेज पर बड़ी बड़ी प्लेटों में तरह तरह के खाद्य पदार्थ और फल चुने हुए थे और उनके बीच में रखा था ताजे फूलों का एक बहुत सुन्दर गुल-दस्ता। चीनी मिट्टी की बहुत पुरानी सील बन्द सुराहियों में शराब भरी हुई थी और उस शराब को पीने के लिए सुनहरी मीनाकारी किये हुए हाथी दांत के बने अति सुन्दर प्याले रखे हुए थे। दास और दासियां हमारी सेवा करने और भोजन परोस कर खिलाने के लिए मौजूद थे और जिस समय हमने भोजन करना शुरू किया तो बाहर किसी स्थान पर बड़े मधुर स्वरों में शहनाई बजने लगी। इस तरह हम इस अज्ञात देश में स्वर्ग सुख लूट रहे थे, इस मधुर स्वर्ग में खटकने वाली वस्तु थी उस कट्टर पन्थी क्रूर भयंकर धर्म गुरु ऐगीन का ख्याल जो हमें अपने देवता की अप्रतिष्ठा करने के फलस्वरूप अग्नि में झोंक कर हमारी बलि चढ़ा देना चाहता था।

दिन भर की कड़ी मेहनत और परेशानी से हम इतने थक गये थे कि खाना खाते खाते हमारी आंखें झपकी जा रही थीं और हमें जागते रहना कठिन मालूम हो रहा था। खाना समाप्त करते ही हमने इशारों से बताया कि हम सो जाना चाहते थे। दास हमको ले चले और हम

में से प्रत्येक को अलग अलग कमरा दिया गया, लेकिन हम ने इशारों से यह बताया कि हम दो दो एक कमरे में सोयेंगे। आकस्मिक हमले के डर से अमारलोपागस ने अपनी इन्कूसीकास के साथ केन्द्रीय हाल में हमारे सोने के कमरों में खुलने वाले दरवाजे पर झूलते परदे की आड़ में छुप कर सोने का प्रस्ताव किया और हमने भी इसके प्रस्ताव को फ़ौरन मान लिया। एक कमरे में टिके कुंवर साहिब और अलफान्सो और दूसरे में था मैं और कैप्टिन प्रसाद। कमरों में पहुँच कर हमने अपनी भिल्लमों के अलावा अपने सब कपड़े उतार दिये। भिल्लमें हमने इस लिये नहीं उतारीं क्योंकि हमारे विचार से उनको पहने रहना ठीक था। कपड़े उतार कर हम नीची गद्देदार कोचों में धंस गये और रेशम से फुलकारी किये हुए रेशमी लिहाफ ओढ़ लिये।

कोई चार पांच मिनट बाद अभी मेरी आंख ही लगी थी कि कैप्टिन की आवाज़ ने मुझे जगा दिया।

"लाल साहिब, ज़रा सुनि येतो", कैप्टिन कह रहे थे, "आपने कभी इतनी सुन्दर आंखे देखी थीं ?

"आंखें ? मैंने ज़रा खिजला कर कहा, "आंखें, किसकी आंखें ? क्या कह रहे हैं कैप्टिन ? "

"अरे और किसकी, सम्राज्ञी की आंखें। मेरा मतलब है सम्राज्ञी सोरियास की आंखें। शायद यही नाम था उनका लाल साहिब।"

"मुझे कुछ नहीं मालूम", मैंने जम्हुआई लेते हुए कहा, मैंने कोई ध्यान नहीं दिया था-शायद वह अच्छी आंखें हों", और यह कह कर मैं ऊंघ गया। कोई पांच मिनट तक खामोशी रही मगर मुझे कैप्टिन की आवाज ने फिर जगा दिया।

वह कह रहे थे ' लाल साहिब......... ।

"सोने भी दोगे या नहीं; अब क्या मुसीबत आई", मैंने झल्ला कर कहा।

"लाल साहिब, आपने उसकी कलाइयाँ देखी थीं। कैसी गोरी और गोल...। अब तो मेरे धैर्य का बांध टूट गया। मैंने अपने सिरहाने से तकिया जैसी चीज़ निकाल कर कैप्टिन के ऊपर ज़ोर से फेंक कर दे

मारी और शायद वह उनके लगी भी क्योंकि मुझे एक दबी घुटी सी हाय सुनाई दी।

और फिर मैं तो सो गया और मुझे अपने तन बदन का होश नहीं रहा। रही कैप्टिन की बात मुझे नहीं मालूम कि उन को नींद आई या नहीं या वह वह साम्राज्ञी सोरियास की याद में रात भर कड़ियां ही गिनते रहे। कैप्टिन को हर किसी स्त्री पर आशिक़ हो जाने का मर्ज़ है और उनके स्वभाव को जानते हुए मैंने भी कोई विशेष चिन्ता नहीं की।

अध्याय १३

ज़्यूवैण्डी देश और उसके निवासी

किसी ने कहा है कि सोया और मरा बराबर होता होता है इसलिये हमारे गहरी नींद में सो जाने से इस विचित्र नाटक पर कुछ देर के लिए पटाक्षेप हो गया। जिन व्यक्तियों की कल्पना शक्ति तेज़ है और जो नवीन घटनाओं की कल्पना कर सकते हैं वह शायद सम्राज्ञी निलिप्या को राजसी पलंग पर पड़े करवटें बदलते देख सकते होंगे; दास दासियों से घिरी, सशस्त्र स्त्री पहरेदारों की सतर्क निगाहों के सामने, राजसी ठाट बाट और वैभव के बीच भी उसे शायद नींद नहीं आ रही होगी और संभव है उसे रह रह कर अजनबियों का ख़याल सता रहा होगा। उन अजनबियों का जो इतने विचित्र तरीक़े से उस देश में आ गये थे जहां आज तक कोई अजनबी नहीं आया था। वह कौन थे, कहां से आये थे। उनकी मंशा क्या था। उनका जीवन स्तर क्या था, इस देश की स्त्रियां और ख़ास कर वह स्वयं उनको कहीं बुरी तो नहीं लग रही थी इत्यादि विचार उसके अर्ध विकसित मस्तिष्क में चक्कर मार मार कर उसे सोने नहीं दे रहे होंगे और उसके दिल पर न जाने क्या बीत रही होगी, इत्यादि। लेकिन क्योंकि मैं कवि नहीं हूँ और न कवियों का सा हृदय ही मैंने पाया है इसलिये मेरा इन सारी बातों पर ध्यान देने का कुछ भी फल नहीं निकला और मैं इन जटिल उलझनों को सुलझा न सका। पर आइये हम अवसर का लाभ उठा कर मैं आप को इस देश और उसके निवासियों के संबंध में कुछ बता दूं। लेकिन शायद यह कहना अप्रसांगिक न होगा कि यह सब हाल बाद को मालूम करके लिखा गया है।

पहली बात तो है इस देश के अद्भुत नाम की। इस देश का नाम है ज़्यू वैण्डी। इस देश की भाषा में "ज़्यू" का अर्थ है "पीला"

और" वैण्डी" का अर्थ है "देश या स्थान" । इस देश का नाम "पीत देश" क्यों पड़ा इस बात का पता मुझे बहुत छान बीन करने पर भी नहीं लग सका है और न यहाँ के निवासी ही इस संबंध में कुछ जानते हैं। इस देश का यह नाम पड़ने के साधारणतया तीन कारण बताये जाते हैं और प्रत्येक कारण ठीक मालूम होता है।

पहला कारण यह बताया जाता है कि इस देश की भूमि से बहुत अधिक मात्रा में सुवर्ण निकलने के कारण ही इस देश का नाम "पीत देश" पड़ गया था। और इस कथन में कोई संदेह भी नहीं है, क्योंकि यदि इस देश को सुवर्ण भूमि कहा जाये तो भी अतिशयोक्ति न होगी। यह अमूल्य धातु इस देश में इतनी मात्रा में मिलती है जितनी कि मैंने न देखी न सुनी है। इस समय तो सुवर्ण प्रस्तर चट्टानों से निकाला जाता है, इन खानों को हमने बाद को देखा भी, यह खानें मिलोसिस नगर से एक दिन की यात्रा दूरी पर हैं। यहाँ सुवर्ण अधिकतर प्रस्तर चट्टानों में ढेलों के रूप में मिलता है और आधी छटांक से चार सेर वजन तक के ढेले इन प्रस्तरों में मिलते हैं। ऐसी ही और दूसरी खानें इस देश के अन्य भागों में भी पाई जाती हैं और इसके अतिरिक्त अनेकों स्थानों पर सुवर्ण युक्त विशाल क्वार्टज चट्टानें भी पाई जाती हैं। न्यू वैण्डी देश में चांदी के मुकाबिले सुवर्ण इतनी अधिक मात्रा में और इतनी साधारणतया पाया जाता है कि इस देश में सुवर्ण के स्थान पर चांदी का सिक्का ही चलता है।

इस देश के 'पीत देश' नाम पड़ जाने का दूसरा कारण यह बताया जाता है कि साल के किसी ख़ास मौसम में इस देश में उगने वाली सारी घास, यह घास खाने में बहुत मीठी और रसीली होती है, पके अनाज की तरह बिल्कुल पीली पड़ जाती है।

तीसरे कारण का आधार एक रिवायत है जिसके अनुसार इस देश के निवासी इस देश में आ कर बसने से पहले पीले रंग के या पीत वर्ण थे और सहस्रों वर्षों से इस ऊंचे पठार पर रहते रहने के कारण उनका वर्ण श्वेत हो गया। न्यू वैण्डी देश क्षेत्रफल में भारतवर्ष के मध्य प्रदेश के बराबर है और उसका आकार कुछ अण्डाकार है।

भू रचना और प्राकृतिक बनावट में भी वह देश मध्यप्रदेश से बहुत मिलता जुलता है। मध्यप्रदेश की भाँति ही यह भूमि खण्ड भी चारों ओर से दुर्भेद पहाड़ों, ऊबड़ खाबड़ घाटियों, असीमित जंगलों और पार न कर सकने योग्य कंटीले झाड़खण्डों के होने के कारण ज्यू वैण्डी देश अफ्रीकन महाद्वीप के अन्य भागों से बिल्कुल अलग हो गया है। कहा जाता है कि इन दुर्भेद पहाड़ों, असीमित जंगलों और कटीले झाड़खण्डों के परे सहस्रों मील तक रेगिस्तान, घास के मैदान और बर्फ़ से लदे पहाड़ फैले हुए हैं। संक्षेप में यह देश एक बहुत विशाल ऊंचा पठार है जो कि अफ्रीका के अन्ध महाद्वीप रूपी समुद्र में एक द्वीप की भाँति ऊपर खड़ा हुआ है। अफ्रीका के महाद्वीप में ऐसे ऊंचे पठारों की कमी नहीं है, दक्षिण अफ्रीका का प्रसिद्ध टेबिल पटार इसी भाँति जंगलों और कटीले झाड़खण्ड के बीच सिर उठाये खड़ा हुआ है। मिलोसिस का नगर हमारे जेबी वायु शून्य बैरोमीटर के अनुसार समुद्र की सतह से ६०००, फुट की उंचाई पर बसा हुआ है। इस देश के कुछ भाग इससे भी अधिक ऊंचे हैं और अधिक से अधिक उंचाई जो मैंने इस देश में पाई वह कोई ११००० फुट से भी ऊंची थी। इस उंचाई का परिणाम यह है कि इस देश की जलवायु काफ़ी ठण्डी है और काश्मीर के समान स्फूर्तिदायक और सुन्दर है।

इस देश की भूमि बहुत अधिक उपजाऊ है, प्रत्येक अनाज और समशीतोष्ण जलवायु मे पैदा होने वाले प्रायः सभी फल यहाँ उत्पन्न होते हैं, साथ ही समशीतोष्ण जलवायु में उगने वाले मुलायम लकड़ी वाले वृक्ष, जिनकी लकड़ी इमारती काम में आती है, पाये जाते हैं। निचले भाग में कड़े छिलके वाली ईख तक पैदा होती हैं पहाड़ों में पत्थर का कोयला बहुत पाया जाता है और किसी स्थान पर तो यह कोयला प्रस्तर पृथ्वी को फोड़ कर बाहर निकल आया है। इसी तरह संगमरमर भी यहां बहुतायत से निकलता है, काला सफ़ेद और चित्तीदार संगमरमर यहां पाया जाता है। चांदी के अलावा और सभी धातुये ऐसी ही अत्यधिक मात्रा में इस देश मे निकलती हैं। केवल चांदी ही बहुत कम पाई जाती है और ज्यू वैण्डी की उत्तरी सीमा पर स्थित पहाड़ों से निकाली जाती है।

न्यू वैण्डी देश की सीमा के अन्दर कई प्रकार की भू रचना पाई जाती है। बर्फ़ से लदे पहाड़ों की दो श्रेणियां भी इस देश में हैं। एक श्रेणी कांटेदार झाँड़ खण्ड से परे पश्चिमी सीमा पर है और दूसरी ने उत्तर से दक्षिण तक को फैल कर देश को दो भागों में बांट दिया है। यह श्रेणी मिलोसिस नगर से ८० मील की दूरी पर है और इस नगर से इस श्रेणी की बर्फ़ से लदी चोटियां साफ़ दिखाई देती हैं। यही पर्वत श्रेणी जल विभाजक का काम भी करती है। इस देश में तीन बहुत बड़ी बड़ी झीलें हैं, सब से बड़ी वही है जिस में हम जा निकले थे और जिस का नाम मिलोसिस नगर के नाम पर झील मिलोसिस है। यह झील २०० वर्ग मील में फैली हुई है। इन तीन झीलों के अतिरिक्त छोटी मोटी तो बीसियों झीले हैं और कुछ का पानी खारी भी है।

इस सुन्दर देश की जनसंख्या क्षेत्र फल को देखे काफ़ी घनी है, साधारण अटकल से जनसंख्या कोई एक करोड़ सवा करोड़ के लगभग है। यहां के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य है और सभ्य देशों की भांति यहां भी कई मुख्य सामाजिक वर्ग हैं। एक वर्ग है कुलीन धनी सामन्तों का, फिर आता है बहुत बड़ा मध्यम वर्ग जिसमें मुख्यतया व्यापारी, दुकानदार, सरकारी कर्मचारी फौजी अफ़सर इत्यादि शामिल हैं, परन्तु देश की अधिकतर जनसंख्या उन धन सम्पन्न कृषकों की है जो सामन्तों की ज़मीनों पर कृषि कार्य करते हैं और एक तरह से ज़मीदारों से मौरूसी पट्टा लिये हुए किसान हैं। जैसा मैं पीछे किसी स्थान पर बता आया हूँ इस देश के सब से सभ्य और सुसंस्कृत शुद्ध श्वेत जाति के वह व्यक्ति हैं जिसका नमूना मैंने सम्राज्ञी निलिप्था और ऐगौन में देखा था और जिनके मुख की गठन पुस्तकों में लिखी शुद्ध आर्य जाति से मिलती जुलती है। केवल कुलीन भद्र परिवारों के व्यक्तियों में आर्य जाति के विशिष्ठ लक्षण गुण दिखाई देते हैं, साधारण जनता का रंग खुलता गेंहुआ है। मुख की आकृति और बनावट उन की भी शुद्ध आर्य मालूम होती है परन्तु पीढ़ियों से खुले आकाश के नीचे रहने और परिश्रम करने से उनका रंग मंद पड़ गया है। इन दोनों वर्गों में केवल इतना ही अन्तर हैं जितना भारतवर्ष की पश्चिमोत्तर सीमा पर रहने वाले

शुद्ध आर्य रक्त वाले क़बायली पठानों और मध्य पंजाब के देहातों में रहने वाले जाटों और गूजरों में पाया जाता है।

इस जाति की उत्पत्ति के सबंध में निश्चय रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। उनके लिखित राज्यपत्रों और इतिहास में भी जो १००० वर्ष से अधिक के नहीं हैं इस संबंध में कुछ नहीं लिखा हुआ है। इन काग़ज़ों में दर्ज सबसे पुरानी दंत कथा सिर्फ़ इतना ही बताती है कि उस समय भी उस देश के लोगों में यह रिवायत फैली हुई थी कि वह किसी बहुत पुराने समय में किसी दूर पूर्वीय देश से निकाले जा कर यहां आ बसे थे। यह रिवायत अब भी काफी आम है परन्तु इसकी सत्यता को परखने का हमारे पास कोई साधन नहीं है। सच तो यह है कि न्यू वैण्डी जाति का अतीत कालीन इतिहास समय के गर्भ में विलीन हो चुका है और इसलिये बिल्कुल अज्ञात है। यह जाति कहां से आई, कब आई, वह किस मनुष्य जाति से थे इत्यादि बातों को कोई नहीं जानता।। उनकी वास्तु कला उस शैली से मिलती जुलती है जिसे आज का सभ्य संसार गांधार शैली के नाम से पुकारता है, परन्तु यह निश्चय रूप से कहा सा सकता है कि इस समय यह शैली शुद्ध रूप में यहां नहीं है उस में अन्य शैलियों का मिश्रण हो गया है और मिस्री और असुर शैलियों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। गृह निर्माण की वर्तमान शैली आज से कोई ८०० वर्ष पहले शुरू हुई थी, उस पर मिस्री कला की छाप स्पष्ट है परन्तु मिस्री तत्व ज्ञान और रीति रिवाजों का इस में लेश भी नहीं है। इनकी मूर्ति कला संसार में बेजोड़ और अनोखी है। भावों का चित्रण उस में इतनी सुन्दरता से किया गया है कि देख कर दांतों तले उंगली दबा लेनी पड़ती है। सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को भी नहीं छोड़ा गया है। परन्तु सूक्ष्मता के साथ उसमें विशालता भी पाई जाती है। इतनी विशाल मूर्तियां संसार के किसी भी देश में नहीं पाई जाती हैं। केवल सुदूर पैसिफिक महासागर के निर्जन ईस्टर द्वीप में लाखों की संख्या में पड़ी हुई मनुष्य मूर्तियां ही इतनी विशाल हैं और इतनी ही सुन्दरता से सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को दिखाती हैं। ऐसी ही मूर्तियां जावा (यव द्वीप) के बोरोबुदूर तथा कम्बोडियाके अंगकोर वाट स्थानों में पाई जाती हैं। बाबुल और निनिवा नगरों से खोद कर निकाली हुई मूर्तियां

भी कुछ इसी तरह की हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिका के पीरू, मैक्सिको, गुटामेला, हौण्डुरास प्रभृति देशों में मिली मूर्तियां इसी तरह की हैं। प्राचीन इन्का, ऐज़टेक तथा माया जातियों के बनवाये राज्य-भवन तथा बसाये नगर भी प्रायः इसी शैली के हैं और यह निश्चय रूप से सिद्ध हो चुका है कि यह जातियां सूर्य पूजक आर्य जातियां थीं जो अपनी मातृ भूमि उत्तर कुरु प्रदेश से निकल कर संसार के कोने कोने में फैल गई थीं। अमृत मंथन के बाद और मनु का ओघ उतर जाने पर अपनी मातृ भूमि से निकल कर यह आर्य कुल नये देशों और प्रान्तों को अधिकृत करने के लिए निकल पड़े थे। संभव है कि ऐसे ही किसी आर्य कुल ने ज्यू वैण्डी जाति की नींव डाली हो।

बड़े आश्चर्य की बात है कि ज्यू बैण्डी के निवासी भूमिधर होने के साथ साथ बहुत जीवट के सिपाही भी हैं। जिस सरलता से वह हल की मूंठ पकड़ते हैं उसी सरलता से वह तलवार की मूंठ भी पकड़ सकते हैं। अपनी एकान्तता और निर्जन स्थिति के कारण दूसरे देशों पर हमला न कर सकने से उन्हें लड़ाई करने का अवसर कम मिलता है, परन्तु सामन्त कभी कभी आपस में ही लड़ाइयां कर डालते हैं और यह युद्ध बड़े भयानक होते हैं, और इन्हीं युद्धों के कारण इस देश की जनसंख्या धरती की उत्पादन शक्ति से अधिक नहीं बढ़ने पाती है यह युद्ध देश की राजनैतिक परिस्थितियों के कारण होते हैं। यहां की शासन पद्धति प्रायः ऐकात्मक है, सिवाय इसके कि राजा के ऊपर धर्म गुरु और बड़े सामन्तों की अनियमित सभा का कुछ अंकुश सा रहता है। परन्तु कुछ मामलों में राजा की आज्ञा देश के कोने कोने में आंख मींच कर नहीं मान ली जाती है। यहां की राज पद्धति यद्यपि सामन्त शाही है परन्तु गुलाम या दास बनाने के तरीक़े यहां कोई नहीं जानता है। सारे सामन्त प्रायः स्वतन्त्र हैं और केन्द्रीय सरकार की नाम मात्र आधीनता माने हुए हैं, और उनमें से कुछ तो बिल्कुल स्वतन्त्र हैं, उन्होंने तो इस नाम मात्र बन्धन को भी तोड़ दिया है। प्रत्येक सामन्त अपने प्रान्त का स्वतन्त्र शासक है और उनको प्राण दण्ड देने या जीवन दान देने के अधिकार हैं। वह अपनी इच्छानुसार अन्य सामन्तों से युद्ध भी छेड़ सकते हैं और मित्रता का नाता भी जोड़

सकते हैं, और कभी कभी अवसर आने पर अपने सम्राट या सम्राज्ञी, जैसा भी अवसर हो, के विरुद्ध बग़ावत का झंडा भी खड़ा कर सकते हैं और केन्द्रीय राजधानी से दूर स्थित अपने सुरक्षित क़िलों और गढ़ियों में बैठ कर वर्षों तक राजाज्ञा को ठुकराते भी रह सकते हैं।

भारतवर्ष की तरह ज्यू वैण्डी में भी कुछ ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने अयोग्य राजाओं को हटा कर उनके स्थान पर योग्य व्यक्तियों को राजा बनाया है। यहां के इतिहास को देखने से मुझे मालूम हुआ कि गत १००० वर्षों में ज्यू वैण्डी के सिंहासन पर आठ राज्य वंश राज्य कर चुके हैं। उनमें से प्रत्येक का संस्थापक किसी न किसी सामन्त परिवार से ही हुआ है और जिसने अवसर आने पर अन्य विपक्षियों को भयानक युद्धों में हरा कर राज्य सिंहासन प्राप्त किया था। जिस जीदार के हाथों में शक्ति और तलवार होती थी, जिसके साथ दस बीस मर मिटने को तय्यार दोस्त होते थे वही अपनी तलवार के बल पर एक राज्य वंश की नींव रख देता था। इस तरह ज्यू वैण्डी के सिंहासन पर अनेकों राज्य वंश राज्य कर चुके हैं। जिस समय हम इस देश में पहुँचे थे उस समय राजनैतिक परिस्थिति बहुत सुधरी हुई थी और सैकड़ों वर्षों की गड़बड़ी के बाद अब जा कर कुछ सुख शान्ति फैल पाई थी। अन्तिम सम्राट, सम्राज्ञी निलिप्था और सोरियास का पिता, बहुत ही योग्य और शक्ति शाली शासक था और इस कारण उसने अपनी तलवार के बल पर धर्म गुरुओं, पुजारियों और सामन्तों की शक्ति को मलियामेट कर दिया था।

हमारे ज्यू वैण्डी पहुँचने से दो वर्ष पहले उसकी मृत्यु हो गई थी और कोई पुत्र न होने के कारण उसकी दोनों जुड़वां पुत्रियां उस देश की रीति के अनुसार सिंहासन पर बैठाई गईं, क्योंकि दोनों में से किसी को भी राज्याधिकार से वंचित करने का नतीजा होता गृह युद्ध, भीषण गृह युद्ध, परन्तु इतने थोड़े समय में ही उस देश के विचारवान व्यक्तियों को यह साफ़ दिखाई दे रहा था कि यह प्रबन्ध बहुत ही असन्तोषजनक था और सभी का यह विचार था कि ऐसा प्रबन्ध कभी भी स्थाई नहीं रह सकता था, किसी न किसी दिन इसमें अवश्य ही निश्चय रूप से झगड़ा पड़ना था। और इस झगड़े की संभावना इस बात से भी

थी कि कुछ महत्वाकांक्षी सामन्त इन दोनों बहिनों में से किसी से विवाह कर के सारे राज्य पर क़ाबू जमाने की गुप्त साजिशें कर रहे थे, चारों ओर चालबाजी और गुप्त साजिशों का बाजार गरम था और इसी के कारण सारे देश में बेचैनी सी फैली हुई थी। साधारणतया लोगों का यह विश्वास था कि बहुत शीघ्र ही बड़ा भयंकर गृह युद्ध होने को था। गृह युद्ध के बादल निश्चय रूप से क्षितिज पर घिरने लगे थे।

अब मैं आप को न्यू बैण्डी देश के धर्म के बारे में बताता हूँ। यहां का धर्म बहुत सरल और सीधा है और भगवान सूर्य की उपासन उसका मुख्य अंग है। असभ्य जातियों की भाँति इनका धर्म कोरे अन्ध विश्वासों और निरर्थक रूढ़ियों पर निर्भर न होकर दृढ़ धार्मिक भावनाओं पर स्थापित है और इन भावनाओं के पीछे है एक समुन्नत विचार-धारा इनके धर्मानुसार सूर्य किसी अज्ञात शक्ति का साक्षात और प्रत्यक्ष रूप है और सूर्य की उपासना करना उस आदि शक्ति की आराधना करना है। मंत्रों के उच्चारण के साथ भगवान सूर्य की आराधना की जाती है। उपासना का तरीका है जय और बलिदान। नियत समय पर विभिन्न मंत्रों के उच्चारण के साथ भगवान सूर्य के पार्थिव प्रत्यक्ष रूप अग्नि में बलि देकर भगवान सूर्य की आराधना की जाती है। भगवान सूर्य की उपासना न्यू बैण्डी के निवासियों के सामाजिक जीवन में इस प्रकार घुल मिल गई है कि उनका कोई कार्य कोई कृत्य इस धामिकता से बचा नहीं है। इनका जीवन धार्मिकता पर निर्भर है और जन्म से लेकर मृत्यु और मृत्यु के पीछे तक इनके सभी काम धर्मानुसार होते हैं।

जन्म से लगा कर मृत्यु तक न्यू बैण्डी के निवासियों के जीवन का प्रत्येक क्षण भगवान सूर्य और उनके प्रभाव से मुक्त नहीं रहता है। शिशुवस्था में उसे भगवान सूर्य के सामने रख कर उसका जीवन उस आदि शक्ति के सत् चित्त आनन्द और शक्ति तथा बल के प्रत्यक्ष प्रतीक भगवान सूर्य के प्रति समर्पित कर दिया जाता है। यह संस्कार हम हिन्दुओं में होने वाले यज्ञोपवीत संस्कार से मिलता जुलता होता है और इसके द्वारा बालक को धर्म पर आरूढ़ रहने का आदेश दिया जाता है। साथ ही उसे सूर्य जैसा तपस्वी, तेजवान और अपने प्रकाश से दूसरों का भला करने वाला असीम परोपकारी बनने का उपदेश

दिया जाता है। सूर्य के प्रज्वलित और तेजस्वी पिंड को दिखा कर उसको साक्षात् तथा प्रत्यक्ष देवता और शक्ति का आदि स्रोत बताया जाता है और सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय उसकी आराधना कर के उसे अर्घ्य देने का आदेश दिया जाता है। भारतवर्ष में भी प्रायः सभी हिन्दू सूर्य को जल से अर्घ्य देते हैं और स्नान के बाद तो सूर्य को अर्घ्य दिये बिना पूजन होता ही नहीं है। प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में भी सविता सूर्य की बहुत महिमा गाई गई है और विष्णु सहस्र नाम ने उस आदि शक्ति भगवान का एक नाम सूर्य या आदित्य भी है। ऋगवेद में प्रातः कालीन ऊषाः की प्रशंसा में सैकड़ों मंत्र हैं और उसे प्राणदायिनी और जावन सूर बता कर उसका गुण गान किया गया है। भगवान सूर्य की उपासना भारतवर्ष में ११ वीं सदी तक होती आई है। काश्मीर का मार्तण्ड मन्दिर आज भी जीर्णावस्था में खड़ा इस सत्य को बता रहा है। मुल्तान का प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर ११ वीं सदी तक अपनी शान शौकत से खड़ा था जब कि बर्बर मुसलमानों ने कला के उस उत्कृष्ट नमूने को तोड़ कर धूल में मिला दिया। भुवनेश्वर का सूर्य मन्दिर आज भी अपने पूर्ण वैभव से सिर उठाये इस सत्य को प्रमाणित कर रहा है। सूर्य की उपासना प्राचीन आर्यों का आदि धर्म था, इसी कारण उन्होंने अपनी उत्पत्ति सूर्य से बता कर उससे और भी पास का नाता जोड़ा था। यह सूर्यवंशी सम्राट भारतवर्ष के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध हो गये हैं। इसी वंश के राजा रघु ने समस्त पृथ्वी विजय की थी, इसी वंश में हुये थे महाराजा सगर जिन्हों ने भारतभूमि को मलेच्छों से पवित्र किया था, इसी में थे महाराजा भागीरथ जो पुण्य सलिला भागीरथी को स्वर्ग से मैदान में लाये थे, इसी वंश में हुए थे भगवान राम जिन्होंने भारतभूमि से विदेशियों को निकाल कर एकच्छत्र साम्राज्य स्थापित किया था और देश बिदेशों को जय किया था। इन्हीं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजाओं में से अनेकों ने भारतवर्ष से बाहर जा कर साम्राज्य स्थापित किये थे। परम दानी महाराज शिवि ने बिलोचिस्तान में राज्य स्थापित किया था, पौरव वंश के अजमीढ़ के पुत्र नील ने सुदूर पच्छिम में रेगिस्तान के बीच अपना राज्य स्थापित कर के उस नदी को अपना नाम दिया

जो आज भी उनके नाम पर नील नदी कहलाती है। विष्णु पुराण के अनुसार सूर्य वंश के सम्राट रैवत के १०० पुत्रों में से ६६ ने संसार के विभिन्न भागों में राज्य स्थापित किये थे। इसीलिये इस सुदूर रेगिस्तान के बीच पूर्ण विकसित आर्य सभ्यता के अवशेष मिलना कुछ आश्चर्य की बात नहीं है। ज्यू बैण्डी देश के निवासियों के धार्मिक विश्वास, रीति रिवाज और विचार धारा प्राचीन आर्य सभ्यता से मिलती जुलती है। इसमें अब मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि यह जाति भी उसी महान् आर्य जाति वृक्ष की एक शाखा है जो किसी समय संसार के त्येक देश पर छा गया था, सुदूर पूर्व ईस्टर द्वीप से लगा कर पच्छिम मे पेरू और मैक्सिको तक इस सभ्यता का बोल बाला था। यह विश्वस्त रूप से कहा जा सकता है कि यह ज्यू बैण्डी जाति भी आर्य वंश कुल से है और इसकी सभ्यता ऋगवेद कालीन आर्य सभ्यता है।

बाल्यावस्था में प्रत्येक बालक अपनी मां की 'काफ' या साड़ी का आँचल थामे अपने नगर के सूर्य मन्दिर को जाता है। वहाँ ठीक दो पहर के समय जब कि भगवान सूर्य की सीधी किरणें मन्दिर के बीचों बीच स्थापित सुनहरी वेदी पर पड़ती हैं और अपनी प्रज्वलित अग्नि उर्मियों से उस वेदी पर निरन्तर जलने वाली अग्नि की लपट को धूमिल कर देती हैं तो वह बालक श्वेत वस्त्रधारी पुजारियों को भगवान आदित्य की प्रशंसा में गहन गंभीर स्वर से मंत्र गान करते सुनता है और फिर उपस्थित जनता को भूमि पर लेट कर दण्डवत प्रणाम करते देखता है और तब सुनहरी तुरहियों के नाद घोष में वेदी के नीचे बने विशाल अग्नि कुंड में, जिसमें निरंतर आग धधकती रहत रहती है, बलि चढ़ाते देखता है। इस पूज्य कृत्य को देखने के बाद पुजारी भोग प्रसाद दे कर उसे द्विवर्ण घोषित कर देता है और उसे देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए जान तक न्यौछावर कर देने का आदेश देता है। युवावस्था में इसी वेदी के सामने उसका विवाह संस्कार होता है और विवाहित जीवन के कटु और असफल हो जाने पर इसी वेदी के सामने वह अपनी पत्नी को तलाक दे कर संबंध विच्छेद भी कर सकता है। इस तरह सूर्य और उसकी उपासना

उनके जीवन के प्रत्येक क्षण में ऐसी गुंथ जाती है कि उनका कोई काम भी धार्मिक भावना से अलग नहीं होता है। उनका संपूर्ण जीवन धर्म पर अवलंबित रहता है।

इसी तरह उन का जीवन चक्र चलता रहता है और जीवन यात्रा समाप्त करने पर उसे फिर यहीं आना होता है। उस के सम्बन्धी उसे अर्थी पर रख कर वहां लाते हैं और पूर्व की ओर बनी वेदी के सामने लगे पीतल के फर्श पर वह अर्थी रख दी जाती है। और जब अस्त होते सूर्य की अन्तिम किरणें उस शव के मुख पर पड़ती हैं तो यह पीतल का बना फर्श किवाड़ के पल्लों की भांति नीचे को झूल जाता है और शव नीचे धधकते हुए विशाल अग्नि कुण्ड में गिर जाता है और कुछ ही क्षणों में मांस हड्डी मज्जा सभी कुछ अग्नि शिखाओं में स्वाहा हो जाता है।

पुजारी वर्ग को विवाह करने का अधिकार नहीं है, वह जीवन भर अविवाहित ही रहते हैं। देश के धार्मिक भावनाओं वाले पुजारी बनने के इच्छुक सच्चरित्र नवयुवकों तथा किशोरावस्था को पार किये हुए बालकों को उन की या उनके माता पिता अनुमति से पुरोहित वर्ग में ले लिया जाता है और इस तरह यह परम्परा चलती रहती है। मुख्य पुजारी को नियुक्त करने या किसी की इस परम्परा में पद वृद्धि करने का अधिकार सिर्फ उस समय के सम्राट को ही होता है। परन्तु एक बार पद वृद्धि हो जाने के बाद उसे अपने स्थान से हटाने या उस के अधिकारों को छीन लेने की शक्ति सम्राट को भी नहीं होती है और यह कहना कुछ हद तक ठीक ही होगा कि एक तरह से यही पुरोहित वर्ग सारे देश पर हुकूमत करता है। और इस असाधारण प्रभुता के कई कारण हैं। पहला यह कि पुरोहित वर्ग एक सुगठित संस्था है जिसका प्रथम सिद्धांत है आज्ञा पालन और गोपनीयता! इसका नतीजा यह होता है कि प्रधान गुरु द्वारा मिलोसिस नगर मे जारी की हुई कोई भी आज्ञा हवा के पंखों पर सवार हो कर ३००-४०० मील दूर स्थित गांवों और क़स्बे के पुजारियों तक बड़ी शीघ्रता से पहुँच जाती है और वह तुरन्त ही बिना किसी तरह का आगा पीछे किये उस आज्ञा का आंख मूंद कर पालन करते हैं। यही पुरोहित वर्ग इस देश में न्यायाधीशों का काम करता है,

दीवानी और फौजदारी सारे मुकदमे इन्ही के सामने पेश होते हैं, केवल उनके दिये निर्णयों की अपील जिलाधीश के सामने हो सकती है, और जिलाधीश के निर्णय के विरुद्ध सम्राट से अपील की जा सकती है। धर्म विरुद्ध आचरण करने और चारित्रिक अपराधों के सम्बन्ध में इस पुरोहित वर्ग को असीमित अधिकार प्राप्त हैं यह अपराधी को जाति से बाहर तक कर सकते हैं और यह दण्ड, जैसा कि हमारे हिन्दू समाज में है, बहुत ही प्रबल और उपयोगी सिद्ध हुआ है।

इसमें संदेह नहीं कि इस पुरोहित वर्ग की शक्ति और अधिकार प्रायः असीमित हैं और इस स्थान पर यह बता देना अप्रासंगिक न होगा कि यह पुरोहित वर्ग बहुत चतुर है और समय की गति को भली प्रकार पहिचानता है और इस कारण बिना तत्कालीन सम्राटों से झगड़ा किये या उन्हे नीचा दिखाये अपना कार्य बहुत चुपचाप और तेजी से करता रहता है। यह बहुत ही कम अवसर ऐसे आने देते हैं जिसमें उनको अत्यधिक सख्ती या निर्मम कठोरता से काम लेना पड़ता है और ऐसा अवसर आ पड़ने पर वह जिस धनाढ्य और शक्ति सम्पन्न वर्ग की गर्दन मे धर्म का जुआ डाल कर उसके बल बूते पर इस प्रभुत्व को प्राप्त किये हुए हे उस वर्ग को अपने किसी कार्य से क्षुब्ध या उत्तेजित करके अपना शत्रू बना लेने और इस प्रकार अपने प्रभुत्व से हाथ धो बैठने के स्थान पर क्षमा दान कर देना अधिक लाभ दायक समझते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में यह भी संभावना होती है कि कहीं यह प्रभुत्व सम्पन्न वर्ग उन के विरुद्ध विरोध का झंडा खड़ा कर के उनकी शक्ति को सदैव के लिए ही समाप्त न कर दे।

इस पुरोहित वर्ग की प्रभुता का दूसरा कारण यह भी है कि इस देश में इन पुजारी पुरोहितों ने ही विद्या अध्ययन और पठन पाठन का ऐकाधिकार प्राप्त किया हुआ है और अपने ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान के कारण, जिसके द्वारा वह ग्रहणों के लगने और धूमकेतुओं के आने तककी भविष्य वाणी कर सकते हैं, उन्होंने जन साधारण को प्रभावित और आंतकित कर रखा है। ज्यू वैण्डी देश में केवल उच्च श्रेणी के बहुत ही कम व्यक्ति लिखना पढ़ना जानते हैं, परन्तु प्रायः सारा पुरोहित वर्ग लिखना पढ़ना जानता है, और इस कारण यह वर्ग इस देश में विद्वान् समझा जाता है।

सारी बातों के देखते हुए इस देश का क़ानून कोमल, दयालु और अपक्षपाती है परन्तु सभ्य देशों के न्याय शास्त्रों और दण्ड विधानों से बहुत अंशों में भिन्न भी है। उदाहरण के लिए भारतवर्ष में प्रचलित क़ानून के अनुसार धन सम्पत्ति के विरुद्ध किये गये अपराधों के लिए मनुष्य के प्रति किये गये अपराधों से अधिक कड़ी सज़ा दी जाती है, क्योंकि हमारा कानून उन लोगों का बनाया हुआ है जिनके लिए धन ही ईश्वर है और जो धन सम्पत्ति को मनुष्य जीवन से भी कहीं अधिक मूल्यवान समझते हैं। आप अपनी स्त्री को ठोक पीट सकते हैं, अपने बालक को मारते मारते अधमुआ कर सकते हैं और जब तक आप के विरुद्ध रिपोर्ट लिखाई जाये कानून आपको दण्ड नहीं देगा, परन्तु एक जोड़ी जूता चुरा लेने पर आप को सज़ा हो सकती है। कैसा न्याय का उपहास है। परन्तु न्यू वैण्डी देश में ऐसा नहीं है। उनके देश में मनुष्य जीवन धन सम्पत्ति, सुख वैभव के समस्त साधनों और सोने चांदी के ढ़ेरों से कहीं अधिक मूल्यवान है और इन वस्तुओं को हाथ का मैल या चलती फिरती धूप समझा जाता है। मनुष्य जीवन ईश्वर से मिलता है, वही मनुष्य को जन्म देता है, ऐसा वह विश्वास करते हैं, और इस कारण वह मनुष्य को ईश्वर का प्रतिरूप मानते हैं और इसी लिये मनुष्य के प्रति किये गये अपराध उनकी दृष्टि में ईश्वर और धर्म के विरुद्ध किये गये जघन्य अपराध माने जाते हैं। धन सम्पत्ति को मनुष्य पैदा करता है और मनुष्य के उस आदि शक्ति के एक सामान्य और साधारण रूप होने के कारण उसकी बनाई हुई वस्तुएँ आदि शक्ति द्वारा रची वस्तुओं से हेय हैं, ऐसा न्यू वैण्डी का धर्म कहता है। यही कारण है कि न्यू वैण्डी में धन सम्पत्ति और धनिक वर्ग का समाज पर अधिक प्रभाव नहीं है और न धन को ईश्वर ही समझा जाता है। उन की यह विचार धारा सभ्य देशों की विचार धारा से बिल्कुल ही उल्टी है और यह निर्णय करना कि इन दोनों विचार धाराओं में कौन सी ठीक है और कौन सी ग़लत बहुत कठिन है।

हत्या करने की सज़ा मृत्यु दण्ड है, गद्दारी की सज़ा मृत्यु दण्ड है, जालसाज़ी कर के छल से किसी विधवा या अनाथ की सम्पत्ति हथिया लेने, धर्म विरुद्ध आचरण करने और न्यू वैण्डी देश को छोड़ कर

भाग जाने का प्रयत्न करने (यहां पर देश त्यागना भी भीषण पाप माना जाता है) की सजा मृत्यु दण्ड है। प्रत्येक दशा में मृत्यु दण्ड देने का तरीका एक ही है और यह तरीक़ा निस्संदेह बहुत ही भयानक है। अपराधी को वेदी के गर्भ में बने विशाल अग्नि कुण्ड में धधकती अग्नि शिखाओं में जीवित ही झोंक दिया जाता है। अन्य अपराधों के लिए, सुस्ती या हरामखोरी भी यहां अपराध गिना जाता है, यह दण्ड दिया जाता है कि अपराधी को दास के रूप में किसी न किसी सरकारी इमारत के बनाने में मजदूर की तरह काम करना होता है, और सरकारी इमारतें देश के किसी न किसी भाग में बनती ही रहती हैं। इस मज़दूरी के काम से जी चुराने या सजा काल में अन्य अपराध करने पर कोड़े भी लगाये जाते हैं।

न्यू वैण्डी के सामाजिक रीति रिवाज के अनुसार प्रत्येक नागरिक को काफी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता मिली हुई है। जब तक कोई व्यक्ति देश के क़ानून या रीति रिवाज के विरुद्ध कोई अवांछनीय कार्य नहीं करता है उसकी व्यक्तिगत स्वतंन्त्रता बनी रहती है। समाज में बहुपत्नित्व की अनुमति है, पुरुष एक से अधिक पत्नियां रख सकते हैं, परन्तु धन के अभाव से या खर्च न उठा सकने के कारण अधिकतर पुरुष एक ही विवाह करते हैं। देश के क़ानून के अनुसार बहु विवाह करने वालों को प्रत्येक पत्नी के लिए अलग अलग घरों की व्यवस्था करनी होती है। पहली पत्नी मुख्य पत्नी समझी जाती है और उससे उत्पन्न सन्तान अपने पिता का गोत्र धारण करती है। अन्य पत्नियों की सन्तानें अपनी माताओं के गोत्र में गिनी जाती हैं। परतु इसके कारण सन्तान या माता पर किसी तरह का भी लांछन नहीं आता है। इसके अतिरिक्त कभी कभी प्रथम पत्नी विवाह के समय अपने पति से अन्य विवाह न करने की प्रतिज्ञा भी करा लेती है। परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक होने के कारण स्वयं स्त्री वर्ग ही इस बहु पत्नित्व को बनाये रखने की चेष्टा करता रहा है। समाज में प्रथम पत्नी को अधिक सम्मान मिलता है और साधारणतया वह सारे घर पर प्रायः राज्य सा करती है, उस की आज्ञा अमान्य नहीं हो सकती। इस देश में विवाह धार्मिक बंधन न हो कर एक सिविल कंट्राक्ट मात्र है जिस

में दोनों पक्षों को कुछ शर्तें माननी पड़ती हैं और पिता को सन्तान के निर्वाह के लिए धन की व्यवस्था करनी होती है। दोनों पक्षों की अनुमति और इच्छा से विवाह सम्बन्ध टूट भी सकता हैं। विवाह के अवसर पर किये गये कुछ कृत्यों और रस्मों को उल्टे तरीक़े से करने से ही विवाह सम्बन्ध टूट जाता है।

ज्यू वैंग्डी के निवासी साधारणतया बहुत प्रसन्न चित्त, हँस मुख और कोमल हृदय होते हैं। उनकी प्रकृति व्योपारी समुदाय जैसी निर्मम और कठोर नहीं होती है और वह धन को अधिक महत्त्व नहीं, देते हैं। धन का मोह या धन की तृष्णा उन मे प्रायः नहीं के बराबर है, वह केवल इतना धन कमाने की चेष्टा करते हैं जिस से वह अपने उस विशिष्ठ वर्ग के अनुसार अपना रहन सहन रख सकें जिस में उन्होंने जन्म लिया है। अपने विचारों में वहां के निवासी बहुत ही संकुचित और कट्टर हैं और रूढ़ि वाद के पक्के पुजारी हैं। रूढ़ि वाद को छोड़ना या उस में परिवर्त्तन करना उनको पसन्द नहीं है और इसीलिये वह सुधारकों से घृणा करते हैं। उन की राजकीय मुद्रा चांदी है। चांदी के विभिन्न वज़न वाले चौकोर टुकड़े सिक्कों का काम देते हैं, कम मूल्य वाले सिक्के सुवर्ण के बनाये जाते हैं, और यहां सुवर्ण को प्रायः वही स्थान मिला हुआ है जो हमारे देश में चांदी को है। परन्तु अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के कारण चांदी से अधिक सुवर्ण पसन्द किया जाता है और आभूषण गढ़ने तथा सजावट की अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए भी सुवर्ण ही काम में लाया जाता है। व्यापार में वस्तुओं का क्रय विक्रय बहुत कम होता है, साधारणतया बदले से ही काम चलाया जाता है। चीज़ों का मूल्य मुद्रा में न देकर अधिकतर चीज के बदले चीज़ दी जाती है। कृषि कार्य ही देश में सब से प्रमुख व्योपार है। यहां के निवासी बहुत कुशल किसान हैं और उत्तम फ़सलें पैदा करते हैं। पशुओं और घोड़ों की रक्षा करने और उन की नस्ल सुधारने की ओर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है, और मुझे यह कहते तनिक भी संकोच नहीं होता कि यहां जैसे उत्तम घोड़े मुझे अपने देश भारतवर्ष में या अफ्रीका के किसी भाग में देखने को नहीं मिले।

क़ानून की दृष्टि से देश की सारी धरती राज्य की सम्पत्ति मानी जाती है, राज्य के द्वारा ही इस धरती के छोटे छोटे टुकड़े जागीरों के रूप में बड़े जागीरदारों को दिये जाते हैं, यह बड़े जागीरदार उस धरती को छोटे सामन्तों में बांट देते हैं और इसी तरह बंटते बंटते धरती उस किसान के पास आती है जो अपने ज़मींदार के लिए अध-बंटाई पर उस धरती को जोतता बोता है। ज़मीन और बीज ज़मींदार का, मेहनत किसान की, न लगान और न मज़दूरी और पैदावार में आधा आधा। यह है इस देश का काश्तकारी नियम। भारतवर्ष की तरह यहां भी ज़मींदारी प्रथा चलती है और सामन्त शाही का बोल बाला है।

राज्य द्वारा लगाये कर बहुत अधिक हैं। राज्य प्रत्येक व्यक्ति से उस की सारी आय का तिहाई भाग ले लेता है और पुरोहित वर्ग को खर्च करने के बाद अपनी बची आय यानी बचत का पांच प्रतिशत राज्य को देना होता है। इसके साथ साथ यदि कोई व्यक्ति अपनी धन सम्पत्ति खो बैठता है या किसी दैवी आपत्ति के कारण उस पर संकट आ जाता है तो राज्य के द्वारा उस व्यक्ति को उस के सामाजिक स्तर के अनुसार गुज़ारा मिलता है और राज्य ही उसके जीवन निर्वाह का प्रबन्ध करता है। यदि कोई काम से जी चुराता है और जान बूझ कर हरामख़ोरी करता है तो उसे पकड़ कर ज़बरदस्ती किसी सरकारी काम में जोत दिया जाता है और उसके परिवार स्त्री बच्चों की देख रेख राज्य करता है। राज्य ही सारी सड़कें और नगरों तथा कस्बों के मकानों को बनवाता है। सारे मकान एक ख़ास नमूने और डिज़ाइन के बनाये जाते हैं और बहुत कम किराये पर परिवारों को रहने को लिए दिये जाते हैं। राज्य ही कोई २०००० सैनिकों की एक सुसंगठित और हथियारों से लैस फौज रखता है। इन सैनिकों को वरदी राज्य से मिलती है और खाना वह अपने अपने घरों पर खाते हैं। केवल युद्ध काल में उन को राज्य की ओर से भोजन मिलता है। राज्य ही विशेष स्थानों पर पहरेदार और चौकीदार इत्यादि नियुक्त करता है। जैसा ऊपर बताया जा चुका है पुरोहित वर्ग अन्य लोगों के मुक़ाबिले में कम टैक्स देता है, इसके बदले उसको मन्दिरों मे पूजा अर्चा करनी होती है,

धार्मिक रीति रिवाज पूरे करने होते हैं, पाठशालाओं में अध्यापन कार्य करना होता है और अन्य धार्मिक कृत्यों यज्ञ इत्यादि का प्रबन्ध करना होता है। पाठशालाओं से पढ़ाये जाने वाले विषयों का चुनना उनका पाठ्य क्रम निर्धारित करना तथा पठन पाठन के तरीकों को चलाना यह सभी कार्य पुरोहित वर्ग को करने होते हैं। कुछ मन्दिरों की अपनी निजी देवोत्तर सम्पत्ति भी है परन्तु पुरोहित वर्ग को व्यक्ति गत रूप से कोई सम्पत्ति रखने का अधिकार नहीं है।

इन सब बातों पर खूब सोच विचार करने के बाद एक ऐसा प्रश्न उठता है जिसका उत्तर देना बहुत कठिन ही नहीं बल्कि एक तरह से असम्भव है। प्रश्न है कि ज्यू वैण्डी के निवासियों को सभ्य समझा जाय या असभ्य बर्बर? कभी मैं सोचता हूँ कि उनकी गणना निश्चय रूप से सभ्य जातियों में की जानी चाहिये परन्तु कभी कभी मुझे उन के असभ्य जंगली होने का विश्वास होने लगता है। कला कौशल के कुछ अंगों में उन्होंने आज के सब से सभ्य देशों से भी बहुत अधिक दक्षता प्राप्त कर ली है, उदाहरण के लिए उन की भवन निर्माण कला या मूर्ति कला चरम उत्कर्ष को पहुँची हुई है। मेरा विचार है कि जहाँ तक सुन्दरता और कल्पना की उड़ान की बात है उनकी मूर्ति कला का मुकाबिला संसार का कोई भी देश नहीं कर सकता है, वह अपूर्व और अनूठी है। भारत वर्ष की खजुराहो, भुवनेश्वर तथा आबू के दिलवाड़ा के मंदिरों में पाई जाने वाली मूर्तियां ही उनका कुछ कुछ मुकाबिला कर सकती हैं। बोरोबुदूर, अंगकोर वाट, मैक्सिको तथा ईस्टर द्वीप की प्राचीन मूर्तियां भी ऐसी ही सुन्दर हैं परन्तु उन में कल्पना की उड़ान कम है। इस तरह ज्यू वैण्डी की मूर्ति कला अद्वितीय और अनूठी है और इस नाते संसार का कोई भी देश ज्यू वैण्डी के मुक़ाबिले में नहीं टिक सकता। दूसरी ओर यहां के निवासी अन्य बहुत सामान्य तथा साधारण कला कौशलों से बिल्कुल अनजान हैं। कुंवर साहिब के उन्हें सिलिका और चूना मिला कर और भट्ठी में गला कर शीशा बनाने की तरकीब बताने से पहले तक वह शीशा बनाना तक नहीं जानते थे और उन के बरतन भांड़े भी बहुत ही पुराने अन्दाज के हैं।

घड़ी के नाम पर उनके यहाँ एक तरह की जल घड़ी ही सब कुछ है, हमारी जेब घड़ियों को देख कर तो वह मुँह फाड़कर रह गये। उनको भाप की शक्ति, विद्युत शक्ति या बारूद इत्यादि के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है और न उनको पुस्तकों की छपाई और डाक प्रबंध के संबंधमें ही कुछ पता है। इन संघातिक शक्तियोंको न जानने के कारण उनका एक प्रकार से भला ही हुआ है क्योंकि आज के संसार की बहुत सी बुराइयां निश्चय रूपसे इन शक्तियों को मनचाहे रूप में इस्तेमाल करने के कारण ही पैदा हुई हैं। किसी ने ठीक ही कहा है, अधिक ज्ञान ही दुख का कारण होता है।

जहाँ तक उनके धर्म का संबंध है वह रहस्यवाद तथा कठिन और गहन गंभीर तत्व ज्ञान या न्याय शास्त्र की जटिल गुत्थियों से एकदम मुक्त बिलकुल सीधा साधा और प्राकृतिक है। उनके धर्म में सूर्य को किसी अज्ञात सर्व शक्तिशाली आदि शक्ति का प्रत्यक्ष रूप माना जाता है और उसकी उपासना उस आदि शक्ति की उपासना समझी जाती है। सरल सीधा सच्चा धर्म है उनका। उनकी विचार धारा में किसी किसी स्थान पर सूर्य को 'आदि शक्ति का 'आवरण' कहा जाता है, परन्तु इससे उनका क्या मतलब है यह मेरी समझ में अभी तक नहीं आया है। वह सूर्य की प्रज्वलित अग्नि शिखा जैसी उर्मि की उपासना करते हैं। उनके यहाँ सूर्यका दूसरा नाम है 'परलोक की आशा' परन्तु इस शब्द का अर्थ भी कुछ अस्पष्ट सा है और इससे कोई अर्थ साफ समझ में नहीं आता। उनके धर्म में स्वर्ग या मृत्यु के उपरांत मिलने वाले सुख या दुख का भी बहुत कम अस्पष्ट सा अधूरा वर्णन है। उन की धारणा है कि उत्तम कर्म तथा धर्म के अनुसार आचरण करने वाले को मृत्यु के बाद सुख मिलता है, परन्तु यह विचार धारा बहुत ही अविकासित और अपूर्ण है। मृत्यु के उपरान्त मिलने वाले जीवन या कर्मानुसार स्वर्ग या नरक की प्राप्ति होने के संबन्ध में उनके धर्म में स्पष्ट आदेश कोई नहीं है परन्तु बहुत हल्का इशारा मात्र है। धर्म का अंग न होने पर भी विचार वान व्यक्ति इस सम्भावना पर विश्वास करते हैं और इस कारण अपने आचरण को धर्मानुकूल बनाने की चेष्टा करते हैं।

उनकी धार्मिक विचार धारा अपूर्ण और अविकसित है और तक के अभाव में उनके धर्म को पूर्ण विकसित तथा सम्पूर्ण धर्म नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार अपने शैशव काल में आर्य जाति केवल प्राकृतिक शक्तियों जैसे वायु, वरुण, इन्द्र, रुद्र, आदित्य इत्यादि की उपासना करती थी और तत्व ज्ञान के गूढ़ सिद्धान्तों के स्थान पर यज्ञादि का अधिक प्रचलन था वैसा ही कुछ कुछ यहां भी पाया जाता है। उन के धर्म का अध्यधन करने से यह मालूम होता है कि जैसे आर्य जाति के शैशव काल में उसका कोई भाग उस से पृथक हो गया हो और अन्य देशों तथा जातियोंके सम्पर्क में न आ सकने के कारण उनके धर्म का पूर्ण विकास न हो पाया हो और वह अभी पुरातन धर्म के उसी रूप को मानते आ रहे हों। उनका धर्म प्रगति शील नहीं है और शायद इसी कारण उनकी धार्मिक भावनाओं तथा विचारों में बहुत कम परिवर्तन हुआ है। उनके धर्म में विचार के स्थान पर कर्म काण्ड को अधिक महत्व दिया जाता है और इसी कारण उनकी धार्मिक रूढ़ियां, जिन को वेदों में वर्णित यज्ञों का ही रूप कहा जा सकता है, बहुत ही शानदार और प्रभावोत्पादक होती हैं। यज्ञ करना तथा उस में भाग लेना उनके धर्म का विशिष्ठ अंग है।

ज्यूवैण्डी जाति के संबन्ध में अब केवल दो बाते बताने से और रह गई हैं–उनकी भाषा और लिपि। जहां तक उन की भाषा का संबंध है वह बहुत मधुर बहुत कर्ण प्रिय और बहुत कोमल है। उस में भावों की कमी नहीं है और उसका प्रवाह मुक्त है कैप्टिन प्रशाद का' जो अपने विद्यार्थी जीवन में सस्कृत के अच्छे विद्यार्थी थे और जिनका प्राचीन ग्रन्थों का ज्ञान बहुत विशाल है, कहना है कि ज्यू वैण्डी देश की भाषा कुछ कुछ ऋगवेद की भाषा से मिलती जुलती है पर उस से भी प्राचीन है। संसार का आदि ग्रन्थ होने के कारण ऋगवेद की भाषा कालिदास और भवभूति की संस्कृत से बिल्कुल भिन्न है और दोनों में बहुत अन्तर है। संस्कृत का पूरा ज्ञान न होने के कारण मैं दोनों का अन्तर पूरी तौर से बताने में असमर्थ हूँ परन्तु जितनी संसकृत मैंने पढ़ी है उसके आधार पैर मैं कह सकता हूँ कि ज्यू वैण्डी की भाषा सुनने में ऐसी मालूम पड़ती है जैसे पहले कभी सुनी हो। परन्तु कैप्टिन

प्रसाद का कहना है, और उन की विज्ञ तथा विशेषज्ञ राय को मानने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं है, कि यह भाषा निश्चय रूप से आर्य भाषा कुल से है परन्तु इस का रूप ऋग वेद से भी प्राचीन है और दोनों में इतना ही अन्तर है जितना ऋग वेद और कालिदास की भाषा में है। क्रिया पाद भिन्न हैं और संस्कृत की भांति कभी कभी एक ही शब्द पूरे वाक्य का काम देता है। कोई लिखित व्याकरण न होने के कारण भाषा का रूप देश के भिन्न भिन्न भागों में अलग अलग मिलता है और सामन्तों, धनी परिवारों के व्यक्तियों, भगवान् सूर्य के पुजारियों तथा राज्य दरबार से सम्बन्ध रखने वाले अन्य व्यक्तियों की भाषा जन साधारण की भाषा से बहुत भिन्न है। भाषा बहुत सीधी और सरल है और प्राकृतिक ध्वनियों पर निर्भर है और संस्कृत का थोड़ा बहुत ज्ञान होने के कारण हमें उसके सीखने में ज्यादा दिक्कत नही हुई। वाक्य रचना इस की बहुत विचित्र है और प्रत्येक क्रिया का रूप कर्त्ता के अनुसार बदलता जाता है और कभी कभी तो केवल एक शब्द से ही पूरे वाक्य का अर्थ निकल आता है। शब्दों के ठीक उच्चारण पर बहुत ज़ोर दिया जाता है और प्राय उच्चारण से ही लिंग और काल का पता लगता है। इसी कारण यह भाषा गद्य के स्थान पर पद्य लेखन के लिए अधिक उपयुक्त है और यहाँ प्राय. दस पीछे एक व्यक्ति कवि है और उनकी रचनाये बहुत श्रुति मधुर और ओज पूर्ण होती हैं। भाषा का थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद हम उनकी पद्य रचना को समझ कर उस का आनन्द भी उठाने लगे थे।

ज्यूवैण्डी भाषा की लिपि निश्चय रूप से नागरी नहीं है। उनकी लिपि में चित्र लेखन का बहुत कुछ समावेश है। कैप्टन प्रसाद का कहना है कि उनकी लिपि बहुत ही प्राचीन तरह की है और वह आर्यों प्राचीन तम लिपि खरोष्टी से बहुत कुछ मिलती जुलती है। हमें खरोष्टी लिपि की पूर्ण जानकारी न होने से निश्चय रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता परन्तु अक्षरों की बनावट प्रायः वैसी ही है। ज्यूवैण्डी देश की लिपि खरोष्टी लिपि का प्राचीन तम नमूना है और दोनों में बहुत अन्तर होने पर भी आधार मूल दोनों का एक ही मालूम होता है। खरोष्टि विकसित लिपि थी ज्यूवैण्डी की लिपि अविकसित और

मूल रूप में है। उनकी वर्णमाला में ४० अक्षर हैं और कुछ की बनावट तो खरोष्टी वर्णमाला से बिल्कुल मिलती जुलती है। लिखने के लिए तिरछे क़लम के स्थान पर नोकदार कील काम में लाई जाती है और अक्षर सीधे लिखे जाने के स्थान पर तिरछे लिखे जाते हैं। साथ ही लिखावट दाहिनी ओर से बायीं ओर को लिखी जाती है, खरोष्टी लिपि भी इसी तरह लिखी जाती थी। क्योंकि इस देश में नाटक, कहानी, उपन्यास आदि लिखने का कोई प्रचलन नहीं है और सरकारी काग़ज़ पत्र इत्यादि भी बहुत संक्षेप में लिखे जाते हैं इस कारण इस लिपि का बहुत कम इस्तैमाल होता है और बहुत क़म लोग लिखना जानते हैं। परन्तु इससे उन की कोई विशेष हानि भी नहीं होती है, क्योंकि उनको लिखने पढ़ने की आवश्यकता ही बहुत कम पड़ती है।

अध्याय १४

सूर्य मन्दिर में

मिलोसिस नगर में पहुंचने के दूसरे दिन जब मैं सो कर उठा तो उस समय सुबह के ८½ बजे थे, मैं पूरे १२ घन्टे सोतारहा था। इतनी देर तक सोते रहने से मेरी थकान बहुत कुछ दूर हो चुकी थी। थके मस्तिष्क को शान्ति पहुंचाने के लिए नींद अमृत का सा काम करती है और कई दिनों तक भयानक संकटों का मुक़ाबिला करने, लगातार जागते रहने और भरपूर परिश्रम करने से मेरे शरीर का जोड़ जोड़ दुख रहा था। बारह घन्टे तक लगातार सोने के बाद मुझे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे मैं बिल्कुल ही बदल गया होऊँ।

मैं अपनी रेशमी गद्दों से लदी कोच पर उठ कर बैठ गया अपने जीवन भर में मैं ऐसी कोच पर कभी नहीं सोया था उठते ही जिस चीज़ पर मेरी पहले पहल नज़र पड़ी वह थी कैप्टिन प्रसाद का चश्मा जो कि रेशमी लिहाफ़ में से चमक रहा था। कैप्टिन अपने चश्मे में से नज़र गढ़ाये मुझे लगातार घूरे जा रहे थे। उनके चश्मे के अलावा उनके शरीर का और कोई भाग मुझे दिखाई नहीं पड़ रहा था, मगर मैं उन के ताकने से यह समझ गया कि कैप्टिन जाग रहे थे और बातें करने के लिए बड़ी उतावली से मेरे जागने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

"लाल साहिब, आख़िर आप जागे तो सही, मुझे तो ऐसा लगने लगा था कि जैसे आप उठेंगे ही नहीं," कैप्टिन ने उलाहना सा देते हुए कहा, "बुरा न मानियेगा लाल साहिब,आप ने उनकी त्वचा का रंग देखा था ? वह तो संगमरमर जैसी चिकनी और दूध जैसी श्वेत है।"

"देखो भाई कैप्टिन, "मैं कुछ बुरा सा मानते हुए कोई कड़ी बात कहने जा ही रहा था कि मुझे परदे के बाहर पाँव की पैछल सुनाई दी

और परदा हटा कर देखने पर मालूम हुआ कि एक भृत्य खड़ा हमारे जागने की प्रतीक्षा कर रहा था। हम को जगा देख कर उस ने इशारे से बताया कि वह हमें स्नानागार में ले जाने को खड़ा था। हम को भला क्या ऐतराज़ हो सकता था, हम खुशी खुशी उसके पीछे हो लिए। भृत्य हम को संगमरमर के बने एक बहुत सुन्दर स्नानागार में ले गया स्नानागार के बीचों बीच में मोती जैसे स्वच्छ पानी से भरा एक छोटा सा कुण्ड था जिसमें लगातार पानी बह रहा था। एक ओर से पानी की स्वच्छ धार आती थी और दूसरी ओर से निकली चली जाती थी। शौच से निवृत होकर हम ने कुण्ड के शीतल जल में खूब मल मल कर स्नान किया। जो कसर १२ घन्टे की नींद से रह गई थीं वह पूरी हो गई और हमारे शरीर में ताजा रक्त दौड़ने लगा। स्नान करने के बाद हम अपने कमरे को लौट आये और कपड़े पहिन लिये। कपड़े पहिन कर हम बीच वाले हाल में पहुंचे जहाँ हम ने कल शाम को खाना खाया था। यहाँ मेज पर नाश्ता चुना हुआ था और नाश्ता मामूली नहीं था बल्कि भरपेट, खूब भरपेट-नाश्ते की चीज़ें क्या थीं यह तो मुझे मालूम नहीं मगर थीं बहुत स्वादिष्ट।

भरपेट नाश्ता करने के बाद हमारे पास कोई काम नहीं था इस लिए हम कमरों में घूमने फिरने और वहाँ बिछे क़ालीनों, दीवारों चित्रकारी और सजावट की अन्य वस्तुओं को देखते और उनकी प्रशंसा करते रहे। हम सभी को यही चिन्ता थी कि अब होगा क्या ? इस समय हमारा दिमाग़ कुछ भी काम नहीं कर रहा था, क्या होगा यह कुछ समझ ही में नहीं आ रहा था। सच तो यह है कि हम हर परिस्थिति के लिए तैयार थे। यहाँ आने के बाद हम इतनी आश्चर्य जनक वस्तुऐं देख चुके थे कि बड़ी से बड़ी आश्चर्य जमक वस्तु हमें चकित नहीं कर सकती थी। हम कमरों में घूम फिर कर सैर कर ही रहे थे कि अंग रक्षक दल का नायक हमारे पास आया और ज़मीन तक झुक कर सलाम करने के बाद इशारे से हमें पीछे पीछे आने को कहा! हम उसके साथ हो लिये मगर सच तो यह है कि हमारा दिल बुरी तरह धुकड़ पुकड़ कर रहा था और यही चिन्ता हम सब को थी कि देखिये अब होता क्या है ? यह तो हम समझ गये थे कि इन कमबख्त

दरियाई घोंडों को मार कर हम ने जों अक्षम्य अपराध किया था उस का फल भुगतने और कट्टर धर्मान्ध ऐगौन से निपटने का वक़्त आ गया था।

लेकिन अब चारा ही क्या था, कम से कम मुझे तो युगल सम्राज्ञियों द्वारा दिये गये अभय दान के वायदे पर विश्वास था क्योंकि मैं जानता था कि किसी स्त्री का निश्चय अटल चट्टान जैसा होता है, जो बात स्त्री एक बार निश्चय कर लेती है उसे पूरा ही करके छोड़ती है चाहे उसे पूरा करने में उसे सारे संसार का ही मुक़ाबिला क्यों न करना पड़े। त्रिया हठ जगत प्रसिद्ध है, स्त्री का निश्चय एक बार विधाता की आज्ञा को भी पलट देता है। महासती साविन्त्रि ने यमराज तक को नाकों चने चबवा दिये थे, महारानी द्रोपदी ने प्रतिज्ञा की थी कि उसके खुले केश कौरवों के रक्त से ही बांधे जायेंगे तो भगवान् कृष्ण के भरपूर प्रयत्न करने पर भी हुआ वही जो द्रोपदी ने चाहा था। भगवान् कृष्ण असहाय हो गये। सतवन्ती स्त्रियों ने सूर्य की गति तक को रोक लिया है और सती के श्राप से भगवान् तक डरते हैं। इसलिये मुझे विश्वास था कि जिसे युगल सम्राज्ञियों ने एक बार अभय दान दे दिया है उसे बचाने के लिये वह अपनी समस्त शक्ति यहां तक कि अपने राज्य तक की बाज़ी लगा देने से पांव पीछे नहीं हटायेंगे। स्त्री चरित्र की यही दृढ़ता मुझे साहस बधा रही थी। उस समय हमने भी धैर्य से काम लिया और बिना किसी प्रकार की चिन्ता या उत्कण्ठा दिखाये उस नायक के साथ चल दिये। बरामदे में हो कर हम एक छोटे से आंगन में पहुँचे और आंगन पार करके हमें राज्य महल का विशाल दुहरा फाटक मिला। इस फाटक से वह चौड़ी सड़क शुरू होती है जो मिलोसिस नगर के बीचों बीच हो कर एक मील दूर पहाड़ की चोटी पर स्थित सूर्य मन्दिर को जाती है और फिर दूसरी ओर ढाल पर उतर कर नगर के दूसरी ओर बने परकोटे पर समाप्त होती है।

राज्य महल के इस फाटक के पल्ले बहुत बड़े और बहुत वज़नी हैं और धातु के किवाड़ों पर बहुत सुन्दर नक्काशी की हुई है। फाटक के पास राज्य महल का परकोटा दुहरा है, एक फाटक अन्दर वाले परकोटे में है और दूसरा बाहर वाले में, दोनों परकोटों के बीच ४५ फुट का

अन्तर है और इस खाली स्थान में एक गहरी खाई है जो हमेशा पानी से भरी रहती है। दोनों फाटकों के बीच खाई के ऊपर एक ऊपर उठने वाला पुल है जिस को उठाने की मशीन अन्दर वाले फाटक के भीतर है। एक बार पुल को उठा लेने के बाद राज्य महल अजेय हो जाता है और बड़ी तोपों के सिवाय उसे और किसी हथियार से विजय करना असम्भव है। जब हम फाटक पर पहुंचे फाटक आधा खुला हुआ था। फाटक से गुज़र कर हम ने खाई के पुल को पार कियाऔर दूसरे फाटक को पार करके हम संसार की सबसे उत्तम और सब से सुन्दर सड़क पर जा पहुंचे। कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, केपटाउन, कोलम्बो और यहां तक कि लन्दन तक में मैंने इतनी सुन्दर सड़क नहीं देखी थी और यही राय थी कैप्टिन प्रसाद की। क्योंकि वह संसार के प्रत्येक देश में घूम चुके हैं और संसार का कोई बड़ा नगर उनसे नहीं बचा है इसलिए उनकी राय का विश्वास किया जा सकता है। सड़क पूरे १०० फुट चौड़ी है उसके दोनों ओर १०-१० फुट चौड़ेश्वेत संगमरमर के बने फुटपाथ हैं और फटपाथ के बाद २०-२० फुट की दूरी पर लगे हुए हैं चिनार के विशाल वृक्ष। आकाश में दूर तक सिर उठाये चिनार के यह विशाल वृक्ष बहुत भले लगते हैं। चिनार वृक्षों की क़तार के पीछे बहुत सुन्दर इक मंज़िला कोठियां बनी हुई हैं। प्रत्येक कोठी एक दूसरे से बिल्कुल अलग है और सड़क से बराबर दूरी पर हट कर बनी हैं। उनके चारों ओर बहुत सुन्दर बग़ीचे और घास के लान हैं। तमाम कोठियां एक ही नकशे की हैं और लाल आग्नेय पत्थरों (संग खारा) की बनी है। यह कोठियां सामन्तों, दरबार के प्रतिष्ठित व्यक्तियों और राज्य के उच्च कर्मचारियों की हैं और एक मील तक इन कोठियों का अटूट सिलसिला फैला हुआ है। जहां सिलसिला टूटा है वहीं सड़क के अन्तिम छोर पर विशाल सूर्य मन्दिर पहाड़ की चोटी पर राज्य मुकुट की भांति बना हुआ है। सड़क इतनी साफ है कि कहीं एक पता या घास का एक तिनका तक दिखाई नहीं देता है। सूर्य के प्रकाश में सड़क और संगमरमर के फ़ुटपाथ चमचम चमकते हैं।

अभी हम फाटक से निकल कर सड़क की सुन्दरता को आंखें फाड़ कर देख ही रहे थे कि चार रथ धड़धड़ाते हुए आये और

फाटक के सामने आकर रुक गये। प्रत्येक रथ में दो दो बिल्लकुल श्वेत, कान से पूंछ तक श्वेत, घोड़े जुते हुए थे। यह रथ दो पहियों के और लकड़ी के बने होते हैं। आगे की ओर लकड़ी का एक मज़बूत बम्ब लगा होता है जिस में दोनों ओर चमड़े के साज़ से घोड़े जुते होते हैं। रथ के पहियों में सिर्फ चार चार तीलियां होती हैं और लोहे की हाल चढ़ी होती है। कहीं भी कमानी या स्प्रिंग वग़ैरा कुछ नहीं लगी होती है और इसलिए तेज़ दौड़ने पर इतने हिचकोले लगते हैं कि पेट का पानी तक हिल जाता है। रथ में सामने की ओर बीच वाले बम्ब के ठीक ऊपर रथवान के लिए एक छोटी सी गद्दी होती है और रथ के तेज़ चलने पर उसे गिर पड़ने से बचाने के लिए सीट के सामने की ओर जंगला सा लगा होता है। रथ मे पीछे की ओर सवारियों के लिए तीन सीटें होती हैं, दो सीटें अग़ल बग़ल और एक बीच में घोड़े की ओर पीठ किये होती है और इस सीट के बिल्कुल सामने रथ का दरवाज़ा होता है। सूरत शक्ल में यह रथ हमारे भारतवर्ष के देहातों में चलने वाले बे कमानी दार हाल टायर खड़खड़िया तांगों जैसे होते हैं, बनावट हूबहू वही होती है पर रंग रौग़न से फ़र्क मालूम होता है। रथ की बनावट हल्की पर बहुत मज़बूत होती है और उन्दा वार्निश और रंग रौग़न होने के कारण जैसे भद्दे वह लगने चाहियें वैसे लगते नहीं हैं।

इन खड़खड़िया तांगों को देख कर जो तबीयत कुन्द हुई थी वह उन में जुते घोड़ों को देख कर ख़ुश हो गई। घोड़े बहुत जानदार, असील और बहुत ख़ूबसूरत थे। उनका कद मियाना, शरीर हृष्ट पुष्ट, बाल भौंरी ठीक, छोटा सा सुन्दर सिर और बड़े-बड़े गोल सुम थे और मालूम होता था जैसे उन में असीम शक्ति और विद्युत जैसी तेज़ी भरी हुई थी। मै बार बार यह सोचने लगता हूँ कि इस देश में घोड़ों की इतनी सुन्दर और असील नस्ल आई कहां से। परन्तु उन के मालिकों की भांति उनका इतिहास भी अज्ञात है। शायद घोड़ों की यह नस्ल ज्यू बैण्डी जाति के साथ साथ ही किसी अज्ञात देश से वहां आई थी।

पहले और अन्तिम रथों में सैनिक बैठे हुए थे और बीच के दो में रथवानों के अलावा कोई नहीं बैठा था और वह खाली थे। एक में मैं और अल्फ़ान्सो बैठ गये और दूसरे में कुंवर साहिब, कैप्टिन प्रसाद और अमस्लोपागस। हमारे सवार होते ही रथ चल दिये और हम सड़क पर दौड़ने लगे। ज्यू बैण्डी में जीन सवारी में या सवारी में जोत कर घोड़ों को क़दम क़दम या पोंई नहीं चलाया जाता है, हर हालत में घोड़ों को सरपट छोड़ दिया जाता है।

अभी हम ठीक तरह से बैठे भी नहीं थे कि रथवानों ने घोड़ों को चुमकारी दी और दूसरे ही क्षण घोड़े पूरे वेग से सरपट दौड़ पड़े और हमारे रथ तीर की सी तेजी से सड़क पर भागने लगे। बाद को तो हम इस सवारी के आदी हो गये परन्तु उस समय तो यह लग रहा था कि अब गिरे, अब घोड़ा गिरा, अब उसने ठोकर खाई और हमारी हड्डी पसली चूर-चूर हुई। कमबख्त अल्फान्सो के तो होश हवास गुम हो गये, उसने कस कर दोनों हाथों से सीट को जकड़ लिया। उसे हर क्षण यही डर लग रहा था कि अब गिरा, अब रथ पलटा और हड्डियों का सुरमा बना। मगर न जानें उसे सहसा क्या ध्यान आया कि उसने मुझ से पूछा कि यह रथ जा कहां रहे थे और मैंने सीधे साधे शब्दों में बता दिया कि रथ सूर्य मन्दिर को जा रहे थे जहां हमें जीवित ही अग्नि में झोंक कर बलि चढ़ाया जाने को था। यह सुन कर तो उसके रहे सहे होश भी जाते रहे और उसे बाय सी चढ़ गई। उसका चेहरा सफ़ेद बिल्कुल रक्त हीन हो गया और दोनों मूछें पिटे कुत्ते की दुम की तरह नीचे लटक आईं। उसने कस कर रथ की सीट को जकड़ लिया और हाय बिल्ला करनी शुरू कर दी।

रथवान ने पीछे घूम कर अल्फ़ान्सो को चिल्लाते देखा और न जाने क्या समझ कर घोड़ों के एक एक चाबुक और उड़ा दिया और घोड़े हवा हो गये। अल्फ़ान्सों और भी ज़ोर से चिल्लाने लगा मगर घोड़ों की टापों और पहियों की खड़खड़ाहट में उसकी चीख़ पुकार दब गई।

और अब हमारे सामने था अपनी पूरी शान शौकत और अद्वतीय सुन्दरता से चमकता आकाश में गर्व से सिर उठाये सूर्य मन्दिर ज्यूबैण्डी

का महान आश्चर्य—यदि सभ्य संसार को इस मन्दिर का पता होता तो इसे निश्चय रूप से संसार के सात आश्चर्यों में गिना जाता। इस आश्चर्य के बनाने में कई पीढ़ियां लगी हैं और प्रत्येक युग में असंख्य धन और अनगिनती कुशल कलाकारों और कला विशारदों के अनथक परिश्रम का फल है। पिछले ५० वर्षों में यह मन्दिर बन कर पूरा हुआ है और इसकी शान शौकत और सुन्दरता को बढ़ाने में कोई कसर उठा नहीं रखी गई है। इसके बनाने में देश के दूर से दूर कोने में मिलने वाली वस्तुएं भी इस्तेमाल करने से नहीं छोड़ी गई हैं। अतः इतनी कोशिशों का नतीजा यह निकला है कि मन्दिर सर्वांग सुन्दर और मोती जैसा स्वच्छ बन पाया है। केवल अपने विशाल आकार के कारण ही नहीं—आगरे का ताजमहल और बीजापुर का गोल गुम्बज इससे छोटे हैं—बल्कि अद्वतीय अनुपात और संतुलन, सुन्दरता और अतुलनीय बनावट, और उसमें जड़े मूल्यवान पत्थरों तथा रत्नादिकों, उच्च कोटि की कारीगरी और आश्चर्यजनक तथा विस्मय में डाल देने वाले हस्तलाघव और बनावट के कारण यह मन्दिर संसार में अद्वतीय है।

यह विशाल इमारत पहाड़ की चोटी पर अन्य इमारतों से बिल्कुल अलग कोई आठ एकड़ भूमि पर एक सुन्दर बाग के बीच में बनी हुई है। इसके चारों ओर मुख्य इमारत से हट कर पुजारियों वगैरा के मकान बने हुए हैं। इमारत का नक्शा खिले हुए सूरज मुखी के फूल की तरह है और बीच के केन्द्रीय हाल पर विशाल गुम्बद बना हुआ है। इस केन्द्रीय हाल से सूरज मुखी के फूल की पंखड़ियों की भाँति १२ विशाल प्रांगण पहिये की तीलियों की भाँति निकले हुए हैं, प्रत्येक प्रांगण वर्ष के एक मास को बताता है। इन प्रांगणों में उस देश के महान वीरों, महान पुरुषों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों, प्रसिद्ध सम्राटों, कुशल कलाकारों, कवियों तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं की प्रस्तर मूर्तियां उनकी याद को सदैव ताज़ा बनाये रखने के लिए रखी हुई हैं। विशाल गुम्बद के नीचे वाले केन्द्रीय हाल का व्यास ३०० फुट है, गुम्बद की ऊंचाई पूरे ४०० फुट है, प्रत्येक प्रांगण १५० फुट लम्बा है और उनकी ऊंचाई ३०० फुट है। यह पहिये की तीलियों की भांति बने प्रांगण

गुम्बद वाले केन्द्रीय हाल में उसी तरह आ मिलते हैं जैसे सूरज मुखी की पंखड़ियाँ उसके ऊपर को उठे हुए सुनहरी केन्द्र में आ मिलती हैं। गुम्बद वाले केन्द्री हाल के मध्य में बनी मध्य वेदी से इन वृत्ताकार प्रांगणों के अन्तिम छोर की दूरी पूरी ३०० फुट है और यही व्यास केन्द्रीय हाल का है। अर्थात एक प्रांगण के अन्तिम छोर से लगा कर उसके बिल्कुल सामने की ओर बने और पंखुड़ी के रूप में फैले प्रांगण की दूरी ६०० फीट है। ※

समूची इमारत शुद्ध दूध जैसे श्वेत संगमरमर की बनी हुई है और लाल आग्नेय चट्टानों के गढ़े हुए ढोकों से बने मिलोसिस नगर केमुकाबिले में एक अद्भुत विलक्षणता उपस्थित करती है। ऐसा मालूम होता है जैसे किसी सर्वांग सुन्दर अतुलनी कमनीय सम्राज्ञी के सिर पर हीरों का राज्य मुकुट रखा हो। गुम्बद और पंखुड़ी नुमा १२ प्रांगणों पर बाहर की ओर सोने का पतला पत्तर चढ़ा हुआ है प्रांगण के अन्तिम कोने पर ठोस सुवर्ण की और प्रत्येकबनी देव मूर्तियां स्थापित हैं, मूर्तियों के पंख लगे हुए हैं और उनके हाथों में सुनहरी नरसिंह हैं। ऐसा मालूम होता है जैसे यह देव दूत नरसिंह बजाते हुए पंख फैला कर आकाश की ओर उड़ने ही वाले हैं। जिस समय सूर्य की उज्ज्वल किरणे इस सुनहरी गुम्बद और प्रांगणों पर पड़ कर उसे प्रज्वलित अग्नि शिखा जैसा चमका देती हैं, तो उसकी उस समय कीं अद्वतीय सुन्दरता का वर्णन करना मेरी शक्ति से बाहर है, पाठक अपनी कल्पना शक्ति से उसका अनुमान स्वयं ही कर सकते हैं। सारा दृश्य ऐसा मालूम होता है जैसे श्वेत स्फटिक के विशाल पर्वत से लपलपाती हुई अग्नि शिखाये निकल रही हों—सूर्य की किरणों के पड़ने से गुम्बद इतनी तेजी से चमकता है कि उससे प्रतिफलित होने वाले प्रकाश से सौ-सौ मील के घेरे में स्थित पर्वतों की चोटियाँ चमचमाने लगती हैं।

श्वेत दूध जैसे श्वेत स्फटिक के ढोंके पर उगे इस इमारत रूपी विशाल पुष्प की सुन्दरता का वर्णन करना असम्भव है। शायद सारे संसार में इस जैसी दूसरी इमारत कहीं भी नहीं है। इस विलक्षण इमारत की सुन्दरता इस बात से सहस्त्र गुना और बढ़ गई है कि मन्दिर

※ यह पैमायश अन्दर की ओर की है, बाहर की नहीं (ला० व० सि०)

की श्वेत संगमरमर की दीवारों के चारों ओर १५० फुट चौड़ी क्यारी में सूरजमुखी के झाड़ लगे हुए हैं और जिस समय हम ने इस मन्दिर के प्रथम दर्शन किये उस समय यह सारी क्यारी सुनहरी पुष्पों से भरी हुई थी और हवा चलने पर झूमते पुष्पों की यह क्यारी हवा के झोंकों की ताल पर लहरें मारता हुआ एक विशाल सुनहरी समुद्र मालूम होता था। इस विलक्षण और आश्चर्यजनक मन्दिर का द्वार उत्तर की ओर स्थित पंखुड़ी प्रांगणों के बीच में बना हुआ है। इस मुख्य द्वार में पहले तो बाहर की ओर कांसे का बना विशाल भारी फाटक है और भीतरी द्वार शुद्ध संगमरमर का है। संगमरमर पर बहुत सुन्दर नक्क़ाशी की हुई है और देवी देवताओं तथा अन्य दन्त कथाओं और कहानियों के चित्र बने हुए हैं और सब से बड़ी विचित्रता यह है कि बड़ी विलक्षण कारीगरी से इन नक्काशियों को सुवर्ण पत्र से मढ़ दिया गया है। इस फाटक को पार करके दीवार की मोटाई शुरू होती है जो कि पूरी २५ फ़ुट है (ज्यू वैएडी के कलाकारों ने अनन्त समय तक रह सकने वाली वस्तुएँ निर्माण की हैं)। इस २५ फ़ुट की दूरी के अन्तिम सिरे पर श्वेत संगमरमर का एक और विशाल फाटक चढ़ा हुआ है और इस फाटक को पार करते ही गुम्बद वाले केन्द्रीय हाल में जा पहुँचते हैं। हॉल के मध्य में खड़े होकर चारों ओर दृष्टि घुमा कर देखने पर चारों ओर इतना सुन्दर दृष्य देखने को मिलता है कि जिसकी विलक्षणता का वर्णन करना असम्भव है, उसकी केवल कल्पना की जा सकती है वर्णन नहीं किया जा सकता है। गिरा अनयन, नयन बिनु वाणी वाली बात हो जाती है। गूंगे के गुड़ वाली कहावत यहां ठीक उतरती है। जिस प्रकार गूंगा गुड़ खा कर उसके स्वाद का वर्णन नहीं कर सकता उसी तरह इस विलक्षण इमारत को देख कर उसका हाल लिखना मेरे लिए असम्भव है। केवल मध्य वेदी के पास खड़े हो कर ही संगमरमर के गुम्बद को पूरी तौर से देखा जा सकता है। चमचमाता हुआ दूध जैसा श्वेत संगमरमर गोलाई दार होता हुआ इस गुम्बद को बनाता है। गुम्बद ऊपर से बिल्कुल बन्द नहीं है बल्कि उस के ठीक शिखर पर एक चिमनी जैसा झरोखा बना हुआ है। ठीक मध्यान्ह के समय सूर्य की लपलपाती अग्नि शिखा जैसी किरणें इस झरोखे में हो कर सीधी

मध्य वाली सुनहरी वेदी पर पड़ती हैं। हाल के पूर्वीय और पश्चिमी यां छोरों पर भी ऐसी ही सुनहरी वेदियां बनी हुई हैं और इन पर उदय होते और अस्ताचल को जाते सूर्य की किरणें पड़ती हैं और वेदिय चमकने लगती हैं। मध्य वेदी से चारों ओर श्वेत संगमरमर के बने १२ प्रांगण सूर्य रश्मियों की भांति फैले हुए हैं। फलक आकार में चारों ओर फैले यह १२ प्रांगण मध्य वेदी पर आ कर मिल जाते हैं और सारा फर्श एक विशाल पुष्प की तरह मालूम होता है, सुनहरी मध्य वेदी जिस का केन्द्र है और जिस केन्द्र से निकल कर यह १२ प्रांगण केन्द्र से छितरी हुई पंखुड़ियों की भांति फैले हुए हैं। गुम्बद में २५० फ़ट की ऊँचाई पर बराबर बराबर दूरी पर १२ झरोखे बने हुए हैं जिन से बारी बारी से प्रकाश किरणें आ कर प्रत्येक पंखुड़ी नुमा प्रांगण को क्रमानुसार आलोकित करती रहती हैं। झरोखे से आने वाला प्रकाश पुंज घड़ी की सुइयों की चाल के अनुसार क्रम से प्रत्येक प्रांगण को आलोकित करता है। कुछ ऐसी कारीगरी से यह झरोखे बनाये गये हैं कि एक बार में केवल एक ही झरोखे से प्रकाश पुंज आता है अन्य से नहीं। इन झरोखों से आने वाला प्रकाश पुंज इस विशाल हॉल के भीतरी भाग को न केवल पूर्ण रूप से आलोकित ही करता है बल्कि उस हॉल में स्थान स्थान पर रखी प्रस्तर मूर्तियों और मृतकों के स्मारकों को दिखा सकने योग्य प्रकाश भी देता है।

इस मनोमुग्धकारी दृश्य से, जिस की असीम तथा अद्वितीय सुन्दरता मस्तक के प्रत्येक तार को झनझना कर उस पर नशा सा कर देती है और जिसे देख कर मनुष्य अपने तन बदन की सुधि भूल जाता है, आश्चर्य चकित होने के बाद ध्यान जाता है मध्य में बनी सुनहरी वेदी की ओर। इस वेदी के बीचों बीच एक प्रज्वलित अग्नि शिखा, यद्यपि दूर से वह दिखाई नहीं देती, नीली लौ से निरन्तर जलती रहती है। वेदी श्वेत संगमरमर की बनी है और उस पर सुवर्ण पत्र चढ़ा हुआ है। यह वेदी सूर्य के बिम्ब के अनुरूप गोलाकार है, इसकी ऊँचाई ४ फ़ट और परिधि ३६ फट है। इस वेदी की जड़ में सुवर्ण पत्र की बनी १२ विशाल पंखुड़ियां जड़ी हुई हैं। सारी रात और केवल एक समय विशेष को छोड़ कर सारे दिन यह पंखुड़ियां बन्द रहती हैं और वेदी को

सम्पुट की तरह छुपाये रखती हैं। जिस प्रकार रात्रि के समय कमल पुष्प की पंखुड़ियां बन्द हो कर कमल कोरक को ढ़क लेती हैं उसी तरह यह सुनहरी पंखुड़ियां ऊपर की ओर मुड़ कर मध्य वेदी को सम्पुट में बन्द कर लेती हैं। ठीक मध्यान्ह के समय जिस वक्त सूर्य की प्रज्वलित अग्नि शिखा सी किरणे गुम्बद के ठीक शिखर पर बने चिमनी नुमा झरोखे से होकर सीधी इस सुनहरी पुष्पाकार वेदी पर पड़ती हैं तो वेदी की जड़ में लगी पंखुड़ियाँ खुल जाती हैं और वेदी के मध्य में जलती नील वर्ण अग्नि शिखा स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं। सूर्य किरणों के शिखर वाले झरोखे से आना बन्द होते ही यह पंखुड़ियां फिर बन्द हो जाती हैं और वेदी को सम्पुट में बन्द कर लेती हैं।

केन्द्रीय हाल का वर्णन यहीं समाप्त नहीं होता है। वेदी से उत्तर और दक्षिण की ओर थोड़ा हट कर बराबर बराबर दूरी पर ठोस सुवर्ण की बनी दस देव मूर्तियां अर्द्ध चन्द्राकार रूप मे स्थापित की हुई हैं। यह देव मूर्तियां पंख युक्त स्त्री मूर्तियां हैं। इन की बनावट बहुत लाजवाब है और शरीर का प्रत्येक अंग सुडौल और सांचे का ढला है। यह देव मूर्तियां नग्न नहीं हैं, इनकी बनावट ऐसी है जिससे यह मालूम होता है कि वह सुन्दर वस्त्र पहिने हों। यह देव मूर्तियां मनुष्याकार से कुछ बड़ी हैं और अपने पंखों को फैला कर भक्ति भाव से सिर नीचे झुकाये खड़ी हैं, ऐसा मालूम होता है जैसे उपासना कर रही हों। इन देव मूर्तियों के शिरों पर फैले पंख छाया किये हुए हैं और इन की सुन्दरता देखते ही बनती है।

इस वेदी के सम्बन्ध में केवल एक बात बताने से और रह गई और वह यह है कि इस वेदी के सामने वाला पूर्व दिशा की ओर का फ़र्श अन्य स्थानों की भांति शुद्ध श्वेत संगमरमर का नहीं है बल्कि ठोस पीतल का बना हुआ है। अन्य वेदियों के सामने भी ऐसे ही पीतल के फ़र्श जड़े हुए हैं।

पूर्व और पश्चिम की ओर वाली वेदियां जिन की शक्ल अर्द्धचन्द्राकार है हाल की दीवार से सटा कर बनाई गई हैं। यह वेदियां मध्य वेदी जैसी सुन्दर नहीं हैं और न इन को सुनहरी पंखुड़ियां सम्पुट में बन्द किये हुए हैं। यह वेदियां भी सुवर्ण खचित हैं और उन पर भी अग्नि

शिखा निरन्तर जलती रहती है। उनके दोनों ओर भी पंख युक्त सुनहरी देव मूर्तियां अपने पंखों को खोले और सिर झुकाये स्थापित हैं। मध्य वेदी के केन्द्र से तीन सुवर्ण किरणें प्रत्येक वेदी को जाती हैं और दो किरणें तो अर्द्ध चन्द्राकार वेदियों से सम्पात रेखायें बनाती हुईं और तीसरी वेदी के मध्य बिन्दु से होती हुई हाल की दीवार से मिल जाती है। जिस स्थान पर बीच वाली किरण दीवार से मिलती है वहां दीवार में छोटे छोटे गोलाकार द्वार बने हुए हैं। यह द्वार भीतर की ओर तङ्ग और बाहर की ओर चौड़े हैं। पूर्व की ओर स्थित इस गोलाकार द्वार में हो कर सूर्य की प्रथम किरणें वेदी के ऊपर हो कर मध्य वेदी तक जाती हैं और मध्य वेदी पर बने सुनहरी सम्पुट से होती हुई पश्चिमी वेदी को आलोकित करती हैं। इसी तरह अस्त होते हुए सूर्य की अन्तिम किरणें पश्चिम की ओर वाले गोलाकार द्वार से हो कर मध्य वेदी के बन्द सुनहरी सम्पुट से होती हुई पूर्व वाली वेदी को आलोकित करती हैं। सूर्य की प्रथम किरण पश्चिम को नव प्रभात और नव जीवन का गीत सुनाती हैं और अस्ताचल को जाती सूर्य की अन्तिम किरणें पूर्व को पुनर्जन्म का सन्देश देती जाती हैं।

इन तीन वेदियों और उन के दोनों ओर बनी पंख युक्त देव मूर्तियों के अलावा इस श्वेत संगमरमर के गुम्बददार विशाल हाल में और कुछ नहीं है, सारा फर्श एक दम खाली है और कोई नक़्क़ाशी या मीनाकारी ही की गई है। मेरे विचार से इस सादगी ने इस हाल की शान शौकत और तड़क भड़क को हज़ारों गुना बढ़ा दिया है।

सक्षेप में यह वर्णन है उस अति सुन्दर, विलक्षण और आश्चर्य-जनक मन्दिर का जिस की सुन्दरता को उसकी सादगी से और भी चार चांद लग गए हैं। काश मेरे पास शब्द होते और क़लम में लिखने की शक्ति होती तो मैं इसका पूरा हाल लिख सकता। परन्तु सब कुछ गूंगे का गुड़ सा हो गया है, न कहते बनता है और न लिखते। जिस समय मैं अपने देश में बने भौंडे, अंधेरे, धूमिल मन्दिरों और योरुप और अमेरिका के प्रसिद्ध गिरजाघरों और अन्य इमारतों की तुलना इस अर्द्ध सभ्य न्यूज़ीलैंडी देश में बने मन्दिर से करता हूँ तो मेरा मस्तक लज्जा से झुक जाता है और मुझे यह निश्चय हो जाता है कि भवन निर्माण

कला में अर्द्ध सभ्य ज्यू वैण्डी जाति पूर्ण विकसित और सभ्य भारतवर्ष और संसार के अन्य देशों से कहीं आगे है और वर्षों तक भारतवर्ष यथा अन्य सभ्य देशों को हाथ पकड़ कर इस कला को सिखाने की क्षमता रखती है। जब धुमेले प्रकाश से अभ्यस्त हो कर मैंने इस सर्वाङ्ग सुन्दर हाल को ग़ोर से देखा तो विस्मय और आश्चर्य से मेरे ज्ञान तन्तु जड़ हो गये, बोली बंद हो गई और मैं अपनी सुधि बुधि तक भूल गया।

मन्दिर के मुख्य द्वार पर सैनिकों की एक टोली ने हमारे दल को अपने संरक्षण में ले लिया, यह सैनिक मन्दिर के मालूम होते थे क्योंकि इनकी वरदी हमारे साथ आने वाले सैनिकों से भिन्न थी। फाटक पर से यह सैनिक हमको हाल के एक दल प्रांगण में ले गये और यहाँ हमें कोई आधा घन्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। यहां हमने आपस में सलाह मश्विरा किया और इस बात को भली प्रकार समझते हुए कि हमारा जीवन संकट में था यह निश्चय किया कि यदि हमारे साथ कोई छेड़ छाड़ की गई या हमें हानि पहुँचाने की कोई कोशिश की गई तो भेड़ बकरी की तरह चुपचाप जान न देकर बल्कि जान पर खेल कर अधिक से अधिक शत्रुओं को मारने की कोशिश करते हुए मृत्यु का आलिंगन करेंगे। अमस्लोपागस ने तो ऐसा अवसर आ पड़ने पाप पुण्य को ताक़ पर रख कर और अनन्त और भीषण नरक की परवाह न करते हुए मुख्य पुरोहित तथा धर्मगुरू ऐगौन के श्रद्धास्पद सिर को अपनी इन्कूसीकास से चीर कर दो कर देने की दृढ़ प्रतिज्ञा की। जिस स्थान पर हम खड़े हुए थे वहां से हमें साफ़ दीख रहा था कि ज्यू वैण्डी निवासियों के दल के दल मन्दिर में चलते चले आ रहे थे और उन के मुखों की उत्सुकता और अनिश्चियता से ऐसा मालूम होता था कि किसी असाधारण और अनूठी घटना को देख सकने की आशा ही उनको यहाँ खींचे ला रही थी। मैं रह रह कर यह सोचने लगा कि यदि इतनी भीड़ का सामना करना पड़ गया तो कैसी बीतेगी।

इस स्थान पर यह बता देना असंगत न होगा कि प्रति दिन ठीक मध्यान्ह के समय जब कि सूर्य की किरणें गुम्बद के शिखर पर बने चिमनी नुमा झरोखे से हो कर मध्य वेदी पर पड़ती हैं तो बहुत जोरों से तुरहियां बजाई जाती हैं और अग्निकुण्ड में आहुति दे कर सूर्य

भगवान को बलि चढ़ाई जाती है। साधारणतया बलि के लिए भेड़ या कभी कभी भैंसे का शरीर चुना जाता है और कभी कभी फल पुष्प अनाज इत्यादि की आहुति भी दी जाती है। यह आहुति ठीक मध्यान्ह के समय दी जाती है। क्योंकि ज्यू बैण्डी देश भूमध्य रेखा से अधिक दूर नहीं है, यद्यपि बहुत ऊँचाई पर होने के कारण उसकी जलवायु समशीतोष्ण है, इसलिये ठीक मध्यान्ह होना और सूर्य का ठीक सिर पर आ कर झरोखे से अपनी किरणों को मध्य वेदी पर डालना प्रायः साथ ही साथ होता है। भूमध्य रेखा के पास स्थित होने के कारण आज बलि १२ बज कर ८ मिनट पर दी जाने वाली थी।

ठीक १२ बजे एक पुजारी दिखाई दिया, उसने आ कर हमारे साथ वाले सैनिकों के नायक को कुछ इशारा किया और उसने हमें इशारे से बताया कि हमें आगे बढ़ना है। हम पूरी शान से सिर उठाये बिना लड़खड़ाये या चिन्ता प्रकट किये आगे बढ़े, अल्फान्सो ग़रीब का बुरा हाल था, वह डर के मारे कांप रहा था और उसके मुँह पर हवाइयां उड़ रही थीं। दो चार क्षण बाद ही हम प्रांगण से निकल कर हॉल में आ गये, यहाँ आ कर हमने देखा कि सारा हाल स्त्री पुरुषों से खचाखच भरा हुआ था, कहीं भी तिल धरने तक को जगह नहीं थी। आदमी पर आदमी पिला पड़ रहा था। जहाँ तक दृष्टि जाती थी वहां तक सिर ही सिर दिखाई देते थे और मुझे विश्वास था कि इतने ही आदमी हॉल के बाहर भी होंगे। मनुष्यों के ठट्ठ के ठट्ठ दबे पिचे खड़े हुये थे। सभी उचक उचक कर अन्य व्यक्तियों को दबा ढकेल कर गर्दनें ऊंची किये उन अजनबियों को देखने को फटे पड़ रहे थे जिन्होंने बस्ती में घुसते ही उनके धर्म पर गहरी चोट पहुँचाने की कोशिश की थी। और यह अजनबी हमीं लोग थे क्योंकि बूढ़े से बूढ़े आदमी की याद में भी आज तक ज्यू बैण्डी में कोई अजनबी आया ही नहीं था।

हमारे हॉल में घुसते ही भीड़ में चें चे में में होने लगी और यह फुसफुसाहट, गुम्बद में गूंज गूंज कर और भी तेज़ होती जा रही थी और हमें यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि हमें देख कर बहुत से आदमी बहुत जोश में आ गये थे और यदि हमारे साथ सैनिकों की टोली न होती तो शायद वह हमें हानि पहुंचाने की कोशिश भी करते। वह मरने

मारने पर उतारू मालूम होते थे। नर-नारियों के समूह में हो कर हमारे वास्ते रास्ता साफ किया गया और हम सैनिकों से घिरे हुए उस भीड़ म हो कर मध्य वेदी तक पहुँचाये गये। हमें मध्य वेदी के पूर्व की ओर लगे ठोस पीतल के फर्श पर वेदी की ओर मुंह करके खड़ा कर दिया गया। पंख युक्त देव मूर्तियों को केन्द्र बना कर कोई ३० फ़ुट अर्द्ध-व्यास की गोलाई से हॉल का मध्य भाग रस्सिया बांध कर सुरक्षित कर दिया गया था और भीड़ रस्सियों की इस वाड़ के बाहर खड़ी थी। यह रस्सियां भीड़ को आगे बढ़ने से रोके हुए थीं, इस चक्र में एक ओर ज़रदोज़ी का काम किये हुए श्वेत वस्त्र पहिने पुरोहित पुजारियों का दल का दल खड़ा हुआ था, प्रत्येक के हाथ में लम्बी सुनहरी तुरहियां थीं और हमारे बिल्कुल सामने खड़ा था हमारा मित्र मुख्य पुरोहित धर्म-गुरू ऐगौन। उसने ज़री के काम की बड़ी विचित्र सी टोपी पहिन रखी थी। इस अपार भीड़ मे सिर्फ उसी ने टोपी पहिन रखी थी अन्य सभी नंगे सिर थे।

हम बड़े इत्मीनान से उस पीतल के फर्श पर खड़े हो गये, हमें स्वप्न में भी यह गुमान नहीं था कि उसके नीचे हमारे लिये क्या अजीब तोहफ़ा रखा हुआ था, फ़र्श खोखला था या ठोस यह भी हमें पता नही था। मुझे फ़र्श के नीचे से एक अजीब तरह की फुसकार की बहुत धीमी आवाज़ सी आ रही थी, और बहुत कान लगा कर सुनने पर भी मैं यह न समझ सका कि यह आवाज़ आ कहां से रही थी या किस चीज़ की थी। इसके बाद कुछ देर बिल्कुल शान्ति रही, भीड़ ने भी बाते करना बन्द कर दिया था, सभी सांस रोके यह देख रहे थे कि अब होता क्या है। मैंने चारों ओर सिर घुमा कर युगुल सम्राज्ञियों को देखने की कोशिश की परन्तु वह मुझे कहीं दिखाई नहीं दीं, शायद वह अभी तक आई नहीं थीं। हमारे दाहिनी ओर कुछ स्थान सुनहरी रस्सियां बांध कर खाली छोड़ दिया गया था, मेरे ख्याल से यह स्थान उनके लिए सुरक्षित था।

हम चुपचाप आने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा करने लगे और थोड़ी ही देर बाद कहीं दूर जोर से तुरही बज उठी। ऐसा मालूम होता था मानो गुम्बद में ही कहीं बहुत ऊँचाई पर से यह तुरही बजाई गई

थीं। भीड़ में फिर फुसफुसाहट होने लगी और हमारे दाहिनी ओर खड़ी भीड़ में एक चौड़ा रास्ता अपने आप बन गया। हमने देखा कि उस रास्ते से दोनों सम्राज्ञियां एक दूसरे से सटी मिली आगे बढ़ी आ रहीं थीं। उनके पीछे चुने हुए सामन्त तथा राज्य कर्मचारी थे, उनमें से हम केवल नैस्टा को ही पहिचान सके, और सब से पीछे ५० सैनिकों का एक सशस्त्र दल था। सैनिकों के दल को देख कर न जाने क्यों मेरे मन को बहुत ढाढ़स बंधी। सारे सामन्तों और सैनिकों ने चुपचाप अपना अपना स्थान ग्रहण कर लिया, सब से आगे सुवर्ण की बनी कुरसियों पर दोनों सम्राज्ञियां बैठी, उनके पीछे अपने पद और प्रतिष्ठा के अनुसार राज्य कर्मचारी और सामन्त खड़े हो गये और उनके पीछे दुहरी अर्द्ध चन्द्राकार लाइनों में सैनिक खड़े हो गये।

चारों ओर पूरी शान्त थी, ऐसो शान्ति कि अगर सुई गिर पड़ती तो उसकी आवाज़ भी सुनाई दे जाती। भीड़ बिल्कुल चुप बुत बनी खड़ी थी, न कोई हिल जुल रहा था और न कहीं से किसी तरह की आवाज़ ही आ रही थी। सभी सांस रोके देख रहे थे कि अब होता क्या है। सहसा मेरी आंखें सम्राज्ञी निलिप्था की आंखों से जा मिलीं। मुझे ऐसा लगा जैसे वह आंखें मुझसे कुछ कहना चाह रही थीं और मैंने भी इसीलिये उन पर अपनी नजर जमा दी। सम्राज्ञी निलिप्था की दृष्टि मेरे ऊपर से होती हुई पीतल के फ़र्श तक पहुँची जिसके अन्तिम छोर पर हमें खड़ा किया गया था। और तब सम्राज्ञी ने अपने सिर से कुछ इशारा किया। इशारा इतनी फुर्ती और सफ़ाई से दिया गया था कि शायद मेरे सिवाय, क्योंकि मैं नज़र से नज़र भिड़ाये हुए था, और किसी को दिखाई नहीं पड़ा होगा। पहले तो मै समझ ही नहीं सका कि यह इशारा था भी या नहीं और यदि था तो उससे सम्राज्ञी का मतलब क्या था। परन्तु क्षण भर बाद सम्राज्ञी ने फिर इशारा किया और ऐकाऐकी बिजली की तेजी की तरह मेरी समझ मे यह बात आई कि सम्राज्ञा हमको पीतल के फ़र्श को छोड़ कर पीछे की ओर हट जाने का इशारा कर रही थीं। सम्राज्ञी ने तीसरी बार इशारा किया और इस बार मुझे निश्चय हो गया कि उनका यही मतलब था—पीतल मंढ़े फ़र्श पर खड़े होने में खतरा था।

मेरे एक ओर कुंवर साहिब थे और दूसरी ओर था अमस्लोपागस। अपनी दृष्टि को सीधी सामने की ओर जमाये हुए उन दोनों से पहले जूलू भाषा में और फिर हिन्दी में बहुत धीमी फुसफुसाहट से जौ जौ कर के बिल्कुल चुपचाप बिना तनिक सी आवाज किये या उद्विग्नता प्रकट किये पीछे वहां तक सरक जाने को कहा जहां पीतल का फ़र्श समाप्त हो कर संगमरमर का फ़र्श शुरू होता था। कुंवर साहिब ने इसी तरह फुसफुसा कर कैप्टिन प्रसाद और अल्फ़ान्सो से यह बात कह दी और हमने बहुत धीरे धीरे और बिल्कुल चुपचाप जौ जौ करके पीछे की ओर सरकना शुरू किया। हम इतने चुपचाप और धीरे धीरे सरक रहे थे कि सम्राज्ञी निलिप्था और सोरियास के अलावा, जो हमारी प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म गति विधि को बड़े ग़ौर से देख रही थीं और जिन को हमारा सरकना मालूम हो गया था, इतनी भीड़ में से किसी को भी यह मालूम न पड़ सका कि हम पीछे की ओर सरक रहे थे। संगमरमर के फ़र्श पर पहुँच कर मैंने साम्राज्ञी निलिप्था की ओर दृष्टि उठा कर देखा और मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे उन्होंने सिर हिला कर अपनी प्रसन्नता दिखाई हो। इस बीच धर्मगुरू महा पुरोहित ऐगौन की दृष्टि मध्य वेदी पर जमी हुई थी, मालूम होता था जैसे वह मन ही मन अपने देवता की उपासना कर रहा था। सहसा उसने अपनी लम्बी भुजाओं को झटके से फैला दिया और बहुत ही तेज और गम्भीर गूंजती हुई आवाज से मंत्रोच्चार करना शुरू कर दिया। शायद वह भगवान सूर्य का उस सन्दिर में आवाहन कर रहा था। उस देश की भाषा न जानने के कारण मैं उसकी प्रार्थना का कोई अर्थ नहीं समझ सका था।

ऐगौन ने मंत्रोच्चार करना बन्द किया, उसके मंत्रोचारण का ढंग बहुत ही सुन्दर था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे संस्कृत का कोई विद्वान कर्मकांडी पण्डित साम वेद का सस्वर गायन करके महान शत-चण्डी यज्ञ करा रहा हो। मुझे अपने पुराणों में वर्णित यज्ञों की याद ताजा हो गई। मंत्रोच्चार करके ऐगौन क्षण भर को रुका, फिर गुम्बद के शिखर पर बने चिमनी के आकार के झरोखे की ओर हाथ फैला कर उच्च स्वर से कहने लगा, "हे सविता, हे देवाधिदेव भगवान सूर्य,

हे आदि देव, हे परम पिता अपने सिंहासन पर प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हो कर दर्शन दीजिये और अपने भक्तों को कृतार्थ कीजिये। पधारिये भगवन पधारिये।

ऐगौन प्रार्थना कर ही रहा था कि एक बहुत ही विचित्र घटना हुई। शिखर पर बने झरोखे में हो कर भगवान सूर्य की एक जीवित प्रज्वलित किरण लपलपाती अग्नि की शिखा की तरह हॉल में घुमेले वातावरण को विद्युत लता की भांति चीरती हुई नीचे उतरी। मध्य वेदी का सुनहरी सम्पुट उस किरण से मानो जल सा उठा, किरण सम्पुट की सुनहरी पंखुड़ियों को आलोकित करती हुई सम्पुट के सुनहरी दल से नीचे की ओर बढ़ी और तब जीवित किरण के प्रभाव से यह सुनहरी सम्पुट धीरे धीरे खुल गया। सम्पुट बहुत धीरे-धीरे खुला और पंखुड़ियों ने पूरा खुल कर सुनहरी मध्य वेदी को, जिस पर निरन्तर अग्नि जलती रहती है, अनावृत कर दिया। पुरोहितों ने जोर से तूर्य नाद किया और अपार जन समूह ने जयजयकार किया। अनगिनती कंठों से निकली जयजयकार संगमरमर के गुम्बद में गूंजने लगी।

सुनहरी मध्य वेदी का सम्पुट अब पूरा खुल चुका था और सूर्य की जीवित प्रज्वलित किरण ने अपने प्रचण्ड प्रभाव से वेदी पर जलती अग्नि शिखा को धूमिल कर दिया। पहले अग्नि शिखा फड़फड़ाई परन्तु फिर धीरे धीरे वह अग्नि शिखा जिस छिद्र में से निकल रही थी उसी में समा गई। उस के अदृश्य होते ही फिर जोरों से तुरहियां बज उठीं और वृद्ध महा पुजारी ऐगौन ने अपने हाथ ऊंचे कर के अपनी भाले जैसी तेज़ आवाज़ में कहा, " हे देवाधिदेव भगवान सूर्य, अपनी बलि स्वीकार करो।" मेरी आंखें सम्राज्ञी निलिष्या की आंखों से जा मिलीं, उसकी अपलक दृष्टि पीतल के फ़र्श पर जमी हुई थी।

"सावधान," मने जोर से चिल्ला कर कहा, और जैसे ही मैंने सावधान कहा मैंने देखा कि महा पुजारी ऐगौन ने आगे की ओर झुक कर वेदी पर लगे किसी यंत्र को छुआ। महा पुजारी के इस यंत्र के छूते ही मैंने देखा कि वह अपार भीड़ कुछ व्याकुल सी हो उठी। जन्तुओं की सांस रुक सी गई, परन्तु क्षण भर में ही सब ठीक ठाक

हो गये और उन्होंने एक लंबी सांस खींची जिस की आवाज़ सारे गुम्बद में गूंज गई। सम्राज्ञी निलिप्था आगे की ओर सरक कर सिंहासन के छोर तक आ गईं और अनैच्छिक रूप से उसने अपने हाथों से अपनी आंखों को ढ़क लिया। सम्राज्ञी सोरियास ने बायीं ओर को गर्दन घुमा कर अपने पीछे की ओर खड़े अंग रक्षक दल के नायक से कुछ कहना शुरू कर दिया और चर्राहट की आवाज़ करता हुआ वह पीतल का फ़र्श समूचा ही हमारे पैरों के नीचे से निकल गया और उसके स्थान पर दिखाई पड़ने लगा एक स्वच्छ चिकने संगमरमर का बना रपट जैसा ढाल जिसके दूसरे छोर पर, जो मध्य वेदी के बिल्कुल नीचे था, संगमरमर के बने एक विशाल यज्ञ कुंड में प्रचण्ड अग्नि धधक रही थी। यज्ञ कुंड इतना बड़ा था और अग्नि इतनी प्रचण्ड थी कि यदि उसमें लोहे की बनी मोटर कार भी डाल दी जाती तो मिनट भर में ही पानी हो कर गल जाती।

भय से चिल्लाते हुए हम पीछे की ओर कूदे, परन्तु मारे डर के कमबख़्त अल्फ़ान्सो के हवास ऐन मौक़े पर गुम हो गये और उसके हाथ पैरों ने काम करना बन्द कर दिया और इसलिये वह उतनी तेजी से पीछे की ओर नहीं कूद सका। वह लड़खड़ाया, गिरा और रपट पर हो कर अग्नि कुंड में फिसलने लगा। परन्तु पलक मारते ही कुंवर साहिब ने जान हथेली पर रख कर उसे झुक कर पकड़ लिया और जोर लगा कर ऊपर खींच लिया। यदि आधे क्षण की भी देर हो जाती तो अलफान्सो की अग्नि कुंड में बलि चढ़ जाती।

हमें सही सलामत देख कर भीड़ में रौला बलवा सा फैल गया और हम चारों जान पर खेल जाने के लिए एक दूसरे से पीठ से पीठ सटा कर खड़े हो गये, अलफान्सो पिटे कुत्ते की तरह हमारी टांगों में घुस कर बैठ गया। हम तीनों ने अपने रिवाल्वर निकाल लिये क्योंकि मन्दिर आते समय हमारी रायफ़िलें बड़ी होशियारी से हम से ले कर अलग कर दी गई थीं और क्योंकि ज़्यू वैण्डी के निवासी रिवाल्वरों के बारे में कुछ नहीं जानते थे इसलिये उन को हम से अलग कर देने का किसी को ध्यान ही नहीं आया था। अमस्लोपागस के पास उसकी इन्कूसीकास थी, इसे उस से ले लेने की किसी ने

हिम्मत ही नहीं की थी। इस समय बूढ़ा जूलू उसे अपने सिर के चारों ओर तेज़ी से घुमाने लगा और चिल्ला चिल्ला कर युद्ध के जूलू नारे लगाने लगा। उस की तेज़ आवाज़ क्यू वैण्डी के रण बांकुरों के लिए चुनौती बन कर संगमरमर के गुम्बद में गूंजने लगी। एक क्षण तो सभी किंकर्तव्यविमूढ़ से ठगे से रह गये ऐसा कभी हुआ नहीं था, जो बलि चढ़ाई जाती थी वह निश्चय रूप से यज्ञ कुंड की प्रज्वलित अग्नि शिखा में होम दी जाती थी, परन्तु आज नई बात हुई थी। आज भगवान सूर्य को दी जाने वाली बलि यज्ञ कुंड से बच गई थी। इसलिये सभी ठगे से चित्र लिखित से खड़े के खड़े रह गये। दूसरे क्षण सारे के सारे पुजारी पुरोहित अपने बलि पदार्थ को धोखा दे कर भाग निकलते देख क्रोध से अंधे हो उठे और अपने श्वेत झंगोलों में से अपनी अपनी तलवारें खींच कर हमारी तिक्का बोटी कर डालने के लिए हमारी ओर झपटे।

मुझे पलक झपकते ही ख्याल आया कि पहले मारे सो मीर, न जाने ऊंट किस करवट बैठता परन्तु मैंने आने वाले संकटों की परवाह न कर के सब से आगे दौड़ते हुए आने वाले पहले पुजारी के, जो बहुत लम्बा चौड़ा और हृष्ट पुष्ट था, हृदय को लक्ष्य कर के गोली दाग दी। गोली लगते ही वह गिर पड़ा, परन्तु दूसरे ही क्षण अपने दाहिने हाथ से हृदय से निकलते खून के फुआरे को रोकते हुए खड़ा हुआ, चला, लड़खड़ाया और अपने ही शरीर से निकले खून पर फिसल कर रपट के मुख पर गिरा और नीचे धधकते भयंकर अग्नि कुंड की ओर तेज़ी से फिसलता चला गया। उस की चीख़ पुकार और चिल्लाहट से सारा हॉल गूंज उठा परन्तु सभी उस समय ऐसे किंकर्तव्यविमूढ़ अकर्मण्य से हो गये थे कि किसी से कुछ करते धरते न बन पड़ा और वह अभागा पुजारी हमारे बजाय भगवान सूर्य की बलि चढ़ गया। पलक झपकते ही प्रज्वलित अग्नि शिखाओं ने उस के शरीर को चारों ओर से ढ़क लिया। उस की करुण चीख़ पुकार सारे हॉल में गूंजने लगी।

न ज़ाने उस अभागे की मृत्यु यंत्रणा और चीख़ पुकार से या रिवाल्वर की कड़क और तेज़ी से या किसी और अज्ञात कारण से

सारा पुजारी वर्ग ऐकाऐकी किंकर्तव्याविमूढ़ सा हो कर जो जहां खड़ा था वहीं खड़ा रह गया, असहाय क्रोध से उनकी क्रिया शक्ति प्रायः नष्ट हो गई थी, वह चित्र लिखित से, डरे से, भयातुर से खड़े के खड़े रह गये। पलक झपकते ही उन के चैतन्य होने से पहले ही सम्राज्ञी सोरियास ने तेज़ कड़कती आवाज़ में अपने अंग रक्षक सैनिकों को कुछ आज्ञा दी और क्षण भर में हीं सशस्त्र सैनिकों ने बिजली की सी तेज़ी से फैल कर दोनों सम्राज्ञियों, राज्य दरबार के सामन्तों, प्रतिष्ठित व्यक्तियों और हम पांचों को अपने घेरे में ले लिया। पलक झपकते ही यह सब कुछ हो गया, पुजारी वर्ग अभी द्विविधा में ही था और भीड़ चुपचाप खड़ी थी, उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या करे क्या न करे, तीतर के मुंह लक्ष्मी थी, वह अभी तक निश्चियता अनिश्चियता के झूले में झूल रहे थे।

यह सभी कुछ दो चार क्षणों मे ही हो गया। अभागे पुजारी की चिल्लाहट बन्द हो चुकी थी, धधकती अग्नि ने उसके पार्थिव शरीर को जला कर भस्म कर दिया था, सारा जन समूह बिल्कुल शान्त, चुप और नीरव था। सब से पहले महा पुजारी ऐगौन को होश आया, उसने सिर उठा कर क्रोध भरी जलती आंखों से हमें देखा, उसका मुंह निष्फल क्रोध के कारण काला पड़ गया था। "देवाधिदेव भगवान् सूर्य की बलि अवश्य चढ़ाई जायेगी। यज्ञ की आहुति के बिना देवता अप्रसन्न हो जायेंगे," उसने क्रोध से कांपती आवाज से चिल्ला कर कहा। "इन परदेशियों ने हमारे देवता की अप्रतिष्ठा की है, यह अपराध क्षमा नहीं किया जायेगा। क्या सम्राज्ञी इन पापियों को आश्रय दे कर धर्म और देवता का अपमान करने का साहस करेगी? क्या भगवान सूर्य के पवित्र बलि पशुओं का इन्होंने संहार नहीं किया? क्या इन के कारण साक्षात प्रत्यक्ष देवता भगवान् सूर्य के एक पुजारी को अपनी जान से हाथ नहीं धोना पड़ा? क्या इन जादूगर परदेशियों ने अपने जादू से उसका वध नहीं किया? यह परदेशी न ज़ाने कहां से आये हैं और कौन हैं इसका भी तो पता नहीं। सम्राज्ञी मैं आपको सावधान किये देता हूँ, कान खोल कर सुन लीजिये, तुम्हारा इतना साहस कि तुम भगवान् के मन्दिर में, उसकी पवित्र वेदी के सामने, उसी की आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस कर रही हो। शक्ति के घमण्ड में न

फूल जाना सम्राज्ञी, याद रखो तुमसे भी बड़ी एक शक्ति है जो तुम्हें क्षण भर में ही धूल में मिला सकती है, तुम्हारे न्यायालय से भी ऊँचा एक और न्यायालय है जहाँ तुम्हारी कोई पेश नहीं जायेगी। सावधान सम्राज्ञी, भगवान् के विरुद्ध सिर उठाने वाले का सिर धूल में लोटने लगता, यह न भूल जाना। बलि पदार्थ को अवश्य ही बलि चढ़ाय जायेगा है, सुन लिया सम्राज्ञी, यह मेरी आज्ञा है, मेरी, ज्यू वैण्डी के धर्म गुरु, इस मन्दिर के महा पुजारी, महापुरोहित ऐगौन की। तुम्हें मानना होगी यह आज्ञा सम्राज्ञी।"

सम्राज्ञी सोरियास ने अपनी तेज गंसीली आवाज में जिसमें व्यंग का पुट अधिक था महा पुरोहित ऐगौन को उसी स्वर में उत्तर दिया, "आपको यह भी पता नहीं कि आप किस से बातें कर रहे हैं महा पुरोहित ऐगौन, जो कुछ आपको कहना था आपने कह लिया और हम यह मानती हैं कि जो कुछ आपने कहा ठीक कहा। मगर महा पुरोहित है क्या आप में इतना साहस कि आप देवाधिदेव भगवान् सूर्य के प्रत्यक्ष न्याय की ओर उंगली भी उठा सकें। आंख खोल कर देखिये और दैव के इशारे को समझिये महा पुरोहित, आज की मध्यान्ह बलि चढ़ चुकी। देवाधिदेव भगवान् ने स्वयं ही वेदी पर प्रत्यक्ष दर्शन दे कर अपने ही एक पुजारी की बलि को सहर्ष स्वीकार किया है। जो कोई भी उनकी इच्छा में संशय करता है वह धर्म विरोधी और पापी है।"

यह एक नई विचार धारा थी और इस तर्क का भीड़ पर बहुत प्रभाव पड़ा।

"महा पुरोहित ऐगौन क्या आपको मालूम है कि यह अजनबी कौन है? यह हमारे देश की पवित्र झील के जल पर तैरते हुए पाये गये थे। कौन इनको यहां लाया है? कैसे आये यह यहाँ? क्या आपको ठीक मालूम है कि यह अजनबी देवाधिदेव भगवान् सूर्य के उपासक नहीं हैं? क्या यही आपका आतिथ्य सत्कार है? अन्य देशों से इधर की ओर अक्समात ही निकल आने वाले मनुष्यों का क्या आप ऐसा ही आतिथ्य सत्कार करेंगे कि उनको जीवित ही अग्नि कुण्ड में झोंक कर उनके प्राण ले लेंगे? शर्म कीजिये महा पुजारी, लज्जा से आपका शिर झुक नहीं जाता महा पुरोहित। क्या यही आपका आतिथ्य सत्कार है?

जानते हैं महापुरोहित आतिथ्य सत्कार कहते किसे हैं ? अजनबी के प्रति दया दिखलाना, उसके थके तन और मन को विश्राम और शान्ति देना और भूखे को भोजन कराना यह है आतिथ्य सत्कार । लेकिन आपका आतिथ्य सत्कार है महापुरोहित, प्रज्वलित अग्नि कुंड में जीवित ही ढ़केल देना । क्यों है ना ? शर्म कीजिये महापुजारी ऐगौन, शर्म कीजिये, आपने धर्म गुरू हो कर जाति धर्म को कलंकित किया है । आप पापी हैं महा पुजारी ऐगौन, आप महा पापी हैं । आपके पाप की कहीं भी क्षमा नहीं है ।"

इतना कह कर सम्राज्ञी सोरियास क्षण भर को रुकीं, शायद वह अपनी बात के जन समूह पर पड़ने वाले प्रभाव का अनुमान करना चाहती थीं और जनता पर अपनी बातों का अच्छा और मनोनुकूल प्रभाव पड़ता देख कर सम्राज्ञी सोरियास ने अपनी आवाज़ का स्वर बदल दिया, अब वह उलाहना देने के स्थान पर आज्ञा देने लगीं ।

"रास्ता दो, हम आज्ञा देते हैं रास्ता दो", सम्राज्ञी सोरियास ने गरज कर जनता से कहा । "सम्राज्ञियों को और जिन को सम्राज्ञियों ने देवाधिदेव भगवान सूर्य की आज्ञा से अपने दामन में रक्षा दी है उनको मन्दिर से राज्य भवन जाने के लिए रास्ता दो ।"

"और अगर मैं रास्ता न दूँ सम्राज्ञी तो," क्रोध से दांत पीसते हुए महा पुजारी ऐगौन ने कहा ।

"तो हम अपनी तलवार से रास्ता बना लेंगी," सम्राज्ञी सोरियास ने पूरी राजसी शान से सीधे तन कर कहा, "इसी मन्दिर में, इसी पवित्र स्थान पर, भगवान् सूर्य की इसी पवित्र वेदी के सामने और यदि आवश्यकता पड़ी तो तुम पुजारियों की लाशों के ऊपर हो कर भी हम रास्ता बना लेंगी । सुन लिया महापुरोहित ऐगौन । यह इस देश की सम्राज्ञी की आज्ञा है, सम्राज्ञी की ।" सम्राज्ञी क्षत्राणी सिंहनी की भांति गरज रही थीं ।

निष्फल क्रोध से महापुरोहित का मुंह काला पड़ गया । उसने याचना भरी दृष्टि से उस अपार भीड़ की ओर देखा जैसा वह उससे सहायता की प्रार्थना कर रहा हो, परन्तु किसी ने सांस तक न ली, कोई मिनका तक नहीं, महापुरोहित को मालूम हो गया कि जनता की सहानुभूति

उसके साथ नहीं थी। न्यू वैण्डी के निवासियों की प्रकृति बहुत नम्र और स्वभाव बहुत कोमल है। उन में विनोद प्रियता भी अधिक है और धर्मान्धता और कट्टर पन उनको छू तक नहीं गया है। वह उदार प्रकृति हैं और बड़े से बड़े अपराध को क्षमा कर सकते हैं। वह शान्त और धीर प्रकृति हैं और क्षणिक उत्तेजना में अपना संतुलन नहीं खो बैठते हैं। सहसा कोई काम कर गुज़रना उन की आदत नहीं है, भला बुरा भली प्रकार समझ सोच कर ही वह किसी काम में हाथ डालते हैं। यद्यपि हमने देवता की बलि के लिए पाले गये दरियाई घोड़ों को मार कर उनकी धार्मिक भावना को बहुत गहरी ठेस पहुँचाई थी परन्तु तौ भी उन को यह पसन्द नहीं था कि बलि पशुओं के बदले जीवित मनुष्य, उन्हीं जैसे रक्त मांस से बने जीवित मनुष्य, धधकती भट्टी में झोंक दिये जायें, और मनुष्य भी कौन वह जिन के से मनुष्य उन्होंने अपने जीवन भर नहीं देखे थे, अपरिचित परदेशी जिन से वह उस देश की सीमा से परे फैले संसार की बहुत सी बातें जान सकते थे और बहुत कुछ समझ सीख सकते थे, और नहीं तो कम से कम उन के सम्बन्ध में गप्पें तो लड़ा ही सकते थे, क्योंकि बाहरी संसार से सम्पर्क न होने और अखबारों जैसी किसी वस्तु के न होने के कारण उन में बातें कर सकने योग्य विषय थे ही नहीं।

महापुरोहित ऐगौन ने जनता की इस डॉवाडोल दशा को देखा और जनमत को अपने अनूकूल न पा कर मन ही मन दाँत पीस पीस कर रह गया। जब खूटा ही नहीं था तो बछड़ा उछलता किस के बल पर। ऐगौन अभी कुछ निश्चय नहीं कर पाया था कि सम्राज्ञी निलिप्था ने अपने वीणा विनिन्दिनी स्वर से कहा, "महापुरोहित ऐगौन, धैर्य रखिये, उत्तेजित होने का अवसर नहीं है। जैसा अभी सम्राज्ञी सोरियास ने कहा है संभव है यह परदेशी भी देवाधिदेव भगवान् सूर्य के दास हों और उन्हीं के आदेश से यहां आये भी हों। अभी वह बोलने में असमर्थ हैं, क्योंकि वह इस देश की भाषा नहीं जानते। अगर आप को कोई धर्म व्याधा न हो तो उन का मुकदमा उस समय तक के लिए उठा रखा जाये जब तक वह हमारी भाषा सीख कर अपना हाल बता सकने में समर्थ न हों। विना जवाब सुने किसी को दण्ड कैसे दिया

जा सकता है ? जिस समय यह अजनबी अपना हाल सुनने में समर्थ होंगे उस समय उन को न्यायालय के सामने उपस्थित करके उपयुक्त दण्ड दिया जा सकेगा।"

कितनी चालाकी और होशियारी से सम्राज्ञी ने हमारे बचाव की सूरत निकाल ली थी। उनकी आज्ञा के दोनों अर्थ लिये जा सकते थे, राज्य धर्म के विरुद्ध आचरण करने वालों को दण्ड देने पर बिल्कुल तैयार था सिर्फ अपराधियों को जवाबदेही करने का अवसर देना चाहता था। और इस के साथ ही हमारे पक्ष में यह बात थी कि अभी टली जान बची, बाद में क्या होगा, ज्यू बैण्डी के निवासियों के विचार हमारे सम्पर्क में आने के बाद बदल भी सकते थे और जनता की आवाज की उपेक्षा करना महापुरोहित ऐगौन के लिए भी संभव नहीं था। इस तरह हमारे बचाव की सूरत भी निकल सकती थी।

सम्राज्ञी के इस स्पष्ट आदेश की उपेक्षा करना ऐगौन के लिए भी संभव नहीं था इसलिये और कोई चारा न देख कर कुचले सर्प की तरह निष्फल क्रोध से फुंकारते हुए बड़ी अनिच्छा पूर्वक उसे उस आदेश को मानने पर बाध्य होना पड़ा।

"अच्छा सम्राज्ञी, आप का आदेश सिर माथे पर", उसने क्रोध से फुंकारते हुए कहा। "इस समय इन को जीवन दान दिया जाता है और जिस समय यह हमारे देश की भाषा समझने लगें उस समय इन को फिर देवाधिदेव भगवान् सूर्य के सन्मुख उपस्थित किया जाये और उस समय यदि भगवान सूर्य इन की बलि को स्वीकार करें तो इन के अपराध का फैसला किया जाये। मगर सम्राज्ञी और ज्यूबैण्डी के नागरिको यह बात कान खोल कर सुन लो कि यदि पापियों को दण्ड नहीं दिया गया, यदि देवाधिदेव भगवान् सूर्य को उन की बलि से वंचित किया गया, यदि उनको धोखा दिया गया तो इस देश पर भगवान् सूर्य का शाप पड़ेगा, इस देश का नाश हो जायेगा, अग्नि और महामारी इस देश का सत्यानाश कर देंगी। मैं महापुरोहित ऐगौन, भगवान् सूर्य का मुख्य पुजारी, इस देश का धर्म गुरु, मैं कहता हूँ कि यदि देवाधिदेव भगवान सूर्य से छल किया गया तो इस देश का सत्यानाश हो जायेगा ज्यू बैण्डी के निवासियो सुन लो मैं ने कह दिया है।"

महापुरोहित की घोषणा से चारों ओर हल चल सी मच गई और जनमत हम से फिरता सा दीखने लगा। लोग जोर जोर से बोलने लगे और सम्भव था कि हम पर कुछ संकट आता, परन्तु मामले की गंभीरता को दोनों सम्राज्ञियों ने भांप लिया था और इस से पहले कि जनता और उत्तेजित होती हम सैनिकों के पहरे में मन्दिर से बाहर पहुँच गये।

यह हाल जो मैंने ऊपर लिखा है उसे तो उस समय हम बिल्कुल ही नहीं समझ पाये थे, बहुत बाद को जब हम ज्यू वैण्डी भाषा थोड़ी बहुत समझने लगे उस समय हमें पता लगा कि किस तरह हमारी जान ज्यू वैण्डी के कट्टर और धर्मान्ध पुरोहित वर्ग से लोहा ले कर बचाई गई थी। धर्म के मामले में धर्म गुरु महापुरोहित की आज्ञा सम्राज्ञी या सम्राट् को भी माननी पड़ती है। धर्म के मामले में सम्राट को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। महापुरोहित की आज्ञा, उस का आदेश, सर्व मान्य होता है, सम्राट को भी उस के विरुद्ध चूं तक करने की अनुमति नहीं है। इस में कोई सन्देह नही कि यदि सम्राज्ञियों ने हमें बचाने की कोशिश न की होती तो हम मन्दिर में पहुँचने से पहले ही यमपुरी को भेज दिये गये होते। हम को जीवित ही धधकती भट्टी में झोंक कर बलि चढ़ा देने की योजना पुजारी वर्ग का अन्तिम शस्त्र था और सम्राज्ञी निलिप्था की होशियारी और सम्राज्ञी सोरियास की स्त्रीयोचित तीक्ष्ण बुद्धि के कारण ही उनको अपने प्रयत्नों में सफलता नहीं मिली थी।

अध्याय १५

साम्राज्ञी सोरियास का गीत

महापुरोहित ऐगौन और उस के धर्मान्ध कट्टर पुजारियों के चंगुल से बच कर हम अपने टिकने के स्थान पर लौट आये और अब क्योंकि संकट दूर हो चुका था इसलिये वक़्त बहुत मज़े में बीतने लगा। दोनों सम्राज्ञियां, राज्य दरबार के प्रतिष्ठित व्यक्ति, बड़े सामन्त, अधिकारी वर्ग सभी हम से मेल जोल बढ़ाने और हमारी ख़ातिरदारी करने में होड़ करने लगे। जैसे जैसे दरियाई घोड़ों वाला मामला लोगों को भूलता गया वैसे ही वैसे हमारी ख़ातिर दारी और प्रभाव बढ़ने लगा। रोज़ाना कोई न कोई प्रतिनिधि मण्डल हमारे वस्त्रों की काट छांट, हमारी रायफ़िलों, हमारी फ़िल्लमों, हमारी अन्य वस्तुओं और ख़ास कर घड़ियों को, जिन को देख कर वह बहुत आश्चर्य में पड़ जाते थे, देखने आने लगे। चारों ओर हमारे ही चरचे होने लगे और शीघ्र ही ज्यू वैण्डी के नवयुवक हमारे जैसे कपड़े पहिनने लगे और विशेष कर कुंवर साहिब का प्लस फ़ोर वाला सूट तो उनको इतना भाया कि एक हफ्ते के बाद ही कुछ शौकीन नवयुवक वैसे प्लस फ़ोर पहने दिखाई देने लगे।

एक दिन एक अर्ध सरकारी प्रतिनिधि मण्डल हम से मिलने आया, कैप्टिन प्रसाद अपने स्वभावानुसार अपनी पूरी वरदी से लैस थे। हम से जैसे व्यक्ति अधिकतर मिलने आते थे उन से यह बिल्कुल भिन्न थे। यह व्यक्ति निम्न वर्ग के और बहुत ही साधारण स्थित के मालूम होते थे और उनका बार बार झुक झुक कर सलाम करना यह बताता था कि वह अफ़सर वर्ग के नहीं थे। उन्होंने बहुत अधिक बात चीत तो की नहीं बल्कि उन का ध्यान अधिकतर हमारे कपड़ों की ओर ही रहा।

कैप्टिन प्रसाद की फ़ौजी वरदी को उन्होंने बहुत ध्यान से देखा, उस की नाप जोख की, जगह जगह से उसको नापा और नाप को चमड़े के बने काग़ज़ पर काली स्याही से लिखते गये।

अपनी वरदी की ऐसी क़दर होते देख कर कैप्टिन तो फूल कर कुप्पा हो गये पर उनको स्वप्न में भी यह ध्यान नहीं था कि वह मिलोसिस नगर के प्रमुख दरज़ियों के सामने थे। कोई दो सप्ताह बाद रोज़ की भांति दरबार में पहुँच कर हमने देखा कि ज्यू वैण्डी सेना के सात आठ नायक कैप्टिन प्रसाद जैसी वरदियां पहने, जिसमें तुर्रा, बूट, टोप फीते सभी कुछ था, इधर से उधर अकड़ते हुए घूमते फिर रहे थे। कैप्टिन तो मुँह फाड़ कर देखते रह गये, मारे आश्चर्य के उन की आँखें कपार पर चढ़ गईं। क्योंकि हमारे कपड़ों का स्टाक प्रायः समाप्त हो चुका था और फटे पुराने मैले वस्त्र पहनना हम अपनी मान प्रतिष्ठा को घटाना समझते थे, इसलिये हमने यहां की स्थानीय पोशाक को पहनना शुरू कर दिया। स्थानीय पोशाक वैसे तो बहुत आराम की है परन्तु ढीली ढाली होने के कारण उन वस्त्रों में मुझ जैसा दुबला पतला सूखा सा व्यक्ति बहुत ही अजीब लगता था और अलफान्सो तो पूरा बटलर लगता था। अमस्लोपागस ने यहां की पोशाक पहनने से साफ़ मना कर दिया अपनी घुटनों तक की लुंगी 'मोचा' के फट जाने पर उस ने जो भी कपड़ा मिला उससे दूसरा मोचा फिर बना लिया और वैसे ही नंग धड़ंग बड़े इत्मीनान से लोगों के कहने सुनने की तनिक भी परवाह न करते हुए इधर से उधर घूमता फिरता रहा।

इस बीच में हमारा ज्यू वैण्डी देश की भाषा सीखने का क्रम चला जा रहा था और हम धीरे धीरे सीखते भी जा रहे थे। मन्दिर वाली घटना के दूसरे दिन तीन सौम्य आकृति और सफ़ेद लम्बी दाढ़ी वाले वृद्ध हमारे पास आये। उन के पास पुस्तकें, स्याही की दावातें, क़लमें, लकड़ी की पट्टियां आदि थीं और इशारे से उन्होंने हमें बताया कि उन को हमें यहां की भाषा सिखाने के लिए भेजा गया था। और कोई चारा न देख कर अमस्लोपागस के अलावा हम चारों जी जान से पढ़ाई में जुट गये और रोज़ चार घण्टा पढ़ाई में लगाने लगे। अमस्लोपागस ने पढ़ने लिखने की बात से साफ़ इन्कार कर दिया।

इस 'स्त्री भाषा' को—यह नाम रखा था उसने यहां की भाषा का—सीखने की उसे तनिक भी इच्छा नहीं थी और जब हमारे एक शिक्षक ने बड़ी नम्रता से उससे पढ़ने का प्रस्ताव किया तो बड़ी रुखाई से उस ने गर्दन हिला कर पढ़ने से साफ़ मना कर दिया और अधिक ज़िद करने पर उसने तो अपनी इन्कूसीकास तान ली। बेचारा शिक्षक डर कर पीछे हट गया, उसका बूढ़े जूलू को पढ़ाने का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया। अमस्लोपागस की शिक्षा यहीं समाप्त हो गई।

इस तरह हमारा कार्य क्रम यह हो गया कि सवेरे का समय हम ज्यू वैण्डी भाषा सीखने में लगाने लगे और तीसरे पहर होता था सैर सपाटा। पहले तो यह नई भाषा हमें कुछ विचित्र सी लगी परन्तु बाद को वर्णमाला पहिचान लेने के बाद तो वहुत आसानी हो गई। जैसा मै पहले बता आया हूं ज्यू वैण्डी की भाषा जिन्दावेस्ता और ऋग वेद की भाषा से भी वहुत पुरानी परन्तु उसी ढंग की और उस से मिलती जुलती है, और लिपि तो बिल्कुल अज्ञात है। इसलिये हमें जो कुछ भी दिक्कत हुई वह लिपि सीखने में हुई, भारतवासी होने के नाते हम संस्कृत से थोड़ा वहुत परिचित थे ही। क्योंकि संस्कृत अच्छी जानते थे इसलिये यहां की भाषा का काम चलाऊ साधारण ज्ञान प्राप्त कर लेना हमारे लिए वहुत मुश्किल नहीं था। तो हमारा कार्य क्रम इस तरह था कि सवेरे का समय हम पढ़ने लिखने में लगाते थे और शाम को सैर सपाटा। कभी कभी हम दूर तक घूमने भी चले जाते थे, एक बार हम सोने की खान देखने गये, दूसरी बार संगमरमर की खदान की सैर की। सैर में मज़ा तो बहुत आया पर उसका पूरा हाल लिखने का समय नहीं है। कभी कभी हम शिकारी कुत्तों के साथ शिकार को निकल जाते थे और हरे भरे खेतों और कमर कमर ऊँची घास में हो कर घोड़े दौड़ाना बहुत ही अच्छा लगता था। और घोड़े भी कैसे थे कि वाह वा, बड़े जानदार बला के पानी दार। पूरा शाही अस्तबल हमारे लिए खुला हुआ था और वैसे तो सम्राज्ञी निलिप्था ने चार बहुत सुन्दर जीन सवारी के घोड़े हमें दे दिये थे।

कभी कभी हम पालतू बाज़ों से चिड़ियों का शिकार करने जाते थे। ज्यू वैण्डी में एक तरह की बहुत तेज़ उड़ने वाली बटेर पाई जाती

है और पालतू बाजों से इसी का शिकार किया जाता है, यहां के निवासी इस शिकार को बहुत पसन्द करते हैं। जब बाज़ इस बटेर पर आक्रमण करता है तो बजाय नीचे की ओर उतरने के यह बटेर आकाश में ऊपर उठता चला जाता है और शिकार में बहुत मजा आता है। जंगली हरियल का शिकार इस से भी ज्यादा मज़ेदार होता है। यह हरियल बला का चुस्त और उड़ने में तेज होता है और उड़ते समय ऐकाऐकी ऐसी करवटे और ग़ोते लेता है कि देखते ही बनता है। कभी कभी यहां के निवासी पालतू गिद्ध से छोटे हिरन का शिकार करते हैं। पहले तो यह पक्षी इतना ऊँचा आकाश में उठ जाता है कि नीले आकाश पर नन्हा सा धब्बा मालूम पड़ता है और फिर तोप के गोले की तेज़ी से नीचे उतरता है और झाड़ी या घास कूड़े में छुपे हुए हिरन के सिर पर अपनी लौह कठोर चोंच से आक्रमण कर के उस का शिकार करता है। भागते हुए हिरन का शिकार और भी मज़ेदार होता है।

कभी कभी हम राजधानी से दूर रहने वाले सामन्तों और राज्याधिकारियों की गढ़ियों और छोटे मोटे क़िलों को देखने चले जाते थे। यहां इन गढ़ियों में अंगूर की बेलें फैली होती थी और चारों ओर घास के हरे भरे मैदान होते थे और कहीं कहीं सुन्दर वृक्ष बड़ी होशियारी से लगाये हुए होते थे।

शाम को कभी कभी मैं, कुँवर साहिब और कैप्टिन प्रसाद सम्राज्ञियों और राज्य के उच्च अधिकारियों और सामन्तों के साथ भोजन किया करते थे—रोज़ तो नहीं कम से कम हफ्ते में दो तीन बार जब सम्राज्ञी अन्य सामन्तों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राजभवन में भोजन करने के लिए निमंत्रित करती थीं तो यह सौभाग्य हम को भी प्राप्त हो जाता था। मुझे आशा है कि आप मेरी बात का विश्वास करेंगे कि ऐसे डिनर मैंने अपने जीवन भर में कभी नहीं खाये थे। शान्ति और सादगी इन डिनरों की विशेषता होती थी। सम्राज्ञी निलिप्था की सुन्दरता और लावण्य, उनकी सादगी और सरल प्रकृति से डिनर की शोभा हजारों गुना बढ़ जाती थी और उनका प्रत्येक मेहमान से बार बार खाने का आग्रह करना और कभी कभी अपने हाथ से कोई

भोज्य वस्तु उठा कर दे देना सोने पर सुगन्ध का काम करता था। जितनी स्त्रियों के सम्पर्क में मैं अभी तक आया हूँ उन में से मैंने सम्राज्ञी निलिप्था को सब से सरल और कोमल प्रकृति पाया है और यदि उस के स्त्रियोचित क्रोध और ईर्पा को उकसाया न जाये तो वह बहुत ही मधुर और सलोना व्यवहार करती है परन्तु समय आने पर वह सम्राज्ञी जैसी शान शौकत भी दिखा सकती है और अवसर आ पड़ने पर उनकी बर्बर प्रकृति कोमलता के आवरण को भेद कर बाहर निकल पड़ती है और वह बिफरी हुई खूँख्वार शेरनी जैसी भी हो सकती है।

उदाहरण के लिए मैं उस दृश्य को कभी नहीं भूलूंगा जिससे मुझे पहली ही बार निश्चय रूप से यह पता लगा कि वह कुंवर साहिब के प्रेम पाश में फंस गई थी। और यह घटना हुई इस तरह स्त्रियों के संबन्ध में कैप्टिन प्रसाद की दुर्बलता, उनसे मेल जोल पैदा करने की उत्कंठा और उनकी संगति में रहने की आतुरता के कारण ही यह घटना हुई थी। हमें न्यू बैण्डी की भाषा सीखते-सीखते कोई तीन मास ही बीते थे कि कैप्टिन प्रसाद ने अपने डाड़ी वाले वृद्ध अध्यापक से जो जी जान से उनको पढ़ाने की कोशिश कर रहे थे ऊब गये। इसलिये एक दिन जब वह महाशय हमें पढ़ाने आये तो कैप्टिन ने बिना हम से कुछ पूछे तांछे उनसे मुँह खोला कर चुपचाप कह दिया कि उनकी इतनी जांगर तोड़ मिहनत करने पर भी हम लोग विदेश भाषा को भली प्रकार सीखने में सिर्फ इसीलिए पिछड़ रहे थे कि हमें पढ़ाने वाले अध्यापकों का चुनाव ग़लत किया गया था। विदेशी भाषा सिखाने का काम जितना स्त्रियां अच्छी तरह कर सकती हैं उतना विद्वान से विद्वान पुरुष भी नहीं कर सकता और यदि स्त्रियां सुन्दर हों—सुन्दर शब्द पर कैप्टिन ने भरपूर जोर दिया और उसे बार बार दुहराया भी—तो यह काम और भी सरलता से हो सकता था। अपने वृद्ध अध्यापक से उन्होंने यह भी जड़ दिया कि जिस देश से वह आये थे वहां अक्स्मात ही आ जाने वाले पर-देशियों को उस देश की भाषा सिखाने का काम चुनी हुई नव-युवती सुन्दरियों को सौंपा जाता था, इत्यादि। कैप्टिन ने और न जाने

क्या क्या तूमार बांधा होगा क्योंकि जब वह बोलना शुरू करते हैं तो उनके मुँह में लगाम नहीं रहती है और उनकी जबान तेजी से खिड़की फाटक लांघती चली जाती है।

कैप्टिन प्रसाद की बात को उनके वृद्ध अध्यापक मुँह फाड़े गपागप सुनते रहे। इसमें सन्देह नहीं कि कैप्टिन ने जो कुछ कहा था उसमें कुछ न कुछ सत्य अवश्य था क्योंकि यह पुरुष की प्रकृति है कि स्त्री जाति का सहज सम्पर्क उसकी बर्बरता को कम कर देता है। पुरुष असीम शक्तिशाली होने पर भी कोमलांगी स्त्रियों के सामने घुटने टेक देता है और उसके हृदय की कलुषिता बहुत हद तक दूर हो जाती है। उसकी कठोर तथा निर्मम प्रकृति पर एक प्रकार की विचित्र स्निगधता आ जाती है और वह वास्तविकता से कहीं अधिक नम्र और कोमल हो जाता है। जिस प्रकार सूर्य का मुक्त प्रकाश और खुली शुद्ध वायु हमको जीवन दान दे कर हमारे स्नायुओं और ज्ञान तन्तुओं को स्वस्थ रखती है उसी प्रकार स्त्री का सहज सम्पर्क भी हमारी भावनाओं को कलुषित होने से रोकता रहता है। रुकी हुई भावनाओं को मुक्त प्रवाह के लिए मार्ग मिल जाने से वह बन्द पानी की भाँति वह सड़ कर बदबू नही फैलाती हैं और स्त्री की कोमल प्रकृति तथा उसका सहज स्वाभाविक जन्म जाति ममत्व पुरुष के लौह हृदय में भी कोमल भावनाओं की लहरियों को पैदा कर देता है और उसकी निर्दयता तथा निर्ममता बहुत हद तक कम हो जाती है। इसलिये यह बहुत संभव था कि उपयुक्त शिक्षक मिलने पर शायद हम और भी तेजी से ज्यू वैण्डी भाषा सीख सकते। इसके अलावा उन्होंने यह भी कह दिया कि स्त्री जाति के स्वभाव से ही वाचाल और बातूनी होने के कारण उसका चुपचाप बैठना या मुँह सिये रहना उसकी प्रकृति के खिलाफ़ है और बातें कभी इक तरफ़ा हो नहीं सकतीं यह भी सत्य है, इस तरह मौखिक शिक्षा से बहुत जल्दी विदेशी भाषा सीखी जा सकती थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कैप्टिन का तर्क बहुत ही ठीक था क्योंकि स्त्री जन्म जात शिक्षक होती है। माता के रूप में बालक का लालन पालन करते समय शिक्षा विज्ञान का सारा ज्ञान उसे काम में लाना पड़ता है और यह

ज्ञान उसे सीखना नहीं पड़ता यह उसका स्वाभाविक प्राकृतिक गुण है। इसीलिये हमारे शास्त्रों में स्त्री को गुरु के नाम से भी पुकारा गया है और शायद यही कारण है कि आजकल उन्नतशील पाश्चात देशों में शिक्षा का भार स्त्रियों को ही सौंप दिया गया है। कैप्टिन की बात यूँ ही हँसी में उड़ा देने योग्य नहीं थी।

कैप्टिन ने यह सब बातें इतनी गम्भीरता से समझा कर कहीं कि उनके वृद्ध शिक्षक को भी उनका तर्क मान लेना पड़ा। उसने उनकी इच्छा को सम्राज्ञी के सामने निवेदन करके और उनकी आज्ञा और अनुमति मिलने पर ठीक ठीक बन्दोबस्त कर देने का वायदा किया और चलते चलते कैप्टिन ने उनको फिर एक बार याद दिला दी कि कहीं वह उस बात को न भूल जाये।

यह सब बातें हम दोनों यानी मुझ से और कुंवर साहिब से बिल्कुल छुपा कर की गई थीं और हमको इनकी भनक तक नहीं मिली। यदि भनक भी मिल जाती तो हम कैप्टिन पर जोर दे कर इस काम को रोक देते परन्तु हमें मालूम ही नहीं पड़ा और सारी हंडिया पक गई।

दूसरे दिन सवेरे जब हम पढ़ने के कमरे में पहुंचे तो वहां सौम्य आकृति वृद्ध शिक्षकों के स्थान पर तीन अति सुन्दर नवयुवतियों को देख कर कम से कम मेरे और कुंवर साहिब के आश्चर्य की सीमा न रही। तीनों बहुत ही सुन्दर थीं—शायद वह मिलोसिस नगर की सर्व श्रेष्ठ सुन्दरियाँ थीं। वह हमें देख कर पहले तो मुस्कराईं फिर लज्जा से उनके कान तक लाल सुर्ख़ हो गये, वह तीनों कुछ ऐसी घबराईं कि हमें प्रणाम तक करना भूल गईं, फिर न जाने क्या सोच कर तेजी से उठीं और हमें प्रणाम किया और अपने आप ही लज्जा से सिकुड़ गईं। मै और कुंवर साहिब उल्लू की तरह एक दूसरे को ताकते रह गये। इतनी देर में वह भी स्वस्थ हो चुकी थीं और उनमें से एक ने जो सब से सुन्दर थी साहस बटोर कर बताया कि उनको हमें पढ़ाने के लिए राज्य की ओर से नियुक्त किया गया था। हम दोनों की अक़्ल कुछ भी काम नहीं कर रही थी। अभी हम हैस बैस में ही थे और मामले का कुछ भी सिर पैर हमारी समझ में नहीं आ रहा

था कि कैप्टिन प्रसाद ने मुस्कराते हुए बड़े इत्मीनान से हमें बताया कि वह हमें वृद्ध शिक्षक से की हुई बातचीत बताना बिल्कुल भूल गये थे और कल शाम को वृद्ध शिक्षक ने यह भी उनको बता दिया था कि काफी सोच विचार करने के बाद वह स्वयं भी इसी नतीजे पर पहुँचे थे कि हमारी शिक्षा का कार्य सुन्दर नवयुवतियां ही ठीक तरह से कर सकती थीं। कैप्टिन की बात सुन कर मेरे आश्चर्य की हद न रही। मेरी तो बोलती बन्द हो गई और मैंने कुंवर साहिब से उनकी सलाह पूछी।

उन्होंने कुछ सोच विचार कर जवाब दिया, "लाल साहिब, जो हो गया सो हो गया, जब यह यहां आ ही गई हैं तो उनको वापस भेज देना ठीक नहीं होगा। उनकी भावनाओं को दुःख पहुँचेगा। किसी को न बुलाने में कोई हर्ज नहीं मगर न्यौता दे कर वापस कर देना झगड़े की बात है और हम यहां किसी से झगड़ा करना चाहते नहीं यह भी ठीक है। ऐसी सुन्दरियों का अपमान करने का साहस ना बाबा मैं तो कर नहीं सकता। और लाल साहिब हर्ज ही क्या है, ज़रा दो घड़ी की दिलचस्पी ही रहेगी।"

इस बीच कैप्टिन प्रसाद ने उन तीनों में से सब से अधिक सुन्दर युवती से सबक़ पढ़ना शुरू भी कर दिया था और अब चुपचाप पढ़ने के सिवाय कोई चारा ही नहीं था। अतः मजबूर हो कर हम दोनों ने भी अपना पाठ शुरू कर दिया। उस दिन तो सब ठीक ठाक रहा, इसमें सन्देह नहीं कि तीनों युवतियां बहुत ही चतुर और होशियार थीं और हमारे ग़लतियां करने पर डांटने फटकारने के स्थान पर मुस्करा देती थीं। इससे पहले मैंने कभी कैप्टिन प्रसाद को अपने पाठ को इतना जी लगा कर पढ़ते नहीं देखा था। कुंवर साहिब पहले तो झिझके से रहे फिर ज़ोर शोर से ज्यू वैण्डी भाषा का श्राद्ध करने लगे। मैं मन ही मन सोचने लगा कि यह हालत कै दिन चलेगी। बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनायेगी। एक न एक दिन हमारी बे फ़िक्री ज़रूर रंग लायेगी।

अगले दिन तक हमारा सहज संकोच काफ़ी दूर हो गया था और साधारण पठन पाठन के साथ साथ हमारी अध्यापिकायें बीच बीच में हमारे देश, हमारे देश की स्त्रियों, उनके गहने पोशाक, रहन सहन

इत्यादि के सम्बन्ध में तरह तरह के प्रश्न पूछती जाती थीं और हमको ज्यू वैरुडी भाषा में ही जैसा कुछ हमसे बन पाता था उन प्रश्नों का उत्तर देना होता था। कैप्टन प्रसाद बहुत उत्साह से अपनी अध्यापिका से पाठ पढ़ रहे थे, एक बार मैंने उनको उससे यह कहते सुना कि उसकी सुन्दरता अद्वितीय थी और भारतीय स्त्रियों की सुन्दरता उसके सामने ऐसी ही फीकी थी जैसे सूर्य के सामने चन्द्रमा निष्प्रभ और अशोभनीय लगता है। इस बात से उसके कान तक लज्जा से लाल हो गये थे परन्तु इसके उत्तर में उसने अपना सिर हिला कर यह उत्तर दिया कि वह तो केवल एक साधारण 'अध्यापिका' थी और इसलिये उसका मजाक़ उड़ानों हम जैसे "दैवी व्यक्तियों के लिये उचित नहीं था। पढ़ाई का कार्यक्रम खत्म हो जाने पर रोज़ थोड़ा सा गाना बजाना हुआ करता था यद्यपि हम गीत के शब्दों को नहीं समझ पाते थे पर गीत की स्वर लहरी और स्वरों का उतार चढ़ाव हमको मस्त कर देता था। ज्यू वैरुडी के प्रेम और प्रणय गीत निस्संदेह बहुत ही मधुर और हृदय स्पर्शी होते हैं।

तीसरे दिन तक हम खूब घुल मिल गये थे। कैप्टिन प्रसाद ने अपनी अगली पिछली सारी प्रेम कथायें अपनी सुन्दर अध्यापिका को सुना डालीं और उनको सुन कर उस पर इतना प्रभाव पड़ा कि वह कैप्टिन को एक आदर्श प्रेमी के रूप में देखने लगी। मैं अपनी अध्यापिका से, जो एक बहुत चंचल नीली आंखों वाली छोकरी थी, ज्यू वैरुडी देश के कला कौशल के सम्बन्ध में बातें कर रहा था और अपनी बातों की झोंक में मुझे यह नजर ही न पड़ा कि वह छोकरी मेरी आँख बचा कर मेरी पीठ पर तिलचट्टा की तरह के एक कीड़े को छोड़ देने का मौका ताक रही थी। कमरे के दूसरे कोने में कुंवर साहिब अपनी अध्यापिका से मौखिक पाठ पढ़ रहे थे, वह क्या पढ़ रहे थे यह तो मुझे सुनाई नहीं दे रहा था क्योंकि पाठ बहुत धीमी आवाज़ से चल रहा था परन्तु इतना अवश्य था कि दोनों अपने काम में खोये हुए थे।

अध्यापिका ने अपनी कोमल वीणा विनिन्दिनी आवाज़ में ज्यू वैरुडी भाषा में कहा "हाथ" और कुंवर साहिब ने उसका हाथ पकड़ लिया, उसने "आँखें" कहा और कुंवर साहिब ने उसकी भूरी चंचल आंखों

से अपनी आँखे भिड़ा दीं, उसने कहा "होठ" और उसी समय मेरी संगिनी ने मेरी पीठ पर तिलचट्टा छोड़ दिया और मेरे संभलते न संभलते हंसते हुई भाग गई।

जिन कीड़ों से मैं घृणा करता हूं उनमें सब से अधिक नफ़रत मुझे तिलचट्टे से है और फिर उस छोकरी का हंसना और मेरा मज़ाक उड़ा कर मुझे उल्लू बनाना मुझे बुरी तरह खल गया। मेरे तन बदन में आग लग गई और इसलिये जिस गद्दी पर वह छोकरी बैठी हुई थी उसे उठा कर मैंने ज़ोर से उसे फेंक कर मारा। मेरी लज्जा, भय और परेशानी की आप कल्पना कीजिये कि मेरे गद्दी फेंक कर मारते ही कमरे का दरवाज़ा ऐकऐकी खुला और दो प्रहरियों के साथ सम्राज्ञी निलिप्था अन्दर आ गई। फेंकी गद्दी को कमान से निकले तीर की तरह वापस लाना असम्भव था। गद्दी उस छोकरी के तो लगी नहीं पर सम्राज्ञी के एक प्रहरी के सिर पर तड़ाक से जा कर लगी। मौक़ा नाजुक देख कर मैंने ऐसी मासूम शक्ल बना ली जैसे उस गद्दी को मैंने नहीं बल्कि किसी और ने फेंका था। कैप्टिन प्रसाद ने आँखे मटकाना बन्द कर दिया और खूब चिल्ला चिल्ला कर पूरी आवाज़ से ऊयूवैण्डी भाषा का श्राद्ध करने लगे। कुंवर साहिब उल्लू की तरह मुँह फाड़े रह गये, उस छोकरी का हाथ अब भी उनके हाथ में था। रही तीनों छोकरियां, उनके तो काटो तो लहू नहीं, वह तो बिल्कुल जड़ हो गईं।

और सम्राज्ञी निलिप्था उन की आंखों से आग के शोले निकलने लगे, वह तन कर खड़ी हो गईं और उनका दुबला पतला छरहरा शरीर अंग रक्षक प्रहरियों से भी लम्बा लगने लगा। उनका चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया और क्षण भर बाद ही न जाने किस व्यथा से पीला पड़ गया।

"प्रहरी" सम्राज्ञी ने शान्त गंसीली आवाज़ से प्रहरी को पुकार कर कुंवर साहिब को पढ़ाने वाली छोकरी की ओर इशारा करते हुए कहा, "प्रहरी, हम आज्ञा देती हैं कि इस छोकरी का सिर काट कर घूरे पर फेंक दिया जाये।"

दोनों प्रहरी क्षण भर के लिए ठिठके, रुके, उनका रुकना स्वाभाविक ही था क्योंकि उनकी समझ में नहीं आया था कि उन्हें वास्तव में करना क्या था।

"प्रहरी, सुनी नहीं तूने हमारी आज्ञा," सम्राज्ञी ने उसी स्वर से फिर कहा, "क्या तू हमारी आज्ञा मानने से इन्कार करता है ? तेरी यह मजाल ?"

सम्राज्ञी की स्पष्ट आज्ञा को सुन कर दोनों प्रहरी अपने बरछों को तान कर उस अभागी छोकरी की ओर बढ़े। इस बीच में कुंवर साहिब भी संभल चुके थे और क्षण भर में ही उनको यह मालूम हो गया कि यह सुखान्त नाटक पलक मारते ही दुखान्त बनने जा रहा था।

"पीछे हटो, खबरदार जो आगे पाँव बढ़ाया", उन्होंने बड़े दर्प से गरज कर कहा और साथ ही उस अभागी भयभीत छोकरी को अपने पीछे कर के प्रहरियों के सामने सीना तान कर खड़े हो गये। "सम्राज्ञी, धिक्कार है आप पर, होश में आइये, शर्म नहीं आती आप को ऐसी बेहूदा आज्ञा देते। मेरे जीते जी आप इस छोकरी का बाल भी बांका नहीं कर सकते हैं, यह समझ लीजिये।"

"ठीक है, तू ही उसे नहीं बचायेगा तो और कौन बचायेगा, मजे भी तो तूने ही उड़ाये हैं। बहुत अच्छा बदला दिया हमारी मेहरबानियों का तूने कमीने परदेसी। जिस पत्तल में खाया उसी में छेद कर दिया," क्रोध से लाल पीली होती हुई सम्राज्ञी ने कहा, "मगर हमारी आज्ञा अटल है, इस छोकरी को अवश्य ही अपनी जान से हाथ धोना होगा, इसको अवश्य मृत्यु दण्ड दिया जायेगा," क्रोध से पांव पटकते हुए सम्राज्ञी ने कहा।

"अच्छा, यदि साम्राज्ञी की यही इच्छा है तो ठीक है," कुंवर साहिब ने गर्व से सीना तान कर कहा, "मैं भी उसी के साथ अपनी जान दे दूंगा। मैं भी तो उसी की तरह आप की प्रजा हूँ साम्राज्ञी, जो दण्ड उसे दिया गया है वही मुझे भी मिलना चाहिये," और यह कह कर कुंवर साहिब सीना तान कर खड़े हो गये और उन्होंने अपनी आंखों को, जिन से असीम घृणा का झरना सा झर रहा था, सम्राज्ञी के मुख पर जमा दिया।

"इच्छा तो यही होती है कि तेरा सिर भी धड़ से अलग कर दिया जाता," सम्राज्ञी ने दांत पीसते हुए उत्तर किया, "तूने हमारी आज्ञा को मजाक में उड़ा देने की कोशिश की है।" और तब यह महसूस

कर के कि कुंवर साहिब ने अपनी कठोरता और असीम वीरता से उन पर प्रभुत्व जमा लिया था और अपने को बिल्कुल निरीह और असहाय समझ कर वह ऐकाऐकी जोर से फूट फूट कर रो उठीं। सुन्दर स्त्री की आंखों के आंसू उसकी सुन्दरता के सहस्र गुना बढ़ा देते हैं और इसी कारण स्त्री की आंख का एक आंसू सारी सृष्टि में आग लगा देने की क्षमता रखता है। एक आंसू सृष्टि में उथल पुथल मचा सकता है, साम्राज्य बह जाते हैं स्त्रियों के आंसुओं में। संसार के अनेकों राज्य मुकुट स्त्री के एक आंसू की रौ में बह गये हैं। स्त्री की आंख का एक आंसू ही महाभारत में कौरवों का काल बन गया था, एक आंसू के कारण ही सोने की लंका फूंक दी गई थी। सम्राज्ञी निलिप्था की आंखों में आये आंसुओं ने उन की सुन्दरता और कमनीयता को अनन्त गुना बढ़ा दिया। यद्यपि मैं बूढ़ा हो गया हूँ परन्तु उस समय कुंवर साहिब का साम्राज्ञी के हाथों को पकड़ कर सान्तवना देना मुझे खल गया। मैं ईर्षा से जल कर राख हो गया। काश मैं बूढ़ा न हो कर कुंवर साहिब जैसा बांका जवान होता। पर बूढ़े केशवदास ठीक ही लिख गये हैं, 'केशव केसन अस करी जो अरि हू न कराहिं, चंद्र वदन मृग लोचनी बाबा कहि कहि जायें'। वह भी बूढ़े थे और मैं भी बूढ़ा था, दिल में ऐंठ कर रह गया। परन्तु पलक झपकते ही सम्राज्ञी को अपने पद मर्यादा का ध्यान आया और बड़े कष्ट से अपने ऊपर आत्म नियंत्रण करके इस अशोभनीय घटना की लज्जा को छुपाने के लिए कुंवर साहिब के हाथों से अपने हाथों को छुड़ा कर बहुत तेजी से पैर पटकती हुई वहां से तीर की तरह चली गईं। हम तीनों डर के मारे सूख कर सोंठ हो गये।

अभी हमारे होश ठिकाने नहीं हो पाये थे कि एक प्रहरी कमरे में आया और तीनों छोकरियों को आज्ञा सुनाई कि वह अभी उसी क्षण मिलोसिस नगर को छोड़ कर अपने गांव को लौट जाये और यदि फिर कभी वह मिलोसिस नगर की सीमा में दिखाई पड़ेगी तो उनका सिर काट कर घूरे पर फेंक दिया जायेगा। नगर छोड़ कर चले जाने पर उन पर कोई आपत्ति नहीं आयेगी। अतः उन तीनों को चला जाना पड़ा, जान बची और लाखों पाये। इतने सस्ते छूट जाने की आशा

ज़रा कम थी। छोकरियों को अपनी विद्वता न दिखा सकने का अफ़सोस तो बहुत था मगर जान बच जाने की खुशी उससे भी अधिक थी। जाते समय गुरुदक्षिणा के रूप में वह हमसे निशानियां मांग ले गईं। उन के जाने के बाद हमारे पुराने अध्यापकों ने फिर अपना काम संभाल लिया। इस तब्दीली से कम से कम मुझे तो बहुत ही खुशी हुई।

उस रात को भय से डरते काँपते हम राज्य भवन में सम्राज्ञियों के साथ भोजन करने पहुंचे, वहां पहुंच कर हमें पता लगा कि सम्राज्ञी निलिप्था भयानक सिर दर्द के कारण आने में असमर्थ थीं। यह सुन कर जान में जान आई जैसे सिर से आई बला टल गई हो। सम्राज्ञी का सिर दर्द पूरे तीन दिन तक रहा, लेकिन चौथे दिन वह पहले की तरह ही सरकारी भोज में शामिल हुईं और बहुत ही मनोमोहक मुस्कराहट के साथ खाने की मेज़ तक ले चलने के लिये कुंवर साहिब की ओर अपना दाहिना हाथ बढ़ा दिया। भोज में और भी सामन्त मौजूद थे और सम्राज्ञी ने बड़ी चतुराई से उस समय ऊपर लिखी घटना का कोई ज़िक्र तक न आने दिया। शायद सामन्तों को घटना का कुछ कुछ पता लग गया था, कम से कम इतना तो उनको मालूम हो ही गया था कि हमारे अध्यापक बदल दिये गये थे। जानने को सभी इच्छुक थे पर बात चलाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। सम्राज्ञी ने इस बात को भांपा और स्वयं ही बात चला कर बड़ी साधारण रीति से उनकी बढ़ती हुई उत्सुकता को यह कह कर शांत कर दिया कि जिस समय वह हमें पढ़ते देखने गई थीं उस समय न जाने कैसे, शायद गर्मी के कारण उनको चक्कर आ गया था और तीन दिन तक जी खराब रहा। साथ ही इस घटना को मज़ाक में उड़ा देने के लिए सम्राज्ञी ने अपनी स्वभाविक विनोद प्रियता से हंसते हुए यह भी जड़ दिया कि हमको इतनी तेज़ी से और मिहनत से लिखने पढ़ते देख कर उनके सिर में दर्द होने लगा था। सम्राज्ञी के मज़ाक पर सभी हंस पड़े और बात आई गई हो गई। मगर जिस क़हर आलूदा निगाहों से उन्होंने कुंवर साहिब की ओर देखा उससे मेरे रोंगटे तक खड़े हो गये। उनकी निगाहें लाल गरम छड़ों की तरह दिल में उतर गईं। खाना समाप्त

हो जाने के बाद यह देखने के लिये कि हम वास्तव में कुछ लिख पढ़ भी रहे थे या वैसे ही टल्ले मार रहे थे सम्राज्ञी ने सभी दरबारियों के सामने हमारे ज्यू बैण्डी भाषा के ज्ञान का इम्तिहान लिया, और परीक्षा में पास हो जाने पर हमारे परिश्रम की सराहना की। फिर स्वयं सम्राज्ञी ने हमको और विशेष कर कुंवर साहिब को एक पाठ पढ़ाया, उनके पढ़ाने और नई बातें बताने का ढंग वास्तव में बहुत सुन्दर था।

जब हम खाने की मेज़ के चारों ओर बैठे बातें कर रहे थे और हंस बोल रहे थे उस समय सम्राज्ञी सोरियास अपनी नक़्क़ाशी दार हाथी दाँत की कुरसी पर बैठी हमारी प्रत्येक बात को अपने कानों से पी जाने जाने की कोशिश कर रही थीं। शायद वह इस घटना का कुछ न कुछ भेद अवश्य पा गई थीं और हमारी असलियत को भी ठीक तरह भांप गई थीं। इसलिये अधिक बातें करने के स्थान पर वह चुपचाप बैठी चारों ओर होने वाली बातों को सुन रहीं थीं और बहुत आवश्यकता पड़ने पर ही सिर हिला कर या मुस्करा कर हमारी बातों का उत्तर दे रही थीं। उनकी मुस्कराहट गहरे काले बादलों में तेज़ी से चमकने वाली विद्युत् रेखा की तरह सीधा दिल में उतर जाती थी। सम्राज्ञी सोरियास के बाँये हाथ पर कैप्टिन प्रसाद बैठे थे और शाही मान मर्यादा को पूरी तरह ध्यान में रखते हुए आँखों से ही सम्राज्ञी के सौंदर्य को पी जाने की चेष्टा कर रहे थे। मुझे सम्राज्ञी सोरियास से भय लगता था और उनकी दृष्टि पड़ते ही मेरे सारे शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती थी। मैं उनको बड़ी पैनी दृष्टि से देख रहा था और मुझे बहुत जल्दी इस बात का विश्वास हो गया कि सम्राज्ञी विष भरा कनक घट थीं। मुंह में राम बग़ल में छुरी। ऊपर से जितना ही वह सम्राज्ञी निज़िप्था से प्रेम और प्रीति दिखाती थी उतना ही उनसे जलती और दिली नफरत भी रखती थीं। एक बात का मैंने और पता लगाया और उसका पता लगने पर मेरे भय, विस्मय और दुख की कोई सीमा न रही। वह बात यह थी कि मैंने देखा कि सम्राज्ञी सोरियास भी कुंवर साहिब के प्रेम जाल में फंस गई थीं। मै निश्चय रूप से तो कुछ कह नहीं सकता परन्तु मुझे लगा कुछ ऐसा ही और इसका कारण यह है कि सम्राज्ञी सोरियास जैसी शान्त और गर्विता स्त्री के मन की थाह लेना

प्रायः असम्भव था। परन्तु जिस तरह पुराने शिकारी हवा को सूंघ कर शिकार का खोज लगा लेते हैं उसी तरह दो एक बातें मैंने भी ऐसी देखीं कि जनसे मेरी यह धारणा बनती चली गई।

इसी तरह तीन महीने बीतग ये, इस बीच में हमने भी ज्यू वैण्डी भाषा भली प्रकार सीख ली थी। जैसे जैसे समय बीतता गया हम ज्यू वैण्डी निवासियों को और भी अधिक प्रिय होते गये। राज्य दरबार के प्रमुख दरबारी भी हमारे विस्तृत ज्ञान और जानकारी का लोहा मान कर हमारा आदर मान करने लगे। यह तो मैं पहले ही बता आया हूँ कि कुंवर साहिब ने यहां के निवासियों को शीशा बनाना सिखा दिया था, इसकी यहाँ आवश्यकता भी बहुत थी, और हम अपनी बीस साला जंत्री की सहायता से स्थानीय ज्योतिषियों के मुक़ाबिले अधिक उत्तमता से ग्रहण इत्यादि की भविष्य वाणी कर सकते थे। हमने स्थानीय विद्वानों के सामने भाप से चलने वाले इंजनों के सिद्धांत का प्रदर्शन दिया, उसको देख कर उनके विस्मय और आश्चर्य की हद न रही। इसी तरह की और भी कई चीज़ें हमने उनको बना कर दिखाईं।

इन बातों का नतीजा यह निकला कि ज्यूवैण्डी के प्रमुख व्यक्तियों ने इस बात का निश्चय किया कि हमें किसी भी हालत मे वहां से भाग निकलने न दिया जाये। वैसे तो हमारा वहां से भाग निकलना यदि हम चाहते तौ भी प्रायः असम्भव ही था। साथ ही हमारी पद प्रतिष्ठा बढ़ा दी गई थी थी और हमको सम्राज्ञियों के अंग रक्षक दल का कैप्टिन बना दिया गया था। हमारे रहने के लिये महलों में ही पक्का बन्दोबस्त कर दिया गया और राज्य के संचालन और देश की राजनैतिक गुत्थियों को सुलझाने में हमारी सम्मति पूछी जाने लगी।

यद्यपि हमको अपना भविष्य उज्जवल दिखाई दे रहा था परन्तु हमारे भाग्याकाश के एक कोने में संकट रूपी बादल का एक टुकड़ा धीरे धीरे बढ़ कर फैलता जा रहा था। उन कम्बख़्त दरियाई घोड़ों की बात प्रायः बिल्कुल दब सी गई थी परन्तु इसका यह मतलब नहीं था कि लोग हमारे उस धर्म विरुद्ध आचरण की बात को भूल गये थे या ज्यू वैण्डी के महा शक्तिशाली पुजारी पुरोहित वर्ग का प्रधान धर्म गुरु ऐगौन हमार इस पाप कर्म को क्षमा कर चुका था। ऊपर से सब शान्त

दिखाई देता था परन्तु राख के नीचे अंगार दहक रहे थे और दबी हुई आग ज्वालामुखी के विस्फोट की तरह फूट निकलने को जोर मार रही थी। सारा पुरोहित वर्ग हम से घृणा करता था। और उन का घृणा करना एक हद तक ठीक भी था। हमारे पहुँच जाने से उनका ज्ञान और मान प्रतिष्ठा कौड़ी के मोल हो गई थी। अब तक ज्यू वैण्डी में पुरोहित पुजारी वर्ग ही सब से अधिक विद्वान और बुद्धिमान माना जाता था और शासन प्रशासन की कोई बात भी उनकी सलाह के बिना नहीं की जाती थी। उनकी योग्यता और विद्वत्ता के कारण ही सारी प्रजा उनको सिर नवाती थी। परन्तु हमारे पहुँच जाने से, हमारे बीसवीं सदी के ज्ञान और विचित्र अविष्कारों के कारण उनकी मान प्रतिष्ठा को बहुत धक्का पहुँचा था और शिक्षित नवयुवकों में तो उनका प्रभाव प्रायः एक दम खत्म सा हो गया था। हमारी बढ़ती हुई मान प्रतिष्ठा और राजकाज के मामलों में हमारी सलाह पूछी जाने के कारण उनकी प्रतिष्ठा तथा गौरव को और भी अधिक धक्का पहुंचा।

हमारा बढ़ता हुआ प्रभुत्व पुजारी पुरोहित वर्ग के दिल में कांटे की तरह खटकता था और हम को भी उनसे डर सा लगा करता था क्योंकि वह एक संगठित संस्था थी और देश के कोने कोने में उसका जाल फैला हुआ था।

हमारे सिरों पर संकट का एक बादल और घिरा आ रहा था और वह था कुछ सामन्तों का हमारे विरुद्ध षड़यंत्र, इसका नेता था नैस्टा। अभी तक तो नैस्टा चुपके चुपके हमारे विरुद्ध सामन्तों को उभाड़ कर हमें नीचा दिखाने का षड्यंत्र कर रहा था मगर अब तो उसने खुल्लम खुल्ला विद्रोह करने पर कमर कस ली थी। बहुत दिनों से नैस्टा ने निलिप्था से विवाह करने की आस लगा रखी थी और जहां तक मुझे पता लगा था उसके रास्ते में बहुत सी रुकावटें अवश्य थीं लेकिन कभी न कभी देर सवेर उसे सफलता मिलने की पूरी उम्मीद थी।

हमारे वहाँ पहुँच जाने से सारा मामला गड़बड़ा गया था। अब सुन्दरी निलिप्था सामन्त नैस्टा की ओर शरमाई आँखों से देख कर मुस्कराती नहीं थीं, और नैस्टा भी इतना बुद्धू नहीं था कि असली

मामले को भांप न जाता। क्रोध और निराश से अन्धे हो कर उसने सम्राज्ञी सोरियास की ओर ध्यान दिया लेकिन यहाँ उसे एक दम निराश होना पड़ा। सम्राज्ञी सोरियास को आकर्षित करना बालू से तेल निकालना था। सोरियास ने पास ही न फटकने दिया, उसकी कठोर आकृति को लक्ष्य करते हुए तीखे चुभते व्यंग कसे और उसे पूरी तरह उल्लू बना कर छोड़ दिया। दोनों ओर से निराश होने पर नैस्टा को अपने उन तीस हज़ार बरछैतों का ध्यान आया जो उसके एक इशारे पर पहाड़ी ढालों से उतर कर न्यू वैण्डी में तहलका मचा सकते थे और चारों ओर खून की नदियां बहा सकते थे। उन्हीं के बल बूते पर नैस्टा ने हमारे सिरों को काट कर मिलोसिस नगर के मुख्य द्वार पर टांग देने की कसम खाई।

लेकिन उसने एक बार फिर कोशिश कर देखने की सोची। भरे दरबार में सारी प्रजा के सामने सम्राज्ञी निलिप्था से विवाह का प्रस्ताव करने का उसने निश्चय किया। देश के कानून के अनुसार प्रति वर्ष एक आम दरबार हुआ करता था जिस में सम्राट सम्राज्ञी आने वाले वर्ष के लिए नये क़ानूनों का ऐलान करती थीं। नैस्टा ने इसी आम दरबार में सारी जनता के सामने सम्राज्ञी निलिप्था से विवाह का प्रस्ताव करने का निश्चय किया।

इस सनसनीदार खबर को सम्राज्ञी निलिप्था ने बहुत धैर्य के साथ सुना और जिस दिन कानूनों के ऐलान करने का आम दरबार होने वाला था उस से पहली रात को भोजन करते समय कांपती डरी आवाज़ से हमें सारा हाल कह सुनाया।

कुंवर साहिब गुस्से से ओठ चबाने लगे और लाख कोशिश करने पर भी उनकी बेचैनी और परेशानी छुपी न रह सकी। फ़िक्र तो मुझे भी बहुत हो गई।

"और सम्राज्ञी ने महा सामन्त नैस्टा को क्या जवाब देने का निश्चय किया है?" मैंने व्यंग करते हुए पूछा।

"हमारा जवाब पूछते हैं मैकुमाज़न, (मैंने अपना जूलू नाम ही यहां सब को बता रखा था)", बड़ी निराशापूर्ण मुस्कराहट से, जिस से मेरा कलेजा कट गया, अपने बर्फ जैसे श्वेत कंधों को हिला कर सम्राज्ञी ने

जवाब दिया, "अभी तो हम स्वयं ही नहीं जानते कि हम क्या जवाब देंगे। एक स्त्री, एक अबला स्त्री, कर ही क्या सकती है मैंकुमाजन और खास कर ऐसी दशा में जब कि विवाह का प्रस्ताव करने वाले के पास उसके इशारों पर जान पर खेल जाने वाले तीस हजार बरछैत मौजूद हों," और यह कह कर उन्होंने भयभीत हिरणी जैसी आँखों से कुंवर साहिब की ओर देखा।

भोजन करना खत्म हो चुका था इसलिये हम सब खाने की मेज से उठ कर पास वाले कमरे में चले गये।

"लाल साहिब, एक बात आप से कहनी है," कुंवर साहिब ने बहुत फुसफुसा कर मुझ से कहा, "सुनिये, मैंने आप को कभी बताया तो नहीं है लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि आप जानते जरूर हैं। मै निलिप्था से प्रेम करता हूँ। मुझे बताइये कि अब मै क्या करू ?"

सौभाग्य से मैं ऐसी सम्भावना पर पहले ही खूब सोच विचार कर चुका था और इसलिये जो कुछ मुझे ठीक जंचा था मैंने कुंवर साहिब से कह दिया।

"आज रात को ही आप सम्राज्ञी निलिप्था से अपनी बात कह दीजिये," मैंने कहा, "अब ठहर ने को गुंजाइश ही नहीं है, अवसर चूकि पुनि पछिताये। शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिये। सुनिये कुंवर साहिब, दरबार खास में सम्राज्ञी निलिप्था के बिल्कुल पास पहुँचने की कोशिश कीजिये और अवसर मिलते ही बहुत चुपचाप उन से आधी रात्रि के समय मुख्य हॉल में रैंडीमस की मूर्ति के पास मिलने की प्रार्थना कीजिये। उस समय मै आप दोनों का रक्षा के लिए पहरा दूंगा। कुंवर साहिब, अब नहीं तो फिर कभी नहीं, यही मौका है, किस्मत आजमाई कीजिये, डरने की क्या बात है।"

हम दरबार खास वाले कमरे में जा पहुंचे। सम्राज्ञी निलिप्था अपनी गोदी में हाथ रखे बिल्कुल चुपचाप संगमरमर की मूर्ति की तरह बैठी हुई थीं, उनका सुन्दर मुख कुम्हलाया हुआ था और ऐसा मालूम होता था जैसे वह चारों तरफ के शोर ग़ुल से बेखबर दूर किसी चीज को देख रही हों। उन से कुछ हट कर सम्राज्ञी सोरियास कैप्टिन प्रसाद से बड़ी शान और ठस्से से बाते कर रही थीं।

समय गुज़रता गया, दरबार के कायदों के अनुसार मैं जानता था कि १५ मिनट बाद ही दरबार उठ जायेगा और दोनों सम्राज्ञियां राज्य भवन को चली जायेंगी। अभी तक कुंवर साहिब को सम्राज्ञी निलिप्था से ऐकान्त में एक बात करने का मौक़ा नहीं मिल पाया था। यद्यपि हमारा अधिकतर समय सम्राज्ञियों के पास ही गुज़रता था तौभी उन से ऐकान्त में बातें करने का अवसर बहुत मुश्किल से ही मिल पाता था। मै बड़ी तेज़ी से इसका हल सोचने लगा और सहसा मुझे एक तरकीब सूझ गई।

सम्राज्ञी सोरियास के सामने ज़मीन तक झुक कर कोर्निश बजा लाते हुए मैंने बड़ी नम्रता से कहा, "क्या सम्राज्ञी अपने दासों पर अनुग्रह करके कोई गाना गाने का कष्ट करेंगी? आज हम लोगों के मन बहुत दुखित हो रहे हैं, इसलिये हे सम्राज्ञी हे 'रजनी बाला' (सम्राज्ञी सोरियास प्रजा में इसी नाम से प्रसिद्ध थीं) हम दासों पर अनुग्रह करने की कृपा करें।"

"मैकुमाज़न, क्या तुम को मालूम नहीं कि हम कलावन्त गायिका नहीं हैं, और हमारे गीत दुखित हृदयों को मस्त नहीं बना सकते। मगर तुमने प्रार्थना की है इसलिये हम तुम्हारी प्रार्थना को स्वीकार करते हैं, हम गाना सुनायेंगे," यह कह कर सम्राज्ञी सोरियास अपने स्थान से उठ कर कमरे के बीच में रखी मेज़ के पास गईं और उस पर रखे सितार की तरह के एक बाजे के तारों पर उंगली फेर कर स्वर ठीक किया।

उस के बाद ऐकाऐकी ही एक गम्भीर स्वर लहरी हवा में गूंजने लगी। सम्राज्ञी की आवाज़ बहुत लोचदार और दानेदार थी, स्वर बहुत मधुर था। उन्होंने कोई विरह गीत शुरू कर दिया था। उनकी आवाज़ से टपकने वाले नैराश्य और विरह वेदना की करुण पुकार से सारा दरबार घर गूंज गया। कण कण से विरही की करुण पुकार फूट फूट कर निकलने लगी। मालूम होता था जैसे कोई चिर विरहिनी रो रो कर अपने बिछुड़े प्रीतम को टेर टेर कर बुला रही हो। गीत के शब्दों के पूरी तरह से समझ न पाने पर भी मेरा मन विरह वेदना से भर उठा, सम्राज्ञी को अपनी आवाज़ पर पूरा अधिकार था, वह

वास्तव में एक कुशल गायका थीं। मगर मेरा मन तो दूसरी ओर लगा हुआ था इसलिये मुझे गाना सुनने का मोह त्याग कर अपने काम की ओर ध्यान देना पड़ा।

परन्तु कितना सुन्दर था वह गीत, काश मैं उस गीत की स्वर लहरी लिख सकता।

जिस समय सम्राज्ञी ने दूसरा अन्तरा शुरू किया तो मैंने कुंवर साहिब से चुपचाप फुसफुसा कर कहा, "यही मौक़ा है कुंवर साहिब, चूके और गये," और यह कह कर मैंने उनकी ओर से मुंह फेर लिया।

"सम्राज्ञी निलिप्था," कुंवर साहिब कह रहे थे, उत्तेजना के कारण मेरे स्नायु इतने तन गये थे कि यद्यपि कुंवर साहिब बहुत फुसफुसा कर बोल रहे थे, तौभी और सम्राज्ञी सोरियास की तेज़ आवाज़ के बावजूद भी मुझे उनका कहा एक एक शब्द साफ़ सुनाई दे रहा था। वह कह रहे थे, "सम्राज्ञी निलिप्था, आज रात्रि को मुझे आप से मिलना बहुत जरूरी है, यह मेरी जिन्दगी और मौत का सवाल है, मना न कीजिये सम्राज्ञी, मैं आप से प्रार्थना करता हूं।"

"हम तुम से किस तरह मिल सकते है," सम्राज्ञी ने बिल्कुल नाक की सीध में दीवार पर आंख जमाये हुए पूछा, "सम्राज्ञियां साधारण स्त्रियां तो होती नहीं हैं। तेज़ नज़रें हम को एक क्षण को भी आंखों से ओट नहीं होने देतीं। हम को दास दासियों से घिर कर पहरे में रहना होता है।"

"सुनिये सम्राज्ञी, मैं आधी रात के समय बड़े हॉल में रखी रैडीमस की मूर्ति के पास आ जाऊंगा। मुझे आज का सांकेतिक शब्द ज्ञात है, मुझे हॉल में जाने से कोई नहीं रोकेगा। मैकुमाजन वहां अंधेरे में खड़े हो कर हमारी रक्षा करेंगे और उन के साथ उनका ज़ूलू भी होगा। सम्राज्ञी आइयेगा, मना न कीजिये सम्राज्ञी, यह मेरी जिन्दगी और मौत का सवाल है।"

"ऐसा करना असम्भव है." सम्राज्ञी ने फुसफुसा कर कहा, "और कल भरे दरबार में...............।"

उसी क्षण गाना खत्म सा होने लगा, सम्राज्ञी सोरियास स्वर को सप्तम तक चढ़ा ले जा रही थीं और सम पर पहुँच कर उन्होंने गाना ऐकाऐकी बन्द करके पीछे की ओर सिर घुमाया।

"मैं आऊंगी, ज़रूर आऊंगी," सम्राज्ञी ने जल्दी से कहा, "मगर कहीं तुम धोखा न दे जाना।"

अध्याय १६

मूर्ति के सामने

आखिर रात्रि आ ही गई। ठीक आधी रात का समय था, चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था। सारा सिलोसिस नगर बिल्कुल शान्त और नीरव हो रहा था, कहीं से भी कोई आवाज़ या रोशनी की झलक भी दिखाई नहीं दे रही थी।

हम तीनों, कुंवर साहिब असल्लोपागस और मैं, चोरों की तरह दबे पांव अपने कमरों से निकले और टेढ़ी मेढ़ी गलियों और गलियारों को पार करते विशाल दरबार हॉल के एक छोटे से बगली द्वार के पास जा पहुंचे। यहां पहरेदार ने हमको अपनी कड़कती आवाज़ से पुकार कर रोका। मैंने संकेत शब्द बताया और अपने भारी बरछे को ज़ोर से संगमरमर के फ़र्श पर टेकते हुए उसने हमें सलामी दी और हम दरबार हॉल में दाख़िल हो गये। हम सम्राज्ञियों के अंग रक्षक दल के कैप्टिन थे और इस हैसियत से हर समय बिना किसी पूछ तांछ के राजमहलों में आ जा सकते थे, इसलिये पहरेदार को हमारे ऐसे वक़्त आने पर कोई आश्चर्य या शंका नहीं हुई।

हम बिना रोक टोक के हॉल मे जा पहुँचे। हाल इतना सुनसान था और चारों ओर ऐसा सन्नाटा था कि यद्यपि हम बिल्ली की तरह पैर दबाये चले जा रहे थे तो भी हमारे पैरों की आवाज़ दीवारों और नक्क़ाशीदार छत से टकरा कर सारे वातावरण को कम्पित करती हुई सारे हॉल में गूँजती मालूम होती थी। सारे हॉल में भनभनाहट सी गूँजने लगी मानो बहुत से भूत प्रेत और मृतक आत्मायें उस हाल में इधर से उधर को घूम रही हों।

उस समय वह विशाल हॉल बहुत भुतहा मालूम पड़ रहा था, मुझे यह सब कुछ अच्छा नहीं लग रहा था, न जाने कैसा डर मेरे दिल में

बैठा खाये जा रहा था। पूरा चन्द्रमा निकला हुआ था और हॉल की दोरोंवा में बहुत ऊँचाई पर बने रोशनदानों में से चन्द्रमा की शुभ्र किरणें आ रही थीं और सारे हॉल में प्रकाश और अन्धकार की आंख मिचौनी सी हो रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे किसी ने सारे फ़र्श को चांदी से मढ़ दिया हो। प्रकाश के बहुत बड़े बड़े धब्बे काले संगमरमर के फ़र्श पर बहुत सुन्दर लग रहे थे, ऐसा मालूम होता था पुष्प चढ़ा जैसे किसी भक्त ने भगवान की मेघ वर्ण मूर्ति के चरणों में श्वेत कमल दिये हों। एक प्रकाश पुंज सम्राट रैडीयस की मूर्ति को पिघली चांदी से मढ़ रहा था और साथ ही वह प्रकाश पुंज सम्राट के शिर पर झुकी देव मूर्ति को उज्ज्वल प्रकाश से नहला कर मूर्ति के सिंहासन को भी आलोकित कर रहा था।

सम्राट की मूर्ति के पास पहुंच कर हम ठहर गये और प्रतीक्षा करने लगे। मैं औरकुंवर साहिब पास पास खड़े थे और अमस्लोपागस हमसे कुछ दूर अंधेरे में खड़ा था। उस ओर अन्धकार इतना गहरा था और उस अन्धकार में उसकी काली देह ऐसी छुप गई थी कि बहुत आँख फाड़ कर देखने पर ही फरसे का सहारा लिये उसकी विशाल देह छाया सी दिखाई देती थी।

प्रतीक्षा करते करते मैं ऊब गया, इतनी देर तक बिल्कुल चुपचाप खड़े रहने से मेरा शरीर अकड़ सा गया था और बर्फ जैसे ठंडे संग-मरमर का सहारा लिये मेरी आंखें झपकने लगीं. लेकिन कुंवर साहिब की ऐकाऐकी तेज सांस लेने की आवाज़ से मैं चौंक पड़ा, मेरे दिमाग़ के सारे तार झनझनाने लगे। कहीं दूर से ऐसी हल्की धीमी आवाज़ आ रही थी जैसे हॉल मे रखी मूर्तियां आपस में फुसफुसा फुसफुसा कर गये बीते युगों की बातें कर रही हों।

यह धीमी आवाज़ किसी स्त्री के वस्त्रों की सरसराहट थी। आवाज़ पास और पास आती गई। हमने किसी छाया मूर्ति को चुपचाप अपने शरीर को लुकाते छिपाते बड़ी सतर्कता से आगे बढ़ते देखा। हॉल में इतना सन्नाटा था कि हमको उस छाया मूर्ति के पैरों की चाप सुनाई दे रही थी। एक क्षण और बीता और मैंने देखा कि अन्धकार से छुपी जूलू की काली छाया ने आने वाले व्यक्ति को चुपचाप हाथ उठा कर सलामी दी, और क्षण भर मे ही सम्राज्ञी निलिप्था हमारे सामने थीं।

एक क्षण के लिए सम्राज्ञी के मुख पर चन्द्रमा का प्रकाश पड़ा, पिघली चांदी जैसे प्रकाश पुंज मे वह कितनी सुन्दर लग रही थीं। एक हाथ से वह अपने यौवन और उमंग भरे दिल की धड़कन को दबाये हुए थीं। मैंने देखा कि उत्तेजना के कारण उनका वक्षस्थल तेजी से उठ बैठ रहा था। उन्होंने अपने शिर पर सुनहरी कामदानी का गहरे नीले रंग का दुपट्टा ओढ़ रखा था। इस गहरे नीले रंग के दुपट्टे में उनका मुख चन्द्र ऐसा ही सुन्दर और आकर्षक लग रहा था जैसे नीले आकाश में पूर्णमासी का चन्द्रमा शोभायमान होता है। किसी वस्तु का सौन्दर्य बहुत कुछ कल्पना पर निर्भर होता है। साथ ही अर्द्ध निमीलित सौन्दर्य मुक्त सौन्दर्य से सदैव ही अधिक आकर्षक लगता है। एक क्षण के लिए सम्राज्ञी प्रकाश पुंज में ठिठकीं, शायद सोच रही थीं कि आगे बढ़ें या नहीं, इस समय वह कितनी सुन्दर, कितनी सुन्दर, कितनी आकर्षक और कितनी राजसी दीख रही थीं। उनकी यह सुन्दर मूर्ति मेरी आंखों से हो कर दिल में पैठ गई और मैं उसी क्षण से उनसे प्रेम करने लगा। मैं आज भी उनसे प्रेम करता हूँ यह बताते मुझे तनिक भी संकोच नहीं है। जब एक चंद्रमा से लाखों चकोर और कुमुदनियां प्रेम कर सकती हैं, एक कमल पुष्प से अनगिनती भ्रमर रस पान कर सकते हैं, एक शमा पर बीसियों परवाने अपनी बलि चढ़ा सकते हैं, सांवरे सलोने की छवि पर अनगिनती गोपियां रीझ कर उनसे प्रेम कर सकती हैं तो सम्राज्ञी निलिप्था के प्रेम पाश में फँस जाना क्या मेरे लिए अनुचित था? उस समय सम्राज्ञी देव कन्या या अप्सरा सी लग रही थीं और यह मालूम नहीं होता था कि वह इस पृथ्वी पर रहने वाली राग द्वेष से पूर्ण, ईर्ष्या प्रेम करने वाली एक साधारण मानवी स्त्री मात्र थीं। हम दोनों ने झुक कर सम्राज्ञी को सलामी दी और सम्राज्ञी ने धीमी पर गंभीर आवाज में कहना शुरू किया।

"हम आ गये हैं," उन्होंने फुसफुसा कर कहा, "मगर काम बहुत जोखिम का था। तुम को मालूम है कि हम को किस तरह नजरों में रखा जाता है। पुजारी हम पर जासूसी करते हैं, खुद हमारी बहिन सोरियास अपनी तेज नजरों से हमारी हर बात ध्यान से देखती हैं। स्वयं हमारे ही पहरेदार हम पर जासूसी करते हैं।

सामन्त नैस्टा हम पर नज़र रखता है, मगर उस मूर्ख को सावधान हो जाना चाहिये," और यह कह कर उन्होंने अपना पैर जोर से फ़र्श पर मारा, "मूर्ख कहीं का, कमीना, यह नहीं जानता कि तिरिया हठ जगत प्रसिद्ध है, स्त्री जिस बात पर एक बार अड़ जाती है उससे इस संसार की कोई शक्ति यहाँ तक कि देवता भी उसे नहीं हटा सकते। औरत फ़ौलाद होती है, लचक कर टूट जाती है पर दबती नहीं है। और साथ ही हम सम्राज्ञी हैं, इस देश की सम्राज्ञी, हमारे एक इशारे पर हीं उस मूर्ख का शिर धूल में लोट सकता है। उसकी मौत उसके सिर पर नाच रही है, उसे सावधान हो जाना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि उसके हाथ में हमारा हाथ होने के बदले उसका कटा हुआ सिर हमारे हाथ में हो," सम्राज्ञी की मुख मुद्रा बड़ी कठोर हो उठी और आँखों से आग निकलने लगी। फिर हमारी ओर प्यार भरी आँखो से देख कर हंस पड़ीं। उनकी हंसी ऐसी मालूम पड़ती थी जैसे चाँदी कीं सुरीली घन्टियाँ एक साथ बज उठी हों।

"तुमने हमें यहाँ आने के लिए कहा था, सरदार इन्कूबू (कुंवर साहिब ने उनको अपना यही नाम बताया था)। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारी बात राज्य के सम्बन्ध मे होगी क्योकि हम जानती हैं कि तुम अपनी नई खोजों और योजनाओं से हमारी और हमारी प्रजा की भलाई करना चाहते हो, और इसीलिये हमें, इस देश की सम्राज्ञी को यहाँ तक आना पड़ा। हम अपनी जान हथेली पर रख कर यहां तक आये हैं, अंधेरे में हमको अकेले बहुत डर लगता है," यह कह कर अपने मज़ाक पर सम्राज्ञी स्वयं ही खिलखिला कर हंस पड़ीं, उन की गहरी भूरी आँखों से प्रेम और वात्सलय फूटा पड़ रहा था।

अब मैंने यहाँ से कुछ दूर खिसक जाने की सोची क्योंकि 'राज्य की गुप्त और गोपनीय बातें' हर किसी के कान में पड़ना ठीक नहीं। लेकिन सम्राज्ञी ने मुझे खिसकने नहीं दिया। वहाँ से खिसकता देख कर सम्राज्ञी ने मुझे पाँच गज़ की दूरी पर ठहरने की आज्ञा दी, क्योंकि वह अचानक ही किसी के वहा आ जाने से डरती थीं। मुझे मजबूरन खून का सा घूंट पी कर वहां ठहरना पड़ा। उनकी बातचीत का एक एक शब्द मैंने साफ़-साफ़ सुना।

"शायद आप नहीं जानती हैं सम्राज्ञी," कुंवर साहिब ने हकलाते हुए कहा, "कि इनमें से किसी काम के सम्बन्ध में भी बातें करने के लिए मैंने सम्राज्ञी को इस ऐकान्त स्थान पर आने का कष्ट नहीं दिया है। हंसी ठट्ठे में हमें समय बरबाद नही करना है सम्राज्ञी, मेरी बात कान दे कर सुनिये सम्राज्ञी," और यह कहते कहते कुंवर साहिब की आवाज़ भरभरा आई, "सम्राज्ञी, मैं आपसे, मैं तुम से प्रेम करता हूँ निलिप्था, मैं तुम से प्रेम करता हूँ।"

मैंने देखा कि इन शब्दों को सुन कर सम्राज्ञी के मुख का भाव ऐकाऐकी बदल गया, जैसे किसी ने फूंक मार कर जलते दीपक को बुझा दिया हो। उनकी इतराहट और चोंचले बाजी पलक मारते ही गायब हो गई और उसके स्थान पर उनके चेहरे पर प्रेम और स्नेह का स्निग्ध प्रकाश फैल गया, इस रूप में वह साक्षात देव मूर्ति जगत्माता सी लग रही थीं। मन चाहे प्रेमी द्वारा प्रणय निवेदन करने पर कुमारी कन्या के मुख पर जो स्वर्गीय झलक और नेत्रों में जो दैवी चमक आ जाती है वही तो स्त्री का परम सौन्दर्य है, उसकी अमर साधना का अमृत फल है। सम्राज्ञी निलिप्था के इस अमृत फल का स्वाद चखते ही उनकी मुख मुद्रा जादू के जोर से बदल गई; उनके नेत्रों से प्रेम का झरना झरने लगा और मुख पर फैल गई एक स्वर्गीय आभा और कमनीयता। इस समय सम्राज्ञी की शक्ल में और सम्राट रैडीमस के मस्तक पर झुकी देवबाला की आकृति में बाल बराबर भी अन्तर नहीं मालूम होता था, दोनों एक दूसरे की प्रतिरूप मालूम होती थीं। न जाने किस प्रेरणा या ईश्वरीय आदेश के वशीभूत हो कर आज से सैकड़ों वर्ष पहले सम्राट रैडीमस ने उसे प्रेरणा देती हुई उस प्रस्तर मूर्ति की जो आकृति गढ़ी थी वह स्वयं उसी के वंश की एक कन्या की शक्ल से एक दम मिलती जुलती थी। कुंवर साहिब ने भी इस विचित्र व्यापार को देखा और वह भी दोनों आकृतियों की सदृश्यता तथा सरूपता से ठगे के ठगे रहे गये, उनको अपनी आँखों पर विश्वास नहीं आ रहा था। उन्होंने पहले सम्राज्ञी के मुख पर दृष्टि डाली फिर जल्दी से प्रकाश पुंज में नहाई उस प्रस्तर मूर्ति को देखा और फिर अपनी प्रियतमा के सुन्दर मुख पर अपनी आँखें गढ़ा दीं।

"श्रीमन्त इन्कूवू, तुमने कहा कि तुम हम से प्रेम करते हो", सम्राज्ञी ने धीमी आवाज़ में कहा,'तुम्हारी आवाज़ में तुम्हारे दिल की सचाई गूंज रही है, लेकिन हमको इस बात का किस तरह विश्वास हो कि तुम सच कह रहे हो और तुम दग़ा नहीं करोगे," सम्राज्ञी अपनी उत्तेजना से कांपती हुई आवाज़ में कहे जा रही थीं।

"इस में सन्देह नहीं कि श्री मन्त इन्कूवू का ज्ञान भंडार बहुत बड़ा है और इन्कूवू ऐसे विचित्र देश से आ रहे हैं जहाँ की तुलना में यहाँ के निवासी दूध पीते बच्चों के समान हैं लेकिन इस देश में यहाँ पर हम सम्राज्ञी हैं और हमारी ही आज्ञा से सारा काम होता है, आज यदि हम युद्ध की आज्ञा दें तो एक लाख से भी अधिक बरछैत हमारे लिए जान न्यौछावर करने को निकल पड़ेंगे। हम यह भी जानते हैं कि हमारी सुन्दरता भी इन्कूवू की नज़रों में कोई बहुत अधिक मूल्य नहीं नहीं रखती," यह कह कर सम्राज्ञी ने बड़ी नम्रता से सिर झुका कर कुंवर साहिब का अभिवादन किया,"मगर तौ भी इस देश के रहने वाले हम को सुन्दर कहते हैं। हमें यह भी मालूम है कि स्त्री होने के नाते इस देश का प्रत्येक सामन्त और जागीरदार हम से विवाह कर के हमें फाड़ खाने के लिए दाँत पैनाये बैठा हुआ है", सम्राज्ञी उत्तेजित होती जा रही थीं, "जैसे हम जीवित मनुष्य नहीं बल्कि कोई भयभीत हरिणी हों जिसे किसी खूंख्वार भूखे भेड़िये की भूख बुझाने के लिए अपना शरीर देना ही पड़ेगा, जैसे हम मनुष्य नहीं बल्कि जानवर हों जिस को अधिक से अधिक क़ीमत देने वालों के हाथों बिकना ही पड़ेगा। इन्कूवू, यदि हमारी बातों ने तुम को दुख पहुंचाया हो तो हमें क्षमा कर देना, क्योंकि इन्कूवू ने अपने ही मुंह से यह कहने की कृपा की है कि वह हम से, निलिप्था से, ब्यू वैण्डी देश की सम्राज्ञी से प्रेम करते हैं, इसलिये हम कहने का साहस कर रहे हैं कि हो सकता है कि इन्कूवू के लिए हमारा प्रेम और हम से विवाह कोई विशेष महत्व न रखता हो, मगर हमारे लिए वह बहुत है, उन को हम जैसी बहुत मिल सकती हैं मगर यह हम जानते हैं कि हम को उन जैसा मनुष्य नहीं मिलेगा।

"ओह," उन्होंने सहसा स्वर बदल कर सम्राज्ञी जैसी शान से थर्रा देने वाली आवाज़ में कहा, "ओह, और इस बात का पता हम को कैसे लग सकता है कि इन्कूबू सिवाय हमारे और किसी स्त्री से प्रेम नहीं करते हैं। हमें कैसे पता लग सकता है कि इन्कूबू का मन हमारी संगति से उचाट नहीं हो जायेगा और इन्कूबू हम को अकेला बे सहारे छोड़ कर अपने अज्ञात देश को नहीं चले जायेंगे ? कौन हम को बता सकता है कि इन्कूबू किसी अन्य स्त्री से प्रेम नहीं करते हैं, किसी और सुन्दर स्त्री से जिस के बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है मगर जो इसी पृथ्वी पर इसी चन्द्रमा के नीचे पृथ्वी के किसी भाग में न रह रही हो ? हमें बताओ इन्कूबू, कि हम को इन बातों का पता कैसे लग सकता है।" यह कह कर सम्राज्ञी ने आवेश के कारण अपने दोनो ही हाथों की मुट्ठियाँ भींच कर बन्द कर ली और बहुत विनीत दृष्टि से कुंवर साहिब की ओर देखने लगीं।

"निलिप्था, सम्राज्ञी, मैंने अभी आप से कहा कि मैं आप से प्रेम करता हूँ। कैसे बताऊँ कि मेरा प्रेम अथाह है, उस की कोई सीमा नहीं है। क्या प्रेम किसी पैमाने से नापा जा सकता है सम्राज्ञी ? लेकिन तो भी मैं जी जान से बताने की कोशिश करूंगा। यह तो कहना झूंठ होगा कि इस जीवन में मैं ने कभी किसी स्त्री से प्रेम किया ही नहीं है, लेकिन इतना मैं अवश्य कह सकता हूँ कि मैं अपने जीवन तक की बाज़ी लगा कर, शरीर में रक्त की एक बूंद रहते तक आप से प्रेम करता रहूँगा, मैं आप से प्रेम करता हूँ और उस समय तक करता रहूँगा, जब तक कि मौत का मनहूस पंजा मेरी जीवन लीला को ख़त्म नहीं कर देता है। यही नहीं निलिप्था, मुझे विश्वास है कि मैं मरने के बाद भी जन्म जन्मान्तर तक तुम से प्रेम करता रहूँगा। मेरे लिए तुम्हारी आवाज संगीत होगी, तुम्हारा स्पर्श पवित्र गंगा जल के समान शीतल होगा, तुम्हारे साथ वही संसार मुझे नन्दन कानन और स्वर्ग सा लगेगा और तुम्हारी अनुपस्थिति में सूर्य का प्रखर प्रकाश मौत की मनहूसियत में बदल जायेगा। ओह निलिप्था, मैं जान रहते तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे लिये अपने देश, अपने मित्रों अपने बन्धु बान्धवों सभी को छोड़ दूंगा, मैं सच कहता हूँ निलिप्था, मेरी रानी, मैं सभी कुछ छोड़ दूंगा।

मैं यहीं रहूँगा निलिप्था, यहीं तुम्हारे पास ही रहूँगा और केवल मृत्यु ही मुझे तुम से जुदा कर सकेगी।"

इतना कह कर कुंवर साहिब क्षण भर के लिए साँस लेने को ठहरे। जिस प्रकार दिगदर्शक यंत्र की सुई उत्तर की ओर लगी रहती है उसी तरह उनकी आँखे सम्राज्ञी के मुख पर जमी हुई थीं। सम्राज्ञी बिल्कुल चुप थीं। उन्होंने कमल पुष्प की तरह अपने शिर को झुका लिया था।

"देखो निलिप्था," यह कह कर कुंवर साहिब ने रैडीमस की मूर्ति को जो चन्द्रमा की शुभ्र चाँदनी में सिर से पैर तक नहाई हुई थी दिखाकर कहा, "निलिप्था उस देव मूर्ति को देखती हो जो सोते हुए सम्राट के मस्तक पर अपना हाथ रखे हुए है, और यह भी तुम देखती हो कि उस के स्पर्श से सम्राट की युग युग से सोई आत्मा किस तरह जाग उठी है, और जिस तरह अग्नि के स्पर्श से दीपक जल उठता है उसी तरह सम्राट की आत्मा भी किसी जादू के प्रभाव से जन्म जन्मान्तर की कालिमा और अन्धकार के आवरण को फाड़कर पूर्ण रूप से चैतन्य हो गई है। यही दशा मेरी और तुम्हारी है निलिप्था। तुमने मेरी जन्म जन्मान्तर से सोई आत्मा को झकझोर कर जगा दिया है, अब यह तन और प्राण तुम्हारा है निलिप्था, सब कुछ तुम्हारा ही है, तुम्हारा निलिप्था। तुम्हारी एक हाँ मेरी जीवन धारा को बदल सकती है, मेरे सूखे फीके जीवन में रस की वर्षा कर सकती है और मरुभूमि सरीखे मेरे मन को लहलहाती शस्य श्यामल भूमि में बदल सकती है। मुझे और अधिक नहीं कहना है निलिप्था, मेरी जिन्दगी और मौत तुम्हारे ही हाथों में है, जी चाहे जिला लो और चाहो तो मार दो। तुम्हारी हाँ जीवन है और ना मृत्यु।

इतना कह कर कुंवर साहिब मूर्ति के सिंहासन के सहारे उठंग गये, उनका मुख पीला पड़ गया था और भावावेश तथा उत्तेजना के कारण उन की आँखों में बिजलियाँ सी कौंद रही थीं। कुंवर साहिब की सुन्दरता बिखरी जा रही थी, ऐसी हालत में कोई भी स्त्री उन पर मोहित हो सकती थी।

सम्राज्ञी ने धीरे धीरे अपना सिर ऊपर को उठाया और अपनी विचित्र आँखों को कुंवर साहिब के मुख पर जमा दिया, जैसे वह उनको आंखों से ही पी जाना चाहती थीं। उन की आंखों से प्रेम की

निर्मल ज्योति झर रही थी, और इस समय वह साधारण स्त्री न मालूम पड़ कर कोई देव कन्या सी लग रही थीं। फिर मोह तंद्रा को तोड़ते हुए प्रेम रस से भीगी गंसीली आवाज में कहा।

"इन्कूवू, यह ठीक है कि मैं एक अशक्त अवला नारी हूं, और तुम्हारा और तुम्हारी वात का विश्वास करती हूँ। आदि काल से नारी पुरुप का विश्वास करती आई है और अपनी देह तथा आत्मा तक उस पर ऐकान्त विश्वास करके न्यौछावर करती आई है। उसी नाते मै भी तुम्हारा विश्वास करती हूँ। मगर जिस दिन भी मुझे यह मालूम हुआ कि तुमने मेरे साथ छल किया है और मैंने अपना जीवन साथी चुनने में भूल की है तो वही दिन तुम्हारा और मेरा अन्तिम दिन होगा। इन्कूवू, मेरी वात कान खोल कर सुन लो, तुम्हारे सम्बन्ध में हम को अधिक पता नहीं है, न जाने किस अज्ञात देश से ऐकाऐकी आ कर तुमने हमारे तन मन पर क़ब्जा कर लिया। हम अपना हाथ तुम्हारे हाथ में देती हैं और जिन ओठों से आज तक किसी को चुम्बन नहीं किया उन ओठों से तुम्हारे मस्तक का चुम्बन करती हैं। तुम्हारे हाथ में हाथ देने और तुम्हारे मस्तक पर पवित्र चुम्बन करने से हमको अपनी प्रजा का स्वामित्व और राज्य सिंहासन का अधिकार तथा मोह छोड़ना पड़ेगा, मगर अपने वंश, कुल, गोत्र और परम तेजस्वी देवाधिदेव भगवान सूर्य की शपथ खा कर कहती हूँ कि मैं मृत्यु पर्यन्त तुम्हारी जीवन संगिनी रहूँगी, तुम्हारे ही लिये जियूँगी और तुम्हारे ही लिये अपनी जान तक दे देने में संकोच नहीं करूंगी। मैं शपथ खाकर कहती हूँ कि मैं जीवन भर तुम से प्रेम करती रहूँगी और मरने के वाद भी, जैसा कि तुम कहते हो कि फिर जीवन मिलता है तो जन्म जन्मान्तर तक तुम से प्रेम करती रहूँगी; तुम्हारी इच्छा ही मेरी इच्छा होगी और मन वचन कर्म से मै वही करने की कोशिश करूंगी जो तुम को पसन्द होगा।

"इन्कूबू शायद तुम नहीं जानते कि प्रेम कर के स्त्री की क्या दशा हो जाती है? वह अपना अस्तित्व तक खो बैठती है, उसका अपना कुछ नहीं रह जाता, पति की इच्छा ही उसकी इच्छा और पति की खुशी ही उसका जीवन बन जाता है। उसकी स्वतंत्र सत्ता खत्म हो

जाती है और वह सम्पूर्ण रूप से पति में लीन हो जाती है। मैं, निलिप्था, इस देश की समाज्ञी, मैं तुम्हारी चरण दासी बनने में अपना परम सौभाग्य समझती हूँ, दासी को चरण सेवा करने का अधिकार दीजिये इन्कूबू, " और यह कह कर परम सुन्दरी समाज्ञी निलिप्था ने अपने दुपट्टे का आंचल गले में लपेट कर और नीचे झुक कर कुंवर साहिब के चरण स्पर्श कर लिये।

इस के बाद क्या हुआ वह मुझे पता नहीं क्योंकि इस से अधिक सुनने की न मेरी इच्छा थी और न आवश्यकता ही और इसलिये मैं युगल प्रेमियों को वहीं छोड़ कर असल्लोपागस के पास खिसक गया। असल्लोपागस अपने साधारण अन्दाज़ से अपनी इन्कूसीकास का सहारा लिये खड़ा हुआ था और चन्द्रमा के प्रकाश में होने वाले इस अलौकिक दृश्य को बड़े गौर और आश्चर्य से देख रहा था। मैंने अपने जीवन में असल्लोपागस को कभी मुस्कराते नहीं देखा था, मगर यह देख कर मेरे आश्चर्य की हद न रही कि उस बूढ़े, नीरस, पत्थर जैसे कठोर हृदय वाले जूलू के मुख पर भी इस विचित्र व्यापार को देख कर मुस्कराहट खेल रही थी।

"कौन है ? मैकुमाज़न, मालिक," उसने खुशी से उछलती आवाज़ में कहा, "आज तो मुझे भी मालूम पड़ रहा है कि मैं बूढ़ा हो चला हूँ, लेकिन तुम गोरी चमड़ी वालों की तो सभी बातें निराली होती हैं। कितनी सुन्दर कबूतरों की सी जोड़ी है, जब दोनों ही राजी हैं तो झगड़ा किस बात का है, मालिक! इन्कूब को औरत चाहिये और उसे एक मर्द, तो वह मर्दों की तरह बदले में गायें दे कर* झगड़ा खत्म करे और ब्याह कर ले। न कोई झंझट और न किसी तरह की परेशानी, मामला भी तै हो जाये और हमको भी आराम से सोना मिले। मगर इनकी गुटरगूं है कि खत्म ही नहीं हो रही है, बस बातें बाते बाते, और बीच बीच में चूमा चाटी। दोनों पागल तो नहीं हो गये हैं कहीं मैकुमाज़न।"

---

*जूलू जाति में कायदा है कि वर को वधू पक्ष वालों को कुछ गायें उपहार स्वरूप देनी पड़ती हैं, तभी विवाह हो सकता है। असल्लोपागस का इशारा इसी ओर है (ल. व. सिं)

कोई पौन घन्टे बाद 'कबूतरों की जोड़ी' जहां हम खड़े थे आई, कुंवर साहिब अजीब उल्लू से लग रहे थे और सम्राज्ञी बिल्कुल चुप और शान्त थीं जैसे तूफान आ कर निकल गया हो। चन्द्रमा का शुभ्र प्रकाश संगमरमर के फ़र्श पर आंख मिचौली खेल रहा था। सम्राज्ञी का मन उमंगों पर था, उन के हृदय का उत्साह फूट निकलने को रास्ता ढूंढ़ रहा था। वह मेरे पास आईं और मेरे दोनों हाथों को अपने हाथों में ले कर बताया कि उनके प्यारे का प्यारा होने के कारण मैं उन को भी बहुत प्यारा था—प्यारे का प्यारा होने से जैसे मेरी स्वयं की कोई हस्ती थी ही नहीं, ईर्षा से मेरा सारा शरीर जल उठा। इस के बाद सम्राज्ञी ने अमस्लोपागस के पास जा कर उसकी इन्कूसीकास को उसके हाथ से ले कर उसकी परीक्षा की और बूढ़े अमस्लोपागस से कहा कि उनकी रक्षा के लिए उसे बहुत जल्दी ही इस भयानक अस्त्र को काम में लाना पड़ेगा। उनकी इस बात से मैं और कुंवर साहब दोनों चौंक पड़े।

इसके बाद सम्राज्ञी ने बहुत मोहक आवाज से हमें सिर झुका कर नमस्कार किया और अपने प्रेमी की ओर प्रेम भरी दृष्टि डाल कर अंधेरे में इस तरह ग़ायब हो गईं जैसे नींद खुलते ही मधुर स्वप्न ग़ायब हो जाता है।

हम चुपचाप अपने कमरों को लौट आये, रास्ते भर कुंवर साहिब ने कुछ नहीं कहा था मगर उनकी आंखें चमक रही थीं। मैंने मज़ाक करते हुए कहा, "ईश्वर के दरबार में भी हद दर्जे की अन्धेर गर्दी है, किसी की किस्मत ऐसी बनाई है कि उन पर रानियां महारानियां आशिक हो जाती हैं और किसी को ऐसा मनहूस बनाया है कि कोई उसकी बात तक नहीं पूछता है। मुझे रह रह कर यही ख्याल आ रहा है कि आज रात की घटना कितने माई के लालों के लिए मौत का संदेशा लायेगी।"

मेरी बात कुंवर साहिब को ज़रा बुरी लगी और वह तो लगनी ही थी क्योंकि बात थी भी कड़वी ही। लेकिन क्या आयु बढ़ने पर तृष्णा और मोह कम हो जाता है, नहीं, वह उल्टी बढ़ती ही जाती है। हाय बुढ़ापा भी कैसी बीमारी है, 'केशव केसनि अस करी जो अरि हूँ

न कराहि, चन्द्र बदन मृग लोचनी बावा कहि कहि जाये ।' केशों के श्वेत हो जाने से मन की चंचलता थोड़े ही दूर हो जाती है, बल्कि जिस प्रकार अंकुश न रहने पर हाथी मतवाला हो जाता है उसी तरह वृद्धावस्था में शरीर के शिथिल हो जाने पर मन सहस्र स्रोत वाली उच्छ्शृंखल धारा की भांति चंचल हो उठता है और मनुष्य का जीवन भर का संयम उसमें वह जाता है। यदि मुझे भी कुंवर साहिब से ईर्षा हुई हो तो इस में आश्चर्य ही क्या है । ईर्षा मनुष्य को अन्धा बना देती है, उसमें विवेक शक्ति का ह्रास हो जाता है।

दूसरे दिन सवेरे हमने कैप्टिन प्रसाद को यह खुशखबरी सुनाई, वह तो मारे खुशी के लोटन कबूतर बन गये। पहले तो मुझे ज़ोर से झकझोर डाला फिर कुंवर साहिब से लिपट गये और कमरे भर में नाचे नाचे फिरते रहे। बात ही बहुत खुशी की थी पर कैप्टिन की प्रसन्नता का एक कारण और भी था। वह सम्राज्ञी सोरियास को उसी तरह जी जान से प्यार करते थे जितना कुंवर साहिब सम्राज्ञी निलिप्था से करते थे और कुंवर साहिब की वजह से उन की दाल गलने में नहीं आती थी, क्योंकि सम्राज्ञी सोरियास की हरकतों और चाल ढ़ाल से हम सभी को यह साफ मालूम पड़ गया था कि वह भी मन ही मन कुंवर साहिब के प्रति आकर्षित हो रही थीं और दोनों हाथ लड्डू रखने के लिए कैप्टिन को भी निराश नहीं कर रही थीं । इसलिये यह जान कर कैप्टिन को बहुत प्रसन्नता हुई कि उनका प्रेम प्रतिद्वन्दी उनके मार्ग से हट कर निश्चय रूप से किसी दूसरे के आंचल से बंध गया है। कैप्टिन ने इस घटना का चारों ओर ढिंढोरा पीट कर जश्न मनाने की सलाह दी लेकिन सारी ऊँच नीच को खूब अच्छी तरह समझ सोच कर हमने यह तय किया कि इस बात की सांस तक किसी को नहीं दी जानी चाहिये और सम्राज्ञी सोरियास को तो हरगिज़ हरगिज़ नहीं । कैप्टिन को जश्न तमाशे बहुत पसन्द है इसलिये ऐसी खुशी के मौक़े पर मन खोल कर जश्न न मना सकने की वजह से उनका मुंह लटक गया। हमने यह निर्णय इसलिये किया कि हम को डर था कि कहीं इस बात के फैल जाने पर ज्यू बैण्डी के अशान्त राजनैतिक वातावरण में उथल पुथल न मच जाये और कहीं सामन्तों जागीरदारों के विद्रोह की

तेज़ आंधी सम्राज्ञी निलिष्था के सिंहासन को उलट न दे। इस बात का हमें डर था।

दूसरे दिन सवेरे हम फिर दरबार हॉल में गये और गत रात्रि की बातों का मुकाबिला इस समय की बातों से करके मैं मन ही मन हंसने लगा। अगर इस दरबार हॉल की दीवारें बोल सकती तो न जाने कितनी अजीब अजीब कहानियां सुनने को मिलतीं।

ओफ़, औरतें भी कितनी बला की ऐक्ट्रैस होती हैं, अपने हृदय में धधकती ज्वालामुखी या ठाठें मारते समुद्र को किस सरलता से छुपा लेती हैं इसका पता मुझे आज लगा। शायद स्त्री चरित्र की इस दुरूहता के कारण ही किसी ने कहा है स्त्री चरित्रसं देवो न जान्या। अपनी सुनहरी जर्क़ बर्क़ पोशाक पहने सम्राज्ञी निलिष्था अपनी पूरी शान से ऊंचे सुनहरी सिंहासन पर बैठी हुई थीं, और जिस समय नियत समय से कुछ देर में कुंवर-साहिब ने अंग रक्षक दल के कैप्टिन की पूरी वरदी पहने दरबार हाल में प्रवेश करके सम्राज्ञी को फौजी सलामी दी तो सम्राज्ञी ने बड़ी लापरवाही से सिर हिलाकर उनके सलाम का जवाब दिया और फिर सिर घुमा कर सोरियास से बाते करने लगीं। दरबार पूरा भरा हुआ था। नये क़ानूनों का ऐलान किये जाने की वजह से सारे राज्य भर के अफ़सर तो वहां आये हुए ही थे पर साथ ही महाशक्तिशाली सामन्त नैस्टा द्वारा भरे दरबार में सम्राज्ञी निलिष्था से विवाह की प्रार्थना करने की खबर भी चारों ओर फैल गई थी और इस खबर को सुन कर तमाशा देखने के लिये लोगों के दल बादल उमड़ पड़े थे। सारे दरबार हाल में तिल धरने तक को जगह नहीं थीं। धर्म गुरू महापुरोहित ऐगौन भी अपने पूरे दल बादल के साथ दरबार में उपस्थित था और रह रह कर हम को अपनी तेज़ खूनी आंखों से देख लेता था। उस भारी भीड़ में पुरोहित वर्ग बहुत ही प्रभावशाली लग रहा था, उनके बगले के परों जैसे सफ़ेद ढ़ीले ढ़ाले कपड़े, उनकी कमर में पड़ी सुनहरी शृंखलायें, उन शृंखलाओं से लटकती मीना कारी की हुई झालरें बहुत सुन्दर लग रही थीं। दूर दूर से आये सामन्त अपनी जर्क़ बर्क़ पोशाकों में अपने नौकरों और सैनिकों से घिरे हॉल में बैठे हुए थे, एक ओर महा शक्तिशाली नैस्टा अपनी

काली डाढ़ी में उंगलियों से कंघा करता हुआ न जाने क्या सोच रहा था। उसके माथे पर पड़े बलों से ऐसा लग रहा था जैसे उसे यह सब बातें बिल्कुल ही पसन्द नहीं आ रही थीं।

दरबार का दृश्य बहुत शानदार और रौबीला था। सरकारी ऐलानची का प्रत्येक क़ानून को ज़ोर से पढ़ कर उस आज्ञा पत्र को सम्राज्ञियों के सामने हस्ताक्षर के लिए पेश करना, हस्ताक्षर हो जाने पर जोर से तुरही नाद का होना और अंग रक्षक दल के सैनिकों का अपने भारी बरछों को जोर से संगमरमर के फर्श पर छोड़ कर सलामी देने का दृश्य बहुत ही प्रभावोत्पादक था। नये क़ानूनों का ऐलान करने और उन पर हस्ताक्षर होने में बहुत समय लग गया, मगर राम राम कर के यह काम पूरा हुआ। इसके बाद सरकारी ऐलानची ने एक घोषणा पत्र पढ़ कर सुनाया जिसके द्वारा सम्राज्ञी ने असीम दया कर के किसी 'अज्ञात देश' से आ निकलने वाले 'सम्मानित व्यक्तियों' को 'श्रीमन्त' की उपाधि से विभूषित किया था। साथ ही उनको सेना में पंच हज़ारी मन्सब दे कर जागीरें प्रदान की गईं। इस घोषणा को पढ़ कर सुनाने के बाद भी तुरही नाद हुआ और पहले की तरह बरछैत सैनिकों ने ज़ोर से बरछों को ज़मीन पर छोड़ कर सलामी दी। मैंने देखा कि इस घोषणा को सुन कर कुछ सामन्त आपस में खुसुर पुसुर करने लगे और नैस्टा क्रोध से ओठ चबाने लगा। उसकी आंखे लाल हो गईं और उसका काला चेहरा और भी काला हो गया। राज्य ने हमारे ऊपर जो कृपा दिखाई थी वह सामन्तों को पसन्द नहीं आई थी और पसन्द न आना कोई आश्चर्य की बात भी नहीं थी क्योंकि इससे उनकी मान प्रतिष्ठा को गहरी ठेस लगने की आशा की जा सकती थी।

इसके बाद कुछ देर शान्ति रही, फिर नैस्टा आगे बढ़ा और उसने बड़ी नम्रता से, यद्यपि उसके रंग ढंग से ज़रा भी नम्रता दिखाई नहीं देती थी, ज़मीन तक झुक कर सलाम करने के बाद सम्राज्ञी निलिप्था से विवाह की प्रार्थना की।

उसकी विवाह प्रार्थना को सुन कर सम्राज्ञी निलिप्था के चेहरे का रंग उड़ गया मगर उन्होंने अपने 'प्रिय सामन्त' नैस्टा को बोलने

से रोका नहीं, और उसने भी सीधे सादे फौजी लट्ठ मार शब्दों में सम्राज्ञी से विवाह करने की प्रार्थना कर दी।

इसके बाद इससे पूर्व कि सम्राज्ञी इस प्रार्थना का कोई उत्तर देती महापुरोहित ऐगौन ने बोलना शुरू कर दिया और बहुत सुन्दर ढंग पर, तरह तरह की दलीलें दे कर यह बताया कि इस सम्बन्ध के हो जाने से देश और राज्य की कितनी भलाई और उन्नति हो सकती थी। उसने बताया कि नैस्टा की सहायता मिल जाने पर, नैस्टा प्रायः स्वतन्त्र था और नाम मात्र को केन्द्रीय सरकार के आधीन था, किस तरह सारा राज्य एक सुदृढ़ श्रंखला में बंध जायेगा, इस विवाह सम्बन्ध से किस तरह सीमान्त पहाड़ों पर रहने वाले दुर्दम लड़ाके सैनिक, जिनकी तलवार की धार का लोहा सभी मान चुके थे, प्रसन्नता से फूले नहीं समायेंगे, किस तरह राज्य के शक्तिशाली सैनिक वर्ग में सम्राज्ञी की मान प्रतिष्ठा बढ़ जायेगी क्योंकि नैस्टा एक प्रसिद्ध जनरल था, इस सम्बन्ध से किस तरह वर्तमान राज्यवंश की जड़ मजबूत हो जायेगी और उसे देवाधिदेव भगवान् सूर्य, समस्त पुजारी पुरोहित वर्ग और अन्य विद्वानों तथा वृद्धों का आशीर्वाद प्राप्त होगा, इत्यादि। ऐगौन की स्पीच भाषण कला का सुन्दर नमूना थी। उसके सभी तर्क और दलीलें ठीक थीं और राजनैतिक दृष्टिकोण से समस्त राज्य को एक सूत्र में बांध देने के लिए इस विवाह सम्बन्ध से बढ़ कर और कोई साधन हो ही नहीं सकता था। परन्तु जैसे सावन के अंधे को हरा ही हरा दिखाई देता है उसी तरह प्रेम में अंधे युवकों और युवतियों को यह संसार एक दम रंगीन दिखाई देता है, राजनीति जैसी शुष्क और नीरस वस्तु उनको फूटी आँख नहीं भाती है। और यदि प्रेम करने वाला व्यक्ति स्त्री हो और वह भी सम्राज्ञी तो वह इस तरह दूसरों के हाथों में कठपुतली बनने के स्थान पर दूसरों की बातों को ठोकरों से रौंद कर खुला विद्रोह कर उठती है। जिस समय ऐगौन अपना भाषण दे रहा था सम्राज्ञी निलिप्था का चेहरा बिल्कुल शान्त और गंभीर था। उनकी पलक तक नहीं हिल रही थी, मालूम होता था जैसे सिंहासन पर श्वेत संगमरमर की कोई मूर्ति बिठा दी गई हो। उसके चेहरे पर विचित्र मुस्कराहट थी और आँखें सुलगते कोयलों की तरह जल रही थीं।

अन्त में ऐगौन ने अपना भाषण खत्म किया और निलिप्था उसका उत्तर देने को तय्यार हुईं। पर निलिप्था के उत्तर देने से पहले ही सोरियास ने बहिन की तरफ मुँह घुमा कर ऐसी अवाज़ में जो मुझे साफ़ सुनाई दे रही थी कहा, "बहिन जवाब देने से पहले खूब सोच समझ लेना। हमारे सिंहासन तुम्हारे एक बात से उलट पुलट हो सकते हैं। यह न भूल जाना बहिन।"

निलिप्था ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, सोरियास फिर अपने सिंहासन से तकिया लगा कर इत्मीनान से बैठ गई, उसके मुख पर विजय की मुस्कराहट थी, ऐसी मुस्कराहट जैसी शिकारी को अपने शिकार को काबू में देख कर होती है।

निलिप्था ने बोलना शुरू किया, "इस में सन्देह नहीं कि महा सामन्त नैस्टा ने हमसे विवाह की प्रार्थना कर के हमें जो सम्मान दिया है उसे पाकर संसार की कोई भी स्त्री, चाहे वह किसी देश की सम्राज्ञी ही क्यों न हो, अपने आप को परम सौभाग्यशाली समझ सकती है। इस देश के परम पूज्य धर्म गुरू देवाधिदेव भगवान सूर्य के महापुरोहित ऐगौन ने इस विवाह बंधन को जो शुभ आशीर्वाद दिया है वह हमारे सिर माथे है। महापुरोहित इस विवाह को कराने के इतने इच्छुक मालूम होते हैं कि यदि उनका वश चलता तो वह इस देश की रीति के अनुसार होने वाली बधू की सम्मति जाने बिना ही हमारा विवाह कर देते। महा सामन्त नैस्टा, हम तुमको धन्यवाद देते हैं कि तुमने हम से विवाह का प्रस्ताव करके हमें गौरवान्वित किया है, हम तुम्हारे इस प्रस्ताव को सदैव याद रखेंगे। मगर हमें यह कहते बहुत दुख होता है कि अभी तक हमारा विवाह करने का कोई विचार नहीं है। और इसका कारण यह है कि हमने सुना है कि विवाह एक विकट जाल है, जो इसमें एक बार फंस जाता है वह जीवन भर हाथ पैर मारने पर भी इस से छुटकारा नहीं पाता है। हमने अभी तक इस जाल में फंसने का कोई निश्चय नहीं किया है और जहां तक हमारा वश चलेगा हम इस जाल से अलग ही रहेंगे। हमें आशा है कि देवाधिदेव भगवान सूर्य हमको इस जाल में फंसने से बचाते रहेंगे। महा सामन्त नैस्टा, हम तुमको फिर धन्यवाद देते हैं, जब हमको इस जाल में फंसने की इच्छा होगी

तो तुम्हारी प्रार्थना हमें याद रहेगी," और यह कह कर सम्राज्ञी ने ऐसा भाव दिखाया जैसे वह दरबार बन्द करके उठना चाहती हों।

महा सामन्त नैस्टा का काला चेहरा असीम क्रोध से और भी अधिक काला पड़ गया। उसके विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार कर के भरे दरबार में सम्राज्ञी ने उसकी बेइज्जती की थी और सम्राज्ञी की बात के ढंग से वह समझ गया था कि सम्राज्ञी की इस बात का अर्थ था दो टूक जवाब। क्रोध और घृणा से नैस्टा फन कुचले सांप की तरह फुंकारने लगा।

"सम्राज्ञी ने जो कुछ कहा उसके लिए धन्यवाद, उनका प्रत्येक शब्द हमारे सिर माथे है," क्रोध से कांपते हुए नैस्टा ने कहा, उसके मन में धधकने वाला ज्वालामुखी फूट पड़ने को ही था परन्तु उसने बहुत धैर्य से काम ले कर अपने आप को संयत किया। "इन शब्दों को मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा। मैं अब सम्राज्ञी से केवल एक बात की याचना और करता हूँ और वह यह कि सम्राज्ञी मुझ पर कृपा कर के मुझे अपने पहाड़ी देश को लौट जाने की अनुमति प्रदान करें, उस समय तक के लिये जब तक सम्राज्ञी अपना निश्चय बदल कर मेरी प्रार्थना स्वीकार करने का कष्ट न करें और साथ ही मेरी यह भी प्रार्थना है कि साम्राज्ञी अपने इन अज्ञात देश से आये 'श्रीमन्तों' को ले कर," यह कह कर उसने जलती सुलगती आँखों से हमें देखा, "अपने इस दास की जागीर में पधारने की कृपा करें और इस दास को अपनी सेवा करने का अवसर दें।

"मेरा देश निर्धन और पथरीला अवश्य है पर अपने महमान को ठुकराता नहीं है, उसका जर्रा जर्रा आतिथ्य सत्कार करने को कमर कसे रहता है, राह में पत्थर के टुकड़े तक अपनी छाती को फाड़ कर अनजान अतिथियों तक को शीतल जल पिलाते हैं। मेरे देशवासी निर्धन होने पर भी पत्थर जैसे कठोर और तलवार के धनी हैं और सम्राज्ञी के वहां पधारने पर तीस सहस्र बरछैत तैयार रहेंगे।"

नैस्टा की यह बात और उसके कहने का ढंग विद्रोह की खुली चुनौती थी और सभी ने बिना कान पूंछ हिलाये यह चुनौती सुनी। परन्तु इस खुली चुनौती को सुन कर सम्राज्ञी निलिप्था चुप न रह सकीं।

गुस्से से उनका मुंह लाल भभूका हो गया और तेज गूंजती आवाज़ में उसने जवाब दिया।

"हम अवश्य आयेंगे वहां, महा सामन्त नैस्टा, हम तुमको विश्वास दिलाते हैं कि हम ज़रूर वहां आयेंगे और हमारे साथ यह अज्ञात देश से आये 'परदेशी' भी होंगे। जितने पहाड़ी तुम को अपना सरदार समझते हैं उनसे दुगनी संख्या हम मैदान में रहने वाली उस प्रजा को, जो हमको अपना सम्राज्ञी मानते हैं, ले कर आयेंगे और तब सारा ज्यू वैएडी देखेगा कि किस की तलवार में पानी है और छाती में जोर है। उस समय तक के लिये विदा, महा सामन्त नैस्टा विदा।"

सहसा तुरहियां बज उठी और सम्राज्ञियां सिंहासन से उठ खड़ी हुईं। सारा दरबार परेशान सा चुपचाप कानाफूसी करता हुआ उठ गया। मैं भी भारी मन से लौट आया, मुझे भीषण गृह युद्ध के लक्षण साफ दिखाई दे रहे थे।

इस घटना के बाद कई सप्ताह तक शान्ति रही। कुंवर साहिब और निलिप्था को आपस में मिलने के बहुत कम अवसर मिलते थे, दोनों इस बात की भरपूर कोशिश कर रहे थे कि उनके आपस के सम्बन्ध की बात कहीं फूट न जाये और कोई उसे जान न सके। मगर क्या कभी आग रुई में छुप सकी है? उनके भरपूर कोशिश करने पर भी इस की भनक चारों ओर फैलती जा रही थी और अब तो प्रायः सभी के मुख पर यही बात थी।

अध्याय १७

तूफ़ान फटा

वह संकट रूपी बादल जिसे हम बहुत छोटा और दूर समझ रहे थे धीरे धीरे सारे आकाश को ढ़कता चला आ रहा था. और यह संकट था सम्राज्ञी सोरियास का कुंवर साहिब के प्रति दिनों दिन बढ़ता हुआ आकर्षण और खिंचाव। मुझे तूफ़ान पास और पास आता दिखाई दे रहा था और कुंवर साहिब की जान भी सूली पर टंगी हुई थी। किसी देश की सम्राज्ञी का प्रेम पाना और उसके आकर्षण का केन्द्र बन जाना किसी भी व्यक्ति के लिए सौभाग्य की बात हो सकती थी लेकिन कुंवर साहिब जैसी परिस्थिति में पड़े हुए व्यक्ति के लिए गले में पड़ा सोने का हार ही फांसी का फन्दा बन गया था। बेचारे को किसी करवट चैन नहीं था। इधर खाई थी तो उधर कुंवा था, और इसके कई कारण थे।

पहला तो यह कि अद्वितीय सुन्दर होने पर भी निलिप्था के चरित्र में यह दोष था कि वह पहले दरजे की ईर्षालु थीं, और ईर्षा से अन्धी हो कर वह कभी कभी ऐसी बात कह देती थीं जो तीर की तरह दिल को चीरती निकल जाती थी। दूसरे सम्राज्ञी की आज्ञा थी कि उनके और कुंवर साहिब के सम्बन्ध की बात किसी को भी न बताई जाये इसलिये कुंवर साहिब अपने प्रणय की बात को सोरियास से गुपचुप गुप्त रूप से कह कर अपना गला छुड़ा भी नहीं सकते थे। तीसरी बात जो कुंवर साहिब को खाये जा रही थी वह यह थी कि उनको मालूम था कि उनका बचपन का मित्र कैप्टन प्रसाद अति सुन्दरी 'रजनी बाला' सम्राज्ञी सोरियास से प्रेम करता था और इसमें सन्देह नहीं कि इस सोरियास रूपी छाया मृग के पीछे दौडते दौडते बेचारे कैप्टिन की तोंद

कम होती जा रही थी और उनकी जिन्दा दिली और प्रसन्नता स्वप्न की सी बात हो गई थी। उनका हँसना दिल्लगी करना बिल्कुल बन्द हो गया था और वह अब अधिकतर उदास और चुप रहते थे, खिले फूल में कीड़ा लग गया था। उधर सम्राज्ञी सोरियास उनको बंसी में फंसी मछली की तरह खिला रहीं थीं, न बहुत पास आने देती थीं और न इतनी बेरुखी ही दिखाती थीं जिससे कैप्टिन का दिल टूट जाये, बस चोंचले बाज़ी से उनको अटकाये हुए थीं। वह कैप्टिन को सीढ़ी का डन्डा बनाना चाहती थीं, जिस पर चढ कर वह अपने लक्ष्य तक पहुँच सकें। सोरियास ने दोनों हाथों लड्डू ले रखे थे। मैंने कैप्टिन को सारी परिस्थिति समझाने की कोशिश की, परन्तु बात सुनने के बदले वह तो काटने को दौड़ पड़े और मेरी बात सुनने से साफ़ इन्कार कर दिया। मैंने भी भाग्य नौका को यूँ ही छोड़ दिया और भाग्य नौका डूबेगी या तरेगी इसकी चिन्ता मुझे रात दिन सताने लगी।

प्रेम में अन्धे बने बेचारे कैप्टिन की हालत बहुत उपहास योग्य हो गई थी, अपने प्रेम को सिद्ध करने और प्रेम प्रस्ताव पर ज़ोर देने के लिए वह अनेकों उपहास-जनक हरकतें करते थे। उनमें से एक यह थी कि उन्होंने हमें पढ़ाने आने वाले बूढ़े शिक्षकों की सहायता से ज्यू वैण्डी भाषा में एक प्रेम गीत लिख मारा, गीत काफी बेहूदा और बेतुका था। उसकी टेक का बन्द था, 'मैं लाख बार चूमूंगा तुम को, लाख बार मैं चूमूंगा।"

ज्यू वैण्डी देश की रीति के अनुसार नवयुवक प्रेमियों द्वारा युवती प्रेमिकाओं को रात्रि के समय अभिसार के लिए आमंत्रित करना बुरा नहीं समझा जाता है और अभिसार के समय चिल्ला चिल्ला कर बेतुके प्रेम गीतों को गाने का रिवाज है। चाहे नवयुवक वास्तव में प्रेम करता हो या केवल मनोरंजन के लिए ही चिल्ल पुकार करे तो भी न कोई बुरा मानता है और न इसमें कोई बुराई ही समझी जाती है। जिस तरह योरोपीय समाज में कोर्टशिप का रिवाज साधारणतया पाया जाता है और उसे कोई भी बुरा नहीं समझता उसी तरह यहां भी इसे बुरा नहीं समझा जाता है, यहां तक कि उच्च संभ्रान्त घराने की स्त्रियां भी ऐसी बातों को मनोरंजन की दृष्टि से देखती हैं।

इस रिवाज का फ़ायदा उठा कर कैप्टिन प्रसाद ने रात्रि के समय सोरियास को अभिसार के लिए आमंत्रित करने का निश्चय कर डाला। सोरियास का शयन कक्ष और उसकी सहेलियों का निवास स्थान हमारे कमरे के बिल्कुल ठीक सामने एक खुले आंगन के दूसरे किनारे पर था, यह खुला आंगन राज्य भवन के दो विभिन्न भागों को एक दूसरे से अलग करता था। इसलिये एक साधारण गिटार, लेकर जिसका बजाना उन्होंने थोड़ा बहुत सीख लिया था, वह आधी रात के समय—आधी रात का समय ही ऐसे शोर गुल के काम के लिए यहां उपयुक्त समझा जाता है—उस आंगन में पहुँच गये और अपनी दिल दहला देने वाली चिल्लाहट से रात्रि की निस्तब्धता को भंग करने लगे। मैं उस समय सोया हुआ था लेकिन कैप्टिन की आवाज़ ने मुझे जगा दिया—क्योंकि कैप्टिन की आवाज़ क़ब्र में सोये मुरदों को भी जगा दे सकती है और ताल सुर का तो उन्हें रत्ती भर भी पता नहीं है—और मामले का पता लगाने के लिए मैं खिड़की खोल कर नीचे देखने लगा।

आंगन के बीचों बीच चन्द्रमा के पूरे प्रकाश में कैप्टिन प्रसाद खड़े थे, उनके सिर पर शुतुरमुर्ग़ के विशाल परों की एक बहुत बड़ी कलग़ी थी और उन्होंने खूब ढ़ीला ढ़ाला रेशमी चुग़ा पहन रखा था, यह दोनों वस्तुएँ ऐसे अवसरों के लिए ठीक समझी जाती हैं, और वह वही बेतुका गाना, जो उन्होंने बूढ़े शिक्षक की सहायता से बनाया था, गिटार की बेताल सुरी झनझनाहट के साथ गला फाड़ फाड़ कर गा रहे थे। जिस तरफ़ सोरियास की सखियों के शयन कक्ष थे वहां से रह रह कर दबी घुटी हँसी की आवाज़ें आ रही थीं, लेकिन स्वयं सोरियास के भवन में—यदि सोरियास वहीं थी तो मुझे उनकी दशा पर दया आती है—क़ब्र जैसी शान्ति थी। दस मिनट बीते, आधा घन्टा बीता पर कैप्टिन का बेतुका गाना था कि समाप्त होने पर ही नहीं आता था। वह उस गाने की एक ही लायन को बराबर गाये जा रहे थे, "मैं लाख बार चूमूंगा तुमको, लाख बार मैं चूमूंगा।" आख़िरकार हम दोनों, मैं और कुंवर साहिब, जिनको मैं यह दिल्लगी दिखाने के लिए ले आया था, परेशान हो गये, हमारा दिमाग़ भिन्ना गया इस बेतुके पन से। पर कैप्टिन का गीत था कि ख़त्म ही नहीं

होता था। आखिर मैंने खिड़की से सिर निकाल कर चिल्ला कर कहा, "ओ बेवकूफ गधे, कैप्टिन के बच्चे, तुझे चूमना है तो चूम चुक और झगड़ा खत्म कर। सारी रात हो गई चिल्लाते चिल्लाते "चूमूंगा," "चूमूंगा", अबे चूम भी ले और बन्द कर अपना भोंपा, सोना तक हराम कर रखा है बेईमान ने।" डांट खाते ही कैप्टिन की गले बाजी बन्द हो गई और फिर हमको उन के अभिसार प्रणय की कोई आवाज सुनाई नहीं दी।

इस समस्त दुःखपूर्ण व्यापार में केवल यही घटना ही एक उपहास योग्य मनबहलाव थी। कभी कभी बड़ी गंभीर और कटीली बातों मे भी हास्य की रेखा वैसे ही छुपी होती है जैसे घने काले बादलों के बीच विद्युत रेखा छुपी रहती है, हास्य का यह पुट केवल उन्हीं व्यक्तियों को दिखाई देता है जिन की सहज बुद्धि बहुत तीक्ष्ण होती है। हास्य प्रियता एक अमूल्य गुण है और बहुत ही कम व्यक्तियों में यह गुण पाया जाता है।

जितना कुंवर साहिब बचते और कतराते थे उतना ही सम्राज्ञी सोरियास उनके प्रति आकर्षित होती जाती थीं, और इसमें कोई नई बात भी नहीं थी क्योंकि किसी ने कहा है, "भागती फिरती थी दुनियां जब तलब करते थे हम, अब जो जरा गर्दन घुमाई तो वे क़रार आने को है।" और स्त्री चरित्र की यही विचित्रता है कि जो वस्तु उसे अलभ्य मालूम होती है उसी को प्राप्त करने के लिए वह जी जान की बाजी लगा देती है और मार्ग में जितनी ही कठिनाइयां और रुकावटे मिलती जाती हैं उनसे उसका निश्चिय शिथिल होने के स्थान पर और भी दृढ़ होता जाता है और हमारे शास्त्र साक्षी हैं कि स्त्रियों ने प्रायः असम्भव कार्य कर दिखाये हैं। सावित्री ने यमराज से अपना पति वापस ले लिया था, मेघनाथ की स्त्री से सुलोचना ने अपने पति के कटे सिर से बातें की थीं, जोन आफ आर्क, झांसी की रानी प्रभृति स्त्रियों ने इतिहास की गति तक को पलट दिया है। इसी दृढ़ निश्चय से सम्राज्ञी सोरियास कुंवर साहिब के प्रति उत्तरोत्तर आकर्षित होती जा रही थीं। सम्राज्ञी जान बूझ कर वास्तविकता से अनजान बन रही थ। और सम्राज्ञी निलिप्या के कुंवर साहिब के प्रति आकर्षण को देख

कर भी नहीं देख रही थीं, मुझे डर लग रहा था कि जिस दिन भांडा फूटेगा तो सभी कुछ भरभंड हो जायगा, जिस दिन सोरियास की आँखें खुलेंगी उस दिन प्रलय मच जायगी। सोरियास बहुत ही भयानक स्त्री थी. उनकी दोस्ती और दुश्मनी दोनों ही खतरनाक थीं, उनका संग केले और बेर का सा संग था। आखिर में वह अशुभ घड़ी आ ही पहुँची, मुझे उसके आने की पूर्ण आशा थी, आश्चर्य यही था कि वह अभी तक आई क्यों नहीं थी। एक दिन कैप्टिन तो शिकार पर गये थे और मैं और कुंवर साहिब इसी मामले पर सोच विचार कर रहे थे कि एक चोबदार ने आ कर हमें सलाम किया और सील मुहर किया हुआ एक कागज का पुर्जा हम को दिया। हमने उसे खोल कर पढ़ा, उसमें लिखा था, "सम्राज्ञी सोरियास श्रीमन्त इन्कूबू को अपने भवन में उपस्थित होने की आज्ञा देनीं हैं, वह इस आज्ञा पत्र को देखते ही इसी चोबदार के साथ चले आयें।"

"हे भगवान, अब क्या होगा," कुंवर साहिब ने हकलाते हुए कहा, "लाल साहिब आप ही न चले जाइये मेरी बजाय।"

'अपनी मरजी से तो हरगिज नहीं जाऊँगा," मैंने जोर से कहा, "मै जंगल में जख्मी बिफरी हुई शेरनी का मुक़ाबिला कर सकता हूँ मित्र परन्तु स्त्री के मुक़ाबिले में खड़े होने का साहस मुझ में नहीं है। और वैसे भी यह बला तो तुम्हारी ही है, अपनी बला को खुद ही समेटो, इश्क भी तो तुम ही लड़ा रहे हो। और भई तुम इतने सुन्दर हुए ही क्यों थे कि हर कोई स्त्री तुम पर आशिक़ होती फिरे, अपनी सुन्दरता का दण्ड खुद ही भोगो। ज्यू वैण्डी का सारा राज्य मिलने पर भी मैं तुम्हारे बदले सोरियास के पास नहीं जाऊंगा।"

"इस सोरियास की बच्ची को मुझे हुक्म दे कर बुलाने का अधिकार ही क्या है, मै क्या इसके बाप का नौकर हूँ कि जब चाहा तब बुला लिया। मैं हरगिज नहीं जाऊँगा।"

"लेकिन बच्चू जाना तो पड़ेगा ही। तुम ठहरे सम्राज्ञी के अंगरक्षक दल के कैप्टिन और इसलिये उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम उनकी आज्ञा मानने से इन्कार नहीं कर सकते

यह भी सोरियास जानती है, लेकिन घबराओ नहीं बच्चू तुम्हारी मुलाक़ात जल्दी ही खत्म हो जायेगी।"

"यह तो मैं भी समझता हूँ कि तोड़ा टूटने की बात करते देर नहीं लगती, डर तो मुझे यह है कि कहीं वह क्रोध में आ कर मेरे सीने में ख़ंजर न घुसेड़ दे। सोरियास सब कुछ कर सकती है, इस बात का मुझे पूरा विश्वास है," और यह कह कर कुंवर साहिब बहुत अनमने से डरते कांपते उस चोबदार के साथ चले गये।

मैं वहीं बैठा उनके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा, कोई पौन घण्टे के बाद वह वापस लौटे, उनका चेहरा पीला पड़ा हुआ था, सारा शरीर केले के पत्ते की तरह कांप रहा था और पसीना धार बांध कर छूट रहा था।

"लाल साहिब, गला सूख रहा है, कुछ पीने को दीजिये," उन्होंने आते ही फटी आवाज़ में कहा। मैंने ठण्डे पानी का गिलास भर कर उनको दिया, तीन गिलास पानी पी कर वह कुछ स्वस्थ हुए तो मैंने सारा माजरा पूछा।

"आप पूछते है लाल साहिब कि माजरा क्या है, मै तो सच मानिये मौत के मुँह से निकल कर आ रहा हूँ। यहां से मुझे सीधे ही सम्राज्ञी सोरियास के भवन में पहुँचाया गया, उसका भवन बहुत सुन्दर है, देश विदेश की विचित्र वस्तुऐं वहां रखी हैं। सोरियास उस कक्ष के एक कोने में रेशमी गदेलों वाली कोच पर अकेली बैठी हुई थी और बहुत अन्यमनस्यकता से गिटार के तारों पर उंगली फेर रही थी। मैं उनके सामने जा कर खड़ा हो गया, पर आठ दस मिनट तक तो उसने सिर उठा कर मेरी तरफ देखा तक नहीं, मेरी परवाह तक न की, उसी तरह गिटार के तारों पर उंगलियां फेरती रही। फिर गिटार को एक ओर रख कर सिर उठा कर मुझे देखा और मुस्करा दीं।

'तो तुम आ गये,' उन्होंने कहा, 'हमें डर था कि कहीं निलिप्था ने तुमको किसी काम के लिए भेज न दिया हो। तुम तो चौबीसों घंटे उसी का काम करते रहते हो और हम समझती हैं कि तुम अपना काम ईमानदारी से करते हो।'

"उनकी यह बात सुन कर मैंने सिर झुका कर सलाम किया और बताया कि मैं सम्राज्ञी की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा था।

'ओह हां, हमें याद आया, हमें तुम से कुछ कहना है, लेकिन तुम बैठ जाओ, खड़े कब तक रहोगे, इतने ऊंचे सिर उठा कर बातें करने में हमें तकलीफ होती हैं,' और यह कह कर उन्होंने थोड़ा सा सरक कर उसी कोच पर मेरे बैठने के लिए जगह कर दी। वह कोच के दूसरे हत्थे का सहारा लगा कर इस तरह बैठ गईं कि मेरा सारा चेहरा उनको दिखाई देता रहे।

'सम्राज्ञियों के साथ,' मैंने कहा, 'एक ही कोच पर इस तरह से बैठना मुझ जैसे साधारण सेवक के लिए शोभा नहीं देता है और सेवकों को बहुत सिर चढ़ाना भी ठीक नहीं होता है सम्राज्ञी। ऐसी बात राजसी मर्यादा के खिलाफ है।'

'हम आज्ञा देते हैं बैठ जाओ,' उन्होंने डॉट कर कहा और मैं बिना सींग पूंछ हिलाये चुपचाप कोच पर बैठ गया और फिर उसने अपनी तेज़ काली आँखों से मुझे घूरना शुरू किया। कोच के कोने में बैठी प्रेम भरी आंखों से मुझे ताकती हुई सोरियास सुन्दरता की साक्षात मूर्ति मालूम होती थी, वह चुपचाप मुझे घूरे जा रही थी, न बोलती थी और न बातें ही करती थी, अगर बोलती भी थी तो बहुत धीमे से, इतने धीमे से कि आवाज़ होठों में ही रह जाती थी और वह अपलक नेत्रों से मुझे घूरे चली जा रही थीं। उनके जूड़े में एक सफ़ेद फूल खुंसा हुआ था, सामने की ओर देखने का साहस न होने के कारण मैंने अपनी आँखे उस फूल पर जमा रखी थीं, लेकिन मेरी यह सारी कोशिशें बेकार रहीं। फिर न जाने उनकी तीर जैसे पैनी दृष्टि या उनके केशों से निकलती हुई सुगन्धि की लपटों या किसी और कारण से मुझे ऐसा लगने लगा जैसे वह मुझ पर मिस्मेरिज़्म कर रही हों, मेरी सुधि बुधि खोती जा रही थीं, मेरी सारी इन्द्रियाँ शिथिल हो गई थीं और मुझे अपने तन बदन का होश भी नहीं रहा था। अन्त में उन्होंने ही इस मोह जाल को भंग किया।

'इन्कूबू,' उन्होंने कहा, 'तू ताक़त चाहता है?'

"मैंने लड़खड़ाती आवाज़ में जवाब दिया कि संसार में कौन ऐसा है जो ताक़त नहीं चाहता।"

'तुझको मिलेगी, 'उन्होंने कहा, 'तू धन दौलत चाहता है।'

"मैंने कहा कि धन को तो आज तक किसी ने ठुकराने की कोशिश नहीं की है।"

'तुझको मिलेगी,' उन्होंने कहा,' तू सुन्दरता से प्रेम करता है?'

"इसका मैंने यह उत्तर दिया कि मैं सुन्दर मूर्तियों, चित्रों और चित्रकारी पर जान देता हूं और इसी तरह की कुछ ऊटपटांग बातें मैंने कह दीं। मेरी ऊटपटांग बातों को सुन कर सोरियास के माथे पर बल पड़ गये और ग़ुस्से से आँखे लाल हो गईं। फिर कुछ देर शान्ति रही। मेरा धैर्य छूटा जा रहा था, मेरी यह हालत हो गई थी कि मैं केले के पत्ते की तरह थर थर कांप रहा था। मुझे न जाने क्यों ऐसा लग रहा था कि कुछ न कुछ भयानक बात होने को थी, लेकिन सोरियास ने मेरे ऊपर मोहिनी सी डाल रखी थी, सब कुछ देखते जानते हुए भी मैं कुछ नहीं कर पा रहा था। मेरे हाथ पांव बे क़ाबू हो गये थे।"

'इन्कूबू,' सोरियास ने मौन तोड़ते हुए कहा, 'तू सम्राट बनना चाहता है? सुन, तू बन सकता है। देख परदेसी हम सोचती हैं कि तुझे सारे ब्यू वैण्डी देश का सम्राट बना दें, पर इसके लिए तुम्हें हम से सम्राज्ञी सोरियास से, 'रजनी बाला' से विवाह करना पड़ेगा। चुप रहो, बोलो नहीं चुपचाप सुनो कि हम क्या कह रहे हैं। आज तक हमने किसी से भी अपने दिल की बात इस तरह नहीं की है, तू परदेसी है और इसलिये हम तुझ से शर्म को कोने में रख कर बातें कर रहे हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि जो चीज़ हम तुझ को देना चाहते हैं उसको मांगने की हिम्मत तेरी हो ही नहीं सकती। देख हम तेरे क़दमों पर ब्यू वैण्डी का राज्य मुकुट रखते हैं प्यारे इन्कूबू, और इस राज्य मुकुट के साथ हम तुझे अपने मन का सारा प्यार भी देते हैं, वह प्यार जिसे पाने के लिए सारे सामन्त मुँह फैलाये हुए हैं। बोल, कह, कि तुझे हमारी बात मंजूर है, प्यारे इन्कूबू हाँ कह कर हमारे जलते हुए हृदय को ठण्डा कर।'

"सम्राज्ञी सोरियास" मैंने जवाब दिया, "मैं हाथ जोड़ कर आप से प्रार्थना करता हूँ कि मुझ से ऐसी बातें न कहिये"—मुझे कोई जवाब

सूझ ही नहीं रहा था और न मुझे कुछ सोचने और उपयुक्त शब्दों को ढूंढ़ने का अवसर ही मिल रहा था--"क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता, यह नामुमकिन है। सम्राज्ञी सोरियास मैं आप की बहिन सम्राज्ञी निलिप्था से विवाह करने की अनुमति दे चुका हूँ। मैं उन्हीं से केवल उन्हीं से प्रेम करता हूँ।"

"दूसरे ही क्षण मुझे अपनी भूल मालूम पड़ गई। मैं ने एक भयानक रहस्य खोल दिया था। परन्तु छोड़ा तीर और कही बात वापस नहीं लौटाई जा सकती है। मै अपनी इस बेवक़ूफ़ी का परिणाम भोगने के लिए तय्यार हो गया। जब मैं ने यह बात कही थी तो सोरियास ने अपना मुंह अपनी हथेलियों में छुपा रखा था और जब मेरी बात उस के कान में पड़ी तो उसने धीरे धीरे सिर उठाया और उस के मुख के भाव को देख कर मैं भय और आशंका से सिमट गया। उस का चेहरा सफ़ेद हो गया था लेकिन आंखें सुलगते कोयलों की तरह जल रहीं थीं। वह उठ कर खड़ी हो गई, उसका सांस रुका जा रहा था, वह बिल्कुल चुप थी और उस की यही चुप्पी थी जिस से मुझे डर लग रहा था। एक बार उसने पास रखी मेज़ की तरफ़ देखा जिस पर एक छुरा पड़ा हुआ था, वहां से हट कर उस की निगाह मुझ पर पड़ी, शायद उसका विचार मेरे सीने में छुरा भोंप देने का था। लेकिन न जाने क्या सोच कर उसने ऐसा नहीं किया। उसके चेहरे पर एक रंग आता था एक जाता था, अन्त में अपने हृदय की सारी व्यथा और घृणा उसने एक शब्द में उंडेल दी—उसने एक ही शब्द कहा 'जाओ'।

"और मै सिर पर पांव रख कर वहां से भागा, जान बची और लाखों पाये, अब कोई मुझे सारा राज्य भी दे तौ भी वहां नहीं जाऊंगा मेरा गला ख़ुश्क हो रहा है, पानी हो तो दीजिये लाल साहिब। अब क्या होगा लाल साहिब?"

मेरी भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, मामला वाक़ई बहुत गंभीर हो गया था। आवेश में आ कर कौन सा काम है जिसे स्त्री कर नहीं सकती है। कुचली नागिन और ठुकराई स्त्री के क्रोध से बचना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है, और यदि वह स्त्री हो सम्राज्ञी और

वह भी सोरियास जैसी तो जो भी न हो जाता वह थोड़ा था। मुझे मालूम पड़ने लगा कि हमारे ऊपर संकट के बादल फट पड़ने ही वाले थे, हमारा जीवन संकट में था।

"सम्राज्ञी निलिप्था को फ़ौरन ही सारी बातें बता देना जरूरी है," मैं ने सलाह दी, "और कुंवर साहिब इस काम के लिए मेरा वहां जाना ज्यादा ठीक होगा। आप की बात पर वह सन्देह कर सकती हैं।

"आज पहरे के सिपाहियों का कैप्टिन कौन है ?"

"कैप्टिन प्रसाद।"

"तब तो शायद निलिप्था से मुलाक़ात करने का मौक़ा ही न मिले। मुंह फाड़ कर क्या देख रहे हैं कुंवर साहिब, आप को सुन कर आश्चर्य होता है। लेकिन जहां तक मेरा ख्याल है सोरियास इतने कमीने पन पर नहीं आयेगी। अगर कैप्टिन से सारी बातें कह दी जायें तो कैसा रहेगा कुंवर साहिब।"

"ओह मेरा दिमाग़ तो बिल्कुल ही काम नहीं कर रहा है, जो आप को ठीक लगे कीजिये," कुंवर साहिब ने जवाब दिया,"उस बेचारे का दिल टूट जायेगा, यह आपको मालूम ही है कि वह सोरियास पर जान देते हैं।"

"यह तो मैं भी जानता हूँ, मेरे ख्याल से अच्छा यही होगा कि कैप्टिन से कुछ भी कहा सुना न जाये। वैसे तो सच बात उन से छुपी रहेगी नहीं, मालूम उन को पड़ ही जायेगी। मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है कि सोरियास अब नैस्टा से सांठ गांठ करेगी, वह भी निलिप्था पर खार खाये बैठा है और इस का नतीजा यह होगा कि ज्यू वैण्डी में खून की नदियाँ वह जायेंगी और ऐसा भयानक गृह युद्ध होगा जैसा शताब्दियों से कभी नहीं हुआ होगा। देखिये," और यह कर मैंने दो सरकारी हरकारों की ओर इशारा किया जो सोरियास के महल से निकल कर घोड़ों पर सवार हो कर तेजी से भागे जा रहे थे। "मेरे पीछे आइये," और यह कह कर मैं अपनी दूरबीन लेकर बहुत तेजी से अपने कमरे की छत पर बनी निरीक्षण मीनार की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा और वहाँ से अपनी दूरबीन की सहायता से महल के परकोटे को देखने लगा। मैंने देखा कि उन दोनों हरकारों में से एक अपने घोड़े को फेंकता हुआ पहाड़ की चोटी पर

बने सूर्य मन्दिर की ओर उड़ा जा रहा था—दूसरा हरकारा मुझे किधर भी दिखाई नहीं पड़ा। बहुत आँखें फाड़ फाड़ कर देखने पर भी उस का खोज नहीं लग रहा था। थोड़ी ही देर बाद मैंने एक घुड़सवार को तेजी से घोड़ा फेंकते नगर के परकोटे के उत्तरी फाटक की ओर जाते देखा, दूसरे ही क्षण मैंने उसे पहिचान लिया, यह दूसरा हरकारा था।

"ओह, सोरियास बहुत जीवट की स्त्री है। शायद उसका सिद्धांत है कि जो आज करे सो अब, वह एक क्षण भी खोना पसन्द नहीं कर रही है। उसका हमला एकाएकी और बहुत बड़ा होगा। कुंवर साहिब आप ने उसका अपमान किया है, अपमान के इस दाग़ को मिटाने के लिए वह ख़ून की नदियां बहा देगी और यदि दुर्भाग्य से कहीं आप उस के हाथ पड़ गये तो आप का ईश्वर ही मालिक है। अपमानित नारी और कुचली हुई नागिन एक सी होती हैं, इनके बदले से बचना बहुत कठिन है। इस देश के बुरे दिन आ गये हैं। मैं सम्राज्ञी निलिप्था को इस बात की ख़बर देने जा रहा हूँ, आप यहीं रहिये और अपने होश हवास को ठिकाने लाने की कोशिश कीजिये। होश हवास को ठिकाने रखने की जरूरत अब आयेगी कुंवर साहिब, यह न भूलियेगा। जंगलों और पहाड़ों की ख़ाक छान कर मैंने अपने जीवन के ५० वर्ष धूल में नहीं मिलाये हैं," और यह कह कर मैं निलिप्था को सारा हाल सुनाने चला गया।

विना क़िसी विशेष दिक्क़त के मुझे निलिप्था से एकान्त में मिलने का अवसर मिल गया। वह कुंवर साहिब के आने की प्रतीक्षा कर रही थी और उनके स्थान पर मुझ जैसे सूखे फीके बूढ़े को देख कर उन को कुछ बुरा सा लगा।

"क्या बात है मैकुमाजन? श्रीमन्त इन्कूबू तो ठीक हैं ना? वह हमसे मिलने क्यों नहीं आये? श्रीमन्त इन्कूबू की तबियत तो ठीक है ना?"

कुछ रस्मी शब्द कह कर मैंने बताया कि उनकी कृपा से सब ठीक था और फिर भूमिका बांधे बग़ैर सीधे सच्चे शब्दों में सारी कहानी शुरू से ले कर आख़ीर तक कह सुनाई। सारी बात को सुन कर निलिप्था का चेहरा मारे ग़ुस्से के लाल चुक़न्दर हो गया, नथुने फड़कने लगे और आँखों से चिंगारियाँ निकलने लगीं। सुन्दर स्त्री की प्रत्येक अदा सुन्दर लगती है। अपने क्रोध में भी निलिप्था कितनी सुन्दर लग रही थी कि बस देखते ही बनता था।

"तुम को ऐसी बात हमसे आ कर कहने की हिम्मत कैसे हुई," उसने चिल्ला कर कहा, "यह सरासर झूँठ है कि इन्कूबू हमारी बहिन सोरियास से इश्क़ लड़ा रहे थे।"

"क्षमा कीजिये सम्राज्ञी, मैंने तो यह कहा था कि सम्राज्ञी सोरियास आपके इन्कूबू से इश्क़ लड़ा रही थीं।"

"शब्दों का जाल और ताना बाना बुनने की कोशिश मत करो मैंकुमाज़न। क्या यह दोनों बातें एक नहीं हैं ? एक देता है दूसरा लेता है, फिर इससे क्या बहस कि दोषी कौन है ? सोरियास, मैं उससे घृणा करती हूँ—सोरियास भी सम्राज्ञी है और साथ ही है हमारी बहिन। पानी हमेशा ढ़लान की तरफ ही बहता है मैकुमाज़न। इन्कूबू ने ज़रूर उसे धोखा दिया होगा नहीं तो वह इतनी कमीनी नहीं है कि हर एक ऐरे ग़ैरे से प्यार करती फिरे। ओफ, किसी ने ठीक कहा है, पुरुष की प्रकृति सांप जैसी होती है जिसकी हवा से ही ज़हर चढ़ जाता है। सांप को कितना ही दूध क्यों न पिलाओ वह तो ज़हर ही उगलता रहता है।"

"आपने जो कुछ कहा सम्राज्ञी वह ठीक है, लेकिन मेरा ख्याल है कि आपने मामले को ठीक तरह समझा नहीं है। सम्राज्ञी, निलिप्था," मैंने जोर दे कर कहा, "तुम शायद नहीं जानतीं कि तुम्हारी इन बातों से तुम्हारी मूर्खता और जहालत टपक रही है। जल्दी करो, यह मूर्खता करने का समय नहीं है देर करने से मामला हाथ से बाहर हो जायेगा।"

"तेरी इतनी हिम्मत जो हमसे ज़बान लड़ाये," क्रोध से कांपती हुई निलिप्था ने ज़मीन पर पैर पटक कर कहा, "उस धोखे बाज़ बेईमान ने हमारा अपमान करने के लिये तुझे भेजा है ? तेरी हैसियत क्या है ? तू है कौन ? तेरी इतनी हिम्मत जो हमसे ऐसी बेहूदा बातें कह सके ? जानता नहीं कि हम यहां की सम्राज्ञी हैं, हमारे एक इशारे पर तेरी खाल खींची जा सकती है ? तेरी इतनी जुर्रत," और निलिप्था कुचली सांपिनी की तरह फुँफकारने लगी।

"मेरी हिम्मत और जुर्रत की बात पूछती हैं आप, तो सुनिये। जो अनमोल क्षण तुम इन बेहूदा बातों में गँवा रही हो वह तुमको बहुत भारी पड़ेंगे, वह तुम को राह का भिखारी बना देंगे और तुम्हारी ही नहीं हमारी जानों पर भी आ बनेगी। सोरियास तुम जैसी मूर्ख नहीं

है। उसके घुड़सवार हरकरे लड़ाई का संदेशा ले कर चारों ओर जा भी चुके हैं। तीन दिन के अन्दर ही अन्दर नैस्टा अपने पहाड़ी किले से शेर की तरह दहाड़ने लगेगा और उसकी दहाड़ को सुन कर उत्तर की ओर वाले सारे पहाड़ी उसके झन्डे तले सिमट आयेंगे। यह भी तुमको मालूम है कि सोरियास की आवाज़ में जादू है, वह अपने इस जादू को पूरा पूरा काम में लायेगी, और उसकी आवाज़ बेकार नहीं जायेगी, यह भी सुन लो। पहाड़ पहाड़, घाटी घाटी उसका झन्डा उड़ने लगेगा और जिस तरह तूफान में रेत चारों तरफ़ छा जाता है उसी तरह उसके योद्धा और सैनिक भी दल बादल की तरह चारों ओर छा जायेंगे। इस राज्य की कम से कम आधी सेना उसके झन्डे तले जा कर जी जान की बाज़ी लगा देगी, प्रत्येक नगर, गाँव और क़स्बे में पुरोहित पुजारी हम परदेसियों के ख़िलाफ़ लोगों को भड़कायेंगे और ज़हर उगलेंगे। इस लड़ाई को वह धर्म युद्ध बतायेंगे, देवताओं और भगवान सूर्य की दुहाई दे कर लोगों को तुम्हारे और हम परदेसियों के ख़िलाफ़ उभाडेंगे और याद रखो निलिप्था, यह आंधी तुमको, तुम्हारे सिंहासन को और तुम्हारे साथ साथ हम परदेसियों को तिनकों की तरह उड़ा ले जायेगी। जो कुछ मुझे कहना था मैंने कह दिया अब तुम्हरी राज़ी है जो चाहो करो।"

इस बीच सम्राज्ञी निलिप्था बिल्कुल शान्त हो चुकी थी, उस के ईर्षा जनित क्रोध का तूफ़ान ख़त्म हो गया था और कुछ ही क्षणों में ज़िद्दी हठीली झगड़ालू स्त्री के स्थान पर एक बिल्कुल ही दूसरी स्त्री मेरे सामने थी, शान्त संयत कार्य कुशल और सम्राज्ञी जैसी धीर और गम्भीर। यह परिवर्तन पलक झपकते ही हो गया था और इतनी शीघ्रता से औरइतना सम्पूर्ण हुआ था कि मैं देखता ही रह गया।

"आप ठीक कहते हैं, मैकुमाज़न। हमारी मूर्खता और अभद्रता को क्षमा कर दीजिये। अगर हमारे सीने में दिल न होता तो हम आदर्श सम्राज्ञी बन जातीं। ओफ, कठोरता और निर्दयता, उससे तो जग जीता जा सकता है। वासना बिजली की सी चमक है, सुन्दर और मोहक, यह आकाश और पृथ्वी को मिला भी सकती है परन्तु इसके वश में पड़ कर मनुष्य अंधा हो जाता है। वासना विष भरा सुवर्ण घट है।

आ गये। मैं डर रहा था कि कुंवर साहिब के आते ही नये सिरे से रोना पीटना मचेगा, शिकवे शिकायतें होंगी, ताने मेहने दिये जायेंगे और एक फजीता खड़ा हो जायेगा। लेकिन ओफ़, स्त्री कितना अपूर्व त्याग कर सकती है, कितना आत्म संयम और आत्म दमन उसमें होता है। सम्राज्ञी ने सोरियास वाली बात का जिक्र तक नहीं किया उल्टे सिर हिला कर उनका स्वागत किया और बिना लम्बी चौड़ी भूमिका बांधे फौरन ही प्रस्तुत विषय को छेड़ दिया और उनकी राय पूछी। निलिप्था की बातों में शहद घुला हुआ था, परन्तु उसकी आँखें जल रही थीं, रह रह कर वह अपने होंठ चबाने लगती थीं, इससे मैंने समझा कि वह सोरियास-कुंवर-साहिब की प्रेम कहानी को भूल नहीं गई थी और न उस पर पूर्ण रूप से अविश्वास ही कर रही थी। परन्तु क्रोध को किसी और अवसर के लिए उठा रखने और मौके पर गधे को भी बाप बना लेने की उसकी अपूर्व क्षमता को देख कर मैं दंग रह गया।

थोड़ी ही देर बाद अंग रक्षक नायक ने आ कर सैल्यूट दिया और सूचना दी कि सम्राज्ञी सोरियास महलों को छोड़ कर भाग गई थीं। सारी रात उपासना करने के लिए, जैसा क्यू वैण्डी में आम रिवाज था, वह पहाड़ की चोटी पर बने मन्दिर को जा रही थी ऐसा कह गई थीं सम्राज्ञी सोरियास जाने से पहिले। हम सभी एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। सोरियास पांव तले घास नही उगने देना चाहती थी ऐसा मुझे लगा। विपत्ति इतनी तेजी से फट पड़ेगी इस बात का तो मैंने अनुमान भी नहीं किया था।-

और फिर हम इस विपत्ति से बचने की तरकीबें सोचने लगे।

जिन सेना नायकों पर ऐकान्त विश्वास किया जा सकता था उनको फौरन ही छावनियों से बुलाया गया और गिने चुने शब्दों में उनको सारी परिस्थिति समझाई गई। उनको अपने अपने विश्वस्त आदमियों को जल्दी से जल्दी इकट्ठा करने का आदेश दिया गया। उनके जाने के बाद बुलाए गए नगर के वह प्रमुख व्यक्ति, जागीरदार और समान्त जिन पर सम्राज्ञी आँख मूंद कर विश्वास कर सकती थीं और उनको भी सारी स्थिति समझा दी गई। अपने साथियों और विश्वस्त अनुचरों को इकट्ठा करने और फौज तय्यार करने के लिए वह जागीरदार और

सामन्त उसी दम अपनी अपनी जागीरों को चले गये। दूरस्थ नगरों क़स्बों और गढ़ियों के अधिकारियों और गढ़पतियों को मुहर बन्द हुक्म नामे भेजे गये, और बीस घुड़सवार इस काम पर तैनात किये गये कि वह रात भर घोड़े फेकते चले जायें और जिन जिन सामन्तों, अधिकारियों और गढ़पतियों के नाम मुहर बन्द हुक्मनामे लिखे गये थे उनको सूर्य निकलने से पहले ही सम्राज्ञी के हुक्मनामे पहुँचा दें। साथ ही अनेकों जासूसों को शत्रु पक्ष की गति विधि पर नज़रें रखने के लिए नियुक्त कर दिया गया।

सारे दिन और संध्या तक हम इसी काम में फंसे रहे। सम्राज्ञी ने कुछ विश्वस्त मुहर्रिर हमें दे दिये थे और वह स्वयं भी बराबर हमारे साथ रह कर हमारे कामों में हाथ बँटाती रहीं। निलिप्था की फुरती, चैतन्यता, कल्पना शक्ति और कार्य क्षमता को देख कर मुझे दाँतों तले उंगली दबा लेनी पड़ी। रात्रि को कोई आठ बजे के बाद हम अपने कमरों को लौट सके। वहां पहुँचते ही अलफ़ान्सो की झिड़कियाँ खानी पड़ीं क्योंकि हमारी प्रतीक्षा में उसका बड़ी मेहनत से पकाया मुर्ग़ा मुसल्लम ठंडा हो कर मिट्टी हो गया था। ज्यूवैण्डी पहुँच कर हमने उसे उसका पुराना काम ही सौंप दिया था। इसी बीच कैप्टिन प्रसाद शिकार से लौट आये थे और खा पी कर ड्यूटी पर जा चुके थे। क्योंकि राज्य भवन के बाहरी फाटक पर पहरा देने वाली टोली के नायक को पहरा दुगना कर देने की आज्ञा दी जा चुकी थी इसीलिये किसी आकस्मिक या तत्कालिक खतरे का हमें कोई भय नहीं था, इसलिये कैप्टिन को उसी समय तलाश करके उन से सारा हाल कह डालने की हमने कोई खास आवश्यकता नहीं समझी, क्योंकि मनुष्य की यह प्रकृति है कि वह दुखद समाचारों को अन्त तक छुपाये रखने की चेष्टा करता है और यह आशा कर के अपने आप को धोखा देता रहता है कि शायद वह घटना हो ही न। सवेरे से बिना रुके लगातार काम करते रहने से हम थक कर चूर हो गये थे इसलिये कैप्टिन को सारी बातें बताने का काम अगले दिन पर उठा रखने का फैसला करके हम सोने के लिए चले गये।

सोने को जाने से पहले कुंवर साहिब को कुछ ध्यान आया और उन्होंने असम्लोपागस को बुला कर उसे निलिप्था के शयन-कक्ष पर निगाह रखने और छुपे छुपे पहरा देने को कह दिया। असम्लोपागस

को अब तक महल को सभी लोग पहिचान गये थे और सम्राज्ञी की आज्ञा से वह हर जगह बिना रोक टोक के जा सकता था, किसी पहरेदार को उसे रोकने या टोकने की आज्ञा नहीं थी और इस आज्ञा का वह यह लाभ उठाता था कि रात बिरात, अंधेरे उजाले, आधी रात के सन्नाटे में जब कि सारा महल मुरदों जैसी नींद में सोता होता था वह चुपचाप पॉव दबाये सांप की तरह महल के कोनों कुचीलों में घूमता फिरता था। उस काम में उसे न जाने क्या मजा आता था। इस लिये रात बिरात उसे बरामदों और गलियारों में घूमते देख कर कोई किसी तरह का सन्देह भी नहीं कर सकता था क्योंकि उस की इस आदत को सभी जान गये थे। कुंवर साहिब के कहने पर वह बिना कुछ कहे चुपचाप अपनी हन्कूसीकास को उठा कर चला गया और हम लोग भी अपने अपने पलंगों पर जा कर सो गये।

ऐसा मालूम होता था जैसे मै कुछ ही मिनट सोया हूँगा कि सोते सोते मुझे एक अजीब तरह की बेचैनी सी मालूम पड़ने लगी और मैं जाग गया। मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई दूसरा आदमी मेरे कमरे मे मौजूद था और लगातार मुझे घूरे जा रहा था। मैं घबरा कर उठ उठा और मुझे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि पौ फटने लगी थी और कमरे के धुमेले वातावरण में और कोई नहीं बल्कि स्वयं अमस्लो-पगम की सूखी खांखड़ भयावनी आकृति मेरे पलंग के पैताने खड़ी लगातार मुझे घूरे जा रही थी।

"तुझे यहां आये कितनी देर हुई," मैंने ज़रा कड़ाई से पूछा क्योंकि इस तरह से जगाये जाना मुझे हरगिज़ भी पसन्द नहीं है।

"कोई आधा घन्टा हुआ होगा, मैकुमाज़न। मुझे तुझ से कुछ कहना है।" अब तो मेरे भी कान खड़े हो गये और मेरी नींद और खुमार एक दम से गायब हो गया। मैंने बड़ी उत्सुकता से कहा, "कह डाल, क्या बात है।"

"जैसा इन्कूबू ने कहा मैंने वैसा ही किया। मै 'धौली रानी' के महलों मे जा कर उस के सोने के कमरे से सटे बाहर वाले पहले कमरे मे एक खंभे की ओट में छुप कर बैठ गया। मेरे और 'धौली रानी' के सोने के कमरे के बीच एक परदा ही था। बाहर वाले कमरे में बौगवन

अकेला पहरे पर था और उस कमरे के दरवाज़े पर लटकते परदे के बाहर एक सिपाही पहरे पर था। मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही वह वहां थे, और मैंने सोचा कि देखूं इन दोनों की नज़र बचा कर दवे पांव अन्दर जा सकता हूँ या नहीं और मैकुमाज़न मैं सांप की तरह दोनों के पीछे से रेंगता हुआ अन्दर वाले कमरे में पहुँच गया। वहां मैं घन्टों बैठा रहा यकायक मैंने देखा कि कोई काली शक्ल अपने को सिर से पांव तक छुपाये बिल्कुल दवे पाँव आहट लेती हुई मेरी तरफ़ आ रही थी। यह काली छाया किसी औरत की थी मैकुमाज़न और उस के हाथ में एक चमचमाती छुरी थी। इस काली छाया के पीछे एक और छाया बिल्कुल चुछचाप सांप की तरह आ रही थी, उस औरत का पीछा करने वाली छाया की ज़रा भी आहट 'नही मिली थी और न उसे उसके आने का पता ही था। यह दूसरी छाया बौगवन था। उसने अपने जूते उतार दिये थे और बड़ी होशियारी से वह उस औरत का पीछा कर रहा था। वह औरत बिल्कुल मेरे पास हो कर निकली, इतने पास हो कर कि उस की चादर मुझ से छूती हुई गई, और कमरे के धुंधलके में तारों की रोशनी से मैंने उसके मुंह को देख लिया।"

"वह कौन थी ?" मैंने वहुत उतावली से पूछा।

"परदे में लिपटी वह औरत 'रजनी बाला' की थी। किसी ने उस का नाम ठीक ही रखा है।

"मैं रुक गया और बौगवन भी मेरे पास हो कर निकल गया। फिर मैं उनके पीछे लग लिया। 'धौली रानी' के बड़े कमरे तक हम तीनों बिल्कुल चुपचाप बिना तनिक सी भी आहट किये पहुंच गये। कमरे में सब से पहले घुसी वह औरत, उसके पीछे घुसा बौगवन और उसके पीछे मैं। औरत ने बौगवन को नहीं देखा और बौगवन ने मुझे नहीं देखा। चुप-चाप चलती और आहट लेती हुई 'रजनी वाला' उस परदे के पास जा पहुँची जो 'धौली रानी' के सोने के कमरे के दरवाज़े पर लटका हुआ है। उस औरत ने उल्टे हाथ से उसे हटा दिया और कमरे में चली गई, उसके पीछे गया बौगवन और उसके पीछे गया मैं। कमरे के दूसरे कोने पर 'धौली रानी' का पलंग है और मैंने देखा कि वह उस पर गहरी नींद में सो रही थी। मुझे उसके सांस लेने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे

रही थी और उसका एक हाथ ओढ़ने की चादर के बाहर लटका हुआ था। उसे सोता देख कर 'रजनी वाला' देख मालिक इस तरह झुक कर दोहरी हो गई और अपनी छुरी को संभाले इस तरह पलंग की तरफ़ बढ़ने लगी जैसे बिल्ली कबूतर की तरफ बढ़ती है। अपने शिकार को सामने देख कर उसकी आंखें शिकार पर जम गईं और उसने इधर उधर घूम कर या नजर घुमा कर भी नहीं देखा।

"जब वह पलंग के बिल्कुल पास पहुँच गई तो बौगवन ने उसके कंधे को छू दिया, वह एक दम से चौंक पड़ी और 'हाय' करके पीछे की ओर घूमी, और मैंने उसके छुरे को उठते, रोशनी में चमकते और बौगवन की छाती पर टकराते देखा। बौगवन का सौभाग्य था कि उसने झिल्लम पहनी हुई थी नहीं तो छुरी उसकी छाती के पार हो जाती। उसी क्षण उसने छुरा मारने वाली औरत को पहिचाना और आश्चर्य से वह ऐसे चौंक पड़ा जैसे सांप पर पांव पड़ गया हो, उसकी आंखे फटी की फटी रह गईं, और उसके मुँह से आवाज़ तक न निकल सकी। औरत भी आश्चर्य से मुँह फाड़ कर रह गई, लेकिन क्षण भर में ही उसने अपने आप को संभाला, फिर इस तरह अपने होठों पर उंगली रख कर बौगवन को बिल्कुल चुप रहने का इशारा किया, फिर परदे की तरफ बढ़ी और उसे उठा कर बाहर चली गई। उसके पीछे पीछे जादू से खिंचा सा चला गया बौगवन। वह औरत मेरे इतने पास हो कर निकली कि उसकी पोशाक मेरे बदन से छूती हुई गई। मेरा मन तो ऐसा हुआ मालिक कि मैं उसका वहीं काम तमाम कर दूँ पर न जाने क्या सोच कर मैंने उठे हुए हाथ को नीचा कर लिया।

बाहर वाले पहले कमरे में पहुँच कर उसने बौगवन से कुछ फुसफुसा कर कहा और इस तरह से दोनों हाथ जोड़ कर उससे विनती करने लगी। उसने कहा क्या यह मैं नहीं सुन सका। दोनों बातें करते हुए बाहर के दूसरे कमरे में चले गये। वह औरत बराबर उससे विनती प्रार्थना कर रही थी और वह अपने सिर को हिला हिला कर "नहीं" "नहीं" करता जाता था। एक बार तो मुझे ऐसा मालूम पड़ा जैसे वह सन्तरी को आवाज़ दे कर बुलाने वाला ही हो। उसे संतरी को बुलाते देख कर 'रजनी बाला' ने बोलना बन्द कर दिया और अपनी बड़ी बड़ी

आंखें उसकी आंखों पर जमा दीं और मैंने देखा कि उस पर उस औरत का जादू चल गया। वह अपनी सुधि बुधि खोने लगा। तब उस औरत ने अपना दाहिना हाथ उसकी ओर बढ़ाया और उसने उसे चूम लिया। बौगवन को उसके बस में होते देख कर मैंने आगे बढ़ कर उसे पकड़ने का इरादा किया, क्योंकि मैंने देखा कि बौगवन नामर्द हो गया था, उसका दिमाग़ ख़राब हो गया था, उसे अच्छे बुरे की पहिचान नहीं रह गई थी, मगर अभी मै बढ़ूं बढ़ूं कि वह तो परदे को सरका कर तेजी से यह जा वह जा।"

"निकल गई?" मैंने चौंक कर पूछा।

"वह तो तीर सी निकल गई मालिक और बौगवन उसकी तरफ उल्लू की तरह ताकता रह गया और फिर वह भी परदे उठा कर बाहर निकल गया। मैंने दो तीन क्षण इन्तजार किया और फिर मैं भी चला आया।"

"अमस्लोपागस जो तू कहता है क्या वह ठीक है? तू ने रात को सोते सोते सुपना तो नहीं देखा था?"

मेरी बात के जवाब में उसने बायें हाथ की मुट्ठी खोल दी, उसकी हथेली पर बहुत बढ़िया फ़ौलाद के बने छुरे का कोई तीन इंच लम्बा टुकड़ा रखा हुआ था।

"देख मालिक, सुपने में मुझे यह चीज़ मिली है। यह उस छुरी का फल है जो बौगवन की झिल्लम पर लग कर टूट गई थी और यहां आते वक़्त मैंने इसे 'धौली रानी' के सोने वाले कमरे से उठा लिया था।"

अध्याय १८

खून खून खून

अमस्लोपागस को वहीं ठहरने के लिए कह कर मैंने जल्दी जल्दी उल्टे सीधे कपड़े पहने और उसे साथ ले कर कुंवर साहिब के कमरे में जा पहुँचा। वहां पहुँच कर बूढ़े जूलू ने जो कुछ मुझ से कहा था उसे ज्यों का त्यों अक्षर अक्षर दुहरा दिया। इस बात को सुनते वक़्त कुंवर साहिब का चेहरा देखने क़ाबिल हो रहा था।

"हे भगवान्," उन्होंने कहा, "यहां मैं मुरदों से बाज़ी लगाये सो रहा था और उधर मेरी निलिष्या को जान से मार देने की तय्यारियाँ थीं, और उसकी हत्या हो रही थी सिर्फ़ मेरी वजह से। यह सोरियास भी कैसी खूनी औरत है। अगर अमस्लोपॉगस उसे अपने इन्कूसीकास से काट डालता तो कितना अच्छा होता।"

"ओह," जूलू ने कहा, "घबरा मत इन्कूबू, मैं चाहता तो उसे हाथ उठाने से पहले ही काट डालता, लेकिन मैं ज़रा वक्त का इन्तज़ार कर गया।"

मैंने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन मुझे रह रह कर ख्याल आने लगा कि अगर अमस्लोपागस ने उस वक़्त निलिष्या पर आने वाली मौत की घड़ी को सोरियास पर उलट दिया होता तो हज़ारों बेगुनाहों की जाने बच जातीं। और आगे चल कर हुआ भी ऐसा ही।

अपनी बात सुना कर अमस्लोपागस बड़ी बेफ़िक्री से जैसे कुछ हुआ ही न हो नाश्ता करने चला गया और मै और कुंवर साहिब इस घटना पर बातें करने लगे।

पहले तो कुंवर साहिब कैप्टिन प्रसाद पर बहुत बिगड़े, उनके ख़िलाफ बहुत जहर उगला और यहां तक कह डाला कि अब उन पर विश्वास करना मूर्खता थी और उन्होंने जान बूझ कर सोरियास को किसी गुप्त द्वार से निकल भागने दिया जब कि नायक की हैसियत से

उनको सोरियास को पकड़ कर सन्तरी के हवाले कर देना चाहिये था। कुंवर साहिब ने बहुत कड़े शब्द कैप्टिन के लिए कहे और मैंने भी उनको टोकना ठीक नहीं समझा क्योंकि तूफान के उतर जाने पर हवा अपने आप ही धीमी पड़ जाती है। दूसरों की ग़ल्तियों को पकड़ लेना या उन पर आलोचना करना कितना सरल है। साधारणतया मनुष्य को दूसरों की आंखों का तिनका तक दीख जाता है परन्तु अपनी आंख का शहतीर दिखाई नहीं देता। दूसरों पर आक्षेप करते समय हम कितने अनुदार हो जाते हैं और हमारे मनोभाव कितने संकुचित हो जाते हैं।

"मगर कुंवर साहिब," मैंने अन्त में कहा, "मैं तो स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि आप भी ऐसी बातें कर सकते हैं। ज़रा सोचिये तो, यह सोरियास वह स्त्री है जिससे आप स्वयं कल मिले थे। संसार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी से प्रेम वरदान पाने के बाद भी जिस के मोह पाश को तोड़ देना आपको भी बहुत कठिन मालूम हुआ था। इस घटना पर इस तरह विचार कीजिये। अगर निलिप्था ने सोरियास की हत्या करने की चेष्टा की होती और आपने उसे ऐसा करते पकड़ लिया होता और पकड़े जाने पर उसने आप से हाथ जोड़ कर गिड़-गिड़ाते हुए छोड़ देने की विनती की होती तो क्या आप उसे सन्तरी को सौंप देते? क्या आप उसकी बेइज्ज़ती होने देते? क्या आपको यह गवारा होता कि उसे आग में झोंक कर मृत्यु-दण्ड दे दिया जाता? अपने पुराने मित्र को विश्वासघाती और बदमाश कहने से पहले क्षण भर के लिए इस घटना पर कैप्टिन प्रसाद के दृष्टिकोण से विचार कीजिये।"

मेरी फटकार को कुंवर साहिब ने बिना कान पूंछ हिलाये चुपचाप सुन लिया और क्रोध का ज्वर उतर जाने पर अपनी कड़ी बातों के लिए मुझ से क्षमा मांगी। कुंवर साहिब के चरित्र की सब से बड़ी उत्तमता यही है कि अपनी भूल को मान लेने में कभी आनाकानी नहीं करते।

यद्यपि मैंने कैप्टिन की इतनी हिमायत ली थी लेकिन तौ भी मैं इस बात से आंखें नहीं मूंद सकता था कि चाहे उन्होंने यह काम अपनी मरज़ी से किया था या अचानक ही ऐसा बानक बन गया था परन्तु यह सत्य था कि वह बहुत ही अशुभ और लज्जास्पद बखेड़े में फंस गये थे।

घृणित और गुप्त हत्या की चेष्टा की गई थी और उन्होंने हत्यारिणी को भाग जाने दिया था और इस तरह उस षडयंत्र में भागीदार बन कर अपने आप को बिना सींग पूंछ हिलाये हत्यारिणी के चंगुल में फंसा दिया था। एक तरह से वह स्वयं हत्या के भागीदार बन गये थे और जो भी व्यक्ति किसी स्वेच्छाचारी और विशेष कर सोरियास जैसी ईर्षालु और आत्माभिमानी स्त्री का बंधुवा बन जाता है उस की दशा बलिदान के बकरे से भी गई बीती हो जाती है। और बात यहीं नहीं रहती है, बल्कि जब उस व्यक्ति से काम निकल चुकता है तो उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया जाता है और फिर वह संसार को अपना कलुषित मुंह दिखाने के योग्य नहीं रह जाता है। वह न के का तीन हो जाता है, न माया मिलती है और न राम। अभी मैं यह सोच ही रहा था कि किया क्या जाये, क्योंकि सारी घटना बहुत ही उलझी और अविश्वासनीय थी, कि बाहर आंगन में ऐकाऐकी बहुत शोर गुल और हाय बिल्ला मचने लगा। इ । शोर गुल और हाय बिल्ला में असम्लोपागस और अल्फान्सो की आवाजें साफ़ सुनाई दे रही थीं, असम्लोपागस पागलों की तरह गालियाँ बक रहा था और अलफ़ान्सो डर के मारे रिरिया रहा था।

मामले का पता लगाने में तेज़ी से बाहर की ओर गया। जो कुछ मैंने बाहर देखा वह बहुत ही हास्यास्पद और बेहूदी सी बात थी। ठिंगना फ्रांसीसी जान छोड़ कर बड़ी तेज़ी से आंगन में इधर से उधर भाग रहा था और उस के पीछे शिकारी कुत्ते की तरह लगा हुआ था असम्लोपागस। बाहर पहुंचते ही मैंने देखा कि असम्लोपागस ने अल्फ़ान्सो को जा लिया और खिलौने की तरह ज़मीन से ऊपर हवा में उठा कर पास ही उगी हुई एक बहुत सुन्दर फूलों से लदी कांटे दार झाड़ी की ओर ले चला। इसके बाद मैंने देखा कि अल्फ़ान्सो की चीख पुकार और उसके छटपटाने और हाथ पैर मारने की परवाह न करते हुए असम्लोपागस ने उसे कन्धे से ऊँचा उठा कर सड़ाक से कंटीली झाड़ी में सिर के बल फेंक दिया। अल्फान्सो का सारा शरीर झाड़ी में घुस गया और उस के पांव के पंजों के अलावा शरीर का और कोई भाग दिखाई नहीं देता था। फिर अपने किये पर खुश होते हुए वह उस मनहूस फ्रांसीसी की झाड़ी से निकल आने की कोशिशों

देखता रहा और बड़े इत्मीनान से उसकी चिल्ल पुकार और हाय बिल्ला को सुनता रहा। और अल्फान्सो की हाय बिल्ला पत्थर को भी पानी कर सकती थी।

"क्या कर रहा है तू?" मैंने डांट कर अमस्लोपागस से पूछा, "उसे जान से मारने के इरादे हैं तेरे? निकाल उसे झाड़ी में से।"

जंगली जानवरों की तरह ग़र्रा कर उसने मेरी तरफ़ देखा और फिर झाड़ी की ओर घूम कर मेरी आज्ञा का पालन करने लगा। अभागे अल्फ़ान्सो के पैर के पंजे को पकड़ कर उसने इतनी ज़ोर का झटका दिया कि बेचारे की टांग हीं उखड़ गई होगी, और एक ही झटके में उसे झाड़ी से बाहर खींच लिया। ऐसा दृश्य मैंने जीवन भर में कभी नहीं देखा था, पीठ पर से अल्फ़ान्सो की क़मीज़ तार तार हो गई थी और सैंकड़ों कांटों के चुभ जाने से उसका सारा शरीर लहूलुहान हो गया था। बाहर निकलने पर वह दर्द से बे दम हो कर फ़र्श पर लोटा लोटा फिरने लगा और अपनी चिल्लपों से आस्मान सिर पर उठा लिया। मेरे बार बार पूछने पर भी उसने इस घटना का कारण नहीं बताया।

आख़िर वह उठ कर खड़ा हुआ और मेरे पीछे छुप कर अमस्लोपागस को बुरी बुरी गन्दी गालियां देने लगा और अपने सिपाही दादा की क़सम खा कर उसने यहां तक कह दिया कि वह उस का ख़ून पी जायेगा या मौक़ा पा कर उसे जहर दे कर जहन्नुम रसीद करेगा।

बड़ी परेशानी के बाद असली मामले का पता लगा। मालूम हुआ कि अल्फान्सो रोजाना नियम से अमस्लोपागस के नाश्ते के लिए दलिया पकाया करता था जिसे वह आंगन के एक कोने में बैठ कर लौकी के तूंबे में से काठ के चम्मच से खाया करता था। अन्य ज़ूलुओं की भांति अमस्लोपागस भी मछली खाने से डरता था। ज़ूलू मछली को एक तरह का पनियर सांप समझते हैं। इसलिये अल्फ़ान्सो ने, जो बन्दर की तरह पाजी और उत्पाती है और साथ ही खाना पकाने में पक्का उस्ताद है, उसे किसी न किसी तरह मछली खिला देने की प्रतिज्ञा की हुई थी। इसलिये उसने सफ़ेद मछलियों को बहुत बारीक पीस कर उन को ज़लू के लिए पकाये दलिये में मिला दिया, और अनजाने में

ही जलू सारे का सारा दलिया खा गया। अभागा अल्फान्सो उसे मछली खाता देख कर अपनी दिली ख़ुशी को छुपा न सका। वह इधर उधर लुक छिप कर और जलू के चारों ओर इधर उधर बे मतलब ही चक्कर काट कर उसे दलिया खाते देखता रहा, यहां तक कि अमस्लोपागस को भी, जिसे ऐसी बातों की भनक आ जाती है, दाल में कुछ काला काला होने का शक होने लगा और तूंबे में बचे दलिये को ग़ौर से देख कर उस ने उस 'अरने भैंसे' की करतूत का पता लगा लिया और इस अपमान का बदला उसने उस तरह लिया जैसा कि मैं ऊपर बता आया हूँ। सौभाग्य से कमबख्त अल्फ़ान्सो की कोई हड्डी वड्डी नहीं टूटी थी, मगर इस घटना से उसे मालूम ज़रूर पड़ गया होगा कि 'अमस्लोपागस महाशय' से मज़ाक करना अपनी कमबख्ती बुलाना थी।

वैसे तो यह घटना बहुत मामूली थी लेकिन मैंने इसका इसलिये ज़िक्र किया है कि इसका परिणाम बहुत भयंकर निकला। सैकड़ों ख़ुरसटों से ख़ून निकलना बन्द हो जाने पर अल्फान्सो वहां से गालियां बकता हुआ ख़राशों पर पत्त कपड़ा रखने चला गया। अपनी चोटों पर वह बहुत बिफरा हुआ था और अनुभव से मुझे मालूम हो चुका था कि उसका ग़ुस्सा जल्दी उतरने वाला नहीं था। उसके चले जाने के बाद मैंने अमस्लोपागस को ख़ूब फटकारा और यहां तक कह दिया कि उसकी ऐसी हरकतों से मेरा सिर शर्म से झुका जा रहा था।

"ओह मैकुमाजन," उसने जवाब दिया, "मुझ पर इस तरह से नाराज न हो, मेरे मालिक, मुझ पर मेहरबान हो, तू जानता है कि यह मेरा अपना देश नहीं है। मैं इस देश से उकता गया हूँ मालिक, सच मैं उकता गया हूँ, खाओ पियो और सो जाओ, इन बातों से मैं ऊब चुका हूँ, मालिक। मुझे ऐसी पिलपिली आराम की ज़िन्दगी पसन्द नहीं है, पत्थरों के घरों में रहने वालों का दिल भी पत्थर जैसा सख्त और ठण्डा हो जाता है, आदमी की ताक़त पानी हो जाती है मालिक और मांस चर्बी बन जाता है। ढीले ढाले कपड़े और नरम गिलगिली पिलपिली औरतें मुझे बिल्कुल नापसन्द हैं मैकुमाजन। बाज़ लड़ाना और चिड़ियों का शिकार करना भी कोई ज़िन्दगी है? ज़िन्दगी वह

थी मालिक जब कि हमने उस कराल में मसाई कुत्तों का शिकार किया था, वह थी ज़िन्दगी। मुझे तो ऐसा मालूम पड़ने लगा है मालिक कि अगर ऐसा ही रहा तो थोड़े ही दिनों में मुझ में इन्कूसीकास को चलाने की ताक़त भी न रहेगी मालिक," और यह कह कर वह अपनी इन्कूसीकास को ऊपर उठा कर बड़ी उदास दृष्टि से देखने लगा।

"ओह तो यह शिकायत है तेरी, है ना ? तेरे ऊपर फिर ख़ून सवार होता जा रहा है। 'कठफोड़वा' चोंच मारने के लिए पेड़ ढूंढ़ रहा है। छि छि अमस्लोपागस, ज़रा अपनी उम्र का तो ख्याल कर। इस उम्र में भी तू ख़ून की होली खेलना चाहता है ? शर्म कर अमस्लोपागस, शर्म कर।"

"ओह मैकुमाज़न, मालिक, मेरा तो सौदा नकद है, इस हाथ दे उस हाथ ले। कम से कम इसमें चाल पट्टी तो नहीं है। गोरी चमड़ी वालों की तरह चीज़ों को ख़रीद बेच कर, जिसे तुम व्यापार कहते हो, धीरे धीरे दूसरों का ख़ून चूसने से तो यही अच्छा है कि आमने सामने की लड़ाई में दुश्मन को एक बार ही मार डाला जाये। मैंने बहुत से आदमियों को मारा है मालिक, मैंने बहुतों की जानें ली हैं, कुछ तो ऐसे थे जो मेरे दोस्त और साथी थे और जिनसे मैं पहरों बातें किया करता था। तेरे और मेरे रास्ते अलग अलग हैं मालिक, तू अपने पर चलता रह और मै अपने पर चलता रहूँगा। जैसे बन का पखेरू पिंजरे की तीलियों से सिर टकरा टकरा कर मर जाता है वही हाल मेरा होगा, मैकुमाज़न। मैं जानता हूं कि मैं बेढ़ंगा उजड्ड हूँ और यह भी ठीक है मालिक कि जब तक मेरा ख़ून गरम है मुझे लड़ाई और ख़ून के सिवा और कुछ दिखाई ही नहीं देता। लेकिन मालिक अगर मौत की अंधियारी मुझे निगल जाये और मैं उस धुंधलके में खो जाऊं तो क्या तुझे अच्छा लगेगा ? मैं जानता हूँ कि तू मुझे प्यार करता है मालिक, तू मेरा मालिक है मैकुमाज़न तेरे बिना मैं कुछ भी नहीं हूँ। मैं वह देश से निकाला हुआ सरदार हूँ जिसके पास न घर है न द्वार, जो जाति से बाहर है, जो देश से मुँह छुपा कर भाग आने वाला भगोड़ा है, जो जंगल जंगल की ख़ाक छानता हुआ ख़ानाबदोशों की तरह इधर से उधर घूम रहा है। पर मैकुमाज़न, मैं तुझ पर जान दे सकता हूँ, तेरे साथ रह कर मेरे बाल सफ़ेद हुए हैं और तेरे मेरे बीच जो नाता है

मालिक, वह इतना मजबूत है कि सि ' मौत के पैने दाँत ही उसे काट सकते हैं," और यह कह कर उसने अपनी नसवार की डिबिया, जिसे उसने रायफ़िल के एक पीतल के बने कारतूस से बनाया था और जिसे रखने के लिए उसने अपने कान की लवर में एक छेद कर लिया था, निकाली और नास लेने के लिए मेरी ओर बढ़ा दी।

मैंने चुपचाप नसवार की एक चुटकी ले ली। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि मुझे उस खून के प्यासे इन्सानी भेड़िये से असीम प्रेम था और मौक़ा-पड़ने पर शायद मैं उसकी जान बचाने के लिए अपनी जान तक की बाज़ी लगा देता। यह तो मुझे खुद ही नहीं मालूम कि उसके चरित्र की किस खूबी ने मुझे आकर्षित कर लिया था, परन्तु उसमें कुछ ऐसी बात जरूर थी जिसने बरबस ही मुझे अपनी ओर खींच लिया था। शायद उसकी सचाई और खरा पन मुझे भा गया था, शायद उसकी अमानुषीय शक्ति और वीरता ने मुझे मोहित कर लिया था या शायद इस कारण मैं उससे प्रेम करने लगा था कि वह साधारण मनुष्यों से एक दम भिन्न था। साफ़ साफ़ बात तो यह है कि जितना मनुष्य चरित्र का मुझे अनुभव है उसके बल बूते पर मैं कह सकता हूँ कि मुझे उस जैसा कोई भी आदमी आज तक नहीं मिला है, वह कितना समझदार और दूरदर्शी है और साथ ही बहुत सी बातों में वह दुधमुहें बच्चे जैसा भोला है। आप इस बेजोड़ बात को सुन कर शायद हंसेंगे कि वह बहुत 'कोमल हृदय' है। कुछ भी हो मैं उस पर मुग्ध हूँ, मेरा उस पर बहुत स्नेह है लेकिन मैंने आज तक उसे यह बात बताई नहीं है।

"ओ बूढ़े भेड़िये," मैंने कहा, 'तू भी बड़ा अजीब है। तेरे आड़े आने पर तो शायद तू मुझे भी अपनी इन्कूसीकास से चीर देना चाहेगा ?"

"ठीक कहता है तू मालिक, फ़र्ज़ पूरा करने में अगर तू भी मेरे आड़े आयेगा तो मैं तुझे भी नहीं छोड़ूंगा, लेकिन सच्चा वार कर लेने के बाद मैं भी जिन्दा नहीं रहूँगा मालिक। लड़ाई के कुछ रंग ढंग मुझे दिखाई देते हैं मालिक, कल रात जो कुछ मैंने देखा उससे तो मैंने यही समझा था कि दोनों रानियाँ भूखे भेड़ियों की तरह एक दूसरे का खून

पी जाने को उतावली हो रही है। अगर ऐसा न होता मालिक तो 'रजनी बाला' अपने साथ छुरी ले कर क्यों आती ?"

मैंने उसे बताया कि दोनों समाज्ञियों के बीच ईर्षा, जलन और द्वेष बढ़ता जा रहा था और साथ ही मैंने उसे यह भी बता दिया कि दोनों एक ही आदमी, इन्कूबू, के लिए पागल हो उठी थी और एक दूसरे के खून की प्यासी हो रही थी।

"ओह यह बात है मालिक अब मैं समझा," खुशी से उछलते हुए उसने कहा, "ओह, तब फिर जरूर लड़ाई होगी, जिस तरह बरसात आने पर नदी नाले चढ़ जाते हैं उसी तरह लड़ाई भी जरूर होगी—और होगी भी बहुत खूंख्वार मालिक। औरत बहादुर को पसन्द करती है और अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए जमीन आस्मान एक कर सकती है। जब औरतें किसी की मुहब्बत पाने के लिये आपस में लड़ती हैं तो उनकी नज़ाकत ग़ायब हो जाती है और वह ज़ख्मी शेरनी की तरह खूंख्वार हो जाती हैं, मालिक। मैकुमाजन, तुझे मालूम नहीं शायद कि औरत अपनी मनचाही चीज़ पाने के लिए मुरदों की छातियों पर पैर रखती हुई और खून की नदी में तैर कर अपनी मनचाही चीज़ तक पहुंचने में पांव पीछे नहीं हटाती है। इस बात को न भूलना मालिक। औरत आग है आग, उसी आग पर खाना भी पकता है और वही आग जब विफर जाती है तो जंगलों, मकानों और बस्तियों को देखते ही देखते जला कर राख कर देती है। औरत ऐसी ही आग है मालिक। यह कोई सुनी बात नहीं है, एक बार नहीं बल्कि दो बार मैंने खुद इस आग को शोलों की तरह भड़कते देखा है। और मैकुमाजन मैं इस सुन्दर नगर को जलते देख रहा हूँ; इस नगर को जलते और धुंवे के बादलों में से आग की लपटें उठते देख रहा हूँ मालिक। मुझे हथियारों की झंकार साफ़ सुनाई दे रही है मालिक, तलवारों की खचखचाहट मेरे कानों में आ रही है। इतनी उम्र मैंने कोई भाड़ थोड़े ही झोंका है मालिक। मगर क्या यहाँ के पिलपिले आदमी लड़ सकते हैं, लोहा बजा सकते हैं मालिक ? तेरा क्या ख्याल है ?"

उसी समय कुंवर साहिब कमरे में आये और दूसरी ओर खुलने वाले दरवाज़े से घुसे कैप्टिन प्रसाद। कैप्टिन का रङ्ग पीला पड़ गया था और आँखें गढ़ों में चली गई थीं। ऐसा मालूम होता था जैसे वह

वर्षों से बीमार थे। जैसे ही असस्लोपागस के नज़र कैप्टिन पर पड़ी उसने अपनी लड़ाई भिड़ाई की ख़ूनी बातें बन्द करके उनको नमस्कार किया।

"ओह बौगवन," उसने चिल्ला कर कहा, "मैं असस्लोपागस तुझे सलाम करता हूं मालिक। तू बहुत थका दिखाई देता है बौगवन, क्या कल तू शिकार में बहुत दौड़ा भागा था," और फिर बिना जवाब का इन्तज़ार किये फटाफट बोलता ही चला गया, "बौगवन तू थका हुआ है, आ मैं तुझे एक कहानी सुनाऊं। कहानी एक औरत की है, औरतों की कहानियाँ तो तुझे पसन्द हैं न? सुनेगा तू?

'एक आदमी था और एक था उस आदमी का भाई, और एक औरत थी जो उस आदमी के भाई को चाहती थी और वह आदमी उस औरत को चाहता था। उस आदमी के भाई की व्याहता औरत मौजूद थी और वह उस औरत को बिल्कुल नहीं चाहता था उल्टे उसका मज़ाक बनाया करता था। तब उस औरत ने जो बहुत चालाक और सांप जैसी धोखे-बाज़ और ज़ालिम थी बदला लेने की ठानी और उसने अपने मन में सब ऊंच नीच सोच समझ कर उस आदमी से कहा, "मैं तुझे प्यार करती हूँ, तेरे ऊपर जान निछावर करती हूँ, मेरी खाल के तेरे जूते बनें, मेरी जान तेरे काम आये यही मैं चाहती हूं, अगर तू अपने भाई के ख़िलाफ लड़ाई छेड़ देगा तो मैं तुझ से ब्याह कर लूंगी।' वह आदमी समझता था कि यह सब झूँठ था, लेकिन क्योंकि वह उस औरत को जान से भी ज़्यादा प्यार करता था, क्योंकि वह औरत बहुत सुन्दर थी, लाख दो लाख में एक, इसलिये आख़िर वह उस औरत के चक्कर में आ ही गया और अपने भाई से लड़ाई छेड़ दी। ख़ूब लड़ाई हुई, बड़ा घमासान का रन पड़ा और जब दोनों तरफ़ से बहुत से आदमी मारे जा चुके तो उस आदमी के भाई ने उसे बुला कर कहा, 'तू मुझे क्यों मारता है भाई? मैंने तेरी कौन सी बुराई की है? क्या बचपन से ही मैंने तुझे अपनी जान से ज़्यादा प्यारा नहीं समझा है? क्या हम दोनों ने एक साथ लड़ाइयों में अपना ख़ून नहीं बहाया है? क्या जीतने पर हमने लूट के माल का बराबर का बटवारा नहीं किया है? फिर क्यों तू मुझे मारता है भाई? तू तो मेरी ही मां का बेटा है फिर क्यों लड़ता है तू मुझ से?'

"यह बात सुन कर उस आदमी का दिल भी भर आया और वह

समझ गया कि उसका चुना हुआ रास्ता बुराई का रास्ता था, इसलिये उसने बड़े साहस से काम ले कर उस औरत के जादू को तोड़ डाला और अपने भाई से लड़ाई बन्द कर के उसी के कराल में उसी के साथ रहने लगा। अपनी हार से औरत मन में ऐंठ कर रह गई थी, उसने बदला लेने की कसम खाई। मौका देख कर वह उस आदमी के पास आई और कहने लगी, 'अगर तू मुझे अपना ले तो मैं बीती बातें भुला दूंगी, मैं तेरे क़दमों में पड़ी रहूँगी, मुझे यहीं रहने दे, मैं तुझे प्यार करती हूँ।' वह आदमी अपने मन में समझता था कि वह औरत झूँठ बोल रही थी और उसके मन में बुराई मौजूद थी मगर क्योंकि वह आदमी उसे प्यार करता था इसलिये आखिर में औरत जीत गई और उस आदमी ने उस से व्याह कर लिया।

"लेकिन जिस दिन उन दोनों का व्याह हुआ उसी रात जब कि वह आदमी गहरी नींद में सो रहा था, वह औरत उसके बग़ल से उठी और उसी आदमी का फरसा ले कर उसके भाई की झोंपड़ी में ऐसे दबे पांव घुस गई कि उसके भाई को खबर भी न पड़ी और उसने, उस औरत ने, सोते ही सोते उसका सिर काट डाला। फिर भरपेट मांस खा कर अफरी हुई शेरनी की तरह वह औरत वैसे ही दबे पांव चुपचाप अपनी झोंपड़ी में लौट आई और खून टपकते फरसे की मूंठ उस आदमी के हाथ में थमा कर भूत की तरह रात के अंधेरे मे न जाने किधर को निकल गई।

"और सवेरा होते ही चारों तरफ शोर मच गया, 'रात को लूसिटा का खून हो गया,' 'किसी ने लूसिटा को मार डाला,' और सारे आदमी जमा हो कर उस आदमी की झोंपड़ी में आये जहां वह आदमी अभी तक गहरी नींद में पड़ा सो रहा था और उसका खून से तर बतर फरसा उसके पास रखा हुआ था। यह देख कर लोगों को फ़ौरन ही दोनों भाइयों की दुश्मनी और लड़ाई का ख्याल आ गया और वह आपस में कहने लगे, 'देखो, इस हरामी के पिल्ले ने अपने भाई का खून कर डाला है,' और वह लोग उस आदमी को पकड़ कर जान से मार देते लेकिन वह इस शोर गुल से जाग उठा और तेजी से निकल भागा, और भागते भागते रास्ते में उस आदमी को वह औरत मिल गई और उसने फरसे के एक ही वार से उसके दो बराबर टुकड़े कर दिये।

"लेकिन जो बदमाशी वह कर चुकी थी वह क्या उस के ख़ून से धुल गई ? उस औरत का सारा पाप उस आदमी के सिर लगा रहा। इसीलिये वह आदमी आज जाति से बाहर है, और खुद उसी की जाति वाले उस के नाम पर थूकते हैं, क्योंकि उसी के सिर, सिर्फ उसी के सिर उस औरत का पाप है जिस ने उसे और सारी जाति को धोखा दे कर उस के भाई का खून कर डाला था। और इसीलिये वह आदमी जो किसी ज़माने में अपने देश का सब से बड़ा सरदार था आज अपने देश से दूर अनजान देशों की धूल फांक रहा है। उस के पास न कराल है और न उस के औरत बच्चे हैं और इसी तरह अपने देश से दूर किसी अनजान जगह में वह चुपचाप कुत्ते की मौत मर जायेगा, मगर उस के नाम पर उस के जाति वाले पीढ़ियों तक थूकते रहेंगे, उसी के देश वाले उस के नाम पर हमेशा हमेशा लानत भेजते रहेंगे, वह मर जायेगा मगर उस के सिर से यह कलंक नहीं जायेगा कि उस ने धोखे से रात के वक़्त अपने भाई का जब कि वह सो रहा था बदमाश चोरों की तरह खून कर डाला था।"

इतना कह कर बूढ़ा ज़ूलू दम लेने को जरा रुका। मैंने देखा कि वह अपनी कहानी से खुद ही बहुत व्याकुल हो उठा था। उस की बाज़ जैसी तेज आखें आसुओं से धुंधली हो गई थीं और गला फंस गया था। थोड़ी देर में ही वह स्वस्थ हो गया और अपने सिर को उठा कर फिर कहने लगा :

"वह अभागा आदमी मै था बौगवन, ओह, मै था वह आदमी और कान खोल कर सुन ले बौगवन, जैसा मै हूँ वैसा हो जायेगा तू--एक खिलौना. कांटे को निकालने वाला कांटा जिसे काम निकल जाने पर तोड़ मरोड़ कर फेंक दिया जाता है, दूसरों के पापों की गठरी ढोने वाला खच्चर। सुन, कल रात को जब तू 'रजनी बाला' के पीछे पीछे 'धौली रानी' के कमरे में गया था तो मै तेरे बिल्कुल पीछे ही था। जब 'रजनी बाला' ने अपने छुरे से तुझ पर हमला किया था उस वक़्त भी मैं वहीं पर था, औरजिस वक़्त तूने उस हत्यारी औरत को हाथ में आ जाने के बाद भी छोड़ दिया था और वह सॉप की तरह ज़मीन के किसी कुचीले में समा गई थी वह सब भी मैंने देखा था। मैं जानता था कि उसने तेरे ऊपर जादू कर दिया था और तूने उस के बस में हो कर

अपने काम से मुंह मोड़ लिया था और तुझ जैसे ईमानदार और सच्चे आदमी ने सच्चाई और कर्तव्य के सीधे रास्ते को छोड़ कर पाप और बुराई के टेढ़े रास्ते को अपना लिया था। अगर मेरे मुंह से कोई बेजा बात निकल गई हो तो मालिक तू मुझे माफ कर दे, मेरी बात सुन मालिक, अब उस औरत से न मिल और इस तरह अब भी तू अपनी इज्जत बचा सकता है। यह बात किसी को मालूम नहीं है, तेरी इज्जत बची रहेगी मालिक। नहीं तो अगर तू उसकी सुन्दरता के जाल में फंस गया तो काम निकल जाने पर मालिक वह तुझे कांटे की तरह तोड़ मरोड़ कर फेंक देगी और तेरी भी वही हालत होगी जो मेरी है, शायद मुझ से भी बुरी हो। बस मैंने कह दिया है।"

इस लंबी चौड़ी कहानी को सुनते वक़्त कैप्टिन प्रसाद बिल्कुल चुप खामोश रहे थे, लेकिन जब कहानी खुद उन की कहानी बनने लगी तो मारे शर्म के उन का मुंह लाल हो गया और जब उन को मालूम पड़ कि उन के और सोरियास के बीच होने वाली घटना को और लोग भी देख चुके हैं तो उन की पीड़ा और क्लेश की कोई सीमा न रही। और थोड़ी देर चुप रहने के बाद जब वह बोले तो उनकी आवाज़ में एक विचित्र दीनता और लज्जा थी, जैसी हमने अभी तक नहीं सुनी थी।

"इतना मैं कह सकता हूं," उन्होंने जरा सूखी सी हंसी हंस कर कहा "कि मैंने कभी स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि एक दिन ऐसा आयेगा कि एक जूलू मुझे ड्यूटी पूरा करना सिखलायेगा, और सिर्फ़ यही बात यह बताती कि संसार में क्या नहीं हो सकता। आप लोग समझ सकते हैं कि मुझे इस काम पर कितनी लज्जा आ रही है और मैं आप लोगों की दृष्टि में कितना तुच्छ हो गया हूँ और इस का सब से कड़वा घूंट यह है कि मैं था भी इसी के योग्य। निस्संदेह सोरियास को मुझे पहरे वाले सन्तरी के हवाले कर देना चाहिये था लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका, और यह सत्य है। मैंने न सिर्फ़ उसे भाग ही जाने दिया बल्कि साथ ही इस बात को छुपाये रखने की प्रतिज्ञा भी की। इस काम के लिए जितनी भी लानत मलामत आप करेंगे मैं सिर झुका कर सुन लूंगा। उसने मुझ से कहा था कि अगर मैं उसका साथ दूंगा तो वह मुझ से व्याह कर लेगी और मुझे इस देश का सम्राट बना देगी, लेकिन इतना प्रलोभन मिलने पर भी मैंने बड़े साहस से उस से यह कह दिया

था कि मैं उस के साथ विवाह करके अपने मित्रों को छोड़ने को हरगिज़ तय्यार नहीं थीं। अब जो फैसला भी आप करेंगे मुझे सिर झुका कर मंजूर होगा क्योंकि काम ही मैंने ऐसा किया है, मैं इसी के योग्य हूँ। अपने बचाव में मुझे सिर्फ़ इतना ही कहना है कि मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आप को किसी स्त्री को जी भर कर प्रेम करने का अवसर न दे ताकि ऐसी बात हो ही न सके,'' और यह कह कर कैप्टिन वहां से चल पड़े।

"सुनिये कैप्टिन,'' कुंवर साहिब ने आवाज़ दी, "एक मिनट ठहरने की कृपा करेंगे। मुझे भी आप को एक छोटी सी कहानी सुनानी है। और कुंवर साहिब ने कल सवेरे जो कुछ उन के और सोरियास के बीच बातें हुई थीं वह कह सुनाईं।

इस घटना को सुन कर तो कैप्टिन के हाथों के तोते उड़ गये। किसी भी आदमी को महसूस होना कि उसे जान बूझ कर उल्लू बनाया जा रहा था कैसे अच्छा लग सकता है और ख़ास कर इस मामले में जहाँ पाजी पन और चालाकी हद को पहुँच गई हो। ऐसी हालत में तो खून के घूंट पी कर ही रह जाना पड़ता है।

"शायद आपको पता नहीं कुंवर साहिब कि आप लोगों ने मेरी आँखें खोल दी हैं,'' और यह कह कर वह घूमे और डगमगाती चाल से कमरे के बाहर चले गये। मुझे उनकी हालत पर बहुत दुख हुआ। काश अगर पतंगा खुद उड़ कर लौ पर जान देने न जाता तो काहे को इतनी क़ुरबानियां होतीं।

उस दिन आम दरबार होने को था, और दोनों सम्राज्ञियां अपने सिहासनों पर बैठ कर भरे दरबार में प्रजा की शिकायतें सुनने को थीं। साथ ही उस देश में चालू किये जाने वाले नये क़ानूनों की घोषणा भी की जाने को थी, राज्य की सेवा के बदले इनाम और जागीरें दी जाने को थीं, और इसी तरह के और आवश्यक कार्य होने को थे। हम जल्दी जल्दी तय्यार हो कर दरबार में जा पहुँचे। रास्ते में कैप्टिन भी मिल गये वह बहुत उदास थे और उनके चेहरे से इतनी ही देर में ऐसा लगने लगा था जैसे वह बरसों के बीमार हों।

जब हम दरबार गृह में पहुँचे तो दरबार लग चुका था और सम्राज्ञी निलिप्था अपने सिंहासन पर बैठ चुकी थीं। दरबारियों,

मन्त्रियों, वकीलों, पुजारियों, पुरोहितों और बहुत से अंग रक्षक सिपाहियों की भीड़ भाड़ में दरबार का काम सदा की भांति ही ठीक तरह से मशीन की तरह चल रहा था। परन्तु लोगों के चेहरों पर छाई बेचैनी, परेशानी और उत्तेजना से यह साफ़ साफ़ मालूम हो रहा था कि कोई भी उपस्थित व्यक्ति इन मामूली रोज़ के कामों में दिलचस्पी नहीं ले रहा था क्योंकि यह निश्चय था कि गृहयुद्ध की बात अब तक चारों ओर अच्छी तरह फैल चुकी थी। हमने दरबार में पहुंच कर क़ायदे से सम्राज्ञी को सैल्यूट दिया और अपने नियत स्थान पर जा कर खड़े हो गये। थोड़ी देर तक तो मामला ठीक चलता रहा फिर ऐकाऐकी महल के बाहर तुरही बजने लगी और दरबार गृह में आदमियों की भीड़, जो किसी अनहोनी घटना को देखने के लिए इकट्ठी थीं, वह एक आवाज़ से "सोरियास" "सोरियास" पुकारने लगी।

इसके बाद बहुत से रथों के पहियों की आवाज़ें आने लगीं और क्षण भर बाद ही दरबार गृह के दूसरे कोने पर लटका भारी मख़मली परदा एक ओर को सरक गया और स्वयं, 'रजनी बाला' सम्राज्ञी सोरियास ने दरबार गृह में प्रवेश किया। इस समय वह अकेली नहीं थीं। उसके बिल्कुल पीछे अपनी भड़कीली पोशाक पहने और सुवर्ण के आभूषण धारण किये हुए महापुरोहित ऐगौन था, और उसके साथ था पुजारियों और पुरोहितों का एक पूरा दल। उन सबके वहां जुड़ मिल कर आने की वजह साफ समझ में आ रही थी—पुरोहितों के साथ आने पर सोरियास को पकड़ने या गिरफ्तार करने की कोशिश करना क़ानून के अनुसार भीषण पाप था। सम्राज्ञी सोरियास के पीछे थे उसके पक्ष वाले कुछ बड़े सामन्त, और सामन्तों के पीछे थी चुने हुए सशस्त्र सिपाहियों की एक छोटी सी टुकड़ी। सोरियास के मुख को देखने से ही यह मालूम पड़ता था कि उसका वहां आने का उद्देश निश्चय रूप से शान्ति और मैत्री का नहीं था, क्योंकि आज सुनहरी ज़रदोज़ी का काम किये 'काफ़' या साड़ी के स्थान पर उसने सुनहरी पत्तियों से बना बहुत चमकीला और खूबसूरत लम्बा कुर्ता या झंगोला पहन रखा था और उसके सिर पर सोने का बना एक सुन्दर छोटा सा झिल्लम टोप था। उसके हाथ में एक छोटा सा बरछा था, इसकी बनावट बहुत सुन्दर थी और यह ठोस चाँदी का बना हुआ था। अपनी महत्ता, मान प्रतिष्ठा और शक्ति का पूर्ण ज्ञान रखने वाली सिंहनी की

तरह वह सिंहासन की ओर बढ़ी। सारे दरबार में सन्नाटा छा गया, सुई भी गिरती तो सुनाई दे जाती। दरबार गृह में जमा भीड़ ने सिर नवा कर उसे प्रणाम किया और इधर उधर हो कर उसके आगे बढ़ने के लिए रास्ता बना दिया। नये तुले पैर रखती सोरियास आगे बढ़ी और पवित्र शिला खण्ड के पास पहुंच कर रुकी और उस पर अपना दाहिना हाथ रख कर तेज़ गंभीर आवाज़ से उसने सिंहासन पर बैठी निलिष्या को संबोधित करके कहा, "सम्राज्ञी की जय हो।"

"सम्राज्ञी सोरियास, हमारी बहिन की सदा जय हो," निलिष्या ने फ़ौरन जवाब दिया, "पास आओ बहिन। डरो नहीं। हम तुमको अभय देते हैं।"

सोरियास ने कोई जवाब नहीं दिया बल्कि बहुत दर्प और अहंकार से हॉल में आगे बढ़ती चली गई और सिंहासन के बिल्कुल सामने जा कर खड़ी हो गई।

"ओ सम्राज्ञी, मैं एक प्रार्थना करती हूँ," उसने तेज़ आवाज़ से कहा।

"कहो बहिन क्या चाहती हो? कौन सी चीज़ है जो हम तुमको नहीं दे सकतीं, तुमको जो स्वयं आधे राज्य की मालिक है।"

"क्या सम्राज्ञी को मेरे और ज्यू वैण्डी के इन प्रतिष्ठित नागरिकों के सामने सत्य बात कहने का साहस है? यह सत्य है या नहीं कि सम्राज्ञी ने इस परदेसी 'भेड़िये' से," यह कह कर उसने अपने छोटे से बरछे से कुंवर साहिब की ओर इशारा किया, "अपना विवाह करने का निश्चय किया है, और उसे अपने मन और राज्य का स्वामी बनाना स्वीकार किया है?"

इस बात को सुन कर कुंवर साहिब कुछ झिझके और चौंके और फिर सोरियास की ओर मुंह कर के धीमे परन्तु स्पष्ट शब्दों में कहा, "जहां तक मुझे याद आता है सम्राज्ञी सोरियास, कल तक आप मुझे 'भेड़िये' की जगह किसी और नाम से भी पुकार रही थीं", और मैंने देखा कि इस बात को सुन कर सोरियास अपने होठ चबाने लगी, अगर मौका लग जाता तो शायद वह कुंवर साहिब को कच्चा चबा जाती। खतरे के निशान की तरह उसका चेहरा लाल भभूका हो गया। सम्राज्ञी निलिष्या ने भी यह देख कर कि यह बात खुले बन्दों सब के सामने

कह दी गई है यह सोचा कि जब बात खुल ही चुकी है और उसे अधिक छुपाने से कोई लाभ नहीं होगा, ऐसा बन कर जैसे उसने बिल्कुल नई बात एकाएकी सुनी हो बड़े अन्दाज़ और नखरे से बड़े विचित्र ढंग से सोरियास के प्रश्न का उत्तर दिया। इस नाज और नखरे से उसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से अपने प्रतिपक्षी को जनता की नज़रों में ज़लील करता था।

निलिप्था उठ कर खड़ी हो गई और सिंहासन से नीचे उतर कर अपनी पूरी राजसी शान और शौकत के साथ मस्त गजेन्द्र की चाल से वहां गई जहाँ उनका प्रेमी, दिल का मालिक खड़ा हुआ था। कुंवर साहिब के पास पहुँच कर वह रुकी और अपनी भुज मृणाल में पहने सांप की आकृति वाले सोने के बाज़ूबन्द को खोल कर उतारा। फिर कुंवर साहिब से घुटने के बल झुक जाने के लिए कहा, और कुंवर साहिब उन के सामने एक घुटना मोड़ कर संगमरमर के फ़र्श पर बैठ गये। इसके बाद निलिप्था ने उस सुनहरी सर्पाकृत बाज़ूबन्द को दोनों हाथों से पकड़ा और नरम धातु वाले उस आभूषण को मोड़ कर उसे कुंवर साहिब के गले में पहिना दिना। और ठीक तरह से पहिनाने के बाद निलिप्था ने दृढ़ निश्चय से उनके मस्तक का चुम्बन कर के सारे दरबार के सामने उनको अपना पति घोषित कर दिया।

"देखती हो बहिन सोरियास" निलिप्था ने कहा, जब दरबार गृह में उपस्थित लोगों की उत्तेजित कानाफूसी तनिक शांत हुई तो सम्राज्ञी ने कुंवर साहिब को उठा कर खड़ा करते हुए सोरियास से कहा, "देखती हो बहिन, हमने 'भेड़िये' के गले में अपना 'पट्टा' डाल दिया है और यह भी याद रखना कि वह हमारा पहरेदार रहेगा और बहिन सोरियास तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के प्रश्न का यही उत्तर है। डरो नहीं स्वामी," अपने प्रेमी तथा पति की ओर देख कर मन्द मन्द मुस्कराते और कुंवर साहिब के गले में पेड़ उस सुनहरी सर्पाकृत बाज़ूबन्द को दिखाते हुए निलिप्था ने कहा, "हमारा जुआ भारी अवश्य है पर है वह खरे सोने का, और तुझे कभी वह अखरेगा नहीं।"

और फिर उपस्थित जनता की ओर घूम कर निलिप्था ने बड़ी शान और अदा से बहुत कोमल परन्तु स्पष्ट गूंजती हुई आवाज़ से कहा,

"सम्राज्ञी सोरियास, 'रजनी बाला,' सामन्तो, गुरुजनो और प्रिय प्रजा, जो भी यहां उपस्थित हैं उनके सामने इस कार्य के द्वारा हम इसी स्थान पर और आप ही लोगों के सामने मन वचन और कर्म से इस परदेशी श्रीमन्त को पति रूप में वरण करती हैं। क्या हमें जो इस सारे देश की सम्राज्ञी हैं, किसी मन चाहे व्यक्ति को, जिस से हम प्रेम करती हैं, पति रूप में वरण करने का अधिकार नहीं है? क्या हम को उतना अधिकार भी प्राप्त नहीं है जो हमारे ही राज्य में बसने वाली किसी भी ग़रीब से ग़रीब कन्या को प्राप्त है? इस प्ररदेशी ने हमारे हृदय पर विजय पाई है और न केवल मन ही हमने उसे दिया है बल्कि अपने हाथ को भी उसके हाथ में दिया है और इसके साथ ही हमने उसे अपने राज्य सिंहासन और जो कुछ भी हमारे पास है उसे पूर्ण रूप से उसके हवाले कर दिया है।"

इतना कह कर निलिप्था ने कुंवर साहिब का हाथ अपने हाथ में ले कर बड़े गर्व और प्रेम से उनकी ओर देखा और भरे दरबार के सामने उनके हाथ को पकड़े रहीं। उस समय की मोहकता, शान, और दबदबे में अपने प्रेमी का हाथ पकड़े वह कितनी सुन्दर लग रही थी, उसे अपने प्रेमी और स्वयं अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास था और वह अपने प्रेमी के लिए संसार भर की कठिनाइयों और संकटों को अपने सिर पर झेलने को इतनी तत्पर दिखाई देती थी कि जिस किसी ने भी वह दृष्य देखा होगा वह, मुझे विश्वास है, उसे जीवन भर नहीं भूलेगा। उपस्थित जनता में से भी कुछ पर नशा सा छा गया और वह "सम्राज्ञी निलिप्था की जय" के नारे लगाने लगे। निलिप्था ने बड़ी हिम्मत कर के और जान हथेली पर रख कर खुली और सीधी चोट की थी और उसकी इस स्पष्टवादिता और सात्विक प्रेम को वहां पर उपस्थित सभी व्यक्तियों ने मन से पसन्द किया। सच्चा प्रेम जो कठिनाइयों और परीक्षाओं की कड़ी आंच में भी कुन्दन की भांति दमकता रहता है मनुष्य प्रकृति की कोमल भावनाओं पर निश्चय रूप से प्रभाव डालता है।

सम्राज्ञी के इस कार्य से प्रसन्न हुई जनता ने जोर शोर से जय घोष करना शुरु किया। उनके जय घोष से सारा दरबार गृह फ़र्श से छत तक गूंज उठा, लेकिन सोरियास के दिल पर एक एक शब्द तीर की तरह लग रहा था, वह हारी सी, पराजित सी सिर झुकाये खड़ी थी।

ईर्षा में अन्धी हो जाने के कारण उसे अपनी बहिन सगी माँ जायी जुड़वां बहिन की विजय और उसका जय घोष जहर सा लग रहा था। निलिप्था ने उस पर पूर्ण विजय ही नहीं पाई थी बल्कि उससे वह पुरुष श्रेष्ठ भी छीन लिया था जिसे उसने अपने स्वप्नों का राजा बनाने के लिए चुना था, और इसलिये वह अपने निष्फल क्रोध में कुचली हुई सर्पिणी की तरह फुंफकारने लगी। परन्तु उसने अपना संतुलन नहीं खोया और मैंने देखा कि उस का उर्वर मस्तिष्क बड़ी तेजी से आने वाली घटनाओं को सोच रहा था। पहले किसी स्थान पर मैं बता आया हूँ कि सोरियास को देख कर शान्त गम्भीर समुद्र की याद आती थी, उस समुद्र की जो अपने वक्ष में तूफानी तरंगों और भीषण पर्वताकार लहरों को छुपाये रहता है। परन्तु अब तूफान फट पड़ा था और तरंगे और लहरें आकाश को चूमने और सभी कुछ को आत्मसात कर लेने को उन्मुख हो उठी थीं। जिस प्रकार क्रोधित फेनिल समुद्र का गौरव दर्शकों को आतंकित और साथ ही मोहित भी कर लेता है, उसी तरह सोरियास की क्रोधित मुख मुद्रा भी देखने योग्य हो गई थी। सर्व सुन्दर स्त्री ऐसे राजसी क्रोध में भी इतनी सुन्दर लग सकती है इसकी तो मैंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी। मैंने सुन्दरता और क्रोध का इतना अद्भुत मेल अपने जीवन भर में आज तक नहीं देखा था और मैं यह कह सकता हूं कि दोनों गुणों का मेल सोना और सुगन्ध जैसा मेल लग रहा था।

सोरियास ने क्रोध से विवर्ण हुए मुख को ऊपर उठाया, उसकी मुख मुद्रा बहुत कठोर हो उठी थी और तेज दहकते कोयलों जैसी आंखों में लाल डोरे उभर आये थे। तीन बार उसने बोलने की चेष्टा की परन्तु भावावेश और उफनते क्रोध के कारण तीनों बार ही उसके मुख से शब्द नहीं निकले। अन्त में भावावेश के तनिक शान्त हो जाने पर उसने बोलना शुरू किया। अपने हाथ वाले चाँदी के बरछे को ऊपर उठा कर उसे उसने हवा में हिलाया और उसकी चमकीली सुनहरी पोशाक और चमकते बरछे से बिजलियां सी कौंदने लगीं।

"निलिप्था, मैं तुझे अन्तिम अवसर देती हूँ कि तू इस परदेसी 'भेड़िये' और उसके साथियों को भगवान सूर्य की बलि चढ़ा देने के लिए मेरे हवाले कर दे। क्या उन्होंने देवाधिदेव भगवान सूर्य के प्रति अक्षम्य

और भीषण अपराध नहीं किया है ? और निलिप्था सुन ले, अगर तू इन को देने से इन्कार करती है तो मैं तुझे युद्ध की चुनौती देती हूं—भीषण युद्ध की। अब भी होश कर निलिप्था और कान खोल कर सुन ले कि वासना के जिस मार्ग पर तू चल पड़ी है वह मार्ग जले फुंके नगरों, उजड़े खेतों और लूटे खलियानों से हो कर जायेगा और वह मार्ग उन व्यक्तियों के रक्त से लाल हो उठेगा जो मूर्खता वश तेरा साथ देने का विचार रखते हैं। उनकी लाशों के ऊपर हो कर तुझे चलाना पड़ेगा निलिप्था। और इस सब भीषण रक्तपात की सारी ज़िम्मेदारी तेरे सिर होगी। तेरे कान घायलों और मृत प्राय: सैनिकों के क्रन्दन से बहरे हो जायेंगे, अनाथों और विधवाओं का हृदय विदारक विलाप हमेशा हमेशा तेरे कानों में गूंजता रहेगा और इस देश की प्रजा जन्म जन्मान्तर तक तेरे नाम पर लानत भेजती रहेगी कि उस अभागी सम्राज्ञी ने अपनी वासना की तृप्ति के लिये सारे देश को धधकती भट्टी में झोंक दिया था, प्रजा की मां हो कर अपने ही पुत्रों और बान्धवों को डायन बन कर खा गई थी। और याद रख निलिप्था कि युग युग तक चलती रहेगी यह ही करुण कहानी कि ज्यू वैण्डी में थी एक अभागिन रानी।

"और सुन, मैं तुझे निलिप्था, जिसे सारा ज्यू वैण्डी 'धौली रानी' कहता है, सिंहासन से नीचे ढ़केल दूंगी और देश की शान्ति को खतरे में डालने और धर्म विरुद्ध आचरण करने के दण्ड में तुझे नीचे ढ़केल दिया जायेगा। जानती है कहाँ से ? उसी महान् विशाल सोपान से तुझे नीचे फेंक दिया जायेगा जिसकी पवित्र और उज्ज्वल कीर्ति पर तूने अपनी वासना की कालिमा लगा दी है। और तुम परदेसियो, तुम भी कान खोल कर सुन लो कि सिवाय बौगवन तेरे, क्योंकि तूने मेरी एक बड़ी सेवा की है और इसलिये मैं तुझे जीवित छोड़ दूंगी पर एक शर्त पर कि तू इन परदेसियों का साथ छोड़ कर मेरे साथ आ जाये, (यह सुन कर कैप्टिन ने बड़े ज़ोर से अपना सिर हिलाया और शुद्ध हिन्दी में 'कभी नहीं' 'कभी नहीं' कहा), मैं बाक़ी सब को सोने के पतले पत्र से मढ़वा कर जंजीरों के ज़रिये से जीवित ही देवाधिदेव भगवान सूर्य के मन्दिर की छत के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों कोनों पर

उपस्थित देव मूर्तियों के हाथों में थमाई तुरहियों से लटकवा दूंगी ताकि तुम्हारी हालत को देख कर इस राज्य के बदमाश व्यक्तियों को कान हो जायें और वह फिर ऐसा पाप करने का साहस न कर सके। मगर इन्कूबू तू इस तरह नहीं मरेगा, तेरे लिए मैंने एक दूसरी तरह की मौत सोच रखी है, मगर अभी तुझे मैं बतलाऊंगी नहीं।"

तेजी से बोलते चले जाने से सोरियास का सांस फूल गया था, वह क्षण भर के लिए साँस लेने को रुकी, उसका क्रोध उपयुक्त शब्द न पा सकने से और भी उफना आ रहा था, उसकी बात से सारे दरबार गृह में जो मौत जैसा सन्नाटा छा गया था वह उसके रुकते ही टूट गया और चारों ओर से डर और प्रशंसा की मिली जुली आवाजें आने लगीं। तब निलिष्या ने बहुत शान्ति, संयम और राज्योचित शान से इसका उत्तर देना शुरू किया।

"सुन सोरियास, तू हमारी बहिन है, मां जायी सगी, अगर हम तेरे लिए ऐसे अपशब्दों का प्रयोग करें तो देवाधिदेव भगवान सूर्य से प्रार्थना है कि हमारी जीभ कट कर गिर जाये। जिस तरह तूने हम से बात की है और जैसी धमकियां दी हैं वैसी ही बातें करना और धमकियाँ देना हमारे लिए इस देश की सम्राज्ञी के लिए शोभा नहीं देता। अगर तुम लड़ाई छेड़ ही दोगी तो हम भरपूर शक्ति से तुम से लोहा लेने की चेष्टा करेंगे। हमारे हाथ देखने में नरम और कोमल मालूम होते हैं लेकिन तुम्हारी फ़ौज की गरदन दबा देने के लिए यही हाथ लोहे के शिकंजे बन जायेंगे। सोरियास तू समझती होगी कि हमें तुझ से डर लगता है, नहीं हरगिज नहीं। इस लड़ाई की बदौलत जो जो मुसीबतें तेरे और तेरे साथियों के सिर टूटेंगी उनका ख्याल करने मात्र से ही हमारे रौंगटे खड़े हो जाते हैं, हम को उनकी दशा पर रोना आता है, लेकिन जहां तक हमारा सम्बन्ध है हम तुझ से रत्ती भर भी नहीं डरती हैं। और तुझ से डर हो ही क्या सकता है? तुझसे जिसने कल ही हमारे स्वामी, हमारे दिल के मालिक, हमारे प्राणाधार को हम से धोखे से छीन लेने की कोशिश की थी, और उसी परदेसी को, जिसे आज तू 'परदेसी भेड़िया' कह रही है प्यारे, जीवनाधार, स्वामी और न जाने क्या क्या कह कर पुकार रही थी। (इस बात से सारे दरबार गृह में व त बेचैनी और सनसनी सी फैल गई)। तुझ से डरना क्या? तुझ

से, जो कल रात को, जैसा कि हमको अभी दरबार में आने के बाद मालूम हुआ है, सांप की तरह चुपचाप किसी अज्ञात गुप्त रास्ते से हमारे शयन कक्ष में जा पहुँची थीं और धोखेबाज़ी से हमको, अपनी सगी मां जायी बहिन को, चुपचाप मौत के घाट उतार देने की कोशिश की थी।"

"यह झूठ है, सरासर झूठ है," ऐगौन और उस के साथ बीसियों आवाजें एक साथ निकल पड़ीं।

मैंने जेब से छुरी का टूटा हुआ भाग निकाल कर सारे दरबार को दिखाते हुए जोर से कहा, "यह झूठ नहीं है, सम्राज्ञी सोरियास कहां है वह छुरी जिस के फल से यह टूट कर गिर पड़ा था ?"

"यह झूठ नहीं है," कैप्टिन प्रसाद ने पूरी आवाज़ से कहा, शायद आखिर कार उन्होंने नमक हलाली करने का निश्चय कर ही लिया था, "कल रात को मैंने सम्राज्ञी सोरियास को 'धौली रानी' के पलंग के पास पकड़ा था और मेरी ही छाती पर लग कर छुरी टूटी थी।"

"मेरा साथ देने को कौन कौन तय्यार हैं ?" अपने चांदी के बरछे को हवा में हिलाते हुए सोरियास ने चिल्ला कर कहा, क्योंकि उसे यह स्पष्ट दीख पड़ रहा था कि जन मत उस के विरुद्ध होता जा रहा था। "क्यों बौगवन, तू तो मेरे साथ आयेगा ना ?" सोरियास ने धीमी परन्तु तीखी आवाज़ में कैप्टिन प्रसाद से जो सब से पास थे पूछा, "कमबख्त, काठ का उल्लू कहीं का, कायर, इस के बदले में तुझे अपना सभी कुछ, अपना तन, मन, धन तक देने को तय्यार थी, और मेरा साथ देने से तू इस देश का सम्राट और मेरे स्वप्नों का राजा बन सकता था। मगर तूने अपनी मूर्खता से सुनहरी अवसर को हाथ से निकाल दिया। मै चाहुँ तो अब भी तुझे तिगनी का नाच नचा सकती हूँ।"

फिर सोरियास ने जोर से "युद्ध," "युद्ध," "युद्ध" कहा, "इस देश की रिवायत के अनुसार जब तक यह पवित्र शिला खण्ड यहां इसी तरह मौजूद है ज्यू वैण्डी पर कोई विदेशी शासन नहीं कर सकेगा, ज्यू वैण्डी किसी के आधीन नहीं होगा। मैं इसी पवित्र शिला खण्ड पर हाथ रख कर प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक इस अन्याय के विरुद्ध लड़ती रहूंगी। विजय और मान प्रतिष्ठा के मार्ग पर कौन आता है 'रजनी बाला' के साथ।"

पलक मारते ही विशाल जन समूह में गड़बड़ मच गई। अनेकों 'रजनी बाला' का साथ देने को उतावले हो उठे और उसके साथ के बहुत से आदमी हमारी ओर आ गये। सम्राज्ञी निलिप्था के अंग रक्षक दल का एक उपनायक भी 'रजनी बाला' का साथ देने वालों में शामिल हो गया और अपना स्थान छोड़ कर उस दरवाज़े की ओर दौड़ पड़ा जिस में हो कर सोरियास के साथी दरबार गृह से बाहर जा रहे थे। अमस्लोपागस ने, जो वहीं था और जिसने इस सारे दृश्य को देखा था, अपनी असाधारण सहज बुद्धि से यह समझ लिया कि अगर यह उपनायक दरबार गृह से निकल गया तो उसके पीछे उसके और भी सैनिक साथी बाहर निकलने की कोशिश करेंगे, इसलिये उसने आगे बढ़ कर उस उपनायक को पकड़ लिया और पलक झपकते ही उपनायक ने तलवार सूंत कर अमस्लोपागस पर वार किया। इस पर बूढ़ा ज़ूलू ज़ोर से जंगी नारा लगा कर एक ओर को कूद गया और पैंतरा बदल कर वार बचा लिया, और फिर उसने अपने भयानक फरसे से अपने शत्रु पर लगातार वार करने शुरू किये। दो चार क्षणों में ही उपनायक अपनी करनी को पहुँच गया और ज़ोर के धमाके के साथ संगमरमर के फ़र्श पर मर कर गिर पड़ा।

इस गृह युद्ध में सब से पहली आहुति यह हुई।

"महल के फाटक बन्द कर दो," मैंने चिल्ला कर आज्ञा दी। इस तरह सोरियास के पकड़े जाने की आशा हो सकती थी। उस समय मुझे पाप पुण्य, धर्म अधर्म किसी का भी विचार नहीं था। परन्तु इस आज्ञा के निकलने में बहुत देर हो गई थी, सोरियास के सैनिक राज्य महल के फाटकों से निकल चुके थे और दो चार क्षणों के बाद ही मिलोसिस नगर की सड़कें भागते हुए घोड़ों की टापों और तेज़ दौड़ते रथों की घड़घड़ाहट से गूंज उठीं।

इस तरह आधे आदमियों को अपने साथ ले कर सोरियास मिलोसिस नगर की गलियों में हो कर आंधी की तरह अपने शिविर मेरास्टयूना को उड़ी जा रही थी। मेरास्टयूना मिलोसिस नगर के उत्तर की ओर १३० मील की दूरी पर पहाड़ी की चोटी पर बना एक सुदृढ़ क़िला था।

उसके बाद तो सैनिकों के मार्च करने, उनके हथियारों की झंकार और लड़ाई की अनवरत तय्यारियों के शोर गुल से नगर की सड़के और गलियां गूंजने लगीं। एक बार फिर असस्लोपागस धूप में बैठ कर अपनी इन्कूसीकास की उस्तरे जैसी तेज़ धार को रगड़ रगड़ कर और भी तेज करने लगा।

अध्याय १९

विचित्र विवाह

राज्य महल के फाटक बन्द होने से पहले और तो सब निकल गये पर नहीं निकल सका एक आदमी और वह था धर्म गुरु ऐगौन। यह हम जानते थे कि वह सोरियास का न केवल दाहिना हाथ ही था बल्कि उसके दल का सब से बड़ा समर्थक भी था और सारी योजनायें उसी के उर्वर मस्तिष्क से निकलती थीं। इस स्याने खौफनाक बूढ़े ने हमारे उन कमबख्त दरियाई घोड़ों के मारने के अपराध को अभी तक क्षमा नहीं किया था, और अपने इस विचार को उसने छुपाने की भी कभी कोशिश नहीं की थी। वह हमें इसलिये उस देश से निकाल देना चाहता था क्योंकि वह हमारे आधुनिक विचारों और विदेशी कला कौशल तथा विद्या का अपने देश में फैलना गवारा नहीं कर सकता था, ऐसा उसका कहना था। साथ ही उसको यह भी मालूम हो गया था हमारा धर्म उसके धर्म से बिल्कुल भिन्न था, और दिन प्रति दिन उसे यही भय लगा रहता था कि कहीं हम अपने धर्म को ज्यू वैण्डी में फैलाना शुरु न कर दें। एक दिन उसने मुझ से हमारे देश के धर्म के सम्बन्ध में पूछा भी था और मैंने उसे बताया था कि जहां तक मुझे पता था हमारे देश में कम से कम ६० प्रमुख धर्म थे। इस बात को सुन कर वह सिर्फ उल्लू की तरह मुँह फाड़ कर रह गया था और एक दृढ़ता से स्थापित धर्म के मुख्य धर्म गुरु को उन ६० नये नये धर्मों में से किसी एक या सभी के ज्यू वैण्डी में फैल जाने की दुश्चिन्ता में सिर खपाते देख कर मुझे उस पर दया आती थी।

जब हमको ऐगौन के गिरफ्तार हो जाने का पता लगा तो निलिप्था कुंवर साहिब और मैंने आपस में परामर्श किया कि उसके साथ क्या व्यवहार किया जाये। मेरी राय उसे कड़ी नज़रबन्दी में रखने की थी, लेकिन निलिप्था ने सिर हिला कर मेरी बात मानने से इन्कार कर दिया और साथ ही यह भी कह दिया कि ऐगौन को नज़रबन्द करने से सारे

देश में भीषण रोष और क्रोध की लहर दौड़ जाने की संभावना थी।
"ओह," उसने गुस्से से पैर पटकते हुए कहा, "यदि हमने इस युद्ध में विजय पाई और हम फिर इस देश की सम्राज्ञी बन सकीं तो हम इस पुरोहित वर्ग की सार्वभौम सत्ता को एक बारगी ही समाप्त कर देंगी, उनके कर्म काण्ड, धमाचौकड़ी और गुप्त रहस्य पूर्ण आसनों और साधनों को उनके साथ ही समाप्त कर देंगी।" यदि बूढ़ा ऐगौन इस बात को सुन पाता तो आश्चर्य और विस्मय से उसकी आंखे फट जातीं।

"अच्छा, अगर उसे नजरबन्द करना ही नहीं है तो उसे एकदम छोड़ देना ही ठीक होगा। उससे हम यहां कोई काम नहीं निकाल सकते" कुंवर साहिब ने कहा।

निलिप्था ने बड़ी विचित्र दृष्टि से कुंवर साहिब की ओर देखा और फीकी सी हंसी हंस कर कहा, "स्वामी, तुम्हारा भी यही विचार है?"

"हाँ" कुंवर साहिब ने कहा, "हां, मेरी समझ में नहीं आता उसको यहाँ रोक कर करेंगे क्या?"

निलिप्था ने कोई उत्तर नही दिया लेकिन अपनी मदभरी लज्जालु आँखों से बड़ी प्यारी अदा के साथ उनकी ओर देखती रही।

और तब कुंवर साहिब सारा मामला समझ गये।

"मुझे माफ़ करो निलिप्था," कुंवर साहिब ने आवेश से थरथराती कांपती आवाज़ मे कहा, "क्या तुम्हारा, आपका मतलब यह है, मैंने कहा, क्या आप इस दशा में भी मुझसे विवाह करने को तैयार हैं?"

"हम कुछ नहीं जानते इस मामले में, जिसे सिर पर मौर बांध कर विवाह करने आना है वह जाने," बड़ी अदा से नखरे के साथ उसने जवाब दिया, "अगर वर महोदय की इच्छा विवाह करने की है तो पुरोहित भी मौजूद है और वेदी भी सामने है," उसने दरबार गृह के पास बने एक छोटे से मन्दिर की ओर इशारा कर के कहा, "और क्या आज तक किसी कन्या ने अपने विवाह के लिए नाहीं की है। सुनो, मेरे परदेसी चितचोर, आठ दिन के भीतर तुम को हमें छोड़ कर लड़ाई के मैदान को जाना होगा और तुम ही होगे हमारी सेना के प्रधान सेनापति। और युद्ध—युद्ध भयानक व्यापार है—मृत्यु प्रति क्षण मुंह फाड़े खड़ी रहती है, किस को निगल जायेगी यह पता भी तो नहीं होता। इसलिये इन थोड़े से दिनों के लिए हम अपने स्वप्नों के राजा

को सम्पूर्ण रूप से अपनाना चाहते हैं ताकि कोई अरमान, कोई इच्छा अपूर्ण न रह-जाये," और यह कहते कहते उसकी कमल पुष्प जैसी आखे भर आईं और जिस प्रकार ओस टपकती है उसी तरह मोती जैसे आंसू टपक टपक कर उसके आवेश से उठते बैठते वक्ष पर गिर कर उसे भिगोने लगे। उसका नखरा चोंचला केंचुल की तरह उतर गया और वह एक साधारण सांसारिक स्त्री बन गई।

"यह भी सम्भव है," उसने तनिक शान्त हो कर कहा, "कि हमारा राज्य मुकट छिन जाये और राज्य मुकट के साथ ही चला जाये हमारा राज्य, हमारा जीवन और तुम्हारा जीवन भी। सोरियास बहुत शक्ति शाली है और बहुत कठोर भी। यदि वह जीत गई तो हम में से एक को भी जीवित नहीं छोड़ेगी यह निश्चित है। भविष्य की बात कौन जानता है? सुख बदली की छाया है, चलती फिरती, बिना सूचना दिये आती है और ऐसे ही चुपचाप सरक भी जाती है। सुख उड़ता पंछी है जिसे पकड़ना बहुत कठिन है। इसलिये अगर वह सुख रूपी पक्षी हमारी पकड़ाई में आ जाये तो उसे दोनों हाथों से पकड़ लेना चाहिये। भविष्य की आशा पर वर्तमान को न्यौछावर कर देना मूर्खता है—क्योंकि भविष्य में क्या होगा यह तो मनुष्य जानता ही नहीं है और जानने का उसके पास कोई साधन भी तो नहीं है। इसलिये स्वामी, इन्कूबू, जब तक फूल ताज़े हैं, जब तक उन पर पड़ी ओस सूखी नहीं है, तब तक फूल चुन लेना चाहिये क्योंकि विपत्तियों तथा कठिनाइयों का सूर्य उदय होते ही वह मुरझा जायेंगे। एक पुष्प बार बार नहीं खिलता है स्वामी, एक बार खिलता है स्वामी, केवल एक बार और फिर सदा के लिए मुरझा जाता है। और अगले दिन दूसरे फूलों के खिलने की बारी आती है।"

और तब उसने अपना आंसुओं से भीगा सुन्दर मुख, जिसे देख कर सहसा मुझे ओस बिन्दु पड़े गुलाब पुष्प की याद आ गई, ऊपर को उठाया और कुंवर साहिब की आंखों में आंखें डाल कर मुस्करा दी। उसकी मुस्कराहट ऐसी थी जैसे बादलों को फाड़ कर सूर्य निकल आया हो। यह मेरे पुरुषत्व को चुनौती थी, मेरे मन में ईर्षा का झंझा-वात चलने लगा और मैंने निष्फल निराशा से उसकी ओर से अपना मुंह फेर लिया। जवानी दीवानी होती है, यौवन की उमंग चट्टानों की

परवाह नही करती फिर मेरी क्या हस्ती थी। मैं था एक बूढ़ा सूखा सा व्यक्ति इसलिये उन दोनों ने भी मेरी उपस्थिति की कोई परवाह नहीं की, और इस में कोई सन्देह नहीं कि उन को परवाह करने की आवश्यकता भी कोई नहीं थी। जब शरीर में यौवन हो, हृदय में बल हो और मर मिटने वाला प्रेमी हो तो मनुष्य को स्वर्ग भी तुच्छ लगने लगता है। वह संसार की समस्त विभूतियों से मुंह मोड़ सकता है, मैं तो था ही क्या। इसलिये यदि दोनों मेरी उपस्थिति को भूल गये हों या उन्होंने मेरी परवाह न की हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

उन दोनों को प्यार मुहब्बत की बाते करते छोड़ कर मैं अपने निवास स्थान को लौट आया और एक बार फिर सिरे से सारी बातों पर सोच विचार करने लगा। खिड़की के बाहर अमस्लोपागस अपनी इन्कूसीकास पर लगातार धार रखे चला जा रहा था, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मृत्यु यंत्रणा से छटपटाते बैल के पास बैठ कर गद्ध अपनी चोंच को रगड़ रगड़ कर पैनाते रहते हैं।

कोई एक घन्टे के बाद कुंवर साहिब वापस लौटे' उनका चेहरा खुशी से दमक रहा था और वह बहुत उत्तेजित मालूम पड़ते थे। उन्होंने आते ही मुझ से, कैप्टिन प्रसाद से और यहाँ तक कि बूढ़े अमस्लोपागस तक से एक सांस में पूछा कि क्या हम एक मित्र के विवाह में बराती घराती सभी कुछ बन कर उस उत्सव की शोभा बढ़ाने को तय्यार थे। हमें उज्र ही क्या हो सकता था, हम सब ने एक साथ ही हाँ कर दी और हम सब जैसे बैठे थे वैसे ही उठ कर दरबार गृह के कोने में बने सम्राटों के निजी मन्दिर को चल दिये। वहां पहुँच कर हमने धर्म गुरु ऐगौन को पुरोहित का कार्य करते देखा। उसका मुख बहुत उदास था और यह स्पष्ट था कि जो कार्य वह कर रहा था वह उसे रत्ती भर भी पसन्द नहीं था। मगर क़हर दरवेश बर जान दरवेश। मजबूरी थी, बेचारा करता क्या। घिरी बिल्ली चूहों से कान कटाती है। ऐगौन को अपनी मरजी के खिलाफ़ काम करना पड़ रहा था। उस समय निलिप्था और ऐगौन में विवाह की रस्मों के सम्बन्ध में कुछ बहस सी हो रही थी। ऐगौन ने इस विवाह को सम्पन्न कराने से साफ़ इन्कार कर दिया था और साथ ही यह भी कह दिया था कि वह पुरोहित वर्ग

के किसी भी व्यक्ति को उस जघन्य कार्य को करने की अनुमति देने को तय्यार नहीं था। उसकी बात को सुन कर निलिप्था को क्रोध हो आया था और उसने धर्म गुरु से साफ़ कह दिया था कि देश के क़ानून के अनुसार, उस देश की सम्राज्ञी होने के नाते वह उस देश की धर्म प्रतिपालक भी थी और उस हैसियत से वह धर्म गुरु ऐगौन को यह धर्मिक कृत्य करने की आज्ञा दे रही थी और उसका निश्चय था कि उसकी आज्ञा का तुरन्त पालन हो। इस समय अपने सात्विक तेज में निलिप्था बहुत सुन्दर लग रही थी। सम्राज्ञी का आग्रह था कि यदि वह विवाह करने की इच्छा रखती है तो उसका विवाह अवश्य होगा और स्वयं धर्म गुरु ऐगौन को ही उसमें पुरोहित का कार्य करना पड़ेगा।*

इस पर भी ऐगौन ने सम्राज्ञी की बात मान कर उस विवाह को सम्पन्न करने से इन्कार कर दिया, तब निलिप्था ने इस तरह इस वाद विवाद को ख़त्म किया।

"सुनिये धर्म गुरु, देश के विधान के अनुसार हम महापुरोहित को मृत्यु दण्ड तो दे नहीं सकतीं क्योंकि इसके विरुद्ध बहुत पक्षपात फैला हुआ है, साथ ही हम उसको नजरबन्द भी नहीं कर सकती क्योंकि उसके सारे साथी और सारा पुरोहित वर्ग धर्म की दुहाई दे कर आकाश पृथ्वी एक कर देगा और ज्यू वैण्डी पर न जाने किन किन देवताओं की शनि दृष्टि पड़ने और न जाने किन किन संकटों के टूट पड़ने का गला फाड़ फाड़ कर श्राप देने लगेगा। लेकिन इतना तो कम से कम हम कर ही सकती हैं कि हम महापुरोहित को देवाधिदेव भगवान सूर्य की वेदी पर इस सम्बन्ध में गम्भीर सोच विचार करने के लिए छोड़ दें और जब तक उनका मन और मस्तिष्क स्थिर न हो जायें तब तक उनको निराहार ही रहने दिया जाये, क्योंकि इस प्रकार की तपस्या करना ही महापुरोहित का धर्म और उद्यम है। और यदि अब भी महापुरोहित ऐगौन विवाह सम्पन्न कराने से इन्कार करते हैं तो उनको सामने वाली वेदी पर बिठा दिया जायेगा और उस समय तक उनको

*ज्यू वैडी देश के कानून के अनुसार शाही कुटम्ब के व्यक्तियों का विवाह केवल मुख्य पुरोहत या उसकी अनुपस्थिति में विशेष रूप से नियुक्त किया गया कोई सहकारी ही करा सकता है। (ला० व० सि)

पानी की एक बूंद भी नहीं दी जायेगी जब तक वह अपने होश हवास में आकर अपने इस निर्णय को बदलने को तय्यार नहीं होंगे।" निलिप्था यह कह कर अपने महलों को चली गई।

मजे की बात यह थी कि इत्तफ़ाक से ऐसा हुआ था कि उस दिन दरबार में आने की जल्दी में महापुरोहित ऐगौन अपने घर से बिना नाश्ता किये ही चले आये थे और इसलिये उसे इस समय बहुत तेज़ भूख लग रही थी। इसका परिणाम यह हुआ कि थोड़ी देर के बाद ही देवी मठ में आ गई, यानी महापुरोहित ने थोड़ी देर हिचिर मिचिर करने के बाद अपनी राय बदल डाली और विवाह कार्य में पुरोहित बनना स्वीकार कर लिया। पर रस्सी जल गई बल न गया। साथ ही ऐगौन ने यह भी कह दिया कि इस अधर्म की ज़िम्मेदारी उसके सिर पर नहीं थी, क्योंकि भगवान सूर्य स्वयं देख रहे थे कि उसे कितनी मजबूरी की हालत में अपने विवेक की हत्या कर के यह काम करना पड़ रहा था।

यह निश्चित हो जाने के बाद निलिप्था अपनी दो सहेलियों के साथ उस कमरे में आई। उसकी आँखें शर्म से झुकी हुई थीं, चेहरा लज्जा और आन्तरिक खुशी से बीर बहूटी हो रहा था, मुस्कराहट थी कि बिखरी जाती थी और आँखों में तितलियां सी नाच रही थीं। उसने दूध जैसे श्वेत वस्त्र पहन रखे थे और उन वस्त्रों पर किसी तरह की कसीदा कारी या फुलकारी नहीं की हुई थी। इस सादे वेश में रंग के अतिरिक्त कोई विशेषता नहीं थी क्योंकि इस अवसर पर ज्यू वैण्डी देश में वधू को बिल्कुल सीधे साधे वस्त्र पहनाये जाते हैं। उसने कोई आभूषण नहीं पहन रखा था यहां तक कि उसने अपने दाहिने हाथ और बांयें पैर में पड़े सुनहरी कड़ों को भी उतार दिया था और मेरे विचार से इस सादगी

वह और भी अधिक सुन्दर लग रही थी, क्योंकि जैसा किसी ने कहा है—Beauty unadorned is adorned the most—निराभरण सुन्दरता में असीम आकर्षण होता है या जरूरत क्या है हुस्न को गहने और कपड़े की।

कमरे में आ कर उसने कुंवर साहिब को सिर झुका कर प्रणाम किया और उनका बायां हाथ पकड़ कर उन को पवित्र वेदी तक ले गई

और दो तीन क्षण प्रतीक्षा करने के बाद तेज स्पष्ट आवाज से निम्न-लिखित प्रतिज्ञा को दुहराया। न्यू वैण्डी में यह रिवाज है कि यदि विवाह में वर और वधू दोनों की सम्मति हो तो यह प्रतिज्ञा ली जाती है।

"क्या तुम देवाधिदेव भगवान सूर्य के सन्मुख शपथ ले कर यह स्वीकार करते हो कि तुम मेरे अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री से न विवाह करोगे और न जब तक मैं स्पष्ट रूप से अनुमति दूं किसी अन्य स्त्री से प्रेम ही करोगे।"

"मैं सौगन्ध लेता हूँ," कुंवर साहिब ने कहा और साथ ही हिन्दी में भी जड़ दिया, "मेरे लिए तो एक ही काफी है।"

इसके बाद ऐगौन, जो अभी तक वेदी के पास एक कोने में मनो-मलीन उदास सा खड़ा हुआ था, आगे बढ़ा और इतनी तेजी से अपने मुंह ही मुंह में न जाने क्या बड़बड़ाने लगा कि उसकी बात का एक शब्द भी मेरी समझ में नहीं आया। शायद वह देवाधिदेव भगवान सूर्य से नव विवाहित दम्पति पर कृपा दृष्टि रखने और उनके इस सम्बन्ध को सुन्दर तथा फलदायक बनाने का आशीर्वाद देने की प्रार्थना कर रहा था। मैंने देखा कि निलिप्था उसके बोले प्रत्येक शब्द को बड़े गौर और तन्मयता से सुन रही थी, बाद को मुझे मालूम हुआ कि उसे भय था कि कहीं ऐगौन उसके साथ कोई चालाकी न खेल जाये और उल्टा मंत्रोच्चारण करके उसका विवाह कराने के स्थान पर कहीं उनका सम्बन्ध विच्छेद न कर दे।

मंत्रोच्चार समाप्त होने पर जिस प्रकार हमारे देश में वर और वधू आपस में वचन भरवाते हैं उसी तरह उनसे भी पूछा गया कि वह एक दूसरे को वर और वधू के रूप में स्वीकार करने को प्रस्तुत थे या नहीं, और दोनों के हां कह देने पर उन दोनों ने वेदी के सामने एक दूसरे का चुम्बन किया और जहां तक न्यू वैण्डी के रीति रिवाज का सम्बन्ध था विवाह सम्पन्न हो गया। लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे कुछ कसर रह गई हो, इसलिये मैंने कैप्टिन प्रसाद से पूछा कि उनको विवाह के अवसर के मंत्र याद थे या नहीं। ब्राह्मण बालक होने के नाते कैप्टिन अपनी इस पुश्तैनी विरासत को अभी तक भूल नहीं पाये थे और उन्होंने मेरे कहने पर बड़ी प्रसन्नता से हिन्दू धर्म के अनुसार विवाह सम्पन्न

कराने का ज़िम्मा ले लिया। वह तो विवाह के शुभ कार्य के लिए आवश्यक वस्तुओं का प्रबन्ध करने में लगे और मैंने वर वधू को सम्बोधित करके कहा, "कुंवर साहिब और निलिप्था, मैं या कैप्टिन प्रसाद कोई पुरोहित तो हैं नहीं और न मुझे यह मालूम ही है कि यहां के लोग विवाह की उस पद्धित को पसन्द भी करेंगे या नहीं, लेकिन मेरी दृष्टि में अभी जो तुम लोगों का विवाह हुआ है वह न धर्म की दृष्टि से और न क़ानून की दृष्टि से ठीक है। इसलिये अगर आपको और निलिप्था को कोई ऐतराज़ न हो तो मैं तुम्हारा विवाह हिन्दू पद्धित से भाँवरें डाल कर पूरा करा दू। आप कुंवर साहिब एक नये जीवन में प्रवेश कर रहे हैं इसलिये मेरे विचार से आपको इस सम्बन्ध को स्थाई और फलदायक बनाने के लिए अग्नि की साक्षी में भॉवरें डाल कर इस विवाह को धर्म के अनुसार सम्पन्न करा लेना आवश्यक है।"

"मेरा भी यही विचार था", कुंवर साहिब ने कहा, "मैं तो अभी तक अपने आपको यह विश्वास ही नहीं दिला पाया हूँ कि मेरा विवहा हो गया है।"

निलिप्था से पूछे जाने पर उसने ऐतराज़ नहीं किया। इस बीच में कैप्टिन प्रसाद ने न जाने कहां से थोड़ा सा सेंदुर और फूल मंगा लिये थे, अग्नि मौजूद थी ही, कैप्टिन ने वेदी की रचना करके विवाह कार्य कराना शुरू किया। सब से वयोवृद्ध होने के नाते उपनायक कारा ने कन्या दान किया। कैप्टिन ने निलिप्था को पहले कुंवर साहिब के दाहिनी ओर बिठा कर मंत्रोच्चार किया और गंठ बंधन करा कर कुंवर साहिब से सेंदुर दान कराया फिर तीन भॉवरें डाल कर निलिप्था को वामांग बिठाया और बाक़ी भॉवरें डाल कर अग्नि की साक्षी में विवाह सम्पन्न कराया। प्रतिज्ञा और वचनों को कैप्टिन ने ड्यू वैण्डी भाषा में अनुवाद कर के निलिप्था को सुनाया और दोनों के हां करने पर विवाह कार्य पूर्ण हुआ। विवाह के बाद कुंवर साहिब ने अपनी उंगली से अंगूठी उतार कर निलिप्था की उंगली में पहना दी। कुंवर साहिब की अंगूठी उनकी मां की थी जो उनको विवाह के अवसर पर पहिनाई गई थी। यदि आज वह जीवित होतीं तो उनको यह मालूम कर के कितना आश्चर्य होता कि स्वयं उनके विवाह की अंगूठी से ही ड्यू वैण्डी की सम्राज्ञी निलिप्था उनकी पुत्र वधू बनी थी।

जिस समय भांवरें पड़ रही थीं महापुरोहित ऐगोन चुपचाप खड़ा इस धार्मिक कृत्य को देख रहा था, उसे चुप रहना कठिन मालूम पड़ रहा था, क्योंकि यह तो उसे स्पष्ट मालूम हो ही गया था कि यह रस्म धार्मिक रस्म थी और इसलिये उनकी आंखों के सामने वह दिन घूमने लगे जब कि उसके प्रिय ज्यू वैरडी देश में उसका धर्म लुप्त हो जायेगा और दूर अनजान देश में फैले ६५ विभिन्न मतों में से कोई धर्म ज्यू वैरडी में भी फैल जायेगा। क्योंकि सारे काम मेरे कहने से हो रहे थे इसलिये उसने मुझे उन नये धर्मों का धर्म गुरू समझा और अपना प्रतिद्वन्द्वी समझ कर वह मुझ से जी जान से ईर्ष्या करने लगा। अन्त में वह गुस्से से उफनता हुआ वहां से चला गया और मैंने समझ लिया कि वह हमें और हमारे नये धर्म को मिटा देने के लिए जी जान की बाजी लगा देगा।

और फिर वर वधू को छोड़ कर मैं, कैप्टिन और अमस्लोपागस तीनों वहां से चले आये, हम सभी ऐसा महसूस कर रहे थे जैसे हमारा कुछ खो गया हो। विवाह खुशी और सुख का अवसर होता है, लेकिन मेरा अनुभव यह है कि क्षणिक आवेश के बाद चारों ओर और विशेष कर वधू पक्ष वालों पर एक अमिट उदासी छा जाती है। इतनी बड़ी भीड़ में वर को छोड़ कर कोई भी प्रसन्न नहीं होता है। विवाह से अनेकों पुराने नाते और बंधन टूट जाते हैं और नये नये बंधन और नई नई जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, और पुराने सम्बंधों और बंधनों के टूट जाने से दुःख होता है।

विवाह हो जाने पर मनुष्य बदल जाता है। अब इसी विवाह को देखिये। कुंवर साहिब जैसा सच्चा और पसीने की जगह खून बहा देने वाला मित्र मिलना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है, लेकिन इस विवाह के बाद वह भी जैसे कुछ बदल से गये हैं। अब उनके मुख पर सिर्फ निलिप्था की ही बातें रहती हैं, निलिप्था ने यह कहा, निलिप्था ने यह किया, निलिप्था ऐसी है, निलिप्था वैसी है—सवेरे से लेकर शाम तक वह हर बात में मौके बे मौके निलित्था का जिक्र छेड़ देते हैं, उनकी सारी दुनियां निलिप्था मय हो रही है, निलिप्था के अलावा उनको न कुछ भाता है, न सुनाई देता है और न दिखाई ही देता है। पुराने मित्र

अब केवल मित्र भर ही रह गये हैं। चतुर स्त्रियां अपने स्वामियों पर इतने कड़े बन्धन नहीं लगाती हैं कि मित्र छूट जायें, परन्तु अपने व्यवहार से वह उनको पराया सा कर देती है। वह स्वयं अपने पति के जीवन में इतनी घुल जाती हैं कि अभिन्न मित्र भी कुछ अलग से पराये से हो जाते हैं। परिवर्तन कुंवर साहिब में भी हो गया है, परन्तु यदि हम उनसे इस बात का इशारा भी कर देते हैं तो वह बिगड़ जाते हैं, नाराज़ हो जाते हैं। वह बदल गये हैं परन्तु निलिप्था वैसी ही मनोमोहक और सुन्दर है। बल्कि अब तो कली खिल कर पुष्प बन गई है; विवाह से पहले स्त्री कली रहती है, अविकसित, अपूर्ण, अपने गुणों को समेटे हुए, परन्तु विवाह होते ही वह जैसे जादू के बल से विकसित पुष्प हो जाती है, उत्तेजक और मादक, उसकी प्रत्येक अदा में जादू आ जाता है और वह देखने वाले को बेसुध कर देती है। निलिप्था यह समझती है कि उसने कुंवर साहिब से विवाह किया है, कैप्टिन प्रसाद ऐण्ड कम्पनी से नहीं, इसलिये वह अपने अमूल्य धन को हवा भी नहीं लगने देना चाहती। आओ प्रीतम आंख में नैन मूंद तोहि लेऊं, ना मैं देखूं और को ना तोहि देखन देऊं। यह सिद्धांत मालूम होता है निलिप्था का और स्त्री और पत्नी होने के नाते उसका यह विचार ठीक भी है। परन्तु, अब परन्तु से क्या फ़ायदा—जब अपने हाथों आग लगाई तो फिर अफसोस काहे का। सब ठीक है, सारा संसार ऐसा ही करता है और शिकायत करने पर सारा संसार उसी की हिमायत करेगा और मुझे स्वार्थी, ईर्षालु, बूढ़ा और न जाने क्या क्या बतावेगा। इसलिये चुप रह जाना ही ठीक है।

इसलिये मैंने और कैप्टिन ने कमरे में जा कर चुपचाप खाना खाया और अपने मनों पर छाई जा रही उदासी को दूर करने के लिए ज्यू बैण्डी की उत्तम शराब के तीन चार पैग उड़ा दिये। अभी हम खाना खा ही रहे थे कि एक प्रहरी ने आ कर एक ऐसी खबर सुनाई जिसे सुन कर हमारे कान खड़े हो गये और हमें उस घटना पर विचार करने पर वाध्य होना पड़ा।

जिस दिन से अमस्लोपागस और अल्फान्सो का झगड़ा हुआ था उस दिन से अल्फान्सो अपनी बेइज्जती की बात को भूला नहीं था और अपनी खुरसटों और चोटों को सहलाता इधर से उधर भिन्नाया फिरता

रहता था। उस दिन ऐसा हुआ कि वह अपनी जलन मिटाने की धुन में सूर्य मन्दिर की ओर जा निकला और वहाँ से दूसरी ओर के ढाल की सड़क पर उतर गया और वहाँ से घूमता फिरता एक सरकारी बाग़ में पहुँच गया जो कि शहर के परकोटे के बाहर शहर के दूसरी ओर है। कुछ देर वहां घूम फिर कर वह वापस लौट ही रहा था कि परकोटे के फाटक के पास उसे सोरियास के रथों की कतारें मिलीं, जो कि बड़ी तेजी से घोड़े फेंके उत्तर की बड़ी सड़क के साथ साथ हवा की भांति उड़े जा रहे थे। अलफ़ान्सो को देख कर सोरियास ने अपना रथ ठहराया और उसे अपने पास बुलवाया। अलफ़ान्सो को क्या खबर थी कि इधर क्या खिचड़ी पक चुकी थी, वह सोरियास के पास खुशी खुशी चला गया। वहां पहुँचते ही उसे पकड़ लिया गया और खींच कर रथ में डाल दिया गया और रथ हवा हो गये। अलफ़ान्सो ने चीख पुकार तो बहुत मचाई—इस बात का मैंने फ़ौरन यक़ीन कर लिया—मगर कुछ बना नहीं और सोरियास अलफ़ान्सो को उड़ा कर ले गई।

पहले तो हम घबरा गये, हमारी समझ में यह नहीं आ रहा था कि ग़रीब अलफ़ान्सो को पकड़ ले जाने से सोरियास का क्या मतलब हो सकता था। क्या सोरियास इतनी नीच हो सकती थी कि खिसयानी बिल्ली खंभा नोचे वाली कहावत के अनुसार वह हमारे ऊपर होने वाले क्रोध को उस आदमी पर निकालना चाहती थी जिसके सम्बन्ध में उसे ठीक मालूम था कि वह एक साधारण नौकर मात्र था। क्या वह कुम्हारी से बस न चला तो गधे के लगे कान उमेठने वाली बात करना चाहती थी। अब तक जितना भी मैंने उसके चरित्र को समझ पाया था उसके अनुसार उसका ऐसा करना संभव नहीं था। फिर सोचते सोचते मुझे ध्यान आया कि उसकी मंशा क्या थी। जैसा मैं पीछे बता आया हूँ ज्यू वैण्डी राज्य के दूर से दूर कोने में रहने वालों ने भी हम तीनों परदेसियों के सम्बन्ध में सुन लिया था और क्योंकि उस देश में आने वाले सब से पहले परदेशी हम ही थे इसलिये वह हमारी शक्ति और करिश्मों की अतिरंजित कहानियों को सुन सुन कर हमें देवताओं की भांति पूजने लगे थे। इसलिये सोरियास की ऐसी बातें कि परदेसियों का खात्मा कर दिया जाये, या यह परदेसी ज्यू वैण्डी

के धर्म को जड़ से खोद कर फेंक देंगे, या यह सामन्तों और पुरोहितों के दुश्मन हैं, यह विधर्मी हैं इत्यादि बातें अभी तक न्यू वैण्डी के अधिकतर निवासियों के गले उतर नहीं रही थी।

प्राचीन आर्यों की भाँति न्यू वैण्डी निवासी भी नवीनता के उपासक है, वह सदैव सत्य और नवीन बातों की खोज में रहते हैं, और क्योंकि हम उनके देश की सबसे नवीनतम वस्तु थे इसलिये उनका मन अभी हमसे भरा नहीं था। इसके अतिरिक्त न्यू वैण्डी के निवासी सुन्दरता के अनन्य भक्त हैं, उनका यह गुण यहां की प्रत्येक वस्तु से टपकता है। कुंवर साहिब के वे जोड़ पुरुषोचित सौन्दर्य ने उनके मनों को मोह लिया है। सुन्दरता की क़द्र होती तो संसार के सारे देशों में है परन्तु न्यू वैण्डी में तो सौन्दर्य की उपासना की जाती है। उनकी मूर्तियों और कला के अन्य नमूनों से यही मालूम होता है कि यहां के निवासी सौन्दर्योपासक हैं। हर बाज़ार में स्त्री पुरुष खुले बन्दों यह कहते सुनाई देते थे कि इन्कूवू जैसा सुन्दर पुरुष शायद सारे न्यू वैण्डी भर में न होगा और क्योंकि वह यह भी कहते थे कि सोरियास को छोड़ कर सुन्दरता में निलिथ्या के पासंग भी कोई स्त्री उस देश में नहीं थी इसलिये उनका विचार था कि देवाधिदेव भगवान सूर्य ने उनकी बे जोड़ हंस मयूर जैसी सुन्दर सम्राज्ञी से विवाह करने के लिये किसी अनजान देश या स्वयं स्वर्ग से ही इन्कूवू को भेज दिया था।

ऊपर वाली बात से ज़ाहिर होगा कि हमारे विरुद्ध जो कुछ भी शोर गुल मचाया जा रहा था वह बहुत हद तक बिल्कुल झूंठ था और इस बात को सोरियास से बेहतर और कोई नहीं समझता था। इसलिये मुझे यह ख्याल आया कि शायद सोरियास ने दूर स्थित देहातों में लड़ाई छेड़ने का कारण बहिन का विवाह एक परदेशी से हो जाना न बता कर किसी और बात से उनको धोखा देने का निश्चय किया होगा। ऐसे देश में जहाँ अनेकों लड़ाइयां लड़ी जा चुकी हों गढ़े मुरदे उखाड़ लेना कोई मुश्किल बात नहीं है, और सोरियास ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से एक ऐसे गढ़े मुरदे को उखाड़ कर अपना काम निकालना शुरू कर भी दिया था। ऐसी हालत में यदि वह किसी परदेसी को अपनी ओर कर सकती और उसे वह देवदूत या महान परदेसी बता

कर अपने अशिक्षित देश वासियों के सामने यह कह कर पेश कर सकती कि उस की बात की सत्यता को देख कर महान परदेसी भी उसके साथ हो गया है तो उसकी बात पर वि श्वास कर के अधिक से अधिक देश वासी उसके झण्डे तले जमा हो सकते थे। निस्संदेह इसी लिये वह कैप्टिन प्रसाद को अपने साथ मिला लेने को उत्सुक थी, और इस में भी कोई सन्देह नहीं कि काम निकल जाने पर वह उनको अवश्य ही दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक देती। लेकिन कैप्टिन के उस के जाल में न फंसने के कारण उसने मौका देख कर अल्फ़ान्सो को ही पकड़ लिया। दूध न सही छाछ ही सही, होते तो दोनों ही सफेद हैं। जिस किसी ने भी हम तीनों को नहीं देखा था उन्हें अल्फ़ान्सो को दिखा कर धोखा दिया जा सकता था, क्योंकि वैसे तो रंग रूप में कैप्टिन और अल्फ़ान्सो प्रायः एक से ही थे, सिर्फ कद अल्फ़ान्सों का ज़रा छोटा था और बड़ी आसानी से देहातों और क़स्बों में उसे बौगवन महान बता कर दिखाया जा सकता था। जब मैंने कैप्टिन प्रसाद को सोरियास की यह चालबाजी बताई तो उनका चेहरा लज्जा और क्रोध से तमतमाने लगा। इस विचार मात्र से ही उनको घृणा होने लगी।

"लाल साहिब क्या वह चुड़ैल उस कमबख़्त को कपड़े लत्ते से सजा कर बौगवन के नाम से चारों ओर घुमाना चाहती है ? मुझे तो इस देश में मुंह छुपाने की जगह भी नहीं मिलेगी। मेरी सारी प्रतिष्ठा मान सम्मान धूल में मिल जायेगा," कैप्टिन ने दुखी होते हुए कहा ।

जितना मुझ से हो सका मैंने उन को ठण्डा करने की कोशिश की लेकिन अनजान देश में किसी नितान्त कायर बुज़दिल द्वारा अपने नाम पर बट्टा लगाया जाना कोई भी पसन्द नहीं करेगा और इसलिये मुझे उनकी दशा से पूरी सहानुभूति थी।।

उस रात मैंने और कैप्टिन ने अकेले ही भोजन किया। हम अपने विचारों में ऐसे खोये हुए थे कि यह मालूम ही नहीं पड़ता था कि हमारे किसी साथी का विवाह हुआ है, चार में से हम दो ही रह गये थे इस लिये दुःख तो होता ही। अल्फ़ान्सो और कुंवर साहिब का अभाव कलेजे में तीर की तरह चुभा जा रहा था। वह रात तो ज्यों त्यों कर के कटी। अगले दिन सवेरे से ही लड़ाई की तय्यारियां पूरे ज़ोर शोर से शुरू हो

गईं। निलिप्था ने दो दिन पहले जो सूचनायें और आज्ञायें अपने विश्वस्त सैनिकों सामन्तों और सरदारों को भेजी थीं उन का प्रभाव दिखाई देने लगा था और सशस्त्र सैनिकों के झुन्ड के झुन्ड मिलोसिस नगर में आते जा रहे थे। आशा के अनुसार हम अब निलिप्था को बहुत कम देख पाते थे और अगले चन्द दिनों से तो कुंवर साहिब की भी केवल झलक ही दिखाई दी। लेकिन मैं और कैप्टिन प्रसाद सामान्तों, बड़े सरदारों और नगर के प्रमुख राज्य व्यक्तियों की अंतरंग सभा में गंभीर परामर्श करते थे, लड़ाई और मोरचों के नक़शे बनाते थे, रसद विभाग और आवश्यक वस्तुओं का ठीक ठीक प्रबन्ध करते थे, आवश्यक कार्यो पर उपयुक्त व्यक्तियों को नियुक्त करते थे, मौके के मोरचों और विशिष्ठ स्थानों की रक्षा का भार चुने हुए विश्वस्त सरदारों और सामन्तों को सौंपते थे अन्य लोगों को उन की योग्यता के अनुसार काम बांटते थे और न जाने कितनी बातों के सम्बन्ध में आपस में सलाह मशिवरा करते थे। हमारे साथियों के झुन्ड के झुन्ड नगर में इकट्ठे होते जाते थे और नगर को आने वाली सारी सड़कें हमारे अनुयाइयों और दूर दूर से हमारी सहायता को आने वाले सामन्तों और सरदारों के विशाल लहराते झन्डों और सिपाहियों से भरे रहते थे।

दो तीन दिन के बाद ही हम को यह मालूम हो गया कि ४० हज़ार पैदल और २० हज़ार घुड़सवार सेना हमारे पास हो सकती थी—संख्या को देखे हुए यह फ़ौज काफी बड़ी थी और सब से बड़ी बात यह थी कि इतने थोड़े समय में हम इतनी सेना जमा कर सके थे जिस की हमें कोई आशा नहीं थी।

हमारी सेना यद्यपि काफी बड़ी थी पर हमारे जासूसों की दिन प्रति दिन की रिपोर्टों से हमें मालूम हो गया था कि सोरियास के पास हम से भी अधिक सेना थी। जैसा मैं बता चुका हूँ उसने एक बहुत मज़बूत क़िले मेरास्टयूना को अपना सदर मुकाम बना रखा था। यह किला मिलोसिस से उत्तर की ओर है और उधर के देहातों और क़स्बों की सारी जनसंख्या सोरियास के झन्डे तले इकट्ठी होती जा रही थी। नैस्टा अपने पर्वतीय क़िले को छोड़ कर अपने २५ हज़ार हूश वहशियों के साथ आ कर उस से मिल गया था। यह प्हाड़ी सैनिक

ज्यू वैण्डी में सब से भयानक समझे जाते हैं और इन से लोहा लेना आसान बात नहीं थी। एक दूसरा सामन्त जिस का नाम नेलुशा था और जो उस इलाके का मालिक था जहां ज्यू वैण्डी के सब से उत्तम घोड़े पाले जाते हैं अपनी १२ हजार घुड़सवार फ़ौज के साथ उस से आ मिला था। और इसी तरह अन्य सामन्त और सरदार उस की तरफ थे। हमारा अन्दाज़ था कि इस तरह कम से कम एक लाख सैनिक उस के झन्डे तले इकट्ठे हो सकते थे।

इस के बाद यह ख़बर मिली कि सोरियास अपने केन्द्र को तोड़ कर और रास्ते के सारे भूभाग को उजाड़ वीरान करती हुई सीधी मिलोसिस नगर पर अक्रमण करने का विचार कर रही थी। अब यह प्रश्न पैदा हुआ कि मिलोसिस नगर में दरवाजे बन्द कर के उस से मोरचा लेना ठीक रहेगा या बाहर निकल कर बढ़ती सेना की गति-विधि को रोक कर लड़ना ठीक रहेगा। जब इस मामले में हम से राय पूछी गई तो मैंने और कैप्टिन प्रसाद ने बिना किसी तरह की दुबिधा या हिचकिचाहट के आगे बढ़ कर सोरियास की सेना का रास्ता छेकने की राय दी। हम ने कहा कि यदि हम नगर में बन्द हो कर बैठ जायेंगे और आक्रमण की प्रतीक्षा करेंगे तो यह संभव है कि हमारी यह ढ़िलाई हमारी कायरता समझी जाये। और ऐसे अवसरों पर ऐसी ख़बरें घातक होती हैं और तनिक सी बात ही सैनिकों का मन फेर देने को काफ़ी होती है और वह अफसरों की आज्ञा को असान्य करके कुछ कर गुज़रने और मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं। जिस तरह अंगूर का मीठा रस कुछ ही दिनों में कडुवा सिरका बन जाता है उसी तरह लंबी प्रतीक्षा से सैनिकों का उत्साह बहुत जल्दी जाता रहता है और वह असावधान और सुस्त हो जाते हैं। इसलिये हमने नगर से बाहर निकल कर खुले मैदान में सोरियास की सेना से मोरचा लेने का निश्चय किया।

कुंवर साहिब की राय भी हम से बिल्कुल मिल गई और शायद यह कहने की तो आवश्यकता ही नहीं है कि निलिप्था भी हम से फ़ौरन सहमत हो गई। ज्यू वैण्डी देश का एक बड़ा नक़शा लाया गया और उसे निलिप्था के सामने खोल कर रख दिया गया। मेरास्टयूना के

किले से, जहां सोरियास मोरचा लगाये पड़ी थी, कोई तीस मील इधर और मिलोसिस से कोई ६० मील की दूरी पर सड़क ढ़ाई मील चौड़ी एक घेर घुमौअल दार घाटी में हो कर जाती थी, इस घाटी के दोनों ओर घने जंगलों से लदे उत्तुंग पहाड़ आकाश से बातें कर रहे थे और घाटी ऐसी थी कि एक बार रास्ते को रोक देने पर किसी भी सेना को भारी भरकम बोझ लाद कर उस में से हो कर गुज़रना असम्भव था।

निलिप्था ने बड़े ग़ौर से नक़शे का अध्ययन किया और नारी सुलभ सहज ज्ञान और विलक्षण बुद्धि चातुर्य से उस ने इस ऊँची होती जाने वाली घाटी के मुहाने पर उंगली रख दी और अपने स्वामी की ओर घूम कर अपने शिर के सुनहरे केशों को हिलाते हुए दृढ़ निश्चय और विश्वास से कहा, "स्वामी, इस जगह पर आप सोरियास की सेना से मोरचा लेंगे। मैं इस स्थान को भली प्रकार जानती हूँ, इस स्थान पर आप उस से मोरचा लें और जिस तरह तेज़ आंधी धूल तिनकों को उड़ा कर ले जाती है उसी तरह सोरियास की सेना को तितर बितर कर दें।"

कुंवर साहिब बहुत चिन्तित और गंभीर दिखाई दे रहे थे, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

अध्याय २०

दर्रे का युद्ध

इस नक़शे वाली घटना के तीसरे दिन प्रातःकाल मैंने और कुंवर साहिब ने उस मोरचे को संभालने के लिए कूंच किया। थोड़े से अङ्ग रक्षक दल के अलावा सारी सेना एक रात पहले ही कूंच कर चुकी थी और उस के चले जाने से मिलोसिस बहुत सुनसान, लुटा पिटा और उजड़ा उजड़ा सा लग रहा था। निलिप्था की रक्षा के लिए एक छोटे से सैनिक दल को मिलोसिस में छोड़ देने के अलावा हम एक सिपाही को भी पीछे नहीं छोड़ सकते थे। साथ ही हमारी सेना के कोई एक हज़ार सैनिक जो बीमारी तथा अन्य कारणों से अभी तक नहीं जा सके थे मिलोसिस में मौजूद थे। क्योंकि मिलोसिस नगर प्रायः बिल्कुल ही अभेद्य था और शत्रु हमारे पीछे न हो कर सामने की ओर था इसलिये इतने कम सैनिकों से नगर की रक्षा भली प्रकार हो सकती थी।

कैप्टिन प्रसाद और अमस्लोपागस सेना के साथ जा चुके थे। एक अति सुन्दर एक दम श्वेत घोड़े पर जिसका नाम उषा किरण था सवार हो कर स्वयं सम्राज्ञी निलिप्था मुझे और कुंवर साहिब को नगर के मुख्य फाटक तक पहुंचाने आईं। उषा किरण सारे ज्यू वैण्डी भर में सब से तेज़ और सब से दमदार घोड़ा समझा जाता था। सम्राज्ञी के मुख पर हाल के रुदन के चिन्ह दिखाई दे रहे थे परन्तु इस समय उस की आंखों में आंसू का पता नहीं था। इस समय वह इस आसन्न वियोग की कठिन अग्नि परीक्षा के लिए अलौकिक धैर्य और साहस से अपने आप को संभाले हुए थीं। नगर के बड़े फाटक पर पहुँच कर वह घोड़े की बाग खींच कर रुक गईं और प्रणाम कर के हमको विदा दी। एक दिन पहले निलिप्था ने सारी सेना की सलामी ले कर उन का

साहस बनाये रखने और शत्रु का मुंह फेर देने का संदेश दिया था और इतने मनोमोहक और गंभीर शब्दों में उन की प्रशंसा करते हुए उन की बहादुरी और निश्चित विजय में ऐकान्त विश्वास प्रकट किया था कि सारी सेना में उत्साह की लहर दौड़ गई थी और प्रत्येक सैनिक का मन उस ने मोह लिया था। और जिस समय उसने घोड़े पर सवार हो कर अपनी फौज की सलामी ली थी तो उसकी जयजयकार की आवाज़ से आकाश तक गूंजने लगा था और पृथ्वी कांपने लगी थी। इस समय भी उस का मन वैसी ही उमंग और लहर पर मालूम होता था।

"ईश्वर सहायता करे, मैकुमाजन," उसने कहा, "इस बात को न भूलियेगा कि हमको आपकी तीक्ष्ण सहज बुद्धि पर ऐकान्त विश्वास है। आपकी और हमारे फौजी अफसरों की बुद्धि में वही अन्तर है जो एक फावड़े और सुई में होता है। हमें विश्वास है कि आप सोरियास को हरा कर हमारे सिरों पर आया संकट अवश्य दूर कर सकेंगे। हमें विश्वास है कि आप शरीर में प्राण रहते अपने कर्तव्य को पूरा करते रहेंगे।"

मैंने सिर नवा कर उसकी बातें सिर आँखों पर लीं और खून खच्चर से अपनी आन्तरिक घृणा को प्रकट करते हुए यह भी कह दिया कि मेरी और उनकी यह भेंट शायद अन्तिम भेंट ही हो, इसलिये सारा कहा सुना माफ़ कर देने की प्रार्थना की। मेरी बात सुन कर वह खिलखिला कर हंस पड़ी और कुंवर साहिब की तरफ घूम कर कहा, "मेरे स्वप्नों के राजा, मेरे स्वामी, विदा, ईश्वर आपकी सहायता करे। विजयी हो कर लौटना मेरे स्वामी, राजा महाराजाओं की भांति, या अपने सैनिकों की बरछियों पर आना, मैं पलक बिछा कर तुम्हारा स्वागत करूंगी।"*

कुंवर साहिब ने कुछ उत्तर नहीं दिया और अपने घोड़े को घुमा कर चलने लगे, शायद उनका दिल भर आया था और भावावेश के कारण मुंह से बोल नहीं निकल पा रहा था। वैसे तो समय बड़े बड़े घाव को भी भर देता है परन्तु ऐसा वियोग जिस में जीवन मृत्यु का

* ज्यू वैण्डी मे यह रीति है कि मृतक सपदारो और अफसरो के शवो को उन के अनचर बरछियो को जोड कर बनाई गई अरथियो पर लाते हैं। सम्राज्ञी ने इसी ओर इशारा किया था। (ला. व. सिं.)

का भय ही बहुत ही दुखदायी होता है, और खास कर ऐसे अवसर पर जब कि विवाह हुए एक ही सप्ताह हुआ हो और सारा संसार तुझ में और तू मुझ में लीन हो रहा हो ऐसा वियोग असहनीय हो जाता है।

"जब तुम विजयी हो कर लौटोगे प्रियतम तो इसी स्थान पर मै तुम्हारा स्वागत करूंगी। और स्वामी एक वार फिर विदा, अन्तिम विदा।" इसके बाद सम्राज्ञी ने सोने के थाल से सिंदूर ले कर हम दोनो के मस्तकों पर टीका काढ़ा और एक वीर सम्राज्ञी की भांति हमको विदा किया। उसकी आंखे डवडबा आई थीं पर उसने विलक्षण धैर्य से अपने आपको संभाल कर हमको विदा किया।

और हम अपने घोड़ों पर सवार होकर मोरचे को चल दिये। अभी हम कोई १५० गज़ ही गये होंगे तो हमने घूम कर देखा कि सम्राज्ञी उसी स्थान पर उसी तरह मूर्ति की तरह निश्चेष्ट अपलक नेत्रों से हमको देखे जा रही थीं। यह अन्तिम वार हमने सम्राज्ञी को देखा। एक मील और आगे जाने पर हमें अपने पीछे घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई दी और पलट कर देखने पर हमने देखा एक सवार तेजी से हमारी ओर आ रहा था और सम्राज्ञी के वेजोड़ समन्द घोड़े ऊषा किरण की बाग पकड़े हुए उसे हमारे पास ला रहा था।

"सम्राज्ञी ने अपने इन्कूबू को यह अद्वितीय वेजोड़ घोड़ा अन्तिम भेंट की तरह भेजा है और यह कहलाया है कि यह सारे देश में सब से तेज दौड़ने वाला, सबसे पानी दार, सबसे जान दार और असील है। सारे ज्यू वैण्डी में इसके जैसा दूसरा घोड़ा नहीं है," उक्त सैनिक ने अपने घोड़े पर बैठे बैठे सिर झुका कर हमसे कहा।

पहले तो कुंवर साहिब ने उस भेंट को लेने से इन्कार कर दिया, उन का विचार था कि वह घोड़ा ऐसे भयानक और उजड्ड भोंडे काम के लिए अनुपयुक्त था, लेकिन मैंने उनको इस भेंट को स्वीकार करने की सलाह दी और साथ ही यह बात भी उनके कान में डाल दी। कि भेंट अस्वीकार कर देने से सम्राज्ञी के बुरा मान जाने की सम्भावना थी। उस समय मैंने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि यह असील पशु सब से सकट पूर्ण समय में हमारी सब से बड़ी सेवा करेगा। यदि घटनाओं का सिंहावलोकन किया जाये तो मालूम होग कि किस

प्रकार बहुत छोटी छोटी तुच्छ आक्समिक घटनायें समय की गति तक को उसी सरलता से पलट देती हैं जिस प्रकार क़ब्जों पर किवाड़ खुल जाते हैं। यदि महाभारत के युद्ध में "अश्वत्थामा हतः" न कहा जाता तो क्या गुरू द्रोणाचार्य पर विजय प्राप्त की जा सकती थी। यदि कर्ण के रथ का पहिया धरती में न घुस जाता तो महाभारत का वह अन्त न होता जो हुआ। यदि चित्तौड़गढ़ की प्राचीर पर टिमटिमाते दीपक को देख कर अकबर गोली न मारता तो क्या जयमल आसानी से किला फ़तह हो जाने देता या वीर चत्राणियों को जौहर करने का अवसर आता। यदि सामूगढ़ के युद्ध में दाराशिकोह हाथी से उतर कर घोड़े पर सवार न हो जाता और उस की सेना अपने सेनापति को हाथी के हौदे में न देख कर भाग न खड़ी होती तो भारतवर्ष का इतिहास ही दूसरा होता। इस प्रकार तुच्छ घटनायें कभी कभी इतिहास की गति तक को पलट देती हैं।

ख़ैर हम ने उस घोड़े को ले लिया, घोड़ा क्या था सुन्दरता की मूर्ति था, उसके चलने और भागने में एक ख़ास अदा थी जो देखने वालों का मन बरबस ही अपनी ओर खींच लेती थी। कुंवर साहिब ने इस भेंट के लिए सम्राज्ञी को बहुत बहुत धन्यवाद कहला भेजा और हम अपनी यात्रा पर चल पड़े।

दोपहर तक हम ने अपनी विशाल सेना के पृष्ठ भाग की रक्षा करने वाले दल को जा लिया और इस समय से कुंवर साहिब ने सेना के संचालन का भार अपने ऊपर ले लिया। यह ज़िम्मेदारी निस्संदेह बहुत भारी थी और इस से उन को बहुत परेशानी भी हुई, परन्तु इस सम्बन्ध में सम्राज्ञी की आज्ञा इतनी स्पष्ट थी कि उसे ठुकराया नहीं जा सकता था। अब कुंवर साहिब को मालूम हो रहा था कि फूलों के साथ कांटे भी होते हैं, बड़प्पन की जयजयकार भी होती है परन्तु उस के साथ साथ ज़िम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं।

हम आगे बढ़ते चले गये, रास्ते में किसी तरह की कोई रुकावट या अटकाव नहीं मिला यहां तक कि रास्ते में हमें कोई मनुष्य तक नहीं दिखाई दिया क्योंकि हमारे मार्ग में पड़ने वाले ग्रामों और क़स्बों के अधिकतर निवासी हमारी सेना के आगे बढ़ने की खबर पा

कर इस भय से कि कहीं दोनों सेनाओं के चक्की रूपी दो विशाल पाटों के बीच फंस कर उन की चटनी न बन जाये वह अपने घरों को छोड़ कर इधर उधर जहां जिस के सींग समाये थे भाग गये थे।

चौथे दिन शाम को, क्योंकि इतनी बड़ी सेना इस से अधिक तेज़ी से कूंच कर भी नहीं सकती थी, हम ने पहाड़ी घाटी के उस गर्दने से, जिस का मैं पहले ज़िक्र कर आया हूँ, दो मील इधर पड़ाव डाला। यहां हमारे हरावल दस्तों ने हमें सूचना दी कि सोरियास अपनी सम्पूर्ण शक्ति से हम पर छापा मारने का विचार कर रही थी और इसीलिये उसने तंग गर्दने से दस मील उधर अपना पड़ाव डाला हुआ था।

सूर्य निकल ने से पहले हीं हमने १५०० घुड़सवारों को उस मोरचे पर क़ब्ज़ा जमा लेने के लिये भेज दिया। अभी वह बड़ी मुश्किल से मोरचा जमा पाये थे कि सोरियास के प्राय. इतने ही घुड़सवारों ने उन पर हल्ला बोल दिया और घुड़सवारों की बड़ी चटापटी की लड़ाई हो गई। हमारे कोई तीस सैनिक खेत रहे। इस मोरचे पर कुमक पहुँचाने पर सोरियास के सैनिक पीछे हट गये और अपने मृतक और घायल साथियों को भी उठा कर ले गये।

दोपहर तक हमारी सेना का मुख्य भाग उस गर्दने तक पहुँच गया। इस स्थान पर यह बता देना मैं आवश्यक समझता हूँ कि निलिप्था की सहज बुद्धि ने स्थान को चुनने में तनिक भी ग़ल्ती नही की थी, शत्रु के दांत खट्टे करने के लिए इस से उत्तम मोरचा हो ही नहीं सकता था और खास कर ऐसी हालत में जब कि शत्रु की संख्या हम से बहुत अधिक थी।

इस स्थान पर कोई एक मील तक सड़क इतनी ऊबड़ खाबड़, टूटी फूटी और घूम घुमौअल थी कि किसी विशाल सेना का ठीक तरह से संचालन करना प्रायः असम्भव था। यहां से सड़क चढ़ाई पर चढ़ती थी और चढ़ते चढ़ते हरियाली से लदी छोटी सी पहाड़ी के शिखर तक पहुँचती थी और दूसरी ओर बहुत साधारण ढाल से उतरती हुई एक छोटी सी नदी पर समाप्त होती थी, और नदी पार करके फिर बहुत हल्की चढ़ाई पर चढ़ती हुई सामने वाले मैदान में मिल

जाती थी। छोटी पहाड़ी की चोटी से नदी का किनारा आध मील से कुछ ही अधिक था, और नदी किनारे से सामने वाले मैदान का छोर इस से भी कम था। पहाड़ी के शिखर से मैदान के छोर की दूरी प्रायः इतनी ही थी जितनी कि इस स्थान से घने जंगलों से लदे इस पहाड़ी गर्दने की थी यानी कोई ढ़ाई मील, और इस गर्दने के दोनों प्रष्ठों पर फैला घना जंगल और पथरीली ऊबड़ खाबड़ भूमि, जिस की ओट ले कर बड़ी सुगमता से शत्रु पर आक्रमण किया जा सकता था, बचाव के सब से उत्तम साधन थे और उन को चक्कर दे कर पार कर लेना प्रायः असम्भव था।

पर्वतीय गर्दने के इस ओर वाले ढ़ाल पर हम ने अपनी सेना का पड़ाव डाला और कैप्टिन प्रसाद और ज्यू वैण्डी के प्रमुख सेनापतियों की सलाह से ऐसी व्यूह रचना की जिस से होने वाले भयंकर युद्ध में शत्र का जी खोल कर मुकाबिला किया जा सके।

हम ने अपनी ६० हज़ार सेना को इस तरह जमाया। बीच में २० हज़ार पैदल सैनिकों का एक ठोस वर्ग था, इन सैनिकों के पास भाले, बरछे और तलवारें, दरियाई घोड़े की खाल से बनी ढ़ाले और कवच थे और वह बेढंगे टोप पहने हुए थे।* यह था हमारी सेना का वक्ष और इस की सहायता के लिए पांच हज़ार पैदल और तीन हज़ार घुड़-सवार कोतल में रखे गये। इस वक्ष के दोनों बाजुओं पर ७-७ हज़ार घुड़सवार दुर्भेद इकाइयों में खड़े किये गये, इन बाजुओं से थोड़ा हट कर परन्तु उन से ज़रा आगे की ओर दो और मोरचे लगाये गये, हर एक में ७५०० बरछैत थे, और यह दोनों मोरचे हमारी सेना के दाहिने और बाये पार्श्वो को बनाते थे और इन पार्श्वों की रक्षा के लिए १५००-१५०० घुड़सवारों के दस्ते नियुक्त किये गये। इस तरह हम ने अपनी ६० हजार सेना की व्यूह रचना की।

कुंवर साहिब इस सारी सेना के प्रधान सेनापति थे, वक्ष और दाहिनी ओर के बाज़ू के बीच वाले ७००० घुड़सवारों की कमान मेरे पास थी और दाहिनी ओर के बाज़ू की कमान कैप्टिन प्रसाद के पास थी।

*ज्यू वैण्डी के निवासी तीर कमान का इस्तेमाल नहीं जानते हैं। (ला. व. हिं)

अन्य बटालियनों और पार्श्वों की कमान ज्यू वैण्डी के जनरलों के पास थी।

अभी हम मुश्किल से अपनी व्यूह रचना कर पाये थे कि सामने वाले ढाल पर हम से कोई एक मील दूर मेरे बिल्कुल सामने सोरियास की सेना मोरचा जमाने लगी। उस के पास इतनी सेना थी कि जिधर दृष्टि जाती थी भालों और बरछियों की गांसियों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता था, और उसकी सेना के चलने की आहट से पृथ्वी तक कांपने लगी। यह स्पष्ट था कि हमारे जासूसों ने लंबी चौड़ी बातें नहीं हांकी थी। हमारी सेना सोरियास की सेना से अधिक से अधिक दो तिहाई थी। पहले तो हम यह समझते रहे कि सोरियास की सेना तुरन्त ही हम पर धावा बोलने को थी। सेना के पार्श्वों में मोरचा जमाने, घोड़ों की टापों से उड़ती धूल और सैनिकों के धमकी भरे प्रदर्शन से हमारा ऐसा ख्याल बंध गया था, लेकिन शायद सोरियास ने उस समय आक्रमण न करने ही में भलाई देखी और इसलिए उस दिन कोई झड़प तक नहीं हुई। जहाँ तक उसकी सेना की व्यूह रचना थी, मैं निश्चय रूप से कुछ नहीं बता सकता, लेकिन इतना मैं अवश्य बता सकता हूँ कि मुख्य बातों में उसकी व्यूह रचना हमारी ही जैसी थी, केवल उस की कोतल सेना की संख्या हम से कहीं अधिक थी।

हमारे दाहिने बाजू के सामने जो कि सोरियास का बांया बाजू था, काले भयंकर आकृति वाले लंबे चौड़े दानवों जैसे सैनिकों की कतारें पैर जमाये खड़ी हुई थीं। इन के पास केवल लंबे बरछे और ढालें थीं। बाद को मुझे मालूम हुआ कि वह नेस्टा के २५ हजार हूश पहाड़ियों में से थे। "ईश्वर की सौगन्ध है कैप्टिन प्रसाद," अवसर मिलते ही मैंने कैप्टन से कहा,' कल सवेरे जब यह हूश वहशी हमारे ऊपर हल्ला बोलेंगे तो संभालना मुश्किल हो जायेगा।" मेरी बात सुन कर और उन हूशों को देख कर कैप्टन भी सोच में पड़ गये।

सारे दिन हम बड़ी सतर्कता से शत्रु की प्रत्येक गति विधि को देखते और प्रतीक्षा करते रहे, परन्तु हुआ कुछ भी नहीं। प्रतीक्षा करते करते रात्रि हो गई और जैसे जैसे अंधेरा बढ़ता गया पर्वत के ढ़ाल पर सहस्रों अलाव जलते गये। दूर से वह प्रज्वलित अलाव दूर टिमटिमाते तारों जैसे दीखते थे। जैसे जैसे समय बीतता गया वह मन्द पड़ते गये,

अनेकों बुझ गये, और शत्रु की सारी सेना पर मौत की सी शान्ति छा गई।

यह रात्रि बहुत थका देने वाली थी क्योंकि अनगिनती छोटी मोटी और आवश्यक बातों के साथ साथ अनिश्चियता का भूत हमें खाये जा रहा था। कल का प्रातः काल जिस भीषण युद्ध को देखने वाल था वह इतना भयानक होने को था, इतनी मार काट उसमें होने को थी कि उसकी कल्पना मात्र से सिहर न उठने वाला व्यक्ति वास्तव में बहुत ही कठोर हृदय होगा। स्वयं मुझे यह अनिश्चियता खाये जा रही थी, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं बहुत दुखी था और मुझे उन असंख्य सैनिको पर दया आती थी जो एक स्त्री के ईर्षालु क्रोध और जिद को पूरा करने के लिये बलिदान के बकरों की तरह वहां जमा किये गये थे। यहीं वह छुपी हुई शक्ति थी जो घुड़सवारों के घने समूहों जैसी आंधियों और विद्युल्लताओं को युद्ध के मैदान में अपनी घातक शक्ति का परिचय देने के लिये खींच लाई थी, और इसी शक्ति से प्रेरित हो कर मनुष्य इन्सान से भेड़िया बन कर इस तरह एक दूसरे पर टूट पड़ना चाहता था जैसे वायु से प्रेरित हो कर बादल एक दूसरे से टकरा कर गरज और चमक पैदा करते हैं। कितना भयानक विचार था। हम काफ़ी रात गये तक आपस में सलाह मश्विरा करते रहे, हमारे दिल द्विविधा से धुकुड़ पुकुड़ कर रहे थे और चेहरों का रंग फ़क़ पड़ा हुआ था और सन्तरी पहरेदार थे कि इधर से उधर और उधर से इधर नपे तुले क़दमों से लगातार पहरा दिये जा रहे थे। युद्ध के अस्त्रों से सज्जित जनरल हमारे सलाह मश्विरे में आ कर शामिल होते थे और उपयुक्त आज्ञायें पा कर वापस लौट जाते थे, चुपचाप चोर की तरह, निशब्द और गंभीर।

और इस तरह से रात खिसकने लगी और सवेरे होने वाले भीषण नर संहार की सभी तय्यारियाँ पूरी हो गईं। मैं जा कर लेट रहा और सोचने लगा। मेरा विचार कुछ आराम करने का था लेकिन प्रात काल होने वाली भयंकर मार काट और अनिश्चियता के भय से मेरी पलक तक नहीं झपकी, नींद आने का तो जिक्र ही क्या—कल क्या होगा, जीवन या मृत्यु, कौन कौन जीवित रहेगा, कैसी बीतेगी, यही विचार रह रह कर मुझे सता रहे थे। कष्ट और मृत्यु यह दोनों निश्चित थीं, इनके

अतिरिक्त और क्या होना था यह हम नहीं जानते थे, लेकिन यह कहते मुझे तनिक भी लज्जा नहीं आती है कि मुझे बहुत डर लग रहा था। लेकिन फिर मुझे ख्याल आता था कि 'पुरुषस्य भाग्य' दैवो न जान्या,' मनुष्य के भविष्य की बात तो विधाता भी नहीं जानता फिर उस अज्ञात भविष्य की चिन्ता करने से क्या लाभ। जो होना है होगा अवश्यमेव, एक क्षण का भी अन्तर नहीं पड़ेगा। जब सभी कुछ निश्चित है तो फिर चिन्ता करने से लाभ।

सोचते सोचते मेरा दिमाग़ थक गया और मैंने सोचना बन्द कर दिया। परमपिता परमेश्वर के हाथों अपना भाग्य सौंप कर मैं बहुत कुछ निश्चिन्त हो गया।

बहुत प्रतीक्षा के बाद पूर्व दिशा में लाली दिखाई देने लगी और जैसे जैसे प्रकाश फैलता गया विशाल कैम्प सोये अजगर की भांति जागता गया और चारों ओर शोर गुल मचने लगा। चिल्ल पुकार, शोर गुल, घोड़ों की हिनहिनाहट और शस्त्रों की झंकार से आकाश गूंजने लगा। कितना सुन्दर परन्तु भयानक दृष्य था, और अपनी इन्कूसी-कास का सहारा लिए बूढ़ा अमस्लोपागस उस दृष्य को बड़ी प्रसन्नता से देख रहा था। उस का यौवन एक बार फिर लौट आया मालूम पड़ता था।

"मैंने ऐसा कभी नहीं देखा था मैकुमाजन, कभी नहीं देखा था," उसने कहा, "मेरे देश की लड़ाइयां इस होने वाली लड़ाई के सामने बच्चों का खेल मालूम होती हैं, जैसे पहाड़ के सामने चूहा। क्या यह आख़ीर तक लड़ते रहेंगे मालिक?"

"हां" मैंने कहा, "यह लड़ाई उस वक्त तक चलती रहेगी जब तक दूसरे पक्ष का एक भी मनुष्य जीवित रहेगा। इत्मीनान रख, आज 'कठ-फोड़वे' को अपनी वर्षों से संचित शक्ति दिखाने का मौका मिलेगा।"

समय गुजरता गया परन्तु अभी तक आक्रमण का कोई निशान तक नहीं था। घुड़सवारों की एक टोली ने उस छोटी नदी को पार किया और बहुत धीरे धीरे हमारी सेना के सामने हो कर निकली चली गई, स्पष्ट था कि वह हमारी स्थिति, व्यूह रचना और सैनिकों की संख्या-का सही अनुमान करने आई थी। हमें टोली से हमने किसी तरह

के घोड़े इधर से उधर भाग रहे थे, विजेता खूंटी के सैनिक पराजित जिह्वा के सैनिकों को गाजर मूली की तरह काट रहे थे, लोहे से लोहा बज रहा था, और जिस तरह कटा पेड़ आप ही आपपृथ्वी पर गिर पड़ता है, उसी तरह शत्रु का सम्पूर्ण नाश हो गया और वह सिर पर पांव रख कर बड़ी बेतरतीबी से जिधर सींग समाये अपनी सेना की ओर भाग निकले। अनेकों को भागते भागते काट डाला गया।

मेरे ख्याल से दस मिनट पहले जितने सैनिक वहां से चले थे उनमें से मुश्किल से दो तिहाई वापस पहुँच पाये होंगे। आक्रमण के लिए आगे बढ़ती हुई सेना की क़तारों ने चौड़ कर इन सैनिकों को आत्म-सात कर लिया और हमारी सेना विजय के नगाड़े बजाती लौट आई। हमारे कोई ५०० सैनिक ही खेत रहे थे—युद्ध की भयंकरता और मार काट की तेजी को देखते हुए यह सख्या बहुत कम थी। मैंने यह भी देखा कि हमारे बायें पक्ष पर आक्रमण करने वाली शत्रु सेना पीछे की ओर हट रही थी, वहां लड़ाई का क्या रंग था इसका मुझे ठीक ठीक पता नहीं। मै तो केवल वही हाल बता सकता हूँ जो मेरे चारों ओर हो रहा था।

इतनी देर में शत्रु के बांये बाजू को संभालने वाली असंख्य सेना, जिसमें व्यतिरेक रूप से नैस्टा के जंगली हूश, पहाड़ी बरछैत शामिल थे, नदी को पार कर चुकी थी और रह रह कर 'नैस्टा" और "सोरि-यास" के नारे लगाती, अपने झन्डों को हवा में फहराती और नंगी तलवारों को चमकाती टिड्डी दल की तरह हमारे ऊपर छा जाने के लिए तेजी से बढ़ी चली आ रही थी।

मुझे इस बढ़ती सेना को रोकने की आज्ञा मिली और मैंने इस आज्ञा को यथाशक्ति पूरा किया। हज़ार हज़ार बरछैतों की कई टोलियों को लगातार उधर भेज कर उनकी तेजी को रोक दिया। इन टोलियों ने शत्रु पक्ष को बहुत हानि पहुंचाई। उनका तेजी से ढ़ाल की ओर उतरने और जीवित मांस में पैने छुरे की तरह घुस जाने का अलौकिक दृश्य देखने की चीज़ थी। परन्तु इस तरह हमारे सैनिक भी मारे जा रहे थे, क्योंकि दो या तीन आक्रमणों से ही सारा मैदान मृत और अर्ध मृत सैनिकों से भर गया। इन आक्रमणों ने नैस्टा की सेना के बीच वाले भाग हृदय को काट कर फेंक दिया और इसलिये शत्रु ने हमारे सैनिकों

को सेना पंक्तियों में भयानक वेग से घुसने न देने वाली नीति को छोड़ दिया और अब आक्रमण होने पर पंक्तियां फैल कर हमारे सैनिकों को आत्मसात करने लगीं और कभी कभी हमारे सैनिकों को पंक्तियां को चीरते फाड़ते दूसरी ओर निकल भी जाने दिया। कुछ शत्रु सैनिकों ने तलवारों और बरछों से लड़ने के स्थान पर आक्रमण होने पर पृथ्वी पर लेट कर रस्सियों से हमारे घुड़सवारों के घोड़ों की टांगों को फंसा कर हमारे सवारों को गिराना शुरू कर दिया और जो सैनिक गिर जाता था वह गिरते गिरते ही काट डाला जाता था। इस तरह शत्रु ने हमारे सैकड़ों सैनिक काट डाले।

और इस तरह हमारे भरसक प्रयत्न करने पर भी शत्रु पास आता गया और अन्त में भयंकर तेज़ी से कैप्टिन प्रसाद की ७५०० सेना पर, जिसे उन्होंने शत्रु का भली प्रकार मुक़ाबला करने के लिए तीन ठोस वर्गों में जमाया हुआ था, आ कर टूट पड़ा। उसी समय युद्ध भूमि के मध्य से आने वाली भयंकर चीख़ पुकार और शोर गुल से मुझे यह पता लग गया कि शत्रु की सेना का मुख्य भाग हमारी सेना के वक्ष और बायें छोर पर टूट पड़ा था। अपने बांयी ओर होने वाले भयंकर युद्ध का हालचाल देखने के लिए मैं अपने घोड़े पर खड़ा हो गया। जहां तक मुझे दिखाई पड़ता था वहां तक चमचमाते बरछे, लपलपाती तलवारें और भालों की गांसियां ही दिखाई देती थीं, और तेज़ी से चलती तलवारें और उठते गिरते बरछे सूर्य की तेज़ रोशनी में चमक चमक कर आंखों में चकाचौंध पैदा कर रहे थे।

उस भयानक विनाशकारी युद्ध में दोनों पक्षों का पल्ला बराबर सा था, कभी कोई आगे बढ़ जाता था, कभी कोई ज़रा पीछे सरक जाता था, लाशों से पृथ्वी पटती जा रही थी और मनुष्यों के शव आगे बढ़ने वाले और पीछे हटने वाले सैनिकों के रास्ते में रुकावट बन रहे थे। अपने पक्ष की ओर होने वाली भयानक मारकाट पर पूरी तरह ध्यान देते हुए मैं उस ओर का सिर्फ इतना ही रंग ढंग देख सका था। शत्रु सैनिकों के कैप्टिन प्रसाद के बनाये तीन ठोस वर्गों के बीच वाले खुले भाग में पहुँच जाने के कारण दूर तक का हाल दिखाई दे रहा था।

नैस्टा के हूश पहाड़ी तलवारिये दल बादल की तरह उमड उमड कर कैप्टिन प्रसाद के रचे ठोस वर्गों से सिर टकरा रहे थे और चारों

और रक्त की नदियां बह रही थीं। रह रह कर वह अपने जातीय नारे भी लगाते जाते थे और मत्त तरंगों की तरह पैने बरछों की तीन पंक्तियों पर जीवन का मोह छोड़ कर पिल पिल पड़ते थे, लेकिन जिस प्रकार किनारों से टकरा कर भयानक लहरें पाश पाश हो जाती हैं वह भी खील खील हो कर बिखर जाते थे।

बिना एक क्षण को भी रुके लड़ाई पूरे चार घन्टे तक इसी तेजी से होती रही और इतने समय के बाद यदि हमारा पल्ला भारी नहीं हुआ था तो कम से कम नीचा भी नहीं हुआ था। घने जंगलों को पार कर के हमारे बायें बाजू पर पीछे से आक्रमण करने की दो बार कोशिश की गई और दोनों ही बार शत्रु को भयानक जानी नुक़सान दे कर पीछे ढ़केल दिया गया। भरसक और जांगड़ ताड़ कोशिश करने के बाद भी नैस्टा के भयानक तलवारिये कैप्टिन प्रसाद के तीनां ठांस वर्गों को तोड़ने में असमय रहे थे। वह बार बार उससे सिर टकरा रहे थे औ' चोट खा खा कर पीछे हट रहे थे। यद्यपि उनकी संख्या बहुत कम हो गई थी, कोई एक तिहाई संख्या कम हो चुकी थी, पर वह बार बार आक्रमण पर आक्रमण किये जा रहे थे।

हमारी सेना के वक्ष वाले भाग को जहां स्वयं कुंवर साहिब और असमलोपागस मामले को संभाले हुए थे बहुत हानि उठानी पड़ी थी, परन्तु हमारा झन्डा अब भी तूफान के बीच अटल चट्टान की भांति शान से सिर उठाये खड़ा था। बायें पार्श्व की ओर होने वाली भयानक मारकाट का रंग ढंग भी कुछ इसी तरह का था।

आखिर कार आक्रमणों का जोर कम हो गया और भरपेट रक्त पात कर के सोरियास की सेना पीछे हट गई। परन्तु यहीं हमने धोखा खाया। क्योंकि उसने अपने रिसाले को छोटे छोटे गुल्मों में बांट कर पूरी तेजी से एक सिरे से लगा कर दूसरे तक हम पर आक्रमण कर दिया और एक बार फिर सैकड़ों हजारों तलवारिये और बरछैत हमारे थके मांदे वर्गों और गुल्मों पर आंधी तूफान की तरह टूट पड़े। इस आक्रमण का नेतृत्व स्वयं सोरियास कर रही थी, ऊँचे कुम्मैत घोड़े पर सवार हाथ में तलवार लिए वह साक्षात भवानी के रूप में सेना के आगे आगे रह कर उसका नेतृत्व कर रही थी।

प्रचण्ड आंधी तूफ़ान की तरह सोरियास के सैनिक हम पर टूट पड़ने को आगे बढ़ने लगे—सोरियास का ऊंचा सुनहरी छत्र सब से आगे हरावल में चमक रहा था। हमने अपने रिसाले को आगे भेज कर इस बढ़ते तूफ़ान को रोकने की चेष्टा की मगर हम असफल रहे। रिसाला इस उमड़ते तूफ़ान को आगे बढ़ने से न रोक सका। क्षण भर में ही वह हमारे सिर पर आ गये और उनके आक्रमण की तेज़ी से हमारी सेना का बीच वाला भाग कमान की भांति मुड़ गया और छिन्न भिन्न हो गया। उसके पांव उखड़ गये और सारी व्यूह रचना धूल में मिल गई। यदि कोनल सेना के दस हज़ार सैनिक उनकी सहायता को न पहुंच जाते तो वह सेना एक बार ही बरबाद हो जाती। कैप्टिन प्रसाद के तीनों वर्गों के सैनिक इस तूफ़ान में ऐसे उड़ गये जैसे आंधी घास फूंस के तिनकों को उड़ा ले जाती है। आगे वाला वर्ग बिल्कुल ही नष्ट हो गया और उसके आधे सैनिक खेत रहे। परन्तु आक्रमण का यह ज़ोर देर तक रहने वाला नहीं था। ऐकाऐकी ही लड़ाई निर्णयात्मक स्थिति पर पहुंच गई और एक दो क्षण तक लड़ाई का परिणाम अनिश्चित सा रहा।

फिर धीरे धीरे सोरियास के सैनिक पीछे हटने लगे। उसी समय नैस्टा के खूंख्वार और प्रायः अजेय पहाड़ी न जाने बहुत अधिक हानि उठाने से साहस हीन हो कर या शायद धोखा देने के लिए ही मैदान छोड़ कर पीछे हटने लगे और कैप्टिन प्रसाद के बहादुरों ने अपने स्थान को छोड़ कर, जिसे वह घन्टों से जी जान से जकड़े हुए थे, ज़ोर शोर से चिल्लाते और हल्ला मचाते हुए बिजली की सी तेज़ी से ढाल पर उनका पीछा किया। हमारे सैनिकों को आगे बढ़ कर पीछा करते देख कर नैस्टा की सेना रुकी, घूमी और पलट कर कैप्टिन प्रसाद के सब से आगे वाले वर्ग को अनगिनती तलवारों और बरछों से चारों ओर से घेर लिया। एक बार फिर जम कर युद्ध होने लगा। चारों ओर से घिर जाने पर पहले वर्ग का जो कुछ भी भाग बच रहा था वह भी कुछ ही क्षणों में नष्ट हो गया और मैंने देखा कि दूसरा वर्ग भी जिसका नेतृत्व स्वयं कैप्टिन प्रसाद एक बहुत ऊंचे घोड़े पर सवार हो कर कर रहे थे कुछ क्षण में बरबाद होने वाला था। दो तीन क्षण और बीते

और यह वर्ग बिल्कुल छिन्न भिन्न हो गया, उसका झंडा निशान भी गर कर नज़रों से छुप गया और फिर जो घमासान का रन पड़ा है, तो मुझे कैप्टिन प्रसाद का कहीं ढूंढे भी खोज नहीं मिला।

दो चार क्षण बाद ही एक शुभ्र श्वेत केशों और दुम वाला बादामी ंग का घोड़ा घमासान से निकल छूटा और मेरे पास हो कर सरपट निकला चला गया। उस पर न ज़ीन थी और न लगाम और न उस पर कोई सवार ही था। मैंने उसे देखते ही पहिचान लिया, इसी घोड़े पर कैप्टिन प्रसाद सवार थे। अब तो मैं अपने को न रोक सका। अब दुविधा करने का समय ही नहीं था। अपनी सेना के आधे रिसाले को लेकर, जिसकी संख्या कोई ४५००-५००० थी, मैं कैप्टिन की सहायता को दौड़ पड़ा और कुंवर साहिब की आज्ञा की प्रतीक्षा किये बिना सीधा नैस्टा के बरछैतों पर आँधी की तरह से टूट पड़ा। हमें आगे बढ़ता देख कर और हमारे घोड़ों की टापों की आवाज़ से चौकन्ने हो कर नैस्टा के अधिकतर सैनिक पीछे की ओर घूमे और पलट कर हम पर टूट पड़े। भरपूर शक्ति से आक्रमण करने पर भी हम शत्रु को एक इंच भी पीछे नहीं हटा सके। सैकड़ों हमारी तलवार के घाट उतर गये, सैकड़ों कुचल गये, सैकड़ों को हमने काट डाला, मगर व्यर्थ, वह मर मर कर फिर जी उठते मालूम होते थे, उनकी पैनी तलवारें हमारे घोड़ों के शरीरों में घुसी जा रही थीं, वह हमारे घोड़ों को मार रहे थे, उन्होंने हमारे घोड़ों की ज़ीन काठियों को कसने वाली चमड़े की पट्टियों को काट डाला और फिर घोड़ों की पीठ पर से फिसल कर गिरते हुए सवारों के टुकड़े टुकड़े कर डाले।

पलक झपकते ही मेरा घोड़ा भी मारा गया, लेकिन सौभाग्य से मेरी अपनी घोड़ी, जिसका रंग कोयले जैसे काला था और जो सम्राज्ञी निलिप्था ने मुझे भेंट में दी थी, मेरे साथ ही थी। मैं लपक कर उस पर सवार हो गया। इस बीच जितनी भी मारकाट मैं कर सकता था कर रहा था, क्योंकि उस घमासान के युद्ध में अपने पराये की पहिचान ही नहीं हो पा रही थी, और मुझे अपने सैनिक भी कहीं दिखाई हनीं दे रहे थे। इस भीषण चिल्ल पुकार, शोर गुल, कराहट चिल्लाहट, और लोहे लोहा से बजने की झनझनाहट में मेरी आवाज़ भला

क्या सुनाई देती । थोड़ी ही देर में मैं कैप्टिन प्रसाद के वर्ग के अव-शिष्ट भाग से जा टकराया । यह चुने हुए सैनिक कैप्टिन को अपने घेरे में लिये जी जान से लड़ रहे थे और भयानक मारकाट हो रही थी । लड़ते लड़ते मैंने किसी नीचे पड़े हुये व्यक्ति से ठोकर खाई, झुक कर देखने पर मुझे कैप्टिन का चश्मा चमकता दिखाई दिया । वह घायल हो कर घुटने के बल औंधे पड़े हुए थे और उनके सिर पर एक भयानक दैत्याकार सैनिक अपना भयानक खांडा ताने उन पर हमला करने के लिए तैयार था । मैंने अपनी कटार, जिसे मैंने उस मसाई के हाथ से लिया था जिसका हाथ मैंने नाव में काट डाला था, उस दैत्य की पीठ में दस्ते तक घुसेड़ दी । लेकिन मेरे कटार घुसेड़ते घुसेड़ते वह तड़पा और पलट कर उसने अपने खांड़े से मेरे बाये कन्धे पर इतनी ज़ोर से वार किया कि यद्यपि मेरी झिल्लम ने मेरी जान अवश्य बचा ली लेकिन तो भी मुझे संघातिक चोट लगी । वार इतनी जोर से किया गया था कि मै कटे पेड़ की तरह चारों खाने चित्त घायलों और मुरदों के बीच जा पड़ा और बेहोश हो गया । जब मुझे चेत आया तो मैंने देखा कि नैस्टा के बचे खुचे सैनिक पीछे को पलट गये थे और मैदान छोड़ कर नदी की तरफ़ भागे जा रहे थे, और मेरे सिरहाने कैप्टिन प्रसाद खड़े मन्द मन्द मुस्करा रहे थे ।

"मौत के मुंह में जाते जाते आप बाल बाल बच गये", उन्होंने मुझे आंखे खोलते देख कर खुशी से नाचते हुए कहा, "मगर लाल साहिब, वह भला जिसका अन्त भला ।"

मैंने सिर हिला कर अपनी सम्मति जनाई, लेकिन मुझे उसी समय यह स्पष्ट मालूम हो गया कि युद्ध का अन्त मेरे लिए भला नहीं हुआ था । मुझे संघातिक चोट लगी थी ।

उसी समय मैंने देखा कि हमारे दायें और बायें पार्श्वों पर जमे रिसालों की छोटी छोटी टुकड़ियां, जिन के साथ हमारी कोतल सेना के तीन हज़ार ताज़ा दम बरछैत आ कर मिल गये थे, अपने स्थानों से तीर की तेज़ी से निकलीं और सोरियास की छिन्न भिन्न शृंखला हीन सेना के बाजुओं पर शिकारी बाज़ की तरह टूट पड़ीं । इस धावे ने लड़ाई का नक़्शा ही बदल दिया । दो चार क्षणों में ही निराश छिन्न भिन्न शत्रु

सिर पर पैर रख कर नदी की ओर भाग निकला। नदी के किनारे पर पहुंच कर शत्रु ने एक वार फिर अपनी बची खुची शक्ति को एकत्रित करने की कोशिश की। लड़ाई कुछ देर के लिये धीमी पड़ गई। मै इस बीच किसी न किसी तरह अपने दूसरे घोड़े पर सवार हो गया। इसी समय मुझे आगे बढ़ कर आक्रमण करने की आज्ञा कुंवर साहिब से मिली। आकाश गुंजा देने वाले नारे लगाती और झन्डों और बरछों को हवा में चमकाती मेरी बची खुची सेना ने झपट कर शत्रु पर वार किया और जिस मोर्चे को शत्रु सवेरे से दाबे हुए था उससे उसको इंच इंच करके धीरे धीरे पर निश्चय रूप से पीछे ढ़केलना शुरू किया।

आखिरकार अब आक्रमण करने का हमारा दांव आया था। हमारी सेना आगे बढ़ती चली गई। मृतकों और मृत प्रायों के शवों को कुचलते काटते मारते हम नदी तक पहुंचे ही थे कि मैंने एक आश्चर्य जनक दृष्य देखा। अपने घोड़े की गर्दन को दोनों हाथों से लपेटे और अपने मुख को घोड़े की अयाल में छुपाये कोई सवार अन्धा धुन्ध तेजी से हमारी ओर घोड़ा फेंके चला आ रहा था। यह सवार ज्यू वैण्डी के जनरल जैसी वरदी पहने हुए था। परन्तु ज़रा और पास आने पर मैंने उस सवार को पहिचान लिया, वह हमारे खोये हुए अल्फान्सों के अतिरिक्त और कोई नहीं था। ऐसी गंभीर परिस्थिति में भी उसकी ऊपर को मुड़ी मूछों को देख कर उसे पहिचान लेना असम्भव नहीं था। एक क्षण बाद ही वह हमारी टुकड़ी में धंस पड़ा, ठोकर खा कर गिरते गिरते बचा और सौभाग्य से उस की तिक्का बोटी होते होते रह गई। अन्त मे किसी सैनिक ने उस के घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे रोक लिया। धर पकड़ कर उसे मेरे पास लाया गया। हम उस समय अपनी बची खुची सेना को फिर से क्रमानुसार जमाने और अपनी हानि का अनुमान लगाने के लिए तनिक ठहर गये थे।

"ऐ हुज़ूर," डर के मारे उसकी बोलती बन्द सी हो रही थी, उस के मुंह से बात नहीं निकल रही थी, "हमारी आंखें हमें धोखा तो नहीं दे रही हैं, आप ही हैं हुज़ूर। ऐ हुज़ूर कितनी मुसीबतें हम पर टूटी हैं, हुज़ूर क़यामत आ गई है बस क़यामत। पर हुज़ूर जीत आप की ही होगी, आप ही के सिर सेहरा बंधेगा फ़तह का हुज़ूर। उन कमीनों के

पांव उखड़ गये हैं, वह भाग रहे हैं हुजूर, लेंडी कुत्तों की तरह दुम दबा कर भाग रहे हैं हुजूर। लेकिन सुनिये तो हुजूर, हम तो आप से मिलने की खुशी में कहना भूल ही गये थे कि यह सब फतह बतह बिल्कुल बेकार है। कल सुबह सूरज की पहली किरण के मन्दिर के कलश पर चमकते ही मिलोसिस के राज्य महलों में सम्राज्ञी निलिप्था का खून कर दिया जायेगा, महल के परदेदार अपनी डयूटी से टल जायेंगे, और मन्दिर के पुजारी जा कर उन को जान से मार डालेंगे। ताज्जुब से हमारा मुंह क्या देख रहे हैं हुजूर, यक़ीन नहीं होता हमारी बात पर। उन सालों को ख्वाब में भी यह ख्याल नहीं था कि हम उन की नाक के नीचे एक झन्डे की आड़ में लेटे उनकी सारी मिस्कौट सुन रहे थे। बड़े चलाक बनते थे साले, मगर हुजूर यह सब हम ने अपने कानों से सुना है।"

आश्चर्य से मेरी आंखें फटी की फटी रह गईं, मैंने सहमी आवाज़ से कहा, "क्या, क्या कह रहा है तू ?"

"हम ने यह अर्ज़ किया कि हुजूर कि कल रात को वह शैतान का बच्चा नैस्टा पाजी ऐगौन से सारा मामला तै करने गया था। सोपान से राज्य महल में आने वाले फाटक के पहरेदार फाटक को खुला छोड़ कर अपने स्थान से टल जायेंगे और नैस्टा और ऐगौन के चेले चांटे महल में घुस कर सम्राज्ञी को तलवार के घाट उतार देंगे। वह पाजी उन का खून अपने हाथ से नहीं करेगा।"

"मेरे साथ आ," मैंने कहा और अपने आधीन अफ़सर को बुला कर और उसे सेना की कमान सौंप कर मैंने अल्फान्सों को साथ लिया और उस ओर घोड़ा फेंक दिया जहां इस स्थान से कोई पौन मील दूर ड्यू वैराडी का राजसी झन्डा बड़ी शान से लहरा रहा था और जहां खुद कुंवर साहिब के, यदि वह अभी तक जीवित थे तो, मिलने की आशा थी। हम अन्धा धुन्ध घोड़े फेंके चले गये, मृतकों, घायलों, घोड़ों के शवों सभी कुछ को कुचलते रक्त से भरे गढ़ों में रक्त के छींटे उड़ाते हमारे घोड़े भागे जा रहे थे। दूर से ही मैंने देखा कि सम्राज्ञी निलिप्था से भेंट में मिले श्वेत घोड़े उषा किरण पर कुंवर साहिब खड़े बड़ी चिन्ता और आकुलता से युद्ध की प्रगति देख रहे थे। ऊंचे घोड़े पर सवार

कुंवर साहिब आस पास खड़े जनरलों से हाथ भर ऊंचे अलग दिखाई दे रहे थे।

हमारे वहां पहुंचते ही हमारी सेना ने, जिस को मैं नदी के पास छोड़ आया था, फिर कूच करना शुरू कर दिया। कुंवर साहिब के सिर पर रक्त से लतपत एक चीथड़ा लिपटा हुआ था, लेकिन मैंने देखा कि उनकी आंखें पहले जैसी ही तीक्ष्ण और चुभती हुई थीं। उनके पास ही खड़ा हुआ था बूढ़ा असम्लोपागस, उसकी इन्कूसीकास रक्त से लाल हो रही थी जैसे उस पर सिंदूर मल दिया गया हो और वह स्वयं भी सिर से पैर तक रक्त से नहाया हुआ था, पर वह अब भी ताज़ा दम था और शायद उसे कोई चोट भी नहीं लगी थी।

"क्या हुआ है लाल साहिब ?" कुंवर साहिब ने चिल्ला कर पूछा। मैंने जान बूझ कर हिन्दी में जवाब दिया।

"अब और होने को रह ही क्या गया है। कल प्रातःकाल सूर्य की पहली किरण के साथ ही सम्राज्ञी को जान से मार डालने का षड़यंत्र हुआ है। इस अल्फान्सों ने जो अभी अभी सोरियास के चंगुल से बच कर भाग आया है सभी कुछ अपने कानों से सुना है," और फिर मैंने एक ही सॉस में जो कुछ उसने मुझ से कहा था दुहरा दिया।

सारी बात को सुन कर कुंवर साहिब का मुख भय और आशंका से पीला पड़ गया। अब हमारी बातें हिन्दी में होने लगीं।

"उषा फूटते ही," उन्होंने गहरी सांस लेते हुए कहा, "अभी सूर्यास्त हो रहा है और सूर्योदय होता जाता है ४ बजे से पहले और हम मिलोसिस से सौ मील दूर हैं—और हमारे पास अधिक से अधिक नौ घन्टे का समय है—अब क्या किया जाये, लाल साहिब ?"

मेरे दिमाग़ में सहसा एक विचार आया, "क्या आपका घोड़ा ताज़ा दम है ?" मैंने उनके श्वेत पानीदार घोड़े को दिखाते हुए पूछा।

"जी हॉ, मैं अभी इस पर सवार हुआ हूँ—मेरा पहला घोड़ा मेरी रान तले ही मारा गया। वह दाना घास भी खा चुका है।"

"मेरा घोड़ा भी ताज़ा दम है; उस पर से उतर पड़िये कुंवर साहिब, उसे असम्लोपागस को दे दीजिये कुँवर साहिब, वह पक्का

शहसवार है। भगवान ने चाहा तो हम दोनों सूर्योदय से पहले ही मिलोसिस में जा पहुँचेंगे, और यदि समय से पहले न पहुंच सके, तो हरि इच्छा, जो ईश्वर को मंजूर है होगा। नहीं, आपका जाना नहीं हो सकेगा कुंवर साहिब, आपका यहां से एक इंच भी हिलना असम्भव है। आपको सभी पहचान लेंगे और आपको भागता देख कर जीती बाजी हार जायेगी। अभी हमारी पूरी जीत नहीं हुई है, पांसा अब भी पलट सकता है। आपको भागता देख कर सिपाही समझेंगे कि आप मैदान छोड़ कर भागे जा रहे हैं, उनका दिल टूट जायेगा, चारों ओर भगदड़ पड़ जायेगी। लड़ाई की लड़ाई हार जायेगी और फिर हम सभी मारे जायेंगे। जिद छोड़िये कुँवर साहिब और झपाके से उतर पड़िये घोड़े से।"

पलक झपकते ही कुंवर साहिव उतर पड़े और मेरे कहते ही बूढ़ा अमस्लोपागस छलाँग लगा कर घोड़े की पीठ पर बैठ गया।

"अच्छा विदा," मैंने कहा, "यदि हो सके तो एक हजार सैनिक हमारे पीछे-पीछे अभी ही मलोसिस भेज दीजियेगा। मगर सब से पहले किसी हरकारे को बायें पार्श्व को भेज दीजिये जो मेरे नायक को मेरी अनुपस्थिति का कोई भी कारण बता सके। मुझे न देख कर उसके कहीं पैर न उखड़ जायें।"

"वायदा कीजिये लाल साहिब कि आप उसे बचाने की यथाशक्ति कोशिश करेंगे?" कुँवर साहब ने गंसीली टूटती सी आवाज में कहा।

"सिर की बाजी लगा कर भी, जाइये कुंवर साहिब आप सेना से बहुत पिछड़ गये हैं।" क्योंकि हमारी बातचीत हिन्दी में हुई थी इसलिए पास खड़े ज्यू बैण्डी जनरल हमारी बातें न समझ सके।

कुंवर साहिब ने बड़ी यास भरी दृष्टि मेरे ऊपर डाली, जो कुछ कहने से रह गया था वह उनकी उदास आंखों ने कह दिया। फिर वह अपने घोड़े को ऐड़ मार कर अपनी आगे बढ़ती सेना से जा मिले। सेना इस बीच नदी तक जा पहुंची थी और शत्रु और मित्र के रक्त से नदी में जल के स्थान पर रक्त की धार बह रही थी।

जिस तरह तोप के मुंह से गोला छूटता है उसी तेजी से मैंने और अमस्लोपागस ने उस भयानक युद्ध क्षेत्र को पीछे छोड़ कर

मिलोसिस की ओर अन्धा धुन्ध घोड़े फेंक दिये और कुछ ही क्षणों में हम भयानक युद्ध क्षेत्र से काफी दूर निकल गये, इतनी दूर कि रक्त की गन्ध, घायलों की चीख पुकार. लड़ाई का शोर, घोड़ों की हिनहिनाहट सभी कुछ की आवाज़ इतनी धीमी सुनाई देने लगी जैसे कहीं बहुत दूर से लहरों के किनारे टकराने की आवाज़ आती है।

अध्याय २१

दूर दूर दूर

एक छोटी सी टेकड़ी पर हम सांस लेने और घोड़ों को ज़रा दम लेने के लिए क्षण भर को रुके, और पीछे की ओर घूम कर उस टेकड़ी के नीचे होने वाले घमासान युद्ध को एक आंख देखा। अस्त होते हुए सूर्य की लाल किरणों से सारा युद्ध क्षेत्र लाल हो रहा था, इस लाली में हमारे पैरों तले होता हुआ भयानक युद्ध बहुत विचित्र सा लग रहा था। इतनी दूर से सिर्फ़ अनगिनती बरछों और भालों से टकरा कर लौटती हुई प्रकाश किरणें ही हमको दिखाई देती थीं, बाक़ी युद्ध का हाल कुछ भी साफ़ दिखाई नहीं देता था। विशाल पहाड़ों, उन पहाड़ों के ढ़ालों पर उगे विशाल वृक्षों और मैदान में उगी ऊंची ऊंची घास ने सारे दृश्य को एक प्रकार से छुपा सा रखा था और इसीलिये इतनी दूर से हम इस भयानक मारकाट को ठीक तरह से देख न सके।

"जीत हमारी होगी मैकुमाज़न, हम ही जीतेंगे मालिक," अपनी गिद्ध जैसी तेज़ आंखों से सारे युद्ध क्षेत्र को सरसरी नज़र से देख कर अमस्लोपागस ने कहा, "देख, वह देख, मालिक 'रजनी बाला' की फ़ौज सारे मोर्चों पर पीछे हट रही है, फुसफुसी मिट्टी में जैसे लोहे की कील धंसती चली जाती है उसी तरह हमारे सवार उसकी फ़ौज में घुसे चले जा रहे हैं, उनका दिल टूट गया है मालिक, अब तो एक हल्ले की ज़रूरत है, एक-हल्ला और मैदान साफ़। लेकिन अफ़सोस मालिक, लड़ाई का आज फ़ैसला नहीं होगा, दुश्मनों के पांव उखड़ने से पहले ही चारों तरफ़ अंधेरा छा जायेगा और अंधेरे में हमला करना मालिक जान बूझ कर सांप के मुंह में उंगल देना होगा मालिक," और यह कह उसने बड़े दुख से अपने सिर को हिलाया। "लेकिन मेरे ख्याल से मालिक कल लड़ाई नहीं होगी, आज की करारी मार उनको नहीं

भूलेंगा, कितने आदमी घास फूंस की तरह काट डाले गये, किस्मत के धनी हीं इस भयानक लड़ाई से जिन्दा बचेगे। आज मैंने अपने जीवन की सब से सुन्दर लड़ाई देखी है मालिक, लड़ा तो वैसे मैं सैकड़ों लड़ाइयों में मगर आज की लड़ाई मालिक, वाह वा क्या कहने हैं, मेरी आंखे जिस नज्जारे को देखना चाहती थी देख चुकीं, अब कुछ और देखने की इच्छा नही है मालिक।"

हमारी यह बाते रास्ते में हो रही थीं क्योंकि हम फिर चल पड़े थे और तेजी से भागते हुए मैंने उसे बताया कि हम कहां जा रहे थे और क्यों जा रहे थे, और साथ ही उसके कान में यह भी डाल दिया कि हमारे काम के असफल हो जाने का अर्थ होगा कि आज के युद्ध में जितने भी सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान चढ़ाया है उनका यह बलिदान रेत में तेल मिलाने की भांति एक दम व्यर्थ हो जायेगा।

"ओफ, सौ मील और वह भी इन्हीं घोड़ों पर, सिर्फ इन्हीं पर, और वहां पहुंचना भी है पौ फटने से पहले। अच्छा मालिक जिन्दगी का मोह छोड़ कर घोड़े फेंके चला चल। इन्सान तो सिर्फ कोशिश ही कर सकता है मेकुमाज़न, कोशिशों का फल देने की उसमें समाई ही नहीं है। हो सकता है मालिक कि हम उस पाजी जादूगर' ऐगौन का सिर फाड़ डालने के लिए वक्त से पहले ही पहुंच जायें। उस 'हराम-ज़ादे', 'पुजारी' ने एक बार हमें जिन्दा ही आग में झोंक देने की कोशिश की थी, और अब वह अपने घिनौने पंजे 'धौली रानी' की तरफ़ बढ़ा रहा है। उसकी इतनी जुर्रत। चींटी के पर निकल रहे हैं। अच्छा देखूंगा—अगर मेरा नाम 'कठफोड़वा' ठीक है तो मै अपने नाम की क़सम खा कर कहता हूँ मालिक कि चाहे 'धौली रानी' जिन्दा रहे या मारी जाये, मैं उस 'पाजी जादूगर' का सिर काट कर घूरे पर फेंक दूंगा। मैं उसको चीर कर दो कर दूंगा। चाका के सिर की क़सम खा कर कहता हूं मालिक कि मै उस पाजी को चीर कर फेंक दूंगा।" और यह कर वह अपनी इन्कूसीकास को ज़ोर से हवा में हिलाने लगा।

इस बीच अंधेरा बढ़ गया था, लेकिन सौभाग्य से थोड़ी ही देर में चन्द्रमा उदय होने वाले थे और आगे सड़क भी अच्छी थी।

उस धुंधलके में हम उड़े चले गये, हमारे असील पानीदार घोड़े भी शायद हमारे कार्य की गुरुता को समझ गये थे और लंबे लंबे कदमों से जी जान घोड़े दौड़े चले जा रहे थे, मील पर मील पीछे छूटते जाते थे, अभी तक घोड़ों की चाल में कोई कमी नहीं आई थी। पहाड़ों के ढालों पर भी हम दौड़े जा रहे थे, मैदानों में भी हम भागे जा रहे थे। सामने की नीली नीली पहाड़ियां पास और पास आती जा रही थीं, अब हम उसकी कड़ी चढ़ाई पर जा रहे थे, अब हम चढ़ाई खत्म कर के चोटी पर पहुंच गये थे, अब हमने उसे पार कर लिया था, अब हम उसके परले ढाल पर घोड़े फेंके चले जा रहे थे और पहाड़ों की दूसरी श्रेणी की अस्पष्ट रूपरेखा दूर क्षितिज पर दिखाई दे रही थी।

हम दौड़े चले जा रहे थे, आगे और आगे, न क्षण भर को सांस लेने को ठहरते थे और न लगाम ही खींचते थे. रात्रि की नीरव खामोशी में हम उड़े जा रहे थे, केवल हमारे घोड़ों की टापों की नपी तुली आवाज सुनाई दे रही थी। उजड़े गांवों और क़स्बों में होकर हम आंधी की तरह उड़े चले जा रहे थे, कहीं कहीं किसी टूटे फूटे खण्डहर में से किसी भूखे आवारा कुत्ते का भौंकना सुनाई दे जाता था। काली पृथ्वी पर निस्पन्द लेटी बल खाई हुई सड़क सांप की केंचुली सी मालूम होती थी बिल्कुल सुनसान, सफेद और ठण्डी, हम उड़े जा रहे थे, मील पर मील पीछे छूट रहा था और घण्टे पर घण्टा बीतता जाता था।

हम बातें भी नहीं कर रहे थे, हम दोनों अपने असील पानीदार घोड़ों की गरदनों से लिपट कर दोहरे हो गये थे और उनके गहरे गहरे सांसों की आवाज़ों को सुन रहे थे। यह उत्तम घोड़े लंबी लंबी सांसें ले कर अपने विशाल फेफड़ों को हवा से भरते थे, और नथुनों से निकाल देते थे। उनके शरीर से पसीना चू रहा था और मुंह से फेन गिर रहा था। उनकी क्रम से उठती और गिरती अडिग टापों की आवाज़ हमारे कानों में गूंज रही थीं। सफेद घोड़े पर सवार श्यामवर्ण अमस्लोपागस पूरा दैत्य सा लगता था, साक्षात यमराज की मूर्ति। कभी कभी वह अपने गंभीर मुख को भयानक रूप से उठा कर काली पृथ्वी के वक्ष पर लेटी सांप की केंचुली जैसी सड़क को देख लेता था

और रह रह कर अतिशय क्रोध से अपने फरसे को हिलाने लगता था।

और इसी तरह समय बीतता गया और हम आगे बढ़ते गये। बिना क्षण भर को रुके या विश्राम लिये घण्टे पर घण्टे गुजरते जा रहे थे।

आखिर कार मैंने अनुभव किया कि जिस पानीदार घोड़े पर मैं सवार था उस की शक्ति जवाब देने लगी थी। मैंने अपनी घड़ी देखी। रात प्रायः आधी बीत चुकी थी और हमने आधे से अधिक रास्ता तै कर लिया था। एक छोटी सी टेकरी पर एक झरना था, मुझे उस झरने की बात मालूम थी क्योंकि चार रात पहले ही हमने उसके किनारे पड़ाव डाला था। मैंने अमस्लोपागस से यहां रुकने का इशारा किया। मैं अपने आपको और घोड़ों को दम लेने के लिए दस मिनट का विश्राम देना चाहता था। मेरा इशारा पाते ही अमस्लोपागस रुक गया और हम घोड़ों से उतर पड़े—कहना तो यह ठीक होगा कि अमस्लोपागस उतरा और उसने सहारा दे कर मुझे उतारा। मैं थक कर चूर हो गया था, मेरा जोड़ जोड़ दुख रहा था और मेरे ताज़ा घाव में असहनीय पीड़ा हो रही थी, मालूम होता था जैसे कोई कलेजे को चीर डाल रहा हो। मेरा अपने आप उतरना नामुमकिन था। हमारे बहादुर घोड़े दम लेने लगे, पहले एक पांव को उठा कर फिर दूसरे को, इस तरह बारी बारी से अपने पैरों को उठा कर वह अपने अकड़े हुए जोड़ों को विश्राम देने लगे। उन बेचारों के शरीरों से पसीना मेंह की तरह टपक रहा था और मुंह से फेन के झाग चारों ओर उड़ रहे थे।

अमस्लोपागस को घोड़ों की लगाम पकड़ा कर मैं लड़खड़ाता, गिरता पड़ता झरने तक पहुंचा और उसके शीतल स्वच्छ जल को भरपेट पिया। दोपहर से जब से लड़ाई शुरू हुई थी एक घूंट व्हिस्की के सिवाय मैंने घूंट पानी तक नहीं पिया था और मेरा तालू प्यास से फटा जा रहा था। हद दरजे की थकावट के कारण मुझे भूख प्यास बिसरी हुई थी। झरने के शीतल जल से हाथ मुंह धो कर मैं वापस लौटा और अमस्लोपागस को पानी पीने भेज दिया। इसके बाद हमने

अपने घोड़ों को एक एक घूंट—सिर्फ एक घूंट अधिक नहीं—जल पिलाया, उन बेचारे बेजबानों को पानी के पास से हटाना कितनी निर्दयता का काम था, बड़ी मुश्किल से हम उनको वहाँ से हटा कर लाये।

अभी हमारे चलने में दो मिनट बाकी थे और इन दो मिनटो को मैंने इधर उधर घूम कर अपने अकड़े हुए जोड़ों को ठीक करने और अपने घोड़ों की दशा की देख भाल करने में लगाया। मेरी घोड़ी, यद्यपि वह बहुत बांकी और असील पानीदार थी, काफी थक गई थी। उसने अपना सिर लटका रखा था और उसकी आंखों की चमक धुंधली पड़ गई थी। वह निश्चित रूप से बहुत दुखित दिखाई देती थी। परन्तु 'उषा किरण', निलिप्था का राजसी अश्व, अभी तक दमदार था यद्यपि उसे अभी तक अधिक बोझ लेकर भागना पड़ रहा था। इसमें संदेह नहीं कि थकावट से उसकी टांगे झुकी जा रही थीं, परन्तु उसकी आंखों की चमक अब भी वैसी ही थी। वह बड़ी अदा और शान से सिर ऊंचा किये चारों ओर फैले अन्धेरे मे आंखें फाड़ कर इस तरह देख रहा था जैसे वह कह रहा हो कि चाहें किसी और की शक्ति जवाब दे जाये लेकिन वह अब भी मिलोसिस नगर की ४५ मील की दूरी, को पूरा करने का दम और हौसला रखता था। इसके बाद अमस्लोपागस ने अपने लौहे-कठोर हाथों से मुझे बच्चों की तरह उठा कर घोड़ी की पीठ पर बिठा दिया—कितनी शक्ति थी उस वृद्ध में—और बिना रकाब में पैर डाले कूद कर अपने घोड़े पर सवार हो गया और हम फिर चल पड़े, पहले धीरे धीरे और जब घोड़ों के अकड़े शरीरों में गर्मी आ गई तो हमने उनको एक बार फिर पूरी रफ्तार से छोड़ दिया।

अगले दस मील हम हवा की रफ्तार से भागते चले गये, और फिर आई कोई ६-७ मील की थका देने वाली चढ़ाई। चढ़ाई पर कोई तीन बार मेरी घोड़ी लड़खड़ाई और मुझे लिये गिर गिर पड़ी। परन्तु टेकड़ी की चोटी पर पहुंच कर उसने प्राण पण से अपने आप को संभाला और लंबे लंबे क़दमों से ढ़ाल पर अन्धाधुन्ध दौड़ पड़ी, उसकी सांस रुक रुक कर आ रही थी। जब से हम रवाना हुए थे मेरी घोड़ी

इतनी तेजी से नहीं दौड़ी थी, यह तीन चार मील हमने बन्दूक की गोली की रफ्तार से पूरे किए, लेकिन मुझे मालूम हो गया कि यह दौड़ मेरी घोड़ी की अन्तिम दौड़ थी, बुझते दीपक का तेजी से फड़फड़ाना भर था। मैंने ग़लत अनुमान नहीं किया था। ऐकाऐकी मेरी थकी हुई घोड़ी लगाम को दांतों में दबा कर बड़ी भयंकर रफ्तार से कोई ४०० गज़ तक भागती चली गई। फिर उसकी चाल लड़खड़ाई, वह रुकी और सिर के बल धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी। मै उसके गिरते ही कूद कर एक ओर हो गया। मैं अभी अपने आपको संभाल ही रहा था कि उस महान् वीर पशु ने अपने सिर को उठा कर अपनी बड़ी करुण, दयनीय और लाल सुर्ख आंखों को मेरे मुख पर जमा दिया मानों वह मुझ से कुछ कहना चाहती थी। मैंने उसके सिर को अपनी बांहों मे भर लिया। बड़ी कृतज्ञ दृष्टि से वह मुझे देखती रही, फिर ऐकाऐकी ही उसका सिर एक ओर को लटक गया, उसकी मृत्यु हो गई। उसका हृदय फट गया था।

अमस्लोपागस ने घोड़ी के शव के पास उषा किरण को रोका और मैंने बड़ी निराशा से उसकी ओर देखा। पौ फटने से पहले अभी हमको बीस मील और जाना था, मेरे सामने प्रश्न था कि एक घोड़े से इस दूरी को कैसे पार कर सकेंगे। पौ फटने से पहले मिलोसिस पहुंचना अब तो बिल्कुल दुराशा मात्र थी, लेकिन मैं बूढ़े जूलू की दौड़ने की असाधारण शक्ति को भूल गया था।

बिना एक शब्द बोले ही बूढ़ा जूलू घोड़े से कूद पड़ा और बच्चों की तरह मुझे उठा कर काठी पर बिठा दिया।

"और तू क्या करेगा, अमस्लोपागस?" मैंने पूछा।

"दौड़ूंगा", उसने मेरी रिकाब को पकड़ते हुए कहा।

और हम फिर अपने लक्ष्य की ओर जान छोड़ कर दौड़ पड़े, पहली ही जैसी रफ्तार से। घोड़े के बदल जाने से मुझे जो सुख मिला वह बता नहीं सकता। जिस किसी को भी जी जान की बाज़ी लगा कर इस तरह दौड़ लगानी पड़ी होगी वही समझ सकेगा कि घोड़े के बदल जाने से कितना सुख मिलता है।

उषा किरण उस चौरस मैदानी भाग में पूरी रफ्तार से भागा जा रहा था, और बूढ़ा जूलू उसके क़दम बक़दम था। बूढ़े अमस्लोपागस

को घोड़े की चाल से मील पर मील पार करते देखना आश्चर्य जनक दृष्य था, उसके होंठ थोड़े खुले हुए थे और नथुने घोड़े के नथुनों की तरह फैल गये थे। प्रत्येक पांच मील पर हम उसे थोड़ा सा विश्राम देने और फूली सांस को ठीक करने को ठहरते थे। और दो चार क्षण विश्राम कर के हम फिर हवा की चाल से दौड़ पड़ते थे। मैं थक कर चूर हो गया था, मुझे सिर उठाये रखना कठिन था।

"तीसरे पड़ाव पर पहुँच कर मैंने कहा, "असस्तोपागस तू थक गया होगा। क्या तू और आगे जा सकता है? अगर तू चाहे तो थोड़ी देर ठहर कर आराम कर ले और पीछे आ जाइयो।"

उसने जवाब में अपने फरसे को उठा कर सामने की ओर फैले एक अस्पष्ट धुंधले से विशाल आकार को दिखाया। सामने था मिलोसिस का विशाल सूर्य मन्दिर—हम से सिर्फ कोई पांच मील दूर।

"या तो वहां पहुंचूगा मालिक या रास्ते में ही मर जाऊंगा, "उसने गहरी सांस लेते हुए कहा।

ओफ वह आखिरी पांच मील। मेरी टांगों की खाल छिल कर उधड़ गई थी और घोड़े के हर क़दम पर मुझे असहनीय पीड़ा हो रही थी। सिर्फ यही नहीं था। मैं थकावट से चूर चूर हो रहा था, भूख और अनिद्रा से मुझे अपने तन बदन का भी होश नहीं था। कल शाम को मेरी बांयी ओर लगी संघातिक चोट मेरी जान लिये ले रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई हड्डी धीरे धीरे मेरे बांये फेफड़े में चुभ रही हो, और तनिक सी हरकत से भी ऐसा लगता था कि वह मेरे बांये फेफड़े में घुस कर उसे फाड़ डालेगी। और बेचारा उषा किरण उस की शक्ति भी जवाब दे चुकी थी, और इस में आश्चय ही क्या था, वह एक सांस सौ मील से दौड़ा चला आ रहा था।

प्रातः समीर चलने लगी थी, खिलते पुष्पों की सुगन्ध आने लगी थी, अब ठहरना खतरनाक था। मैंने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि अफसोस टूटी कहां कमन्द, जब कि दो चार हाथ लबे बाम रह गया। सामने था लक्ष्य, मैंने निश्चय किया कि जब तक दम में दम है ठहरना नहीं है, रास्ते में ही मर जाना मंजूर है पर ठहर कर अपनी मिहनत पर पानी फेरना हरगिज हरगिज मंजूर नहीं। चलता चल और बढ़ता चल, जहां दम

टूट जाये वहीं ईश्वर के चरणों में अपने को समर्पित कर दें. यही मैंने सोचा। ओस से भीगी हवा चल रही थी जैसी कि पौ फटने से पहले चला करती है और चारों ओर हल्का हल्का धुंध छाया हुआ था। और हम तीनों गिरते पड़ते पूरी रफ्तार से बढ़ते ही चले गये।

अब हम मिलोसिस नगर के बाहरी परकोटे में लगे कांसे के विशाल फाटक पर पहुँच गये थे, वहां पहुंचते ही मेरा दिल डूबने लगा, एक नया भय मेरे मन को पीड़ा पहुंचाने लगा। "यदि पहरेदारों ने हमें नगर में न घुसने दिया तो," और इस "तो" का उत्तर देना असम्भव था

"खोलो", "फाटक खोलो". मैंने बड़ी रौबीली आवाज़ में जोर से कहा और साथ ही शाही सांकेतिक शब्द. भी बताया। "खोलो", "फाटक खोलो", "एक दूत आया है, युद्ध का समाचार लेकर एक दूत आया है।"

"क्या ढंग चाल है लड़ाई का ?" पहरेदार ने पुकार कर पूछा, "तू कौन है जो तूफ़ान की तरह उड़ा आ रहा है, और तेरे साथ वह कौन है जिसकी जीभ कुत्ते की तरह बाहर को लटकी हुई है"—असस्लोपागस की जीभ वास्तव में बाहर लटकी हुई थी—"तेरे साथ कौन है वह जो घोड़े की रिकाब पकड़े दौड़ा चला आ रहा है ?"

"यह हम हैं श्रीमन्त मैंकुमाजन और हमारे साथ हमारा भृत्य जूलू है। खोलो, फाटक खोलो। हम युद्ध की ख़बर लाये हैं।"

विशाल फाटक अपने गिराड़ीदार पहियों पर घूम गया और सन्नाटे की आवाज़ के साथ उठने वाला पुल नीचे गिर पड़ा। हमने फाटक में हो कर पुल को पार किया और नगर में दाखिल हो गये।

"क्या ख़बर है महाराज, ख़बर क्या है ?" पहरेदार ने पुकार कर पूछा।

"इन्कूबू सोरियास की सेना को मार मार कर पीछे ढकेल रहे हैं, जैसे तेज हवा बादलों को उड़ा देती है", मैंने जल्दी से उत्तर दिया और राज्य-महल की ओर घोड़ा दौड़ा दिया।

जीवटदार असील घोड़े एक बार फिर कोशिश कर और उससे भी वीर जीवटदार लौह-पुरुष एक छलांग और, और मंजिल मार ली है।

उषा किरण अभी गिर न पड़ना, पन्द्रह मिनट तक सिर्फ पन्द्रह

मिनट तक और अपने जीवन को धारण किये रह प्यारे, तू और यह ज़ूलू सरदार इस देश के इतिहास में अनन्त काल तक के लिए अमर हो जायेंगे।

हम सुनसान गलियों में हो कर भागे चले गये। अब हम सूर्य मन्दिर तक पहुंच गये थे— एक मील और है मंज़िल—सिर्फ एक मील—चलता रह प्यारे शाबाश जी जान से अपने को संभाले रह, देख घर और कोठियां, पेड़ और झाड़ियां कितनी तेज़ी से पीछे की ओर भागी जा रही हैं, तेरी तेज़ी से सड़क भी तो दिखाई नहीं देती, शाबाश बहादुर, शाबाश, मार लिया है पाला, पचास गज़, अब तो तीस गज़ ही रह गये, जीता रह प्यारे, देख यह है तेरा अस्तबल, आज से तू राजाओं से श्रेष्ठ और वीरों से भी वीर हो गया। चला चल प्यारे, शाबाश।

ईश्वर का धन्यवाद, हम राज्य-भवन तक पहुंच तो गये, और देख उषा की पहली किरणें सूर्य मन्दिर के सुनहरी गुम्बद पर पड़ कर उसे अग्नि शिखा जैसा प्रज्वलित कर रही हैं। * मगर क्या हम महलों तक पहुंच सकेंगे, कहीं वह बदमाश अपना काम पूरा करके चले न गये हों, कहीं अन्दर जाने के रास्ते बन्द न हों।

मैंने एक बार फिर सांकेतिक शब्द दुहराया और ज़ोर से चिल्ला कर कहा, "खोलो, खोलो।"

परन्तु कोई उत्तर नहीं आया, मेरा दिल डूबने लगा, कहीं सब कुछ समाप्त न हो गया हो।

मैंने फिर आवाज दी और इस बार एक बहुत धीमी आवाज़ ने जवाब दिया। आवाज से मैंने पहिचान लिया कि बोलने वाला कारा था, निलिप्था के अंग रक्षक दल का नायक। मैं जानता था कि वह सुवर्ण जैसा खरा और फ़ौलाद जैसा तीक्ष्ण था—यह वही नायक था जिसे उस दिन निलिप्था ने सोरियास को, जब सोरियास ने भाग कर मन्दिर में आश्रय लिया था, गिरफ्तार करने भेजा था।

"तू है कारा", मैंने चिल्लाकर कहा, "यह हम हैं मैंकुमाजन, पहरेदारों से पुल गिराने के लिये कह दे, और फाटक को पूरा खोल दे। जल्दी कर कारा ज़ल्दी कर, देर करने से सब बिगड़ जायेगा।"

---

* मन्दिर के कलश के बहुत ऊंचे होने के कारण, उषा की प्रथम किरणें पौ फटने से कुछ पूर्व उस पर पड़ने लगती थीं। (ला. व. सिं)

इस काम में जितनी देर लगी उतनी ही में मेरे सातों कर्म हो गये. मालूम होता था कि न जाने कितना समय लग रहा था, आखिरकार पुल गिरा, फाटक आधा खुला और हम राज्य-भवन के आंगन में आ गये। यहां पहुंच कर बेचारा उषा किरण ऐकाऐकी ही मुझे लिये दिये गिर पडा, और मुझे ऐसा लगा जैसे वह मृत्यु के मुख में पहुंच गया हो। मैंने बड़ी कठिनाई से अपने को गिरने से बचाया और एक खम्बे का सहारा लेकर चारों ओर आंखे फाड़ फाड़ कर देखने लगा। सिवाय कारा के कोई भी मनुष्य दिखाई नहीं दे रहा था. उसके चेहरे पर भी हवाइयां उड़ रही थीं और कपड़े चिथड़े चिथड़े हो गये थे। उसने अकेले ही पुल गिराया था और अकेले ही उस जंगी फाटक को खोला था और अब अकेले ही पुल को उठा कर फाटक बन्द कर रहा था। पुल को उठाने और फाटक बन्द करने के लिए एक मशीन लगी हुई थी और यह मशीन इतनी उत्तम थी कि एक आदमी इस काम को भली प्रकार कर लेता था।

"पहरेदार कहां हैं ?" मैंने हकलाते हुए पूछा।

"मुझे मालूम नहीं", उसने जवाब दिया, "दो घण्टा पहले जब कि मैं सो रहा था तो मेरे ही सिपाहियों ने मुझे छाप लिया और मेरे हाथ पैर बांध कर डाल दिया, और मैंने अभी इसी क्षण अपने दांतों से रस्सी को काट कर अपने आपको छुड़ाया है। मुझे डर है मैकुमाजन कि हमारे साथ दग़ा की गई है।"

उसकी बात से मेरी जान में जान आई। कारा को हाथ पकड़ कर खींचता हुआ मैं गिरता पड़ता महलों की ओर दौड़ पड़ा, मेरे पीछे आ रहा था अमस्लोपागस, शराबियों की तरह गिरता पड़ता, टकराता लड़खड़ाता। महल के आंगन में हो-कर हम केन्द्रीय हॉल में पहुंचे। सारे हॉल में मौत जैसा सन्नाटा फैला हुआ था, हॉल से हम गये निलिप्था के शयन-कक्ष को।

हम पहले कमरे में पहुँचे, वहां का पहरेदार नदारद था, दूसरे में पहुंचे. वहाँ भी पहरेदार नहीं था। ओफ़ शायद ज़ालिम अपना काम कर गुजरे, क्या हम देर से पहुंचे बहुत देर से। इन कमरों का सन्नाटा और खामोशी बड़ी भयानक लग रही थी, मुझे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे मैं कोई बहुत डरावना स्वप्न देख रहा था। सीधे हाथ की ओर

वाले निलिप्था के शयन-कक्ष में हम धंस पड़े, हमारे हृदय धुकड़ पुकुड़ कर रहे थे कि कहीं ज़ालिम अपना वार न चला गये हों, हम बुरी से बुरी खबर सुनने के लिए भी तय्यार थे। कमरे में रोशनी थी और उस रोशनी में हमने देखा कि पलंग पर कोई मनुष्य मूर्ति सोई हुई थी। ईश्वर का धन्यवाद, कोटानुकोट धन्यवाद, पलंग पर सोई मनुष्य मूर्ति स्वयं सम्राज्ञी निलिप्था थीं और उनका बाल भी बांका नहीं हुआ था। हमारे कमरे में घुसने की खटपट से वह चौंक कर जागीं और रात्रि-वस्त्रों को ही पहने हमारे सामने आ खडी हुईं, उनकी आंखे नींद के बोझ से झुकी हुई थी और आश्चर्य, भय तथा लज्जा से उनका वक्ष तेज़ी से उठ बैठ रहा था। उत्तेजना और क्रोध से उनका सुन्दर मुख तमतमा गया।

"कौन हो तुम लोग", उन्होंने ज़ोर से पूछा, "ऐसी बेहूदगी के क्या मानी हैं? ओह आप हैं मैकुमाज़न? मेरी तरफ इस तरह घूर घूर कर क्यों देख रहे हैं? क्या आप कोई बुरी खबर ले कर आये हैं—मेरे प्रीतम—मेरे पति, क्या आप यह कहना चाहते हैं कि वह स्वर्ग को सिधार गये, यह न कहियेगा मैकुमाज़न, यह न कहियेगा, मै आपके पैर पकड़ती हूं मैकुमाजन", अपनी बर्फ जैसी ठण्डी हथेलियों को असीम निराशा से रगड़ते हुए उसने सुबुक सुबुक कर कहा, उसके नेत्रों से जल धारा गिरने लगी।

"जब मैं वहां से चला था तो इन्कूबू जीवित थे, उनको कुछ घाव अवश्य लगे थे लेकिन कल शाम को वह सोरियास की सेना को पूरे ज़ोर से पीछे ढ़केल रहे थे। अपने मन को शान्त करो सम्राज्ञी। प्रत्येक मोरचे पर सोरियास की हार हो रही है और आपके सैनिक बढ़ बढ़ कर धावा मार रहे हैं।"

"मैं जानती थी", उसने खुशी से नाचते हुए कहा, "मै पहले ही जानती थी, मुझे विश्वास था कि वह अवश्य जीतेगे। यहां के लोग उनको परदेसी कहते थे, और जब मैंने उनको सेना की कमान सौंपी थी तो यहां के पुराने नायक और सामन्त अविश्वास से अपना सिर हिलाने लगे थे। मगर क्या कहा आपने मैकुमाज़न, कल शाम को, और अभी तक पौ भी नहीं फटी है, निस्संदेह···।"

"आप कोई कपड़ा ओढ़ लीजिये सम्राज्ञी", मैंने रोक कर कहा, "और हम को लिए थकान दूर करने के लिए एक घूंट शराब दीजिये। कहां हैं आपकी नौकरानियां और सहेलियां, जल्दी उनको बुलाइये। अगर आप जीवित रहना चाहती हैं तो एक क्षण की भी देर न कीजिये, ठहरिये नहीं सम्राज्ञी, देर न कीजिये, बातें पीछे होती रहेंगी, यह वक़्त काम करने का है।"

सम्राज्ञी को फिर भी हिचकिचाते देख कर मैंने उनको क़सम धरा दी और फिर तो वह दौड़ कर अपने शयन-कक्ष में घुसीं और परदे को हटा कर उससे भी अन्दर वाले कमरे में पहुंची और वहां जा कर जल्दी से एक भारी लबादा ओट जूते पहिन लिये। इस समय तक कोई एक दर्जन स्त्रियां उल्टे सीधे अधूरे कपड़े पहिने कमरे में घुस आई थीं।

"मेरे पीछे पीछे आओ और बिल्कुल चुपचाप, ज़रा सी भी आवाज़ न हो।" वह सभी उल्लू की तरह एक दूसरे को ताक रही थीं। उनकी समझ में कुछ आ ही नहीं रहा था। वह डरी और सहमी हुई थीं। उन स्त्रियों को लिये मैं बाहरी कमरे में आया।

"अच्छा अगर कुछ हो तो हमारे लिए कुछ खाने पीनेको लाओ, भूख से हमारे प्राण होठों तक आ गये हैं।"

यह कमरा अंग रक्षक दल के अफ़सरों के खाना खाने के काम में आता था, एक स्त्री ने ठण्डा मांस और कई कुप्पी शराब एक अलमारी से खोज निकाली। अमस्लोपागस और मैं एक एक कुप्पी पी गये। शराब के गले से उतरते ही ऐसा लगने लगा जैसे हम में दुबारा जीवन आ गया हो। हमारी नसों में गरमी दौड़ने लगी, अब हम फिर मुरदों से आदमी बन गये थे।

"मेरे बात सुनो निलिप्था", ख़ाली कुप्पी को मेज़ पर रखते हुए मैंने कहा, "क्या तुम्हारी सहेलियों और बांदियों में से कोई दो अक्लमन्द और होशियार स्त्रियां हैं?"

"हां हैं?"

"तो उनसे कहो कि बग़ल के दरवाजों से निकल कर भागती हुई उन आदमियों के पास जायें तो तुम्हारे ख्याल से आड़े वक्त पर तुम्हारा साथ दे सकते हैं और उन से कहें कि हथियारों से लैस हो कर जितने

भी संगी साथियों को जुटा सकें उनको साथ ले कर तुमको मौत के मुंह से निकालने सिर पर पैर रख कर भागे चले आयें। सवाल मत पूछो, जो कहता हूँ करो, हिचिर मिचिर मत करो निलिप्था, जल्दी करो जल्दी, कारा दोनों को महल के बाहर छोड़ आयेगा।"

मेरी बात सुन कर निलिप्था घूमी और स्त्रियों के उस झुण्ड में से दो को छांट कर उनसे जो कुछ मैंने कहा था कह दिया, और साथ ही उन व्यक्तियों के नाम भी बता दिये जिन जिन के पास उनको जाना था।

"जल्दी और चुपचाप जाओ, भागी भागी, मौत तुम्हारे सिर पर मंडला रही है, यह समझ लो," मैंने कहा।

क्षण भर में ही वह दोनों कारा के साथ वहां से चली गईं। कारा से मैंने फाटक बन्द कर के महल के ऑगन से विशाल सोपान पर खुलने वाले फाटक पर आ जाने को कह दिया। मैं और असस्लोपागस भी उधर ही चल दिये और हमारे पीछे पीछे चलीं सम्राज्ञी और अन्य स्त्रियॉ। चलते चलते हम दोनों ठण्डे मांस को कुतर कुतर कर निगलते जाते थे और चलते चलते मैंने निलिप्था को आने वाले खतरे की बात बताई। उसे सुन कर वह तो बिजली गिरे पेड़ की तरह धक से रह गई। फिर मैंने कारा का हाल सुनाया कि उस पर क्या बीती थी, किस तरह सारे नौकर चाकर और चौकीदार पहरेदार वहां से टल गये थे और किस तरह इस विशाल राज्य-भवन में अपनी चन्द सहेलियों के साथ वह एकदम अकेली थीं। सम्राज्ञी ने मुझे बताया कि सारे नगर में यह अफ़वाह फैल रही थी कि हमारी सेना की बड़ी करारी हार हुई थी, विजयी सोरियास धावा मारती हुई मिलोसिस की ओर चली आ रही थी, और इस ख़बर को सुन कर सारे नौकर चाकर अपने काम को छोड़ कर भाग खड़े हुए थे।

इतनी बात को कहने में तो इतना समय लगा है, परन्तु वास्तव में यह सारी बातें कोई ६—७ मिनट ही में हो गईं। यद्यपि सूर्य मन्दिर का सुनहरी गुम्बद उगते सूर्य की लाल किरणों से रक्त वर्ण हो रहा था, पर अभी तक पौ नहीं फटी थी, और उसके फटने में अभी दस मिनट की देर थी। अब हम आंगन में पहुँच गये थे और यहां पहुंच कर मेरे घाव में इतनी जलन और दर्द होने लगा कि मुझे निलिप्था के कंधे का

सहारा ले कर रुकना पड़ा। अमस्लोपागस औंघता, गिरता पड़ता हमारे पीछे लुढ़कता चला आ रहा था। वह चलते चलते ठण्डा मांस कुतर कुतर कर खाता जा रहा था।

अब हमने आंगन पार कर लिया था और उस छोटे से दरवाजे तक जा पहुंचे थे जो राज्य भवन के परकोटे से विशाल सोपान पर खुलता था।

मैंने दरवाजे में हो कर बाहर की ओर झांका और अवाक रह गया, और रह जाना ही था। फाटक एक दम ग़ायब था, और साथ ही बाहर की ओर चढ़े कांसे के विशाल जंगी पल्ले भी ग़ायब थे, जड़ मूल से ग़ायब थे। उनको क़ब्ज़ों से निकाल लिया गया था और सोपान से नीचे की ओर दो सौ फ़ीट नीचे फेंक दिया गया था। हमारे सामने था अर्द्ध-चन्द्राकार चबूतरा, साधारण गोल मेज़ से दुगना बड़ा और उससे विशाल सोपान पर उतरती थीं दस काले संगमरमर की घुमाव दार सीढ़ियां—बस यही सब कुछ था।

अध्याय २२

अमस्लोपागस ने कैसे सोपान की रक्षा की

हम आश्चर्य से एक दूसरे का मुंह ताकने लगे।

"देखो आपने, उन बदमाशों ने फाटक तक उतार लिया है," मैंने कहा। "किस चीज से इस दरवाजे को बन्द किया जाये? जल्दी बतलाइये, नहीं तो दिन निकलते ही वह दुष्ट यहाँ आ धमकेंगे।"

मैंने यह बात इसलिए कही थी क्योंकि मैं जानता था कि हम केवल इसी दरवाजे की रक्षा कर सकते थे। महल के अन्दर दरवाजे थे ही नहीं, कमरों के बीच सिर्फ परदे ही टंगे हुए थे। मैं जानता था कि यदि हम किसी भी तरह इस दरवाजे की रक्षा कर सके तो दुष्ट किसी और मार्ग से राज्य-भवन में नहीं घुस सकेंगे क्योंकि राज्य-भवन प्रायः अभेद्य है। जिस गुप्त द्वार से उस रात्रि को सोरियास ने आ कर निलिप्था को मार डालने की कोशिश की थी उसके ईंट चूने से बन्द करा दिये जाने पर महल में घुसने का अब कोई और रास्ता नहीं रह गया था।

"हम बताये, मैकुमाज़न," सम्राज्ञी ने, जिसका दिमाग़ इस समय अपने स्वभावानुसार बहुत तेजी से काम कर रहा था, कहा, 'आंगन के उस कोने में संगमरमर के कुछ चिरे हुए ढोंके पड़े हुए हैं, हमने अपने प्रीतम इन्कूब की मूर्ति गढ़वाने के लिए उन्हें मंगाया था। उन ढोंकों से क्यों न इस दरवाजे को बन्द कर दिया जाये?"

यह सुनते ही मैं उछल पड़ा। मैंने एक स्त्री को बन्दरगाह पर काम करने वाले मज़दूरों को खोज लाने के लिए सोपान से नीचे भेजा। इस स्त्री का घर डॉक के पास ही था और उसका पिता उस नगर का एक प्रमुख व्यापारी था और उसके पास बहुत से आदमी काम करते थे। दूसरी स्त्री को मैंने दरवाजे पर नजर जमाये रखने की आज्ञा दी और अन्य स्त्रियों को ले कर मैं आंगन के उस कोने में गया जहाँ संगमरमर के

चिरे हुए ढ़ोंक पड़े हुए थे। यहां हमें कारा मिल गया, वह दोनों छोक-रियों को भेज कर वापस लौट रहा था। संगमरमर के ढ़ोंके काफी चौड़े और भारी थे। यह ढ़ोंके ६ इंच मोटे और कोई एक एक मन वज़न के थे। ढ़ोंकों के पास ही दो हाथ ठेले पड़े हुए थे जिन पर रख कर कारी-गर उनको वहां लाये थे। बिना एक क्षण की देर लगाये हमने कुछ ढ़ोंके हाथ ठेले पर लाद लिये और चार छोकरियां उस ठेले को खींच कर दरवाजे की ओर ले चलीं।

"सुन मैकुमाज़न," अमस्लोपागस ने कहा, "अगर दरवाज़ा बन्द होने से पहले ही वह कमीने आ धमके तो सुन ले मालिक, मैं उनके मुक़ाबिले में खड़ा हो कर उनको रोकूंगा। अह, यही तो मरदों की सी मौत होगी, मना मत कीजियो मालिक, तू तो मेरा पुराना दोस्त है, मैकुमाज़न। मेरी इस तरह की मौत को तो बहुत पहले ही एक आदमी ने बता दिया था। मेरी जिन्दगी का दिन बहुत अच्छा रहा है मालिक, अब अच्छी रात भी होने। इससे अच्छी मौत मुझे और कब मिलेगी? देख मैकुमाज़न, मैं वहां जा कर लेटता हूं, और मालिक जब उनके पैरों की चाप सुनाई देने लगे तो मुझे जगा दीजियो, मगर उससे पहले नहीं, क्योंकि आज मुझे अपनी पूरी ताक़त चाहियेगी मालिक, पूरी ताक़त।" और यह कह कर वह चुपचाप बाहर चबूतरे पर चला गया और नंगे संगमरमर यूं ही लेट गया और लेटते ही गहरी नींद में सो गया।

इतनी भाग दौड़ से मैं भी थक गया था और मुझ से खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था, इसलिये मजबूर हो कर मुझे दरवाजे के सामने सीढ़ी पर बैठ जाना पड़ा और वहीं से बैठे बैठे मैं काम की निगरानी करने लगा। छोकरियां ढ़ोंके लाती थीं और कारा और निलिप्था उस ६ फ़ुट चौड़े दरवाजे को उनसे आंटते जाते थे। उन्होंने ढ़ोंकों की ३ क़तारें जमाई थीं, क्योंकि इससे कम लगाना बेकार होता। ढ़ोंकों को ४० गज की दूरी से ढ़ो कर लाना होता था और एक खेप पलट कर फिर ४० गज दौड़ कर वापस जाना होता था। यद्यपि तमाम छोकरियां जी तोड़ कर काम कर रही थीं, ढोंकों को ठेले में और हाथों में उठा उठा कर ला रही थीं, तो भी काम की रफ्तार धीमी बहुत धीमी थी।

अब थोड़ी थोड़ी रोशनी दिखाई देने लगी थी और थोड़ी ही देर में हमें सोपान की निचली सढ़ियों पर मनुष्यों के पैरों की चाप और हथियारों की झनझनाहट की बहुत हल्की आवाज़ सुनाई देने लगी। अभी तक दीवार सिर्फ दो फुट ऊंची बन पाई थी और हमें उस को बनाते केवल आठ मिनट ही हुए थे। तो आखिर वह आ ही गये, अल्फान्सो ने ठीक ही सुना था।

झंकार की आवाज़ पास और पास होती गई और प्रभात के उस डरावने धुंधलके में हमको आदमियों की क़तारें सीढ़ियां चढ़ती दिखाई देने लगीं। आने वालों की संख्या कोई ५० के लगभग थी और वह बिल्ली की तरह बहुत चुपचाप पांव दबाये सोपान पर चढ़ते चले आ रहे थे। अब वह सोपान के बीच वाले उस चबूतरे तक आ गये थे जो उड़न मेहराब के शिरोभाग पर बना हुआ था, और यह देख कर कि ऊपर कुछ खटपट हो रही है वह दो चार क्षण वहाँ ठिठके और आपस में कुछ सलाह करने लगे, एक एक क्षण हमारे लिए मूल्यवान था, और फिर बहुत धीरे धीरे बड़ी सावधानी से सांस रोके वह ऊपर चढ़ने लगे।

हम को काम करते कोई १५ मिनट हो चुके थे और दीवार कोई तीन फुट ऊंची उठ चुकी थी।

अब मैंने असलोपागस को जगा दिया। मेरे छूते ही वह लोह-पुरुष जाग गया, उसने हाथ पांव फैला कर अंगडाई ली और अपनी इन्कूसी-काम को सिर के चारों ओर घुमा कर अपने हाथ पावों को खोला।

"अब हुआ ठीक मालिक, ऐसा मालूम होता है कि मुझ पर एक बार फिर जवानी आ गई है। मेरी सारी ताकत लौट आई है मैकुमाज़न, उसी तरह जैसे बुझने से पहले दीपक एक बार भभक कर जल उठता है। डर नहीं मालिक, आज की लड़ाई ऐसी होगी जैसी तूने आज तक नहीं देखी होगी।

"मैं अभी अभी एक सुपना देख रहा था मैकुमाज़न। मैंने देखा कि तू और मैं बहुत दूर तक सितारे पर खड़े हुए हैं और नीचे की तरफ़ झांक कर इस संसार को देख रहे हैं। मैने देखा कि तू देवता हो गया है और तेरे शरीर से रोशनी फूट फूट कर निकल रही है। मेरी क्या शक्ल यह मैं नहीं देख पाया मालिक। मालिक, मैकुमाज़न, हम दोनों के जाने

का वक्त आ गया है। अगर आ ही गया है तो आये, चिन्ता काहे की है, जीवन भर शान से, इज्जत से सिर उठाये रहे; सातों देशों में नाम किया, लेकिन यह सुन ले मालिक, कि जैसी लड़ाई मैंने कल देखी थी वैसी आज तक अपनी जिन्दगी भर में नहीं देखी थी।

"मरने के बाद मालिक मुझे जूलू ढंग से समाधि दीजियो और मेरा मुंह मेरे प्यारे जूलू देश की ओर कर दीजिये," और यह कह कर उस ने मेरे हाथों को अपने हाथों में ले कर झकझोर डाला, और फिर मुड़ कर आने वाले शत्रुओं का मुकाबिला करने के लिए सोपान के किनारे पर जा पहुंचा।

उसी समय मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि ज्यू वैण्डी सेना का नायक कारा उस अधबनी दीवार को फलांग कर बाहर कूद आया और अपनी तलवार सूंत कर बूढ़े जूलू की बगल में आ कर खड़ा हो गया।

"अच्छा, तू भी आ गया," बूढ़े जूलू ने हंस कर कहा, "स्वागत, मैं तेरा स्वागत करता हूँ, तू मर्द है, असली मर्द। जो निडर हो कर बिना ज़रा सी चिन्ता किये मौत से जूझ जाता है वही तो होता है सच्चा मर्द। मौत से खेलना, तलवारों की धारों पर जान की बाजी लगा देना यही तो काम है मर्दों का। ओ, हम बिल्कुल तय्यार हैं। मेरी इन्कूसीकास खून से प्यास बुझाने को बेचैन हो रही है। सब से पहले कौन इस 'महारानी' को सलामी देता है? कौन इसे चूमना चाहता है? इसके चुम्बन की कीमत मौत है। मैं कठफोडवा, मै यमराज, मैं अमस्लोपागस, फरसे वाला अमस्लोपागस, जो असाजूलू जाति से है, जो निकस्वाकोसी का सरदार है, मैं अमस्लोपागस, मै मैकेडामा ला लेपालक, मैं चाका महान के वंश का अमस्लोपागस, मै अविजेतों को जीतने वाला अमस्लोपागस, मैं केशलाधारी, मैं भेड़िया, मै तुम सब को कुत्ता समझता हूँ, कुत्ता, मैं तुम को चुनौती देता हूँ, तुम्हारी राह तक रहा हूँ, आ, आ, तू और पास आ।"

वह इसी तरह अपने युद्ध कारनामों को सुना रहा था या गाना सा गा रहा था कि हथियार बन्द आदमी, जिन में मैंने बढ़ते प्रकाश में नैस्टा और ऐगौन को पहिचान लिया, तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ने लगे, और एक दैत्याकार सैनिक लंबे बरछे को लिए अपने साथियों से पहले उन दस

अ ' चन्द्रकार सीढ़ियों को लांघ कर चबूतरे पर आ चढ़ा और अम-स्लोपागस पर अपने बरछे से वार किया। अमस्लोपागस ने अपने पैरों को वहीं जमाये रख कर शरीर को इस तरह एक ओर झुकाया कि वार ख़ाली गया और दूसरे ही क्षण इन्कूसीकास उस के सिर पर पड़ी और उस के सिर, टोप, बाल और खोपड़ी को चीरती हुई कन्धे तक उतर गई और पलक झपकते ही उस शत्रु का शव सीढ़ियों से नीचे लुढ़कता जा रहा था। शत्रु के गिरते ही उस की दरियाई घोड़े की खाल से बनी गोल ढ़ाल उसके हाथ से संगमरमर के फ़र्श पर गिर पड़ी और जलू ने उसे नीचे झुक कर उठा लिया। इस बीच वह अपनी वीरता और वंशावली को गीत की तरह बराबर गाये जा रहा था।

अगले क्षण कारा ने भी एक शत्रु को मार गिराया और फिर जो दृष्य दिखाई दिया उस जैसा मैंने आज तक अपने जीवन भर में कभी नहीं देखा था।

आक्रमणकारी एक एक, दो दो, तीन तीन, कर के ऊपर को चढ़ दौड़ते थे और जितनी शीघ्रता से वह आते जाते थे फरसा गिरता था और तलवार छपाका करती थी और शत्रु मर कर या इत्मीनान से मरने के लिए सीढ़ियों से नीचे लुढ़कता चला जाता था। और जैसे घमासान बढ़ता गया बूढ़े जूलू की फुर्ती और तेजी बढ़ती गई और उसकी भुजाओं में अमानुषीय बल आता गया। वह चिल्ला चिल्ला कर जूलू युद्ध नारे लगाने और उन सरदारों के नाम पुकारने लगा जिनको उसने युद्ध में मारा था। उसके भयंकर फरसे के वार लगातार सीधे और बिल्कुल सच्चे पड़ रहे थे, जिस चीज़ पर वार पड़ जाता था उसे चीर डालता था। इस समय वह अपने फरसे की खूंटी से शत्रु के सिर में वैज्ञानिक ढंग पर छेद नहीं कर रहा था, ऐसा करने के लिए उसके पास समय ही नहीं था, वह प्रत्येक वार अपनी पूरी ताक़त से कर रहा था और हर वार पर एक न एक शत्रु मर कर गिर पड़ता था और सीढ़ियों से नीचे की ओर लुढ़कता हुआ चला जाता था।

शत्रु उसे अपनी तलवारों और बरछों से काट और छेद रहे थे, उस को बीसयों घाव लग चुके थे, घावों से रक्त के फुआरे निकल रहे थे और उसका सारा शरीर रक्त से लाल हो गया था। परन्तु ढ़ाल उसके सिर

की और भिल्लम उसके मर्म स्थानों की रक्षा कर रही थी और जैसे जैसे क्षण भागते जाते थे, वह वीर ज्यू बैरएडी नायक के कन्धे से कन्धा भिड़ाये अटल चट्टान की तरह अब भी सोपान की रक्षा कर रहा था।

अन्त में कारा की तलवार टूट गई और वह एक शत्रु से गुत्थमगुत्था हो गया और वह दोनों एक दूसरे से गुंथे नीचे को लुढ़कते चले गये। नीचे बीसियों तलवारों ने उसके टुकड़े टुकड़े उड़ा दिये और वह वीर एक मर्द की तरह लड़ते लड़ते मौत की कभी न खुलने वाली नींद में सो गया। उसकी वीर आत्मा परम पिता के चरणों लीन हो गई।

अमस्लोपागस का हाथ न एक क्षण को रुका और न उसने घूम कर ही देखा, "ग़ज़ाली, अगर तू यहां होता, मेरा भाई ग़ज़ाली," वह चिल्लाया, एक शत्रु गिरा, दूसरा गिरा, तीसरा गिरा, चौथा गिरा, और अन्त में शत्रु उन रक्त से सनी फिसलनी सीढ़ियों से नीचे उतर गये और आंखें फाड़ फाड़ कर बड़े आश्चर्य से उसे देखने लगे, शायद वह यह सोच रहे थे कि वह कोई उन जैसा नश्वर मनुष्य नहीं था।

संगमरमर के ढोंकों की दीवार अब ६ फुट ऊंची हो चुकी थी और मुझे सब के बच जाने की आशा बंधने लगी थी। मैं निर्निमेष आंखों से उस बांकी और विचित्र लड़ाई को देख रहा था। मैं इससे अधिक और कुछ कर भी तो नहीं सकता था, क्योंकि मेरा रिवाल्वर कल लड़ाई में जाने कहां गिर गया था।

उधर बूढ़ा अमस्लोपागस अपने प्यारे फरसे का सहारा लिये खड़ा हुआ था और यद्यपि बहुत अधिक रक्त बह जाने से उसकी शक्ति क्षीण हो गई थी तो भी वह शत्रु को ललकार रहा था, वह उन को "हीजड़े" कह कर गाली दे रहा था और इतने शत्रुओं के सामने अकेला सीना ताने खड़ा हुआ था। दो एक क्षण तो किसी ने ऊपर चढ़ने का साहस नहीं किया, नैस्टा के ललकारने और क्रोध से गालियां देने पर भी कोई आगे को नहीं बढ़ा, और बढ़ता भी कौन, किसे अपनी मौत बुलानी थी, कौन था बेधा हुआ जो आगे आता। अन्त में बूढ़ा ऐगौन, जो वास्तव में एक वीर पुरुष था—निष्फल क्रोध से अन्धा हुआ ऐगौन—यह देख कर कि कुछ ही देर में दीवार चुन जायेगी और उसका उद्देश्य पूरा नहीं होगा, अपने भारी बरछे को उठा कर रक्त से सनी सीढ़ियों पर अन्धाधुन्ध ऊपर को चढ़ने लगा।

"अहा हा, तू है," असालोपागस ने ऐगौन की लंबी सफ़ेद फर-फराती डाढ़ी से उसको पहिचान कर जोर से चिल्ला कर कहा, "अब तू आया, पाजी जादूगर कहीं का, आजा, आजा, मैं तेरी ही राह देख रहा हूँ पुजारी, आ महापुरोहित आ, मैंने तेरे मारने की क़सम खाई थी और आज तक मेरी बात कभी झूठी नहीं हुई है।"

ऐगौन बढ़ता ही गया और उसने आगे बढ़ कर असस्लोपागस पर इतनी ज़ोर से अपने बरछे का वार किया कि बरछे का फल कड़े चमड़े की ढ़ाल को छेद कर उसके गले में घुस गया। जूलू ने अपनी छिदी हुई ढ़ाल ज़मीन पर फेंक दी और वही क्षण ऐगौन के जीवन का अन्तिम क्षण था। इससे पहले कि वह अपने बरछे को ढ़ाल से निकाल कर दुबारा वार करता बूढ़े असस्लोपागस ने ज़ोर से यह चिल्लाते हुए, "ले जादूगर ले, यह है तेरी बलि," अपने दोनों हाथों से अपनी इन्कूसी-कास को सिर से ऊंचा उठा कर बिजली की तेज़ी से ऐगौन के पूजनीय सिर पर भरपूर वार किया। ऐगौन मर कर अपने साथियों के शवों में जा पड़ा और इस तरह उसका और उसके षड़यंत्रों का एक बारगी ही अन्त हो गया।

जैसे ही ऐगौन नीचे गिरा सोपान के तल से ज़ोर की जयजयकारों की आवाज़ें आने लगीं और दरवाज़े का जो भाग अभी तक बन्द नहीं हो पाया था उससे झांक कर मैंने देखा कि बहुत से हथियार बन्द व्यक्ति हमारी सहायता को तेज़ी से सीढ़ियों पर चढ़े आ रहे थे। मैंने चिल्ला कर उनकी जयजयकार का उत्तर दिया। अब हमारे वह सम्भा-वित वधिक, जो अभी तक सोपान की सीढ़ियों पर खड़े थे और जिनमें मैंने बहुत से पुजारियों को पहिचाना, पलटे और जान छोड़ कर भागे, लेकिन जिस तरह चक्की के पाटों में पड़ कर दाना पिस जाता है उसी तरह उनको भाग निकलने का कोई मार्ग न मिलना था और न मिला ही और कुछ ही क्षणों में उनको गाजर मूली की तरह काट कर फेंक दिया गया। सिर्फ़ एक आदमी सीढ़ी पर अकेला खड़ा रह गया, वह था महा सामन्त नैस्टा, निलिप्था से विवाह का प्रार्थी और इस सारे षड़यंत्र का बनाने वाला।

एक क्षण तो फरफराती काली डाढ़ी वाला नैस्टा अपने खांड़े का सहारा लिये सिर झुकाये बड़ी निराश भावना से किंकर्तव्यविमूढ़ सा

खड़ा रह गया और फिर एक भयानक ललकार मार कर उसने झपट कर जूलू पर आक्रमण किया और अपने भयंकर खांड़े को अपने सिर के चारों ओर घुमाते हुए पैंतरा बदल कर इतनी जोर का वार किया कि भारी खांड़े का तेज धारदार फल फौलादी जंजीरों से बनी झिल्लम को मामूली कपड़े की तरह चीरता हुआ अमस्लोपागस के बगल में घुस गया और एक क्षण के लिए अमस्लोपागस के भी हाथ पांव ढ़ीले पड़ गये और इन्कूसोकास उसके हाथ से गिर पड़ी।

खांड़े को दुबारा उठा कर और वृद्ध जूलू के जीवन का अन्त कर देने के लिए नैस्टा झपट्टा मार कर बढ़ा, परन्तु नैस्टा शायद अपने शत्रु को जानता नहीं था। अमस्लोपागस लड़खड़ा कर उठा और घायल शेर की तरह दहाड़ते हुए उसने अपने शरीर को तोला और जिस तरह शेर अपने शिकार पर झपटता है उसी बिजली की सी तेजी से झपट कर उसने नैस्टा पर आक्रमण किया। झपट कर ऊपरली सीढ़ी पर चढ़ते हुए नैस्टा के उसने कस कर एक लात मारी और उसके गिरते गिरते अपने लोहे के शिकंजे जैसे लंबे लंबे हाथों से उसका गला दाब लिया और भयंकर गुत्थमगुत्था में दोनों सीढियों से नीचे लुढ़कने लगे। नैस्टा बहुत शक्ति शाली था और इस समय तो वह जान पर खेल कर मरने मारने पर उतारू हो रहा था, परन्तु तो भी वह जूलू देश के उस सब से शक्तिशाली व्यक्ति के पासंग बराबर भी नहीं था जिसे यद्यपि पचासों घाव लग चुके थे और शरीर का आधा रक्त बह गया था परन्तु अब भी जिसमें जंगली भैंसे जैसी शक्ति मौजूद थी।

एक क्षण में ही गुत्थमगुत्था का खात्मा हो गया। मैंने अमस्लोपागस को लड़खड़ा कर खड़े होते देखा, फिर मैंने देखा कि उसने अपनी अन्तिम भरपूर शक्ति से गुत्थमगुत्था होते नैस्टा को सिर से ऊपर उठाया और फिर जोर से विजय हुंकार करते हुए छटपटाते नैस्टा को सोपान को मुंडेर से ऊंचा उठा कर पुल पर से नीचे फेंक दिया, और शिरोभाग से दो सौ फुट नीचे चट्टान पर गिर कर नैस्टा की हड्डी पसली चूर चूर हो गई।

जिस कुमक को लाने के लिए मैंने एक छोकरी को शत्रुओं के आने से पूर्व इसी सोपान से जैटी पर भेजा था वह आ पहुँची थी और उधर

बाहरी फाटक पर बढ़ते हुए शोर गुल से हमें यह भी मालूम हो गया था कि उन दोनों छोकरियों की कोशिशों से सारा नगर जाग उठा था और वह सभी राज्यभवन का दरवाज़ा खोले जाने की पुकार कर रहे थे। निलिप्था की कुछ वीर सहेलियां, जो अभी तक सोते समय के वस्त्र पहने हुए थीं, जिनके बालों की खुली लटे पीठ पर फैल रही थीं और जिन्होंने इस दरवाज़े को संगमरमर के ढोंकों से बन्द करने में जी जान की बाज़ी लगा दी थी, इस बढ़ती भीड़ को एक बग़ली दरवाज़े से राज्य-भवन में लाने चली गईं। अन्य सहेलियों ने जैटी की ओर से आने वाली कुमक की सहायता से संगमरमर के ढोंकों को, जिनके लाने और जमाने में इतनी जान तोड़ कोशिश करनी पड़ी थी, एक ओर हटा कर राज्य-भवन में जाने के मार्ग को खोल दिया।

दरवाज़े को बन्द करने वाली दीवार पलक झपकते ही गिरा दी गई और खुले दरवाज़े में होकर एक लंबी चौड़ी भीड़ को साथ लिए अमस्लोपागस गिरता पड़ता अन्दर आया। वह सिर से पैर तक खून में नहाया हुआ था, पचासों घावों से रक्त के फुआरे निकल रहे थे। उसकी आंखें लाल सुर्ख हो गई थीं और दृष्टि स्थिर थी। देखने में वह बहुत भयानक पर साथ ही बहुत सुन्दर लग रहा था। उसके शरीर का इंच इंच भाग घावों से भरा हुआ था, और उसकी स्थिर आंखों और शून्य दृष्टि को देखते ही मैं समझ गया कि उसका जीवन-दीप अब बुझने पर ही था। उसके सिर पर लगा केशला तलवार के वारों से दो स्थानों पर कट गया था, एक स्थान वह था जहां उसकी खोपड़ी में वह विचित्र छेद बना हुआ था, उस छेद से उबल उबल कर निकलता रक्त उसके मुख पर बह रहा था। गर्दन में दाहिनी ओर बरछे का एक गहरा घाव था, यह घाव उसे ऐगौन के बरछे से लगा था, उसके बांयें हाथ में जहां उसकी झिल्लम की बाहें समाप्त होती थीं ठीक उसी के नीचे एक लंबा गहरा घाव था और उसके शरीर के दाहिनी ओर, जहां नैस्टा का खांडा लगा था, जिसने फौलादी ज़ंजीरों से बने झिल्लम को कागज़ की तरह चीर कर उसके मर्मस्थानों को काट डाला था, उसकी फौलादी झिल्लम ६ इंच लंबे एक बहुत गहरे भयानक घाव से कट गई थी।

अपनी इन्कूसीकास को उठाये वह लडखड़ाता हुआ आगे बढ़ा। उस भयानक परन्तु महान वीर की रक्त से नहाई आकृति को देख कर सब ठगे से रह गये, स्त्रियां तक उस भीषण मार काट और रक्त पात को देख कर बेहोश होना भूल गई थीं, उल्टे जितना वह उसकी जय-जयकार बोल सकती थीं बोल रही थीं, लेकिन न तो वह एक क्षण को रुका और न उसने इन सब बातों की परवाह ही की। अपने विशाल हाथों को फैलाये लड़खड़ाती चाल से वह आगे बढ़ता चला गया. उस के पीछे हम सब जा रहे थे, कुटी सीपियां बिछे आंगन के बीच वाले चौड़े रास्ते से हम राज्य-भवन को जा रहे थे। संगमरमर के ढोंकों के पास हो कर, मेहराब, दरवाजे उसके सामने लटकते भारी परदे को हटा कर, छोटे गलियारे में हो कर हम विशाल दरबार हॉल में जा पहुंचे, जो इस समय बगली दरवाजों से आये हथियार बन्द निवासियों से भरता जा रहा था।

असम्लोपागस हॉल में सीधा आगे को बढ़ता चला गया, उसके शरीर से टपकते रक्त से संगमरमर के फ़र्श पर उसके पैरों के निशान बनते जा रहे थे। वह आगे बढ़ता ही चला गया और उस पवित्र प्रस्तर शिला खण्ड के पास पहुँच कर रुका जो हॉल के केन्द्र में स्थापित है। यहां पहुंच कर उसकी शक्ति जवाब सी देने लगी और ऐसा लगने लगा जैसे वह अब गिरा अब गिरा। वह रुका और अपनी इन्कूसीकास के सहारे खड़ा हो गया। फिर ऐकाऐकी बहुत तेज आवाज़ में उसने बड़बड़ाना शुरू किया।

"मैं मरा, मैं मरा—मगर वाह क्या शानदारी लड़ाई थी। सोपान पर चढ़ कर जो आये थें वह किधर हैं? मुझे तो दिखाई नहीं देते। तू कहां है मैकुमाज़न, क्या तू मुझ से भी पहले उस अंधेरे लोक को चला गया जहां कि मैं अब जा रहा हूँ? मेरा खून मेरी आंखों में भर रहा है, मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है मालिक, सारी जमीन घूम रही है, मुझे बहते पानी की आवाज़ सुनाई दे रही है, ग़ज़ाली पुकार रहा है मुझे, मुझे ग़ज़ाली पुकारता है।*

---

* मुझे नहीं मालूम कि ग़ज़ाली कौन था, असम्लोपागस ने कभी उसका ज़िक्र मुझसे नहीं किया। (ला. व. सिं.)

इसके बाद जैसे उसे ऐकाऐकी ही कोई नया ख्याल आया हो उसने अपने रक्त से सने फरसे को उठा कर उसके फल को चूम लिया।

"विदा, इन्कूसीकास, विदा, " वह चिल्लाया, "लेकिन नहीं, विदा कैसी, हम दोनों साथ साथ ही जायेंगे, एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते हम, तू और मैं अलग नहीं हो सकते प्यारे, तू तो मेरी जान है प्यारे, हम दोनों, तू और मैं, वहुत दिनों तक साथ रहे हैं, मेरे सिवाय तुझे इन्कूसीकास और चला ही कौन सकता है।

"एक वार सिर्फ़ एक वार, एक सच्चा सीधा और भरपूर वार," और यह कहते हुए वह तन कर खड़ा हो गया और एक दिल दहला देने वाला नारा लगा कर उसने दोनों हाथों से पकड़ कर अपनी इन्कूसीकास को इतनी तेज़ी से अपने सिर के चारों तरफ घुमाना शुरू किया कि उसका फल चमचमाते हुए फौलाद का तेज़ी से घूमता चक्र मालूम पड़ने लगा। फिर ऐकाऐकी वड़ी भयंकर दैत्यों जैसी शक्ति से उसने उस पवित्र प्रस्तर शिला खण्ड के शीर्ष पर इन्कूसीकास का भरपूर वार किया। कठोर शिला खण्ड पर कठोर फौलाद के भयंकर वेग से टकराने से अनगिनती चिंगारियां झर पड़ीं। यह वार इतनी अमानुपीय दैवी शक्ति से किया गया था कि वह ठोस प्रस्तर शिला खण्ड धड़ाके की आवाज़ करता हुआ खील खील हो कर विखर गया। और इन्कूसीस का क्या वना? सर्वोत्तम नीले फौलाद के कुछ छोटे छोटे टुकड़ों और दस्ते वाले सींग के चन्द तुड़े मुड़े रेशों की लच्छियों के अलावा उस भयंकर शस्त्र का कोई निशान ही नहीं रहा।

पवित्र प्रस्तर शिला खण्ड के टुकड़े हॉल को धड़ाके से गुंजाते हुए फ़र्श पर गिरे और उन्हीं टुकड़ों के ऊपर अपनी इन्कूसीकास की मूंठ को हाथ में दबाये महान जूलू कटे पेड़ की तरह धड़ाम से गिर पड़ा—वह वीर आत्मा परम धाम को सिधार गई थी।

और इस तरह उस महान वीर अमस्लोपागस की जीवन यात्रा समाप्त हुई।

जिस किसी ने भी इस विलक्षण अकल्पनीय दृश्य को देखा उसके मुख से बरबस ही आश्चर्य, भय, तथा विस्मय की आवाजें निकल कर हॉल में गूंज गईं। फिर भीड़ में से किसी ने चिल्ला कर कहा, "भविष्य

वाणी" "भविष्य वाणी" । "इसने पवित्र शिला खण्ड को चूर चूर कर दिया है।" और तुरन्त ही चारों ओर कनबतियां होने लगीं, फुसफुसाहट, से सारा हॉल गूंजने लगा ।

इस अवसर पर निलिष्था ने अपनी स्त्री सुलभ तीक्षण बुद्धि से काम ले कर बिगड़ी बात को इतनी सुन्दरता से संभाला कि मैं उस की विलक्षण बुद्धि चातुर्य और अद्भुत क्षमता को देख कर दांतों तले उंगली दबा कर रह गया । "सुनो, सुनो, ज्यू वैण्डी के निवासी सुनो, इसने पवित्र प्रस्तर शिला खण्ड को चूर चूर कर डाला है और देखो भविष्य वाणी पूरी हो गई है । अब ज्यू वैण्डी के राज्य सिंहासन पर कोई परदेसी बैठेगा । श्रीमन्त इन्कूबू ने, हमारे प्राणाधार जीवन धन इन्कूबू ने सोरियास की सेना को मार कर भगा दिया है, उस के सैनिकों के शवों से मैदान पट गये हैं, हम को उस का रंच मात्र भी भय नहीं है, और जिस ने अपने प्राणों की बाजी लगा कर इस राज्य-मुकुट की रक्षा की है अब वही इस राज्य सिंहासन पर बैठेगा भी ।

"और सुनो, इस वीर को देखते हो," यह कह कर सम्राज्ञी मेरी ओर घूमीं और मेरे कन्धे पर हाथ रख कर कहने लगी, "जानते हो इस ने कैसी विलक्षण वीरता दिखाई है । कल युद्ध में भयानक रूप से घायल हो जाने पर भी यह वीर उस वीर के साथ जिस का शव वह पड़ा है सौ मील घोड़े पर भागता हुआ यहां तक आया, सौ मील, सूर्य छुपने से सूर्योदय तक दोनों ने सौ मील पार किये । क्यों ? हमारी जीवन रक्षा करने के लिये उन पाजी घातकों और षडयंत्र कारियों से हमारी रक्षा करने के लिये । इन्होंने हम को बचा लिया, हम को मौत के मुंह से निकाल लिया । इन के यह विलक्षण, अलौकिक तथा आश्चर्य जनक कारनामे हमारे देश के इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गये हैं । इसलिये हम, सम्राज्ञी निलिष्था, ज्यू वैण्डी की सम्राज्ञी आज्ञा देती हैं कि मैकुमाजन, मृत अमस्लोपागस और ज्यू वैण्डी वीरों के सिरमौर कारा, जिसने जूलू के कन्धे से कन्धा भिड़ा कर सोपान की रक्षा की है, के नाम सुनहरी अक्षरों में हमारे राज्य सिंहासन पर लिख दिये जायें और जब तक ज्यू वैण्डी जाति जीवित है उस समय तक के लिए यह नाम मान तथा प्रतिष्ठा के सूचक समझे जायें । यह हमारी, इस देश की सम्राज्ञी की आज्ञा है ।"

लोगों ने जोर जोर से जय जयकार कर के सम्राज्ञी के इस जोशीले भाषण का स्वागत किया, फिर मैंने नपे तुले शब्दों में एक छोटा सा भाषण दिया जिस का भावार्थ यह था कि हम तीनों ने केवल अपने कर्तव्य को पूरा किया था, जैसा प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिये चाहे वह जूलू हो चाहे भारतीय हो चाहे ज्यू बैंगडी का निवासी हो। और क्योंकि हमने सिर्फ़ अपने कर्तव्य को ही पूरा किया था इसलिये इतनी जयजयकार करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मेरे भाषण को सुन कर जयजयकार और भी ज़ोर शोर से होने लगा। इस के बाद मेरे घावों का उचित उपचार करने के लिए मुझे सहारा दे कर मेरे कमरे को ले जाया गया।

अपने कमरे को जाते समय मेरी दृष्टि उषा किरण पर पड़ी, जो कि अभी तक उसी तरह पड़ा हुआ था। उस का बर्फ जैसा श्वेत शिर खरंजे पर बिल्कुल इसी दशा में टिका हुआ था जिस तरह वह आंगन में घुसते ही गिर पड़ा था। जो व्यक्ति मुझे सहारा दिये हुए थे उन से मैंने अपने को उषा किरण के पास ले चलने को कहा। मैं उसे मरा समझे बैठा था और इसीलिये मैं उस विलक्षण जन्तु की देह को वहां से हटाये जाने से पूर्व एक बार फिर नज़र भर कर देख लेना चाहता था। लेकिन यह देख कर मेरे आश्चर्य की हद न रही कि पास पहुंचने पर उस ने अपनी आंखें खोल दीं और सिर को थोड़ा सा उठा कर बहुत धीमी आवाज़ से हिनहिनाया।

उसे जीवित देख कर मैं खुशी से पागल हो उठा जी में आया कि उछलूं कूदूं और शोर मचा कर आस्मान सिर पर उठा लूं, परन्तु दुर्भाग्य से दुर्बलता के कारण मेरे मुंह से बात तक न निकल सकी। उसे जीवित देख कर मैंने उस के रखवाले और साईस को फ़ौरन ही बुला भेजा। उसका सिर उठा कर उसके मुंह में थोड़ी सी शराब छोड़ी गई। एक पखवाड़े में वह बिल्कुल चंगा हो गया और उस की सारी शक्ति फिर लौट आई। अब वह मिलोसिस नगर के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदर और गर्व की वस्तु बन गया है। नगर निवासी जहां भी उसे देख पाते हैं तो उँगली के इशारे से अपने बालकों को दिखा कर कहते हैं, "इसी ने 'धौली रानी' की जान बचाई थी।"

फ़िर मै अपने कमरे में पहुंच कर पलंग पर लेट गया। जर्राह ने मेरी भिल्लम उतारी और घावों को धो कर मुझे स्नान कराया। भिल्लम उतारते समय घावों के छिल जाने से बहुत कष्ट हुआ, और उस के उतरने पर मैंने देखा कि मेरे बांये वक्ष और बग़ल में एक बड़ी तश्तरी के आकार की एक चोट लगी हुई थी। चोट में से निकाला खून उस पर जम गया था और सारी चोट बुरी तरह दुख रही थी।

इसके बाद की जो बात मुझे याद आती है वह है कि कोई दस घन्टे बाद राज्य भवन के परकोटे के बाहर बहुत से सवारों के घोड़ों की टापों की आवाज़ का सुनाई देना। मैंने कुहनी के बल उठ कर युद्ध के समाचार और रंग ढंग पूछा। मुझे बताया गया कि यह सैनिक उस टुकड़ी के थे जिसे कुंवर साहिब ने सम्राज्ञी की रक्षा के लिए सूर्य डूबने के दो घन्टे बाद लड़ाई के मैदान से भेजा था, और वह टुकड़ी अब यहाँ आ पाई थी। जब यह टुकड़ी युद्ध क्षेत्र से चली थी उस समय सोरियास की सेना के बचे खुचे सैनिक मैरास्टयूना के क़िले की ओर तेजी से पीछे हट रहे थे, और हमारे घुड़सवार उनको काटते मारते उनका पीछा कर रहे थे। उस रात्रि को कुंवर साहिब ने अपनी थकी मांदी सेना के अवशिष्ट भाग का पड़ाव उस स्थान पर डाल रखा था जहां एक दिन पहले मैरास्टयून के क़िले से निकल कर सोरियास की। सेना ने पड़ाव डाला था, और दिन निकलते ही उनका विचार मैरास्टयूना के क़िले पर आक्रमण करने का. था इस खबर को सुन कर मुझे ऐसा लगने लगा कि अब मैं शान्ति से मर सकूंगा। और अभी मैं यह सोच ही रहा था कि सारा कमरा मुझे घूमता सा मालूम पड़ने लगा। मेरी आंखों के सामने अंधेरा छा गया और मुझे सभी कुछ विस्मृत हो गया।

\+ \+ \+ \+

जब दुबारा मुझे चेत हुआ तो सब से पहली वस्तु जो मुझे दिखाई पड़ी वह थी कैप्टिन प्रसाद के चश्मे का गोल शीशा और उसमें हो कर कैप्टिन बड़ी सहृदयता से झांक रहे थे।

"अब क्या हाल चाल हैं बरखुरदार", चश्मे के पास से आवाज़ आई।

"तुम यहां क्या कर रहे हो," मैंने मरी सी आवाज़ से पूछा। "तुम को तो मैरास्टयूना में होना चाहिये था—क्या तुम वहां से भाग आये हो या कोई और बात है?"

"मैरास्ट्यूना," कैटिप्न ने जोर से कहक़हा लगा कर कहा "मैरास्ट्यूना तो पिछले हफ्ते फतह हो गया—आपको भला कैसे मालूम होता आप तो एक पखवाड़े से बेहोश पड़े हैं—बड़ी खूंख्वार लड़ाई हुई, खून की नदियां बह गईं, मगर जीत हमारी ही हुई। जीतने के बाद किले में जो जश्न हुए हैं वह क्या भुलाये जा सकते हैं।"

"और सोरियास, उसका क्या हुआ ?"

"सोरियास—सोरियास क़ैद में है, उन पाजियों ने अपनी खाल बचाने के लिए उसे हमारे हाथों में सौंप दिया। अपनी जान बचाने के लिए कुत्तों ने अपनी सम्राज्ञी को शत्रु के हाथों पकड़वा दिया। कड़े पहरे में उसे यहां लाया जा रहा है और मै नहीं कह सकता कि उसका परिणाम क्या होगा—बेचारी सोरियास," और यह कह कर कैप्टिन ने एक गहरी सांस ली।

"कुंवर साहिब कहां हैं ?"

"वह हैं निलिप्था के पास। आज वह घोड़े पर सवार हो कर हमारा स्वागत करने गई थीं और फिर जो चूमाचाटी का जश्न हुआ है उसका हाल बताना मेरे लिए संभव नहीं है। कल कुंवर साहिब आपको देखने आयेंगे। यहां के डाक्टरों का विचार है कि उनका आज आपके पास आना ठीक नहीं है।"

मैंने कहा तो कुछ नहीं पर मन ही मन कट कर रह गया। क्या कुंवर साहिब एक आंख भी मुझे देखने नहीं आ सकते थे। परन्तु प्रेम और युद्ध में सभी ठीक है, और यहां तो दोनों बातें थीं, नई नवेली दुल्हिन थी और युद्ध में विजय की खुशी भी, और इसलिये कुंवर साहिब ने डाक्टरों की राय मान कर मुझे देखने आना मुल्तवी कर दिया तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं थी, मगर मन में न जाने क्या कसकता सा रहा।

और अभी मैं यह सोच ही रहा था कि पीछे की ओर से एक जानी पहिचानी आवाज यह कहती सुनाई दी, "हुजूर अब लेट जायें, वरना हुजूर की तबीयत फिर खराब हो जायेगी," और गर्दन घुमा कर देखने पर अल्फ़ान्सो की काली बड़ी बड़ी ऊपर को उठी मूंछें दिखाई दीं।

"अच्छा, तू भी आ पहुंचा ?"

"जी हां हुजूर, हम आते क्यों नहीं हुजूर, लड़ाई खत्म हुई और साथ ही हम पर जो खून सवार हो गया था वह भी उतर गया हुजूर, और हम हुजूर की खिदमत करने हाजिर हो गये।"

मै उसके मज़ाक़ पर हंसा पर हंसा नहीं गया, चाहे अल्फ़ान्सो लड़ाई के मैदान में एक दम निखद साबित हुआ हो पर इसमें सन्देह नहीं कि आदमी वह दिलचस्प है।

दूसरे दिन कुंवर साहिब और निलिप्था मुझे देखने आये और उन्होंने मेरे और असस्लोपागस के मिलोसिस की सम्राज्ञी की जीवन रक्षा के लिए पत्ता तोड़ भाग आने के समय से लगा कर अन्त तक का सारा हाल कह सुनाया। उनकी बातों से मुझे स्पष्ट हो गया कि उन्होंने सारे मामले को अति उत्तमता से संभाला था और सेनापति के रूप में अपनी अपूर्व बुद्धि चातुर्य और विलक्षण सूझ बूझ का बहुत सुन्दर परिचय दिया था। इसमें सन्देह नहीं कि हमारी ओर भी जानी नुक़सान बहुत अधिक हुआ था—मुझे इस लड़ाई में मरने और घातक रूप से घायल होने वालों की संख्या बताते भय लगता है कि कहीं आप उस संख्या को अतियुक्ति न समझ लें, परन्तु इसी बात से आपको इस युद्ध की भयंकरता का अनुमान हो जायेगा कि देश की पुरुष जन संख्या पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। कुंवर साहिब दिल खोल कर मुझ से मिले, जो कुछ मैंने सम्राज्ञी की जान बचाने के लिये किया था उस का धन्यवाद देते समय उनकी आंखों से धारा प्रवाह आंसू गिरने लगे। उनके आंसुओं में मेरे मन की सारी कालिमा, ईर्षा, दुःख, पश्चाताप, शिकायतें सभी कुछ बह गया और मेरा मन उनकी ओर से बिल्कुल साफ़ हो गया। परन्तु मैंने यह भी देखा कि मेरे मुख पर दृष्टि पड़ते ही वह धक से रह गये थे।

निलिप्था की प्रसन्नता की तो कोई सीमा ही नहीं थी, विजय मद, यौवन मद और राज मद से उसके अंग अंग में विद्युत संचार सा हो रहा था, उसके प्रीतम ने शत्रु को हरा कर विजय प्राप्त की थी, उसके एक घाव के अतिरिक्त और कोई चोट नहीं आई थी, शत्रुओं का विनाश हो गया था, इससे भी बढ़ कर और कोई खुशी हो सकती थी। उसकी बोटी बोटी फड़क रही थी, उसके हृदय का उल्लास और आल्हाद फूट

निकलने के लिए ठाठें मार रहा था, उसके मुख पर थी मुस्कराहट और आंखों में नाच रही थीं तितलियां। उसका प्रेम और वात्सल्य भागीरथी की पुनीत धारा की भांति प्रत्येक व्यक्ति को रस से सराबोर करने को उफना पड़ रहा था। इस समय उसे उन अभागों की चिन्ता नहीं थी जो इस लड़ाई की चक्की में दानों की भांति पिस गये थे। पतंगे का काम है जलना और दीपक को इसकी क्या चिन्ता कि कौन जलता है और कौन मरता है। निलिप्था की इस लापरवाही के लिए उसे दोष भी तो नहीं दिया जा सकता है। क्योंकि हर भावुक स्त्री प्रत्येक वस्तु को अपने प्रेमी के दृष्टिकोण से देखती है और जब तक उसे उसका प्रेम प्राप्त रहता है वह संसार की प्रत्येक वस्तु की यहां तक कि ईश्वर तक की उपेक्षा कर सकती है। 'आओ प्रीतम नैन में पलक मूंद तोहि लेहुँ, ना मैं देखूं और को ना तोहि देखन देहुँ।' स्त्री का सम्पूर्ण संसार सिमट कर एक व्यक्ति में केन्द्रित हो जाता है, उसकी खुशी उसकी खुशी और उसी की अप्रसन्नता उसका काल बन जाती है। जिस प्रकार बांसुरी का जीवन वह फूंकें हैं जो बजाने वाला उसमें फूंकता है, उसी तरह स्त्री का जीवन उसके प्रीतम की इच्छा होती है। विभिन्नता में एक रूपता और एक रूपता में विभिन्नता का उदाहरण स्त्री जीवन से उत्तम और कहीं नहीं मिल सकता है। यही है जीवन, 'ना मै देखूं और को ना तोहि देखन देहुँ,' यही है वह अनन्यता जो मनुष्य को भगवान के समकक्ष पहुंचा देती है, यही है जीवन की सार्थकता और यदि निलिप्था अपने प्रेमी में सम्पूर्ण रूप से लीन हो गई थी तो इसमें आश्चर्य ही क्या था, आश्चर्य तो होता तब जब ऐसा न होता।

"और बेचारी सोरियास का क्या परिणाम होगा," मैंने बेचैनी, से पूछा। मेरी बात सुनते ही निलिप्था के माथे पर बल पड़ गये चन्द्रमा को राहु ने ग्रस लिया। सोरियास का जिक्र आते ही उसका चेहरा मारे क्रोध के काला हो गया।

"सोरियास," क्रोध से पैर पटकते हुए उसने कहा, "सोरियास।" कुंवर साहिब ने जल्दी से बात पलट दी।

"आप जल्दी ही ठीक हो जायेंगे, लाल साहिब," उन्होंने बात पलटते हुए कहा। मैं भी उस दुखद प्रसंग को बदलने के लिए हंस पड़ा।

"कुंवर साहिब, अपने आपको धोखा न दीजिये, पलङ्ग से मैं जरूर उठ बैठूंगा पर अच्छा तो होऊंगा चिता पर ही। कुंवर साहिब मेरे जीवन दीप का तेल खत्म हो चुका है, दीपक बुझने में समय लग सकता है परन्तु बुझेगा वह अवश्य ही। आपको शायद मालूम नहीं कि मेरे मुंह से खून गिरता है, मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे कोई वस्तु मेरे फेफड़े को काट रही हो। दुखी न होइये कुंवर साहिब, जैसे सभी के जीवन की संध्या होती है उसी तरह अब मेरे जीवन की संध्या आ गई है, और मैंने इस जीवन का लेखा जोखा खत्म कर लिया है। अब मैं आज़ाद हूँ, ईश्वर जिस समय चाहे मुझे अपने पास बुला ले, मैं हर समय तैय्यार हूं। न अब इस जीवन का मोह है और न जाने का शोक, और शोक हो भी क्यों, देवाधिदेव भगवान सूर्य भी तो रोजाना अस्त होते हैं, फिर मुझे जीवन के अस्त होने की चिन्ता क्यों? तनिक वह दर्पण मुझे देंगे? मैं एक बार अपनी शक्ल देखना चाहता हूं।"

कुंवर साहिब बहाना कर के बात टाल गये, दर्पण नहीं दिया, मैं उनकी चालाकी समझ गया और दर्पण दिये जाने के लिए हठ करने लगा और अन्त में उनको मुझे दर्पण देना पड़ा। दर्पण चांदी की खूब चमकीली पालिश की हुई चादर थी जिसे सुनहरी चौखटे में फिट किया हुआ था। ज्यू बैण्डी में यही वस्तु दर्पण का काम देती थी। मैंने अपनी शक्ल दर्पण में देखी और दर्पण को एक ओर रख दिया।

"हूं, मैं भी यही सोचता था, और आप कहते हैं कुंवर साहिब कि मैं ठीक हो जाऊंगा।" अपनी दशा देख कर मैं धक से रह गया, मगर मैंने अपनी परेशानी और चिन्ता को प्रकट नहीं होने दिया। मेरे सिर के खिचड़ी बाल एक दम सफेद हो गये थे, पीले रक्त हीन सूखे फीके चेहरे पर अनगिनती झुर्रियां पड़ गई थीं, मेरी आंखें गढ़ों में धंस गई थीं और उनके नीचे हल्के बन गये थे।

मुझे दुखित होते देख कर निलिप्था रोने लगी और कुंवर साहिब ने यह कह कर फिर बात पलटने की कोशिश की कि ज्यू बैण्डी के सर्वोत्तम कलाकारों ने मृतक असम्लोपागस के शरीर का सांचा बना लिया था और काले संगमरमर की उसकी पवित्र प्रस्तर शिला-खण्ड को

चकनाचूर करती हुई मूर्ति गढ़ी जा रही थी। इसके साथ हीश्वेत संगमरमर की एक दूसरी विशाल मूर्ति गढ़ी जा रही थी जिसमें मेरी और उषा किरण की उस समय की आकृति दिखाई जाने को थी जब कि वह वीर घोड़ा मुझे लिये दिये राज्य महल के आंगन के खरंजे पर गिर पड़ा था। काले संगमरमर की तीसरी मूर्ति उस काली घोड़ी की बनाने को थी जो ६० मील तक मुझे अपनी पीठ पर हवा की रफ्तार से लाई थी।

तीनों मूर्तियां अब बन कर आ गई हैं और मैंने उनको देख लिया है। इस बात को मैं युद्ध से छः महीने बाद लिख रहा हूँ। मूर्तियां बन गई हैं सिर्फ़ उनको उचित स्थानों पर जमाना भर बाक़ी है। तीनों मूर्तियां बहुत सुन्दर हैं और खास कर अमस्लोपागस की तो बहुत ही सुन्दर है। मालूम होता है कि वृद्ध जूलू को सशरीर वहां खड़ा कर दिया गया हो। मेरी मूर्ति भी बहुत अच्छी है परन्तु कलाकार ने मेरी बेडौल आकृति में तनिक आदर्शता की झलक दे दी है, और उसका यह कार्य एक तरह से सच भी है क्योंकि आने वाली शताब्दियों में सहस्रों व्यक्ति उसे देखेंगे और किसी भद्दी या बेडौल चीज़ को देखना कोई भी पसन्द नहीं करता है।

कुंवर साहब ने मुझे बताया कि अमस्लोपागस की अन्तिम इच्छा पूरी कर दी गई थी और उसके शव को चिता पर रखने के बजाय, जैसे कि मेरी पार्थिव देह को रखा जायेगा, क्योंकि ज्यू वैरण्डी में मृतक संस्कार इसी तरह किया जाता है, उसके शव को घुटने मोड़ कर और ठोड़ी को घुटनों पर जमा कर जूलू ढंग से बांध दिया गया था। साथ ही उसके शव को सोने के पतले पत्तर से मढ़ कर सोपान शिखर के उस अर्द्ध-चन्द्राकार स्थान पर, जिसे बचाने में उसने अपने जीवन आहुति दे दी थी, संगमरमर के फर्श को हटा कर और वहां की गव गढ़ा कर के उसके मुख को जूलू देश की ओर घुमा कर समाधि गई थी। वह वहां बैठा हुआ है, और अनन्त काल तक इसी तरह बैठा रहेगा, क्योंकि ज्यू वैरण्डी के कुशल वैद्यों ने उस शरीर पर अज्ञात मसाले लगा कर उसे सुरक्षित कर दिया है और उसको पत्थर के बने एक हवा बन्द ताबूत में रख कर उस स्थान पर दृष्टि जमाये रखने के लिए, जिस की रक्षा करने उसने जीवन को बलिदान कर दिया था,

समाधि दे दी है। लोग कहते हैं कि रात्रि के समय उसकी आत्मा वहां से निकलती है और अपनी अदृश्य इन्कूसीकास को अदृश्य शत्रुओं की ओर जोर ज़ोर से हिलाती है। जिस स्थान पर यह वीर समाधिस्थ है वहां से अंधेरे उजाले इक्का दुक्का मनुष्य निकलने का साहस नहीं करता है।

और सबसे विचित्र बात यह है कि इस देश में बड़ी विचित्र रीति से एक नई रिवायत चल पड़ी है कि जब तक वह बूढ़ा जूलू सोपान शिखर पर बैठा उस सोपान को, जिसे बचाने में उसने अपने जीवन की आहुति दे दी थी, टकटकी बांधे देखता रहेगा उस समय तक सोपान-वंश की यह नई शाखा, जो एक भारतीय और निलिप्था के संयोग से चलने को थी, ज्यू वैण्डी पर राज्य करती रहेगी और फलती फूलती रहेगी। और जब उसको वहां से हटा दिया जायेगा, अथवा बहुत समय व्यतीत हो जाने हर जब उसकी हड्डियां गल कर धूल में मिल जायेगी तब न केवल इस राज्य-वंश का ही पतन हो जायेगा बल्कि यह विलक्षण सोपान भी खण्ड खण्ड हो जायेगा और ज्यू वैण्डी जाति का कोई प्रथक अस्तित्व नहीं रह जायेगा।

अध्याय २३

मैंनें कह दिया है

निलिग्था के मुझे देखने आने के एक सप्ताह की बात है। मेरी तबीयत काफी स्वस्थ हो गई थी और मैं थोड़ा बहुत इधर उधर चलने फिरने लगा था कि मुझे कुंवर साहिब का संदेसा मिला कि दोपहर के समय सोरियास को सम्राज्ञी के शयन-कक्ष के बाहर वाले कमरे में लाया जायेगा और वहीं उसके मुक़दमे की सुनवाई होगी, साथ ही उस संदेसे में मुझ से, यदि संभव हो सके तो, वहां आने की प्रार्थना की गई थी। इस अभागी सम्राज्ञी को एक बार फिर देखने की उत्सुकता को न दबा सकने के कारण, मैं अल्फान्सों के कंधे का सहारा लेकर शयन-कक्ष के पहले बाहरी कमरे में जा पहुँचा।

मैं उस कमरे में सब से पहले पहुंचा था, अभी तक दरबार के कुछ कर्मचारियों के अतिरिक्त, जिनकी वहां ड्यूटी थी, और कोई नहीं आया था। अभी मैं जा कर बैठा ही था कि बरछैतों के पहरे में सोरियास को वहां लाया गया। उस के चेहरे पर मलाल, पश्चाताप या दुख की तनिक सी छाया भी नहीं थीं, वह पहले जैसी निर्भीक, निडर और सुन्दर दीख रही थी। परन्तु जैसे धूप में कमल पुष्प की कान्ति मलिन पड़ जाती है उसी तरह जेल के कठोर नियंत्रण से उसका मुंह कुछ कुम्हलाया सा लग रहा था। वह अब भी अपनी राजसी पोशाक पहने हुये थी, वही जरतार 'काफ' था, जिस पर सुनहरी धागों से देवाधिदेव भगवान सूर्य की एक विशाल आकृति कढ़ी हुई थी और उसके हाथ में इस समय भी वही चांदी का बना छोटा सा खिलौना बरछा था। उसे देख कर मेरे हृदय में दया, भक्ति और प्रशंसा का समुद्र लहरें मारने लगा, मैंनेगिरते पड़ते अपने स्थान से उठ कर उसे सलामी दी और साथ ही अपनी कमजोरी और बीमारी के कारण उसके सामने खड़े हो कर बात न कर सकने की क्षमा भी मांगी।

मेरी बात सुन कर उसका मुख लज्जा से लाल सुर्ख हो गया और वह बहुत भयानक रीति से हंस पड़ी। "तुम भूल गये, मैकुमाज़न, कि हम अब सम्राज्ञी नहीं हैं, हमारी नसों में शाही खून अवश्य है पर अब हम सम्राज्ञी नहीं हैं। अब जानते हो कि हम कौन हैं? अब हैं हम अछूत, साधारण क़ैदी, जिसे देख कर हर आदमी घृणा से मुंह फेर लेता है और जिसकी अब कोई मान प्रतिष्ठा नहीं है।"

"और कुछ नहीं तो कम से कम अब भी आप एक महिला अवश्य हैं, और महिला होने के नाते आपका सम्मान करना मेरा धर्म है। साथ ही, क्योंकि आप आपदा ग्रस्त हैं इसलिये मुझे और भी अधिक आपका सम्मान करना आवश्यक है। हमारे धर्म शास्त्र में कहा गया है कि पापी से नहीं पाप से घृणा करो, इसलिये आप से घृणा करने का कोई प्रश्न ही नहीं है," मैंने कहा।

मेरी बात पर सोरियास हंस पड़ी, जैसे बादलों में बिजली कौंध गई हो। "क्या तुम भूल गये मैकुमाज़न कि मैंने तुम सब को सोने के पत्तर से मढ़वा कर सूर्य मन्दिर के ऊंचे कलश पर स्थापित देव मूर्ति-के हाथों में थमाई तुरहियों-से लटकवा देने की प्रतिज्ञा की थी।"

"मैं इस बात को भूला नहीं हूँ सोरियास," मैंने कहा, "विश्वास करो सोरियास मैं उस बात को भूला नहीं हूँ। और सच तो यह है सोरियास कि जब दर्रे की लड़ाई के रंग ढंग हमारे ख़िलाफ़ हो रहे थे और मुझे यह शंका होने लगी थी कि कहीं हम हार न जायें तो रह रह कर तुम्हारी यही बात मुझे याद आ रही थी। परन्तु यह भाग्य की गति है, इसमें मनुष्य का वश नहीं। वही तुरहियां हैं वही तुम हो, वही मैं हूँ, और क्योंकि अब मुझे इस संसार में बहुत दिनों जीना नहीं है इसलिये ऐसी बातें कह कर मन बिगाड़ने और दुखित होने से क्या लाभ। जो बिंध जाता है वही मोती होता है सोरियास। हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश अपयश विधि हाथ। मनुष्य का कर्तव्य है कर्म करना, फल देना उस के हाथ में नहीं है। इसलिये फलाफल की चिन्ता किये बिना कर्तव्य पथ पर आरूढ़ रहना ही मनुष्य का धर्म है। तुमने अपना कर्तव्य पालन किया और मैंने अपना और फलाफल का निर्णय किया उस अज्ञात शक्ति ने इसलिये सोरियास उस विश्व नियन्ता के निर्णय को सिर झुका कर मान

लेने से ही मन की कलुषिता और पराजय की लज्जा और दुःख मैल की भांति दूर हो जाते हैं।"

"ठीक कहते हैं मैकुमाजन, जीतने के बाद सभी ऐसा कहा करते हैं," उसने दांत पीसते हुए कहा, "वह युद्ध, वह युद्ध, ओफ् यदि लड़ाई एक घन्टा और होती तो बाज़ी पलट जाती और फिर मेरी विजय निश्चित थी। एक घन्टा और, और मैं वहां सिंहासन पर होती और तुम लोग यहां मेरी तरह जजीरों से बंधे सैनिकों के पहरे में होते। एक घन्टा और। जो हरामज़ादे पाजी मुझे शत्रुओं के हाथों में फंसा छोड़ कर भाग गये थे मैं उन से बदला लूंगी, उन का सत्यानाश कर दूंगी, मुझे किसी का डर नहीं है, मैं सरे दरबार खुल्लम खुल्ल कहती हूं कि मैं उन को मलिया-मेट कर दूंगी, हीजड़े, कुत्ते कहीं के अपनी जान बचाने के लिए अपनी सम्राज्ञी को शत्रुओं के हाथों में सौंप दिया। कायर कहीं के," दांत पीसते हुए सोरियास ने कहा, उस का बस चलता तो वह इन पाजियों को कच्चा चबा जाती।

"और तुम्हारे पास खड़ा हुआ यह नामर्द कायर," उसने अपने खिलौना बरछे से अल्फान्सों को दिखाते हुए कहा, बेचारा अलफ़ान्सों डर के मारे पीछे छुप गया, "यह कमीना भाग गया और हम से विश्वास घात करके हमारे सारे किये कराये पर पानी फेर दिया। मैंने इस कमीने को अपनी सेना का जनरल बना दिया था, मैंने अपने सैनिकों को धोखा दिया, मैंने उनको बताया कि यह श्रीमन्त बौगवन था, मैंने इसे मार मार कर इसमें वीरता ठूंसने की कोशिश की (अल्फ़ान्सो किसी दुखद घटना को याद कर के कांपने लगा), लेकिन क्या कभी मल मल कर नहलाने से भी गधे घोड़े बने हैं। लड़ाई में डर के मारे ऐन मौक़े पर यह मुझे धोखा दे कर फ़र्श के नीचे छुप गया और मेरी सारी योजना इस ने सुन ली। काश मुझे उस वक़्त पता लग जाता तो मैं इसकी बोटी बोटी काट कर चील कव्वों को खिला देती, लेकिन अफ़सोस मैंनें इसे काट कर फेंक देने कें बदले इस पर दया कर के इसे छोड़ दिया। उस वक़्त मेरी मति पर न जाने कैसे पत्थर पड़ गये थे कि मैंने आस्तीन के सांप का क़ाबू कर के भी छोड़ दिया।

"और तू मैकुमाजन, तू वास्तव में मर्द है, जो कुछ तू ने किया वह मैं सब सुन चुकी हूं, सच्चा बहादुर है, तू सच्चा नमकख्वार है, किसी भी सम्राज्ञी को तेरे ऊपर गर्व हो सकता था। और वह बूढ़ा जूलू, वाह

कैसा बहादुर था वह, काश मैं उसे नैस्टा को उठा कर सोपान से नीचे फेंकते देख लेती तो मै सच कहती हूँ मैकुमाज़न मैं उसे हीरे जवाहरात मे तोल देती।"

"आप एक विचित्र स्त्री हैं, शत्रुता भी करती हैं और शत्र की प्रशंसा भी करती जाती हैं। मैं आप से एक प्रार्थना करता हूँ सम्राज्ञी सोरिमास सम्राज्ञी निलिप्था के सामने झुक कर अपने क़सूरों की माफी मांग लीजियेगा। संभव है वह आप पर दया कर दें।"

मेरी बात सुन कर सोरियास खिलखिला कर हंस पड़ी। "मैं और माफ़ी मांगू, मैं और दया की भिक्षा मांगूं, और वह भी अपने शत्र से हरगिज़ नहीं, जान रहते तो नहीं," और इसी समय निलिप्था, कुंवर साहिब और कैप्टिन प्रसाद ने कमरे में प्रवेश किया। निलिप्था बड़ी शान से अपने सिंहासन पर जा कर बैठ गईं। कैप्टिन का बुरा हाल था, न रोते बनता था न हंसते।

"प्रणाम सोरियास," थोड़ा ठहर कर निलिप्था ने कहा, "वाह बहिन तुमने तो हमारे राज्य की धज्जी धज्जी उड़ा दी है, तुमने हमारी हज़ारों प्रजा को तलवार के घाट उतार दिया है, तुमने दो बार षड़यन्त्र कर के हमें कुत्ते की मौत मार डालने की कोशिश की, तुमने हमारे स्वामी और उसके मित्रों को मार डालने का प्रण किया था और हमको सोपान से नीचे फैंक कर हमारी जान लेने की-इच्छा प्रकट की थी। तुमको मृत्यु दण्ड क्यों न दिया जाये इसके सम्बन्ध में तुम क्या कहना चाहती हो? बोलो सोरियास।"

"हमारे ख़्याल से हमारे ऊपर लगाये गये अभियोगों के मुख्य अपराध को बताना सम्राज्ञी शायद भूल गईं," सोरियास ने पैनी पर सुरीली आवाज़ से कहा, "वह अपराध यह है, 'तूने हमारे प्रीतम श्रीमन्त इन्कूबू के प्रेम को जीतने का प्रयत्न किया था।" और यही है वह अपराध जिसके बदले हमारी बहिन हम को मृत्यु दण्ड देगी, इस कारण नहीं कि हमने गृह युद्ध की अग्नि को भड़काया था। यह तेरा सौभाग्य है निलिप्था कि हमने उस समय उस के प्रेम को पाने की कोशिश की जब कि समय बीत चुका था।"

"सुनो" सोरियास की आवाज़ उत्तरोत्तर तेज़ होती जा रही थी, "सुनो हम को अपने बचाव के लिए सिवाय इसके कुछ नहीं कहना है

कि काश यदि हम हार जाने के बदले जीत जाते। अब तेरी मरज़ी है जैसा चाहे दण्ड हम को दे। सम्राज्ञी और तेरा यह पति सम्राट (कुंवर साहिब की ओर इशारा करके)—क्योंकि अब तो वह निस्संदेह सम्राट बन ही जायेगा—चाहे जो भी सज़ा दें हमें कोई ऐतराज़ नहीं है। सारी बुराई की जड़ यही परदेसी है और इसी की आज्ञा से इसका ख़ात्मा होना चाहिये।" यह कह कर सोरियास तन कर खड़ी हो गई और अपनी गहरी तेज़ आंखों से कुंवर साहिब को एक बार देख कर अपने खिलने बरछे से खेलौने लगी।

कुंवर साहिब ने झुक कर निलिप्था के कान में कुछ कहा जो मैं सुन नहीं सका। इसके बाद सम्राज्ञी ने बड़े ठस्से से कहना शुरू किया।

"सोरियास हम सदैव तेरे लिए एक अच्छी बहिन रही हैं। जब हमारे पिता का देहान्त हुआ था उस समय देश में चारों ओर यही चरचा थी कि क्या तुझे भी हमारे साथ सिंहासन पर बिठाया जाये या नहीं। हमने तुझ से बड़ी होने के नाते अपना निर्णय दिया और साफ़ कह दिया, 'नहीं, उसे भी सिंहासन पर बैठने दो, वह हमारी जुड़वां बहिन है, हम दोनों का जन्म एक साथ हुआ है, इसलिये दो चार क्षणों की छुटाई बड़ाई के कारण ही उसे राज्य-सिंहासन से वंचित न किया जाये।' और उस समय से अब तक हम दोनों इसी तरह रहती आई हैं, तू खुद जानती है कि तूने हमारी इन बातों का क्या बदला दिया। मगर मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। तेरे भरपूर प्रयत्न करने पर भी हम आज जीवित हैं और जो गढ़ा तूने हमारे लिये खोदा था उसी में तू स्वयं फंस गई है। तेरा जीवन क़ानून के जाल में फंस गया है। तू हमारी बहिन है, हम दोनों एक साथ जन्मी हैं, एक साथ खेल कूद कर बड़ी हुई हैं, एक दूसरे को प्यार किया है, बचपन में हम दोनों एक ही पलंग पर एक दूसरे के गलों में बाहें डाल कर सोयी हैं और इसलिये आज भी हमारा हृदय तेरे लिए रो रहा, है सोरियास।

"परन्तु इतना होने पर भी हम तुझे जीवन दान नहीं दे सकतीं क्योंकि तेरा अपराध बहुत भीषण है, तेरे अपराध की गुरुता हमारे दया के लिए उठते हाथों को उठने से रोकती है, और हम यह भी जानती हैं कि जब तक तू जीवित रहेगी इस देश में शान्ति और सुख चैन नहीं रहेगा।

"परन्तु तौ भी तुझे मृत्यु दण्ड नहीं दिया जायेगा, क्योंकि हमारे प्रीतम हमारे पति श्रीमन्त इन्कूबू ने तेरे जीवन की भिक्षा हम से मांग ली है। इसलिये वरदान के रूप में और विवाह की भेंट स्वरूप हम तेरा जीवन उनको सौंपते हैं, वह जो चाहें करें हमें कोई ऐतराज़ नहीं होगा। हम यह जानती हैं कि यद्यपि तू उनसे प्रेम करती है परन्तु तीनों लोकों की सुन्दरता तेरे पास होने पर भी वह तुझ से प्रेम नहीं करते हैं। नहीं करते हैं सोरियास, वह तुझ से प्रेम नहीं करते हैं। पूर्णमासी के चन्द्रमा से सुशोभित रजनी के समान सुन्दर 'रजनी बाला' वह तुझ से प्रेम नहीं करते हैं, वह प्रेम करते हैं हम से, अपनी स्त्री से, तुझ से नहीं, और इसलिये हम निस्संकोच हो कर तेरा जीवन उनको भेंट में देते हैं।"

सोरियास का चेहरा उत्तेजना या न जाने किसी और कारण से कानों तक लाल हो गया। उस समय कुंवर साहिब की हालत बहुत दयनीय हो गई थी। इसमें सन्देह नहीं कि जिस तरह निलिप्था ने मामले को स्पष्ट किया था, यद्यपि बात सत्य थी, परन्तु तौ भी ढंग कुछ ठीक नहीं था।

"मैं समझता हूँ", कुंवर साहिब ने हकलाते हुए कैप्टिन प्रसाद पर आंखें जमा कर कहा, "मुझे मालूम हुआ है कि आप सोरियास, सम्राज्ञी सोरियास से प्रेम करते थे। यह तो मुझे पता नहीं कि इस समय आपके मन की अवस्था क्या है, परन्तु यदि आप अब भी उन से प्रेम करते हों, तो इस अप्रिय घटना को समाप्त करने का एक सरल तरीक़ा मेरी समझ में आ रहा है। सोरियास की अपनी निजी जागीर काफी बड़ी है और यदि वह चलन से रहे तो अपनी जागीर में बिना किसी रोक टोक के रह सकती हैं। क्यों ठीक है ना निलिप्था-, मैं तो केवल रास्ता भर बता सकता हूँ।"

"जहां तक मेरा सम्बन्ध है," कैप्टिन ने लज्जा से लाल होते हुए कहा, "मैं बीती को बिसार देने को तय्यार हूँ, और यदि 'रजनी बाला' मुझे अपने उपयुक्त समझें, तो मैं उन से कल ही, या जिस समय भी वह चाहें, विवाह करने को तय्यार हूं। मैं उन के लिए एक उत्तम पति बनने की भरसक चेष्टा करूंगा।"

अब सारे दरबार की आंखें सोरियास पर जम गईं। उसके चेहरे पर अब भी वही मन्द मधुर मन मोहनी मुस्कराहट थी जो मैंने ज्यू

वैण्डी में आने वाले दिन उसके होंठों पर देखी थी। इस बात को सुन कर वह कुछ क्षण रुकीं और फिर खखार कर गला साफ़ किया। इसके बाद उस ने तीन बार झुक कर कोर्निश की, एक बार निलिप्था को, दूसरी बार कुंवर साहिब को और तीसरी बार कैप्टिन को, और फिर बहुत संयत स्वर से नपे तुले शब्दों में कहना शुरू किया।

"परम दयावान सम्राज्ञी और बहिन, मैं आपको धन्यवाद देती हूँ। जिस प्रेम और प्रीति से आपने बालपन से अब तक मेरा ख्याल रखा है उसका मैं धन्यवाद देती हूं और विशेषकर इस बात के लिए कि आपने हमारा जीवन श्रीमन्त इन्कूबू को, जो बहुत शीघ्र ही इस देश के सम्राट होने वाले हैं, सौंप दिया है। ऐसे दयालु, ऐसे कोमल हृदय और वीर सम्राट की छत्रछाया में इस देश में सुख सम्पत्ति, चैन और बाहुल्य का सदैव बोल बाला रहें। आप सम्राज्ञी हज़ार वर्ष तक राज्य करती रहे और इसी प्रकार अपने प्रीतम की प्यारी बनीं रहें, आप दूधों न्हायें और पूतों फलें। आप का वंश वृक्ष वट वृक्ष की भांति फैलता जाये। श्रीमन्त इन्कूबू, इस देश के भावी सम्राट, मैं आप को धन्यवाद देती हूँ। लाख बार धन्यवाद देती हूँ, कि आपने सम्राज्ञी के दिये तौहफ़े को अपने दामन में स्थान दिया और बड़ी दयालुता से उस तौहफ़े को अपने बचपन के मित्र और इस साहसिक यात्रा के साथी श्रीमन्त बौगवन को दे दिया। श्रीमन्त इन्कूबू आप का यह कार्य आप की बड़ाई और विशाल हृदयता के समतुल्य है।

"अन्त में मैं श्रीमन्त बौगवन को भी धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने मेरे ऊपर दया कर के मेरी नाचीज़ सुन्दरता को अपने गले का हार बनाना स्वीकार किया है। मैं बार बार आप को धन्यवाद देतीं हूँ और डके की चोट कहती हूँ कि आप निस्संदेह एक सत्पुरुष हैं। और मैं अपने हृदय पर हाथ रख कर क़सम खाती हूं कि यदि मैं आप के प्रस्ताव को स्वीकार कर सकती तो मुझ से भाग्यशाली और कोई स्त्री न होती। और अब मैंने बारी बारी से सब को धन्यवाद दे दिया है," यह कह कर वह मुस्कराई, "मैं दो चार शब्द और कहना चाहती हूँ।

"माननीय श्रीमन्तो और सम्राज्ञी निलिप्था, आप लोगों ने अभी तक मेरी प्रकृति को ठीक तरह से समझ नहीं पाया है, आप शायद नहीं

जानते कि मैंने जीवन में समझौता करना सीखा ही नहीं है, मेरा सिद्धांत है पाना या मर जाना, बीच वाला मार्ग मुझे रुचिकर नहीं रहा है। मैं तुम्हारी दया को ठोकर मारती हूँ, मैं तुम सब से घृणा करती हूँ, तुम्हारी क्षमा को मैं इस प्रकार अपने मन से निकाल देना चाहती हूँ जैसे तुम किसी विषैले कीड़े का डक निकाल कर फेंक देते हो। मेरे साथियों ने मेरे साथ विश्वासघात किया, मुझे संकट के समय अकेला छोड़ कर भाग गये। मेरा पूर्ण रूप से पतन हो चुका है, मेरे जीवन का अक्षय गर्व टूट चुका है, लेकिन तौभी मैं पराजित नहीं हुई हूँ, मैं अब भी तुम सब से ऊँची हूँ, मैं तुम्हारा उपहास कर सकती हूँ, तुम्हारी दया को ठोकर मार सकती हूँ। तुम में से किसी को भी मैं अपने पैर की जूती के बराबर भी नहीं समझती। और देखो तुम्हारे लिये मेरा यह उत्तर है।"

और तब ऐकाऐकी ही, इस के पूर्व कि कोई जान सके कि उसकी मंशा क्या थी, सोरियास ने अपने खिलौने बरछे को, जिसे वह अपने हाथ में लिये हुए थी, इतने ज़ोर और अचूक निशाने से अपनी छाती में घुसेड़ लिया कि बरछे का तेज़ नुकीला सिरा शरीर को फोड़ कर पीठ के पार निकल गया और सोरियास खून से लथपथ फर्श पर गिर पड़ी।

क्रैप्टिन प्रसाद इस दृष्य को देख कर प्रायः विक्षिप्त से हो गये, हम सब दौड़ कर सोरियास के पास पहुँचे। निलिप्था चीख् पड़ी, वह सिंहासन से कूद कर सोरियास से लिपट गई। सोरियास के आत्मघात और शरीर से बहते रक्त ने उन दोनों के मनोमालिन्य को धो कर बहा दिया। निलिप्था रोती जाती थी और सोरियास के निश्चेष्ट होते मुख को चूमती जाती थी। पर सोरियास का जीवन दीप बुझता जा रहा था, उस ने अन्तिम प्रत्यन कर के अपने हाथ को फर्श पर टेक कर अपने सिर को ऊपर उठाया और क्षण भर के लिए अपनी पथराती हुई आंखें कुंवर साहिब के मुख पर जमा दीं। शायद वह अपने अन्तिम क्षणों में उनको अपनी आँखों पी जाना चाहती थी और उन को देखते देखते ही मृत्यु की गोद में सो जाना चाहती थी। क्षण भर बाद ही सोरियास निश्चेष्ट हो कर फ़र्श पर लुढ़क पड़ी, उस के मुख से एक आह निकली और जीवन दीप बुझ गया। सारा दरबार हाहाकार कर उठा।

सोरियास का मृतक संस्कार राजसी शान और वैभव से किया गया और इस प्रकार इस दुखान्त नाटक का अन्त हो गया

× × × × ×

सोरियास की असामयिक और आकस्मिक मृत्यु के एक मास बाद सूर्य मन्दिर में एक महान उत्सव का आयोजन किया गया, और उस उत्सव में कुंवर साहिब को ज्यू वैण्डी देश की सम्राज्ञी का पति घोषित कर दिया गया। तबीयत बहुत खराब होने के कारण मैं स्वयं तो उस उत्सव में जा नहीं सका था, क्योंकि मुझे इस तरह के तमाशों, भीड़, भड़क्का, शोर गुल, तुरही नाद इत्यादि से कुछ नफ़रत सी है इसलिये जाने की इच्छा भी नहीं हुई। कैप्टिन प्रसाद अपनी पूरी वर्दी में वहाँ गये थे और इस उत्सव से बहुत प्रभावित हो कर लौटे। उन्होंने मुझे बताया कि उत्सव में सम्राज्ञी निलिप्था अप्सरा जैसी सुन्दर लग रही थी और कुंवर साहिब ने सारे उत्सव भर बहुत शान से राज्योचित पद गौरव को भली भांति निबाहा था। चारों ओर होने वाली उनकी जय जयकारों से कुंवर साहिब की लोक प्रियता में कोई सन्देह नहीं रह गया था। कैप्टिन ने यह भी बताया कि शाही जलूस में उषा किरण को देख कर जनता बड़े जोश से "मैकुमाज़न" "मैकुमाज़न" कह कर चिल्लाने लगी थी, यहां तक कि चिल्लाते चिल्लाते उन के गले बैठ गये और भीड़ केवल उसी समय शान्त हुई जब कि कैप्टिन ने अपने रथ में खड़े हो कर उन्हें बताया कि मैं इतना बीमार था कि वहां आ नहीं सकता था।

इस उत्सव के बाद कुंवर साहिब या महाराजाधिराज कुंवर सुरेश सिंह मुझे देखने आये, वह बहुत थके से दिखाई दे रहे थे। उन्होंने क़सम खा कर मुझ से कहा कि वह अपने जीवन भर में कभी इतने परेशान और चिन्तित नहीं हुए थे, लेकिन मेरा विचार है कि बात उन्होंने काफी बढ़ा चढ़ा कर कही थी। ऐसे अवसरों पर परेशान और चिन्तित होना मनुष्य की प्रकृति नहीं है क्योंकि मनुष्य स्वभावतया अपने को दूसरों की आंखों में खुबा देने और सब पर छा जाने को लालायित रहता है। इसलिये परेशानी की बात कुछ गले उतरी नहीं। बल्कि मैंने उनको बताया कि यह कैसी विचित्र बात थी कि जो परदेसी एक वर्ष

पहले इस देश में अनजान घुमक्कड़ के रूप में आया था, आज उसका विवाह उस देश की सम्राज्ञी से हुआ था और वहाँ की जनता ने उत्सव मना कर उसे अपने देश का सम्राट बना लिया था। रंक से राजा बनते कहानियों में सुना जरूर था पर विश्वास नहीं किया था, परन्तु आज की इस घटना को देख कर उस पर विश्वास होने लगा। भाग्य का परिवर्तन हो तो ऐसा हो। बात पर सहसा विश्वास ही नहीं होता था परन्तु करना ही पड़ा। इसके पश्चात् मैंने कुंवर साहिब को प्रभुता और ऐश्वर्य मद में बह न जाने का उपदेश दिया। प्रभुता पाये काहि मद नाहीं, शक्ति और विशेष कर असीम शक्ति पा कर कहीं उनका मस्तिष्क विकृत न हो जाये, इसके लिए मैंने उनको उपदेश दिया। मैंने उन को महाभारत के शान्ति पर्व में बताये राज्य-धर्म का उपदेश दिया और बताया कि वह मनुष्य पहले थे और फिर थे जनता के सेवक जिसे उस अनन्य शक्ति ने कोई विशेष कार्य करने के लिए इस संसार में भेजा था। मैंने उनको समझाया कि उनका उत्तरदायित्व बहुत विशाल था और उनके कन्धों पर बहुत जिम्मेदारी आ पड़ी थी। उनको स्वयम को इस दायित्व के योग्य बनाना था, अपने जीवन को ऐसा ढालना था जिसमें स्वयं न रह कर त्वयं आ जाये, उनका जीवन दूसरों के लिए समर्पित हो जाये और वह अपनी प्रजा के सुख में अपना सुख और दु:ख को अपना दु:ख जानें। मेरा यह नीरस उपदेश कुंवर साहिब को बुरा तो लगा होगा, क्योंकि छोटा मुंह बड़ी बात थी और वैसी ही थी जैसे नानी से ननिहाल की बातें करना। मैं उनको उस रास्ते पर चलना सिखा रहा था जिस पर मैंने स्वय कभी पांव नहीं रखा था। परन्तु कुंवर साहिब ने बड़े धैर्य और शांति से मेरा उपदेश सुना और फिर मुझे कर्तव्य निर्देशन के लिए धन्यवाद भी दिया।

इस उत्सव के दूसरे दिन ही मै उस भवन में चला गया जहां मैं इस समय इस आश्चर्यमयी घटना को लिख रहा हूँ। यह भवन एक स्वास्थकर देहात में है और मिलोसिस से कोई चार मील दूर एक टेकड़ी पर बना हुआ है। यहां से मिलोसिस नगर साफ दिखाई देता है। इस बात को पांच महीने बीत गये हैं और इस पांच महीनों के समय को मैंने अपनी कोच पर पड़े ही पड़े बहुत सहज सहज अपनी डायरी की सहायता और याददाश्त के सहारे अपनी इस यात्रा के इतिहास को लिखने और अपनी दु:ख सुख की घटनाओं को क्रमानुसार जमाने में

लगा रहा हूँ। सम्भावना तो यही है कि सभ्य संसार इस इतिहास को कभी पढ़ भी न सकेगा, परन्तु इससे क्या? यह लिखना यदि जन सुखाय नहीं हो सकता है तौभी स्वान्तः सुखाय अवश्य ही हो सकता है। कम से कम इस लिखने ने मेरी कष्ट की घड़ियों को भुलाने में सहायता अवश्य ही दी है क्योंकि कुछ दिनों से मेरा घाव मुझे बहुत दुख देने लगा है। ईश्वर का लाँख लाख धन्यवाद है कि मेरी मुक्ति की घड़ी पास आती जा रही है और शीघ्र ही मै इन सभी कष्टों से छुटकारा पा जाऊंगा।

× × × × ×

ऊपर लिखी घटना को लिखे तीन सप्ताह बीत चुके हैं और अब मै अपनी लेखनी को अन्तिम बार काम में ला रहा हूँ, क्योंकि मुझे स्पष्ट दीख रहा हे कि मेरा अन्त काल आ पहुँचा है। मेरा मस्तिष्क अभी तक बिल्कुल स्वच्छ है और मैं अब भी भली प्रकार लिख सकता हूँ यद्यपि लिखने में कठिनाई अवश्य होती है। मेरी छाती का दर्द जिस ने पिछले दिनों मुझे बेचैन कर रखा था अब ऐकाऐकी बिल्कुल चला गया है और मेरे अंग सुन्न होते जा रहे हैं, मैं इसका अर्थ खूब समझ रहा हूँ। दर्द के जाने के साथ ही मेरा मृत्यु भय भी चला गया है, मै ऐसा महसूस करने लगा हूँ कि जिस प्रकार तेल निपट जाने पर दीपक धीरे धीरे मन्द पड़ जाता है और अन्त में एक बारगी ही शान्त हो जाता है उसी प्रकार मेरी काया भी क्षीण होती जा रही है और मैं भी शीघ्र ही दीपक की भांति उस अनन्त निद्रा में सो जाऊंगा।

जिस शान्ति और पूर्ण निर्भयता से बालक अपनी माता की सुखमय गोद में सो जाता है उसी प्रकार मैं भी उस बिश्व नियन्ता की शीतल सुखद गोद में अनन्त निद्रा में लीन हो जाऊंगा। मृत्यु से पहले स्मृति बिल्कुल निर्मल हो जाती है, जब मृत्यु का भय ही नहीं रहता तो सांसारिक चिन्ताओं और दुर्भावनाओं का क्या भय हो सकता है। जो भय और चिन्तायें मुझे जीवन भर सताती रही हैं उनसे मुझे मुक्ति मिल गई है। जिस प्रकार तूफान के निकल जाने पर आकाश निर्मल हो जाता है और तारिकायें अपनी पूर्ण आभा से चमकने लगती हैं, उसी तरह जीवन की आंधी निकल जाने पर आशा रूपी ध्रुव तारा अपने पूर्ण प्रकाश से चमकने लगता है, और आज तो यह तारा मुझे और भी पास आता मालूम हो रहा है।

जीवन क्या है, आशा और निराशा का झूला, सुख दुःख की धूप छांव, अन्धेरा और प्रकाश की आंख मिचौली जिसमें कभी कृष्ण पक्ष की अंधियारी छा जाती है और कभी पूर्णिमा का प्रकाश, इस निश्चियता और अनिश्चियता की अग्नि परीक्षा के मुकाबिले इस परम पिता की शीतल छाया कहीं अधिक सुखद और शान्ति दायक है। मैं अपने जीवन में अनेकों बार मृत्यु के बहुत पास पहुंच चुका हूँ, कई बार उससे आंखें भी मिला चुका हूँ, मेरे बहुत से साथियों को मेरे सामने, मेरी आंखों के तले ही मौत ने दबोच लिया है, परन्तु हम सभी की बारी एक न एक दिन अवश्य ही आती है। "माली चुनियत फूल को कलियन करी पुकार, आज तुम्हारी बार है काल्हि हमारी बार।" मनुष्य चबैना काल का कछु मुख में कछु गोद। जीवन रज्जु कट जाने पर सभी का समय आ जाता है, कुछ दीपक देर में बुझते हैं कुछ जल्दी, मेरे भी जीवन दीप का तेल चुक गया है, अब जाने में देर नहीं है। मुझे अपनी मौत सिरहाने खड़ी दीख रही है मैं चाहूँ तो उससे बातें कर सकता हूँ। चौबीस घंटों में ही मैं कल की बात बन जाऊंगा, बीते कल की। मेरे स्थान पर रह जायेगी एक मुठ्ठी राख और शरीर के तत्व पंचतत्व में लीन हो जायेंगे। समय बड़े से बड़े अभाव को भी भर देता है, कुछ दिनों मेरी याद सतायेगी, मेरी कमी खटकेगी, फिर सभी कुछ सहन होता चला जायेगा और अन्त में मेरी याद एक धुँधली स्मृति बन कर रह जायेगी जिसे मरने के पश्चात भी लोग याद रखते हैं, उसे मृतक समझना भूल है, मृतक वही होता है जिसे लोग भूल जाते हैं। जिस समय मेरी भी स्मृति धुँधली होते होते समाप्त हो जायेगी उसी समय मेरी वास्तविक मृत्यु होगी।

यही संसार का चलन है, इस जग की यही रीति है। काल बली ने जीवित किसे छोड़ा है, मेरी तरह मुझ से पहले लाखों करोड़ों इन्सान मौत की नींद सो चुके हैं, संसार विजेता, दान वीर, महाबलशाली, चक्रवर्ती सम्राट सभी तो इस मार्ग पर जा चुके हैं और बरबस यही कहना पड़ता है, न ज़ाने कैसी सूरतें थीं जो इसमें पिन्हां हो गईं। जिनके भय से पृथ्वी और आकाश कांपा करते थे, जिनकी जयजयकार से आठों दिशायें गूंजा करती थीं, उन तक को लोग भूल चुके हैं और इस

विस्मृति में ही सुख है। मनुष्य जीवन जुगनू की चमक है, चमकी और छुप गई।

इस संसार को छोड़ कर जाने का दुःख अवश्य होता है, इस संसार में जहां सुख दुख के नाटक खेले, आशा और निराशा के झूले झूले, प्रेम और विरह के गीत गाये, इसीलिये इस संसार को छोड़ कर जाने में दुख होता है। मैं इस बात पर रंच मात्र भी विश्वास नहीं करता कि यह संसार मनुष्य का असली घर नहीं है बल्कि असली घर कोई और है और यह केवल एक सराय है जहां जीव कुछ दिनों के लिए आ टिकता है। मैं इसी संसार को वास्तविक वस्तु मानता हूँ, यह शाश्वत है, यह सत्य है, कल्पना का छलावा नहीं है और इसकी अनुभूतियां यथार्थ और सत्य हैं। इसलिये मनुष्य का यही कर्तव्य है कि इस संसार को जितना भी सुखमय बना सके बनाये। मैं उन व्यक्तियों को, जो यहां आते हैं, इस संसार से घृणा करते हुए भी जीवित रहते हैं और अन्त में मर जाते हैं, एक दम मूर्ख समझता हूँ। भगवान बुद्ध के अमर मंत्र बहुजन हिताय' के सिद्धांत पर चलने को यही संसार नन्दन वन और स्वर्ग से भी सुन्दर हो सकता है और ऐसा होने पर किसी अन्य काल्पनिक स्वर्ग की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

मेरे जीवन का अन्त होने को है, आज सारे जीवन पर सिंहाविलोकन करने पर मुझे लगता है कि मेरा जीवन सफल रहा है। इस जीवन में मैंने प्रेम किया और प्रेम पाया है, जान पर खेल जाने वाले मित्रों की मित्रता प्राप्त की है, देवदूत जैसे छोटे छोटे बच्चों की निर्मल और प्यारी हंसी सुनी है, सूर्य की उज्ज्वल धूप और चन्द्रमा की शीतल चांदनी का मजा उठाया है, आंधी मेंह तथा तूफान अपनी पीठ पर सहे हैं और जीवन को संकट में डाल कर मौत से आंखें भी मिलाई हैं। काश मेरा जीवन एक बार फिर मुझे वापस मिल जाता।

मेरे लिये संस्सांर बदलता जा रहा है, प्रकाश धूमिल होता जा रहा है और अन्धकार बढ़ रहा हैं। इस अन्धकार में मुझे अनेकों प्रिय बहुत ही प्रिय मुखड़े चमकते दिखाई दे रहे हैं, वह अपनी भुवन मोहिनी मुस्कराहट से मुझे अपने पास बुला रहे हैं। उन प्यारे मुखड़ों में मुझे अपने विजय का साहस्य मुख भी दिखाई दे रहा है, और उसी के पास है इस संसार की सर्वश्रेष्ठ सर्वांग सुन्दरी का मुख, आप समझ

अध्याय २४

दूसरे के हाथ से लिखा हुआ

मेरे मित्र लाल वसन्त सिंह को अपनी आत्म कथा के अन्तिम शब्द "मैंने कह दिया है" लिखे एक वर्ष बीत चुका है। मैं इस आत्म कथा में कुछ भी परिवर्तन करने या घटाने बढ़ाने का प्रयत्न न करता यदि इस आत्म कथा के समय संसार के हाथों में पहुंचने का एक अभूतपूर्व योग न बन जाता। इस में तनिक भी संदेह नहीं कि इसके सभ्य संसार में पहुंचने की आशा बहुत ही क्षीण है, परन्तु अब चूके तो फिर जन्म भर ऐसा सुयोग नहीं मिलेगा, इसलिये कैप्टिन प्रसाद का और मेरा यही विचार है कि यद्यपि आशा क्षीण अवश्य है परन्तु उसका लाभ अवश्य उठाना चाहिये। यह क्षीण अवसर यह है।

पिछले पांच छः महीनों से कई सीमान्त कमिश्नर क्यू वैण्डी देश की सीमा का सर्वे कर रहे हैं। वह इस देश से बाहरी संसार में खुलने वाले सभी संभावित रास्तों की खोज कर रहे हैं। उन्होंने उस पाताल धारा को, जिसके रास्ते हम यहां आये थे और जिसका पता यहां के निवासियों को नहीं था, खोज निकाला है और इस प्रकार बाहरी संसार से सम्बन्ध जोड़ने वाले जल मार्ग का पता लगा लिया है। इस पाताल धारा को सदैव के लिए बन्द कर देने का निश्चय किया गया है। अभी तक और किसी ऐसी धारा का पता नहीं लगा है, सभव है और कोई हो भी नहीं। इसी धारा में हो कर वह अभागा अफ्रीकन भागा था जो अन्त में फ़ादर मैकैन्ज़ी के मिशन स्टेशन पर जा निकला था। उसका इस देश में आने—वह हमारे यहां आने से तीन वर्ष पहले आया था—और निकाले जाने की बात को पुरोहितों ने अपना कोई उल्लू सीधा करने के लिए जनता से छुपा लिया था। पाताल धारा का मुख बन्द करने से पूर्व किसी हरकारे को इस आत्म कथा की हस्तलिखित प्रति

दे कर सभ्य संसार को पठाना है। वही हरकारा कैप्टिन प्रसाद की मित्रों को लिखी चिट्ठियां भी ले जायेगा, वही हरकारा मेरी एक चिट्ठी मेरे बड़े भाई महाराजा कृपाल सिंह जू देव महाराजा बानपुर, मुझे दुख है कि उनके दुबारा दर्शन करने का सौभाग्य अब मुझे प्राप्त नहीं होगा, के नाम ले जायेगा। उन चिट्ठियों में यह लिखा होगा कि हमारी समस्त चल और अचल सम्पत्ति हमारे उत्तराधिकारियों में बांट दी जाये क्योंकि हम दोनों ने अब भारतवर्ष न लौटने का निश्चय कर लिया है। और यदि हम ज्यू वैण्डी को छोड़ कर जाना भी चाहेंगे तो भी हमारा यहां से जाना प्राय: असम्भव ही होगा। यहां के बन्धन हम को भाग नहीं निकलने देंगे।

हमने अल्फ़ान्सो को हरकारा बना कर भेजने का निश्चय किया है। उसे जाने क्यों ज्यू वैण्डी और यहां के निवासियों से कुछ घृणा सी होती जा रही है। उसे फ्रांस की मिट्टी खींच कर बुला रही है, वहां के थियेटरों और होटलों की याद उसे हुरपेट रही है, उसे अपनी चहेती अनीता की याद सताने लगी है, उसका कहना है कि वह उसे रोज सुपने में दिखाई देती है और उसे अपने पास बुलाती है। मेरे विचार से मातृभूमि की याद या फ्रांस के जीवन का आकर्षण तो बनावटी बातें हैं, असली बात तो यह है कि यहां के लोग उसकी उस कायरता पर हंसते और मजाक उड़ाते हैं जो उसने आज से १८ महीने पहले दर्रे के युद्ध के समय दिखाई थी, जब कि उसने लड़ाई में भेजे जाने के डर से सोरियास के तम्बू में झन्डे के नीचे छुप कर अपनी जान बचाई थी। वह तो न जाने का कारण यह बताता है कि सोरियास की सहायता करना उसके विवेक के विरुद्ध था और इसलिये वह मौक़ा टाल गया था। भला लोग कब उस की बातें सुनते हैं, वह उस का मज़ाक बनाते हैं, राह बाट में उस पर उंगलियां उठती हैं, औरतें उसे दिखा दिखा कर खिलखिला उठती हैं और शैतान छोकरे उसके पीछे लग लेते हैं और "बौगवन" "बौगवन" कह कर उसे चिढ़ाते हैं। वह चिढ़ता है और शुद्ध फ्रांसीसी गालियां बकने लगता है, बच्चे गालियां सुनते हैं और उसे और भी अधिक छेड़ते हैं। उस का महल से निकलना दूभर हो गया है। इस से उस के आत्माभिमान को चोट लगती है और शायद इसीलिये वह यहां से दूर चला जाना चाहता है

हमने उसे रास्ते की तकलीफों और दिक्कतों का डर दिखा कर यहीं रोकना चाहा था परन्तु उसने यात्रा के सभी खतरे झेलने का निश्चय कर लिया है। उसे अब अपने कई वर्ष पहले के पुराने जुर्म के सिलसिले में फ्रांसीसी पुलिस द्वारा पकड़े जाने का भय नहीं रहा है, वह इस देश में रहने के बदले फ्रांसीसी पुलिस के हाथों गिरफ्तार हो कर सजा भुगतने को तय्यार है और उसने यहां न रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। अभागा अल्फान्सों, हमें उसके चले जाने का बहुत दुःख होगा, परन्तु इस के साथ ही साथ स्वयं उस के और इस विचित्र आत्म कथा के सभ्य संसार में पहुंचने के विचार से हमारी ऐकान्त इच्छा है कि वह सही सलामत अपने देश में पहुंच जाये। सही सलामत अपने देश में पहुंचने और हमारा कार्य ठीक ठीक पूरा कर देने के बदले हमने उसे ढेर सारा सुवर्ण देने का विचार किया है। उस सुवर्ण से वह अमीरों का सा जीवन बिता सकेगा और अपनी अनीता से, यदि वह अभी भी जीवित है और उस से विवाह करने को तय्यार हो जाये, विवाह कर के सुख का जीवन बिता सकेगा।

कुछ भी हो, आगे उस का भाग्य है। मैं स्वर्गीय लाल साहिब की आत्म कथा में उन की मृत्यु के बाद होने वाली घटनाओं को और जोड़ देना चाहता हूँ।

अपनी आत्म कथा के अन्तिम शब्दों के लिखने के दो दिन बाद ही लाल साहिब ने ब्राह्म मुहूर्त में शरीर त्याग किया। निजिष्था, कैप्टिन प्रसाद, अल्फान्सो और मैं उस समय उनके पास थे। वह बहुत ही करुण परन्तु एक प्रकार से बहुत ही सुन्दर दृष्य था। सूर्य के उदय होने से एक घन्टा पूर्व हम को मालूम हो गया था कि उन के जाने का समय पास आता जा रहा था और हमारे दु:ख और शोक की कोई सीमा नहीं थी। कैप्टिन प्रसाद तो इस सम्भावना की कल्पना मात्र से ही फूट फूट कर रोने लगे, उन को स्त्रियों की तरह की धाड़ें मार कर रोते देख कर लाल साहिब ने उनकी खिल्ली उड़ा डाली। धन्य है लाल साहिब को, मृत्यु को सन्मुख खड़ा देख कर भी जो व्यक्ति अपना धैर्य और सन्तुलन नहीं खोता है वही तो सच्चा वीतरागी है। लाल साहिब पूर्ण रूप से होश में थे, उनकी आंखों में वैसी ही चमक और तेजी थी, और यद्यपि वह

अपने ऊपर मृत्यु की काली छाया पड़ते देख रहे थे परन्तु तो भी अपनी स्वाभाविक विनोद प्रियता से हमें उस मनहूस घड़ी की याद भुलाने की चेष्टा कर रहे थे। धन्य हैं वह व्यक्ति जिन्होंने मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर ली है। आंखों से झरनों की तरह गिरते आंसुओं को पोंछने के लिए कैप्टिन को अपना चश्मा उतारना पड़ा था और उनकी यह हरकत लाल साहिब की तेज नज़रों से छुप न सकी थी, उन्होंने भी उन को चश्मा उतारते हुए देख लिया था।

"ओह," उन्होंनें मुस्कराते हुए बैठी सी आवाज़ में कहा, "आज आखिरकार मैंने कैप्टिन को बिना चश्मे के देख ही लिया"।

और फिर वह चुप हो गये और सूर्य के उदय होने तक बिल्कुल चुप-चाप आंख मूंदे लेटे रहे। सूर्य निकलने पर उन्होंने हम से बैठा देने और भगवान् सूर्य के अन्तिम दर्शन करा देने की प्रार्थना की।

"दो चार क्षणों में ही," सूर्य के उज्वल बिम्ब पर अपनी आंखें जमाते हुए उन्होंने कहा," मैं भगवान सूर्य की सुनहरी किरणों में समा जाऊंगा," और यह कह कर वह फिर लेट गये।

कोई दस मिनट बाद वह फिर थोड़ा सा उठे और हम सब को अपलक दृष्टि से देखने लगे।

"जितनी भी यात्रायें हम ने साथ साथ की हैं उन से भी अधिक विचित्र और अज्ञात यात्रा पर अब मैं रवाना होने को हूँ। कभी कभी मुझे याद कर लीजियेगा," उन्होंने बहुत धीमी आवाज से कहा, "ईश्वर तुम सब का भला करे। मैं वहां तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।"

और फिर एक हिचकी और पंछी इस सांसारिक मोह बन्धन के पिंजरे को तोड़ कर अपनी नीड़ की ओर उड़ गया।

इस प्रकार एक महान व्यक्ति की जीवन लीला समाप्त हुई। जितने भी व्यक्तियों से मिलने का मुझे अवसर मिला है लाल साहिब उन सब से श्रेष्ठ थे। श्रेष्ठ तम, वह साधारण मानव नहीं थे, वह मानव से बहुत ऊंचे थे, वह नर श्रेष्ठ थे।

दयालु, स्थिर मति, दृढ़, विनोद प्रिय और उच्च कोटि के मानव में अपेक्षित अनेकों दैवी गुणों से विभूषित होने पर भी लाल साहिब सांसारिक गुणों से भी वंचित नहीं थे। असीम सक्रियता उनके चरित्र का एक विशेष अङ्ग थी। उनकी सूझ बूझ विलक्षण थी और मनुष्यों

तथा मनुष्य की प्रकृति और विचार धारा की इतनी सही परख रखने वाला उन जैसा व्यक्ति आज तक मेरी नज़रों से नहीं गुज़रा है। वह कहा करते थे, "मैंने जीवन भर मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन किया है और इसलिये मुझे उसकी थोड़ी बहुत जानकारी होनी चाहिये," और निस्संदेह उनको इस विषय में असीम जानकारी प्राप्त थी। उनके निर्मल चरित्र में केवल दो दोष थे– एक था उनका अत्याधिक संकोच और दूसरा था अपने प्रिय मित्रों के प्रति ईर्ष्या की साधारण सी। भावना। जहां तक प्रथम दोष का सम्बन्ध है जो भी व्यक्ति उनकी लिखी आत्म कथा को पढ़ेंगे वह स्वयं उनके सम्बन्ध में अपनी राय क़ायम कर लेंगे, परन्तु मैं उसका एक अन्तिम उदाहरण और लिख दूँ।

पाठकों को निश्चय रूप से स्मरण होगा कि अपने आपको डरपोक और कच्चे दिल वाला बतलाने में लाल साहिब को कुछ विशेष मज़ा आता था, परन्तु वास्तव में थे वह इसके बिल्कुल उल्टे। अतिशय चौकन्ने और सावधान होने के साथ साथ वह असीम साहसी थे। उनके चरित्र की सब से बड़ी विशेषता यह थी कि संकट के समय भी उनके हवास गुम नहीं हो जाते थे। बड़े बड़े संकट के समय भी शान्त और स्थिर मन से अपने कर्तव्य का निश्चय कर लेना उनकी एक विशेषता थी। दर्रे के युद्ध में जहां उनको वह भीषण चोट लगी थी जिसने अन्त में उन के प्राण ही ले लिये, उनकी आत्म कथा पढ़ने से आपको मालूम होगा कि उन्होंने इस घटना का ऐसा साधारण ज़िक्र किया है जिससे यह ख़्याल किया जा सकता है कि साधारण झड़प में उनको कोई मामूली सी ख़राश आ गई थी।

परन्तु वास्तविकता यह है कि यह घातक चोट उनको अपनी जान पर खेल कर कैप्टिन प्रसाद को बचाने के सफल प्रयास में लगी थी। और अन्त में इसी चोट से उनकी जान गई। कैप्टिन नीचे गिर पड़े थे और नैस्टा का एक ख़ूंख़्वार पहाड़ी उनका काम तमाम करने को ही था कि लाल साहिब ने कैप्टिन के शरीर से लिपट कर उस भीषण वार को अपने शरीर पर लिया और फिर उठ कर उस सैनिक का ख़ात्मा कर दिया।

जहां तक उनकी ईर्षा का सम्बन्ध है मुझसे और निलिप्था से सम्बन्ध रखने वाली एक साधारण घटना को बयान कर देना काफी होगा। शायद पाठकों को स्मरण होगा कि उन्होंने दो एक स्थान पर इस तरह लिखा है जैसे निलिप्था ने मुझे पूर्ण रूप से हथिया लिया हो और हम दोनों ने उनको उनके बुढ़ापे में अकेले तथा एक दम बेसहारे छोड़ दिया हो। निलिप्था का चरित्र सम्पूर्ण रूप से निर्दोष नहीं है, जैसा कि साधारणतया स्त्रियों का होता है, और कभी कभी वह स्त्रियोचित ईर्षा से अन्धी हो कर मुझे पूर्ण रूप से अपना लेना चाहती है, परन्तु जहां तक उसके चरित्र के इस पहलू का सम्बन्ध लाल साहिब की बात से है, तो यह केवल उनके उर्वर मस्तिष्क का विकार मात्र थी। जिस स्थान पर उन्होंने अपनी बीमारी में मेरे उनको न देखने आने की शिकायत की है उसके सम्बन्ध में केवल इतना कहना ही काफी होगा कि बार बार सविनय प्रार्थना करने पर भी डाक्टरों ने मुझे उनके पास जाने से रोक दिया था। मैंने जब उद्गारों को पढ़ा तो मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि मै लाल साहिब पर पिता जैसी भक्ति करता था, और मैंने अपने विवाह के हमारे परस्पर प्रेम में खाई बन जाने की संभावना पर तो कभी स्वप्न में भी विचार नहीं किया था। खैर जो गुजर गया सो समाप्त हो गया, बीती ताहि बिसार दे, मनुष्य का चरित्र सम्पूर्ण रूप से दोष रहित होता नहीं है, सम्पूर्ण दोष रहित तो केवल ईश्वर ही है, हम मानवों की उत्तमता तो हमारे चरित्रों के दोष गुणों पर ही निर्भर है, यदि सभी दोष मुक्त हो जाते तो यह रंग, बिरंगा संसार श्मशान जैसा भयानक और नीरस हो जाता, इस संसार के कर्मभूमि होने की समस्त श्रेष्ठता नष्ट हो जाती।

और इस प्रकार उनकी जीवन लीला समाप्त हुई। निलिप्था और मेरी उपस्थिति में कैप्टिन प्रसाद ने, जो संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं, सामवेद की उपयुक्त ऋचाओं का सुमधुर गान कर के उच्च स्वर से कठोपनिषद का पाठ करना शुरू किया। हमारा विचार उनके शव को महलों के आंगन के एक कोने में ही दाह देने का था, परन्तु जनता की मांग पर हमें अपना निश्चय बदल कर उनको शरीर की राजसी अन्तेष्ठ क्रिया करने पर बाध्य होना पड़ा। जिस समय मैं नर नारियों के अपार जन समूह के साथ अर्थी के पीछे पीछे सूर्य मन्दिर की ओर

जा रहा था, तो मुझे रह रह कर यह ख्याल आ रहा था कि यदि आज लाल साहिब जीवित होते और इस दृष्य को देखते तो उनको कितनी खीज और चोभ होता क्योंकि उनको ऐसे धूम धड़ाके और टीम टाम से दिली नफ़रत थी।

उनकी मृत्यु के तीसरे दिन भगवान सूर्य के अस्त होने से कुछ क्षण पहले हमने उनके पार्थिव शरीर को वेदी के सामने जड़े पीतल के फर्श पर रख दिया और अस्ताचल को जाते सूर्य की अन्तिम किरणों के उन के मुख पर पड़ने और उसे प्रकाशित करने की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ ही क्षणों बाद सूर्य की अन्तिम सुनहरी किरणें उनके मुख पर पड़ने लगीं। उस समय ऐसा मालूम पड़ता था जैसे उन्हें सुनहरी ताज पहिना दिया गया हो। सहसा ज़ोर से तुरहियां बज उठीं, कैप्टिन प्रसाद ने कठोपनिषद् का पाठ प्रारम्भ कर दिया, पलक मारते ही फ़र्श सरका और हमारे प्रिय मित्र का पार्थिव शरीर वेदी के नीचे धधकते अग्नि कुण्ड की प्रज्वलित लपटों में समा गया।

यदि हम सौ वर्ष भी जीवित रहें तो भी मुझे विश्वास है कि हमें उन जैसे व्यक्ति से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा। वह पुरुषों में श्रेष्ठ, सच्चे मित्र महान शिकारी और, मुझे विश्वास है, सारे अफ्रीका भर में सबसे अचूक निशाने बाज़ थे।

और इस प्रकार 'मैकुमाज़न' महान शिकारी लाल बसन्त सिंह के अनूठे तथा साहसी जीवन का पटाक्षेप हो गया।

× × × ×

हमारा जीवन बहुत सुख पूर्वक व्यतीत हो रहा है। कैप्टिन प्रसाद ने झील मिलोसिस तथा राज्य भर की प्रायः सभी बड़ी झीलों में सुदृढ़ जहाज़ी बेड़े बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है और इस में वह बहुत व्यस्त रहते हैं। इस बेड़े के बन जाने से इस देश के व्यापार और कला कौशल की बहुत उन्नति होने की आशा है, साथ ही हम उन खूंख्वार क़बीलों को दबाने में भी सफल होंगे जो इन झीलों के किनारों पर दुर्गम पहाड़ियों के बीच रहते हैं। मुझे कैप्टिन की दशा पर रोना आता है। वह उस स्वेच्छाचारी तथा महत्वाकांक्षी सुन्दरी सोरियास को धीरे धीरे भूलते जा रहे हैं। उसकी मृत्यु से जो नासूर उनके दिल में पड़ गया है वह यद्यपि

भरता जा रहा है परन्तु उसकी कसक अभी तक नहीं मिटी है। उनको वास्तव में उससे असीम प्रेम हो गया था। परन्तु समय सभी कुछ भुला देता है, बड़े से बड़ा अभाव भी भूल जाता है। मुझे आशा है कि महान चिकित्सक समय उनके नासूर को भी भर देगा और हम उनका विवाह किसी चन्द्र मुखी से कर देने में सफल हो जायेंगे। हमने आशा नहीं छोड़ी है और निलिप्था को तो पूर्ण विश्वास है कि वह उनके मन भ्रमर को किसी सुन्दरी कलिका के सम्पुट में बन्द कर देने में अवश्य सफल होगी। इसीलिये निलिप्था चुपके चुपके किसी सुन्दरी कन्या की खोज कर रही है, कई कन्यायें हमने पसन्द भी की हैं। विशेष रूप से हमने महसामन्त नैरटा (जो कि विधुर था) की पुत्री को पसन्द किया है। यह कन्या बहुत सुन्दर है और उसकी प्रकृति राजसी है और यद्यपि उसने अपने मृत पिता की कूट बुद्धि विरासत में पाई है, उसमें विद्रोह की भावना कूट कूट कर भरी हुई है और वह बहुत आत्माभिमानी है परन्तु यही आत्माभिमान तो मुझे बहुत पसन्द है।

जहां तक मेरा अपना सम्बन्ध है मैं नहीं जानता कि क्या कहूँ और क्या न कहूँ। यदि सारी बातें कहने लगूं तो पोथे भर जायेंगे, इसलिये कुछ न कहना ही उत्तम है, क्योंकि खामोशी में छुप जाती हैं बहुत सी बातें। केवल इतना कहना ही काफ़ी होगा कि सम्राज्ञी के पति होने के नाते मेरा जीवन आशा से भी अधिक सुख पूर्वक व्यतीत हो रहा है। मगर केवल खाओ पियो और मौज उड़ाओ वाली बात नहीं है, मुझे अपने कन्धों पर रखी ज़िम्मेदारी का भार उठाना मुश्किल हो रहा है।

परन्तु तौ भी मैं भरसक प्रजारंजन तथा लोक सेवा का कार्य किये जा रहा हूँ और ईश्वर से प्रार्थना किया करता हूँ कि मेरे प्रयत्नों में सफलता दे। दो उद्देश्यों की पूर्ति मैंने अपने जीवन का ध्येय बना ली है, एक है ज्यू वैण्डी जाति के विभिन्न क़बीलों तथा उपजातियों को एक सूत्र में नाथ कर केन्द्रीय सरकार का सारे देश पर एक छत्र साम्राज्य स्थापित करना और दूसरे पुजारी पुरोहित वर्ग की असीम शक्ति का खात्मा। यदि मुझे अपने पहले प्रयत्न में सफलता मिली तो शताब्दियों से होते चले आये वह गृह युद्ध, जिन से देश की असीम शक्ति तथा धन जन की हानि होती आई है और जिन्होंने इस शस्य श्यामल देश

को वीर विहीन कर के अपंगु सा बना दिया है, एक दम से बन्द हो जायेंगे। दूसरे सुधार से न केवल एक महान राजनैतिक खतरे का ही अन्त हो जायेगा वल्कि भगवान सूर्य की उपासना के साथ साथ महान आर्य सभ्यता की उदार विचारधारा भी प्रवाहित होने लगेगी। मुझे वह दिन दिखाई दे रहा है जब कि यहां के मन्दिरों में से भी शंख और घड़ियालों की आवाजें आकाश को गुंजायेंगी, आरती का शीतल प्रकाश नेत्रों को ठण्डा करेगा और मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम तथा योगेश्वर श्री कृष्ण तथा अन्य आर्य देवी देवताओं की पूजा अर्चा का प्रचलन हो जायेगा। आर्य शास्त्रों तथा धार्मिक विचारों का प्रचार होगा और यह देव भूमि सामवेद के सुमधुर गायन से गूंजने लगेगी। यदि यह सब मेरे जीवन काल में न हो सका तो मेरे उत्तराधिकारी इस महान कार्य को पूरा करेंगे।

अब केवल एक काम और ऐसा है जिसको पूरा करने का मैं भरसक प्रयत्न कर रहा हूँ और वह है विदेशियों का क्यू वैण्डी से पूर्ण रूप से निष्क्रमण। वैसे तो किसी भी विदेशी के यहाँ आ निकलने की आशा नहीं है, परन्तु यदि कोई भूले भटके से या जान बूझ कर यहाँ आ ही निकला को ऐसे परदेशियों को मैं चेतावनी देता हूँ कि उनको फ़ौरन से पेश्तर शीघ्रातिशीघ्र इस देश से बाहर निकाल दिया जायेगा। यह बात मैं कोई असत्कार शीलता के भाव से नहीं कह रहा हूँ बल्कि कर्तव्य की प्रेरणा से कह रहा हूँ जिसके निबाहने की ज़िम्मेदारी मेरे कन्धों पर आ पड़ी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसी में इस देश की भलाई और सुख समृद्धि है, क्योंकि मेरे विचार से बर्बर और हिंसक परन्तु मन से उदार और वीर व्यक्ति मिठबोले परन्तु मित्रता का राग अलापते हुए बग़ल से छुरी घोंप देने वालों से कहीं अधिक श्रेष्ठ होते हैं।

यदि किसी मनचले बदमाश ने बड़ी मैदानी तोपों, हैनरी मार्टिनी रायफिलों, और बम वर्षकों से हमारे देश पर आक्रमण कर दिया तो हमारी वीर सेना उसके सामने कितनी देर तक टिक सकेगी। मैं देखता हूँ कि बारूद, महान मशीनों, विद्युत, टैलीफ़ून, तार, रेडियो, भाप के इंजन, दैनिक समाचार पत्र, वयस्क मताधिकार इत्यादि कोई भी आधु-

निक वस्तु मनुष्य जाति को तनिक भी सुखी नहीं बना सकी है। जितना इन से लाभ हुआ है उससे कहीं अधिक हानि पहुंची है। इस संसार को आर्यत्व के पुराने गौरव में ही शान्ति मिल सकती है, उसी समय जीवन सुख पूर्ण हो सकता है जबकि तपोवनों से मंत्रों की गूंज उठ कर चारों दिशाओं को गुंजाये और मनुष्य भोग के मार्ग को त्याग कर त्याग का जवीन अपनाए। मैं नहीं चाहता कि इस सुन्दर शस्य श्यामल देश को सट्टेबाज, परदेसी यात्री, राजनीतिज्ञ, धर्मान्ध कठमुल्ले इत्यादि अपने पाँव तले रौंद डालें और यहां की जनता की उसी प्रकार तिक्का बोटी करके अपनी घृणित वासना को शान्त करें जैसे उस पाताल धारा में उन वीभत्स केकड़ों ने एक दूसरे की, अपने ही भाइयों की, तिक्का बोटी कर के इस प्रकाश युक्त संसार को रौरव नरक बना रखा था। मुझे यह भी पसन्द नहीं है कि वर्तमान सभ्यता के आवश्यक दुर्गुण जैसे धन को जमा करने की लालसा, सुवर्ण की भूख, नशेबाजी, नवीन तरह की बीमारियां, आग्नेय अस्त्र शस्त्र, और सर्व व्यापी चरित्र हीनता, जो कि भोले छल छन्द रहित मनुष्यों में आधुनिक सभ्यता के प्रसार से फैलती जाती है, मेरे देश में फैल कर यहां के निवासियों को भी आचरण हीन, ईश्वर से विमुख, चरित्रहीन तथा सुवर्ण को भगवान से भी ऊपर समझने वाला बना दें। परन्तु यदि कालान्तर में ईश्वर की यही इच्छा हो कि ज्यू वैण्डी भी सभ्य संसार के सम्पर्क में आये तो उसकी यह इच्छा सिर माथे पर है, परन्तु मैं आधुनिक सभ्यता के पाप को इस देश में लाने की जिम्मेदारी अपने सिर नहीं लूंगा और मुझे यह कहते बड़ी प्रसन्नता होती है कि कैप्टिन प्रसाद भी मेरी इस विचार धारा का हृदय से स्वागत करते हैं। विदा।

१५ दिसम्बर, १९...   सुरेश सिंह

पुनश्चय

यह बताना तो मैं बिल्कुल ही भूल गया था कि कोई चार महीने हुए निलिप्था ने (जो पूर्ण रूप से स्वस्थ है और जिसकी सुन्दरता खिले पुष्प की भांति दिन प्रति दिन विकसित होती जा रही है) मुझे एक पुत्र रत्न और इस देश की भावी सम्राट भेंट किया है। घुंघराले केशों और नील गम्भीर नेत्रों वाला यह बालक बिल्कुल निलिप्था को पड़ा है।

मुख की गठन एक दम निलिप्था से मिलती है परन्तु ठोड़ी और मस्तक मेरे समान है। यह बालक, यदि ईश्वर ने इसे जीवित रखा, बड़ा हो कर ज्यू-बैण्डी का सम्राट बनेगा और इसीलिये मैं ने इसे बाल्यावस्था से ही शुद्ध भारतीय संस्कृति में ढालने का निश्चय किया है। मेरे विचार से महान सोपान वंश का उत्तराधिकारी हो कर जन्म लेना बड़े सौभाग्य की बात है और इस देश में इससे अधिक मान प्रतिष्ठा और किसी वस्तु की हो ही नहीं सकती।

सुरेश सिंह

श्री महाराज कृपाल सिंह जू महाराज बानुपुर का बयान

इस अविश्वसनीय ऐतिहासिक आत्मकथा की पाण्डु लिपि, जिस में मेरे प्रिय कनिष्ठ भ्राता महाराज कुमार सुरेश सिंह, जिन को हम सभी ने मृतक समझ लिया था, के हाथ की लिखावट भी शामिल है, मुझे २० सितम्बर, १६—को अर्थात् अफ्रीका के किसी अज्ञात कोने से चलने के कोई डेढ़ वर्ष बाद मिली। मैंने इस अकल्पनीय कहानी को सभ्य संसार के सम्मुख शीघ्रातिशीघ्र रखने की चेष्टा की है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैंने इस आत्मकथा को भावनाओं के समुद्र में डूबते उतराते हुए पढ़ा है। क्योंकि यह जान कर कि कैप्टिन प्रसाद और सुरेश सभ्य संसार से दूर उस अनजान अज्ञात देश में सुखी हैं जो प्रसन्नता हुई है वह बयान नहीं की जा सकती, परन्तु इस के साथ यह सोच कर दुख भी हुआ कि जीवित रहते हुए भी वह सभ्य संसार और अपने इष्ट मित्रों के लिए मृतक बराबर हो गये हैं। क्योंकि अब हमें उन को देखने या उन से मिलने का अवसर मिलना असम्भव है, इस कारण उन का जीवित रहना या न रहना हमारे लिए एक सा है।

उन्होंने स्वयं ही अपनी इच्छा से अपने देश अपनी मातृ-भूमि और अपने बन्धु बान्धवों से सदैव के लिए सम्बन्ध तोड़ लिया है और जहां तक हमारे देश की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति का सम्बन्ध है मेरे विचार से उन का यह कार्य सर्वथा ठीक भी है।

इस आत्मकथा की पाण्डु लिपि किस प्रकार मेरे पास पहुंची इस का मैं अभी तक पता नहीं लगा सका हूँ। लेकिन क्योंकि यह डाक से मेरे

पास आई है इसी बात से यह अनुमान तो लगाया ही जा सकता है कि अल्फ़ान्सो ने अपनी जोखिम पूर्ण यात्रा कुशल क्षेम से पूरी कर ली थी। मैंने फ्रांस के प्रायः सभी समाचार पत्रों में उसके लिए विज्ञापन छपाये हैं, अपने मित्रों से उसे तलाश करवाया है और इस काम के लिए स्वयं भी चार महीने से मार्सेल्स में टिका हुआ हूँ। फ्रांसीसी पुलिस, फ्रांसीसी गुप्त विभाग, भारतीय दूतावास, रेडियो ब्राडकास्ट तथा अन्य सभी साधनों से मैंने उस का पता लगाने की भरपूर कोशिश की है और कर रहा हूँ परन्तु अभी तक मुझे अपने प्रयत्नों में कोई सफलता नहीं मिली है। संभव है वह मौत का शिकार ही हो गया हो और जहाज वालों ने उस पैकेट को अदन के डाकखाने में छोड़ दिया हो। परन्तु यह भी सम्भव है कि उसने अपनी अनीता का खोज लगा कर उस से विवाह कर लिया हो और क़ानून के भय से नाम बदल कर किसी अन्य नगर में रहना शुरू कर दिया हो।

इस सम्बन्ध में निश्चय रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। मैंने उसे खोज निकालने की आशा अभी तक त्यागी नहीं है, परन्तु यह कहते मुझे दुख होता है कि उस के खोज निकालने की आशा दिन प्रति दिन क्षीण होती जा रही है। उसकी खोज में सब से बड़ी कठिनाई जो मुझे पेश आ रही है वह यह है कि लाल साहिब ने अपनी आत्मकथा में कहीं भी उस का पूरा नाम नहीं लिखा है। उन्होंने प्रत्येक स्थान पर उस का नाम 'अल्फ़ान्सो' लिखा है, और फ्रांस में अल्फ़ान्सो सब से साधारण नाम है। एक ही नगर में अल्फ़ान्सो नाम वाले बीसियों व्यक्ति मिल सकते हैं। उस की तलाश में सब से बड़ी कठिनाई यही है।

सुरेश ने जिस चिट्ठी के भेजने की बात आत्मकथा के अन्तिम परिच्छेद में लिखी है वह मेरे पास नहीं पहुँच पाई है और मेरा ख़्याल है कि या तो वह कहीं रास्ते में गुम हो गई या नष्ट हो गई।

श्री कृपाल सिंह जू देव

महाराज बानपुर

: समाप्त :